भा० दि० जैन सघ ग्रन्थमालाया. प्रथमपुष्पस्य पचदशमोदल·

श्रीयतिवृषभाचार्यरचितचूर्णिसूत्रसमन्वितम्
श्रीभगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीतम्

क सा य पा हु डं

तयोश्च
श्रीवीरसेनार्यविरचिता जयधवला टीका

[पञ्चमदशमाधिकारे चारित्रमोहक्षपणानुयोगद्वारम्]

सम्पादकौ

प० फूलचन्द्र
सिद्धान्तशास्त्री सिद्धान्ताचार्य
सम्पादक महाबन्ध सह सम्पादक
धवला आदि

प० कैलाशचन्द्र
सिद्धान्तरत्न सिद्धान्ताचार्य
सिद्धान्तशास्त्री न्यायतीर्थ
अधिष्ठाता स्याद्वाद महाविद्यालय
काशी

प्रकाशक
मन्त्री, साहित्य विभाग
भा० दि० जैन सघ चौरासी मथुरा
वीरनिर्वाणाब्द २५१०

वि० स० २०४०] मूल्य रू०पञ्चविंशतिकम [ई० स० १९८४

भा० दि० जैन संघ ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमालाका उद्देश्य

सस्कृत प्राकृत आदिमे निबद्ध दि० जैनागम, दर्शन,
साहित्य, पुराण आदिका यथासम्भव
हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशन

•

सचालक
भा० दि० जेन सघ

ग्रन्थाङ्क १-१५

प्राप्तिस्थान
व्यवस्थापक
भा० दि० जेन सघ
चौरासी मथुरा

मुद्रक
सन्मति मुद्रणालय दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

स्थापनाब्द] प्रति ८०० [वी० नि० स० २४६८

Sri Dig Jain Sangha Granthamala No 1-15

KASAYA-PAHUDAM

XV

DARSHANMOHA KSHAPANA Etc

By

GUNADHARACHARYA

WITH

Churni Sutra of Yativrashabhacharya

AND

THE JAYADHAVALA COMMENTARY OF
VIRASENACARYA THEREUPON

EDITED BY

Pandit Phoolchandra Siddhantashastri

EDITOR MAHABANDHA

JOINT EDITOR DHAVALA

Pandit Kailashachandra Siddhantashastri

Nyayatirtha Siddhantaratna

Syadvada Digambara Jain

Mahavidyalaya Varanasi

PUBLISHED BY

THE SECRETARY PUBLICATION DEPARTMENT

THE ALL-INDIA DIGAMBAR JAIN SANGHA

CHAURASI MATHURA

VIKRAMA S 2040 VIRA-SAMVAT 2510 1984 A C

Sri Dig Jain Sangha Granthamala

Foundation year] [Vira Niravan Samvat 2468

Aim of the Series—

Publication of Digambara Jain Siddhanta, Darshana, Purana, Sahitya and other works in Prakrit etc, possibly with Hindi Commentary and Translation

DIRECTOR
SHRI BHARATAVARSIYA
DIGAMBARA JAIN SANGHA

To be had from—

THE MANAGER
SRI DIG JAIN SANGHA
CHAURASI MATHURA

Printed By
Sanmati Mudranalaya
Durgakund Varanasi

800 Copies Price Rs Twenty five

प्रकाशकीय

श्री कषायपाहुडकी जयधवला टीका का १५ वा भाग हम स्वाध्याय प्रेमियाके करकमलामे समर्पित करते हुए सन्तोष होता है। अब केवल एक भाग शेष है। आशा है कि आगामी वर्ष उसका भी प्रकाशन हो जायेगा। जिन दाताराने इस महान् सिद्धान्त ग्रन्थके प्रकाशनमे सहयोग दिया है हम उन सभीके आभारी है।

जैन मन्दिराके अधिकारियास हमारा निवेदन है कि इस महान् सिद्धान्त ग्रन्थ को अपने अपने शास्त्रभण्डारामे विराजमान करके इसका समादर कर। जिनमन्दिराके द्रव्यका यथार्थ सदुपयोग जिनवाणीमे व्यय करना है ऐसा करनेसे जिनवाणीका प्रचार और प्रसार होता है। और उसके प्रचार और प्रसार से ही जनधर्मका प्रचार और प्रसार होता है। अत जिनवाणीमे द्रव्य व्यय करके उसका प्रचार और प्रसार करना चाहिये। ऐसे महान् ग्रन्थ बार-बार प्रकाशित नही होत। अत मन्दिरोके भण्डारोमे उनका सग्रह अवश्य होना चाहिये। आशा है समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देकर जिनवाणीके प्रति अपने कर्तव्यका पालन करेगा।

कैलाशचन्द्र शास्त्री

मत्री साहित्य विभाग, भा० दि० जैन सघ

भा० दि० जैन संघके साहित्य विभागके सदस्योंकी नामावली

सरक्षक सदस्य

१३०००) स्व० दानवीर सेठ भागच न्दजी डागरगढ
८१२१) स्व० दानवीर श्रावक शिरोमणि साहू शान्तिप्रसादजी दि ली
५०००) स्व० श्रीम त सर सेठ हुकुमचन्दजी इन्दौर
५०००) स्व० सेठ छदामीलालजी फिरोजाबाद
३००१) सेठ गाजन जी हीराचन्द्र गांधी उस्मानाबाद
२५००) लाला इन्द्रसेन गाजगी
२५००) स्व० बाबू जगमन्दरदासजी कलकत्ता
२००१) सिंघई श्रीनन्दनलालजी बीना

सहायक सदस्य

१२००) सेठ भगवानदासजी मथुरा
१२००) बा० कलाचन्दजी एम० डी० आ० बम्बई
१ ०१) सकल दि० जैन परवार पञ्चान नागपुर
१००१) सेठ श्यामलाल जी फर्रुखाबाद
१ ०१) सेठ घनश्यामदासजी सरावगी लालगढ
(रा० ब० सेठ च नीलालजी सुपत्र स्व० निहालच दजीकी स्मृतिमें)
१०००) स्व० लाला रघुबीर सिंहजी जैना वाच कम्पनी दिल्ली
१०००) स्व० रायसाहब लाला उल्फतरायजी दिल्ली
१० ०) स्व० लाला महावीरप्रसादजी
१० ०) स्व० लाला रतनलालजी मादीपुरिया
१०००) स्व० लाला धर्मीमल धर्मदासजी
१०००) श्रीमती मनोहरी देवी मातेश्वरी लाला वस तलाल फिरोजीलालजी दिल्ली
१०००) बाबू प्रतापच न्दी खण्डेलवाल गुलाम बक्स गामनी (अलीगढ)
१ ००) लाला शीतलमल शास्त्री मथुरा
१०००) सेठ गणेशादास लालचन्द जैन आगरा
१ ००) सकल जैन पञ्चायत गया
१ ००) सेठ सुखानन्द शकरलालजी मुलतानवाले दिल्ली
१००१) सेठ मगनलालजी हीरालालजी पाटनी आगरा
१००१) स्व० श्रीमती चन्द्रावतीजी धर्मपत्नी स्व० साहू रामस्वरूपजी नजीबाबाद
१ १) सेठ मु शालाल जी जगवन्तनगर
१०००) सौ० केशरबाई फुलचन्दलाल गारावाला मडावरा (झासी)
१ ०१) सेठ मघराज गबचन्दजी, पडरौड
१०००) सेठ ब्रजलाल बारेलालजी चिरमिरी
१०००) स्व० सेठ बालचन्द देवचन्दजी शाह घाटकोपर बम्बई
१००) पद्मश्री ब्र० प० सुमतिबाई जी शाह शोलापुर

प्रस्तावना

अभी तक कषायप्राभृत जयधवलाके १४ भाग मुद्रित होकर प्रकाशित हो चुके हैं। यह चारित्रमोहकी क्षपणाका कथन करनेवाले अधिकारमें कृष्टिकरण और कृष्टिवेदनकाल का कथन करनेवाला पन्द्रहवाँ भाग है। इसके पूर्व अश्वकर्णकरण अधिकारतक इस अनुयोग द्वारकी प्ररूपणा चौदहवें भागमें सम्मिलित है। इस भागमें कृष्टिकरण और कृष्टिवेदनकी प्ररूपणा की गई है। अतः क्षपणा सम्बन्धी प्रकृत विषयको ध्यानमें रखकर क्रोधवेदक कालके ३ भाग किये गये हैं। उनके नाम हैं—१ अश्वकर्णकरणकाल २ कृष्टिकरणकाल और ३ कृष्टिवेदककाल।

जब क्षपक श्रेणिपर आरूढ़ हुआ यह जीव पुरुषवेदके पुराने सत्कर्मके साथ छह नोकषायोंको क्रोध संज्वलनमें संक्रमित करके क्रोध संज्वलनका वेदन करता है तब उक्त कालको तीन भागोंमें विभक्त करता है। उनमेंसे अश्वकर्णकरणका कथन चौदहवें भागमें कर आये हैं यह हमने प्रारम्भमें ही सूचित किया है। शेष रहे दो भाग कृष्टिकरणकाल और कृष्टिवेदनकाल। उनमेंसे सर्वप्रथम कृष्टिकरणका कथन किया जाता है।

१ कृष्टिकरण विधि

आगे चूर्णिसूत्रमें कृष्टिका अर्थ करते हुए लिखा है— 'किसं कम्मं कदं जम्हा तम्हा किट्टी[1]।' यतः संज्वलन कर्म अनुभागकी अपेक्षा कृश किया गया है अतः उसका नाम कृष्टि है। यहाँ कृष्टिकरणका काल अश्वकर्णकरणके कालसे विशेष हीन है। इसीप्रकार इसके कालसे कृष्टिवेदकका काल विशेषहीन होता है। उसका कथन कृष्टिकरणकी विधिको समाप्त करके करेंगे।

जब यह जीव अश्वकर्णकरणको समाप्त करके कृष्टिकरणका प्रारम्भ करता है तब इसके स्थितिबन्ध और अनुभागबन्ध दोनों अन्य होते हैं।

२ कृष्टियोंके उत्तरभेद और अल्पबहुत्व

कृष्टियोंके उत्तर भेदोंकी प्ररूपणा करते हुए बतलाया है कि क्रोधादि चारों संज्वलनोंमेंसे प्रत्येककी तीन तीन कृष्टियाँ रची जाती हैं जो संग्रह कृष्टियाँ कहलाती हैं क्योंकि इनमेंसे प्रत्येककी अन्तर कृष्टियाँ अनन्त होती हैं। प्रकृतमें लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि सबसे नीचे होती है। उसकी अवान्तर कृष्टियाँ अनन्त होती हैं। उससे ऊपर लोभकी दूसरी संग्रहकृष्टि होती है। उसकी भी अवान्तर कृष्टियाँ अनन्त होती हैं। इसीप्रकार शेष संग्रह कृष्टियाँ और उनकी अवान्तर कृष्टियाँ जाननी चाहिये।

लोभकी प्रथम कृष्टि स्तोक होती है। दूसरी कृष्टि अनन्तगुणी होती है। इसीप्रकार उत्तरोत्तर अनन्तगुण श्रेणीके क्रमसे लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक जानना चाहिए। जिस प्रकार लोभकी तीनों संग्रह कृष्टियोंके अल्पबहुत्वका कथन किया है उसी प्रकार मायाकी तीनों संग्रह कृष्टियोंके अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिए। यहाँ मायाकी तीसरी संग्रहकृष्टिकी अन्तिम कृष्टिसे मानकी जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी होती है। तथा इसीप्रकार मानकी तीनों संग्रह कृष्टियों और क्रोधकी तीनों संग्रह कृष्टियोंका अल्पबहुत्व घटित कर लेना चाहिए। आगे क्रोधकी तीसरी कृष्टिकी जो अन्तिम कृष्टि होती है उससे लोभके आदि स्पर्धकका आदि वर्गणा अनन्तगुणी होती है। इस प्रकार बारह संग्रह कृष्टियों और उनकी अवयव कृष्टियोंका तीव्र मन्दता विषयक यह अल्पबहुत्व कहा।

---

[1] पृष्ठ ६२।

३ कृष्टि अन्तर

यहाँ कृष्टि अन्तर कहनेसे उसका अर्थ कृष्टिगुणकार लेना चाहिये। इन कृष्टि अन्तरोंके दो भेद हैं—स्वस्थान गुणकार और परस्थान गुणकार। यहाँ स्वस्थान गुणकारकी कृष्टि अन्तर संज्ञा है तथा परस्थान गुणकारकी संग्रह कृष्टि अन्तर संज्ञा है। प्रकृतमें ऐसा समझना चाहिये क्योंकि एक एक संग्रह कृष्टिकी अनन्त अनन्त अवान्तर कृष्टियाँ होती हैं, इसलिए कृष्टि प्रकार भी अनन्त होते हैं जो अवान्तर कृष्टियोंसे एक कम होते हैं। तथा संग्रह कृष्टियाँ बारह हैं इसलिए उनके अन्तर (गुणकार) कुल ग्यारह होते हैं।

४ अल्पबहुत्व

लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिको जिस गुणकारसे गुणा करनेपर अपनी दूसरी कृष्टि उत्पन्न होती है वह गुणकार जघन्य कृष्टि अन्तर कहलाता है। उसका प्रमाण सबसे अल्प होता है। उससे दूसरी कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा होता है। यहाँ दूसरी कृष्टिको जिस गुणकारसे गुणा करनेपर तीसरी कृष्टि उत्पन्न होती है वह दूसरी कृष्टि अन्तर कहा जाता है। आगे भी अन्तिम कृष्टि अन्तरके प्राप्त होने तक अनन्तके गणित क्रमसे अल्पबहुत्व प्राप्त कर लेना चाहिये। उसमें भी द्विचरम कृष्टिको जिस गुणकारसे गुणित करनेपर अन्तिम कृष्टिका प्रमाण प्राप्त होता है वह अन्तिम कृष्टि अन्तर है ऐसा समझना चाहिए।

जो दूसरा संग्रह कृष्टि है उसमें और प्रथम संग्रह कृष्टिमें परस्थान गुणकार होता है जो समस्त स्वस्थान गुणकारोंसे अनन्तगुणा होता है। अतः उस उल्लंघनकर दूसरी संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है। अतः उसे जिस गुणकारसे गुणा करनेपर दूसरी कृष्टि प्राप्त होती है वह गुणकार अनन्तर अधस्तन प्रथम संग्रह कृष्टिके अन्तिम गुणकारसे अनन्तगुणा होता है। यह एक क्रम है। इसे ध्यानमें रखकर आगे सभी संग्रह कृष्टियों सम्बन्धी अवान्तर कृष्टियोंके स्वस्थान गुणकारोंको ले आना चाहिये।

इस प्रकार आगे चल कर क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिकी द्विचरम कृष्टिको जिस गुणकारसे गुणित करनेपर वहाँकी अन्तिम कृष्टिको प्राप्त होता है वह अन्तिम कृष्टिका अन्तर होता है। उसे मर्यादा करके यहाँ तक सब अन्तर कृष्टियोंका गुणकार जानना चाहिए।

५ परस्थान गुणकार अल्पबहुत्व

एक संग्रह कृष्टिसे दूसरी संग्रह कृष्टिके मध्य जो अन्तर होता है उसकी संग्रह कृष्टि अन्तर संज्ञा है। आगे इसे स्पष्ट करते हुए बतलाया है कि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिका जिस गुणकारसे गुणित करने पर दूसरी संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टि प्राप्त होती है वह लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अन्तर है। यह गुणकार स्वस्थान गुणकारोंके अन्तिम गुणकारसे अनन्तगुणा होता है। कारण कि यह परस्थान गुणकार है। एक एक कषायकी जो तीन-तीन संग्रह कृष्टियाँ कही गई हैं उसका कारण यह स्वस्थान गुणकारसे भिन्न परस्थान गुणकार ही है। यहाँपर अधस्तन कृष्टिको उपरिम कृष्टिमेंसे घटाकर जो शेष रहे एक कम वह अविभागप्रतिच्छेदके क्रमसे न बढ़ कर युगपत् बढ़ा है। यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि यहाँ परस्थान गुणकारमें कृष्टि अन्तर नहीं लिया गया है। अन्यथा इसे पूर्वके अन्तिम स्वस्थान कृष्टि अन्तरमें अनन्तगुणा हीन मानना पड़ेगा। यहाँ प्रथम संग्रह कृष्टि अन्तरको जिस विधिसे स्पष्ट किया है। आगे भी शेष संग्रह कृष्टि अन्तरोंको उक्त विधिको ध्यानमें रख कर घटित कर लेना चाहिए। आगे अपूर्व स्पर्धकोंकी आदि वर्गणाका कितना प्रमाण है इसे स्पष्ट करते हुए बतलाया है कि क्रोधकी अन्तिम कृष्टिसे लोभके अपूर्व स्पर्धकोंकी आदि वर्गणाका अन्तर अनन्तगुणा है।

६ दीयमान प्रदेश श्रेणिप्ररूपणा

जो कृष्टिकारक जीव है वह प्रथम समयमें पूर्व और अपूर्व स्पर्धकों सम्बन्धी प्रदेश पुंजके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके जो अपकर्षण करनेसे द्रव्य प्राप्त होता है उसके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यको सब

कृष्टियोमें देता है और इस प्रकार देता हुआ जो लोभसज्वलनकी जघन्य कृष्टि है उस रूपसे बहुत बहुत पुंजको निक्षेप करता है। आगे क्रोध सज्वलनकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक अनन्तवें भागप्रमाण विशेषहीन विशेषहीन द्रव्य होता है। यह अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा कथन है। परम्परोपनिधाकी अपेक्षा विचार करनेपर लोभकी जघन्य कृष्टिको जितना द्रव्य प्राप्त होता है उससे क्रोधकी उत्कृष्टिकष्टिमें अनन्तवें भागप्रमाण विशेषहीन हो द्रव्य प्राप्त होता है। ऐसा क्यों है इसका समाधान करते हुए बतलाया है कि १२ सग्रह कृष्टियोकी जितनी भी अवान्तर कृष्टियाँ रची है व सब मिलाकर एक गुणहानि स्थानान्तर के अनन्तवें भागप्रमाण होती हैं।

आगे प्रथम समयमे जिस द्रव्यका अपकर्षण करके अवान्तर कृष्टियोकी रचना की गई है उस अपकर्षित द्रव्यमसे अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाको कितना द्रव्य प्राप्त होता है इसे स्पष्ट करते हुए बतलाया है कि क्रोधकी अन्तिम कृष्टिको जितना द्रव्य प्राप्त होता है उसके अनन्तवें भागप्रमाण द्रव्य ही अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाको प्राप्त होता है। कारणका निर्देश करते हुए बतलाया है कि क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमे अपूर्व स्पर्धकसम्बन्धी अनन्त आदि वर्गणाप्रमाण द्रव्यको निक्षिप्त करके पुन अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणामे वहाँ पहलेसे अवस्थित द्रव्यका असख्यातवाँ भागप्रमाण ही द्रव्य निक्षिप्त होता है। इसलिये उक्त अर्थकी उपलब्धि बिना बाधाके बन जाती है।

किन्तु दृश्यमान द्रव्य क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमें बहुत है तथा उससे अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणा में अनन्तगुणाहीन है। इसलिए कितने आचार्य यहाँ नाना पुच्छाओंका निर्देश करते है। किन्तु टीकामें उसका निषेध करके पूर्वोक्त अर्थका ही ग्रहण करनेका विधान किया गया है। इसप्रकार कृष्टिकरण कालके प्रथम समयमे कृष्टियोमें दीयमान प्रदेश पुजकी श्रेणिप्ररूपणा की।

६ दूसरे समयमे कार्यभेद

अब दूसरे समयमे किये जानवाले कार्य भेदका कथन करते हुए बतलाया है कि प्रथम समयमे अपकर्षित किये गये द्रव्यसे दूसरे समयमे असख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण करके उससमय कृष्टियोका करता हुआ प्रथम समयमे की गई कृष्टियोके नीचे अन्य अपूर्व कृष्टियोकी रचना करता है। तथा पूर्वमे रची गई कृष्टियोके साथ घनरूपसे भी कृष्टियोकी रचना करता है। किन्तु यहाँ उन अपूर्व कृष्टियोका प्रमाण प्रथम समयमे रची गई कृष्टियोके असख्यातवे भागप्रमाण है। यहाँ दूसरे समयमें कृष्टियोकी रचना करनेवाला उस समय अपकर्षित किये गये सकल द्रव्यके असख्यातवे भागको अपूर्व कृष्टियोमे निक्षिप्त करके शेष बहुभाग द्रव्यका पूर्व कृष्टियोमें तथा स्पर्धकोमे यथाविधि निक्षिप्त करता है।

किन्तु ये सब अपूर्व कृष्टियाँ किस स्थानमे रची जाती हैं इसका समाधान करते हुए बतलाया है कि क्रोधसज्वलनके पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोमसे प्रदेशपुजका आकर्षण करके अपनी अपनी तीनो सग्रह कृष्टियोके नीचे प्रत्येककी अपेक्षा पूर्व कृष्टियोके असख्यातवें भागप्रमाण अपूर्व कृष्टियोकी रचना करता है। इसी प्रकार मान माया और लोभकी अपेक्षा भी जान लेना चाहिये। तात्पर्य यह है कि १२ सग्रह कृष्टियोकी जघन्य कृष्टियोमें नीचे अलग अलग पूर्व कृष्टियोके असख्यातवें भाग प्रमाण अपूर्व कृष्टियोकी रचना करनेवाले जीवके दूसरे समयमे बारह सग्रह कृष्टियो सम्बन्धी अपूर्व कृष्टियोकी रचना हो जाती है।

७ दूसरे समयमे दीयमान प्रदेशपुंज श्रेणीप्ररूपणा

लोभकी जघन्य कृष्टिमें बहुत प्रदेशपुज दिया जाता है। दूसरी कृष्टि मे अनन्तवाँ भाग कम दिया जाता है। इसप्रकार लोभकी प्रथम सग्रह कृष्टिके नीचे अपूर्व कृष्टियोमें अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक अनन्तवें भागहीन द्रव्य दिया जाता है। उसके बाद प्रथम समयमें रची गई जघन्य अपूर्व कृष्टिमें असख्यातवाँ भागहीन द्रव्य दिया जाता है। उसके बाद प्रथम समयमें निष्पन्न हुई प्रथम सग्रह कृष्टिकी अपूर्व कृष्टियोंमें अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होनेतक उत्तरोत्तर अनन्तवाँ भागहीन द्रव्य दिया जाता है। पुन सन्धिमे स्थित कृष्टियोंमें उत्तरोत्तर असख्यातवाँ भागहीन द्रव्य दिया जाता है।

अब इसके आगे लोभकी दूसरी सग्रह कृष्टिके नीच निष्पन्न हुई अपूव कृष्टियोकी जो जघ य कृष्टि है उसम असख्यातवाँ भागहीन प्रदेशपुज दिया जाता ह। उसके बाद अपूव कृष्टियोकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होन तक उत्तरोत्तर अनन्त भागहीन प्रदेशपुजका निक्षेप करता जाता है। पुन आगे प्रथम समयमें रची गई कृष्टियोंकी जघ य कृष्टिम असख्यातवें भागहीन प्रदेशपुजका निक्षप करता ह। उसके बाद दूसरी सग्रह कृष्टिकी अ तिम कृष्टि के प्राप्त हाने तक प्रत्यकम अन तवें भागहीन प्रदेशपुंजका निक्षप करता ह। इसक बाद दूसरी सग्रह कृष्टिकी जो विधि ह वही विधि तीसरी सग्रह कृष्टिकी जाननी चाहिये। आगे माया मान क्रोध सम्ब धी जो प्रत्यककी तीन तीन सग्रह कृष्टियाँ ह उनम प्रदश विन्यासका क्रम पूवविधिको ध्यानमें रखकर आगमसे जान लेना चाहिय। अत उक्त प्रकारसे द्वितीय समयमे जो सभी कृष्टियोमे प्रदेश वि यास बनता है उसे देखते हुए उष्टकूटश्र णिकी रचना हो जाती ह। (देखो विशषाथ पृ० ३४)। यहाँ ११ मध्यस्थान और बारह सग्रह कृष्टिस्थान ह अत उनके अनुसार २३ उष्टकूटश्रणि बन जाती हैं। (विशेष मूलम दखो।) कृष्टियाम प्रतिसमय असख्यातगुणा असख्यात गुणा द्र य दिया जाता ह।

यहा अ तम सज्वलनोका स्थितिब ध अ तमहूत अधिक चार माह प्रमाण हाता ह तथा शेष कर्मोका स्थितिब ध सख्यात हजार वष प्रमाण हाता ह। तथा उसी समय मोहनीयका स्थिति सत्कम अ तमहूत अधिक आठ वर्ष प्रमाण होता ह, तीन घातिकर्मोका स्थितिसत्कर्म सख्यात हजार वष प्रमाण होता है तथा नाम गोत्र और वदनीय कमका स्थिति सत्कम असख्यात वष प्रमाण होता ह।

८ कृष्टिवेदक काल

कृष्टियोका करनवाला क्षपकजीव पूर्व स्पधक और अपूव स्पधकोका वेदन करता ह। जिस समय कृष्टिकरण कालका अन्तिम समय प्राप्त होता ह तब वतमान उदय स्थितिको छोडकर उसके ऊपर क्रोधसज्वलनकी एक आवलिप्रमाण प्रथम स्थितिक शष रहनेपर कृष्टिकरणकी विधि समाप्त हो जाती है क्योकि उत्पादानुच्छेदकी अपेक्षा कृष्टिकरणके अ तिम समयम उसकी समाप्ति हो जाती ह। पर तु अनुत्पा दानुच्छेदकी अपेक्षा तदनन्तर समयमें कृष्टियोका वेदन करनवाल जीवके कालकी अपेक्षा एक आवलि मात्र प्रथम स्थितिक शष रहनपर कृष्टिकरण काल समाप्त हाता है।

इसके बाद वह जीव दूसरी स्थितिमसे अपकषण करके कृष्टियोका उदयावलिमें निक्षप करता है। उस समय सज्वलनोकी स्थिति चार माह और स्थितिसत्कम आठ वष प्रमाण होना है। तीन घातिकर्मोका स्थितिब ध और स्थितिसत्कम सख्यात हजार वष प्रमाण तथा नाम गोत्र और वदनीयका स्थितिब ध सख्यात हजार वषप्रमाण और स्थितिसत्कम असख्यात वष प्रमाण होता है। तथा क्रोधसज्वलनका अनुभाग सत्कम एक समय कम जो उदयावलिमें उच्छिष्टावलि रूपसे प्रविष्ट ह वह सवघाति है और चारो सज्वलनाका जो नवकब ध दो समय कम दा आवलि प्रमाण शष ह वह देशघाति हाकर भी स्पधकगत ह। शेष सब अनुभाग कृष्टिगत है। अर्थात् कृष्टिवदक कालके प्रथम समयमे नवकब ध और उच्छिष्टावलिको छोडकर चारो सज्वलनोंका सम्पूण ही प्रदेश पुज कृष्टिरूपसे परिणम जाता ह यह इस कथनका तात्पय है।

पुन उसी कृष्टिवेदक कालके प्रथम समयमें कृष्टियोंको प्रवश कराता हुआ क्रोध सज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिमसे प्रदेशपु जका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है। जो क्रोधवदक कालके साधिक तीसरे भागप्रमाण हाती है। इसका वेदन करनेवाला वह जीव क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिकी जघ य कृष्टिसे लेकर अधस्तन असख्यातवें भागको तथा उसकी उपरिम उत्कृष्ट कृष्टिसे लेकर उपरिम असख्यातवें भागको छोडकर शष मध्यम असख्यात बहुभाग प्रमाण कृष्टियाँ उदयको प्राप्त होती हैं, क्योंकि अधस्तन और उपरिम असख्यातवें भागकी विषयभूत सदृश धनवाली कृष्टियोका परिणाम विशेषका अवलम्बन लेकर मध्यम कृष्टिरूपसे परिणमकर उदय होता है।

पुन इस जीवके क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिके असंख्यात बहुभागका बन्ध होता है । उस समय शेष दो संग्रह कृष्टियोका न तो बन्ध ही होता है और न उदय ही, क्योंकि प्रथम संग्रह कृष्टिके उदयकालमे शेष दो संग्रह कृष्टियोंका उदय होना सम्भव नही । तथा जिस समय जिस कषायको जिस संग्रह कृष्टिका वेदन करता है उस समय उसका उसी रूपसे ही बन्ध होता है ऐसा नियम है । आगे इसके अल्पबहुत्वका निर्देश करनेके बाद कृष्टिवेदक कालको स्थगित करके कृष्टिकरण कालसे सम्बन्ध रखनवाली सूचनाओका निर्देश करते हैं ।

९ गाथासूत्र प्ररूपणा

कृष्टिकरण कालसे सम्बन्ध रखनेवाली ग्यारह मूल सूत्रगाथाएँ हैं । उनमे प्रथम मूल सूत्र गाथा है केवदिया किट्टीओ इत्यादि । इसके चार अर्थ है । कुल कृष्टियाँ और उनकी अवयव कृष्टियाँ कितनी है । यह प्रथम पृच्छा है । एक एक कषायकी कितनी संग्रह और अवयव कृष्टियाँ हैं यह दूसरी पृच्छा है । कृष्टियोको करनेवाला चारो संज्वलनोके प्रदेशपुंजका क्या अपकर्षणकरण करता है या उत्कर्षणकरण करता है यह करण विषयक तीसरी पृच्छा है । तथा कृष्टियोको करनेवालेका अनुभाग किस प्रकारका रहता है यह चौथी पृच्छा है । इस प्रकार यह मूलगाथा चार अर्थोंको स्पर्श करती है ।

इसकी तीन भाष्यगाथाए है । उनमसे प्रथम भाष्यगाथामें दो अर्थ निबद्ध हैं । यथा—क्रोधके उदयसे जो जीव श्रेणिपर आरोहण करता है उसके १२ संग्रह कृष्टियाँ होती हैं । मानके उदयवालेके ९ मायाके उदयवालेके ६ और लोभके उदयवालेके ३ संग्रह कृष्टियाँ होती हैं । क्योकि क्रोधके उदयसे श्रेणिपर आरोहण करनेवाले जीवके चारो कषायोकी सत्ता पाई जाती है इसलिए वह सभी कषायो सम्बन्धी संग्रह कृष्टियाँ और उनकी अवान्तर कृष्टियाँ करता है । मान कषायके उदयसे श्रेणिपर चढ़नेवाला जीव कृष्टिकरणके पहले ही स्पर्धकरूपसे क्रोध संज्वलनका नाश कर देता है । जो मायाके उदयसे श्रेणिपर आरोहण करता है वह माया और लोभको छह संग्रह कृष्टियाँ करता है क्योकि वह कृष्टिकरणके पहले ही स्पर्धक रूपसे क्रोध और मानसंज्वलनका नाश कर देता है । जो लोभके उदयसे श्रेणिपर चढता है वह लोभकी तीन संग्रह कृष्टियाँ करता है क्योकि वह कृष्टिकरणके पहले स्पर्धक रूपसे ही क्रोध मान और मायासंज्वलनका नाश कर देता है । इससे सिद्ध है कि एक एक कषायकी तीन तीन संग्रह कृष्टियाँ होती हैं और प्रत्येककी अनन्त अवयव कृष्टियाँ होती है ।

कृष्टिकरण कालमे कौन करण होता है इस अर्थमे १६४ संख्याक एक भाष्यगाथा आई है इसका स्पष्टीकरण करते हुए बतलाया है कि कृष्टिकरणके कालमे क्षपकके उसका संक्रम होने तक संज्वलन कषायकी स्थिति और अनुभागका नियमसे अपकर्षणकरण ही होता है, उत्कर्षणकरण नही । किन्तु यह नियम केवल संज्वलन कषायपर ही लागू होता है ज्ञानावरणादि कर्मोंपर नहीं ऐसा यहाँ समझना चाहिये ।

उपशामककी अपेक्षा जो विशेषता है उसका निर्देश करते हुए लिखा है कि कषाय अवस्थाके अन्तिम समय तक संज्वलन कषायका अपकर्षण ही होता है उत्कर्षण नही । यद्यपि इसके प्रथम स्थितिमे आवलि और प्रत्यावलिप्रमाण कालके शेष रहनेपर ही आगाल और प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति होती है । तो भी द्वितीय स्थितिमे स्थित संज्वलन कषायका स्वस्थानकी अपेक्षा अपकर्षणकरण होता है ऐसा कहा है । इतना अवश्य है कि जब यह जीव उपशान्त कषायसे गिरता है तब उसके सकषाय अवस्थाके प्रथम समय ही सभी करण सम्भव होनसे शक्तिकी अपेक्षा उत्कर्षण करण कहा गया है । इतनी विशेषता है कि यहाँ उत्कर्षण और अपकर्षणकी अपेक्षा ही विचार किया है । इसी न्यायसे शेष करणोके सम्बन्धमें भी विचार कर लेना चाहिए ।

आगे कृष्टिका क्या लक्षण है इस अर्थकी प्ररूपणामें १६५ संख्याक तीसरी भाष्यगाथा आई है । इसका स्पष्टीकरण करते हुए जयधवला टीकामें कृष्टिके लक्षणका तो स्पष्टीकरण किया ही है । स्पर्धक और

कष्टिम क्या अ तर है इम भी स्पष्ट करके बतलाया है। खुलासा इस प्रकार है—समान अविभाग प्रतिच्छेदोंको धरनवाले अनन्त कर्मपरमाणुओंकी एक वर्गणा होती है। यहाँ प्रत्येक परमाणुका नाम एक वर्ग है। इनसे एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेदोंको धरनेवाले अन त कर्मपरमाणुओंकी दूसरी वर्गणा होती है। इस प्रकार एक एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक होकर जो अनन्त वर्गणाएँ होती हैं वे सब वर्गणाएँ मिलकर एक स्पर्धक होता है। यह स्पर्धकका लक्षण है। पर तु कष्टिम स्पर्धकका यह स्वरूप घटित नहीं होता क्योंकि सबसे जघ य जो कष्टि होती है उसमें यद्यपि समान अविभाग प्रतिच्छेदोंको धरनेवाले अनन्त परमाणु होते हैं। पर तु दूसरी कष्टिम एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेदोंको धरनवाले अनन्त परमाणु न होकर नियमसे अन तगुण अविभागप्रतिच्छेदोंको धरनवाले अन त परमाणु होते हैं। इसी प्रकार तीसरी आदि सभी कष्टियोंमें समझना चाहिए। इसलिए ही इनकी कष्टि संज्ञा है। यह स्पर्धक और कष्टिमें अ तर है ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

आगे १६६ सख्याक दसरी मूल गाथा आई है। इस द्वारा सब कष्टियोंके अनुभाग और स्थितिका विचार किया गया है। इसकी छो भाष्यगाथाएं हैं। १६७ सख्याक प्रथम भाष्यगाथा द्वारा सभी कष्टियाँ असख्यात स्थितिविशेषोंमें और अन त अनुभाग विशेषोंमें पाई जाती हैं। मात्र वर्धमान सग्रह कष्टि की कितनी अवयव कष्टियाँ होती हैं उनका असख्यात बहुभाग उन्य स्थितिमें पाया जाता है इतना यहाँ विशेष जानना चाहिए। अनुभागकी अपेक्षा एक एक कष्टि अन त अनुभागोंमें पाई जाती है। पर तु जिन अनुभागोंमें एक कष्टि होती है उनमें दूसरी कष्टि नहीं रहती।

१६८ सख्याक दूसरी भाष्यगाथामें बतलाया है कि सब सग्रह और अवयव कष्टियाँ द्वितीय स्थितिमें होती हैं। मात्र यह जीव जिसका वेदन करता है उसका एक भाग प्रथम स्थितिमें होता है। शेष कथन प्रथम भाष्यगाथाके समान जानना चाहिए।

१६९ सख्याक तीसरी मूल गाथा प्रदेशपुज अनुभाग और कालकी अपेक्षा हीनाधिकपनेका निर्देश करती है। प्रदेश पुजका निर्देश करने रूप प्रथम अर्थ में पाँच भाष्य गाथाएं आई हैं। अनुभागका कथन करने रूप दूसरे अर्थ में एक भाष्यगाथा आई है तथा कालका निर्देश करने रूप तीसरे अर्थमें छह भाष्य गाथाएं आई हैं।

१७० सख्याक प्रथम भाष्यगाथामें बतलाया है कि दूसरीसे प्रथम सग्रह कृष्टिमें प्रदेशपुज्ज सख्यात गुणा होता है। पर तु दूसरीमें तीसरी आदि सग्रह कृष्टियाँ क्रमसे विशेष अधिक हैं। विशेष खुलासाके लिये मूलका देखिये।

१७१ सख्याक दूसरी भाष्यगाथामें बतलाया है कि क्रोधकी दूसरी सग्रह कृष्टिसे प्रथम सग्रह कृष्टि वर्गणा समूहकी अपेक्षा सख्यात गुणी है। किन्तु दूसरी सग्रह कृष्टिसे तीसरी सग्रह कृष्टि वर्गणा समूहकी अपेक्षा विशेष अधिक है। इसी प्रकार मान आदिकी सग्रह कृष्टियाँ भी वर्गणा समूहकी अपेक्षा विशेष अधिक होती हैं।

१७२ सख्याक तीसरी भाष्यगाथामें वर्गणाको ध्यानमें रखकर अनुभाग और प्रदेशपुजकी अपेक्षा अल्पबहुत्वका निर्देश किया गया है। बतलाया है कि वर्गणा अनुभागकी अपेक्षा हीन होती है वह प्रदेश पुजकी अपेक्षा अधिक होती है।

१७३ सख्याक चौथी भाष्य गाथामें बतलाया है कि क्रोधकी आदि वर्गणामें से उसीकी अन्तिम वर्गणाके घटानेपर जो अनन्तवाँ भाग लब्ध आता है वह शुद्ध शेषका प्रमाण होता है। अर्थात् अन्तिम वर्गणासे आदि वर्गणामें उतना प्रदेशपुंज अधिक होता है।

१७४ सख्याक पाँचवी भाष्यागाथामें बतलाया है कि कृष्टियोंके विषयमें जो क्रम क्रोधसज्वलनमें स्वीकार किया गया है वही क्रम मान, माया और लोभके विषयमें भी समझना चाहिये।

१७० संख्याक मूल गाथाका दूसरा पद 'अनुभागग्गेण' है। उसमें १७५ संख्याक एक भाष्यगाथा आई है। इसमे अनुभागकी अपेक्षा अल्पबहुत्वका निर्देश किया गया है। चारों कषायोंमसे प्रत्येक तीन-तीन संग्रह कृष्टियाँ है। उनमें प्रत्येक कषायकी अपेक्षा दूसरीसे पहला तथा तीसरीसे दूसरी संग्रह कृष्टि अनुभाग पुजकी अपेक्षा नियमसे अनन्तगुणी है।

१७० संख्याक मूलगाथाका तीसरा पद है— का च कालेण। इसमें छह भाष्यगाथाएँ हैं। उनमसे १७६ संख्याक प्रथम भाष्यगाथामें कृष्टियोके स्थिति सम्बन्धी कालका विवेचन करते हुए बतलाया है कि जो लोभके उदयसे श्रेणिपर चढता है उसके लोभ कृष्टिके वेदनके प्रथम समयमें मोहनीय कर्मका स्थिति सत्कर्म एक वर्षप्रमाण होता है। जो मायाके उदयसे श्रेणिपर चढता है उसके माया कष्टियोका वेदन करनेके प्रथम समयमें मोहनीय कर्मका स्थिति सत्कर्म दो वर्ष प्रमाण होता है। जो मानके उदयसे श्रेणिपर चढता है उसके मान कष्टियोके वेदनके प्रथम समयमें मोहनीय कर्मका स्थिति सत्कर्म चार वर्ष प्रमाण होता है। जो क्रोधके उदयसे श्रेणिपर चढता है उसके क्रोध कष्टियोंके वेदन करनेके प्रथम समयमे मोहनीयका स्थितिसत्कर्म आठ वर्ष प्रमाण होता है।

१७७ संख्याक दूसरी भाष्यगाथा मे प्रकरणसे यवमध्य कैसे बनता है इसे स्पष्ट किया गया है। अन्तरकरण विधिके सम्पन्न हो जानेके कारण यहाँ सज्वलन कर्म दो स्थितियोमे विभक्त हो जाता है। अन्तरकरणसे नीचेकी स्थितिका नाम प्रथम स्थिति है। और अन्तरसे ऊपरकी स्थितिका नाम द्वितीय स्थिति है। इसलिए यहाँ इन दोनो स्थितियोमें अन्तरसहित यवमध्यकी रचना बन जाती है यह इस गाथाका भाव है।

१७८ संख्याक तीसरी भाष्यगाथामे द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेक प्रदेशपुजकी अपेक्षा उसी स्थितिके अन्तिम निषेककी अपेक्षा कितना अधिक है इसे स्पष्ट करते हुए वह असंख्यातवाँ भाग अधिक है यह स्पष्ट कहा गया है।

१७९ संख्याक चौथी भाष्यगाथामे यह बतलाया गया है कि यहाँ जो उदयादि गुण श्रेणि होती है उसमें असंख्यात गुणित श्रेणि रूपसे प्रदेशपुज दिया जाता है।

१८० संख्याक पाँचवी भाष्यगाथाम यह बतलाया है कि प्रथम स्थितिकी जितनी अवान्तर स्थितियाँ होती है उन सबसे आदिकी स्थितिमें सबसे थोडा द्रव्य पाया जाता है। तथा उसका उदय होकर निर्जरा होनेपर जो दूसरी स्थितिका उदय होता है उसमें असंख्यात गुणित श्रेणि रूपसे द्रव्य पाया जाता है। इसी प्रकार गुण श्रेणिके अन्तिम समय तक जानना चाहिये।

१८१ संख्याक ५ वी भाष्यगाथामे बतलाया है कि अन्तिम कष्टिसे लेकर प्रथम कष्टि तक सब कष्टियोका जो वेदक काल है वह उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक है। यहाँ विशेष अधिक का प्रमाण पिछली कष्टिक कालसे उत्तरोत्तर संख्यातवाँ भाग अधिक होता जाता है।

आगे चौथी मूलगाथाका निर्देश करते हुए बतलाया गया है कि किन किन गतियोम भवो स्थितियो, अनुभागाम तथा तत्सम्बन्धी कष्टियो और उनकी स्थितियाम संचित हुए पूर्व बद्ध कर्म इस क्षपकके पाये जाते है।

इस मूल सूत्रगाथाकी तीन भाष्यगाथाएँ हैं। इनमसे १८३ संख्याक प्रथम भाष्यगाथामे बतलाया गया है कि तिर्यच और मनुष्य गतिमे बाँधे गये कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते है। किन्तु नरकगति और देवगतिमे बाँधे गये कर्म इस क्षपकके होते भी हैं और नही भी होते हैं। इसी प्रकार एकेन्द्रिय सम्बन्धी पाँच स्थावर कायिकोम बाँधे गये कर्म इस क्षपकके होते भी हैं और नही भी होते। किन्तु पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी त्रसकायिकोंमे बाँधे गये कर्म इस क्षपकके नियमसे पाए जाते हैं। यहापर त्रसकायिक ऐसा सामान्य रूपसे कहनेपर सज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोका ही ग्रहण करना चाहिये। शेषका नही, क्योंकि शेष त्रसकायिकोम बाँधे गये कर्म इस क्षपकके होते भी हैं और नही भी होते।

जयधवला टीकामें तिर्यंच गतिमें अर्जित किया गया कर्म इस क्षपकके कैसे पाया जाता है इस बातका खुलासा करते हुए बतलाया गया है कि जो जीव तियच गतिसे निकलकर शेष दो गतियोंमें सौ पथक्त्व सागरोपम काल तक रह कर क्षपक श्रेणिपर आरोहण करता है उसके तियच गतिमें अर्जित होकर कम स्थितिमें हुए सचयका पूरी तरहस अभाव नही होता और मनुष्य गतिमें आये बिना इस जीवका क्षपक श्रेणिपर आरोहण करना सम्भव नही है इसलिय तियचगति और मनुष्य गतिमें सचित हुआ कम इस क्षपकके नियमसे पाया जाता है ऐसा यहाँ विशेष समझना चाहिये ।

१८४ सख्याक दूसरी भाष्यगाथामे बतलाया है कि असख्यात एकेन्द्रिय सम्ब धी भवोंमें बाँध गये कम इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं क्योकि कम स्थितिके भीतर कमसे कम पल्योपमके असख्यातव भाग प्रमाण एकेन्द्रिय सम्ब धी भवोका ग्रहण नियमसे पाया जाता ह तथा एकसे लेकर सख्यात त्रससम्बन्धी भवोमें बाँधे गये कम इस क्षपकके नियमसे पाये जात ह। यदि एकेन्द्रियोमसे आकर और मनुष्य होकर इसी पर्यायसे क्षपक श्रेणिपर चढ़ता है तो त्रससम्ब धी एक भवमें बाँध गये कम इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं। इस प्रकार अधिकसे अधिक सख्यात त्रसभव ग्रहण कर लेन चाहिये। बाँध गये कम इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं।

१८५ सख्याक तीसरी भाष्यगाथा में यह बतलाया गया ह कि उत्कृष्ट अनुभाग और उत्कृष्ट स्थिति युक्त पूवबद्ध कम इस क्षपकके अनियम से पाये जाते हैं क्योकि कम स्थितिके भीतर उत्कृष्ट अनुभाग और उत्कृष्ट स्थिति विशिष्ट यदि कम बाँधे गये हैं तो उनका क्षपकके कदाचित पाया जाता सम्भव है और कम स्थिति के भीतर अनुत्कृष्ट स्थिति और अनुत्कृष्ट अनुभागके साथ कर्मोंका ब ध करना आया है तो उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभागके साथ बाँधे गये कम इस क्षपकके नियमसे नही पाये जात ह। तथा चारो कषायोम से प्रत्येकका काल अ तमुहूतसे अधिक नही है इसलिए चारो कषायोके कालम बाँधे गये कम इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं।

आगे १८६ सख्याक मूल गाथा में पर्याप्त अवस्था अपर्याप्त अवस्था, स्त्रीवेद पुरुषवेद, नपुसकवद सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व मिथ्यात्व, योग और उपयोग इनमेंसे किस अवस्थामें रहते हुए बाँध गय कम इस क्षपकके पाये जाते हैं यह पच्छा की गई है।

इस मूल सूत्रगाथाकी चार भाष्यगाथाए है। उनमेंसे १८७ सख्याक प्रथम भाष्यगाथाम बतलाया है कि पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्था मिथ्यात्व नपुसकवेद और सम्यक्त्व इन मार्गणाओम बाध गय कम इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं। कारण कि कमस्थितिके भीतर ये मार्गणाए नियमसे होती ह इसलिय इन मार्गणाओम पूवबद्ध कम इस क्षपकके नियमसे पाय जाते है। पर तु कमस्थितिके भीतर स्त्रीवद पुरुषवेद और सम्यग्मिथ्यात्व ये मार्गणाए हाती भी है और नही भो होती हैं इसलिए इन मार्गणाओम पूर्वबद्धकम इस क्षपकके कदाचित पाये भी जाते ह और कदाचित नही भी पाये जात ह।

१८७ सख्याक प्रथम भाष्यगाथा में बतलाया ह कि कमस्थिति कालके भीतर पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्था नियमसे होती ह क्योकि कमस्थितिका काल बहुत बडा ह, इसलिए उक्त कालके भीतर इन अवस्थाओ का प्राप्त होना अवश्यभावी ह। मिथ्यात्व और नपुंसकवद मागणाओके विषयम भी इसी प्रकार समझना चाहिए, क्योकि जीव इन मार्गणाओको प्राप्त न हो और कमस्थितिका काल पूरा कर ल यह सम्भव ही नही ह। इसलिये पूवकथित मार्गणाओंमें बाँध गये कम इस क्षपकके अभजनीय कहे ह। मात्र स्त्रीवेद पुरुष वेद और सम्यग्मिथ्यात्व ये अवस्थाए कमस्थिति कालके भीतर हो और नही भी हो। इसलिए इन मार्गणाओ मे बाँधे गये कम इस क्षपकके भजनीय कहे हैं।

१८८ सख्याक दूसरी भाष्यगाथामे यह स्पष्ट किया है कि औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रयोग चारो मनोयोग और चारो वचनयोग इन मार्गणाओमें बाँधे गये कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं।

कारण स्पष्ट हैं। शेष रही वक्रियिक काययोग, वक्रियिक मिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्र काययोग और कामणकाययोग मार्गणाएँ कमस्थिति कालके भीतर अवश्य ही होती हैं ऐसा कोई नियम नही है, इसलिए इन मार्गणाओम बांध गये कम इस क्षपकके भजनीय कहे हैं।

१८९ सख्याक तीसरी भाष्यगाथाम यह स्पष्ट किया है कि मतिज्ञान और श्रुतज्ञान इन दोनों उपयोगोंमे बांध गय कम इस क्षपक के नियमसे पाये जात हैं। इन्हीमें मत्यज्ञान और श्रुताज्ञानको भी सम्मिलित कर लेना चाहिये। कारण स्पष्ट ह। किन्तु अवधिज्ञान और मन पययज्ञान साथ ही विभगज्ञान कमस्थिति कालके भीतर हो एसा कोई नियम नही है, इसलिए इन मार्गणाओंमें बांधे गये कम इस क्षपकके भजनीय कहा है।

१९० सख्याक चौथी भाष्यगाथाम स्पष्ट किया है कि चक्षुदशन और अचक्षुदशन इन दोनों उपयोगोंमें बांध गये कम इस क्षपकके नियमसे पाये जात हैं। पर यह स्थिति अवधिदशन की नही ह, इसलिए इस उपयोगमें बांध गये कम इस क्षपकके भजनीय होते हैं यह कहा है।

आगे १९१ संख्याक छठवी मूल गाथा है। इसमें बतलाया है कि किस लेश्यामे, किन कर्मोमे किस क्षत्रमें और किस कालमे साता असाता और किस लिंगके साथ बांध गये कम इस क्षपकके पाये जाते हैं। इस प्रकार इस मूलगाथाद्वारा पच्छा की गई ह।

आगे उत्तरस्वरूप इसकी दो भाष्यगाथाए ह। उनमेंसे १९२ सख्याक प्रथम भाष्यगाथाम बतलाया है कि सभी लेश्याओम तथा साता और असातामे पूवबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे होते हैं, क्योंकि तियञ्चो और मनुष्योक इनका सद्भाव पाये जानेमे कोई बाधा नही आती। अन्तमुहूर्तमें ये बदलते रहत ह। तथा सभी कार्यों और सभी लिंगोमें बांध गये कर्म इस क्षपकके पाये भी जाते है और नही भी पाय जाते क्योकि कर्म स्थिति कालके भीतर इस जीवके ये नियमसे होते ह ऐसा कोई नियम नहीं है। यहाँ कमसे अगारकम, वाणिज्यकम और वनकम किये गये ह। तथा लिंगसे तापस आदि अन्य लिंग लिये गये है। व कमस्थितिकालके भीतर इस जीवके नियमसे होते ह एसा भी कोई नियम नही है। इसलिये यहाँ सभी कर्मों और सभी लिंगोमे बांध गये कर्म इस क्षपकके होत भी हैं और नहीं भी होते हैं, यही बात शिल्पके सम्ब धम भी जाननी चाहिय। यहाँ जो लिंग पदसे सभी लिंगका ग्रहण किया है तो निग्र थता कोई लिंग नही है वह तो आत्माका स्वरूप ह, इसलिये लिंग पदसे यहाँ निग्र थ लिंगका ग्रहण नही होता ऐसा यहाँ समझना चाहिय। क्षत्र पदमे अधोलोक आदि तीनोका ग्रहण होता ह। सो यहाँ अधोलोक और ऊध्वलोककी अपेक्षा भजनीयता जाननी चाहिय। क्योंकि कोई जीव तियक लोकमें परे कमस्थितिकालतक रहकर अन्तम क्षपक होकर मोक्षवासी बन जाय, इन दोनों लोकोमे न जाय इसलिये इन दोनो क्षेत्रोम बांधे गये कम इस क्षपकके भजनीय रह हैं। इसी प्रकार उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालकी अपेक्षा भी समझ लेना चाहिए। विशेष वक्त य न होनेसे हम यहाँ स्पष्टीकरण नही कर रह हैं।

१९३ सख्याक दूसरी भाष्यगाथामें बतलाया गया है कि जिन तीन मूलगाथाओमें अभजनीय पूवबद्ध कर्मोका चर्चा कर आय है व इस क्षपकके सभी स्थितियोम सभी अनुभागोमें और सभी कृष्टियोम नियमसे पाय जात हैं एसा यहाँ समझना चाहिये।

आगे १९४ सख्याक सातवी मूल गाथामें दो पृच्छाएँ की गई हैं। प्रथम यह पृच्छा की गई है कि एक एक समयप्रबद्धसम्बधी कितने कमपरमाणु उदयको न प्राप्त होकर कितने स्थितिके भेदोंमें और कितने अनुभागोमें इस क्षपकके पाय जात ह। तथा दूसरी पृच्छा यह की गई है कि एक एक भवमें बांधे गये कितने कम उदयको प्राप्त हुए बिना इस क्षपकके पाये जाते है। इसप्रकार ये दो पृच्छाएँ हैं जो इस मूलगाथाद्वारा की गई हैं।

आगे चार भाष्यगाथाओं द्वारा इस विषयको स्पष्ट किया जाता है। उनमेंसे १९५ सख्याक पहली भाष्यगाथा द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि अन्तरकरण करनेके बाद छह आवलियोंमें बाँधे गये कम इस क्षपकके अनुदीरित होकर चारो कषायों सम्बन्धी सभी स्थितियों और सभी अनुभागोमें पाये जाते हैं। किन्तु भवबद्ध सभी समयप्रबद्ध इस क्षपकके उदयमें सलुब्ध रूपसे पाये जाते हैं।

१९६ सख्याक दूसरी भाष्यगाथामें बतलाया है कि बाँधे गये कमप्रदेश बन्धावलि कालतक क्रोध सज्वलनकी प्रथम कृष्टिमे ही पाये जाते हैं बन्धावलि कालतक उनका अपकर्षण और परप्रकृति सक्रम सम्भव नहीं है। हाँ बन्धावलिके बाद द्वितीयावलिमें स्थित उन नवकबन्ध कमप्रदेशोका आनुपूर्वी सक्रमके कारण क्रोध सज्वलनको प्रथम कृष्टि सहित अनन्तर चार कृष्टियोम सक्रम होकर उनका सद्भाव पाया जाता है। कारण कि बन्धावलि कालतक जो नया बन्ध हुआ है वह तदवस्थ रहता है। पुन बन्धावलि कालके बाद द्वितीयावलिमें स्थित नवकबन्ध क्रोधकी दो सग्रह कृष्टियोंमे और मानकी प्रथम सग्रह कृष्टिमें सक्रमित होता है।

१९७ सख्याक तीसरी भाष्यगाथामें बतलाया गया है कि तीसरी आवलिमे स्थित वह नवकबन्ध मानकी अन्तिम दो आवलियोमें तथा मायाको प्रथम आवलिमें सक्रमित होकर सात आवलियोमे दिखाई देता है। इसी प्रकार चौथी आवलिमें स्थित वह नवकबन्ध मायाकी दो और लोभकी प्रथम सग्रहकृष्टिम सक्रमित होकर दस आवलियोमे दिखाई देता है। तथा पाँचवी आवलिमें स्थित वह नवकबन्ध चारो कषायोकी सभी आवलियो में दिखाई देता है एसा यहाँ समझना चाहिये।

१९८ सख्याक भाष्यगाथ मे यह कहा गया है कि ये अनन्तर कहे गये समयप्रबद्ध इस भवम इस क्षपकके उदय स्थितिमें नियमसे असक्षुब्ध रहते हैं या भवबद्ध समयप्रबद्ध नियमसे सक्षुब्ध रहते हैं।

१९९ सख्याक मूलगाथामे यह जिज्ञासा प्रगट की गई है कि कितने एक और नाना समयप्रबद्ध शेष तथा नाना भवबद्ध शेष कितने स्थितिभेदों और अनुभागभेदोमें पाये जाते हैं। एक और नाना कितने समयप्रबद्ध भवबद्ध शेष एक स्थिति विशेषम पाये जाते हैं। तथा एक समयप्रबद्ध सम्बन्धी एक स्थिति विशेषम एक और नाना कितने समयप्रबद्ध शेष और भवबद्ध शेष पाये जाते है। यहाँ शेषसे मतलब भोगनेके बाद जो शेष रहे और तदनन्तर समयमें निर्लेपित (निर्जीर्ण) होनेवाले हैं उनसे है। यह अथ समयप्रबद्ध और भवबद्ध दोनोकी अपेक्षा जान लेना चाहिये। विशेष खुलासा टीकासे कर लेना चाहिये।

इसकी चार भाष्यगाथाएं हैं। २०० सख्याक प्रथम भाष्यगाथामें बतलाया है कि एक स्थिति विशेष और अनन्त अनुभागोम भवबद्ध शेष और समयप्रबद्ध शेष नियमसे पाये जाते हैं। यहाँ एक स्थिति विशेषसे मतलब एक समय अधिक उदयावलिसे ऊपर अन्यतर स्थिति विशेष लिया है। विशेष खुलासा टीकासे कर लेना चाहिये।

२०१ सख्याक दूसरी भाष्यगाथाम बतलाया है कि एक व भवबद्ध शेष और समयबद्ध शेष कमसे कम एक स्थिति विशेषमें और अधिकसे अधिक असख्यात स्थिति विशेषम पाये जाते हैं। तथा नाना भवबद्ध शेष और समयप्रबद्ध शेष जघन्यपनेकी अपेक्षा भी असख्यात स्थिति विशेषोंमें पाये जाते है।

२०२ सख्याक तीसरी भाष्यगाथामें बतलाया है कि भवबद्ध शेष और समयप्रबद्ध शेष जिन स्थितियोमे पाये जाते हैं उन सामान्य स्थितियोको छोडकर जिन स्थितियोंमे ये भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष नही पाये जाते हैं वे स्थितियाँ असामान्य स्थितियाँ होकर भी इस क्षपकके पुन पुन निरन्तररूपसे कितने कालतक पायी जाती हैं। इसका समाधान करते हुए बतलाया है कि वे असामान्य स्थितियाँ अधिकसे अधिक आवलिके असख्यातवे भाग प्रमाण होती है और पुन पुन निरन्तररूपसे पृथक्त्व कालतक पायी जाती हैं।

आगे प्रकृत विषयको स्पष्ट करते हुए बतलाया है कि एक एक करके प्राप्त होनेवाली वे असामान्य स्थितियाँ थोड़ी हैं। दो दो करके प्राप्त होनेवाली वे असामान्य स्थितियाँ विशेष अधिक हैं। इस प्रकार क्रमसे

जाते हुए वे असामान्य स्थितियाँ आवलिके असख्यातवें भागमें दूनी हो जाती हैं । यह एक अर्थ है । इसी प्रकार यहाँ आये हुए 'एक' कमेण असामण्णाओ इत्यादि चूर्णिसूत्रका दूसरा अर्थ करते हुए बतलाया है कि एक एक सामान्य स्थितिसे अन्तरित होकर उन असामान्य स्थितियोंकी शलाकायें थोडी हैं । दो दो सामान्य स्थितियोसे अन्तरित असामान्य स्थितियाँ मिलाकर विशेष अधिक हैं । तीन तीन सामान्य स्थितियोसे अन्तरित असामान्य स्थितियाँ मिलाकर विशेष अधिक हैं । इस प्रकार इस प्ररूपणामें भी आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी दूनी वृद्धि होती है । और इस प्रकार आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण द्विगुण वृद्धि होनेपर वहाँपर पहले कर आये प्ररूपणामें और इस प्ररूपणामें दोनोमें यवमध्य होता है । पुन उसके बाद विशेष हानिके क्रमसे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण स्थान जानेपर द्विगुण हानि होती है । इस प्रकार अन्तिम विकल्पके प्राप्त होनेतक द्विगुण हानियाँ होकर जाती हैं । यहाँ जसे असामान्य स्थितियोंको ध्यानमें रखकर यवमध्यकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार सामान्य स्थितियोकी विवक्षामे यवमध्यकी प्ररूपणा जाननी चाहिये ।

यहाँ जिस प्रकार सामान्य और असामान्य स्थितियोकी अपेक्षा विचार किया उसी प्रकार भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेषकी अपेक्षा भी जान लेना चाहिये । विशेष ऊहापोह मूलमे २०३ सख्याक चौथी भाष्य गाथाकी टीकामे किया हो है इसलिये इसे वहाँसे जानना चाहिये ।

यहा इन चार भाष्यगाथाओकी प्ररूपणा क्षपक श्रेणीको ध्यानमे रखकर की है । अभव्यजीवोकी विवक्षामे भी इसी प्रकार कर लेनी चाहिये । इसी प्रसगसे एक कम स्थितिके भीतर कितने निर्लेपन स्थान होते हैं इसे स्पष्ट करते हुए चूर्णिसूत्रमे बतलाया है कि इस विषयमें दो उपदेश पाये जाते हैं । एक उपदेशके अनुसार एक कमस्थितिके भीतर असख्यात बहुभागप्रमाण निर्लेपन स्थान होते हैं । इतने कैसे होते हैं इसका खुलासा करते हुए लिखा है कि जो समयप्रबद्ध विवक्षित कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बन्धको प्राप्त हुआ है उसका प्रदेशपुज बन्ध समयसे लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक नियमसे रहकर उसके अन्तिम समयमे निश्शेष हो जाता है । अथवा उससे अगले समयमें वह निःशेष हो जाता है । इस प्रकार एक एक समय अधिक होकर कर्मस्थितिके अन्तिम समयतक ये निर्लेपन स्थान होकर जाते हैं । यह एक समयप्रबद्धकी विवक्षामे कथन किया है । इसी प्रकार सभी समयप्रबद्धोके कर्मस्थितिके भीतर निर्लेपन स्थान जानने चाहिए ।

दूसरे प्रवाह्यमान उपदेशके अनुसार पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपन स्थान होते हैं । इसका खुलासा करते हुए बतलाया है कि कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो समयप्रबद्ध बन्धको प्राप्त हुआ है वह कर्म स्थितिके असख्यात बहुभागप्रमाण कालतक नियमसे रहकर उसके बाद पल्योपमके असख्यात भागप्रमाण कर्म स्थितिके शेष रहनेपर उदयको प्राप्त होकर नियमसे निर्लेपित हो जाता है । अथवा उसके अगले समयमे वह निर्लेपनको प्राप्त हो जाता है । इस प्रकार ये निर्लेपन स्थान एक एककर कर्मस्थितिके अन्तिम समयतक जाते हैं । अत ये सब मिलाकर पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । आगे जघन्य निर्लेपन स्थानसे लेकर उत्कृष्ट निर्लेपन स्थान तक जितने निर्लेपन स्थान होते हैं उनमेसे जघन्य निर्लेपन स्थानको अतीत कालमें एक जीवने कितनी बार किया है तत्सम्बन्धी जो समुदित काल है वह सबसे थोड़ा है । एक समय अधिक दूसरे निर्लेपनमें रहकर निर्लेपितपूर्व समयप्रबद्धोका यह काल समुदित होकर एक जीवकी अपेक्षा विशेष अधिक है । इसी प्रकार विशेष अधिक होता हुआ पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोके जानेपर वहाँ प्राप्त निर्लेपनस्थानका काल जघन्य निर्लेपनस्थानके कालसे दूना हो जाता है । इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विगुण वृद्धियोंके प्राप्त होनेपर यवमध्यरूपसे निर्लेपनकाल उत्पन्न होता है । किन्तु यह यवमध्यस्थान उत्पन्न होता हुआ निर्लेपनस्थान सम्बन्धी समस्त स्थानोके असख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर ही उत्पन्न हुआ है । पुन इस स्थानसे आगे निर्लेपन काल घटता हुआ जाता है ऐसा यहाँ समझना चाहिये ।

आगे समयप्रबद्ध शेष सम्बन्धी प्ररूपणा करके भवबद्धशेष सम्बन्धी प्ररूपणाको इसी प्रकारकी जाननेकी सूचना करनेके बाद भगवान यतिवृषभ आचार्यने जो यह सूचना की है कि यद्यपि प्रकृतमें यवमध्य करना चाहिये। परन्तु यहाँ छद्मस्थ होनेके कारण उसे लिखनेका स्मरण नहीं रहा। इसलिये टीकाकारका कहना है कि व्याख्यानाचार्योंको उसका व्याख्यान कर लेना चाहिये।

आगे टीकाकार इसे स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि सूत्रकार पूर्वापरक परामर्श करनेमें कुशल होते हैं इसलिए उनके द्वारा विस्मरण होना तो सम्भव नहीं। फिर भी जो यह लिखा है कि यहाँ हम लिखनेका स्मरण नहीं रहा इसलिए प्रकृतमें यवमध्य कर लेना चाहिए सो उनके ऐसा लिखनेका यह अभिप्राय रहा है कि प्रकृतमें यवमध्य सुबोध है वह विस्मरण स्वरूप नहीं है। फिर भी उसका विस्मरण हो गया ऐसा मान कर शिष्योंके प्रकृत अर्थके समर्पण करनेमें कुशल आचार्यपर उक्त दोष लागू नहीं होता क्योंकि सूत्रकारोंके कथन करनेकी शैली विचित्र अर्थात् अनेक प्रकारकी होती है। आगे उसे ही यहाँ दो उपदेशोंका अवलम्बन लेकर स्पष्ट किया गया है। मूलमें देखो पृ० १९८-२००।

आठवीं मूल गाथाकी २०० संख्याक प्रथम भाष्य गाथामें समय प्रबद्धशेष और भवबद्धशेषके स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि कर्मस्थितिके भीतर क्रमसे रचना किये जानेवाले समय प्रबद्धका वेदन करनेके बाद जो प्रदेश पुंज शेष रहकर तदनन्तर समयमें निर्लेपनके अभिमुख होकर दिखाई देता है उसकी समयप्रबद्ध शेष संज्ञा है।

यहाँ 'उदय समयमें विद्यमान' ऐसा न कह कर 'निर्लेपनके अभिमुख होकर दिखाई देता है' ऐसा कहनेका कारण यह है कि यहाँ एक स्थिति विशेषमें स्थित समयप्रबद्ध शेषका ग्रहण न करके अनेक स्थिति विशेषोंमें सान्तर और निरन्तर रूपसे अवस्थित समयप्रबद्धशेषका ग्रहण किया गया है।

यह एक समयप्रबद्धशेषकी अपेक्षा कथन जानना चाहिए। नाना समयप्रबद्धोंकी अपेक्षा भी इसी प्रकार जान लेना चाहिए। इसी प्रकार एक भव या नाना भवोंकी अपेक्षा भी जानना चाहिए। अन्तर इतना है कि समयप्रबद्धशेषके विचारमें एक या नाना समयप्रबद्धोंकी अपेक्षा विचार करनेकी मुख्यता रही है किन्तु भवबद्धशेषमें एक या नाना भवोंकी विवक्षा मुख्य रही है। यह स्थितिकी अपेक्षा विचार है। अनुभागकी अपेक्षा अनन्त अनुभागोंको ध्यानमें रख कर समयप्रबद्धशेष और भवबद्ध शेषका स्वरूप जानना चाहिए।

यह समयप्रबद्धशेष कितनी स्थितियोंमें उपलब्ध होता है इसका विचार करते हुए बतलाया है कि वह कदाचित् एक स्थिति विशेषमें उपलब्ध होता है कदाचित दो स्थिति विशेषोंमें उपलब्ध होता है। इस प्रकार क्रमसे तीन आदि स्थिति विशेषोंसे लेकर द्वितीय स्थितिके पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण सब स्थितिविशेषोंमें विवक्षित समयप्रबद्धशेष उपलब्ध होता है। यह केवल द्वितीय स्थितिसम्बन्धी सभी स्थिति विशेषोंमें ही नहीं उपलब्ध होता है। किन्तु किसी एक संज्वलनकी प्रथम स्थिति सम्बन्धी एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थितियोंको छोड़ कर शेष सब स्थितियोंमें विवक्षित समयप्रबद्धशेष अवस्थित रहता है।

एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थितियोंके निषेध करनेका कारण यह है कि उदयस्थितिमें तो समयप्रबद्धशेषकी प्राप्ति सम्भव नहीं है क्योंकि वह अनन्तर समयमें निर्लेप्यमानस्वरूप है। अतः उसका उसी समय निर्लेप्यमान स्वरूप माननेमें विरोध आता है। उदयावलिके बाहर प्रथम स्थितिमें भी उसका अवस्थित रहना सम्भव नहीं है क्योंकि उस स्थितिमें रहने वाला प्रदेशपुंज अनन्तर समयमें नियमसे उदयावलिमें प्रवेश करनेवाला है। अतः उस समय उसका अपकर्षण होकर उदयमें निक्षिप्त होना सम्भव नहीं है। इसी प्रकार उदयावलिके भीतर शेष स्थितियोंमें भी उसके असम्भव होनेका नियम जानना चाहिए। इतना अवश्य है कि उदयस्थितिसे अनन्तर जो द्वितीय स्थिति है उसमें समय प्रबद्ध शेष अवश्य सम्भव है, क्योंकि अनन्तर समयमें वह उदयरूप होकर निर्लेपनके सम्मुख दिखाई देती है।

आगे ८वीं मूलगाथाकी २०२ संख्याक तीसरी भाष्यगाथामें सामान्यसंज्ञा और असामान्य संज्ञाका विचार करते हुए बतलाया है कि जिस किसी एक स्थिति विशेषमें जो भवबद्ध शेष और समयप्रबद्ध शेष सामान्य नहीं होते हैं उनकी असामान्य संज्ञा है। वे असामान्य स्थितिविशेष परस्पर संलग्न होकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं और वे वर्ष पृथक्त्वकालके भीतर आवलिके असंख्यातवें भाग बार पुनः पुनः निरन्तर पाये जाते हैं। इस प्रकार सामान्य संज्ञा और असामान्य संज्ञाकी अपेक्षा स्थितिविशेषका विचार करनेके बाद आगे वर्षपृथक्त्व प्रमाण स्थितिके भीतर किस रूपमें ये पाये जाते हैं और किस स्थानपर जाकर यवमध्य होता है आदिका विशेष विचार पहले ही कर आये हैं। आगे अन्य उपयोगी विचारके बाद निर्लेपन स्थान आदिके आश्रयसे अल्पबहुत्वका विचार करनेके बाद ८वीं मूल गाथा और उसकी भाष्यगाथाओंकी व्याख्या समाप्त की गई है। आगे २०४ संख्याक ९वीं मूलगाथाका व्याख्यान करते हुए बतलाया है कि इस द्वारा कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें ज्ञानावरणादि कर्मोंके स्थिति और अनुभागसत्कर्म कितना होता है। साथ ही उनके बन्ध और उदयका भी विचार स्थिति और अनुभागकी अपेक्षा इस मूल गाथा द्वारा किया गया है।

इसकी दो भाष्यगाथाएं हैं। २०५ संख्याक प्रथम भाष्यगाथामें बतलाया है कि कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्ष प्रमाण होता है। तथा शेष चार घाति कर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात वर्षप्रमाण होता है। विशेष इतना है कि उस समय मोहनीयकर्मका स्थिति सत्कर्म आठ वर्ष प्रमाण होनेसे संख्यात वर्ष प्रमाण कहा गया है।

२०६ संख्याक दूसरी भाष्यगाथाका स्पष्टीकरण करते हुए बतलाया गया है कि उस अवस्थामें सातावेदनीय शुभनाम यशःकीर्ति और उच्चगोत्रका शत सहस्र वर्ष प्रमाण स्थितिबन्ध करता है। ज्ञानावरण दर्शनावरण और अन्तरायका संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबन्ध करता है। तथा मोहनीय कर्मका चार माहप्रमाण स्थितिबन्ध करता है।

अनुभागबन्धका विचार करते हुए बतलाया है कि सातावेदनीय यशःकीर्ति और उच्चगोत्रका आदेश उत्कृष्ट या ईषत् उत्कृष्ट अनुभागबन्ध होता है। तथा तीन घातिकर्मों और मोहनीय कर्मका क्षपकप्रायोग्य जघन्य अनुभागबन्ध होता है।

पहले क्षपकके प्रायोग्य ११ मूल गाथाएं कही थीं उनमेंसे ९ गाथाओंका व्याख्यान किया। प्रकृतमें अन्तकी शेष दो गाथाएं स्थापित की जा रही हैं क्योंकि ये कृष्टि वेदकके कालमें सम्बद्ध हैं। इन दो गाथाओंके अतिरिक्त अन्य गाथाओंका सम्बन्ध कृष्टिवेदक कालसे आता है इसलिये उनका यहाँ व्याख्यान क्यों किया ऐसा प्रश्न होनेपर प्रकृतमें समाधान करते हुए बतलाया है कि उनका सम्बन्ध कृष्टिवेदक कालके साथ होकर भी कृष्टिकरण कालके साथ भी आता है, इसलिये उनका सामान्य नाम कालके साथ करनेमें कोई बाधा नहीं आती।

आगे कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें स्थिति और अनुभागकी अपेक्षा सत्त्व और बन्ध कितना होता है इसका उल्लेख करनेके बाद अनुभागका विचार करते हुए बतलाया है कि यहाँसे लेकर मोहनीय कर्मोंके अनुभागको प्रति समय अनन्त गुणहानिरूपसे अपवर्तने होने लगती है। खुलासा इस प्रकार है—

कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें क्रोधकृष्टि उदयमें उत्कृष्ट बहुत होती है। अर्थात् इस समय जिन अनन्त मध्यम कृष्टियोंका उदयमें प्रवेश होता है उनमेंसे जो सबसे उपरिम उत्कृष्ट कृष्टि है वह बहुत अर्थात् तीव्र अनुभाग वाली होती है। तथा उस समय बध्यमान जो अनन्त कृष्टियाँ होती हैं उनमें जो सबसे उत्कृष्ट होती है वह उदयकी अपेक्षा अनन्तगुणी हीन अनुभागवाली होती है। इसके आगे बन्धको प्राप्त होनेवाली क्रोध कृष्टिसे दूसरे समयमें उदयको प्राप्त होनेवाली प्रथम समयमें उत्कृष्ट क्रोध कृष्टि अनन्त गुणी हीन होती है। तथा उससे बन्धकी अपेक्षा उत्कृष्ट क्रोधकृष्टि अनन्तगुणी हीन होती है। इसी प्रकार समस्त वेदककालके भीतर जानना चाहिये।

यह उत्कृष्ट क्रोधकृष्टिकी अपेक्षा विचार है। जघन्यकी अपेक्षा विचार करते हुए बतलाया है कि प्रथम समयमें बन्धमें जघन्य क्रोधकृष्टि तीव्र अनुभागवाली होती है। उसकी अपेक्षा उदयमें जघन्य कृष्टि अनन्तगुणे हीन अनुभागवाली होती है। दूसरे समयमें बन्धमें जघन्य कृष्टि प्रथम समयमें उदयरूप जघन्य कृष्टिकी अपेक्षा अनन्तगुणी हीन होती है। उससे उसी समय उदयमें जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी हीन होती है। इसी प्रकार समस्त कृष्टि वेदककालके भीतर जानना चाहिये।

यहाँ जो निवर्गणाको भी इसी प्रकार जाननेका विधान किया है सो उसका आशय इतना ही है कि बन्ध और उदयरूप जघन्य कृष्टियोंकी अपेक्षा अनन्तगुणी हानि रूपसे जो अपसरण विकल्प होते हैं उन्हें यहाँ जघन्य निवर्गणा कहकर इसी प्रकार जाननेकी सूचना की है।

यह क्रोधसंज्वलन सम्बन्धी बन्ध और उदयरूप जघन्य और उत्कृष्ट कृष्टियोंकी निवर्गणा प्ररूपणा क्रोध संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी अपेक्षा की गई है। यहाँ इतना विशेष जानना कि कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें मान संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका उदय नहीं होता। मात्र बन्ध ही होता है और वह भी अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भागको छोड़कर मध्यम बहुभाग रूपसे प्रवृत्त होता हुआ प्रतिसमय अनन्तगुणहानि रूपसे ही प्रवृत्त होता है। यहाँ प्रथम समयमें क्रोध और मान संज्वलनकी शेष संग्रह कृष्टिका बन्ध नहीं होता। माया और लोभ संज्वलनके विषयमें भी इसी प्रकार जानना चाहिये। अर्थात् इन दोनों कषायोंकी प्रथम संग्रह कृष्टियोंके अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भागको छोड़कर मध्यम बहुभाग रूपसे ही बन्धकी वृत्ति होती है।

यह तो बन्ध और उदयकी अपेक्षा विचार है। सत्त्वकी अपेक्षा अनुभागका विचार करनेपर वह प्रतिसमय अपवर्तनारूपसे किस प्रकार प्रवृत्त होता है इसका विचार करते हुए बतलाया है कि बारह कृष्टियाँकी जो अग्र कृष्टि है उससे लेकर एक एक संग्रहकृष्टिके असंख्यातवें भागप्रमाण अनन्त कृष्टियोंका अपवर्तना घातके द्वारा घात करके अनन्तर कृष्टिरूपमें उन्हें स्थापित करता है। इसी प्रकार द्वितीयादि समयोंमें भी यह अपवर्तना चलती ही रहती है। मात्र प्रथम समयमें जितनी कृष्टियोंका विनाश होता है उनसे आगे द्वितीयादि समयोंमें असंख्यात गुणहानिरूपसे उनका विनाश होता है।

इस प्रकार यह कृष्टियोंकी प्रतिसमय अपवर्तना करता हुआ कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें ही आरम्भ करके कृष्टिकरण कालमें पहले निष्पन्न की गई कृष्टियोंके नीचे और उनके अन्तरालोंमें अन्य अपूर्व कृष्टियोंको जिस विधिसे निष्पन्न करता है उसका खुलासा इस प्रकार जानना चाहिये—

(१) क्रोध संज्वलनकी बध्यमान प्रथम संग्रह कृष्टिसे अपूर्व कृष्टियोंकी रचना नहीं होती।

(२) क्रोध संज्वलनकी बध्यमान प्रथम संग्रह कृष्टिसे अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता हुआ प्रथम संग्रह कृष्टिके अन्तरालोंमें उन्हें निष्पन्न करता है।

(३) शेष ११ संग्रह कृष्टियोंके संक्रम्यमाण प्रदेशोंके अग्रभाग से अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता है।

(४) तथा मान माया और लोभ सम्बन्धी बध्यमान, तीन संग्रहकृष्टियोंके प्रदेशोंके अग्रभागसे अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता है।

इसप्रकार इन अपूर्वकृष्टियोंकी निष्पत्ति कैसे होती है इसका यह विचार है। आगे अल्पबहुत्वका विचार करते हुए बतलाया है कि—

(५) जो बध्यमान संग्रहकृष्टियोंके प्रदेशोंके अग्रभागसे अपूर्व कृष्टियोंकी रचना होती है वे अल्प होती हैं।

(६) तथा जो संक्रम्यमाण संग्रहकृष्टियोंके प्रदेशाग्रसे अपूर्व कृष्टियोंकी निष्पत्ति होती है वे असंख्यातगुणी होती हैं।

(७) जो बध्यमान संग्रहकृष्टियोंके प्रदेशाग्रसे अपूर्व कृष्टियोंकी निष्पत्ति होती है वे चारों बध्यमान संग्रहकृष्टियोंमें ही पायी जाती हैं, क्योंकि उस समय अन्यसंग्रहकृष्टियोंका बन्ध नहीं होता।

(८) बध्यमान संग्रहकृष्टियोंसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियां असंख्यात कृष्टियोंको उल्लंघन कर पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण कृष्टि अन्तरालों में निष्पन्न होकर प्राप्त होती हैं । पुन इतने ही अन्तरालोंको उल्लंघन कर दूसरी अपूव कष्टि निष्पन्न होकर प्राप्त होती है । इस प्रकार क्रमसे इतने इतने अंतरालोंको उल्लघन कर ही अपूव कष्टियोंकी निष्पत्ति होकर प्राप्ति जानना चाहिय । यहाँ क्रोध सज्वलन की अपेक्षा विचार है इसी प्रकार मान माया और लोभ सज्वलन की अपेक्षा भी जानना चाहिय ।

प्रदेशोंकी अपेक्षा इन कृष्टियोंमें प्राप्त होने वाले प्रदेश-पुजके अल्प बहुत्वकी अपेक्षा विचार करने पर बध्यमान जघन्य कष्टिमे बहुत प्रदेश पुज होता है । दूसरी कष्टिमें अनन्तवा भाग विशेष हीन प्रदेश पुज है । तीसरी कष्टिम अनन्तवा भाग विशेष हीन प्रदेश पुज होता है । इस प्रकार बध्यमान अतिम अपूव कष्टिके प्राप्त होने तक जानना चाहिये ।

(९) सक्रम्यमाण प्रदेशपुजसे जो अपूर्व कष्टियां निपजती हैं वे कष्टि अतरालोम और सग्रह कष्टि अतरालोम निपजती है । जो सग्रह कष्टि अतरालोमे निपजती हैं वे थोडी होती हैं । जो कष्टि-अतरालोमें निपजती ह वे असख्यात गुणी होती है । सग्रह कष्टि-अतरालो म उत्प न होने वाली अपूर्व कृष्टियो की बिधि कष्टिकरणके समय निष्प न होन वाली अपूव कृष्टियोकी विधि जैसी कही है वसी जानना चाहिये । कष्टि अतरालोमें निष्पन्न होन वाली कष्टियों की विधि बध्यमान प्रदेशपुजसे निष्पन्न हानेवाली अपूव कष्टियोकी विधि जैसी कही ह वैसी जाननी चाहिये ।

(१०) कष्टि-वेदक के प्रथम समयमें क्रोध सज्वलनकी प्रथम सग्रह कष्टिके असख्यातवें भागका विनाश होता है । जो कष्टियाँ प्रथम समयमें विनाश को प्राप्त होती हैं वे बहुत होती हैं । जो कष्टियाँ दूसरे समय में विनाशको प्राप्त होती ह वे असख्यात गुणी हीन होती हैं । उसीप्रकार क्रोध सज्वलन की प्रथम सग्रह कष्टिके द्विचरम समय तक जानना चाहिये ।

(११) इस प्रकार क्रोध सज्वलन की प्रथम कष्टि के वेदन करनवाले जीवके जब एक समय अधिक एक आवली काल शष रहता है उस समय यह जीव (१) क्रोध सज्वलनकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है । (२) क्रोध सज्वलन की प्रथम कष्टि का अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है । (३) सज्वलन चतुष्कके अनुभाग सत्कमको जो अनुसमय अपवर्तना प्रवृत्त हुई थी वह उसी प्रकारसे प्रवत होती रहती ह (४) चार सज्वलनोका स्थितिबध दो महीना और अन्तमहूर्त कम चालिस दिवस प्रमाण होता ह । (५) चारो सज्वलनों का स्थिति सत्कम छह वष और अन्तमहूर्त कम आठ माह प्रमाण होता ह । (६) तीन घातिया कर्मों का स्थितिबध अन्तमहूत कम दस वष प्रमाण होता है । (७) घातिकर्मोंका स्थितिसत्कम सख्यात वषप्रमाण होता है । (८) शेषकर्मोंका स्थितिसत्कम असख्यात वषप्रमाण होता है ।

(१२) तदनन्तर क्रोधसज्वलनकी दूसरी कष्टिको प्रदेशपुजका अपकषण करके प्रथम स्थिति करता है । उस समय क्रोधकी प्रथम सग्रह कष्टिका सत्कम दो समयकम दो आवलि प्रमाण नवकब ध शेष रहता है और जो उदयावलि प्रविष्ट द्रव्य है वह शेष रहता है । तथा उस समय यह क्षपक क्रोधसज्वलनकी दूसरी सग्रहकष्टिका वदक होता है । सो इसकी विधि पहली सग्रहकष्टिके वेदक जीवके समान जाननी चाहिये ।

अब यहाँ पर सक्रम्यमाण प्रदेशपुजकी विधिको बतलाते हुए लिखा ह कि क्रोधसज्वलनकी दूसरी सग्रहकष्टिसे प्रदेशपुज क्रोधकी तीसरी सग्रहकष्टिमें और मानकी प्रथम सग्रहकष्टिमे सक्रमित होता है । तथा क्रोधकी तीसरी सग्रह कष्टिका प्रदेशपुज मानकी प्रथम सग्रहकष्टिमें ही सक्रमित हाता है ।

मानकी प्रथम सग्रह कृष्टिका प्रदेशपुज मानकी दूसरी और तीसरी सग्रह कृष्टिमें तथा मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिमे सक्रमित होता है । मानकी दूसरी सग्रह कृष्टिका प्रदेशपुज मानकी तीसरी और मायाकी प्रथम सग्रह कृष्टिमे सक्रमित होता है । तथा मानकी तीसरी सग्रह कृष्टिका प्रदेशपुज मायाकी प्रथम सग्रह कृष्टिमे सक्रमित होता है ।

मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज मायाकी दूसरी और तीसरी संग्रह कृष्टिमें तथा लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होता है। मायाकी दूसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज मायाकी तीसरी और लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होता है। तथा मायाकी तीसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होता है।

लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज लोभकी दूसरी और तीसरी संग्रह कृष्टियोंमें संक्रमित होता है। तथा लोभकी दूसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज लोभकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होता है। लोभकी तीसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज किसी अन्यमें संक्रमित न होकर उसका स्वमुखसे ही विनाश होता है।

यह संक्रमणकी परिपाटी क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदक कालके समय भी होती है ऐसा यहाँ जानना चाहिये। साथ ही यह भी एक नियम है कि जिस समय जिस कषायकी जिस संग्रह कृष्टिका वेदन करता है उस समय उस कषायकी उस संग्रह कृष्टिका बन्ध करता है तथा शेष कषायोंकी प्रथम संग्रहकृष्टिका बन्ध करता है।

क्रोधकी दूसरी संग्रहकृष्टिका वेदन करने वाले क्षपक जीवके जो ११ संग्रहकृष्टियाँ होती हैं उनमें अन्तर कृष्टियोंका अल्पबहुत्व किस प्रकार होता है इसे स्पष्ट करते हुए बतलाया है कि मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ सबसे थोडी होती हैं। मानकी दूसरी संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। मानकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। मायाकी दूसरी संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। मायाकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। लोभकी दूसरी संग्रहकृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। लोभकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक होती हैं। क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिमें दूसरी अन्तर कृष्टियाँ संख्यातगुणी होती हैं। इनमें प्राप्त होनेवाले प्रदेशपुंजका अल्पबहुत्व भी इसी प्रकार जानना चाहिये।

क्रोधसंज्वलनकी दूसरी कृष्टिका वेदन करनेवाले जीवके जो प्रथम स्थिति होती है उसमें आवलि प्रत्यावलि प्रमाण काल शेष रहनेपर आगाल और प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति हो जाती है। तथा उसकी एक समय अधिक प्रथम स्थितिके शेष रहने पर क्रोधकी द्वितीय कृष्टिका अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है। उस समय संज्वलनोंका स्थितिबंध दो माह और कुछ कम बीस दिवस प्रमाण होता है। तीन घातिकर्मोंका स्थितिबंध वर्षपृथक्त्व प्रमाण होता है। शेष कर्मोंका स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है। संज्वलनोंका स्थिति सत्कर्म पाँच वर्ष और अन्तर्मुहूर्त कम चार माह प्रमाण होता है। तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है। नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म असंख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है।

उसके बाद अनन्तर समयमें क्रोधकी तीसरी कृष्टिमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। उस समय क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियोंका असंख्यात बहुभाग उदीर्ण होता है। तथा उन्हीके असंख्यात बहुभागका बंध करता है। इसकी विधि दूसरी कृष्टिका वेदन करने वालेके समान जानना चाहिये। इसकी प्रथम स्थिति आवलि और प्रत्यावलि प्रमाण शेष रहनेपर वह अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है। उस समय वह जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। उस समय संज्वलनोंका स्थिति बन्ध पूरा दो माह प्रमाण होता है। तथा सत्कर्म पूरा चार माहप्रमाण होता है।

तदनन्तर समयमें मानकी प्रथम कृष्टिका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। यहाँपर मान वेदक का जो सम्पूर्ण काल है उस कालके तृतीय भाग प्रमाण प्रथम स्थिति होती है। उसके बाद मानकी प्रथम कृष्टिका वेदन करने वाला वह जीव उस प्रथमकृष्टिकी अन्तर कृष्टियोंके असंख्यात बहुभागका वेदन करता

है तथा जितनी कृष्टियोका वेदन करता है उनसे कुछ हीन कृष्टियोंका बन्ध करता है। तथा शेष कषायोकी प्रथम संग्रहकृष्टियोंका बन्ध करता है। इसकी विधि भी क्रोधकी प्रथम कृष्टिके समान जाननी चाहिये। इसकी प्रथम स्थिति जब एक समय अधिक एक आवलि प्रमाण शेष रह जाती है तब तीनो संज्वलनोका स्थितिबन्ध एक महीना और अन्तर्मुहूर्त कम बीस दिवस प्रमाण होता है। तथा स्थितिसत्कर्म तीन वर्ष और अन्तमुहूत कम चार माह प्रमाण होता है।

तदनन्तर समयमें मानकी दूसरी संग्रहकृष्टिमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। इसकी भी विधि पूर्वके समान जानना चाहिये। जब कि इस प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहता है तब सज्वलनोंका स्थितिबन्ध एक माह और कुछ कम दस दिवस प्रमाण होता है। और सत्कम दो वर्ष तथा कुछ कम आठ माह प्रमाण होता है। उसी समय यह मानका अन्तिम समयवृत्ती वेदक होता है। तब तीनो सज्वलनोंका स्थितिबध पूरा एक माह प्रमाण होता है। तथा स्थिति सत्कर्म पूरा दो वर्ष प्रमाण होता है।

इसके बाद तदनन्तर समयमें मायाका प्रथम संग्रह कृष्टिके प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। इसको प्रथम स्थितिमे एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने तक वही विधि जाननी चाहिये। उस समय दो सज्वलनोंका स्थितिबन्ध कुछ कम पचीस दिवस प्रमाण होता है। तथा स्थिति सत्कर्म एक वर्ष और कुछ कम आठ माह प्रमाण होता है।

तदनन्तर समयमें मायाकी दूसरी संग्रहकृष्टिका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। इसके एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहने तक वही विधि जाननी चाहिये। उस समय इसका स्थितिबन्ध कुछ कम बीस दिवस प्रमाण होता है तथा स्थिति सत्कम कुछ कम सोलह माह प्रमाण होता है।

तदनन्तर मायाको तीसरी संग्रहकृष्टिका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। उसकी प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिकाल शेष रहने तक पूर्ववत् विधि जाननी चाहिये। उस समय मायाका अन्तिम समय वेदक होता है। तब दो सज्वलनोका स्थितिबध पूरा आधा माहप्रमाण होता है तथा स्थिति सत्कर्म पूरा एक वर्ष प्रमाण होता। तीन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध माहपृथक्त्व प्रमाण होता है तथा उन्हीका स्थितिसत्कम सख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है। शेष कर्मोंका स्थिति सत्कर्म असख्यात वर्ष प्रमाण होता है।

तदनन्तर समयमें लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमेंसे प्रदेश पुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। इसकी प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिकाल शेष रहने तक वही विधि जाननी चाहिये। उस समय लोभ सज्वलनका स्थितिबध अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। तथा स्थितिसत्कम भी अन्तमुहूत प्रमाण होता है। इन घाति कर्मोंका स्थितिबंध दिवसपृथक्त्व प्रमाण होता है। शेष कर्मोंका स्थितिबन्ध वर्षपृथक्त्व प्रमाण होता है। घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म सख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है तथा शेष कर्मोंका स्थिति सत्कर्म असख्यात वर्षप्रमाण होता है।

तदनन्तर समयमें लोभकी दूसरी संग्रहकृष्टिमेंसे प्रदेश पुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति करता है। उसी समय लोभकी दूसरी और तीसरी संग्रहकृष्टियोमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको करता है। उनको लोभकी तीसरी संग्रहकृष्टिके नीचे करता है तथा क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि जिस प्रकारकी है उसी प्रकारकी इसे जानना चाहिये।

इसके बाद प्रथम समयमें की गई सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियाँ कितनी होती हैं और प्रथमादि समयोमें वे कितनी की जाती हैं अल्पबहुत्वविधिसे इसका निर्देश करके उनमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजका निर्देश किया

गया है। आगे श्रेणिप्ररूपणाका कथन करते हुए बतलाया है कि अन्तिम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिसे बादर-साम्परायिक कृष्टिमें दिया जानेवाला प्रदेशपुंज असंख्यातगुणा हीन होता है। उसके बाद सर्वत्र विशेष हीन द्रव्य देता है।

दूसरे समयोंमें सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको करनेवाला क्षपक असंख्यातगुणी हीन सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको करता है। उन्हें प्रथम समयमें की गई कृष्टियोंके नीचे करता है और अन्तरालमें करता है। नीचे की गई कृष्टियोंसे अन्तरालमें असंख्यातगुणी कृष्टियोंको करता है। जो दूसरे समयमें जघन्य सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टि है उसमें बहुत प्रदेशपुंज देता है। दूसरी कृष्टिमें अनन्तभागहीन प्रदेशपुंज देता है। इस प्रकार जाकर प्रथम समयमें जो जघन्य सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि है उसमें असंख्यात भागहीन द्रव्यको देता है। उसके आगे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टिके प्राप्त होनेतक अनन्तभागहीन द्रव्य देता है। तथा निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टिमें असंख्यात भाग अधिक द्रव्य देता है। पहले निर्वर्तित कृष्टिमें प्रतिपद्यमान प्रदेशपुंज असंख्यात भागहीन होता है। आगे अनन्तभागहीन जानना चाहिये। दूसरे समयमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजकी जो विधि बतलाई है वही विधि बादरसाम्परायिकके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक दिये जानेवाले द्रव्यकी सब समयोंमें जाननी चाहिये।

आगे इसके कृष्टियोंमें मिलनेवाले प्रदेशपुंजकी प्ररूपणा आदि करके लोभकी अन्तिम बादरसाम्परायिक कृष्टिमेंसे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिमें जो प्रदेशपुंज संक्रमित होता है वह सबसे थोड़ा है। लोभकी दूसरी कृष्टिमेंसे अन्तिम बादर साम्परायिक कृष्टिमें जो प्रदेशपुंज संक्रमित होता है वह संख्यातगुणा है। लोभकी दूसरी कृष्टिमेंसे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह संख्यातगुणा है।

कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें क्रोधकी दूसरी कृष्टिमेंसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह सबसे थोड़ा है। क्रोधकी तीसरी कृष्टिमेंसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। मानकी प्रथम कृष्टिमेंसे मायाकी प्रथम कृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। मानकी दूसरी संग्रह कृष्टिमेंसे मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। मानकी तीसरी संग्रह कृष्टिमेंसे मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टियोंमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिमेंसे लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। मायाकी दूसरी संग्रह कृष्टिमेंसे लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। मायाकी तीसरी संग्रहकृष्टिमेंसे लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। लोभकी ही प्रथम संग्रहकृष्टिमेंसे लोभकी दूसरी संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। लोभकी ही प्रथम संग्रह कृष्टिमेंसे उसीकी तीसरी संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक है। क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिमेंसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह संख्यातगुणा है। क्रोधकी ही प्रथम संग्रह कृष्टिमेंसे क्रोधकी ही तीसरी संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह विशेष अधिक होता है। क्रोधकी ही प्रथम संग्रह कृष्टिमेंसे क्रोधकी ही दूसरी संग्रहकृष्टिमें जो द्रव्य संक्रमित होता है वह संख्यातगुणा होता है। यह प्रदेशसंक्रम यद्यपि पहले आ चुका है परन्तु सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंका आधार होनेसे यहाँ कहा गया है।

सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें प्रथम समयमें जो द्रव्य दिया जाता है वह सबसे थोड़ा है। दूसरे समयसे लेकर अन्तिम समय तक उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा द्रव्य दिया जाता है। इस क्रमसे लोभकी दूसरी संग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपकके जब प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रह जाता है तब वह क्षपक अन्तिम समयवर्ती बादर साम्परायिक होता है। और उसी समय लोभकी अन्तिम समयवर्ती बादर साम्परायिक कृष्टि संक्रमित होती हुई संक्रमित हो जाती है। तथा लोभकी दूसरी

सग्रहकृष्टिके भी एक समय दो आवलिप्रमाण नवकबन्ध और उदयावलिप्रविष्ट हुए द्रव्यको छोड़कर दूसरी सग्रहकृष्टिमें शेष सब अन्तरकृष्टियाँ सक्रमित होती हुई सक्रमित हो जाती हैं। उसी समय लोभसज्वलनका स्थितिबन्ध अन्तमुहूतप्रमाण होता है। तीनघातिकर्मोंका स्थितिबन्ध दिन रातके भीतर होता है। तथा नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मका स्थितिबन्ध एक वर्षके भीतर होता है। अन्तिम समयवर्ती बादरसाम्परायिकके मोहनीयका स्थितिसत्कम अन्तमहूर्त प्रमाण होता है। तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म सख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है। तथा नाम गोत्र और वेदनीयकर्मका स्थितिसत्कम असख्यात वर्षप्रमाण होता है।

तदन तर समयम यह जीव सूक्ष्मसाम्परायिक हो जाता है। उसी समय सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंकी जो स्थितियाँ हैं उन्हें बाण्क घातक लिय ग्र ण करता है। अत प्रदेशपुजका अपकषण करके उदयम थोडा न्र देता ह। इस प्रकार अ तमुहूत कालतक उत्तरोत्तर असख्यातगुणा असख्यातगुणा देता है।

उस समय जो गुण श्रणि निक्षप करता ह उसका काल सूक्ष्मसाम्परायिकके कालसे कुछ अधिक होता ह। तथा गणश्रणिशाषसे जा अन तर स्थिति ह उमम असख्यातगुणा द्रव्य देता ह। उसके आगे पूव समयमे अ तर था उस अ तरकी अ तिम स्थितिके प्राप्त होने तक विशेष ही द्रव्य देता ह। उसके बाद पूवकी प्रथम स्थितिम दिय जानवाला द्रव्य सख्यातगणा हीन होता ह। उसके बाद क्रमस विशष हीन द्रव्य प्रत्येक स्थितिम दता हुआ वहाँ तक ग्ता जाता ह जहाँ जाकर जो स्थिति प्राप्त होती है उससे आग एक समय अधिक एक आवलि प्रमाण स्थिति शेष रह जाती ह। अर्थात् अन्तिम जिस स्थितिके द्रव्यका अपकषण करता ह उसमे नही दता और उसस नीचे अतिस्थापना एक आवलिप्रमाण स्थितिम नही दता। शेष सब स्थितियोम देता ह। इस प्रकार प्रथम स्थितिकाण्डकके निर्लेपित होनतक यही क्रम जानना चाहिय।

दूसर स्थितिकाण्डकमे अपकषण करके जो प्रदेशपुज उदयम दिया जाता है वह सबसे थोडा होता ह। इसक बाद गणश्रणाशीषम उपरिम अन तर एक स्थितिके प्राप्त होनेतक असख्यात गुणश्रणीरूपसे प्रदेशपुजको दता ह। उसके बाद विशेषहीन क्रमसे दता ह। यहाँसे लेकर सूक्ष्मसापरायिक क्षपकके जबतक मोहनीय कमका स्थितिघात होता ह तबतक यही क्रम जानना चाहिये। इसके बाद दिखाई देनवाले प्रदेशपुजकी प्ररूपणा करके सूक्ष्मसापरायिक क्षपकक प्रथम स्थितिकाडकक प्रथम समयम निर्लेपित होनपर गुणश्रणीको छोड़कर शेष स्थितियाम एक गापुच्छा किस प्रकारसे हो गई ह इसे स्पष्ट करत हुए अल्पबहुत्व द्वारा बतलाया है कि सूक्ष्म साम्परायिकका काल सबस थाडा ह। उसस प्रथम समयम सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके मोहनीयका गुणश्रणी निक्षप विशेष अधिक ह। उसमे अ तर स्थितियाँ सख्यातगुणा ह। उससे सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके मोहनीयका प्रथम स्थितिकाण्डक सख्यात गणा ह। उससे प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके मोहनीयका स्थिति सत्कम सख्यात गणा ह।

इस प्रकार लोभकी दूसरी कृष्टिका वदन करनेवाले क्षपककी जो प्रथम स्थिति होती है उस प्रथम स्थितिका जब तीन आवलिप्रमाण काल शष रहता ह तबतक लोभकी दूसरी कृष्टिसे लोभकी तीसरी कृष्टिम प्रदशपुज सक्रमित होता रहता है। उसस आग सक्रमित नही होता किन्तु सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंम समस्त प्रदेशपुजको सक्रमित करता ह।

लोभकी दूसरी कृष्टिका वदन करनवाले क्षपक जीवके जो प्रथम स्थिति है उसम एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल शेष रहनेपर उस समय जो लोभकी तीसरी कृष्टि है वह पूरी ही सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें सक्रमित हो जाती ह। उस समय यह क्षपक जीव अन्तिम समयवर्ती बादरसाम्परायिक होकर मोहनीय कर्मका अन्तिम समयवर्ती बन्ध करनेवाला होता है।

तथा तदनन्तर समयमें यह क्षपक जीव प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक हो जाता है। उस समय सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोके असख्यात बहुभागकी उदीरणा करता है। आगे अल्पबहुत्वका कथन करते हुए

बतलाया है कि नीचेकी अनुदीर्ण हुई सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियाँ सबसे थोडी हैं । ऊपरकी अनुदीर्ण हुई सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं । मध्यमें उदीर्ण हुई सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियाँ असख्यातगुणी है । इस प्रकार सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके सख्यात हजार स्थितिकाण्डकोके व्यतीत होनेपर मोहनीयका जो अंतिम स्थितिकाण्डक है उसके उत्कीर्ण किये जानपर मोहनीय कमका जो गुणश्रेणी निक्षप है उसके अग्राग्रसे सख्यातवें भागको ग्रहण करता है । इस प्रकार उस स्थिति काण्डकके उत्कीर्ण होनेपर उसके बाद मोहनीय कमका स्थितिकाण्डकघात नही होता । तथा उस समय सूक्ष्मसाम्परायिक जितना काल शेष रहता है मोहनीय कमका स्थिति सत्कम उतना ही शेष रहता है जो क्रमसे निजराको प्राप्त हो जाता है ।

●

विषय-सूची

■

सिरि-जइवसहाइरियविरइय-चुण्णिसुत्तसमण्णिद

सिरि-भगवतगुणहरभडारओवइट्ठ

कसायपाहुडं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरियविरइया टीका

जयधवला

तत्थ

चारित्तमोक्खवणा णाम पचदसमो अत्थाहियारो

□

* एत्तो से काले प्पहुडि किट्टीकरणद्धा ।

§ १ एत्तो अस्सकण्णकरणद्धासमत्तीदो उवरिमाणंतरसमयप्पहुडि किट्टीकरणद्धा होदि । तिस्से परूवणमिदाणि कस्सामो त्ति वुत्त होइ । सपहि एदिस्से अद्धाए पमाणावहारणट्ठमुत्तर सुत्तावयारो—

* छसु कम्मेसु सतेस सछुद्धेसु जा कोधवेदगद्धा तिस्से कोधवेदगद्धाए तिण्णि भागा । जो तत्थ पढमतिभागो अस्सकण्णकरणद्धा, विदियो तिभागो किट्टीकरणद्धा, तदियतिभागो किट्टीवेदगद्धा ।

§ २ पुरिसवेदचिराणसतकम्मेण सह छसु कम्मेसु सछुद्धेसु तत्तो प्पहुडि उवरिमा कोधवेदगद्धा तिस्से तिसु भागेसु कदेसु तत्थ जो पढमतिभागो सो अस्सकण्णकरणद्धासरूवेण परूविदो, विदियतिभागो एसो किट्टीकरणद्धासरूवेण एण्हि पयट्टदे । तदियतिभागो वि उवरि

---

* यहाँसे आगे तदनन्तर समयसे लेकर कृष्टिकरण काल होता है ।

§ १ 'एत्तो' अर्थात् अश्वकर्णकरण कालके समाप्त होनेसे उपरिम अनन्तर समयसे लेकर कृष्टिकरण काल होता है । अत इस समय उसकी प्ररूपणा करेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब इस कालके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

* छह नोकषायोंके सक्रमण होनेपर जो क्रोधवेदककाल है उस क्रोधवेदक कालके तीन भाग हैं । उनमें जो प्रथम त्रिभाग है वह अश्वकर्णकरणकाल है, दूसरा त्रिभाग कृष्टिकरणकाल है और तीसरा त्रिभाग कृष्टिवेदककाल है ।

§ २ पुरुषवेदके पुराने सत्कर्मके साथ छह कर्मोंके सक्रमित होनेपर उससे आगे जो क्रोध वेदककाल है उसके तीन भाग करनेपर उनमें जो प्रथम त्रिभाग है वह अश्वकर्णकरणकाल रूपसे कहा गया है दूसरा त्रिभाग यह कृष्टिकरण काल रूपसे इस समय प्रवृत्त है तथा तीसरा त्रिभाग भी

किट्टीवेदगद्धासरूवेण पवत्तिहिदि त्ति सुत्तत्थसमुच्चओ। एदाओ तिण्णि वि अद्धाओ सरिसीओ ण होंति, किंतु पढमतिभागो बहुओ, विदियतिभागो विसेसहीणो, तदियतिभागो विसेसहीणो त्ति घेत्तव्वो।

§ ३ संपहि एवंविहाए किट्टीकरणद्धाए पढमसमए जो वावारविसेसो ट्ठिदिबंधादिविसओ तप्पदुप्पायणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

*** अस्सकण्णकरणे णिट्ठिदे तदो से काले अण्णो ट्ठिदिबंधो।**

§ ४ अस्सकण्णकरणद्धाए चरिमसमए पुव्विल्लठिदिबंधे णिट्ठिदे तदो अण्णो ट्ठिदिबंधो तत्तो समयाविरोहेणोसरियूण किट्टीकारगपढमसमए बंधिदुमाढत्तो त्ति भणिदं होदि।

आगे कृष्टि वेदककाल रूपसे प्रवृत्त होगा यह इस सूत्रका समुच्चय रूप अर्थ है। ये तीनों ही काल सदृश नहीं हैं, किन्तु उनमेंसे प्रथम त्रिभाग बड़ा है, दूसरा त्रिभाग विशेषहीन है और तीसरा त्रिभाग विशेष हीन है। ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

विशेषार्थ—यहाँ अपूर्व स्पर्धकोंकी रचना करनेके अनन्तर उनके अनुभागके नीचे उसे उत्तरोत्तर अनन्तगुणा अनन्तगुणा हीन करके कृष्टिरूपसे कैसे परिणमाता है इस विषयपर सांगोपांग विचार किया जा रहा है। इस प्रसंगसे सर्वप्रथम यह जानना जरूरी है कि पूर्वस्पर्धक, अपूर्वस्पर्धक और कृष्टिकरण कहते किसे हैं। यह तो हम इसी ग्रन्थके भाग १३ में ही बतला आये हैं कि उपशम श्रेणिमें पूर्वस्पर्धकरूप रचना जो अनादि संसारसे लेकर होती आ रही है उससे नीचे यह अनिवृत्ति उपशमकजीव मात्र लोभ संज्वलनकी सूक्ष्म कृष्टिकरणकी क्रियाको ही सम्पन्न करता है। किन्तु यहाँ क्षपक श्रेणिमें यह जीव पूर्वस्पर्धकोंके नीचे अश्वकर्णकरणके कालमें चारों कषायोंके अपूर्व स्पर्धकोंकी रचना करता है और अश्वकर्णकरणका काल सम्पन्न होनेके अनन्तर समयसे लेकर कृष्टिकरणकी क्रिया सम्पन्न करता है। अतः यहाँ इनके लक्षणोंपर प्रकाश डाल देना आवश्यक प्रतीत होता है। यथा—

(१) अनादि संसार अवस्थासे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें अश्वकर्णकरण क्रियाके प्रारम्भ करनेके पूर्व तक यह जीव जो अनुभागस्पर्धकोंकी रचना करता है उन्हें पूर्वस्पर्धक कहते हैं।

(२) संसार अवस्थामें जो स्पर्धक कभी भी प्राप्त नहीं हुए यहाँ तक कि जो स्पर्धक उपशम श्रेणिमें भी प्राप्त नहीं हुए, मात्र क्षपकश्रेणिमें ही अश्वकर्णकरणके कालमें पूर्वस्पर्धकोंमें-से उनके नीचे अनन्तगुणहानिरूपसे अपवर्तित होकर जिन स्पर्धकोंकी रचना यह जीव करता है उन्हें अपूर्व स्पर्धक कहते हैं।

(३) जिस प्रकार स्पर्धकोंमें अनुभागकी अपेक्षा क्रमवृद्धि और क्रमहानि होती है उस प्रकार जहाँ अनुभाग रचनामें क्रमवृद्धि और क्रमहानि नहीं पाई जाकर यथासम्भव क्रोधादि चारों संज्वलन कषायोंके पूर्व स्पर्धकों और अपूर्व स्पर्धकोंमें-से उनके नीचे प्रदेशपुंजका अपकर्षण कर उत्तरोत्तर अनन्तगुणित हानिरूपसे अनुभागकी रचना करना उसकी कृष्टिकरण संज्ञा है। यह कृष्टिकरण विधि अश्वकर्णकरण विधिके सम्पन्न होनेके अनन्तर समयसे प्रारम्भ होकर पूर्वोक्त कथनके अनुसार द्वितीय त्रिभागमें सम्पन्न होती है।

§ ३ अब इस प्रकारके कृष्टिकरणकालके प्रथम त्रिभागमें जो स्थितिबन्ध आदि विषयक व्यापार विशेष होता है उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

*** अश्वकर्णकरणके समाप्त होनेपर उसके बाद अनन्तर समयमें अन्य स्थितिबन्ध होता है।**

§ ४ अश्वकर्णकरणकालके अन्तिम समयमें पूर्वके स्थितिबन्धके समाप्त होनेपर उसके बाद अन्य स्थितिबन्ध उससे यथासमय कम होकर कृष्टिकरणके प्रथम समयमें बाँधनेके लिए ग्रहण करता

[1]सजलणाणमेयट्ठिदिबधो अतोमुहुत्तूणट्ठवस्समेत्तो। सेसाणं कम्माणं पुव्विल्लट्ठिदिबधादो सखेज्जगुणहीणो। तप्पाओग्गसखेज्जवस्ससहस्समेत्तो त्ति वट्ठव्वो।

* अण्णमणुभागखडयमस्सकण्णकरणेणेव आगाइद ।

§ ५ चदुण्ह सजलणाणमण्णमणुभागखडयमेदम्मि समये आगाइज्जमाणमस्सकण्णायारेणेवागाइदं। तदो खडयसरूवेणागाइदाणुभागो च लोभे थोवो होदूण मायादिपरिवाडीए जहाकममणतगुणकमेण दट्ठव्वो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो। णाणावरणादिकम्माणमणुभागघादो पुण अस्सकण्णकरणविसेसेण विरहिदो पुव्वघादावसेसाणुभागस्स अणते भागे घेत्तूण पयट्टदि त्ति घेत्तव्वो, अस्सकण्णकरणणियमस्स चदुसंजलणेसु चेव पडिबद्धत्तादो।

* अण्ण ट्ठिदिखडय चदुण्ह घादिकम्माण सखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

§ ६ कुदो ? तेसिं सखेज्जवस्ससहस्सियट्ठिदिसतकम्मादो सखेज्जगुणहाणीए पयट्टमाणस्स ट्ठिदिखंडयस्स तप्पमाणत्तविरोहादो।

* णामागोदवेदणीयाणमसंखेज्जा भागा ।

हैयह उक्त कथनका तात्पय है। सज्वलनोका यह स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त कम आठ वर्ष प्रमाण होता है। शष कर्मोंका पूवके स्थितिबन्धसे संख्यातगुणा होता है। अर्थात् शेष कर्मोंका तत्प्रायोग्य सख्यात हजार वषप्रमाण जानना चाहिए।

* अन्य अनुभागकाण्डक अश्वकणकरणके आकाररूपसे ही ग्रहण किया है।

§ ५ इस समय चार संज्वलनोके अन्य अनुभागकाण्डकको ग्रहण करते हुए अश्वकणकरण के आकाररूपसे ही ग्रहण किया है, इसलिए काण्डकरूपसे ग्रहण किया गया अनुभाग लोभमे स्तोक होकर मायादिकी परिपाटीके अनुसार यथाक्रम उत्तरोत्तर अनन्तगुणित क्रमसे जानना चाहिए इस प्रकार यह यहाँ सूत्रका अर्थ है। पुन ज्ञानावरणादि कर्मोंके अनुभागका घात अश्वकर्णकरण विशषसे रहित होकर पहल घात करनेसे जो अनुभाग शेष रहा है उसके अनन्त बहुभागको ग्रहण कर प्रवृत्त होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए, क्योकि अश्वकर्णकरणका नियम चार सज्वलनोमें ही प्रतिबद्ध है।

विशेषाथ—उक्त सूत्र द्वारा चार संज्वलनोका अनुभाग ही अश्वकर्णके आकाररूपसे घातके लिए ग्रहण किया जाता है यह स्पष्ट किया गया है, क्योकि ज्ञानावरणादि कर्मोंका घात करनेके बाद जो अनुभाग शेष रहता है उसका अश्वकर्णकरणके आकाररूपसे रचना न होकर वह प्रति समय अनन्त बहुभागरूपसे घातके लिये प्रवृत्त होता है यह इस सूत्रका तात्पय है।

* चार घातिकर्मोंका सख्यात हजार वष प्रमाण अन्य स्थितिकाण्डक होता है।

§ ६ क्योकि उन कर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है, इसलिए प्रत्येक स्थितिकाण्डक संख्यातगुणी हानिरूपसे प्रवृत्त होता है ऐसा स्वीकार करनेपर उस स्थिति-सत्कमके तत्प्रमाण माननेमे विरोध आता है।

* तथा नाम, गोत्र और वेदनीयकर्मका अन्य स्थितिकाण्डक असख्यात बहुभागप्रमाण होता है।

---

१ आ प्रतौ सजलणाण इत्त प्रभृति सखेजगुणहीणो इति यावत सूत्ररूपेणोपलभ्यते।

§ ७ तिण्हमेदेसिमघादिकम्माण ठिदिखंडयघादो तक्कालभाविओ पुव्वघादिदावसेसट्ठिदिसंतकम्मस्सासंखेज्जभागा त्ति घेत्तव्वो तेसिमसंखेज्जवस्सियट्ठिदिसंतविसये पयट्टमाणस्स तस्स तहाभावाविरोहादो। सपहि तत्थेव कोहादिसंजलणाणं किट्टीकरणमाढवेमाणो एदेण विहाणेणाढवेदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

* पढमसमयकिट्टीकारगो कोधादो पुव्वफद्दएहिंतो च अपुव्वफद्दएहिंतो च पदेसग्गमोकड्डियूण कोहकिट्टीओ करेदि। माणादो ओकड्डियूण माणकिट्टीओ करेदि। मायादो ओकड्डियूण मायकिट्टीओ करेदि। लोभादो ओकड्डियूण लोभकिट्टीओ करेदि।

§ ८ अपुव्वफद्दयकरणविसयवावारविसेसं सव्वमुवसंहरिय किट्टीकरणाहिमुहो होदूण तप्पारंभपढमसमये वट्टमाणो पढमसमयकिट्टीकारगो णाम। सो कोहादो पुव्वफद्दएहिंतो अपुव्वफद्दएहिंतो च पदेसग्गस्सासंखेज्जदिभागमोकड्डियूण अपुव्वफद्दयादिवग्गणादो हेट्ठा अणंतिमभागे कोहकिट्टीओ करेदि। एवं माण-माया-लोहादो वि अप्पप्पणो पदेसग्गमोकड्डियूण सगसगापुव्वफद्दयादिवग्गणाहिंतो हेट्ठा बादरकिट्टीओ करेदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ। संपहि एवं कीरमाणाओ ताओ कोहादिसंजलणसु पडिबद्धाओ किट्टीओ किंपमाणाओ त्ति आसंकाए तावयत्तावहारणट्ठमुत्तरसुत्तमोइण्णं—

* एदाओ सव्वाओ वि चउव्विहाओ किट्टीओ एयफद्दयवग्गणाणमणंतभागो पगणणादो।

---

§ ७ इन तीन अघातिकर्मोंका तत्काल होनेवाला स्थितिकाण्डकघात पूर्वमें घात होनसे शेष बचे स्थितिसत्कर्मके असंख्यात बहुभागप्रमाण होता है क्योंकि उनका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्षप्रमाण होता है, इसलिए उसके उस रूपसे प्रवृत्त होनेमें विरोधका अभाव है। अब वहीं क्रोधादि संज्वलनोंके कृष्टिकरणको आरम्भ करता हुआ इस विधिसे आरम्भ करता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* प्रथम समयमें कृष्टिकारक जीव क्रोधसम्बन्धी पूर्वस्पर्धकों और अपूर्वस्पर्धकोंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके क्रोधकृष्टियोंको करता है। मानसंज्वलनसे अपकर्षण करके मानकृष्टियोंको करता है। मायासंज्वलनसे अपकर्षण करके मायाकृष्टियोंको करता है और लोभ संज्वलनसे अपकर्षित करके लोभकृष्टियोंको करता है।

§ ८ अपूर्वस्पर्धकके करने सम्बन्धी व्यापार विशेषका उपसंहार करके कृष्टिकरणके सम्मुख होकर उनके प्रारम्भ करनेके प्रथम समयमें विद्यमान यह जीव प्रथम समयवर्ती कृष्टिकारक संज्ञावाला होता है। वह क्रोधसम्बन्धी पूर्वस्पर्धकों और अपूर्वस्पर्धकोंसे प्रदेशपुंजके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके अपूर्वस्पर्धकोंकी आदि वर्गणासे नीचे अनन्तवें भागमें क्रोधकृष्टियोंको करता है। इसी प्रकार मान, माया और लोभसम्बन्धी भी अपने अपने प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके अपने अपने अपूर्वस्पर्धक सम्बन्धी वर्गणासे नीचे बादर कृष्टियोंको करता है यह यहाँ इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। अब उन्हें इस प्रकार करता हुआ क्रोध आदि संज्वलनसे सम्बन्ध रखनेवाली वे कृष्टियाँ कितनी हैं ऐसी आशंका होनेपर उनके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

* ये सभी चारों प्रकारकी कृष्टियाँ प्रकृष्ट गणनाकी अपेक्षा एक स्पर्धक सम्बन्धी वर्गणाओंके अनन्तवें भागप्रमाण होती हैं।

§ ९ एदाओ अणतरणिद्दिट्ठाओ सव्वाओ वि किट्टीओ होंति कसायसबधेण चउव्विहत्त मुवगयाओ सगहकिट्टीभेदेण बारसधा पविभत्ताओ तव्वयवकिट्टीगणणाए केत्तियाओ होंति त्ति भणिदे एयफद्दयवग्गणाणमणतभागो पगणणादो त्ति तासि पमाणणिद्देसो कदो।

१० तत्थ एयफद्दयवग्गणाओ त्ति वुत्ते एगाणुभागफद्दयस्स अविभागपलिच्छेदुत्तरकमेण णिरतरमुवलब्भमाणाओ पादेक्कमभवसिद्धिएहिंतो अणतगुणमेत्तसरिसधणियपरमाणुसमूहारद्धाओ घेत्तव्वाओ। एदाओ पुण एयपदेसगुणहाणिट्ठाणतरफद्दयसलागाहितो अणतगुणाओ। कुदो एव परिच्छिज्जदे ? अणतरमेव परूविदतप्पाबहुआदो। एव च परिच्छिण्णपमाणाणमेयफद्दय वग्गणाणमणतभागमेत्ताओ एदाओ सव्वाओ किट्टीओ होति त्ति णिच्छयो कायव्वो, तप्पाओग्गा णतरूवेहि एयफद्दयवग्गणासु ओवट्टिदासु तप्पमाणागमणदसणादो।

११ एवमेदेण सुत्तेण किट्टीण पमाणावहारणं कादूण सपहि तासि चेव सरूवविसेसावहार-णट्ठ तिव्व मददाविसयमप्पाबहुअ परूवेमाणो सुत्तपबधमुत्तर भणइ—

* पढमसमए णिव्वत्तिदाण किट्टीण तिव्व-मददाए अप्पाबहुअ वत्तइस्सामो।

§ ९ अनन्तर निर्दिष्ट ये सब कृष्टियाँ कषायके सम्बन्धसे चार प्रकारकी होकर तथा संग्रह कृष्टियोंके भेदसे बारह भागोमे विभक्त होकर उनसम्बन्धी अवयवकृष्टियाँ गणनाकी अपेक्षा कितनी होती हैं ऐसा कहनेपर प्रकृष्ट गणनाकी अपेक्षा एक स्पर्धकसम्बन्धी वर्गणाओंके अनन्तवें भागप्रमाण होती है इस प्रकार इस सूत्र द्वारा उनके प्रमाणका निर्देश किया गया है।

§ १० वहाँ सूत्रमे 'एगफद्दयवग्गणाओ' ऐसा कहनेपर अनुभागसम्बन्धी एक स्पर्धकके एक एक अविभागप्रतिच्छेदके वृद्धिक्रमसे निरन्तर प्राप्त होनेवाली तथा प्रत्येक अभव्योंसे अनन्तगुणे सदृश धनवाले परमाणु समूहसे आरम्भ की गयी वर्गणाएँ ग्रहण करनी चाहिए। पुन ये एकप्रदेश गुणहानिस्थानान्तरप्रमाण स्पर्धकशलाकाओंसे अनन्तगुणी होती हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अनन्तर ही कहे गये उससे सम्बन्ध रखनेवाले अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

और इस प्रकार प्रत्येक वर्गणाके प्रमाणको जानकर एक स्पर्धकसम्बन्धी इनके अनन्तवें भागप्रमाण ये सब कृष्टियाँ होती है ऐसा निश्चय करना चाहिए, क्योंकि तत्प्रायोग्य अनन्त संख्यासे एक स्पर्धकसम्बन्धी वर्गणाओंके भाजित करनेपर उन कृष्टियोंके प्रमाणका आगमन देखा जाता है।

विशेषार्थ—जैसा कि टीकामे स्पष्ट किया गया है यह कृष्टिकरणकी प्रक्रिया मात्र चार संज्वलनोंकी ही होती है, सत्तामे स्थित शेष कर्मोंकी नहीं। चार संज्वलनोंकी होती हुई भी अपूर्व स्पर्धकोंमे जो सबसे जघन्य स्पर्धक है और उसकी जितनी वर्गणाएँ हैं उनके मात्र अनन्तवें भाग प्रमाण होकर भी ये सब कृष्टियाँ सबसे जघन्य वर्गणाके नीचे रची जाती हैं। इस प्रकार रची गयी ये सब कृष्टियाँ संग्रह कृष्टि और अन्तर कृष्टिके भेदसे दो भागोंमें विभक्त होकर नामानुरूप ही इनके लक्षण हैं। क्रोधादि प्रत्येक संज्वलन कषायकी ३ ३ संग्रह कृष्टियाँ होती हैं और एक एक संग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ अनन्त होती हैं। यहाँ एक कृष्टिसे दूसरी कृष्टिका जो गुणकार है, उसकी कृष्टि अन्तर संज्ञा है और एक संग्रह कृष्टिसे दूसरा संग्रहकृष्टिके मध्य जो गुणकार है उसकी संग्रहकृष्टि अन्तर संज्ञा है इतना विशेष जानना चाहिये। शेष कथन सुगम है।

§ ११ इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा कृष्टियोंके प्रमाणका निश्चय करके अब उनके ही स्वरूप विशेषका अवधारण करनेके लिए तीव्रता और मन्दता विषयक अल्पबहुत्वका कथन करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* अब प्रथम समयमें निष्पन्न हुई कृष्टियोंके तीव्रता-मन्दता विषयक अल्पबहुत्वको कहेंगे।

§ १२ सुगममेदं पयदप्पाबहुअपरूवणाविसयं पइण्णासुत्तं ।

* तं जहा ।

§ १३ सुगममेदं पि पुच्छावक्कं । एत्थ ताव कोहादिसंजलणकिट्टीओ पादेक्कं तीहिं पविभागेहिं रचेदव्वाओ । एवं रचणाए कदाए एक्केक्कस्स कसायस्स तिण्णि तिण्णि संगहकिट्टीओ होदूण सव्वसमासेण बारह संगहकिट्टीओ । तत्थ सव्वहेट्ठिमा लोभस्स पढमसंगहकिट्टी णाम । तिस्से अवांतरकिट्टीओ अणंताओ जादाओ । तत्तो उवरिमा लोभस्स चेव विदियसंगहकिट्टी णाम । तिस्से वि पमाणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं सेस-संगहकिट्टीण पि समयाविरोहेण विण्णासो कायव्वो जाव कोहस्स चरिमसंगहकिट्टि त्ति । एवमेदासिं किट्टीण रचणं कादूण संपहि तिव्वमंददाए अप्पाबहुअं सुत्ताणुसारेण वत्तइस्सामो ।

* लोहस्स जहण्णिया किट्टी थोवा ।

§ १४ कुदो सव्वमंदाणुभागेण परिणदत्तादो ।

* विदिया किट्टी अणंतगुणा ।

§ १५ कोगुणगारो ? अभवसिद्धिएहिं अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो । एवमुवरि वि सव्वत्थ गुणगारपरूवणा कायव्वा ।

* एवमणंतगुणाए सेढीए जाव पढमाए संगहकिट्टीए चरिमकिट्टि त्ति ।

§ १६ एवमेदेण विहाणेण लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए अवयवकिट्टीसु चरिमकिट्टीपज्जंतासु अणंतगुणाए सेढीए अप्पाबहुअमेदं णेदव्वमिदि वुत्तं होइ । णवरि सव्वत्थ हेट्ठिमहेट्ठिमगुणगारादो

---

§ १२ प्रकृत अल्पबहुत्वका प्ररूपणाविषयक यह अल्पबहुत्व सम्बन्धी प्रतिज्ञावचन सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ १३ यह पृच्छासूत्र भी सुगम है । यहाँ सर्वप्रथम क्रोधादि संज्वलनो सम्बन्धी कृष्टियोंमेंसे प्रत्येककी तीन भागोंमें रचना करनी चाहिए । इस प्रकार रचना करनेपर एक एक कषायकी तीन तीन संग्रह कृष्टियाँ होकर सबका योग बारह संग्रह कृष्टियाँ हो जाता है । उनमेंसे सबसे नीचे लोभ संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टि है । उसकी अवान्तर कृष्टियाँ अनन्त हैं । उससे ऊपर लोभकी ही दूसरी संग्रह कृष्टि है । उसका भी प्रमाण पहलेके समान कहना चाहिए । इसी प्रकार शेष संग्रह कृष्टियोंकी भी क्रोधसंज्वलनकी अन्तिम संग्रह कृष्टिके प्राप्त होने तक यथागम रचना करनी चाहिए । अब सूत्रके अनुसार तीव्रता-मन्दतासम्बन्धी अल्पबहुत्वको बतलायेंगे—

* लोभकी जघन्य कृष्टि सबसे स्तोक है ।

§ १४ क्योंकि वह सबसे मन्द अनुभागसे परिणत होती है ।

* उससे दूसरी कृष्टि अनन्तगुणी है ।

§ १५ गुणकार कितना है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । इसी प्रकार आगे भी सर्वत्र गुणकारकी प्ररूपणा करनी चाहिए ।

* इस प्रकार अनन्तगुणित श्रेणिरूपसे प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टि तक जानना चाहिए ।

§ १६ इस प्रकार इस विधिसे लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी अन्तिम कृष्टि पर्यन्त अवयवकृष्टियोंमें अनन्त गुणित श्रेणिरूपसे यह अल्पबहुत्व होता है यह उक्त सूत्रका तात्पर्य है ।

उवरिमउवरिमकिट्टीगुणगारो अणंतगुणो त्ति वत्तव्वो। कुदो एवं परिच्छिज्जदे ? उवरि भणिस्समाणकिट्टीअप्पाबहुआदो।

* तदो विदियाए संगहकिट्टीए जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा।

§ १७ तदो लोभपढमसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टीदो तस्सेव विदियसंगहकिट्टीए पढमकिट्टी अणंतगुणा त्ति भणिदं होदि। केम्महंतो एत्थ गुणगारो त्ति आसंकाए इदमाह—

* एस[1] गुणगारो बारसण्हं पि संगहकिट्टीणं सत्थाणगुणगारेहिं अणंतगुणो।

§ १८ जेण गुणगारेण लोभपढमसंगहकिट्टीचरिमकिट्टीए गुणिदाए लोभस्स विदियसंगह किट्टीए जहण्णकिट्टी समुप्पज्जदि सो परत्थाणगुणगारो त्ति भण्णदे, संगहकिट्टीभेदप्पणादो एसो बारसण्हं पि संगहकिट्टीणमवयवकिट्टीसु पडिबद्धसत्थाणगुणगारेहिं सव्वेहिंतो वि अणंतगुणो, कोहतदियसंगहकिट्टिचरिमसत्थाणगुणगारादो वि एदस्साणंतगुणत्तदंसणादो। अदो चेव संगह किट्टीभेदो वि ण विरुज्झदे, गुणगारमाहप्पमस्सियूण तदुववत्तीदो। एत्तो उवरि लोभविदियसंगह किट्टीए अवयवकिट्टीसु[2] सत्थाणगुणगारेणाणंतगुणत्तं पढमसंगहकिट्टीभंगेण णेदव्वमिदि पदुप्पा-यणफलमुत्तरसुत्त—

* विदियाए संगहकिट्टीए सो चेव कमो जो पढमाए संगहकिट्टीए।

§ १९ गयत्थमेदं सुत्तं।

इतनी विशेषता है कि नीचे नीचेके गुणकारसे उपरिम उपरिम कृष्टियोंका गुणकार अनन्तगुणा होता है ऐसा कहना चाहिए।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—आगे कहे जानेवाले कृष्टिसम्बन्धी अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

* उससे दूसरी संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी है।

§ १७ उससे अर्थात् लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिकी अन्तिम कृष्टिसे उसीकी दूसरी संग्रह कृष्टिसम्बन्धी प्रथम कृष्टि अनन्तगुणी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर गुणकार कितना बड़ा है ऐसी आशंका होनेपर इस सूत्रको कहते हैं—

* यह गुणकार बारहों संग्रह कृष्टियोंके स्वस्थान गुणकारोंसे अनन्तगुणा है।

§ १८ जिस गुणकारसे लोभ संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तिम कृष्टिके गुणित करनेपर लोभकी दूसरी संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टि उत्पन्न होती है उसे परस्थान गुणकार कहते हैं, क्योंकि संग्रह कृष्टियोंकी भेद विवक्षासे यह गुणकार बारहों संग्रह कृष्टियोंसम्बन्धी अवयव कृष्टियोंमें प्रतिबद्ध स्वस्थान गुणकारोंकी अपेक्षा सभीसे अनन्तगुणा होता है। कारण कि क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिके अन्तिम स्वस्थान गुणकारसे भी यह गुणकार अनन्तगुणा देखा जाता है और इसीलिए संग्रह कृष्टिसम्बन्धी भेद भी विरोधको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि गुणकारके माहात्म्यका आश्रय करके उसकी उत्पत्ति होती है। इससे आगे लोभकी दूसरी संग्रह कृष्टिका गुणकार अवयव कृष्टियोंमें स्वस्थान गुणकारोंसे अनन्तगुणापना प्रथम संग्रह कृष्टिके समान जानना चाहिए इस प्रकार इस कथनके फलस्वरूप आगेके सूत्रको कहते हैं—

* दूसरी संग्रह कृष्टिमें वही क्रम है जो प्रथम संग्रह कृष्टिमें स्वीकार किया गया है।

§ १९ यह सूत्र गतार्थ है।

---

१ आ प्रतौ एत्थ इति पाठः। २ ता आ प्रत्योः अवयवसंगहकिट्टीसु इति पाठः।

* तदो पुण विदियाए च तदियाए च संगहकिट्टीणमंतरं तारिसं चेव ।

§ २० जारिस पढम विदियसगहकिट्टीणमतरं तारिस चेव विदिय-तदियसगहकिट्टीण पि अतरमवहारेयव्व, परत्थाणगुणगारमाहप्पेणेवस्स वि पुव्वुत्तरासेससत्थाणगुणगारेहिंतो अणत गुणत्तं पडि तत्तो भेदाभावादो। णवरि पुव्विल्लादो सगहकिट्टीअंतरादो एवमतरमणतगुणमिदि उवरिमपरूवणादो णिण्णयो कायव्वो। एत्थ गुणगारो चेव अतरमिदि घेत्तव्व, किट्टीगुणगारस्सेव किट्टीअतरत्तेण विवक्खियत्तादो। एत्तो उवरि लोभस्स तदियसगहकिट्टीए अवयवकिट्टीण सत्थाणगुणगाराणुसारेण पुव्व व पयदप्पाबहुअजोयणा कायव्वा, विसेसाभावादो।

* एवमेदाओ लोभस्स तिण्णि सगहकिट्टीओ ।

§ २१ णेद सुत्तमाढवेयव्व, अणुत्तसिद्धत्तादो त्ति णासका कायव्वा, सगहकिट्टीविसए अगहिदसकेदाण सिस्साण तव्विसयणिच्छयउप्पायणट्ठमोइण्णस्सेदस्स सुत्तस्स सयलत्तोवलभादो।

* लोभस्स तदियाए सगहकिट्टीए जा चरिमा किट्टी तदो मायाए जहण्णकिट्टी अणतगुणा ।

§ २२ एत्थ गुणगारो सत्थाणगुणगारेहिंतो सव्वेहिंतो अणंतगुणो परत्थाणगुणगारो।

* मायाए वि तेणेव कमेण तिण्णि सगहकिट्टीओ ।

---

* पुन इससे आगे दूसरी और तीसरी सग्रह कृष्टियोंका अन्तर वैसा ही है।

§ २० जैसा प्रथम और द्वितीय सग्रह कृष्टियोंका अन्तर है वैसा ही दूसरी और तीसरी संग्रह कृष्टियोंका भी अन्तर है ऐसा निश्चय करना चाहिए, क्योंकि परस्थान गुणकारके माहात्म्य वश यह भी पूर्व और उत्तर समस्त स्वस्थान गुणकारोंसे अनन्तगुणा है इस अपेक्षा उससे इसमे कोई भेद नही है। इतनी विशेषता है कि पूर्वके सग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तरकी अपेक्षा यह अन्तर अनन्तगुणा है इस प्रकार इसका उपरिम प्ररूपणासे निर्णय करना चाहिए। यहाँ गुणकार ही अन्तर है ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योकि प्रकृतमें कृष्टि गुणकार ही कृष्टि अन्तररूपसे विवक्षित है। इससे आगे लोभकी तृतीय संग्रह कृष्टिसम्बन्धी गुणकारकी, अवयव कृष्टियोके स्वस्थान गुणकारके अनुसार पहलेके समान प्रकृत अल्पबहुत्वकी योजना करनी चाहिए क्योकि उससे इसमे कोई विशेषता नहीं है।

* इस प्रकार ये लोभकी तीन सग्रह कृष्टियाँ हैं।

§ २१ शका—इस सूत्रका आरम्भ नहीं करना चाहिए, क्योंकि बिना कहे ही इसकी सिद्धि हो जाती है ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि जिन शिष्योंने संग्रह कृष्टियोके विषयमे संकेत ग्रहण नही किया है उनको एतद्विषयक निश्चय उत्पन्न करके लिए आये हुए इस सूत्रकी सफलता उपलब्ध होती है।

* लोभकी तीसरी सग्रह कृष्टिकी जो अन्तिम कृष्टि है उससे मायाकी जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी है।

§ २२ यहाँपर गुणकार सभी स्वस्थान गुणकारोंसे अनन्तगुणा परस्थान गुणकार है। आशय यह है कि यह परस्थान गुणकार है, इसलिए सभी स्वस्थान गुणकारोंसे अनन्तगुणा है।

* मायाकी भी उसी क्रमसे तीन सग्रह कृष्टियाँ होती हैं।

§ २३ जहा लोभस्स तिण्हं संगहकिट्टीणमप्पाबहुअपरूवणा कदा तहा मायाए वि तिण्हं संगहकिट्टीणं पयदप्पाबहुअजोयणा कायव्वा त्ति वुत्तं होइ। सेसं सुगमं।

* मायाए जा तदिया संगहकिट्टी तिस्से चरिमादो किट्टीदो माणस्स जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा।

§ २४ परत्थाणगुणगारमाहप्पमेत्थ वि पुव्वं व वट्टव्वं।

* माणस्स वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ।

* माणस्स जा तदिया संगहकिट्टी तिस्से चरिमादो किट्टीदो कोधस्स जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा।

* कोहस्स वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ।

§ २५ एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि।

* कोधस्स तदियाए संगहकिट्टीए जा चरिमकिट्टी तदो लोभस्स अपुव्वफद्दयाण-मादिवग्गणा अणंतगुणा।

§ २६ कुदो ? किट्टीगदाणुभागादो फद्दयगदाणुभागस्साणंतगुणत्तसिद्धीए बाहाणुवलंभादो।

§ २३ जिस प्रकार लोभकी तीन सग्रह कृष्टियोके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार मायाकी भी तीन सग्रह कृष्टियोके भी प्रकृत अल्पबहुत्वकी योजना करनी चाहिए यह उक्त कथन का तात्पर्य है। शेष कथन सुगम है।

* मायाकी जो तीसरी सग्रह कृष्टि है उसकी अन्तिम कृष्टिसे मानकी जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी है।

§ २४ परस्थान गणकारके माहात्म्यका यहाँ भी पहलेके समान कथन जानना चाहिए।

* मानकी भी उसी क्रमसे तीन सग्रह कृष्टियाँ होती हैं।

* मानकी जो तीसरी सग्रह कृष्टि है उसकी अन्तिम कृष्टिसे क्रोधकी जघन्य कृष्टि अनन्त गुणी है।

* क्रोधकी भी उसी क्रमसे तीन सग्रह कृष्टियाँ होती है।

§ २५ ये सूत्र सुगम हैं।

* क्रोधकी तीसरी सग्रह कृष्टिकी जो अन्तिम कृष्टि है उससे लोभके अपूर्व स्पर्धकोंकी आदि वर्गणा अनन्तगुणी है।

§ २६ क्योंकि कृष्टिगत अनुभागसे स्पर्धकगत अनुभाग अनन्तगुणा है ऐसा सिद्ध होनेमें बाधा नहीं पायी जाती।

विशेषार्थ—पूर्वमे जिन क्रोधादि कषाय सम्बन्धी १२ सग्रह कृष्टियों और उनमेसे प्रत्येककी अनन्त अवान्तर या अवयव कृष्टियोका निर्देश कर आये हैं उनमेसे प्रत्येक कृष्टि किस अनुभाग स्वरूप होती है, क्या उनमेसे प्रत्येकको सदृश अनुभाग प्राप्त होता है या न्यूनाधिक अनुभागरूपसे उनकी रचना होती है इसी शंकाके उत्तरस्वरूप यहाँ अनुभागकी अपेक्षा तीव्र मन्दताका निर्देश करते हुए बतलाया गया है कि सबसे नीचे लोभ संज्वलनसम्बन्धी प्रथम संग्रह कृष्टिकी जो सबसे जघन्य अवान्तर कृष्टि है उसमें प्राप्त हुआ अनुभाग सबसे स्तोक होता है। उससे दूसरी कृष्टि अनन्तगुणे अनुभागस्वरूप होती है। यहाँ गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोके अनन्तवें

§ २७ एवमेत्तिएण पबंधेण बारसण्हं पि संगहकिट्टीणं तदवयवकिट्टीण च तिव्व मंददाए अप्पाबहुअं परूविय संपहि एदस्सेव थोवबहुत्तस्स फुडीकरणट्ठं किट्टीअंतराणमप्पाबहुअं परूवेमाणो उवरिम पबंधमाढवेइ—

* किट्टीअंतराणमप्पाबहुअं वत्तइस्सामो ।

§ २८ एत्थ किट्टीअंतराणि त्ति वुत्ते किट्टीगुणगारा घेत्तव्वा, किट्टीगुणगारस्सेव तदंतरत्तेण विवक्खियत्तादो। तेसिं किट्टीअंतराणमप्पाबहुअमेत्तो भणिस्सामो त्ति वुत्तं होइ। ताणि पुण किट्टीअंतराणि दुविहाणि—सत्थाण परत्थाणगुणगारभेदेण। तत्थ सत्थाणगुणगारस्स किट्टीअंतरमिदि सण्णा। परत्थाणगुणगाराणं संगहकिट्टीणं अंतराणि त्ति सण्णा। एसो च सण्णाभेदो जाव ण जाणाविदो ताव किट्टीअंतराणमिदमप्पाबहुअं परूविज्जमाणं सुहावगम्मं ण होदि त्ति तदुभयसण्णाभेदमेव ताव परूवेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

भाग प्रमाण है। इसका भाव यह है कि उक्त जघन्य कृष्टिको अभव्योसे अनन्तगणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकारसे गुणित करनेपर दूसरी कृष्टि उत्पन्न होती है। जो यह गुणकार है उसे ही यहाँ अन्तर कहा गया है यह इसका आशय है। पुन इस दूसरी कृष्टिमे तीसरी कृष्टि अनन्तगुणी है। यहाँ गुणकारका प्रमाण पूर्वके गुणकारसे अनन्तगुणा है। पुन इस तीसरी कृष्टिसे चौथी कृष्टि अनन्तगुणी है। यहाँका गुणकार भी पूर्वके गुणकारसे अनन्तगुणा है। इस प्रकार इस विधिसे लोभ संज्वलनको प्रथम संग्रहकृष्टिकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक इस अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिए। यहाँपर प्रथम और द्वितीय संग्रह कृष्टियोंका अन्तररूप परस्थान गुणकार सब अन्तर कृष्टियोके स्वस्थान गुणकारोसे अनन्तगुणा है, इसलिए उसे उल्लंघनकर दूसरी संग्रह कृष्टिको प्रथम अन्तर कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर अपनी दूसरी कृष्टिको प्राप्त होती है वह गुणकार अनन्तगुणा है। यह प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिसे अनन्तगुणा है। आगे इस दूसरी अन्तर कृष्टिको जिस गुणकारसे गुणित करनेपर तीसरी कृष्टि प्राप्त होती है वह गुणकार भी पूर्वके गुणकारसे अनन्तगुणा है। यह एक क्रम है जिसके अनुसार आगे क्रोध संज्वलनकी तीसरी संग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक सर्वत्र उक्त विधिसे तीव्र मन्दता जान लेनी चाहिए। पुन इससे आगे अपूर्व स्पर्धकोंकी आदि वर्गणा अनन्तगुणी होती है। यह गुणकार भी पूर्वके गुणकारसे अनन्तगणा है ऐसा जानना चाहिए।

§ २७ इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा बारहो संग्रह कृष्टियोकी और उनकी अवयव कृष्टियोंकी तीव्रता-मन्दताविषयक अल्पबहुत्वका कथन करके अब इसी अल्पबहुत्वका स्पष्टीकरण करनेके लिए कृष्टियोके अन्तरोके अल्पबहुत्वका कथन करते हुए आगेके प्रबन्धको प्रारम्भ करते हैं—

* अब कृष्टियोंके अन्तरसम्बन्धी अल्पबहुत्वको बतलावेंगे।

§ २८ यहाँ सूत्रमें 'किट्टीअन्तराणि' ऐसा कहनेपर कृष्टियोंका गुणकार ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि कृष्टियोंका गुणकार ही उनके अन्तररूपसे विवक्षित है। कृष्टियोंके उन अन्तरोंके अल्पबहुत्वको आगे कहेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है। परन्तु वे कृष्टि अन्तर स्वस्थानअन्तर और परस्थानअन्तरके भेदसे दो प्रकारके हैं। उनमेसे स्वस्थान गुणकारकी कृष्टि अन्तर यह संज्ञा है और परस्थान गुणकारोकी संग्रह कृष्टि अन्तर यह संज्ञा है। इस प्रकार इस संज्ञाभेदका जब तक ज्ञान नहीं कराया जाता तब तक कृष्टि अन्तरोके इस अल्पबहुत्वका कथन करनेपर सुखपूर्वक ज्ञान नहीं होता, इसलिए सर्वप्रथम उन दोनों संज्ञाओंमें क्या भेद (अन्तर) है इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अप्पाबहुअस्स लहुआलावसंखेवपदत्थसण्णाणिक्खेवो ताव कायव्वो ।

§ २९. पयदप्पाबहुअस्स बहुवित्थरपरिहारेण लहुआलावसंखेवविहाणट्ठमेसो ताव पयदत्थस्स सण्णाविसेसणिक्खेवो कायव्वो, अण्णहा एदस्सप्पाबहुअस्स संखेवेण परूवणोवायाभावादो त्ति भणिदं होइ । एवमेदं पइण्णाय सपहि तं चेव सण्णाभेदं परूवेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* त जहा ।

§ ३० सुगम ।

* एक्केक्किस्से सगहकिट्टीए अणताओ किट्टीओ । तासिं अतराणि वि अणताणि । तेसिमतराण सण्णा किट्टी अंतराइ णाम । सगहकिट्टीए च सगहकिट्टीए च अतराणि एकारस । तेसिं सण्णा सगहकिट्टीअतराइ णाम ।

§ ३१ एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । त जहा—एक्केक्कस्स कसायस्स तिण्णि तिण्णि संगहकिटटीओ होदूण बारस सगहकिट्टीओ भवति । तासिमेक्केक्किस्से सगहकिट्टीए अवतर किटटीओ अभवसिद्धिएहितो अणतगुणसिद्धाणंतभागमेत्तीओ भवति । तासिमंतराणि वि अणताणि चेव, किट्टीगणणाए चेव रूवूणाए तासिमतरभावेण समुवलभादो । तदतरुप्पत्ति णिमित्तगुणगारा वि अतराणि त्ति भण्णते, कारणे कज्जुवयारादो । तेसिमेत्थ गहणं कायव्वं । तदो तेसिमतराण गुणगारसरूवाण किट्टीअतराणि त्ति सण्णा । पुणो सगहकिट्टीए च सगहकिट्टीए च हेट्ठिमोवरिमाए जाणि अतराणि एक्कारससखाविसेसिदाणि तेसिं सण्णा सगहकिट्टीअंतराणि त्ति । एत्थ वि पुव्व व तप्पडिबद्धगुणगाराणं चेव सगहो कायव्वो । तदो

* सवप्रथम अल्पबहुत्वके लघु आलापरूप सक्षेप पदोंके अर्थसम्बन्धी सज्ञाओंका निक्षेप करना चाहिए ।

§ २९ प्रकृत अल्पबहुत्वके बहु विस्तारके परिहार द्वारा लघु आलापका संक्षेपसे कथन करनेके लिए सवप्रथम प्रकृत अर्थसम्बन्धी संज्ञाओमे जो भेद है उसका यह निक्षेप करना चाहिए, अन्यथा इस अल्पबहुत्वका सक्षेपसे कथन करनेका दूसरा कोई उपाय नही है यह उक्त कथनका तात्पय है । इस प्रकार इसकी प्रतिज्ञा करके अब इसी सज्ञाभेदका कथन करते हुए आगेका सूत्र कहते हैं—

* वह जैसे ।

§ ३० यह सूत्र सुगम है ।

* एक एक सग्रह कृष्टिको अनन्त कृष्टियाँ हैं तथा उनके अन्तर भी अनन्त हैं । उन अन्तरोको कृष्टि अन्तर सज्ञा है और सग्रहकृष्टि सग्रहकृष्टिके अन्तर ग्यारह हैं । उनकी संग्रहकृष्टि अन्तर सज्ञा है ।

§ ३१ अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह जैसे—एक-एक कषायकी तीन-तीन संग्रह कृष्टिया होकर बारह सग्रह कृष्टियां होती हैं । उनमेसे एक-एक सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ अभव्योसे अनन्तगुणी और सिद्धोके अनन्तवे भागप्रमाण होती हैं तथा उनके अन्तर भी अनन्त होते हैं, क्योंकि कृष्टियोंकी गणनामेसे एक कम करनेपर उनके अन्तर उपलब्ध हो जाते हैं । अत उन कृष्टियोके अन्तरोकी उत्पत्तिके निमित्तभूत गुणकार भी अनन्त कहे जाते हैं, क्योंकि यहाँ कारणमें कार्यका उपचार किया गया है । उनका यहाँ ग्रहण करना चाहिए । अत गुणकारस्वरूप उन अन्तरोकी कृष्टि अन्तर यह संज्ञा है । पुन संग्रहकृष्टि संग्रहकृष्टिके आगे-पीछे ग्यारह सख्यासे

परत्थाणगुणगाराण सगहकिट्टीअतरसण्णा। सत्थाणगुणगाराणं च किट्टीअतरसण्णा त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसगहो।

*** एदीए णामसण्णाए किट्टीअतराण सगहकिट्टीअंतराण च अप्पाबहुअ वत्तइस्सामो।**

३२ एदीए अणतरपरूविदाए णामसण्णाए सुणिण्णीदसरूवाण दुविहाण पि किट्टीअतराण मेण्हिमप्पाबहुअमोदारइस्सामो त्ति भणिद होइ।

*** त जहा।**

§ ३३ सुगमं।

*** लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए जहण्णय किट्टीअतर थोव।**

§ ३४ लोभस्स पढमसगहकिट्टीए जहण्णकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा अप्पणो विदिय किट्टीपमाणं पावदि सो गुणगारो जहण्णकिट्टीअंतर णाम। त सव्वत्थोवमिदि वुत्त होइ।

विशेषताको प्राप्त हुए जो अन्तर हैं उनकी सग्रहकृष्टि अन्तर सज्ञा है। यहाँपर भी पहलेके समान उनसे सम्बन्ध रखनेवाले गुणकारोका सग्रह करना चाहिए। इस कारण परस्थान गुणकारोकी सग्रहकृष्टि अन्तर सज्ञा है और स्वस्थान गुणकारोकी कृष्टि अन्तर सज्ञा है यह यहापर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है।

विशेषार्थ—यह पूर्वमे ही बतला आये हैं कि चारो सज्वलनोमें से प्रत्येक कषायकी तीन तीन सग्रह कृष्टियाँ होकर भी प्रत्येक सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ अनन्त होती है। इस प्रकार जो ये सब कृष्टियाँ है उनमे दो सग्रह कृष्टियोके मध्य जो गुणकार पाया जाता है उनके उस गुणकारको ही सग्रहकृष्टि अन्तर कहते हैं। यत यह गुणकार गुणित क्रमसे ही प्राप्त होता है, अत उनके गुणकार भी उतने ही जानने चाहिए। कुल सग्रह कृष्टियाँ बारह है अत उनके मध्यमे प्राप्त होनेवाले इन सग्रह कृष्टियोके अन्तरोका प्रमाण ग्यारह होता है। अत इनको यह सग्रह कृष्टि अन्तर सज्ञा है। यहाँ इतना पुन स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि एक सग्रहकृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर दूसरी सग्रहकृष्टिको प्राप्त होती है उसकी परस्थान गुणकार सज्ञा और एक अन्तर कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर दूसरी कृष्टिको प्राप्त होती है उसकी स्वस्थानगुणकार सज्ञा है। इसीलिए प्रकृतमे गुणकारको कारण और अन्तरको काय कहा गया है।

*** इस प्रकार की गयी इस नामसंज्ञाके द्वारा कृष्टि अन्तरों और सग्रह कृष्टि अन्तरोके अल्पबहुत्वको बतलावेंगे।**

§ ३२ इस प्रकार अनन्तर पूव कही गयी इस नामसज्ञाके द्वारा जिनके स्वरूपका अच्छी तरहसे निर्णय हो गया है ऐसे इन दोनो ही प्रकारके कृष्टिअन्तरोंके अल्पबहुत्वका इस समय अवतार करेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

*** वह जैसे**

§ ३३ यह सूत्र सुगम है।

*** लोभकी प्रथम सग्रह कृष्टिका जघन्य अन्तर सबसे अल्प है।**

§ ३४ लोभकी प्रथम सग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिको जिस गुणकारसे गुणित करनेपर वह अपनी दूसरी कृष्टिके प्रमाणको प्राप्त होती है वह गुणकार जघन्य कृष्टि अन्तर सज्ञावाला होता है। वह सबसे स्तोक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* विदिय किट्टीअंतरमणंतगुणं ।

§ ३५ एत्थ वि विदियकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा तदियकिट्टीपमाणं पावदि सो गुणगारो विदियकिट्टीअतरमिदि भण्णदे । एसो पुव्विल्लादो अणतगुणो, तप्पाओग्गाणतरूवेहि तम्मि गुणिदे एदस्स समुप्पत्तीदो ।

* एवमणतराणतरेण गतूण चरिमकिट्टीअतरमणतगुण ।

§ ३६ एव तदियचउत्थादिकिट्टीअंतराण पि लोभपढमसगहकिट्टीपडिबद्धाणमणतराण तरादो अणतगुणकमेण अप्पाबहुअमेदमणुगंतव्व जाव चरिमकिट्टीअंतर पत्त त्ति । तत्थ चरिमकिट्टी अंतरमिदि वुत्त दुचरिमकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा चरिमकिट्टीपमाण पावदि सो गुणगारो चरिमकिट्टीअतरमिदि घेत्तव्व । एत्थ सव्वत्थ गुणगारो तप्पाओग्गाणंतरूवमेत्तो ।

* लोभस्स चेव विदियाए सगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणतगुणं[1] ।

§ ३७ एत्थ पढमविदियसंगहकिट्टीणमतरभूदो परत्थाणगुणगारो सव्वेहितो सत्थाणगुणगारे हितो अणंतगुणो त्ति तमुल्लघियूण विदियसगहकिट्टीए पढमकिट्टीअतरमणतगुणमिदि भणिद । तदो विदियसगहकिट्टीए पढमकिट्टी[2] जेण गुणगारेण गुणिदा अप्पणो विदियकिट्टि पावदि सो गुणगारो अणतरहेट्टिमपढमसगहकिट्टीचरिमगुणगारादो अणतगुणो त्ति सुत्तत्थो ।

* उससे दूसरी कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ३५ यहाँपर भी दूसरी कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर तीसरी कृष्टिके प्रमाणको प्राप्त होती है उस गुणकारको द्वितीय कृष्टि अन्तर कहते हैं । यह गुणकार पूर्वके गुणकारसे अनन्तगुणा है, क्योकि तत्प्रायोग्य अनन्त सख्यासे उसके गुणित करनेपर इसकी उत्पत्ति होती है ।

* इस प्रकार उत्तरोत्तर अनन्तर अनन्तर क्रमसे जाकर जो अन्तमे अन्तिम कृष्टि प्राप्त होती है उसका अन्तर अपनी उपान्त्य कृष्टिके अन्तरसे अनन्तगुणा है ।

§ ३६ इस प्रकार लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिसे सम्बन्ध रखनेवाली तीसरी और चौथी आदि कृष्टियोका अन्तर भी उत्तरोत्तर तदनन्तर तदनन्तर रूपसे अनन्तगुणित क्रमसे प्राप्त करते हुए अन्तिम कृष्टिके अन्तरके प्राप्त होने तक यह अल्पबहुत्व जान लेना चाहिए । वहाँ अन्तिम कृष्टिका अन्तर ऐसा कहनेपर द्विचरम कृष्टिको जिस गुणकारसे गुणित करनेपर अन्तिम कृष्टिका प्रमाण प्राप्त होता है वह गुणकार अन्तिम कृष्टिका अन्तर है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । यहाँ सर्वत्र गुणकार तत्प्रायोग्य अनन्त सख्याप्रमाण है ।

* लोभकी ही द्वितीय सग्रह कृष्टिका प्रथम कृष्टि अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ३७ यहाँपर प्रथम और द्वितीय सग्रह कृष्टियोका अन्तररूप परस्थान गुणकार सब अन्तर कृष्टियोके स्वस्थान गुणकारोसे अनन्तगुणा है, इसलिए उसे उल्लघन करके 'दूसरी सग्रह कृष्टिका प्रथम कृष्टि अन्तर अनन्तगुणा है' यह कहा है, इसलिए दूसरी सग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर अपना दूसरी कृष्टि को प्राप्त होती है वह गुणकार अनन्तर अधस्तन प्रथम सग्रह कृष्टिके अन्तिम गुणकारसे अनन्तगुणा है यह इस सूत्रका अर्थ है ।

विशेषार्थ—यहाँपर प्रथम सग्रह कृष्टि और द्वितीय सग्रह कृष्टिके मध्य जो अन्तर है उसको गौण कर प्रथम संग्रह कृष्टिको जो अन्तिम कृष्टि है उससे दूसरी सग्रह कृष्टिकी दूसरी कृष्टिका गुणकार पूर्वके गुणकारसे भी अनन्तगुणा है यह स्पष्ट किया गया है ।

---

१ ता प्रतौ पढमसगहकिट्टीअतरमणंतगुण इति पाठ । २ ता प्रतौ पढमसगहकिट्टी इति पाठ ।

§ ३८ एत्तो उवरिमाणंतराणं बिदियसंगहकिट्टीविसयाण पढमसंगहकिट्टीए भणिदविहाणेण थोवबहुत्तमणंतराणंतराणंतरावो अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वमिदि जाणावणफलमुवरिमसुत्त—

* एवमणंतराणंतरेण जाव चरिमादो त्ति अणंतगुणं ।

§ ३९ गयत्थमेदं सुत्तं । एत्तो लोभस्स बिदियतदियसंगहकिट्टीणं परत्थाणगुणगारं मुल्लंघियूण तदियसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणं जाणि अंतराणि ताणि जहाकममणंतगुणवड्डीए णेदव्वाणि त्ति जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—।

* लोभस्स चेव तदियाए संगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

§ ४० एत्थ वि पढमकिट्टीअंतरमिदि वुत्ते पढमकिट्टीदो विदियकिट्टीसमुप्पायणट्ठो गुणगारो घेतव्वो । सुगममण्णं ।

* एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

§ ४१ पढमबिदियसंगहकिट्टीसु जेण कमेण किट्टीअंतराणमप्पाबहुअं णीदं तेणेव कमेण संगहकिट्टीए[1] वि णेदव्वं, विसेसाभावादो त्ति भणिदं होदि ।

* एत्तो मायाए पढमसंगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

§ ४२ एत्थ वि परत्थाणगुणगारुल्लंघणं पुव्वं व वट्टव्वं । सेसं सुगमं ।

---

§ ३८ इससे आगे दूसरी संग्रह कृष्टिसम्बन्धी जो उपरिम अनन्तर अन्तर कृष्टियाँ हैं उनका अल्पबहुत्व, प्रथम संग्रह कृष्टिकी कही गयी विधिके अनुसार, तदनन्तर तदनन्तर क्रमसे अनन्त गुणित श्रेणिरूपसे ले जाना चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र आया है—

* इस प्रकार अनन्तर तदनन्तर क्रमसे अन्तिम कृष्टिके अन्तरके प्राप्त होने तक उत्तरोत्तर अनन्तगुणा अनन्तगुणा कृष्टि अन्तर जानना चाहिए ।

§ ३९ यह सूत्र गतार्थ है। इससे आगे लोभसंज्वलनकी दूसरी और तीसरी संग्रह कृष्टियोंके परस्थान गुणकारको उल्लंघन करके तीसरी संग्रहकृष्टिकी अन्तर कृष्टियोंके जो अन्तर हैं उन्हें यथाक्रम उत्तरोत्तर अनन्तगुणित वृद्धिरूपसे ले जाना चाहिए इस बातका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* लोभकी भी तीसरी संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ४० इस सूत्रमें भी 'प्रथम कृष्टिका अन्तर' ऐसा कहनेपर प्रथम कृष्टिसे दूसरी कृष्टिको उत्पन्न करनेके लिए गुणकार ग्रहण करना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* इस प्रकार अनन्तर तदनन्तर क्रमसे जाकर अन्तिम कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ४१ प्रथम और दूसरी संग्रह कृष्टियोंमें जिस क्रमसे कृष्टि अन्तरोंका अल्पबहुत्व प्राप्त किया है उसी क्रमसे इस संग्रह कृष्टिका भी ले जाना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* इससे आगे मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ४२ यहाँपर भी परस्थान गुणकारको उल्लंघन कर पहलेके समान कथन करना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

---

१ ता प्रतौ पढमसंगहकिट्टीए इति पाठः ।

* एवमणतराणतरेण मायाए वि तिण्हं सगहकिट्टीण किट्टीअतराणि जहाकमेण अणतगुणाए सेढीए णेदव्वाणि ।

§ ४३ लोभस्स तिण्ह सगहकिट्टीण भणिदविहाणमवहारियूण तेणेव कमेण मायाए वि तिण्ह सगहकिट्टीणमणतरकिट्टीसु जहाकममणतगुणाए सेढीए किट्टीगुणगाराणमप्पाबहुअमेदं णेदव्वमिदि वुत्त होइ।

* एत्तो माणस्स पढमाए सगहकिट्टीए पढमकिट्टीअतरमणंतगुणं ।

§ ४४ एत्थ वि पुव्व व परत्थाणगुणगारुल्लंघणेण मायाए तदियसगहकिट्टीचरिमतरादो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए पढमस्स किट्टीअतरस्साणतगुणत्तमुवइट्ठ दट्ठव्वं ।

* माणस्स वि तिण्ह सगहकिट्टीणमतराणि जहाकमेण अणतगुणाए सेढीए णेदव्वाणि ।

§ ४५ माणस्स वि तिण्हं सगहकिट्टीण पुध पुध णिरुभण काऊण पयदप्पाबहुअ णेदव्वमिदि वुत्त होइ ।

* एत्तो कोधस्स पढमसगहकिट्टीए पढमकिट्टीअतरमणतगुण ।

§ ४६ सुगम ।

* कोहस्स वि तिण्हं सगहकिट्टीणमंतराणि जहाकमेण जाव चरिमादो अतरादो त्ति अणतगुणाए सेढीए णेदव्वाणि ।

---

* इस प्रकार अनन्तर तदनन्तर क्रमसे मायाकी तीनो सग्रहकृष्टियोंके कृष्टि अन्तरोंको यथाक्रम अनन्तगुणित श्रेणिरूपसे ले आना चाहिए ।

§ ४३ लोभकी तीनो सग्रह कृष्टियोकी कही गयी विधिसे अल्पबहुत्वका अवधारण करके उसी क्रमसे मायासम्बन्धी तीनो ही सग्रह कृष्टियोकी अनन्त कृष्टियोके यथाक्रम अनन्तगुणित श्रेणिरूपसे कृष्टिगुणकारोका यह अल्पबहुत्व जान लेना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* इससे आगे मानकी प्रथम सग्रह कृष्टिका प्रथम कृष्टि अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ४४ यहाँपर भी पहलेके समान परस्थान गुणकारके उल्लघन द्वारा मायाकी तीसरी सग्रहकृष्टिके अन्तिम अन्तर कष्टि अन्तरसे मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रथम कृष्टि अन्तर अनन्तगुणा है यह उपदिष्ट किया गया जानना चाहिए ।

* मानकी भी तीनों संग्रह कृष्टियोंका अन्तर यथाक्रम अनन्तगुणित श्रेणिरूपसे ले आना चाहिए ।

§ ४५ मानकी भी तीनों संग्रह कृष्टियोको पृथक्-पृथक् रोककर प्रकृत अल्पबहुत्व ले आना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* इससे आगे क्रोधकी प्रथम सग्रह कृष्टिका प्रथम कृष्टि अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ४६ यह सूत्र सुगम है ।

* क्रोधकी भी तीनों सग्रह कृष्टियोंका अन्तर, यथाक्रम अन्तिम कृष्टि अन्तरके प्राप्त होने तक, अनन्तगुणित श्रेणिरूपसे ले आना चाहिए ।

४७ कोहस्स तदियसगहकिट्टीए दुचरिमकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा तत्थतणचरिम किट्टीपमाण पावदि त मव्वपच्छिमकिट्टीअतरमवहि कादूणप्पाबहुअमेदमणुगतव्वमिदि सुत्तत्थ सगहो। एदे च भणिदसव्वगुणगारा बारसण्ह पि सगहकिट्टीणमतरकिट्टीसु पयट्टमाणा सत्थाण गुणगार णाम।

§ ४८ एत्तो उवरि परत्थाणगुणगारसण्णिदाण सगहकिट्टीअतराण जहाकमेण थोवबहुत्ताव-हारणट्ठमुत्तरो सुत्तपबधो।

* तदो लोभस्स पढमसगहकिट्टीअतरमणतगुण।

§ ४९ लोभस्स पढमसगहकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा विदियसगहकिट्टीए पढमकिट्टि पावदि सो गुणगारो लोभस्स पढमसगहकिट्टीअतर णाम। एसो गुणगारो सत्थाणगुणगाराण चरिम गुणगारादो अणतगुणो भवदि, परत्थाणगुणगारमाहप्पादो। इममेव च गुणगारविसेसमस्सियूण एक्केक्कस्स कसायस्स तिण्णि तिण्णि सगहकिट्टीओ भणिदाओ,[1] अण्णहा संगहकिट्टीण पविभागाणुव वत्तीदो। एत्थ हेट्ठिमकिट्टिमुवरिमकिट्टीदो सोहिय सुद्धसेस रूवूणमेत्तमविभागपच्छिछेदुत्तरकम वड्ढीए विणा अक्कमेण वड्ढिदत्तादो। किट्टीअतरमित्ति किण्ण घेप्पदे ? ण, तहा घेप्पमाणे पुव्विल्लचरिमसत्थाणकिट्टीअंतरादो एदस्स सगहकिट्टीअनरस्साणमगुणहीणत्तप्पसगादो। त कघ ?

§ ४७ क्रोधकी तीसरी सग्रह कृष्टिकी द्विचरम कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर वहाँकी अन्तिम कृष्टिके प्रमाणको प्राप्त होती है उस सब अन्तिम कृष्टि अन्तरको मर्यादा करके यह अल्पबहुत्व जान लेना चाहिए यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। कहे गये ये सब गुणकार बारह सग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तर कृष्टियोमे प्रवृत्त होते हुए स्वस्थान गुणकार कहलाते हैं।

विशेषार्थ—गुणकारके स्वस्थान गुणकार और परस्थान गुणकार ये दो भेद पहले ही कह आये हैं। उनमेंसे यहाँ तक स्वस्थान गुणकारकी अपेक्षा अन्तर कृष्टियोके अन्तरोको प्राप्त किया गया है। आशय यह है कि उत्तरोत्तर अगली अगली कृष्टिके प्रमाणको प्राप्त करनेके लिए स्वस्थान गुणकारका प्रमाण उत्तरोत्तर अनन्तगुणा अनन्तगुणा होता जाता है और इस प्रकार उत्तरोत्तर प्रत्येक कृष्टिमे अनुभागशक्तिरूप अविभागप्रतिच्छेद प्राप्त होते जाते हैं।

§ ४८ इससे आगे परस्थान गुणकार संज्ञावाले सग्रह कृष्टि अन्तरोके अल्पबहुत्वका क्रमसे अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* उससे लोभकी प्रथम सग्रह कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है।

§ ४९ लोभकी प्रथम सग्रह कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर दूसरी सग्रह कृष्टियोकी प्रथम कृष्टिको प्राप्त होती है उस गुणकारकी लोभकी प्रथम सग्रह कृष्टि अन्तर सज्ञा है। यह गुणकार स्वस्थान गुणकारोके अन्तिम गुणकारसे अनन्तगुणा है। परस्थान गुणकारके माहात्म्यवश इसी गुणकार विशेषका आलम्बन लेकर एक एक कषायकी तीन तीन सग्रह कृष्टियाँ कही गयी हैं, अन्यथा सग्रह कृष्टियोंका विशेष विभाग नही बन सकता। यहाँ पर अधस्तन कृष्टिको उपरिम कृष्टियोमेंसे घटाकर जो शेष रहता है उससे एक कम अविभाग प्रतिच्छेदोको उत्तर क्रमवृद्धिके विना अक्रमसे वृद्धि हुई है।

शका—यहाँपर कृष्टि अन्तर क्यो नही ग्रहण किया जाता ?

समाधान—नही, क्योकि वैसा ग्रहण करनेपर पूर्वोक्त अन्तिम स्वस्थान कृष्टि अन्तरसे इस सग्रह कृष्टि अन्तरके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है।

१ आ प्रतौ णीदाओ इति पाठ।

लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टिं तस्सेव विदियसंगहकिट्टीए पढमकिट्टीदो सोहिय सुद्धसेसं रूवूणं लोहस्स पढमसंगहकिट्टीअंतरं णाम होदि।

§ ५० संपहि विदियसंगहकिट्टीए पढमकिट्टिं तिस्से चेव विदियकिट्टीदो सोहिदे सुद्धसेस रूवूणरासी पुव्विल्लसंगहकिट्टीअंतरणिमित्तसुद्धसेसरासीदो अणंतगुणो होइ, तेण इत्तियमेत्तरासी अविभागपलिच्छेदुत्तरकमेण विणा अक्कमेण वड्डिदो त्ति पढम विदियकिट्टीणमेवमंतरं जादं। एवं च संते पुव्विल्लसंगहकिट्टीअंतरादो एदं किट्टीअंतरमणंतगुणं जाद। ण च एवं सुत्ते भणिदं, एत्तो अणंतगुणकोहतदियसंगहकिट्टीचरिमकिट्टीअंतरादो वि लोभस्स पढमसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणमिदि सुत्तेणेदेण णिद्दिट्ठत्तादो। एवं सेससंगहकिट्टीअंतराणं पि किट्टीअंतरादो अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो वत्तव्वो। तेण जाणामो किट्टीअंतरमिदि भणिदे किट्टीगुणगारो चेव सव्वत्थ घेत्तव्वो। ण पुण हेट्ठिमकिट्टीमुवरिमकिट्टीदो सोहिय समुवलद्धसेसरासि त्ति।

* विदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं।

§ ५१ विदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा तदियसंगहकिट्टीए पढमकिट्टिं पावदि सो गुणगारो विदियसंगहकिट्टीअंतरं णाम। एदं पढमसंगहकिट्टीअंतरादो अणंतगुणं। को गुणगारो? तप्पाओग्गाणंतरूवमेत्तो।

* तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं।

शंका—वह कैसे ?

समाधान—लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिको उसीकी द्वितीय संग्रहकृष्टिकी प्रथम कृष्टिमेंसे घटा देनेपर जो शेष रहता है एक कम वह लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अन्तर होता है।

§ ५० अब दूसरी संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिको उसीकी दूसरी कृष्टिमेंसे घटा देनेपर जो राशि शेष रहती है, एक कम वह राशि पूर्वोक्त संग्रह कृष्टिके अन्तर निमित्तरूप शुद्ध शेष राशिसे अनन्तगुणी होती है, इसलिए इतने प्रमाणरूप राशि अविभागप्रतिच्छेदोंकी उत्तर क्रमवृद्धिके बिना अक्रमसे बढ़ी है इसलिए प्रथम और दूसरी कृष्टियोंका यह अन्तर हो गया है और ऐसा होनेपर पूर्वके संग्रह कृष्टि अन्तरसे यह कृष्टि अन्तर अनन्तगुणा हो गया है। परन्तु ऐसा सूत्रमें कहा नहीं है, क्योंकि इससे क्रोधको अनन्तगुणी तीसरी संग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तिम कृष्टि अन्तरसे भी लोभकी प्रथम कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ऐसा इस सूत्रद्वारा निर्दिष्ट किया गया है। इसी प्रकार शेष संग्रह कृष्टियोंके अन्तरके भी कृष्टि अन्तरसे अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है ऐसा यहाँ दिखलाना चाहिए। इससे हम जानते हैं कि कृष्टि अन्तर ऐसा कहनेपर कृष्टिगुणकार ही सर्वत्र ग्रहण करना चाहिए, परन्तु अधस्तन कृष्टिको उपरिम कृष्टिमेंसे घटाकर जो शेष रहे वह नहीं।

* उससे दूसरी संग्रह कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है।

§ ५१ दूसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर तीसरी संग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिको प्राप्त होती है वह गुणकार द्वितीय संग्रह कृष्टिका अन्तर है। यह प्रथम संग्रह कृष्टि अन्तरसे अनन्तगुणा है।

शंका—गुणकार क्या है ?

समाधान—तत्प्रायोग्य अनन्त संख्या गुणकार है।

* उससे तीसरी संग्रह कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है।

---

१ ता प्रतौ पढमसंगहकिट्टीए इति पाठ।

§ ५२ एत्थ चोदगो भणइ—तदियसंगहकिट्टीअंतरमिदि वुत्ते कदमस्स अंतरस्स गहणमिह कायव्वं किं ताव लोभस्स तदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टीदो तस्सेवापुव्वफद्दयादिवग्गणाए पविसमाणगुणगारो घेप्पइ आहो लोभस्स तदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टीदो[1] मायाए पढम संगहकिट्टीए आदिम्मि पविसमाणगुणगारो त्ति ? ण ताव पढमपक्खो, संगहकिट्टीअंतराण मप्पाबहुए भण्णमाणे संगहकिट्टीफद्दयंतरगुणगारस्स पवेसाणवत्तीदो। अध केण वि सबंधेण तस्स वि पवेसो ण विरुद्धो त्ति वक्खाणिज्जदे तो वि एदम्हादो उवरि लोभस्स मायाए च अंतरमणंतगुणमिदि उवरि भण्णमाणसुत्तं ण जुज्जदे, किट्टीफद्दयंतरादो अणंतगुणहीणस्स तस्स तत्तो अणंतगुणत्तविरोहादो। ण विदिओ वि पक्खो घडइ, लोभ मायाणं चरिमपढम संगहकिट्टीणमंतरस्स तदियसंगहकिट्टीअंतरं तेणेत्थ णिद्देसावलंबणे उवरिमसुत्तेण फुडमेव तव्विसए पडिबद्धेणेदस्स पुणरुत्तदोसप्पसंगादो। तम्हा णिविसयत्तादो णाढवेयव्वमेदं सुत्तमिदि ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—'लोभस्स तदियसंगहकिट्टीअंतरमिदि वुत्ते लोभस्स विदियसंगह किट्टीए चरिमकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा लोभस्स चेव तदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टिं पावेदि सो गुणगारो घेत्तव्वो। पुव्वुत्तविदियसंगहकिट्टीअंतरादो परिप्फुडमेवेदस्साणंतगुणत्तदंसणादो। को एत्थ गुणगारो ? तदियसंगहकिट्टीए पविट्ठासेससत्थाणगुणगाराणमण्णोण्णसवग्गो। अणुत्तसिद्ध

§ ५२ शंका—यहाँपर शंकाकार कहता है कि 'तदियसंगहकिट्टीअंतर' ऐसा कहनेपर यहाँ किस अन्तरका ग्रहण करना चाहिए क्या लोभकी तीसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिसे उसीके अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणामे प्रविष्ट होनेवाला गुणकार ग्रहण करते हैं या लोभकी तीसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिमे माया संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिके आदिमे प्रविष्ट होनेवाला गुणकार ग्रहण करते है। उन दोनो पक्षोंमेंसे प्रथम पक्ष तो ठीक नहीं है, क्योंकि संग्रह कृष्टियोंके अन्तरोंके अल्पबहुत्वके कहनेपर संग्रहकृष्टि और स्पर्धक अन्तर सम्बन्धी गुणकारका प्रवेश नही बन सकता। किसी भी सम्बन्धवश गुणकारका प्रवेश भी विरोधको प्राप्त नही होता यदि ऐसा व्याख्यान किया जाता है तो भी इससे आगे 'लोभ और मायाका अन्तर अनन्तगुणा है' इसप्रकार आगे कहा जानेवाला सूत्र नही बन सकता है क्योंकि कृष्टि और स्पर्धकसम्बन्धी अन्तरमे तीसरी संग्रहकृष्टि का अन्तर अनन्तगुणा हीन है इसलिए तीसरी संग्रहकृष्टि और स्पर्धकके अन्तरसे उसके अनन्त गुणा होनेमे विरोध आता है। तथा दूसरा पक्ष भी घटित नही होता, क्योंकि लोभकी अन्तिम संग्रहकृष्टि और मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिका अन्तर तीसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर है, इस कारण यहाँपर उसके निर्देशका अवलम्बन करनेपर उपरिम सूत्र स्पष्टरूपसे उस विषयमे सम्बन्ध रखता है, इसलिए इस कथनमे पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है इसलिए विषयशून्य होनेसे इस सूत्रका आरम्भ नही करना चाहिए ?

समाधान—यहाँ उक्त शंकाका परिहार करते हैं—'लोभस्स तदियसंगहकिट्टीअंतर' ऐसा कहनेपर लोभकी दूसरी संग्रहकृष्टिकी अन्तिम कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर लोभकी ही तीसरी संग्रहकृष्टिकी अन्तिम कृष्टिको प्राप्त करती है वह गुणकार ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि पूर्वोक्त दूसरी संग्रह कृष्टिके अन्तरसे स्पष्टरूपसे यह अन्तर अनन्तगुणा देखा जाता है।

शंका—यहाँपर गुणकार क्या है ?

समाधान—तीसरी संग्रह कृष्टिमे प्रविष्ट हुए समस्त स्वस्थान गुणकारोंके परस्पर गुणा करनेपर जो लब्ध आवे वह यहाँपर गुणकार है।

---

१ आ प्रतौ संगहकिट्टीए मायाए इति पाठः।

त्तादो णेदमेत्थ णिद्देयव्वमिदि चे ? ण, लोभ-मायाणमंतरमाहप्पपदंसणट्ठमेदस्स णिद्देसे फलोव लंभादो। तं कधं ? लोभस्स विदियसंगहकिट्टीअंतरादो सत्थाणगुणगारसंवग्गमेत्तेणाणंतगुणमेदं तदियसंगहकिट्टीअंतरं, पुणो एदम्हादो वि लोभमायाणमंतरमणंतगुणमिदि पदुप्पाइदे सत्थाणम्हि पविट्ठासेसगुणगारसंवग्गादो अणंतगुणो परत्थाणगुणगारो त्ति जाणिज्जदे। तम्हा एवंविहत्थविसेस पडिबद्धत्तादो ण णिव्विसयमेदं सुत्तमिदि सिद्धं।

§ ५३ अथवा तदियसंगहकिट्टीए अपुव्वफद्दयादिवग्गणा च अंतरं तदियसंगहकिट्टीअंतर मिदि घेत्तव्वं, संगहकिट्टीफद्दयंतरस्स वि कथंचि संगहकिट्टीअंतरत्तेण णिद्देसे विरोहाभावादो। ण तहाब्भुवगमे एत्तो उवरि माया-लोभाणमंतरस्स अणंतगुणत्तविरोहो णेहासंकणिज्जा, लोभस्स सत्थाणप्पाबहुए भण्णमाणे एवं होदि त्ति अप्पणो अपुव्वफद्दएहिं सधाणं कादूण पुणो तत्तो णियत्तिदूण हेट्ठिमपदं चेव घेत्तूण तत्तो लोभ-मायाणमंतरस्साणंतगुणत्तेण णिद्देसावलंबणे तद्दोसाणुवलंभादो।

§ ५४ अथवा 'लोभस्स तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं' इदि वुत्ते लोभमायाणमेव तदिय पढमसंगहकिट्टीणं संधिगुणगारो गहेयव्वो। ण च तहावलंबिज्जमाणे उवरिमसुत्तेण पुणरुत्तभावो वि, 'तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं' इदि सामण्णणिद्देसेणवेण तं कदममिदि संदेहे समुप्पण्णे[1] तण्णि-

---

शंका—यह तो अनुक्तसिद्ध है, इसलिए यहाँपर उसका कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान—नहीं, क्योंकि लोभ और मायाके अन्तरके माहात्म्यके दिखलानेके लिए इसका निर्देश करनेपर सफलता उपलब्ध होती है।

शंका—वह कैसे ?

समाधान—लोभकी दूसरी संग्रह कृष्टिके अन्तरसे, स्वस्थान गुणकारोंके परस्पर गुणा करने पर जो लब्ध आवे उसकी अपेक्षा भी यह तीसरी संग्रह कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है। पुनः इससे भी लोभ और मायाका अन्तर अनन्तगुणा है ऐसा कथन करनेपर स्वस्थानमें प्रविष्ट हुए समस्त गुणकारोंके परस्पर गुणित करनेपर प्राप्त हुई राशिसे परस्थान गुणकार अनन्तगुणा है ऐसा जाना जाता है, इसलिए इस प्रकारके अर्थविशेषसे प्रतिबद्ध होनेके कारण यह सूत्र विषयरहित नहीं है यह सिद्ध हुआ।

§ ५३ अथवा तीसरी संग्रह कृष्टि और अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाका अन्तर तीसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर है ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि संग्रहकृष्टि और स्पर्धकके अन्तरका भी किसी अपेक्षा संग्रहकृष्टि अन्तररूपसे निर्देश करनेमें विरोधका अभाव है। और ऐसा नहीं स्वीकार करनेपर इससे आगे माया और लोभके अन्तरके अनन्तगुणत्वका विरोध आता है, किसीको ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि लोभके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करनेपर इस प्रकार होता है, इसलिए अपने अपूर्व स्पर्धकोंसे सन्धान कर पुनः वहाँसे निवृत्त होकर और अधस्तन पद को ही ग्रहण कर उससे लोभ और मायाके अन्तरका अनन्तगुणेरूपसे निर्देशका अवलम्बन करनेपर वह दोष नहीं प्राप्त होता।

§ ५४ अथवा 'लोभकी तीसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है' ऐसा कहनेपर लोभकी तीसरी और मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टियोंके सन्धिविषयक गुणकारका ही ग्रहण करना चाहिए। और इस प्रकार अवलम्बन करनेपर अगले सूत्रको लक्ष्य कर पुनरुक्तपना भी नहीं होता, क्योंकि 'तीसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है' इस प्रकार यह सामान्य निर्देश होनेसे वह कौन सा है

---

१ आ प्रतौ समुप्पण्णो इति पाठः।

रायरणमुहेण लोभमायाणमतरमेव तदियसगहकिट्टीअतरमिह विवक्खिय, ण तत्तो अण्णमिदि पदुप्पायणट्ठमुवरिमसुत्तारम्भे पुणरुत्तदोसासभवादो ।

* लोभस्स मायाए च अंतरमणंतगुणं ।

§ ५५ गयत्थमेद सुत्त, अणतरसुत्ते चेव वक्खाणिदत्तादो ।

* मायाए पढमसगहकिट्टीअतरमणंतगुणं ।

§ ५६ एव भणिदे मायाए पढमसगहकिट्टीए चरिमकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा अप्पणो चेव विदियसगहकिट्टीए पढमकिट्टीपमाण पावदि सो गुणगारो घेत्तव्वो । सेस सुगम ।

* विदियसगहकिट्टीअंतरमणतगुण ।

§ ५७ सुगम ।

* तदियसंगहकिट्टीअंतरमणतगुण ।

§ ५८ एत्थ वि पुव्व व तीहि पयारेहि सुत्तत्थसमत्थणा कायव्वा, विसेसाभावादो ।

* मायाए माणस्स च अतरमणतगुण ।

§ ५९ ण तदियसगहकिट्टीअतरादो एदस्स भेदो, किंतु 'तदियसगहकिट्टीअतरमणतगुण' इदि वुत्ते मायाए माणस्स च चरिमपढमसंगहकिट्टीण जमतर तमेव घेत्तव्व, णाण्णमिदि पुव्वसुत्त णिद्दिट्ठस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमेद सुत्तमोइण्णमिदि वक्खाणेयव्व । सेसं सुगम ।

ऐसा सन्देह उत्पन्न होनेपर उसके निराकरण द्वारा लोभ और मायाका अन्तर ही तीसरी सग्रह कृष्टिका अन्तर यहाँपर विवक्षित है, उससे भिन्न नही इस बातका कथन करनेके लिए अगले सूत्रका आरम्भ करनेपर पुनरुक्त दोषका प्राप्त होना असम्भव है ।

* लोभ सज्वलन और माया सज्वलनका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ५५ यह सूत्र गतार्थ है, क्योकि इससे अनन्तर पूर्व सूत्रमे ही इसका व्याख्यान कर आये हैं ।

* उससे मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ५६ ऐसा कहनेपर मायाकी प्रथम सग्रहकृष्टिकी अन्तिम कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित की गयी अपनी ही दूसरी सग्रह कृष्टिकी प्रथम कृष्टिके प्रमाणको प्राप्त होती है उस गुणकारको ग्रहण करना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* उससे दूसरी सग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ५७ यह सूत्र सुगम है ।

* उससे तीसरी सग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ५८ यहाँपर भी तीन प्रकारोसे सूत्रके अर्थका समर्थन करना चाहिए, क्योकि उक्त कथनसे इसमे कोई विशेषता नही है ।

* माया और मानका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ५९ तीसरी सग्रह कृष्टिके अन्तरसे इसमे कोई भेद नही है, किन्तु 'तदियसग्गहकिट्टी अतरमणतगुण' ऐसा कहनेपर मायाकी अन्तिम और मानकी प्रथम सग्रहकृष्टियोका जो अन्तर है उसे ही ग्रहण करना चाहिए, अन्य नही । इस प्रकार पूर्वसूत्रमे निर्दिष्ट किये गये ही अर्थका स्पष्टीकरण करनेके लिए यह सूत्र अवतीर्ण हुआ है ऐसा व्याख्यान करना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* माणस्स पढमसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

* विदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

* तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

* माणस्स च कोहस्स च अंतरमणंतगुणं ।

* कोहस्स पढमसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

* विदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

§ ६० एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

* तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

§ ६१ एवं भणिदे कोहतदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टी जेण गुणगारेण गुणिदा कोहस्स चेव अपुव्वफद्दयादिवग्गणं पावदि सो गुणगारो कोधस्स तदियसंगहकिट्टीअंतरमिदि णिद्दिट्ठं दट्ठव्वं। एवमेसो सत्थाणप्पाबहुअविही भणिदो होदि । पुणो एदं सत्थाणपदं मोत्तूण परत्थाणप्पाबहुअमुवरिमसुत्ते भणिहिदि त्ति एसो एक्को वक्खाणपयारो । अहवा 'तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं' इदि भणिदे विदियसंगहकिट्टीदो तदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टीसमुप्पायणट्ठं पविट्ठस्स गुणगारस्स गहणं कायव्वं । एवं घेत्तूण पुणो एदम्हादो उवरि लोभस्स अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए पविस्समाण परत्थाणगुणगारस्स णिद्देसमुवरिमसुत्ते भणिहिदि त्ति एसो विदियो वक्खाणपयारो । अथवा 'तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं' इदि भणिदे कोधस्स चरिमादो किट्टीदो लोभस्स अपुव्वफद्दयादिवग्गणाए परत्थाणगुणगारो चेव गहिदो णाण्णो त्ति पदुप्पायणफलो उवरिमसुत्तावयारो त्ति

---

* उससे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

* उससे दूसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

* उससे तीसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

* मान संज्वलन और क्रोध संज्वलनका अन्तर अनन्तगुणा है ।

* उससे क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

* उससे दूसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ६० ये सूत्र सुगम हैं ।

* उससे तीसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है ।

§ ६१ ऐसा कहनेपर क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टि जिस गुणकारसे गुणित होकर क्रोधके ही अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाको प्राप्त होती है वह गुणकार क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिका अन्तर है ऐसा निर्दिष्ट जानना चाहिए। इस प्रकार यह स्वस्थान अल्पबहुत्व विधि कही गयी है। अब उस स्वस्थान पदको छोड़कर परस्थान अल्पबहुत्वको अगले सूत्रमें कहेंगे यह एक व्याख्यान प्रकार है। अथवा 'तीसरी संग्रहकृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है' ऐसा कहनेपर दूसरी संग्रहकृष्टिसे तीसरी संग्रहकृष्टिकी अन्तिम कृष्टिको उत्पन्न करनेके लिए प्रविष्ट हुए गुणकारको ग्रहण करना चाहिए। ऐसा ग्रहण करके पुन उससे आगे लोभके अपूर्व स्पर्धकोंकी आदि वर्गणामें प्रविष्ट होनेवाले परस्थान गुणकारका निर्देश अगले सूत्रमें कहेंगे इस प्रकार यह दूसरा व्याख्यान प्रकार है ? अथवा 'तीसरी संग्रह कृष्टिका अन्तर अनन्तगुणा है' ऐसा कहनेपर क्रोधकी तीसरी कृष्टिसे लोभके अपूर्व स्पर्धकोंकी आदि वर्गणाका परस्थान गुणकार ही ग्रहण किया है, अन्य नहीं। इस प्रकार इस बातका

एसो तदियो वक्खाणपयारो, तिसु वि पयारेसु अवलंबिदेसु विरोहाणुवलंभादो।

※ कोधस्स चरिमादो किट्टीदो लोभस्स अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अंतरमणंत-गुणं।

§ ६२ गयत्थमेदं सुत्तं। एवमेत्तिएण पबंधेण पुव्वपरूविदकिट्टीअप्पाबहुअस्स गुणगार साहणट्ठमेदं अप्पाबहुअं परूविय संपहि एत्तो पढमसमए णिव्वत्तिज्जमाणियासु किट्टीसु दिज्जमाणस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं कुणमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

※ पढमसमए किट्टीसु पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं वत्तइस्सामो।

§ ६३ सुगममेदं पइण्णावक्कं।

※ तं जहा।

§ ६४ सुगमं।

※ लोभस्स जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्गं बहुअं।

§ ६५ पढमसमयकिट्टीकारगो पुव्वापुव्वफद्दएहिंतो पदेसग्गस्सासंखेज्जदिभागमोकड्डियूण पुणो ओकड्डिदसयलदव्वस्सासंखेज्जदिभागमेत्तं दव्वं किट्टीसु णिक्खिवदि। एवं च णिक्खिवमाणो लोभस्स जा जहण्णिया किट्टी तिस्से सरूवेण बहुअं पदेसग्गं णिक्खिवदि, अणंतरपरूविददव्व

कथन करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार हुआ है। इस प्रकार यह तीसरा व्याख्यान प्रकार है, क्योंकि तीनों ही प्रकारोंके अवलम्बन करनेपर कोई विरोध नहीं उपलब्ध होता।

विशेषार्थ—यहाँपर 'तदियसंग्रहकिट्टीअंतरं अणंतगुणं' इस सूत्रकी रचनाके प्रयोजनरूपमे जिन तीन प्रकारोंको ध्यानमें रखते हुए उससे अगले सूत्रकी रचना की गयी है इस तथ्यको स्पष्ट किया गया है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

※ क्रोधकी अंतिम कृष्टिसे लोभके अपूर्व स्पर्धकोंकी आदि वर्गणाका अन्तर अनन्तगुणा है।

§ ६२ यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा पूर्वमें कहे गये कृष्टियोंके अल्पबहुत्वके गुणकारोंकी सिद्धिके लिए इस अल्पबहुत्वका कथन करके अब इसके बाद प्रथम समयमें निष्पन्न हुई कृष्टियोंमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिका कथन करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

※ अब प्रथम समयमें कृष्टियोंमें प्रदेशपुंजके श्रेणिप्ररूपणको बतलावेंगे।

§ ६३ यह प्रतिज्ञावाक्य सुगम है।

※ वह जैसे।

§ ६४ यह सूत्र सुगम है।

※ लोभकी जघन्य कृष्टिमें प्रदेशपुंज बहुत है।

§ ६५ प्रथम समयमें कृष्टिकारक जीव पूर्व और अपूर्व स्पर्धकसम्बन्धी प्रदेशपुंजके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके पुनः अपकर्षित किये गये समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागमात्र द्रव्यको कृष्टियोंमें निक्षिप्त करता है और इस प्रकार निक्षेपण करता हुआ लोभकी जो जघन्य कृष्टि है उस रूपसे बहुत प्रदेशपुंजका निक्षेपण करता है, क्योंकि अनन्तर पूर्व प्ररूपित किये गये द्रव्यको

किट्टीअद्धाणेण खंडिय तत्थेयखंडदव्वमेत्तस्स रूवूणकिट्टीअद्धाणमेत्तवग्गणविसेसेहिं समहियस्स जहण्णकिट्टीए णिक्खेवदसणादो।

*** विदियाए किट्टीए विसेसहीणं।**

§ ६६ केत्तियमेत्तेण ? एयवग्गणविसेसमेत्तेण[2]। एत्तो उवरिमकिट्टीसु वि जहाकममणंतभागेण विसेसहीणमेव पदेसग्गं णिक्खिवदि जाव ओघुक्कस्सियादो कोहकिट्टीदो त्ति इममत्थविसेसं जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

*** एवमणंतरोवणिधाए विसेसहीणमणंतभागेण जाव कोहस्स चरिमकिट्टि त्ति।**

§ ६७ एवमेदेण विहाणेण अणंतरोवणिधाए उवरि सव्वत्थ एगेगवग्गणविसेसमेत्तं परिहीणं कादूण णेदव्वं जाव सव्वासिं संगहकिट्टीणमंतरकिट्टीओ समुल्लंघियूण सव्वुक्कस्सिय कोहचरिमकिट्टि पत्तो त्ति। कुदो ? एदम्मि अद्धाणे अणंतराणंतरादो अणंतभागहाणिं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो।

कृष्टियोंके अध्वानसे खण्डित करके वहाँ जो एक खण्डप्रमाण द्रव्य प्राप्त हो उसे एक कम कृष्टियोंके स्थानप्रमाण वर्गणा विशेषोसे अधिक करे, क्योकि उतने द्रव्यका जघन्य कृष्टिमे निक्षेप देखा जाता है।

*** उससे दूसरी कृष्टिमे प्रदेशपुज विशेष हीन है।**

§ ६६ शका—कितना हीन है ?

समाधान—एक वर्गणामें विशेषका जितना प्रमाण है उतना हीन है।

इससे आगे उपरिम कृष्टियोंमें भी क्रमसे अनन्तवें भागप्रमाण विशेषसे हीन प्रदेशपुजको ही तब तक निक्षिप्त करता है जब जाकर ओघ उत्कृष्ट क्रोधकृष्टि प्राप्त होती है इस प्रकार इस अर्थविशेषका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

*** इस प्रकार अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा उत्तरोत्तर अनन्तवें भागप्रमाण विशेष हीन प्रदेशपुजका निक्षेप क्रोधकी अन्तिम कृष्टि तक होता है।**

§ ६७ इस प्रकार इस विधिसे अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा आगे सवत्र एक-एक वर्गणाविशेष मात्र हीन करते हुए तब तक ले जाना चाहिए जब जाकर सब सग्रह कृष्टियोंकी अन्तर कृष्टियोको उल्लघन करके सबसे उत्कृष्ट क्रोधकी अन्तिम कृष्टि प्राप्त होती है क्योकि इस अध्वानमें अनन्तर अनन्तररूपसे अनन्तभागहानिको छोड़कर अन्य प्रकार सम्भव नही है।

विशेषार्थ—यहाँपर लोभकी जघन्य कृष्टिसे लेकर क्रोधकी अन्तिम कृष्टि तक जितनी भी अवान्तर कृष्टियाँ पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोमेंसे द्रव्यका अपकर्षण कर, निर्वृत्त होती हैं उनमेंसे किस कृष्टिको कितना द्रव्य प्राप्त होता है और वह समस्त द्रव्य अपूर्व और पूर्व स्पर्धकोके समस्त द्रव्यका कितने भागप्रमाण है यही तथ्य यहाँ स्पष्ट किया गया है। यथा—पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोमे जितना द्रव्य होता है उसमें असंख्यातका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसका अपकर्षण करके उसमें भी असख्यातका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतना द्रव्य सब कृष्टियोमें निक्षिप्त होता है। तो भी सब कृष्टियोमें उक्त द्रव्यके निक्षिप्त होनेका क्रम यह है कि सब कृष्टियोको एक-एक करके जितना द्रव्य प्राप्त होता है उसमेंसे लोभकी जघन्य कृष्टिको सबसे अधिक द्रव्य प्राप्त होता है। पुन उससे आगे लोभकी दूसरी कृष्टिसे लेकर क्रोधकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक प्रत्येक कृष्टिको उत्तरोत्तर एक-एक विशेष हीन द्रव्य प्राप्त होता है। यहाँपर विशेषका प्रमाण सब कृष्टियोको प्राप्त होनेवाले द्रव्यके अनन्तवें भागमात्र है।

---

१ ता प्रतौ रूवूणकिट्टीअकरणद्ध इति पाठ । २ आ प्रतौ एयवग्गणविसेसेण इति पाठ ।

§ ६८ संपहि परंपरोवणिधाए सव्वजहण्णलोभकिट्टीपवेसग्गादो सव्वुक्कस्सकोहकिट्टीए पवेसग्ग कधमवचिट्ठदि[1] त्ति आसंकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* परपरोवणिधाए जहण्णियादो लोभकिट्टीदो उक्कस्सियाए कोधट्टिकीए पदेमग्गं विसेसहीणमणतभागेण ।

§ ६९ कुदो एव चे ? किट्टीअद्धाणस्स एयगुणहाणिट्ठाणतरस्साणतिमभागपमाणत्तादो । एत्थ हीणासेसदव्वपमाण रूवूणकिट्टिअद्धाणमेत्तवग्गणविसेसा त्ति घेत्तव्व ।

§ ७० संपहि कोहचरिमकिट्टीए णिसित्तपवेसग्गादो अपुव्वफद्दयादिवग्गणाए णिवदमाण पवेसग्गस्स पमाणाणुगम कस्सामो। तं जहा—कोहचरिमकिट्टीए णिसित्तपदेसग्गादो अपुव्वफद्दयादिवग्गणाए णिवदमाणपवेसग्गमणतगुणहीण होदि। किं कारण ? कोधचरिमकिट्टीए अणताओ

---

§ ६८ अब परम्परोपनिधाकी अपेक्षा सबसे जघन्य लोभ कृष्टिके प्रदेशपुजसे लकर सबसे उत्कृष्ट क्रोध कृष्टिमे प्रदेशपुज किस प्रकार अवस्थित है ऐसी आशका होनेपर नि शक करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* परम्परोपनिधाकी अपेक्षा जघन्य लोभकृष्टिसे उत्कृष्ट क्रोधकृष्टिमे प्राप्त हुआ प्रदेशपुज अनन्तवें भागप्रमाण विशेष हीन है।

§ ६९ शंका—ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान—क्योकि कृष्टियोंका अध्वान एक गुणहानि स्थानान्तरके अनन्तवें भागमात्र है।

यहाँपर हीन हुआ समस्त द्रव्य एक कम कृष्टि अध्वान (आयाम) प्रमाण वर्गणाविशेषरूप है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—जहाँ अनन्तरोपनिधामें प्रथम कृष्टिके बाद दूसरी कृष्टिमें कितने हीन द्रव्यक निक्षेप हुआ है। इसी प्रकार द्वितीयादि प्रत्येक कृष्टिसे तीसरी आदि प्रत्येक कृष्टिमे उत्तरोत्तर कितने हीन द्रव्यका निक्षेप हुआ है इसका निर्देश किया गया है वहाँ परम्परोपनिधाकी अपेक्षा लोभकी जघन्य कृष्टिमे क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमें सब मिला कर कितने हीन द्रव्यका निक्षेप हुआ है यह विचार किया गया है। यहाँ इतना विशेष समझना चाहिए कि जहाँ अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा एक कृष्टिसे उसके अनन्तरकी दूसरी कृष्टिमें जितना द्रव्य हीन होकर दिया गया है उस हीन द्रव्यका प्रमाण सब द्रव्यके अनन्तवें भागमात्र है वहाँ परम्परोपनिधाकी अपेक्षा भी लोभकी जघन्य कृष्टिसे क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमे जितना द्रव्य हीन होकर निक्षिप्त हुआ है वह हीन द्रव्य भी सब कृष्टियोको प्राप्त होनेवाले सब द्रव्यके अनन्तवें भागप्रमाण है। फिर भी यह एक कृष्टिसे दूसरी कृष्टिमें जितना द्रव्य हीन हुआ है उसे एक कम कृष्टि अध्वानप्रमाण वर्गणाविशेषोसे गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना होता है।

§ ७० अब क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपुजसे अपूर्व स्पर्धकोकी आदि वर्गणामें निक्षिप्त होनेवाले प्रदेशपुजके प्रमाणका अनुगम करेंगे। वह जैसे—क्रोधको अन्तिम कृष्टिमें निक्षिप्त हुए प्रदेशपुजसे अपूर्व स्पर्धकको आदि वर्गणामें निक्षिप्त होनेवाला प्रदेशपुज अनन्तगुणा हीन है।

शंका—इसका क्या कारण है ?

---

१ आ प्रतौ कधमिव चिट्ठदि इति पाठ ।

अपुव्वफद्दयादिवग्गणाओ णिक्खिविय पुणो अपुव्वफद्दयवग्गणाए तत्थ पुव्वावट्ठिदव्वस्सासंखेज्जदि भागमेत्तं चेव णिक्खिवमाणस्स तदुवलद्धीए बाहाणुवलंभादो। एत्थ दोण्हं पि दव्वाणमोवट्टणं ठविय पयदत्थविसये सिस्साण पडिबोहो कायव्वो।

§ ७१ दिस्समाणदव्वं पि कोधचरिमकिट्टीए बहुअं। अपुव्वफद्दयादिवग्गणाए अणंतगुणहीणमिदि दट्ठव्वं। तदो एत्थ दोगोवुच्छाओ जादाओ—किट्टीसु एया गोवुच्छा, पुव्वापुव्वफद्दएसु अण्णा गोवुच्छा त्ति। अण्णे पुण आइरिया किट्टीसु फद्दएसु च एया चेव गोवुच्छा होदि त्ति भणंति। तेसिमहिप्पाएण कोहचरिमकिट्टीए णिसित्तपदेसग्गादो अपुव्वफद्दयादिवग्गणाए णिसिच्चमाणपदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं होदि, अण्णहा किट्टीसु फद्दएसु च भिण्णगोवुच्छप्पसंगादो। एदम्मि पक्खे किट्टीकरणद्धाए चरिमसमयं मोत्तूण हेट्ठिमासेससमएसु किट्टीसु दिस्समाणासेसदव्वमेयसमयपबद्धस्साणंतिमभागमेत्तं चेव जायदे। ण चेदमिच्छिज्जदे, उवसमसेढीए एदस्सत्थस्स बाहोवलंभादो। तम्हा पुव्वुत्तो चेव अत्थो घेत्तव्वो। एवं किट्टीकरणद्धाए पढमसमए किट्टीसु दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणं[1] कादूण संपहि विदियसमए कीरमाणकज्जभेदपदुप्पायणट्ठमुवरिमसुत्तपबंधमाह—

* विदियसमए अण्णाओ अपुव्वाओ किट्टीओ करेदि पढमसमये णिव्वत्तिदकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्ताओ।

समाधान—क्योकि क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमें अपूर्व स्पर्धककी अनन्त आदि वर्गणाओको निक्षिप्त कर पुन अपूर्व स्पर्धककी वर्गणामें वहाँ पूर्वके अवस्थित हुए द्रव्यके असख्यातवे भागमात्र ही द्रव्यका निक्षेप करनेवालेके उसकी उपलब्धि होनेमे बाधा नही पाई जाती। यहां पर दोनो ही द्रव्योका अपवर्तन स्थापित करके प्रकृत अर्थके विषयमें शिष्योंको प्रतिबोधित करना चाहिए।

§ ७१ दृश्यमान द्रव्य भी क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमें बहुत है तथा उससे अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणामे अनन्तगुणा हीन है ऐसा जानना चाहिए। इसलिये यहाँ पर दो गोपुच्छाएँ हो जाती हैं—कृष्टियोमें एक गोपुच्छा तथा पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोमें एक अन्य गोपुच्छा। किन्तु अन्य आचार्य कृष्टियो और स्पर्धकोमे एक ही गोपुच्छा होती है ऐसा कहते है। उनके अभिप्रायसे क्रोधकी अन्तिम कृष्टिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपुजसे अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणामें निक्षिप्त होनेवाला प्रदेशपुज असख्यातगुणा हीन होता है, अन्यथा कृष्टियो और गोपुच्छाओमे भिन्न गोपुच्छाओका प्रसग प्राप्त होता है। परन्तु इस पक्षके स्वीकार करनेपर कृष्टिकरणके कालमे अन्तिम समयको छोडकर अधस्तन (पूर्वके) समस्त समयसम्बन्धी कृष्टियोमें दिखनेवाला समस्त द्रव्य एक समयप्रबद्धके अनन्तवें भागमात्र ही हो जाता है। परन्तु यह स्वीकार नहीं है, क्योकि उपशम श्रेणिमे इस अर्थमें बाधा पाई जाती है। इसलिए पूर्वोक्त अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार कृष्टिकरणके कालके प्रथम समयमे दीयमान प्रदेशपुजकी श्रेणिप्ररूपणा करके अब दूसरे समयमे किये जानेवाले कार्यभेदका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* दूसरे समयमे पूर्व समयमे निष्पन्न हुई कृष्टियोंके असख्यातवें भागप्रमाण अन्य अपूर्व कृष्टियोंको करता है।

---

१ आ प्रती सम्मसेढिपरूपण इति पाठ।

§ ७२ पढमसमयमोकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डियूण किट्टीकारणविदियसमए किट्टीओ करेमाणो पढमसमयणिव्वत्तिदकिट्टीण हेट्ठा अण्णाओ[1] अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि। पुव्वणिव्वत्तिदाओ च सरिसधणियमुहेण णिव्वत्तेदि। तासिमपुव्वाण किट्टीण किंपमाणमिदि वुत्ते पढमसमए णिव्वत्तिदकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति तासिं पमाणणिद्देसो कदो। पढमसमय णिव्वत्तिदकिट्टीसु तप्पाओग्गपलिदोवमासंखेज्जभागेणोवट्टिदासु तत्थ भागलद्धमेत्ताणमपुव्वकिट्टीण विदियसमए णिव्वत्ती होदि त्ति वुत्तं होदि।

§ ७३ संपहि विदियसमयकिट्टीकारगो तक्कालोकड्डिदसयलदव्वस्सासंखेज्जदिभागं घेत्तूणापुव्वकिट्टीसु णिक्खिविय सेसबहुभागदव्वं पुव्वकिट्टीसु फद्दएसु च समयाविरोहेण णिक्खिवदि त्ति घेत्तव्वं। संपहि तासिमपुव्वाण किट्टीण कदमम्मि ओगासे णिव्वत्ती होदि त्ति आसंकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए हेट्ठा अपुव्वाओ किट्टीओ करेदि।

§ ७४ कोहसंजलणस्स पुव्वापुव्वफद्दएहिंतो पदेसग्गमोकड्डियूण अप्पणो तिण्हं संगहकिट्टीण हेट्ठदो पादेक्कमपुव्वाओ किट्टीओ पुव्वकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्ताओ णिव्वत्तेदि। एवं माण-माया-

§ ७२ प्रथम समयमे अपकर्षित किये गये द्रव्यसे असंख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण करके कृष्टिकारक जीव दूसरे समयमे कृष्टियोको करता हुआ प्रथम समयमे निष्पादित की गयी कृष्टियोंके नीचे अन्य अपूर्व कृष्टियोको निष्पादित करता है। तथा पूर्वमे निष्पादित हुई कृष्टियोको सदृश धनरूपसे निष्पादित करता है। उन अपूर्व कृष्टियोका क्या प्रमाण है ऐसा कहने पर प्रथम समयमें निष्पादित की गयी कृष्टियोके असंख्यातवें भागप्रमाण है इस प्रकार उनके प्रमाणका निर्देश किया है। प्रथम समयमे निष्पादित की गयी कृष्टियोको तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित करने पर वहाँ जो भाग लब्ध आवे तत्प्रमाण अपूर्व कृष्टियोकी दूसरे समयमे निष्पत्ति होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

विशेषार्थ—प्रथम समयमे जितनी कृष्टियोकी निष्पत्ति होती है उनके प्रमाणमे पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो लब्ध आवे जो कि प्रथम समयमें निष्पन्न की गयी कृष्टियों के असंख्यातवें भागप्रमाण होता है उतनी अपूर्व कृष्टियोको निष्पादित करता है। इसके साथ ही प्रथम समयमें निष्पन्न की गयी कृष्टियोके समान धनवाली कृष्टियोको भी निष्पादित करता है ऐसा यहाँ समझना चाहिये।

§ ७३ अब दूसरे समयमें कृष्टिकारक जीव तत्काल अपकर्षित किये गये समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यको ग्रहण करके तथा उसे अपूर्व कृष्टियोमे निक्षिप्त करके शेष बहुभाग प्रमाण द्रव्यको पूर्वकी कृष्टियोमे और स्पर्धकोंमे आगमके अविरोधपूर्वक निक्षिप्त करता है ऐसा प्रकृतमें ग्रहण करना चाहिये। अब उन अपूर्व कृष्टियोकी किस अवकाश (स्थान) मे निष्पत्ति होती है ऐसी आशंका होने पर निःशंक करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* एक एक संग्रह कृष्टिके नीचे अपूर्व कृष्टियोको करता है।

§ ७४ क्रोध संज्वलनके पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोमें से प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके अपनी तीनों संग्रह कृष्टियोंके नीचे पूर्व कृष्टियोके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रत्येक सम्बन्धी अपूर्व कृष्टियोको निष्पादित करता है। इसी प्रकार मान, माया और लोभसंज्वलनसम्बन्धी भी अपने अपने प्रदेश

---

1 आ प्रतौ किट्टीण अण्णाओ इति पाठ।

लोभाण पि अप्पप्पणो पदेसग्गमोकड्डियूण सगसगसगहकिट्टीण पढमसमयणिव्वत्तिदाणं हेट्ठा पादेक्कमसखेज्जभागमेत्तीओ णिव्वत्तेदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसगहो। तदो बारसण्ह पि सगह-किट्टीणं जहण्णकिट्टीहितो हेट्ठा पादेक्कं पव्वकिट्टीणमसखेज्जदिभागमेत्तीओ अपुव्वकिट्टीओ णिव्वत्तेमाणस्स बारससु ट्ठाणेसु अपुव्वाणं किट्टीण विदियसमये पादुब्भावो जादो त्ति घेत्तव्वं।

§ ७५ सपहि तत्थ दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणट्ठमुत्तरं सुत्तपबंधमाह—

* विदियसमए दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवण वत्तइस्सामो।

§ ७६ सुगम।

* त जहा।

§ ७७ सुगम।

* लोभस्स जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्ग बहुअ दिज्जदि।

§ ७८ एत्थ लोभस्स जहण्णिया किट्टी त्ति वुत्ते लोभसजलणस्स पढमसगहकिट्टीदो हेट्ठा णिव्वत्तिज्जमाणाणमणताणमपुव्वकिट्टीणमादिमकिट्टी[1] घेत्तव्वा। तत्थ दिज्जमाणपदेसग्गमुवरिम किट्टीसु दिज्जमाणपदेसग्गादो बहुग होइ, अण्णहा किट्टीगदपदेसग्गस्स पुव्वाणुपुव्वीए एगगोवुच्छायारेणावट्ठाणाणुववत्तीदो।

पुजका अपकर्षण करके प्रथम समयमें निष्पादित अपनी अपनी सग्रह कृष्टियोके नीचे प्रत्येक सम्बन्धी असख्यातवे भागप्रमाण अपूव कृष्टियोको निष्पादित करता है इस प्रकार यह यहाँ पर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। इसलिए बारहो संग्रह कृष्टियोकी जघन्य कृष्टियोसे नीचे प्रत्येक सम्बन्धी पूव कृष्टियोके असख्यातव भागप्रमाण अपूव कृष्टियोको निष्पादित करनेवालेके बारहो स्थानोमें अपूव कृष्टियोका दूसरे समयमे प्रादुर्भाव हो जाता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिये।

विशेषाथ—सब सग्रह कृष्टियाँ १२ हैं। उनमे-से प्रत्येक संग्रह कृष्टिसे नीचे प्रत्येक सग्रह कृष्टि सम्बन्धी अवान्तर कृष्टियोका जितना प्रमाण है उनके असख्यातवें भागप्रमाण अपूव कृष्टियो-को दूसरे समयमे यह जीव निष्पादित करता है यह उक्त कथनका तात्पय है।

§ ७५ अब उनमे दीयमान प्रदेशपुजकी श्रेणिप्ररूपणा करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* दूसरे समयमे दीयमान प्रदेशपुजका श्रेणिप्ररूपण बतलावेंगे।

§ ७६ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ ७७ यह सूत्र सुगम है।

* लोभकी जघन्य कृष्टिमे बहुत प्रदेशपुज दिया जाता है।

§ ७८ यहाँ पर 'लोभकी जघन्य कृष्टि' ऐसा कहने पर लोभसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिसे नीचे निष्पादित होनेवाली अनन्त अपूर्व कृष्टियोकी आदि कृष्टि ग्रहण करनी चाहिये। उसमें दीयमान प्रदेश पुज उपरिम कृष्टियोंमें दीयमान प्रदेश पुंजसे बहुत होना है, अन्यथा कृष्टिगत प्रदेशपुंजका पूर्व और अपूव कृष्टियोकी अपेक्षा एक गोपुच्छाकाररूपसे अवस्थान नहीं बन सकता।

---

१. आ प्रतौ किट्टीओ इति पाठ।

* विदियाए किट्टीए विसेसहीणमणंतभागेण ।

§ ७९ एत्थाणंतभागेणेत्ति वुत्ते एयवग्गणविसेसमेत्तेणेत्ति घेत्तव्वं । तेण पढमकिट्टीए णिसित्तपदेसग्गादो विदियकिट्टीए णिसिंचमाणपदेसग्गमेयवग्गणविसेसमेत्तेण हीणं होदि त्ति सिद्धं ।

* ताव अणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति ।

§ ८० एगेण वग्गणविसेसमवट्ठिदपमाणमणंतराणंतरादो हीणं कादूण ताव णेदव्वं जाव विदियसमए लोहस्स पढमसंगहकिट्टीए हेट्ठा णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीणं चरिमकिट्टीदो त्ति । कुदो ? एदम्मि अद्धाणे अणंतभागहाणि मोत्तूण पयारंतरासंभवादो । एवमेदम्मि विसए अणंतभागहाणीए पदेसविण्णासं कादूण तदो पढमसमयणिव्वत्तिदाणं लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणं जा जहण्णिया पुव्वकिट्टी तत्थ केरिसं पदेसणिक्खेवं करेदि त्ति आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तर सुत्तारंभो—

* तदो पढमसमए णिव्वत्तिदाणं जहण्णियाए किट्टीए विसेसहीणमसंखेज्जदि-भागेण ।

§ ८१ तं जहा—पढमसमए किट्टीसु णिसित्तासेसपदेसपिंडादो विदियसमए किट्टीसु णिसिंचमाणसयलपदेसपिंडो असंखेज्जगुणो होदि । किं कारणं ? अणंतगुणविसोहीए ओकड्डियूण गहिदत्तादो । तेण कारणेण विदियसमयम्मि अपुव्वाणं चरिमकिट्टीए णिसित्तपदेसपिंडो पढमसमय

* दूसरी कृष्टिमें अनन्तवें भाग प्रमाण विशेषहीन प्रदेशपुञ्ज दिया जाता है ।

§ ७९ इस सूत्रमें 'अणंतभागेण' ऐसा कहने पर 'एक वर्गणाविशेषमात्रसे' ऐसा ग्रहण करना चाहिए । इसलिए प्रथम कृष्टिमें निक्षिप्त हुए प्रदेशपुञ्जसे दूसरी कृष्टिमें निक्षिप्यमान प्रदेश पुञ्ज एक वर्गणाविशेषमात्र हीन होता है यह सिद्ध होता है ।

* इस प्रकार तब तक अनन्तवें भागप्रमाण हीन द्रव्य दिया जाता है जबतक कि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिके नीचे निर्वर्तमान अपूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टि प्राप्त होती है ।

§ ८० एक वर्गणाविशेषको अवस्थित प्रमाणरूपसे हीन करके अनन्तर तदनन्तर क्रमसे तब तक ले जाना चाहिए जब तक दूसरे समयमें लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिके नीचे निवर्तमान अपूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टि प्राप्त होती है, क्योंकि इस स्थानमें अनन्त भागहानिको छोड़कर अन्य प्रकार असम्भव है । इस प्रकार इस स्थान पर अनन्त भागहानिरूपसे प्रदेशविन्यास करके उसके बाद लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी प्रथम समयमें निवर्तमान अन्तर कृष्टियोंकी जो जघन्य पूर्व कृष्टि है उसमें किस प्रकारके प्रदेशोंका निक्षेप करता है ऐसी आशंका होने पर निर्णयका विधान करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* उससे प्रथम समयमें निर्वतित लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिकी अन्तर कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टिमें असंख्यातवें भागप्रमाण विशेषहीन प्रदेशपुञ्ज दिया जाता है ।

§ ८१ वह जैसे—प्रथम समयमें कृष्टियोंमें निक्षिप्त किये गये समस्त प्रदेशपिण्डसे दूसरे समयमें कृष्टियोंमें निक्षिप्यमान समस्त प्रदेशपिण्ड असंख्यातगुणा होता है ।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि अनन्तगुणी विशुद्धिवश अपकर्षित करके इस प्रदेशपिण्डका ग्रहण किया है । इस कारण दूसरे समयमें अपूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिमें निक्षिप्त किया गया प्रदेशपिण्ड

जहण्णकिट्टीए पुव्वावट्ठिदपदेसपिंडादो विसोहिपाहम्मेणासंखेज्जगुणो होदि त्ति वट्टव्वं। पुणो पढमसमयणिव्वत्तिदजहण्णकिट्टीए उवरि संपहि णिसिंचमाणदव्वं पि पध काढूण जोइज्जमाणं तत्थ पुव्वावट्ठिदव्वादो असंखेज्जगुणं चेव भवदि, ओकड्डिददव्वमाहप्पमस्सियूण किट्टि पडि एण्हि णिसिंचमाणदव्वस्स तहाभावदंसणादो। एवं होदि त्ति काढूण तत्थ पुव्वावट्ठिदासंखेज्जदिभागमेत्तदव्वेण पुणो अणंतिमभागमेत्तेण च हीणो पदेसविण्णासो तत्थ इच्छियव्वो, अण्णहा पुव्वापुव्वकिट्टीणमेय गोवुच्छायारेण समवट्ठाणाणुववत्तीदो। एदेण कारणेणासंखेज्जभागहीणो पदेसविण्णासो एदम्मि संधिविसेसे जादो त्ति घेत्तव्वं। एवमुवरि वि जत्थ जत्थ अपुव्वाण चरिमादो पुव्वकिट्टीणं जहण्णियाए किट्टीए असंखेज्जदिभागहीण पदेसणिक्खेवं भणिहिदि तत्थ तत्थ इसो चेव अत्थो परूवेयव्वो। एवमेदम्मि संधिविसए संखेज्जभागहीणं पदेसविण्णासं काढूण तदो एत्तो उवरिमासु सव्वासु चेव लोभसंजलणस्स पढमसंगहकिट्टीए पढमसमयणिव्वत्तिदासु किट्टीसु अणंतराणंतरादो अणंतभागहीणं चेव पदेसणिसेगमेसो कुणदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तावयारो—

*** तदो विदियाए अणंतभागहीणं। तेण परं पढमसमयणिव्वत्तिदासु लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए किट्टीसु अणंतराणंतरेण अणंतभागहीणं दिज्जमाणगं जाव पढमसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टि त्ति।**

§ ८२ कुदो? एदम्मि विसए अणंतराणंतर पेक्खियूण एगेगवग्गणविसेसहाणीए पदेसणिक्खेव कुणमाणस्स तव्विरोहादो। संपहि एत्तो उवरि लोभस्स बिदियसंगहकिट्टीए हेट्ठा णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीणं जा जहण्णिया किट्टी तत्थ किंविधो पदेसविण्णासो होदि त्ति

प्रथम समयसम्बन्धी जघन्य कृष्टिमें पहलेके अवस्थित प्रदेश पिण्डसे विशुद्धिकी प्रधानतावश असख्यातगुणा होता है ऐसा जानना चाहिये। पुन प्रथम समयमे निर्वतित जघन्य कृष्टिके ऊपर इस समय सीचे जानेवाले द्रव्यको भी पृथक करके देखने पर वह वहाँ पर पूर्वके अवस्थित हुए द्रव्यसे असख्यातगुणा ही होता है, क्योंकि अपकर्षित हुए द्रव्यके महत्त्वका आश्रय कर कृष्टिके प्रति इस समय सीचा जानेवाला द्रव्य उस रूपसे देखा जाता है। ऐसा होता है ऐसा करके (समझकर) वहाँ पहलेके अवस्थित हुए असख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यसे और पुन अनन्तवें भागमात्रसे हीन प्रदेश विन्यास वहाँ पर स्वीकार करना चाहिये, अन्यथा पूर्व और अपूर्व कृष्टियोंका एक गोपुच्छाकार रूपसे अवस्थान नहीं बन सकता। इस कारण इस सन्धि विशेषमें असख्यात भागहीन प्रदेश विन्यास हो गया है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार आगे भी जहाँ-जहाँ अपूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे पूर्व कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टिमें असंख्यातवाँ भागहीन प्रदेशविन्यास कहेंगे वहाँ-वहाँ यही अर्थ कहना चाहिए। इस प्रकार इस सन्धिस्थानमें सख्यात भागहीन प्रदेशविन्यास करके तदनन्तर इससे उपरिम सभी, लोभसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिकी, प्रथम समयमें निर्वर्तित कृष्टियोंमें अनन्तर अनन्तर क्रमसे अनन्तभागहीन ही प्रदेश निक्षेप यह जीव करता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

*** उससे दूसरी कृष्टिमें अनन्त भागहीन प्रदेशपुञ्ज दिया जाता है। उससे आगे प्रथम समयमें निर्वर्तित लोभकी प्रथम सग्रह कृष्टिकी कृष्टियोंमें अनन्तर अनन्तर क्रमसे प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक अनन्त भागहीन प्रदेशपुञ्ज दिया जाता है।**

§ ८२ क्योंकि इस स्थानमें अनन्तर-अनन्तर कृष्टियोंको दिये जानेवाले प्रदेशपुञ्जको देखते हुए उत्तरोत्तर एक-एक वर्गणाविशेषकी हानि द्वारा प्रदेश निक्षेपको करनेवालेके वैसा होनेमें विरोधका अभाव है। अब इससे आगे लोभकी दूसरी संग्रहकृष्टिके नीचे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व

आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुवरिमं पबंधमाह—

* लोभस्स चेव विदियसमए विदियसंगहकिट्टीए तिस्से जहण्णियाए किट्टीए दिज्जमाणगं विसेसाहियमसंखेज्जदिभागेण ।

§ ८३ पढमसमए णिव्वत्तिदा जा लोभस्स विदियसंगहकिट्टी तिस्से हेट्ठा विदियसमए णिव्वत्तिज्जमाणा अपुव्वकिट्टीण पंती पुव्वकिट्टीहि सह विवक्खिया विदियसमए विदियसंगहकिट्टी णाम। तिस्से जा जहण्णिया किट्टी तत्थ दिज्जमाणयं पदेसग्गं पढमसंगहकिट्टीचरिमकिट्टीए णिसित्तपदेसग्गं पेक्खियूण विसेसाहियं होदि। होतं पि णियमा असंखेज्जदिभागब्भहियं चेव, अण्णहा तत्तो एदस्स एयवग्गणविसेसमेत्तेण हाइदूण एयगोवुच्छायारेण समवट्ठाणाणुववत्तीदो। तं जहा—

§ ८४ पढमसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टिम्मि जेत्तिओ एण्हिं पदेसणिक्खेवो कओ तेत्तियमेत्तो चेव जइ विदियसंगहकिट्टीए हेट्ठिमाणमपुव्वकिट्टीणं जहण्णकिट्टीए पदेसणिक्खेवो होज्ज तो तत्तो एदस्सासंखेज्जदिभागहीणत्तं पसज्जदे, तत्थ पुव्वावट्ठिदासंखेज्जदिभागमेत्तदव्वस्सेत्थ परिहीणत्त दंसणादो। ण चेदमिच्छिज्जदे, सव्वासु किट्टीसु एया गोवुच्छासेढि त्ति पइण्णाए विघादप्पसंगादो। तम्हा तत्थ पुव्वावट्ठिददव्वमेत्तेणाणंतभागहीणेण समहिओ पदेसणिक्खेवो एत्थ इच्छियव्वो। अण्णहा तत्तो एगवग्गणविसेसमेत्तेण हाइदूण एत्थतणपदेसग्गस्सावट्ठाणविरोहादो। तदो सिद्धं मसंखेज्जदिभागुत्तरो पदेसणिसेगो एदम्मि उद्देसे जादो त्ति। एवमुवरिं वि जत्थ जत्थ पुव्वकिट्टीण चरिमादो अपुव्वाणं जहण्णकिट्टीए असंखेज्जदिभागुत्तरं पदेसणिक्खेवं भणिहिदि तत्थ तत्थ कारणं

कृष्टियोमे जो जघन्य कृष्टि है उसमे किस प्रकारका प्रदेशविन्यास होता है ऐसी आशका होनेपर निर्णय करनेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* लोभकी ही दूसरे समयमे उस दूसरी संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिमे असख्यातवाँ भागप्रमाण विशेष अधिक प्रदेशपुञ्ज दिया जाता है।

§ ८३ प्रथम समयमे लोभकी जो सग्रह कृष्टि निष्पन्न हुई उसके नीचे दूसरे समयमे जो अपूर्व कृष्टियोकी पक्ति निष्पन्न हो रही है, पूर्व कृष्टियोके साथ विवक्षित हुई वह दूसरे समयमे दूसरी सग्रह कृष्टि कहलाती है। उसकी जो जघन्य कृष्टि है उसमे दिया जानेवाला प्रदेशपुञ्ज प्रथम सग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिमें निक्षिप्त हुए प्रदशपुजको देखते हुए विशष अधिक होता है। ऐसा होता हुआ भी नियमसे असख्यातवाँ भागप्रमाण ही अधिक होता है, अन्यथा उससे इसके एक वगणा विशषमात्र घटकर एक गोपुच्छाके आकाररूप समवस्थान नही बन सकता है। वह जैसे—

§ ८४ प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिमे इस समय जितना प्रदेशनिक्षेप किया है उतना ही यदि दूसरी सग्रह कृष्टिकी अधस्तन अपूर्व कृष्टियोसम्बन्धी जघन्य कृष्टिमे प्रदेश निक्षेप होवे तो उससे इसके असंख्यातवें भागहीनपनेका प्रसग प्राप्त होता है, क्योकि उसमें जो पूर्वका असंख्यातवा भागप्रमाण द्रव्य अवस्थित है उसकी हानि देखी जाती है। परन्तु यह इष्ट नहीं है, क्योकि समस्त कृष्टियोमे एक गोपुच्छा पक्ति होती है इस प्रतिज्ञाके विघातका प्रसग प्राप्त होता है, इसलिए उसमे जो पहलेका अनन्तवाँ भागहीन द्रव्य अवस्थित है उससे अधिक प्रदेश निक्षेप यहाँ स्वीकार करना चाहिए, अन्यथा उससे एक वर्गणाविशेष मात्र घटकर यहाँके प्रदेशपुञ्जके अवस्थान माननेमे विरोध आता है, इसलिए सिद्ध हुआ कि असख्यातवाँ भाग अधिक प्रदेश निक्षेप इस स्थानमें हो गया है। इसी प्रकार आगे भी जहाँ जहाँ पूर्व कृष्टियो सम्बन्धी अपूर्व कृष्टियोकी जघन्य कृष्टिमें असंख्यातवाँ भाग अधिक प्रदेश निक्षेप कहेंगे वहाँ-वहाँ यह कारण कहना चाहिए। अब

सेसं पवेसणिज्जं। संपहि एत्तो उवरिमासु अपुव्वकिट्टीसु विदियसंगहकिट्टीए हेट्ठा णिव्वत्तिज्जमाणियासु अणंतरोवणिधाए अणंतभागहीणं चेव पदेसणिक्खेवं कुणदि त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

* तेण परमणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति ।

§ ८५ किं कारणं ? एदम्मि अद्धाणे अणंतभागहाणिं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो। संपहि एत्थतणाणमपुव्वकिट्टीणं चरिमादो पढमसमये णिव्वत्तिदाणं पुव्वकिट्टीणं लोभविदियसंगहकिट्टीपडिबद्धाणं जहण्णियाए किट्टीए पदेसविण्णासो एदेण सरूवेण पयट्टदि त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* तदो पढमसमयणिव्वत्तिदाणं जहण्णियाए किट्टीए विसेसहीणमसंखेज्जदिभागेण ।

§ ८६ तत्थ पुव्वावट्ठिदासंखेज्जदिभागमेत्तेण पुणो एगवग्गणविसेसमेत्तेण च परिहीणो पदेसणिसेगो एदम्मि संधिविसेसे होदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो।

* तेण परं विसेसहीणमणंतभागेण जाव विदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टि त्ति ।

§ ८७ सुगमं।

* तदो जहा विदियसंगहकिट्टीए विधी तहा चेव तदियसंगहकिट्टीए विधी च ।

§ ८८ जहा विदियसंगहकिट्टीए आदिम्मि अपुव्वाणं जहण्णकिट्टीए एगवारमसंखेज्जभागुत्तरपदेसविण्णासो होदूण तत्तो परमणंतभागहाणीए अपुव्वकिट्टीओ समुल्लंघियूण पुव्वकिट्टीणमादिल्ल

इससे उपरिम अपूर्व कृष्टियोमे दूसरी संग्रह कृष्टिके नीचे निष्प न होनेवाली कृष्टियोंमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अनन्तभागहीन ही प्रदेश निक्षेप करता है इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* उससे आगे दूसरी सग्रह कृष्टिसम्बन्धी निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक अनन्तभागहीन प्रदेशपुज दिया जाता है।

§ ८५ क्योंकि इस स्थानमें अनन्त भागहानिको छोड़कर अन्य प्रकार सम्भव नही है। अब यहांकी अपूर्व कृष्टियोकी अन्तिम कृष्टिसे प्रथम समयमें निष्पन्न हुई लोभसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिसम्बन्धी पूर्व कृष्टियोकी जघन्य कृष्टिमें प्रदेश निक्षेप इस रूपसे प्रवृत्त होता है इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* उससे प्रथम समयमें निष्पन्न हुई संग्रह कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टिमें असख्यातवें भागहीन प्रदेशपुज दिया जाता है।

§ ८६ क्योंकि उसमें पूर्वके अवस्थित असंख्यातवें भागप्रमाण एक वगणाविशेषमात्र परिहीन प्रदेशनिक्षेप इस सन्धिविशेषमे होता है यह यहाँ इस सूत्रका समुच्चयार्थ है।

* उससे आगे दूसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टि तक अनन्तवें भागप्रमाण विशेष हीन द्रव्य दिया जाता है।

§ ८७ यह सूत्र सुगम है।

* तदनन्तर जिस प्रकार दूसरी सग्रह कृष्टिकी विधि कही गयी है उसी प्रकार तीसरी सग्रह कृष्टिकी विधि जाननी चाहिए।

§ ८८ जिस प्रकार दूसरी सग्रह कृष्टिके आदिमें अपूर्व कृष्टियोकी जघन्य कृष्टिमें एक बार असख्यातवें भाग अधिक प्रदेश विन्यास होकर उससे आगे अनन्तभाग हानि द्वारा अपूर्व कृष्टियों

सधीए सइमसखेज्जभागहाणी होदूण तत्तो परमणतभागहाणीए चेव पदेसणिसेगविही परूविदो तहा चेव लोभतदियसगहकिट्टीए वि अणूणाहिओ परूवेयव्वो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चयो। सपहि लोभसजलणस्स तदियसगहकिट्टीए चरिमकिट्टिम्मि णिसित्तपदेसग्गादो मायाए पढमसगह किट्टीए हेट्ठा णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीण जहण्णियाए किट्टीए णिसिच्चमाणपदेसग्गमेदेण कमेण पयट्टदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमोइण्ण—

* तदो लोभस्स चरिमादो किट्टीदो मायाए जा विदियसमए जहण्णिया किट्टी तिस्से दिज्जदि पदेसग्ग विसेसाहियमसखेज्जदिभागेण ।

§ ८९ कारणमेत्थ सुगम, अणतरमेव परूविदत्तादो ।

* तदो पुण अणतभागहीण जाव अपुव्वाण चरिमादो त्ति ।

§ ९० सुगम ।

* एव जम्हि जम्हि अपुव्वाण जहण्णिया किट्टी तम्हि तम्हि विसेसाहिय-मसखेज्जदिभागेण अपुव्वाण चरिमादो असखेज्जदिभागहीण ।

§ ९१ एवमणतरपरूविदेण कमेण उवरि वि सेढिपरूवणाए कीरमाणाए जम्हि जम्हि उद्देसे पव्वाण चरिमादो अपुव्वाण जहण्णिया किट्टी भण्णदे तम्हि तम्हि तदणतरहेट्ठिमपुव्व किट्टीए णिसित्तपदेसग्गादो असखेज्जदिभागेण विसेसाहिय कादूण पदेसग्ग णिक्खिवदि । पुणो

को उल्लंघन कर पूव कृष्टियोंकी आदिम सधिमे एक बार असख्यात भागहानि होकर उससे आगे अनन्तभाग हानिरूपसे ही प्रदेशनिषकविधि कहनी चाहिए। तथा उसी प्रकार लोभकी तीसरी सग्रह कृष्टिकी भी यूनाधिकतासे रहित विधि कहनी चाहिए, यह यहाँ पर सूत्राथसमुच्चय है। अब लोभसज्वलनकी तीसरी सग्रह कृष्टिकी अन्तिम कष्टिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपुजसे माया सज्वलनकी प्रथम सग्रहकृष्टिके नीचे निष्पन्न होनेवाली अपूव कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टिमे निक्षिप्त होनेवाला प्रदेश पुज इस क्रमसे प्रवृत्त होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र आया है—

* तत्पश्चात् लोभ सज्वलनकी अन्तिम कृष्टिसे माया सज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिके नीचे दूसरे समयमे जो जघन्य कृष्टि निष्पन्न होती है उसमे दिये जानेवाला प्रदेश पुज असख्यातवें भागप्रमाण विशेष अधिक होता है।

§ ८९ यहाँपर कारणका कथन सुगम है, क्योंकि वह अनन्तर पूर्व ही कह आये हैं।

* पुन इससे आगे अपूव कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक अनन्त भागहीन प्रदेशपुज दिया जाता है।

§ ९० यह सूत्र सुगम है।

* इस प्रकार जहाँ जहा पूव कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे अपूव कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टि कही गई है वहाँ वहाँ असख्यातवाँ भागप्रमाण अधिक प्रदेशपुज दिया जाता है और जहाँ जहाँ अपूव कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे पूव कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टि कही गई है वहाँ वहाँ असख्यातवाँ भागहीन प्रदेशपुज दिया जाता है।

§ ९१ इस प्रकार अनन्तर पूव कहे गये क्रमके अनुसार आगे भी श्रेणिप्ररूपणा करनेपर जिस जिस स्थानपर पूव कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे अपूर्व कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टि कही जाती है उस उस स्थानपर तदनन्तर अधस्तन पूव कृष्टिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपुजसे असख्यातवें भागप्रमाण

जम्हि जम्हि अपुव्वाणं चरिमकिट्टीदो पुव्वाणं जहण्णिया किट्टी भण्णदे तम्हि तम्हि पुव्वणिसित्ता-संखेज्जविभागमेत्तदव्वेण परिहीणं कादूण पदेसग्गं णिसिंचदि। तदण्णत्थ पुण अणंतराणंतरादो अणंतभागहाणीए पदेसणिसेगं कुणदि त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। एवं च सेढिपरूवणं कादूण ओइज्जमाणे केत्तिएसु उद्देसेसु असंखेज्जभागहीणो पदेसविण्णासो जादो, केत्तिएसु वा उद्देसेसु असंखेज्जविभागुत्तरो पदेसणिक्खेवो जादो त्ति इममत्थविसेसं परूवेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* एदेण कमेण विदियसमए णिक्खिवमाणगस्स पदेसग्गस्स बारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जदिभागहीणं। एक्कारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जदिभागुत्तर दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स।

§ ९२ एवमणंतरपरूविदकमेण सेढिपरूवणं कादूण पुणो आदीदो प्पहुडि तम्हि ओइज्जमाणे विदियसमए णिसिंचमाणगस्स पदेसग्गस्स बारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जविभागहीणं समवट्ठाणं होदि, बारसण्हं पि संगहकिट्टीणमादिमसंधीसु अपुव्वाणं चरिमकिट्टीदो पुव्वजहण्णकिट्टीए णिसिंचमाणपदेसग्गस्स परिप्फुडमेव तहाभावोवलंभादो। पुणो एक्कारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जभागुत्तरं दिज्जमाणपदेसग्गावट्ठाणं होइ, पुव्वकिट्टीणं चरिमसंधीदो अपुव्वाणं जहण्णकिट्टीसु णियमा असंखेज्जविभागुत्तरं पदेसणिक्खेवं कुणमाणस्स तहाभावसिद्धीए बाहाणुवलंभादो। पुणो एदाणि तेवीससंधिट्ठाणाणि मोत्तूण सेसासेसकिट्टिट्ठाणेसु अणंतभागहीणो चेव पदेसविण्णासो होइ, ण तत्थ पयारंतरसंभवो[1] त्ति जाणावणफलमुत्तरसुत्तमोइण्णं—

विशेष अधिक करके प्रदेशपुंज निक्षिप्त करता है। तथा जिस जिस स्थान पर अपूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे पूर्व कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टि कही जाती है उस-उस स्थान पर पूर्वमें निक्षिप्त हुए असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यको हीन करके प्रदेशपुंजको निक्षिप्त करता है। पुनः उससे अन्यत्र अनन्तर अनन्तररूपसे अनन्त भागहानि द्वारा प्रदेश निषेकको करता है यह इस सूत्रका भावार्थ है। इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणाको करके देखनेपर कितने ही स्थानोंमें असंख्यात भागहीन प्रदेश विन्यास हो गया है तथा कितने ही स्थानोंमें असंख्यातवां भाग अधिक प्रदेश निक्षेप हो गया है इस प्रकार इस अर्थ विशेषका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इस क्रमसे दूसरे समयमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजका बारह स्थानोंमें असंख्यातवें भाग हीन अवस्थान होता है तथा दिये जानेवाले प्रदेशपुंजका ग्यारह स्थानोंमें असंख्यातवें भाग अधिक अवस्थान होता है।

§ ९२ इस प्रकार अनन्तर कहे गये क्रमके अनुसार श्रेणिकी प्ररूपणा करके पुनः प्रारम्भसे लेकर उसके देखने पर दूसरे समयमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजका बारह कृष्टिस्थानोंमें असंख्यातवें भागहीन अवस्थान होता है, क्योंकि बारह ही संग्रह कृष्टियोंकी प्रारम्भिक सन्धियोंमें अपूर्व अन्तिम कृष्टिसे पूर्वकी जघन्य कृष्टिमें दिया जानेवाला प्रदेशपुंज स्पष्ट रूपसे उस प्रकार उपलब्ध होता है। तथा ग्यारह कृष्टि स्थानोंमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजका असंख्यातवें भाग अधिक अवस्थान होता है, क्योंकि पूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे अपूर्व कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टियोंमें नियमसे असंख्यातवें भाग अधिक प्रदेशोंका निक्षेप करनेवालेके उस प्रकारसे सिद्धि होनेमें बाधा नहीं पायी जाती है। पुनः इन तेईस सन्धि स्थानोंको छोड़कर शेष समस्त कृष्टिस्थानोंमें उत्तरोत्तर अनन्तवें भागहीन ही प्रदेशविन्यास होता है, क्योंकि उन स्थानोंमें प्रकारान्तर सम्भव नहीं है इस प्रकार इस बातका ज्ञान करानेके फलस्वरूप आगेका सूत्र आया है—

---

१ ता आ प्रत्योः पयारंतरासंभवो इति पाठः।

* सेसेसु किट्टिट्ठाणेसु अणंतभागहीणं दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स ।

§ ९३ कुदो? एगेगवग्गणविसेसमेत्तेण अणंतराणंतरादो हीणं कादूण तत्थ पदेसणिसेयं कुणमाणस्स पयारंतराणुवलंभादो ।

* विदियसमए दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स एसा उट्टकूडसेढी ।

§ ९४ जदो एवं बारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जदिभागहाणीए परिहाइदूण एक्कारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जभागुत्तरवड्ढीए वड्ढिदूण पुणो सेसासेसकिट्टिट्ठाणेसु अणंतभागहाणीए विदियसमए दिज्जमाणपदेसग्गस्स समवट्ठाणणियमो तदो एसा दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढी उट्टकूडसरिसी जादा। जहा उट्टस्स पुट्ठी पच्छिमभागे उच्चा होदूण पुणो मज्झे णीचा भवदि, पुणो उवरि वि णीचुच्चसरूवेण गच्छदि, एवमिहावि पदेसणिसेगो आदिम्मि बहुगो होदूण पुणो थोवो भवदि पुणो वि संधिविसेसेसु थोवो बहुओ च होदूण गच्छदि त्ति तेण कारणेण उट्टकूडसमाणा सेढी दिज्जमाणपदेसग्गस्स जादा त्ति भणिद होइ ।

§ ९५ संपहि एत्थेव दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणट्ठमिदमाह—

---

* शेष कृष्टिस्थानोंमें दीयमान प्रदेशपुंजका अनन्त भागहीन अवस्थान होता है ।

§ ९३ क्योंकि एक एक वर्गणाविशेषको अनन्तर तदनन्तर क्रमसे हीन करके उन कृष्टि स्थानोंमें प्रदेशनिषेकको करनेवालेके अन्य प्रकार नहीं उपलब्ध होता ।

* इस प्रकार दूसरे समयमें दीयमान प्रदेशपुंजकी यह उष्ट्रकूटश्रेणि है ।

§ ९४ यतः इस प्रकार बारह कृष्टि स्थानोंमें असंख्यातवें भागहीनप्रमाण घटकर और ग्यारह कृष्टिस्थानोंमें असंख्यात भाग वृद्धि प्रमाण बढ़कर पुनः शेष सम्पूर्ण कृष्टि स्थानोंमें अनन्त भागहानिरूपसे दूसरे समयमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजके अवस्थानका नियम है, इसलिए दिये जानेवाले प्रदेशपुंजकी यह श्रेणि उष्ट्रकूटके समान हो जाती है। जिस प्रकार ऊँटकी पीठ पिछले भागमें ऊँची होकर पुनः मध्यमें नीची हो जाती है। पुनः आगे भी ऊँची और नीची होकर जाती है इसी प्रकार यहाँ इस श्रेणिमें भी प्रदेशनिषेक प्रारम्भमें बहुत होकर पुनः स्तोक होता है तथा फिर भी संधि विशेषोंमें कम अधिक होता जाता है, इस कारण दीयमान प्रदेशपुंजकी श्रेणि उष्ट्रकूटके समान हो गयी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

विशेषार्थ—संग्रहकृष्टियाँ बारह हैं, अतः उनके सन्धिस्थान ग्यारह होते हैं तथा इस कारण अन्तर कृष्टियोंके सन्धिस्थान बारह हो जाते हैं। इन सन्धिस्थानोंको ध्यानमें रखकर निक्षिप्त हुए प्रदेशपुंजका अवस्थान जिस जिस स्थानपर पूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे अपूर्व कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टि कही गयी है वहाँ वहाँ तदनन्तर अधस्तन कृष्टिमें निक्षिप्त हुए प्रदेशपुंजसे असंख्यातवें भाग प्रमाण अधिक होता है तथा जिस जिस स्थानपर अपूर्व कृष्टियोंकी अन्तिम कृष्टिसे पूर्व कृष्टियोंकी जघन्य कृष्टि कही गयी है वहाँ वहाँ पूर्व निक्षिप्त हुए द्रव्यसे असंख्यातवें भागहीन द्रव्य होता है। तथा इन तेईस स्थानोंको छोड़कर शेष रहे सभी स्थानोंमें अनन्तवें भागहीन प्रदेश विन्यास होता है। इस कारण दूसरे समयमें पूरा प्रदेश विन्यास ऊँटकी पीठके समान हो जाता है। जिस प्रकार ऊँटकी पीठ पिछले भागमें ऊँची होकर मध्यमें नीची होती है। पुनः नीची-ऊँची होकर जाती है। उसी प्रकार प्रदेशविन्यास भी आदिमें बहुत होकर पुनः स्तोक होता है। तथा इसके बादमें पुनः स्तोक बहुत होकर जाता है। इस कारण दूसरे समयमें दिये जानेवाले इस प्रदेश विन्यासको प्रकृतमें उष्ट्रकूटश्रेणि कहा गया है।

§ ९५ अब यहीं पर दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा करनेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* जं पुण विदियसमए दीसदि किट्टीसु पदेसग्गं तं जहण्णियाए बहुअं, सेसासु सव्वासु अणंतरोवणिधाए अणंतभागहीणं ।

§ ९६ जहा दिज्जमाणपदेसग्गस्स उट्टकूडागारेण णिसेगविण्णासो जादो ण तहा दिस्समाणगस्स पदेसग्गस्स, किंतु जहण्णियाए किट्टीए बहुअं होदूण सेसासु सव्वासु किट्टीसु जहाकममणंतराणंतरादो अणंतभागहाणीए चेव दिस्समाणपदेसग्गस्सावट्ठाणं होइ, पयारंतरपरिहारेणेगेगवग्गणविसेसहाणिपदेसग्गावट्ठाणस्स तत्थ परिप्फुडमुवलंभादो । एवमेत्तिएण पबंधेण विदियसमए दिज्जमाण दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणं समाणिय संपहि तदियादिसमएसु वि एवं चेव सेढिपरूवणा कायव्वा त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* जहा विदियसमए किट्टीसु पदेसग्गं तहा सव्विस्से किट्टीकरणद्धाए दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स तेवीसमुट्टकूडाणि ।

§ ९७ जहा विदियसमए दिज्जमाणपदेसग्गस्स तेवीसमुट्टकूडाणि जादाणि तहा सव्विस्से चेव किट्टीकरणद्धाए परूवेयव्वाणि, विसेसाभावादो त्ति भणिदं होइ ।

§ ९८ संपहि दिस्समाणयं सव्वत्थोवाणंतभागहाणीए एयगोवुच्छायारेण वट्टव्वं, तत्थ पयारंतरासंभवो[1] त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तावयारो—

* पुन दूसरे समयमें कृष्टियोंमें जो प्रदेशपुंज दिखाई देता है वह जघन्य कृष्टिमें बहुत होता है, शेष सब कृष्टियोंमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अनन्तवें भागहीन होता है ।

§ ९६ जिस प्रकार दीयमान प्रदेशपुंजका उष्ट्रकूटके आकारके समान निषेक विन्यास हो जाता है, दिखनेवाले प्रदेशपुंजका उस प्रकारसे प्रदेशविन्यास नहीं होता है । किन्तु जघन्य कृष्टिमें बहुत होकर शेष सभी कृष्टियोंमें यथाक्रम अनन्तर अनन्तररूपसे अनन्त भागहानि होकर ही दिखनेवाले प्रदेशपुंजका अवस्थान होता है, क्योंकि प्रकारान्तरपनेके परिहार द्वारा एक एक वर्गणा विशेषकी हानि होकर प्रदेशपुंजका अवस्थान वहाँपर स्पष्टरूपसे उपलब्ध होता है । इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा दूसरे समयमें दीयमान और दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा समाप्त करके अब तीसरे आदि समयोंमें भी इसी प्रकार श्रेणिप्ररूपणा करनी चाहिए इस बातका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* जिस प्रकार दूसरे समयमें कृष्टियोंमें दीयमान प्रदेशपुंजकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार समस्त कृष्टिकरणके कालमें दीयमान प्रदेशपुंजकी प्ररूपणा करनेपर तेईस उष्ट्रकूट होते हैं ।

§ ९७ जिस प्रकार दूसरे समयमें दीयमान प्रदेशपुंजके तेईस उष्ट्रकूट हो जाते हैं उसी प्रकार पूरे कृष्टिकरणके कालमें कथन करना चाहिए, क्योंकि पूर्वोक्त कथनसे इसमें कोई विशेषता नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

विशेषार्थ—कुल सन्धिस्थान तेईस हैं, इसलिए दूसरे समयमें जिस प्रकार दीयमान प्रदेशपुंजकी तेईस उष्ट्रकूटश्रेणियाँ हो जाती हैं उसी प्रकार आगे भी कृष्टिकरणका जितना काल शेष रहा है उसके प्रत्येक समयमें दीयमान प्रदेशपुंजकी उष्ट्रकूटके समान रचना जान लेनी चाहिए ।

§ ९८ अब दिखनेवाला प्रदेशपुंज सर्वत्र अनन्त भागहानि द्वारा एक गोपुच्छाके आकारसे सबसे स्तोक जानना चाहिए, वहाँ अन्य प्रकार सम्भव नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रका अवतार हुआ है—

---

1 ता प्रती-संभवादो इति पाठः ।

* दिस्समाणयं सव्वम्हि अणंतभागहीणं ।

§ ९९. गयत्थमेदं सुत्तं । संपहि किट्टीकरणद्धाए समयं पडि ओकड्डिज्जमाणदव्वविसेस जाणावणट्ठमुवरिममप्पाबहुअसुत्तमाह—

* जं पदेसग्गं सव्वसमासेण पढमसमए किट्टीसु दिज्जदि तं थोवं । विदियसमए असंखेज्जगुणं । तदियसमये असंखेज्जगुणं । एवं जाव चरिमादो त्ति असंखेज्जगुणं ।

§ १०० पडिसमयमणंतगुणाए विसोहीए वड्ढमाणो सव्विस्से चेव किट्टीकरणद्धाए असंखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं पदेसग्गमोकड्डियूण किट्टीसु णिक्खिवदि त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स समुदायत्थो । एवमंतोमुहुत्तं किट्टीकरणद्धमणुपालिय कमेण किट्टीकारगचरिमसमये वट्टमाणस्स जो परूवणाविसेसो ट्ठिदिबंधादिविसओ तव्विहासणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

* किट्टीकरणद्धाए चरिमसमए संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तब्भहिया । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

§ १०१ पुव्वुत्तसंधीए संजलणाणं ट्ठिदिबंधो अट्ठवस्सपमाणो होतो कमेण तत्तो परिहाइदूण एत्थुद्देसे अंतोमुहुत्ताहियचदुमासमेत्तो संजादो । सेसाणं पुण कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जवस्ससहस्सि यादो पुव्विल्लादो ट्ठिदिबंधादो संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जेहिं ट्ठिदिबंधोसरणसहस्सेहिं ओहट्टिदो वि संतो संखेज्जवस्ससहस्समेत्तो चेव होदूण पयट्टदि त्ति सुत्तत्थसंगहो ।

* तम्हि चेव किट्टीकरणद्धाए चरिमसमए मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि हाइदूण अट्ठवस्सिगमंतोमुहुत्तब्भहियं जादं । तिण्हं घादिकम्माणं

---

* परन्तु दिखनेवाला प्रदेशपुंज सभी कालोंमें अनन्त भागहीन है ।

§ ९९. यह सूत्र गतार्थ है । अब कृष्टिकरण कालके प्रत्येक समयमें अपकर्षित होनेवाले द्रव्य विशेषका ज्ञान करानेके लिए आगेके अल्पबहुत्व सूत्रको कहते हैं—

* प्रथम समयमें जो प्रदेशपुंज समस्तरूपसे कृष्टियोंमें दिया जाता है वह सबसे स्तोक है । दूसरे समयमें असंख्यातगुणा है । तीसरे समयमें असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार अन्तिम समय तक दिया जानेवाला प्रदेशपुंज उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा है ।

§ १०० प्रत्येक समयमें अनन्तगुणी विशुद्धिसे वृद्धिको प्राप्त होता हुआ यह जीव समस्त कृष्टिकरणके कालमें प्रति समय असंख्यातगुणे असंख्यातगुण प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके कृष्टियोंमें निक्षिप्त करता है यह इस सूत्रका समुदायरूप अर्थ है । इस प्रकार अन्तमुहूर्त तक कृष्टिकरणकाल का पालन करके क्रमसे कृष्टिकरणके अन्तिम समयमें विद्यमान जीवके स्थितिबन्धादिका जो प्ररूपणाविशेष है उसका व्याख्यान करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* कृष्टिकरण कालके अन्तिम समयमें संज्वलनोंका स्थितिबन्ध अन्तमुहूर्त अधिक चार माह होता है तथा शेष कर्मोंका स्थितिबन्ध संख्यात हजार वर्ष होता है ।

§ १०१ पूर्वोक्त सन्धिमें संज्वलनोंका स्थितिबन्ध आठ वर्षप्रमाण होता हुआ क्रमसे उससे घटकर इस स्थानमें अन्तमुहूर्त अधिक चार माह हो गया है । परन्तु शेष कर्मोंका स्थितिबन्ध संख्यात हजार वर्षरूप बन्धसे संख्यात गुणहानि द्वारा संख्यात हजार स्थितिबन्धापसरणरूपसे घटकर भी संख्यात हजार वर्षप्रमाण ही होकर प्रवृत्त रहता है यह इस सूत्रका समुच्चयार्थ है ।

* उसी कृष्टिकरणके कालके अन्तिम समयमें मोहनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्ष घटकर अन्तमुहूर्त अधिक आठ वर्ष हो जाता है । तथा तीन घातिकर्मोंका स्थिति

ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामागोदवेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्म-मसंखेज्जाणि वस्ससहस्साणि।

§ १०२ पुव्वुत्तसंधीए चदुण्हं संजलणाणं ठिदिसंतकम्मं संखेज्जवस्ससहस्समेत्तं होदूण ट्ठिदं, तत्तो कमेण हाइदूण एण्हिमंतोमुहुत्ताहियअट्ठवस्सपमाणं संजादं। सेसाणं तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममज्ज वि संखेज्जवस्ससहस्सियं चेव, मोहणीयस्सेव तेसिं सुट्ठु विसेसघादाभावादो। तिण्हमघादिकम्माणं पुण ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणहाणीए जहाकममोवट्टमाणं पि अज्ज वि असंखेज्जवस्ससहस्सपमाणं चेव होइ, तेसिमेदम्मि विसये पयारंतरासंभवादो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थविणिच्छओ। एवमेदीए परूवणाए किट्टीकरणद्धाचरिमसमए वट्टमाणस्स पुणो वि अइक्कंतत्थविसये किंचि परूवणं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

*** किट्टीओ करेंतो पुव्वफद्दयाणि अपुव्वफद्दयाणि च वेदेदि, किट्टीओ ण वेदयदि।**

§ १०३ जहा अपुव्वफद्दयाणि करेमाणो तदवत्थाए चेव पुव्वफद्दएहिं सह अपुव्वफद्दयाणि वेदेदि ण एवमेसो किट्टीकारगो किट्टीओ वेदेदि, किंतु किट्टीकरणकालब्भंतरे सव्वत्थेव पुव्वा-पुव्वफद्दयाणि चेव पुव्वुत्तेण कमेण वेदेदि त्ति भणिदं होदि। संपहि किट्टीकरणद्धाए चरिमसमए पुव्वापुव्वफद्दयाणमसंखेज्जदिभागमेत्तं दव्वं दुचरिमसमयोकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणपमाणं मोकड्डिय पुव्वुत्तेणेव कमेण किट्टीसु णिक्खिवदि। पुव्वापुव्वफद्दयाणि च ताधे अविणट्ठसरूवाणि

सत्कर्म संख्यात हजार वर्षप्रमाण तथा नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मका स्थिति सत्कर्म असंख्यात हजार वर्ष प्रमाण हो जाता है।

§ १०२ पूर्वोक्त सन्धिमें चार संज्वलनोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्ष प्रमाण होकर स्थित रहता है। पुन उससे क्रमश घटकर इस समय अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष प्रमाण हो जाता है। शेष तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म अभी भी संख्यात हजार वर्ष प्रमाण ही रहता है, क्योंकि मोहनीय कर्मके समान उनका अच्छी तरह विशेष घात नहीं होता। परन्तु असंख्यात गुणहानि द्वारा क्रमश अपवर्तनको प्राप्त हुए तीन अघाति कर्मोंका स्थितिसत्कर्म अभी भी असंख्यात हजार वर्षप्रमाण ही रहता है, क्योंकि उनका इस स्थानपर अन्य प्रकार सम्भव नहीं है यह यहाँपर सूत्रके अर्थका निश्चय है। इस प्रकार इस प्ररूपणा द्वारा कृष्टिकरण कालके अन्तिम समयमें विद्यमान हुए जीवके फिर भी व्यतीत हुए अर्थके विषयमें किंचित् प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

*** कृष्टियोंको करनेवाला जीव पूर्व स्पर्धकों और अपूर्व स्पर्धकोंका वेदन करता है, कृष्टियोंका वेदन नहीं करता।**

§ १०३ जिस प्रकार अपूर्व स्पर्धकोंको करनेवाला जीव उस अवस्थामें ही पूर्व स्पर्धकोंके साथ अपूर्व स्पर्धकोंका वेदन करता है उस प्रकार कृष्टिकारक यह जीव कृष्टियोंका वेदन नहीं ही करता है। किन्तु कृष्टिकरणके कालके भीतर सभी समयोंमें ही पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोंका ही पूर्वोक्त क्रमसे वेदन करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब कृष्टिकरणके कालके अन्तिम समयमें पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्य, जो कि उपान्त्य समयमें अपकर्षित किये गये द्रव्यसे असंख्यातगुणा है, उसे अपकर्षित करके पूर्वोक्त क्रमके अनुसार कृष्टियोंमें निक्षिप्त करता है तथा पूर्व और अपूर्व स्पर्धक उस समय अविनष्टरूपसे अवस्थित रहते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण

चिट्ठदि त्ति घेत्तव्व। संपहि एदम्मि चेव समए किट्टीकरणद्धा समप्पदि त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* किट्टीकरणद्धा णिट्ठायदि पढमट्ठिदीए आवलियाए सेसाए।

§ १०४ किट्टीकरणद्धाचरिमसमए वेदिज्जमाणमुदयट्ठिदिं मोत्तूण तत्तो उवरि आवलियमेत्ताए कोहसंजलणपढमट्ठिदीए सेसाए किट्टीकरणद्धा कमेण णिट्ठायमाणा णिट्ठिदा त्ति वुत्तं होइ, उप्पादाणुच्छेदमस्सियूण किट्टीकरणद्धाचरिमसमए चेव तिस्से परिसमत्तिदंसणादो। अणुप्पादाणुच्छेदविवक्खाए पुण से काले किट्टीओ वेदेमाणस्स पढमसमए काल पेक्खियूणावलियमेत्तसेसाए पढमट्ठिदीए किट्टीकरणद्धा समप्पदि त्ति घेत्तव्वं। णवरि सुत्ते एसा विवक्खा ण कया, उप्पादाणुच्छेदस्सेव तत्थ विवक्खियत्तादो।

§ १०५ एवमेत्थ किट्टीकरणद्धाए णिट्ठिदाए तदो से काले जो पवुत्तिविसेसो तण्णिद्देसकरणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* से काले किट्टीओ पवेसेदि।

करना चाहिए। अब इसी समय कृष्टिकरण काल समाप्त होता है इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* प्रथम स्थितिमें एक आवलिप्रमाण काल शेष रहने पर कृष्टिकरण काल समाप्त होता है।

§ १०४ कृष्टिकरण कालके अन्तिम समयमें वेदन की जानेवाली उदय स्थितिको छोडकर उससे ऊपर क्रोध संज्वलनकी एक आवलि प्रमाण प्रथम स्थितिके शेष रहनेपर कृष्टिकरण काल क्रमसे समाप्त होता हुआ समाप्त हो गया यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि उत्पादानुच्छेदका आलम्बन लेकर कृष्टिकरण कालके अन्तिम समयमें ही उसकी परिसमाप्ति देखी जाती है। परन्तु अनुत्पादानुच्छेदकी विवक्षा करनेपर तदनन्तर समयमें कृष्टियोंका वेदन करनेवाले जीवके प्रथम समयमें कालकी अपेक्षा एक आवलिमात्र प्रथम स्थितिके शेष रहनेपर कृष्टिकरण काल समाप्त होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। परन्तु सूत्रमें यह विवक्षा नहीं की गयी है, क्योंकि उत्पादानुच्छेद ही उसमें विवक्षित है।

विशेषार्थ—नय दो प्रकारके हैं—द्रव्यार्थिक नय और पर्यायार्थिक नय। उनमेंसे द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा यहाँ उसे उत्पादानुच्छेदरूप स्वीकार किया गया है। यह नय सत्त्व अवस्थामें ही विनाशको स्वीकार करता है, क्योंकि असत्त्व बुद्धिका विषय नहीं होनेसे वह वचनके अगोचर है, इसलिए इस अपेक्षा उसमें अभाव व्यवहार करना अशक्य है। यही कारण है कि प्रकृतमें कृष्टिकरण कालके अन्तिम समयमें ही इस नयसे उसका अभाव कहा गया है। तथा पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा उसे अनुत्पादानुच्छेदरूप स्वीकार किया गया है। इस नयकी अपेक्षा भाव अभाव नहीं हो सकता, क्योंकि भाव और अभाव परस्पर विरुद्ध होनेसे उनमें एकपनेका व्यवहार नहीं किया जा सकता। अतः यह नय असत्त्व अवस्थामें ही अभावको स्वीकार करता है। यही कारण है कि प्रकृतमें कृष्टि वेदनके प्रथम समयमें ही इस नयमें कृष्टिकरणके कालकी समाप्ति स्वीकार की गयी है।

§ १०५ इस प्रकार यहाँपर कृष्टिकरणकालके समाप्त होने पर तत्पश्चात् अनन्तर समयमें जो प्रवृत्तिविशेष होता है उसका निर्देश करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* तदनन्तर समयमें कृष्टियोंको उदयावलिमें प्रवेश कराता है।

§ १०६ किट्टीकरणद्धाए णिट्ठिदाए तदणंतरसमए चेव विदियट्ठिदीदो ओकड्डियूण किट्टीओ उदयावलियब्भंतर पवेसेदि, अण्णहा विदियट्ठिदिसमवट्ठिदाण तासिं वेदगभावाणुववत्तीदो। एदम्मि समए पढमट्ठिदिसेसमावलियपमाणं होदि, कालपहाणत्ते विवक्खिये तहोवलंभादो। णिसेगपहाणत्ते पुण समयूणावलियमेत्ती होदि, उदयावलियपढमणिसेयस्स त्थिवुक्कसंकमेण तक्कालमेव किट्टीसरूवेण परिणदत्तादो।

* ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा।

§ १०७ पुव्विल्लसमए ट्ठिदिबंधपमाणं चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तब्भहिया। एण्हिं पुण तत्तो अंतोमुहुत्तमोसरियूण अण्णं ट्ठिदिबंधं कुणमाणस्स संजलणाणं ट्ठिदिबंधो संपुण्णचत्तारि मासमेत्तो संजादो त्ति सुत्तत्थसमुच्चओ।

* ट्ठिदिसंतकम्ममट्ठ वस्साणि।

§ १०८ पुव्विल्लसमए अंतोमुहुत्तब्भहियअट्ठवस्सपमाणं ट्ठिदिसंतकम्मं होदूण तत्थेव ट्ठिदिखंडयचरिमफालीए अंतोमुहुत्तपमाणाए णिवदिदाए एण्हिमट्ठवस्समेत्तं संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं जादमिदि वुत्तं होइ।

* तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो ट्ठिदिसंतकम्मं च संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि।

§ १०६ कृष्टिकरणकालके समाप्त होनेपर तदनन्तर समयमे ही द्वितीय स्थितिमेंसे अपकर्षित कर कृष्टियोको उदयावलिमें प्रवेश कराता है, अन्यथा द्वितीय स्थितिमे अवस्थित हुई उनका वेदकपना नहीं बन सकता है। इस समय प्रथम स्थिति शेष आवलिप्रमाण होती है, क्योंकि कालकी प्रधानताकी विवक्षा करनेपर इसकी उस प्रकारसे उपलब्धि होती है। परन्तु निषेकोंकी प्रधानतामें एक समय कम आवलि प्रमाण होती है, क्योंकि उदयावलिका प्रथम निषेक स्तिवुक संक्रमणके द्वारा उसी समय कृष्टिरूपसे परिणत हो जाता है।

विशेषार्थ—जिस समय क्रोध सज्वलनकी एक आवलि प्रमाण प्रथम स्थिति शेष रहती है उसी समय कृष्टिकरणका काल समाप्त होता है और अगले समयमे जब द्वितीय स्थितिमेंसे अपकर्षित होकर कृष्टियाँ उदयावलिमे प्रवेश करती हैं तब वह कृष्टियोका वेदन काल है। उस समय यद्यपि प्रथम स्थिति कालकी अपेक्षा एक आवलि प्रमाण अवश्य है पर उदयावलिका जो प्रथम निषेक है वह द्वितीय स्थितिमें-से अपकर्षित हुई कृष्टिका सम्बन्धी न होकर स्तिवुक संक्रम-द्वारा निष्पन्न हुआ है, अत कृष्टियोके वेदन कालके प्रथम समयमें निषेकोकी प्रधानतासे कृष्टियोकी प्रथम स्थिति एक समय कम एक आवलि प्रमाण ही बनती है।

* उस समय सज्वलनोंका स्थितिबन्ध चार माह प्रमाण होता है।

§ १०७ पिछले समयमें स्थितिबन्धका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त अधिक चार माह था। परन्तु इस समय उसमें से अन्तमुहूर्त कम करके अन्य स्थितिबन्ध करनेवाले जीवके सज्वलनोंका स्थिति बन्ध सम्पूर्ण चार माह प्रमाण हो जाता है यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है।

* स्थिति सत्कर्म आठ वर्ष प्रमाण है।

§ १०८ क्योंकि पिछले समयमे अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष प्रमाण स्थिति सत्कर्म होकर उसी समय स्थितिकाण्डकको अन्तर्मुहूर्त प्रमाण अन्तिम फालिका पतन हो जाने पर इस समय सज्वलनोंका स्थिति सत्कर्म आठ वर्ष प्रमाण हो जाता है।

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध और स्थितिसत्कर्म सख्यात हजार वर्ष प्रमाण है।

* णामागोदवेदणीयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

* ट्ठिदिसतकम्ममसंखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

§ १०९. एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि। संपहि एदम्हि चेव समए संजलणाणमणुभाग संतकम्म केरिसं होदि त्ति आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तपबंधो—

* अणुभागसंतकम्म कोहसंजलणस्स ज संतकम्म समयूणाए उदयावलियाए च्छुद्दिदल्लिगाए त सव्वघादी ।

§ ११० कोहसंजलणस्स जमणुभागसंतकम्म समयूणाए उदयावलियाए उच्छिट्ठावलिय भावेण च्छुद्दिवाए सेस त सव्वघादि चेवेत्ति वट्ठव्वं । किं कारणं ? उदयावलियब्भतरे सव्वघादि सरूवेणावट्ठिदपुव्वाणुभागसंतकम्मस्सेव सभवदंसणादो ।

* संजलणाणं जे दोआवलियबधा दुसमयूणा ते देसघादी । त पुण फद्दयगदं ।

§ १११ चदुण्हं संजलणाण जे णवकबंधसमयपबद्धा दुसमयूणदोआवलियमेत्ता तेसिमणु भागो णियमा देसघादी, एयट्ठाणियसरूवत्तादो । होतो वि सो फद्दयसरूवो चेव वट्ठव्वो। किं कारण ? किट्टीकरणद्धाए फद्दयगवस्सेवाणुभागस्स बंधदंसणादो ।

* सेस किट्टीगदं ।

* नाम, गोत्र और वेदनीयकर्मका स्थितिबन्ध संख्यात हजार वर्षप्रमाण है ।

* तथा इन तीन कर्मोका स्थितिसत्कर्म असंख्यात हजार वर्ष प्रमाण है ।

§ १०९. ये सूत्र सुगम हैं। अब इसी समय सज्वलनोंका अनुभागसत्कर्म किस प्रकारका होता है ऐसी आशंका होनेपर निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* क्रोधसज्वलनका जो अनुभाग सत्कर्म एक समयकम उदयावलिमे निक्षिप्त है वह सर्वघाति है ।

§ ११० क्रोध सज्वलनका जो अनुभाग सत्कर्म एक समय कम उदयावलिमे उच्छिष्टावलि रूपसे निक्षिप्त होकर शेष रहा है वह सर्वघाति ही है ऐसा जानना चाहिए।

शका— इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि उदयावलिके भीतर सर्वघातिरूपसे अवस्थित पहलेका अनुभागसत्कर्म ही सम्भव देखा जाता है । तात्पर्य यह है कि उदयावलिके भीतर जो अनुभाग सत्कर्म शेष रहा है वह पहलेका होनेसे सर्वघाति ही है ऐसा यहाँ जानना चाहिए ।

* सज्वलनोके जो दो समय कम दो आवलिप्रमाण नवकबन्ध हैं वे देशघाति हैं। परन्तु वे स्पर्धकस्वरूप हैं ।

§ १११ चारो सज्वलनोके जो दो समय कम दो आवलिप्रमाण नवकबन्ध समयप्रबद्ध हैं उनका अनुभाग नियमसे देशघाति है, क्योंकि वे एक स्थानीयस्वरूप हैं। ऐसा होते हुए भी वह अनुभाग स्पर्धकस्वरूप ही जानना चाहिए।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि कृष्टिकरणके कालमे स्पर्धक स्वरूप ही अनुभागका बन्ध देखा जाता है ।

विशेषार्थ—जबतक यह जीव पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोमेसे कृष्टियोको निष्पन्न करता है तबतक चारो सज्वलनोंका बन्ध स्पर्धकस्वरूप ही होता रहता है ऐसा नियम है ।

* चारों सज्वलनोंका शेष सब अनुभागसत्त्व कृष्टिस्वरूप है।

§ ११२ चदुण्हं संजलणाणं दुसमयूणदोआवलियमेत्तणवकबंधाणुभागं कोहसंजलणस्सा वलियपविट्ठाणुभागं च मोत्तूण सेसं चदुण्हं संजलणाणमणुभागसंतकम्मं सव्वमेव किट्टीसरूवेणेण्हिं परिणदमिदि वुत्तं होइ। तदो किट्टीकरणद्धाए जाव चरिमसमओ ताव किट्टीगदसयलपदेसपिंडादो फद्दयगदसव्वपदेसपिंडमसंखेज्जगुणं होदूण दीसइ तदसंखेज्जदिभागस्सेव तत्थ किट्टीसरूवेण परिणमणदंसणादो। पुणो किट्टीवेदगद्धाए पढमसमयम्हि णवकबंधुच्छिट्ठावलियवज्जं सव्वमेव चदुसंजलणपदेसग्गं किट्टीसरूवेण परिणदमिदि एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। किट्टीकरणद्धा जाव समप्पदि ताव दिस्समाणे पेक्खिदूण किट्टीओ सत्थाणे एयगोवुच्छायारेण अच्छंति, फद्दयगदं पि पदेसग्गमप्पणो सत्थाणे एयगोवुच्छं होदूण चिट्ठदि। पुणो किट्टीकरणद्धाए समत्ताए दिस्समाणावेक्खाए सव्वं पि पदेसग्गमेयगोवुच्छसरूवेण परिणमिय चिट्ठदि त्ति घेत्तव्वं।

※ तम्हि चेव पढमसमए कोहस्स पढमसंगहकिट्टीदो[1] पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि।

§ ११३ तम्हि चेव किट्टीवेदगद्धापढमसमए किट्टीओ पवेसेमाणो कोहसंजलणस्सेव ताव पढमसंगहकिट्टीए पदेसग्गमोकड्डियूण सगवेदगकालादो आवलियब्भहियं कादूण पढमट्ठिदि

---

§ ११२ चारों संज्वलनोंके दो समय कम दो आवलिप्रमाण नवकबन्धस्वरूप अनुभागको और क्रोधसंज्वलनके उदयावलिप्रविष्ट अनुभागको छोड़कर शेष चारों संज्वलनोंका अनुभाग सत्कर्म सम्पूर्ण ही इस समय कृष्टिस्वरूप परिणत हो गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इसलिए कृष्टिकरण कालका जबतक अन्तिम समय प्राप्त होता है तब तक कृष्टिगत सम्पूर्ण प्रदेश पिण्डसे स्पर्धकस्वरूप सम्पूर्ण प्रदेशपिण्ड असंख्यातगुणा दिखाई देता है क्योंकि उसके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रदेशपिण्डका ही वहाँपर कृष्टिरूपसे परिणमन देखा जाता है। पुन कृष्टिवेदक कालके प्रथम समयमें नवकबन्ध और उच्छिष्टावलिको छोड़कर चारों संज्वलनोंका सम्पूर्ण ही प्रदेशपुंज कृष्टिरूपसे परिणत हो गया है यह इस सूत्रका भावार्थ है। कृष्टिकरणकाल जबतक समाप्त होता है तबतक दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी अपेक्षा कृष्टियाँ स्वस्थानमें एक गोपुच्छाकार रूपसे अवस्थित रहती हैं तथा स्पर्धकगत प्रदेशपुंज भी अपने स्वस्थानमें एक गोपुच्छाकार होकर अवस्थित रहता है। परन्तु कृष्टिकरणकालके समाप्त होनेपर दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी अपेक्षा समस्त ही प्रदेशपुंज एक गोपुच्छाकाररूपसे परिणमन करके अवस्थित रहता है यह यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—कृष्टिकरण कालके अन्तिम समय तक चारों संज्वलनोंका अनुभाग स्पर्धकरूपसे भी अवस्थित रहता है और जो अनुभाग कृष्टिरूप परिणम गया है वह भी अपने रूपमें अवस्थित रहता है। इसलिए यहाँपर पूरे अनुभागकी दो गोपुच्छाएँ बन जाती हैं। इन दोनों गोपुच्छाओंके स्वरूपका निर्देश पहले ही कर आये हैं। किन्तु जिस समय कृष्टिवेदन काल प्रारम्भ होता है उसी समय जितना भी स्पर्धकस्वरूप अनुभाग है वह सब एक गोपुच्छाकाररूपसे परिणत होकर दिखाई देने लगता है यह सूत्रका तात्पर्य है।

※ उसी कृष्टिवेदक कालके प्रथम समयमें क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है।

§ ११३ उसी कृष्टिवेदक कालके प्रथम समयमें कृष्टियोंको प्रवेशित करता हुआ सर्वप्रथम क्रोधसंज्वलनकी ही प्रथम संग्रह कृष्टिमें से प्रदेशपुंजको अपकर्षित करके अपने वेदक कालसे एक

---

१ ता आ. प्रत्यो 'पढमसमयकिट्टीदो' इति पाठः।

मप्पाएवि त्ति भणिदं होइ। एसा पढमट्ठिदी एत्तो उवरि जा कोहवेदगद्धा तिस्से सादिरेय तिभागमेत्ता त्ति दट्ठव्वा। एवं पढमट्ठिदिं करेमाणो उदए थोवं देदि। तदणंतरट्ठिदीए असंखेज्जगुणं देदि। एवमसंखेज्जगुणाए सेढीए णिक्खिवमाणो गच्छदि जाव पढमसंगहकिट्टीवेदगकालादो आवलियमेत्तेणब्भहिय जादे त्ति। तत्तो विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदिम्मि असंखेज्जगुणं णिक्खिवदि। तत्तो उवरि सव्वत्थ विसेसहीणमसंखेज्जदिभागेण। गुणसेढिणिक्खेवो पुण गलिदसेसो सव्वत्थ णादव्वो। एत्थ कोहस्स पढमसंगहकिट्टि त्ति भणिदे जा कारयस्स तदियसंगहकिट्टी सा वेदगस्स पढमसंगहकिट्टि त्ति घेत्तव्वा, तत्तो प्पहुडि पच्छाणुपुव्वीए जहाकममेव संगहकिट्टीणमेत्थ वेदगभावदंसणादो।

§ ११४ जइ पुण किट्टीकारयस्स पढमसंगहकिट्टी एत्थ घेप्पइ तो को तत्थ दोसो ? चे वुच्चदे—वेदिज्जमाणियाए संगहकिट्टीए असंखेज्जा भागा बज्झंति वेदिज्जंति च। बंधोदया वि समयं पडि अणंतगुणहीणा होदूण गच्छंति त्ति एसो णियमो। संपहि एदम्हि णियमे संते जा अणुभागेण बहुगी संगहकिट्टी सा चेव पुव्वमुदयमागच्छदि त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा घेप्पमाणे पढमसंगहकिट्टीवेदगकाले णिट्ठिदे तदणंतरसमए विदियसंगहकिट्टिं वेदेमाणो तिस्से असंखेज्जे भागे बंधदि वेदेदि च। तहा च संते तक्काले बंधोदया पुव्विल्लबंधोदएहिंतो अणंतगुणो पावेंति। ण च एदं णेच्छिज्जदे, पडिसमयमणंतगुणकमेण विसोहिपरिणामेसु वड्ढमाणेसु तेसिं तहा पवुत्तिविरोहादो। तम्हा कारगस्स तदियसंगहकिट्टी एत्थ वेदगस्स पढमसंगहकिट्टि त्ति घेत्तव्वा। एवं माणादीण

आवलिप्रमाण अधिक करके प्रथम स्थितिको उत्पन्न करता है यह उक्त सूत्रका तात्पर्य है। यह प्रथम स्थिति इससे आगे जो क्रोधवेदक काल है उसके साधिक तृतीय भाग प्रमाण जाननी चाहिए। इस प्रकार प्रथम स्थितिको करता हुआ अपकर्षित किये गये प्रदेशपुंजको उदयमें स्तोक देता है, उससे अगली स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको देता है। इस प्रकार उत्तरोत्तर असंख्यातगुणी श्रेणिरूपसे निक्षेप करता हुआ प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदक कालसे एक आवलि प्रमाण अधिक करके निक्षिप्त करता है। उससे द्वितीय स्थितिकी आदि स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको निक्षिप्त करता है। उससे ऊपर सर्वत्र असंख्यातवाँ भागहीन प्रदेशपुंजका निक्षेप करता है। तथा गुणश्रेणिनिक्षेप सर्वत्र गलित शेष जानना चाहिए। यहाँपर क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि ऐसा कहनेपर जो कृष्टिकारककी तीसरी संग्रह कृष्टि है वह कृष्टिवेदककी प्रथम संग्रह कृष्टि है ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि कृष्टिवेदककालके प्रथम समयमें लेकर पश्चादानुपूर्वीके अनुसार क्रमसे ही संग्रह कृष्टियोंका यहाँपर वेदकपना देखा जाता है।

§ ११४ पुन यदि कृष्टिकारककी प्रथम संग्रह कृष्टिको यहाँपर ग्रहण किया जाता है तो उसमें क्या दोष है ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि वेदी जानेवाली संग्रहकृष्टिके असंख्यात बहुभाग प्रमाण बँधती हैं और वेदी जाती हैं। तथा बन्ध उदय दोनों ही प्रतिसमय अनन्तगुणे हीन होते जाते हैं ऐसा नियम है। अब इस नियमके होने पर जो संग्रहकृष्टि अनुभागकी अपेक्षा बडी है वही पहले उदयमें आती है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए, इससे अन्यथा ग्रहण करनेपर प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदक काल समाप्त होनेपर तदनन्तर समयमें दूसरी संग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाला उसके असंख्यात बहुभागको बाँधता और वेदता है, और ऐसा होनेपर उस कालमें होनेवाले बन्ध और उदय पूर्वके बन्ध और उदयसे अनन्तगुणे प्राप्त होते हैं। किन्तु यह इष्ट नहीं है, क्योंकि प्रत्येक समयमें अनन्तगुणित क्रमसे विशुद्धिरूप परिणामोंकी वृद्धि होनेपर उन बन्ध और उदयके उसरूप प्रवृत्ति होनेमें विरोध आता है। अतएव कृष्टिकारकके जो तीसरी संग्रहकृष्टि है

पि जत्थ जत्थ वेदगस्स पढमसगहकिट्टि भणिहिदि तत्थ तत्थ किट्टीकरणद्धाए जा तदियसंगहकिट्टी सा चेव घेत्तव्वा, अण्णहा अणतरपरूविददोसप्पसंगादो। एव च पढमसगहकिट्टिमोकड्डियूण वेदेमाणो किमविसेसेण सव्वाओ चेव तदतरकिट्टीओ उदय पवेसेदि आहो अत्थि कोइ विसेसो त्ति आसकाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* ताहे कोहस्स पढमाए सगहकिट्टीए असंखेज्जा भागा उदिण्णा।

§ ११५ कोहपढमसगहकिट्टीए जहण्णकिट्टिप्पहुडि हेट्टिमासंखेज्जदिभाग पुणो तिस्से चेव उक्कस्सकिट्टिप्पहुडि उवरिमासखेज्जदिभागं च मोत्तूण सेसमज्झिमा असखेज्जा भागा तक्काल मुदयमागदा त्ति भणिद होदि। हेट्टिमोवरिमासखेज्जदिभागविसयाणं सरिसधणियकिट्टीण परिणाम विसेसमस्सियूण मज्झिमकिट्टिसरूवेणव उदयपरिणामो होदि त्ति एसो एदस्स भावत्थो। एवमुदयपरूवण कादूण संपहि कोहसजलणस्स अणुभागबधो कथं पयट्टदि त्ति आसकाए णिण्णय विहाणट्ठमुत्तरसुत्तावयारो—

* एदिस्से चेव कोहस्स पढमाए सगहकिट्टीए असखेज्जा भागा बज्झति।

§ ११६ कुदो? उदयादो अणतगुणहीणसरूवेण पयट्टमाणस्स बधस्स तहा पवुत्तीए विरोहा भावादो। तदो उदिण्णाओ किट्टीओ बहुगीओ, एदाओ बज्झमाणकिट्टीओ विसेसहीणाओ त्ति घेत्तव्व, उदिण्णाण किट्टीण हेट्टिमोवरिमासखेज्जदिभाग मोत्तूण सेसमज्झिमबहुभागसरूवेण

वह यहाँ कृष्टिवेदकके प्रथम संग्रहकृष्टि है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार मानादिकको अपेक्षा भी जहाँ जहाँ कृष्टिवेदकके प्रथम सग्रह कृष्टि कहेंगे वहाँ वहाँ कृष्टिकरणके कालमें जो तीसरी सग्रह कृष्टि है वही ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा अनन्तर पूर्व कहे गये दोषका प्रसग प्राप्त होता है। इसी प्रकार प्रथम सग्रह कृष्टिका अपकर्षण करके वेदन करनेवाला जीव क्या सामान्य रूपसे अपनी सभी अन्तर कृष्टियोको उदयमे प्रविष्ट कराता है या कोई विशेषता है ऐसी आशका होनेपर निर्णय करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* उस कृष्टिवेदक कालके प्रथम समयमे इसी क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रहकृष्टिके असंख्यात बहुभागप्रमाण वह उदयको प्राप्त होती हैं।

§ ११५ क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टिकी जघन्य कृष्टिसे लेकर अधस्तन असंख्यातवें भागमाण तथा उसीकी उत्कृष्ट कृष्टिसे लेकर उपरिम असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टियोको छोड़कर शेष बीचकी असंख्यात बहुभाग प्रमाण कृष्टियाँ उस समय उदयको प्राप्त होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि अधस्तन और उपरिम असख्यातवें भागकी विषयभूत सदृश धनवाली कृष्टियोका परिणाम विशेषका अवलम्बन लेकर मध्यम कृष्टिरूपसे ही उदयपरिणाम होता है इस प्रकार यह इस सूत्रका भावार्थ है। इस प्रकार उदयका कथन करके अब क्रोधसज्वलनका अनुभाग बन्ध किस प्रकार प्रवृत्त होता है ऐसी आशंका होनेपर निर्णय करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

* तथा इसी क्रोधसज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिके असंख्यात बहुभाग बन्धको प्राप्त होते हैं।

§ ११६ क्योंकि उदयसे अनन्तगुणे हीनरूपसे प्रवृत्त होनेवाले बन्धकी उस रूपसे प्रवृत्ति होनेमे विरोधका अभाव है। इसलिए उदयको प्राप्त हुई कृष्टियाँ बहुत हैं। उनसे ये बन्धको प्राप्त होनेवाली कृष्टियाँ विशेष हीन हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि उदयको प्राप्त हुई कृष्टियोंके अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भागको छोड़कर शेष मध्यम बहुभागस्वरूपसे बँधने

बज्झमाणकिट्टीण पवुत्तिणियमदसणादो।

* सेसाओ दोसंगहकिट्टीओ ण बज्झंति ण वेदिज्जंति।

§ ११७ कुदो? जहाकममेव संगहकिट्टीओ वेदेमाणस्स पढमसंगहकिट्टी वेदगावत्थाए सेसदोसंगहकिट्टीणमुदयासंभवादो, जस्स कसायस्स जं किट्टि वेदयदि तस्स तदायारेणेव बंधो होइ त्ति णियमदंसणादो च। माणमायालोभाण पि अप्पप्पणो पढमसंगहकिट्टीण वेदग सबंधिणीणमसंखेज्जा भागा बज्झंति, सेसदोसंगहकिट्टीओ ण बज्झंति। तेसिं चेव सव्वाओ संगहकिट्टीओ ताव ण वेदिज्जंति चेव, कोहवेदगकालब्भंतरे तदुदयपवुत्तीए विरोहादो त्ति एसो वि अत्थो एत्थेव सुत्ते णिलीणो त्ति घेत्तव्वं।

§ ११८ संपहि कोहसंजलणस्स पढमाए संगहकिट्टीए हेट्ठिमोवरिमाणमसंखेज्जदिभागाण मबज्झमाणावेदिज्जमाणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

वाली कृष्टियोंकी प्रवृत्तिका नियम देखा जाता है।

* क्रोध संज्वलनकी शेष दो संग्रहकृष्टियाँ न बँधती हैं और न वेदी जाती हैं।

§ ११७ क्योंकि यथाक्रम ही संग्रह कृष्टियोंका वेदन करनेवाले जीवके प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदन करनेकी अवस्थामें शेष दो संग्रह कृष्टियोंका उदय होना असम्भव है। कारण कि जिस कषायकी जिस कृष्टिका वेदन करता है उसके उस रूपसे ही बन्ध होता है ऐसा नियम देखा जाता है। मान, माया और लोभ कषायोंकी अपेक्षा भी अपनी अपनी प्रथम संग्रह कृष्टियोंका वेदन करते समय उन कृष्टियोंके असंख्यात बहुभागप्रमाण व बन्धको प्राप्त होता है, शेष दो संग्रहकृष्टियाँ नहीं बँधती हैं। तथा प्रकृतमें उ होंकी समस्त संग्रह कृष्टियाँ तब तक नहीं ही वेदी जाती है, क्योंकि क्रोधके वेदककालके भीतर उनकी उदय प्रवृत्ति होनेमें विरोध है इस प्रकार यह अर्थ भी इसी सूत्रमें लीन है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—अश्वकर्णकरण कालके सम्पन्न होनेपर दूसरा त्रिभाग कृष्टिकरणका है। जब पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोंका वेदन करते हुए प्रथम स्थितिमें एक आवलि काल शेष रहता है तब कृष्टिकरणका काल समाप्त होकर अगले समयमें यह जीव क्रोध संज्वलनका प्रथम संग्रह कृष्टि मेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके उसकी प्रथम स्थिति करता है और यहाँसे क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदन काल प्रारम्भ हो जाता है। क्रम यह है—क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट कृष्टियोंको छोड़कर बीचकी असंख्यात बहुभाग प्रमाण कृष्टियोंका उदय होता है तथा इसी क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी जो कृष्टियाँ उदयरूप होती हैं उनसे विशेष हीन कृष्टियाँ बन्धको प्राप्त होती हैं। यहाँ प्रथम समयमें न तो क्रोध संज्वलनकी शेष रही दो संग्रह कृष्टियोंका उदय होता है और न बन्ध होता है और न ही इस समयमें मान, माया और लोभ संज्वलन सम्बन्धी संग्रह कृष्टियोंका ही उदय और बन्ध होता है। ऐसा नियम है कि क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुए इस जीवके प्रत्येक समयमें परिणामोंमें अनन्तगुणी विशुद्धि बढ़ती जाती है, इसलिए कृष्टिकारकके क्रोध संज्वलनकी जिसे तीसरी संग्रह कृष्टि कहा गया है, वेदन कालके समय वह पहली हो जाती है। कारणका निर्देश मूल टीकामें किया ही है। इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए।

§ ११८ अब क्रोध संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी असंख्यातवें भाग प्रमाण अधस्तन और उपरिम नहीं बंधनेवाली और नहीं उदयको प्राप्त होनेवाली कृष्टियोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* पढमाए संगहकिट्टीए हेट्ठदो जाओ किट्टीओ ण बज्झंति ण वेदिज्जंति ताओ थोवाओ।

§ ११९. कोहसंजलणपढमसंगहकिट्टीए जहण्णकिट्टिप्पहुडि हेट्ठिमासंखेज्जदिभागविसए जाओ किट्टीओ अबज्झमाणावेदिज्जमाणसरूवाओ ताओ थोवाओ त्ति भणिदं होदि।

* जाओ किट्टीओ वेदिज्जंति ण बज्झंति ताओ विसेसाहियाओ।

§ १२०. एवं भणिदे पुव्विल्लाबज्झमाणावेदिज्जमाणकिट्टीणमुवरिमकिट्टिप्पहुडि जाव बध-जहण्णकिट्टीए हेट्ठिमाणंतरकिट्टि त्ति ताव एदम्मि अद्धाणे जाओ किट्टीओ केवलमुदयपाओग्गाओ चेव ताओ सयलकिट्टीअद्धाणस्सासंखेज्जदिभागमेत्तीओ होदूण पुव्विल्लकिट्टीहिंतो विसेसाहियाओ त्ति वुत्तं होदि। केत्तियमेत्तो विसेसो? हेट्ठिमद्धाणस्सासंखेज्जदिभागमेत्तो। तस्स को पडिभागो? तप्पाओग्गपलिदोवमासंखेज्जदिभागो। कुदो एदं परिच्छिज्जदे? सुत्ताविरुद्धपरमगुरूवएसादो।

* तिस्से चेव पढमाए संगहकिट्टीए उवरि जाओ किट्टीओ ण बज्झंति ण वेदिज्जंति ताओ विसेसाहियाओ।

§ १२१. एदाओ वि सयलकिट्टीअद्धाणस्सासंखेज्जदिभागमेत्तीओ होदूण पुव्विल्लकिट्टीहिंतो विसेसाहियाओ जादाओ। एत्थ विसेसाहियपमाणं पुव्वं व वत्तव्वं।

प्रथम संग्रह कृष्टिकी अधस्तन जो कृष्टियाँ न बँधती हैं और न उदयको प्राप्त होती हैं वे अल्प हैं।

§ ११९. क्रोध संज्वलन संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिसे लेकर अधस्तन असंख्यातवें भाग प्रमाण सम्बन्धी जो कृष्टियाँ अबन्ध रूप और अनुदयस्वरूप हैं वे अल्प हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* जो कृष्टियाँ उदयको प्राप्त होती हैं किन्तु बँधती नहीं हैं वे विशेष अधिक हैं।

§ १२०. ऐसा कहनेपर इससे पूर्व सूत्रमें कही गयी नहीं बधनेवाली और उदयको नहीं प्राप्त होनेवाली कृष्टियोंके उपरिम कृष्टिसे लेकर बन्धको प्राप्त होनेवाली जघन्य कृष्टि सम्बन्धी अधस्तन अनन्तर कृष्टिके प्राप्त होने तक इस स्थानमें जो केवल उदयप्रायोग्य कृष्टियाँ हैं वे समस्त कृष्टिअध्वानके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर पूर्व सूत्रमें कही गयी कृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है?

समाधान—अधस्तन स्थानके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

शंका—उसका प्रतिभाग क्या है?

समाधान—तत्प्रायोग्य पल्योपमका असंख्यातवाँ भागप्रमाण उसका प्रतिभाग है

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—सूत्रके अविरुद्ध परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

* उसी प्रथम संग्रह कृष्टिके ऊपर जो कृष्टियाँ न बँधती हैं और न उदयको प्राप्त होती हैं वे विशेष अधिक हैं।

§ १२१. ये कृष्टियाँ भी समस्त कृष्टिस्थानके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर पूर्व दो सूत्रोंमें कही गयी कृष्टियोंसे विशेष अधिक हो जाती हैं। यहाँ पर विशेष अधिकका प्रमाण पहलेके समान कहना चाहिए।

*** उवरि जाओ वेदिज्जंति ण बज्झंति ताओ विसेसाहियाओ ।**

§ १२२ सुगमं ।

*** मज्झे जाओ किट्टीओ बज्झंति च वेदिज्जंति च ताओ असंखेज्जगुणाओ ।**

§ १२३ पुव्वुत्तहेट्ठिमोवरिमासंखेज्जभागविसयाओ किट्टीओ मोत्तूण सेसासेसमज्झिम किट्टीओ वज्झमाणवेदिज्जमाणाओ णाम, तदायारेण बंधोदयाण पवुत्तीए पडिसेहाभावादो। तदो ताओ असंखेज्जगुणाओ जादाओ। एत्थ गुणगारो तप्पाओग्गपलिदोवमासंखेज्जदिभागमेत्तो। एवं किट्टीवेदगद्धाए पढमसमए इमं परूवणं कादूण संपहि किट्टीवेदगद्धं तत्थ ताव थप्पं कादूण किट्टीकरणद्धाए पडिबद्धगाहासुत्ताणमत्थविहासणं कुणमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाढवेइ—

*** किट्टीवेदगद्धा ताव थवणिज्जा ।**

§ १२४ कुदो? किट्टीकरणद्धापडिबद्धसुत्तफासे अकदे तिस्से परूवणावसराभावादो। तदो तमेव ताव सुत्तफासं जहावसरपत्तं कुणमाणो इदमाह—

*** किट्टीकरणद्धाए ताव सुत्तफासो ।**

§ १२५ पुव्वं गाहासुत्ताणि हियए कादूण तदुच्चारणाए विणा किट्टीकरणद्धा विसेसिदा। इदाणिं पुण तव्विसयो सुत्तफासो कायव्वो, तेण विणा पुव्वपरूवणाविसये णिण्णयाणुप्पत्तीदो त्ति वुत्तं होइ।

*** (पूर्व में कही गयी कृष्टियोंसे) ऊपर स्थित जो कृष्टियाँ उदयको प्राप्त होती हैं किन्तु बंधती नहीं हैं वे विशेष अधिक हैं।**

§ १२२ यह सूत्र सुगम है।

*** बीच में जो कृष्टियाँ बँधती हैं और उदयको प्राप्त होती हैं वे असंख्यातगुणी हैं।**

§ १२३ पूर्वोक्त अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टियोंको छोड़कर मध्यकी शेष समस्त कृष्टियाँ बंधरूप और उदयरूप हैं, क्योंकि उसरूपसे अर्थात् वे कृष्टियाँ जिस अनुभागस्वरूप हैं उसरूपसे उनके बन्ध और उदयकी प्रवृत्ति होनेका निषेध नहीं है, इसलिए वे असंख्यातगुणी हो गयी हैं। यहाँपर गुणकार तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इस प्रकार कृष्टि वेदक कालके प्रथम समयमें इस प्ररूपणाको करके अब कृष्टि वेदक कालको सर्व प्रथम स्थगित करके कृष्टिकरण कालसे सम्बन्ध रखनेवाले गाथासूत्रोंके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

*** अब कृष्टिवेदक कालको स्थगित रखना चाहिए।**

§ १२४ क्योंकि कृष्टिकरण कालसम्बन्धी सूत्रोंका स्पर्श (व्याख्यान) नहीं किये जानेपर आगे उनके कथनके अवसरका अभाव है, इसलिए यहाँपर सर्वप्रथम उसी अवसरप्राप्त सूत्रोंका स्पर्श (व्याख्यान) करते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

*** सर्वप्रथम कृष्टिकरण कालके सूत्रोंका स्पर्श करते हैं।**

§ १२५ पहले गाथासूत्रोंको हृदयमें करके उनका उच्चारण किये बिना कृष्टिकरण कालका व्याख्यान किया है। परन्तु इस समय तद्विषयक सूत्रोंका स्पर्श करना चाहिए, क्योंकि उसके बिना पूर्वमें की गयी प्ररूपणाविषयक निर्णय नहीं हो सकता यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* तत्थ एक्कारस मूलगाहाओ ।

§ १२६ तत्थ किट्टीकरणद्धाए पडिबद्धाओ एक्कारस मूलगाहाओ होंति, तासिमेत्तो विहासा अहिकीरदि त्ति वुत्त होदि । चरित्तमोहक्खवणाए अट्ठावीसमूलगाहासु पडिबद्धासु तत्थ पट्ठवगे चत्तारि मूलगाहाओ पढममेव विहासिदाओ । तदणतर सकामगे चत्तारि मूलगाहाओ, ओवट्टणाए तिण्णि मूलगाहाओ त्ति एवमेदाओ एक्कारस मूलगाहाओ जहासभवमप्पप्पणो भासगाहाहि सह विहासिदाओ । एण्हि पुण किट्टीकरणद्धाए पडिबद्धाणमेक्कारसण्हं मूलगाहाण सभासगाहाणमत्थ विहासण जहावसरपत्त वत्तइस्सामो त्ति एसो एदस्स भावत्थो । तासि च जुगवं वोत्तुमसक्कियत्तादो जहाकममेव विहासण कुणमाणो पढममूलगाहाए ताव समुक्कित्तणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* पढमाए मूलगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ १२७ तासिमेक्कारसण्हं मूलगाहाण मज्झे पुव्वमेव ताव पढममूलगाहाए समुक्कित्तणा कीरदि त्ति वुत्त होइ ।

(१०९) केवदिया किट्टीओ कम्हि कसायम्हि कदि च किट्टीओ ।
किट्टीए किं करण लक्खणमध किं च किट्टीए ॥१६२॥

§ १२८ एदिस्से गाहाए अत्थो वुच्चदे । त जहा—'केवदिया किट्टीओ' एव भणिदे चउण्हं कसायाण भेदविवक्खमकादूण सामण्णेण केत्तियमेत्तीओ सगहावयवकिट्टीओ होति त्ति पुच्छा कवा होइ । एवमेसो पढमो अत्थो । पुणो चउण्ह कसायाणं भेदविवक्ख कादूण तत्थ एक्केक्कस्स कसायस्स केवडियाओ किट्टीओ होति त्ति विदिओ अत्थो । एदम्मि पडिबद्धो सुत्तस्स विदियावयवो

---

* उस विषयमे ग्यारह मूल गाथाएँ हैं ।

§ १२६ वहाँ कृष्टिकरण कालसे सम्बद्ध ग्यारह मूल गाथाएँ हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । चारित्रमोहकी क्षपणासम्बन्धी अट्ठाईस मूल गाथाएँ कही हैं । उनमेसे प्रस्थापक सम्बन्धी चार मूल गाथाओका पहले ही व्याख्यान कर आये हैं । तदनन्तर सक्रामकसम्बन्धी चार मूल गाथाएँ तथा अपवर्तना सम्बन्ध तीन मूल गाथाएँ इस प्रकार इन ग्यारह मूल गाथाओका यथा-सम्भव अपनी अपनी भाष्य गाथाओके साथ व्याख्यान कर आये हैं । परन्तु इस समय कृष्टिकरण कालसे सम्बन्ध रखनेवाली ग्यारह मूल गाथाओका अपनी भाष्यगाथाओके साथ यथावसर प्राप्त व्याख्यान करेंगे यह इस सूत्रका भावार्थ है । किन्तु उनका एक साथ कथन करना अशक्य होनेसे यथाक्रम ही व्याख्यान करते हुए सवप्रथम प्रथम मूल गाथाकी समुत्कीर्तना करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* उनमेसे प्रथम मूल गाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ १२७ उन ग्यारह मूल गाथाओमेसे सबसे पहले प्रथम मूल गाथाको समुत्कीतना की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* कृष्टियाँ कितनी हैं और किस कषायमे कितनी कृष्टियाँ हैं । कृष्टिके कौनसा करण होता है तथा कृष्टिका लक्षण क्या है ।

§ १२८ अब इस गाथाका अर्थ कहते हैं । वह जैसे—'केवडिया किट्टीओ' ऐसा कहनेपर चारो कषायोंकी भेदविवक्षा किये बिना सामान्यसे कितनी सग्रह कृष्टियाँ तथा कितनी अवयव कृष्टियाँ होती हैं यह पृच्छा की गयी है । इस प्रकार यह प्रथम अर्थ है । पुन चारो कषायोकी भेदविवक्षा करके उनमेंसे एक-एक कषायकी कितनी कृष्टियाँ होती हैं इस प्रकार दूसरे अर्थसे युक्त

'कम्हि कसायम्हि कदि च किट्टीओ' त्ति। एसा दुविहा पुच्छा संगहकिट्टीणमंतरकिट्टीण च पमाण विसेसमुवेक्खदे। पुणो किट्टीओ करेमाणो ट्ठिदि अणुभागेहि चदुण्ह संजलणाण पदेसग्गं किमोकड्डुदि, आहो उक्कड्डुदि त्ति करणविसेसावहारणलक्खणो तदिओ अत्थो। तम्हि पडिबद्धो सुत्तस्स तदिया वयवो 'किट्टीए कि करण' इदि। किट्टीकरणावत्थाए कदम करण होदि, किमोकड्डुणाकरणमाहो उक्कड्डुणाकरण तदुभय वा त्ति पुच्छामुहेण तहाविहत्थविसए एदस्स पडिबद्धत्तदंसणादो। पुणो किट्टीगदाणुभागस्स केरिसं लक्खण, किमविभागपडिच्छेदुत्तरकमवड्ढीए फद्दयगदाणुभागस्सेव तदवट्ठाणसभवो आहो अणतगुणवड्ढिसरूवेण तदवट्ठाणणियमो त्ति एवविह पुच्छामुहेण किट्टीण सरूवणिद्देसविसओ चउत्थो अत्थो एदम्मि पडिबद्धो, सुत्तस्स चरिमावयवो 'लक्खणमथ कि च किट्टीए' त्ति। तदो एव विहाण चउण्हमत्थविसेसाण किट्टीकरणद्धापडिबद्धाण णिण्णयविहाणट्ठमेवं पढमगाहासुत्त पुच्छामेत्तेण सूचिदासेसविसेसपरूवण समोइण्णमिदि घेत्तव्व। सपहि एवविहमेदिस्से गाहाए अत्थविसेस विहासेमाणो चुण्णिसुत्तयारो उवरिम पबधमाढवेइ—

* एदिस्से गाहाए चत्तारि अत्था।

§ १२९. चउण्ह कसायाणमभेदेण किट्टीण पमाणावहारण पुणो एक्केक्कस्स कसायस्स णिरुंभण काऊण किट्टीण पमाणावहारण किट्टीकारयस्स करणविसेसावहारण किट्टीण लक्खणविहाणं चेदि एवमेदे चत्तारि अत्थविसेसा किट्टीकरणद्धा सबंधिणो एदम्मि पढमगाहासुत्तम्मि णिबद्धा त्ति।

इस गाथामे प्रतिबद्ध यह दूसरा पाद है—'कम्हि कसायम्हि कदि च किट्टीओ'। इस प्रकार यह दोनो प्रकारकी पृच्छा सग्रहकृष्टियो और अन्तरकृष्टियोसम्बन्धी प्रमाण विशेषकी अपेक्षा रखती है। पुन कृष्टियोको करनेवाला स्थिति और अनुभागकी अपेक्षा चारो सज्वलनोके प्रदेशपुजको क्या अपकर्षित करता है या उत्कर्षित करता है इस प्रकार करण विशेषके अवधारणरूप लक्षणवाला तीसरा अर्थ उस गाथामे प्रतिबद्ध तीसरा पाद है—'किट्टीए कि करण'। कारण कि कृष्टिकरणकी अवस्थामें कौन करण होता है, क्या अपकर्षणकरण होता है या उत्कर्षणकरण होता है या वे दोनो करण होते हैं इस प्रकार पृच्छामुखमे उस प्रकारके अर्थके विषयमे यह तीसरा पाद प्रतिबद्ध देखा जाता है। पुन कृष्टिगत अनुभागका किस प्रकारका लक्षण है? क्या अविभागप्रतिच्छेदोकी उत्तर क्रम वृद्धिरूपसे स्पर्धकगत अनुभागका हो वहाँ अवस्थान सम्भव है या अनन्तगुणवृद्धिरूपसे अनुभागके अवस्थानका नियम वहाँ पाया जाता है इस तरह इस प्रकारके पृच्छामुखसे कृष्टियोके स्वरूपका निर्देश करनेवाला चौथा अर्थ इसमे प्रतिबद्ध है। सूत्रका वह अतिम पाद है—'लक्खणमथ कि च किट्टीए'। इसलिए कृष्टिकरणके कालसे सम्बन्ध रखनेवाले इस प्रकारके चौथे अर्थ सम्बन्धी विशेषोका निर्णय करनेके लिये पृच्छामुखसे सूचित हुए समस्त विशेषोका सूचन करनेवाला प्रथम गाथासूत्र अवतीर्ण हुआ है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। अब इस गाथाके इस प्रकारके अर्थविशेषकी विभाषा करते हुए चूर्णिसूत्रकार आगेके प्रबन्धका आरम्भ करते है—

* इस गाथाके चार अर्थ हैं।

§ १२९. चारो कषायोका अभेद करके कृष्टियोके प्रमाणका अवधारण करना पुनः एक एक कषायको विवक्षित कर कृष्टियोके प्रमाणका अवधारण करना, कृष्टिकारकके करणविशेषका अवधारण करना तथा कृष्टियोके लक्षणका विधान करना। इस प्रकार कृष्टिकरणकालसे सम्बन्ध रखनेवाले ये चारों अर्थविशेष इस प्रथम गाथासूत्रमें निबद्ध हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

वुत्तं होइ।

* तिण्णि भासगाहाओ ।

§ १३० एदिस्से पढममूलगाहाए अत्थविहासणट्ठमेत्थ तिण्णि भासगाहाओ होंति, तासि मिदाणिमवयार कस्सामो त्ति वुत्त होइ भासगाहाहिं विणा मूलगाहाणमत्थविहासणोवाया भावादो। तत्थ मूलगाहा णाम पुच्छादुवारेण सूचिदासेसपयदत्थपरूवणा सगहरुइसत्ताणुग्गह कारिणी। तिस्से सूचिदत्थविवरणे पडिबद्धाओ वित्थररुइसत्ताणुग्गहकारिणीओ भासगाहाओ त्ति दट्ठव्वाओ। एवमेत्थ तिण्ह भासगाहाणमत्थित्त पदुविय सपहि जहाकममेव तासि विवरण कुणमाणो चुण्णिसुत्तयारो तत्थ पढमभासगाहाए पुव्वमवयार करेदि--

* पढमभासगाहा वेसु अत्थेसु णिबद्धा। तिस्से समुक्कित्तणा।

§ १३१ तिण्ह भासगाहाण मज्झे पढमा भासगाहा मूलगाहाए पुव्वद्धपडिबद्धेसु वेसु अत्थेसु णिबद्धा। तिस्से समुक्कित्तणा एसा दट्ठव्वा त्ति वुत्त होदि।

(११०) बारस णव छ तिण्णि य किट्टीओ होंति अध व अणंताओ
एक्केक्कम्हि कसाये तिग तिग अधवा अणंताओ ॥१६३॥

§ १३२ एदिस्से पढमभासगाहाए अत्थविवरण कस्सामो। त जहा--'बारस णव छ तिण्णि य' एव भणिदे सगहकिट्टीओ पेक्खियूण ताव कोहोदएण चडिदस्स बारस सगहकिट्टीओ भवति, पुव्वुत्ताण बारसण्हं पि सगहकिट्टीण तत्थ संभवोवलंभादो। माणोदएण चडिदस्स णव

---

* इसकी तीन भाष्यगाथाएँ हैं।

§ १३० इस प्रथम मूल गाथाके अर्थकी विशष व्याख्या करनेके लिए इस विषयमे तीन भाष्यगाथाएँ हैं उनका इस समय अवतार करते है यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि भाष्य गाथाओके बिना मूल गाथाओकी विशेष व्याख्या करनेका अन्य कोई उपाय नही है। जिससे सग्रह रुचिवाले जीवोका उपकार होता है और जिसके पृच्छा द्वारा सूचित हुए समस्त प्रकृत अर्थोंकी प्ररूपणा की जाती है वह मूल गाथा कहलाती है। तथा जो उस मूल गाथा द्वारा सूचित हुए अर्थोंके विवरण करनेमें प्रतिबद्ध हैं और जिनके द्वारा विस्तार रुचिवाले जीवोका अनुग्रह होता है उन्हें भाष्यगाथाएँ कहते हैं ऐसा जानना चाहिए। इस प्रकार प्रकृतमे तीन भाष्य गाथाओके अस्तित्वका कथन करके अब क्रमसे हो उनका विवरण करते हुए चूर्णिसूत्रकार उनमेंसे प्रथम भाष्यगाथाका सर्वप्रथम अवतार करते हैं--

* प्रथम भाष्यगाथा दो अर्थोंमें निबद्ध है। उसकी समुत्कोतना करते हैं।

§ १३१ तीन भाष्यगाथाओमेसे प्रथम भाष्यगाथा मूल गाथाके पूर्वार्धसम्बन्धी दो अर्थोंमें निबद्ध है। उसकी यह समुत्कीर्तना जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पय है।

(११०) क्रोधादि चारों कषायोंकी क्रमसे बारह, नौ, छह ओर तीन कृष्टियाँ होती हैं अथवा अनन्त कृष्टियाँ होती हैं। तथा एक एक कषायमे तीन तीन कृष्टियाँ होती हैं अथवा अनन्त कृष्टियाँ होती हैं ॥१६३॥

§ १३२ अब इस भाष्यगाथाके अथका व्याख्यान करते हैं। वह जैसे--'बारस णव छ तिण्णि य' ऐसा कहनेपर संग्रह कृष्टियोंको देखते हुए जो जीव क्रोध सज्वलनके उदयसे श्रेणिपर आरोहण करता है उसके बारह सग्रह कृष्टियाँ होती हैं, क्योकि पूर्वोक्त बारह हो सग्रह कृष्टियां वहाँ सम्भव

संगहकिट्टीओ भवंति, तत्थ किट्टीकरणद्धावो पुव्वमेव फद्दयसरूवेण विणस्सतस्स कोहसंजलणस्स तिण्हं सगहकिट्टीण सभवाणवलभावो। मायोवएण चडिवस्स पुण छच्चेव संगहकिट्टीओ होंति, कोह माणसजलणाण तत्थ फद्दयसरूवेण पुव्वमेव खविज्जमाणाण किट्टीकरणासभवादो। तहा लोभोवएण सेढिमारूढस्स तिण्णि चेव सगहकिट्टीओ होंति, कोह माण-मायासंजलणाण फद्दय सरूवेण विणासिज्जमाणाणं तत्थ किट्टीसबधाणवलभावो। एक्केक्किस्से पुण सगहकिट्टीए अवयवकिट्टीओ अणताओ होंति त्ति जाणावणट्ठं 'अधवा अणताओ' त्ति तप्पमाणणिद्देसो कवो। एवमव्वोगाढसरूवेण चउण्ह सजलणाणमेत्तियाओ सगहकिट्टीओ तदवयवकिट्टीओ च होंति त्ति पुव्वद्धेणेदेण जाणाविय सपहि चउण्ह संजलणाण पुध पुध णिरंभण काढूण तत्थ एक्केक्कस्स कसायस्स केत्तियाओ किट्टीओ होंति त्ति मूलगाहाविदियावयवमस्सियूण विहासणट्ठ गाहापच्छद्धो समोइण्णो 'एक्केक्कम्हि कसाये तिग तिग' कोहादीणमण्णदरे कसाए णिरुद्धे पादेक्क तिण्णि तिण्णि सगहकिट्टीओ होति। तदवयवकिट्टीओ पुण अणताओ होति त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ। सपहि एवविहमेदिस्से गाहाए अत्थविहासेमाणो चुण्णिसुत्तयारो विहासागथमुत्तरं भणइ—

* विहासा।

§ १३३ सुगम।

* जइ कोहेण उवट्ठायदि तदो बारस संगहकिट्टीओ होंति।

हैं। जो मान सज्वलनके उदयसे श्रेणिपर आरोहण करता है उसके नौ संग्रह कृष्टियाँ होती हैं, क्योंकि इसके कृष्टिकरण कालके पूर्व ही स्पर्धकरूपसे विनाशको प्राप्त हुए क्रोध सज्वलनकी तीन सग्रह कृष्टियाँ वहाँ सम्भव नहीं हैं। परन्तु जो मायाके उदयसे श्रेणिपर आरोहण करता है उसके छह ही सग्रह कृष्टियाँ होती हैं, क्योंकि इसके (कृष्टिकरण कालके) पूर्व ही स्पर्धकरूपसे क्षयको प्राप्त हुए क्रोध और मान सज्वलनोके कृष्टिकरण असम्भव है। तथा लोभके उदयसे जो श्रेणिपर आरोहण करता है उसके तीन ही सग्रह कृष्टियाँ होती हैं क्योंकि इसके क्रोध मान और माया संज्वलनका स्पर्धकरूपसे विनाश हो जाता है, इसलिए वहाँ उक्त कषायसम्बन्धी कृष्टियाँ नहीं पायी जाती हैं। परन्तु एक एक सग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टियाँ अनन्त होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अधवा अणंताओ' इस पद द्वारा उनके प्रमाणका निर्देश किया है। इस प्रकार अव्वोगाढ स्वरूपसे अर्थात् विभक्त किये बिना चारो सज्वलनोकी इतनी सग्रह कृष्टियाँ और उनकी इतनी अवयव कृष्टियाँ होती हैं इस प्रकार इस गाथासूत्रके पूर्वार्ध द्वारा ज्ञान कराकर अब चारो सज्वलनो को पृथक पृथक् विवक्षित कर उनमेसे एक एक कषायकी कितनी कृष्टियाँ होती हैं इस प्रकार मूल गाथाके दूसरे अवयव अर्थात् उत्तरार्धका आलम्बन लेकर व्याख्या करनेके लिए गाथाका उत्तरार्ध अवतीर्ण हुआ है—'एक्केक्कम्हि तिग तिग' अर्थात् क्रोधादि संज्वलनोमेसे किसी एक कषायके विवक्षित होनेपर प्रत्येककी तीन तीन संग्रह कृष्टियाँ होती हैं। तथा उनकी अवयव कृष्टियाँ अनन्त होती हैं यह यहाँ इस गाथासूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। अब इस प्रकार इस गाथासूत्रके अर्थका विशेष व्याख्यान करते हुए चूर्णिसूत्रकार आगेके विभाषाग्रन्थको कहते हैं—

* अब उक्त गाथा सूत्रकी विभाषा करते हैं।

§ १३३ यह सूत्र सुगम है।

* यदि क्रोध कषायके उदयसे क्षपकश्रेणिपर उपस्थित होता है तो उसके बारह सग्रह कृष्टियाँ होती हैं।

§ १३४ कोहोदएण जइ खवगसेढिमुवट्ठायदि तो तस्स बारह संगहकिट्टीओ होंति त्ति सुत्तत्थसंबंधो। सेसं सुगमं।

* माणेण उवट्ठिदस्स णव संगहकिट्टीओ।

§ १३५ कुदो? कोहसंजलणस्स तिण्हं संगहकिट्टीणमेत्थ संभवाणुवलंभादो। कुदो एवं चे? कोहसंजलणाणुभागस्स फद्दयसरूवेणेव तत्थ विणासदंसणादो।

* मायाए उवट्ठिदस्स छ संगहकिट्टीओ।

§ १३६ कोह-माणसंजलणाणं तत्थ किट्टीपरिणामेण विणा फद्दयसरूवेणेव विणासदंसणादो।

* लोभेण उवट्ठिदस्स तिण्णि संगहकिट्टीओ।

§ १३७ किं कारणं? लोभसंजलणं मोत्तूण तत्थ सेससंजलणाणं किट्टीकरणद्धादो हेट्ठा चेव जहाकमं फद्दयगदाणुभागसरूवेण खविज्जमाणाणं किट्टिसंबंधाणुवलंभादो। संपहि इममेव सुत्तत्थमुवसंहरेमाणो उवरिमं सुत्तावयवमाह—

* एवं बारस णव छ तिण्णि च।

---

§ १३४ यदि क्रोध सज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर उपस्थित होता है तो उसके बारह संग्रह कृष्टियाँ होती है यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। शेष कथन सुगम है।

* मान सज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर उपस्थित हुए जीवके नौ संग्रह कृष्टियाँ होती हैं।

§ १३५ क्योकि क्रोध संज्वलनसम्बन्धी तीन संग्रह कृष्टियाँ यहाँपर सम्भव नही हैं।

शंका—ऐसा किस कारणसे है?

समाधान—क्योकि क्रोध संज्वलन सम्बन्धी अनुभागका यहाँ पर स्पर्धकरूपसे ही विनाश देखा जाता है।

* माया सज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर उपस्थित हुए जीवके छह संग्रह कृष्टियाँ होती हैं।

§ १३६ क्योकि क्रोध और मान सज्वलनोंका वहाँपर कृष्टिरूप परिणाम हुए बिना स्पर्धकरूपसे ही विनाश देखा जाता है।

* लोभ सज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर उपस्थित हुए जीवके तीन संग्रह कृष्टियाँ होती हैं।

§ १३७ क्योकि लोभसज्वलनको छोड़कर वहाँपर शेष संज्वलनोंका कृष्टिकरणके कालके पूर्व ही क्रमसे स्पर्धकगत अनुभागरूपसे क्षय करनेवाले जीवोंके कृष्टिरूपसे उक्त अनुभागका सम्बन्ध नही पाया जाता। अब सूत्रसम्बन्धी इसी अर्थका उपसंहार करते हुए आगे उक्त गाथा सूत्रके प्रथम चरणको कहते हैं—

* इस प्रकार उक्त भाष्यगाथाके प्रथम चरणके अनुसार क्रमसे बारह, नौ, छह और तीन संग्रह कृष्टियाँ होती हैं।

§ १३८ सुगम। सपहि 'अथवा अणताओ' त्ति इम सुत्तावयव विहासिदुकामो इदमाह—

* एक्केक्किस्से सगहकिट्टीए अणताओ किट्टीओ त्ति एदेण कारणेण 'अथवा अणताओ' त्ति।

§ १३९ गयत्थमेद सुत्त। एवमेदम्मि गाहापुव्वद्धे विहासिदे मूलगाहापढमावयव पडिबद्धो अत्थो समप्पदि त्ति जाणावणट्ठमिदमाह—

* केवडियाओ किट्टीओ त्ति अत्थो समत्तो।

§ १४० सुगम। सपहि मूलगाहाए विदियावयवमस्सियूण पढमभासगाहापच्छिमद्ध विहासेमाणो उवरिम पबधमाह—

* कम्हि कसायम्हि कदि च कि ीओ त्ति एद सुत्तं।

§ १४१ सुगममेद। मूलगाहाविदियावयवसभालणफल सुत्त, ण तस्स सभालण णिरत्थय, अण्णहा सोदाराण सुहेण तव्विसयपडिबोहाणुववत्तीदो।

* एक्केक्कम्हि कसाये तिग तिग अथवा अणताओ त्ति विहासा।

§ १४२ अणतरणिद्दिट्ठमूलगाहाविदियावयवपडिबद्धत्थविहासणट्ठमवस्स गाहापच्छद्धस्स विवरणं कस्सामो त्ति भणिद होइ।

---

§ १३८ यह सूत्र सुगम है। अब उक्त सूत्रगाथाके 'अथवा अणताओ' इस दूसरे चरणकी विशेष व्याख्या करनेकी इच्छासे इस चूर्णिसूत्रको कहते हैं—

* अथवा एक एक सग्रह कृष्टिकी अनन्त कृष्टियाँ होती है, इस कारण उक्त भाष्यगाथा सूत्रमे 'अथवा अनन्त होती हैं' यह वचन कहा है।

§ १३९ यह सूत्रवचन गतार्थ है। इस प्रकार इस गाथासूत्रके पूर्वार्धकी व्याख्या करने पर मूलगाथाके प्रथम चरणसे सम्बन्ध रखनेवाला अर्थ समाप्त हुआ इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते है—

* इस प्रकार मूल गाथाके 'कृष्टियाँ कितनी होती है' इस प्रश्नात्मक प्रथम पादका अर्थ समाप्त हुआ।

§ १४० यह वचन सुगम है। अब मूल गाथाके दूसरे पादका आलम्बन लेकर प्रथम भाष्यगाथाके उत्तरार्धकी विभाषा करते हुए आगेके प्रबन्धको कहते है—

* 'किस कषायमे कितनी कृष्टियाँ होती हैं' यह मूलगाथाके दूसरे पादका निर्देश करने वाला सूत्र है।

§ १४१ यह सूत्रवचन सुगम है। मूलगाथाके दूसरे पादकी सम्हाल करना इस सूत्रवचनका फल है। और उसकी सम्हाल करना निरर्थक नही है, अन्यथा श्रोताओको उक्त सूत्र द्वारा तद्विषयक प्रतिबोध नही हो सकता।

* अब प्रथम भाष्यगाथाके 'एक्केक्कम्हि कसाये तिग तिग अथवा अणताओ' उत्तरार्धकी विभाषा करते हैं।

§ १४२ अनन्तर पूर्व कही गयी मूलगाथाके दूसरे पादसे सम्बन्ध रखनेवाले अर्थकी विभाषा करनेके लिए इस भाष्यगाथाके उत्तरार्धका विवरण करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* 'एक्केक्कम्हि कसाये तिण्णि तिण्णि संगहकिट्टीओ' त्ति एवं तिग तिगं ।

§ १४३ जदो एक्केक्कम्हि कसायम्हि तिण्णि तिण्णि संगहकिट्टीओ होंति तदो एक्केक्कम्हि कसाए तिग तिगं' इदि गाहापच्छद्धे भणिदमिदि वुत्तं होदि ।

* एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए अणंताओ किट्टीओ त्ति एदेण 'अधवा अणंताओ' जादा ।

§ १४४ एक्केक्कस्स कसायस्स एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए अवयवकिट्टीओ अणंताओ अत्थि तदो 'अधवा अणंताओ' त्ति गाहासुत्तचरिमावयवो भणिदो त्ति वुत्तं होइ । णेदमेत्था-सकणिज्ज, 'अधवा अणंताओ' त्ति गाहापुव्वद्धचरिमावयवेणेदस्स सुत्तावयवस्स पुणरुत्तभावो किण्ण पसज्जदि त्ति । किं कारणं ? अव्वोगाढसरूवचदुकसायविसयेण तेण णिरुद्धेगकसाय-विसयस्सेदस्स अत्थभेदसंभवेण पुणरुत्तदोसासंभवादो ।

संपहि 'किट्टीए किं करणं' ति मूलगाहातदियावयवस्स अत्थविवरणं कुणमाणो तस्थ पडिबद्धविदियभासगाहाए अवसरकरणट्ठमुवरिमं पबंधमाह—

* एक एक कषायमे तीन-तीन संग्रह कृष्टियाँ होती हैं इस प्रकार भाष्यगाथाके उत्तरार्धमे 'तिग तिगं' यह वचन आया है ।

§ १४३ यतः एक-एक कषायमे तीन-तीन संग्रह कृष्टियाँ होती हैं, इसलिए एक एक कषायमे 'तिग तिगं' यह वचन गाथाके उत्तरार्धमे कहा है यह उक्त वचनका तात्पर्य है ।

* एक एक संग्रह कृष्टिकी अनन्त अवयव कृष्टियाँ होती हैं इस कारण उक्त भाष्यगाथाके उत्तरार्धमे 'अधवा अणंताओ' यह पद निर्दिष्ट किया गया है ।

§ १४४ एक एक कषायकी एक एक संग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टियाँ अनन्त होती हैं, इस कारण अधवा अणंताओ' इस प्रकार उक्त भाष्यगाथा सूत्रका अन्तिम पाद कहा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—इसी भाष्यगाथाके पूर्वार्धके अन्तिम पादमे 'अध व अणंताओ' यह वचन आया है, अतः उसके साथ उत्तरार्धके अधवा अणंताओ' इस सूत्रवचनका पुनरुक्तपना क्यों नहीं प्राप्त होता है अर्थात् अवश्य प्राप्त होता है ?

समाधान—सो यहाँ ऐसी आशंका नही करनी चाहिए, क्योकि इसी भाष्यगाथाके पूर्वार्धमे जो 'अध व अणंताओ' पाठ आया है वह अव्वोगाढरूपसे चारों कषायोको विषय करता है, इसलिए विवक्षित एक एक कषायका विषय करनेवाले उत्तरार्धसम्बन्धी 'अधवा अणंताओ' इस वचनमे अर्थभेद सम्भव होनेसे पुनरुक्त दोष सम्भव नही है ।

विशेषार्थ—उक्त भाष्यगाथाके पूर्वार्धमें जो 'अध व अणंताओ' पाठ आया है वह चारो कषायोमे सब मिलाकर अवयव कृष्टियाँ अनन्त होता है इसकी सिद्धिके लिए आया है और इसी भाष्यगाथाके उत्तरार्धमे पुनः जो 'अधवा अणंताओ' पाठ आया है वह एक एक कषायमे भी अनन्त अनन्त अवयव कृष्टियाँ होती हैं यह द्योतित करनेके लिए आया है, इसलिए उक्त भाष्य गाथामे उक्त वचन आनेसे पुनरुक्त दोष नही प्राप्त होता यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

अब 'किट्टीए किं करणं' इस प्रकार मूलगाथाके तीसरे पादके अर्थका खुलासा करते हुए उक्त पादमें निबद्ध दूसरी भाष्यगाथाको अवसर देनेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* 'किट्टीए किं करणं' ति एत्थ एका भासगाहा ।

§ १४५ 'किट्टीए किं करणं' इच्चेदम्मि बीजपदे णिबद्धो जो अत्थो तम्हि विहासिज्जमाणे तत्थ पडिबद्धा एक्का भासगाहा वट्टदि त्ति भणिद होदि ।

* तिस्से समुक्कित्तणा ।

§ १४६ सुगम ।

(१११) किट्टी करेदि णियमा ओवट्टेंतो ठिदी य अणुभागे ।
वड्ढेंतो किट्टीए अकारगो होदि बोद्धव्वो ॥१६४॥

§ १४७ एदिस्से बिदियभासगाहाए अत्थपरूवण कस्सामो । त जहा—'किट्टी करेदि णियमा ओवट्टेंतो०' एव भणिदे चउण्ह सजलणाण ट्ठिदीओ अणुभागे च ओकड्डुमाणो चेव किट्टीओ करेदि णाण्णहा त्ति वुत्त होदि । एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठ गाहापच्छद्धमोइण्ण—'वड्ढेंतो किट्टीए अकारगो० ठिदि अणुभागे उक्कड्डमाणो णियमा किट्टीए कारगो ण होदि त्ति भणिद होदि । कुदो एस णियमो त्ति चे ? किट्टीकारगपरिणामाणमुक्कड्डणाकरणविरुद्धसहावेणावट्ठाणणियमादो । एव च मोहपयडीओ पेक्खिदूण भणिद, णाणावरणादिकम्मेसु एदम्हि विसए

* मूल गाथाके 'किट्टीए किं करणं' प्रश्नरूप इस अर्थके उत्तरस्वरूप एक भाष्यगाथा आयी है ।

§ १४५ 'किट्टीए किं करणं' अर्थात् कृष्टिकरणके कालमे कौन करण होता है इस प्रकार इस बीजपदमे जो अर्थ निबद्ध है उसका व्याख्यान करते हुए उक्त अर्थमे प्रतिबद्ध एक भाष्यगाथा जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पय है ।

* अब उसकी समुत्कीर्तना करते है ।

§ १४६ यह वचन सुगम है ।

(१११) चारो सज्वलन कषायोकी स्थिति और अनुभागका नियमसे अपवर्तना करता हुआ ही कृष्टियोको करता है तथा उक्त कषायोके स्थिति और अनुभागको बढ़ाता हुआ कृष्टियोका अकारक होता है ऐसा जानना चाहिए ॥१६४॥

§ १४७ अब इस दूसरी भाष्यगाथाके अर्थकी प्ररूपणा करेंगे । वह जैसे—'किट्टी करेदि णियमा ओवट्टेंतो' ऐसा कहनेपर चारो सज्वलनोकी स्थिति और अनुभागका अपकर्षण करता हुआ ही कृष्टियोको करता है, अन्य प्रकारसे नही यह उक्त कथनका तात्पय है ।

इसी अर्थका स्पष्टीकरण करनेके लिए गाथाका उत्तरार्ध अवतीर्ण हुआ है 'वड्ढेंतो किट्टीए अकारगो' स्थिति और अनुभागका उत्कर्षण करनेवाला जीव नियमसे कृष्टिका कारक नही होता यह उक्त कथनका तात्पय है ।

शका—यह नियम किस कारणसे है ?

समाधान—क्योकि कृष्टियोको करनेवाले जीवोके परिणामोका अवस्थान उत्कर्षणाकरणके विरुद्ध स्वभावरूप होता है ऐसा नियम है ।

किन्तु यह सब मोहनीय कर्मकी प्रकृतियोको देखकर कहा है, क्योकि ज्ञानावरणादि कर्मोंकी अपेक्षा इस विषयमे इस प्रकारका नियम करना सम्भव नही है । यद्यपि इस अर्थका अपवर्तना-

तहाविहणियमासभवादो। जइ वि एसो अत्थो ओवट्टणतदियमूलगाहाविहासणावसरे पुव्वं जाणाविदो तो वि तस्सेवत्थस्स किट्टीकरणाहियारसंबंधेण विसेसियूण पदुप्पायणट्ठं पुणरुवण्णासो त्ति ण एत्थ पुणरुत्तदोसासंका कायव्वा।

§ १४८ संपहि एदिस्से गाहाए अत्थविहासणं कुणमाणो विहासागंथमुत्तरं भणइ—

* विहासा।

§ १४९ सुगमं।

* जहा।

§ १५० एदं पि सुगमं।

* जो किट्टीकारगो सो पदेसग्गं ठिदीहिं वा अणुभागेहिं वा ओकड्डदि, ण उक्कड्डदि।

§ १५१ गयत्थमेदं सुत्तं। संपहि एदस्सेवत्थस्स विसयविभागमुहेण विसेसियूण पदुप्पायणं कुणमाणो उवरिमं पबंधमाढवेइ—

* खवगो किट्टीकरणप्पहुडि जाव संकमो ताव ओकड्डगो पदेसग्गस्स ण उक्कड्डगो।

विषयक तीसरी मूलगाथाके कथनके समय पहले ही ज्ञान करा आये हैं तो भी उसी अर्थका कृष्टिकरण अधिकारके सम्बन्धसे विशेषरूपसे कथन करनेके लिए पुनः उपन्यास किया है, इसलिए प्रकृतमें पुनरुक्त दोषकी आशंका नहीं करनी चाहिए।

विशेषार्थ—'बंधो व संकमो वा उदयो वा' इत्यादि तीसरी मूलगाथा है। उसके उत्तरार्धमें 'अधिगो समो व हीणो' पाठ आया है। उसकी व्याख्या करते हुए सामान्यरूपसे अपकर्षणविषयक विशेष ऊहापोह पहले ही कर आये हैं। परन्तु यहाँ कृष्टिकरण अधिकार अवसरप्राप्त है, इसलिए इस प्रसंगसे प्रकृतमें उत्कर्षण और अपकर्षणविषयक क्या व्यवस्था है यह दिखलाना क्रम प्राप्त था, मात्र इसीलिए यहाँपर कृष्टिकरणमें एक अपकर्षणकरण ही घटित होता है यह दिखलानेके लिए उसका पुनः व्याख्यान किया गया है जो उपयुक्त ही है, अतः प्रकृतमें पुनरुक्त दोषकी आशंका ही नहीं की जा सकती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ १४८ अब इस गाथाके अर्थका व्याख्यान करते हुए आगेके विभाषाग्रन्थको कहते हैं—

* अब उक्त भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ १४९ यह वचन सुगम है।

* वह जैसे।

§ १५० यह वचन भी सुगम है।

* जो कृष्टियोंको करनेवाला है वह संज्वलन कषायोंके प्रदेशपुंजका स्थिति और अनुभागकी अपेक्षा अपकर्षण ही करता है, उत्कर्षण नहीं करता।

§ १५१ यह सूत्र गतार्थ है। अब इसी अर्थका विषयविभाग द्वारा विशेषरूपसे कथन करते हुए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* क्षपक जीव कृष्टिकरणके प्रथम समयसे लेकर उनके संक्रम होनेके अन्तिम समय तक संज्वलन कषायोंके प्रदेशपुंजका अपकर्षक ही होता है, उत्कर्षक नहीं होता।

§ १५२ किट्टीकारगो उवसामगो वि अत्थि, खवगो वि अत्थि। तत्थ खवगो किट्टीकारयपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमसमयसकसाओ ताव मोहणीयपदेसग्गस्स ओकड्डगो चेव होदि, ण पुण उक्कड्डगो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ। एत्थ 'जाव सकमो' त्ति भणिदे जाव समयाहिया वलियसुहुमसांपराइओ ताव ओकड्डणाकरण पयट्टदि त्ति घेत्तव्वं—

* उवसामगो पुण पढमसमयकिट्टीकारगमादिं कादूण जाव चरिमसमयसकसायो ताव ओकड्डगो, ण पुण उक्कड्डगो।

§ १५३ कसाये उवसामेमाणो लोभवेदगद्धाए विदियतिभागम्मि किट्टीओ करेमाणो तदवत्थाए लोभसंजलणस्स ट्ठिदिअणुभागाणमोकड्डगो चेव होदि, किट्टीकरणद्धादो हेट्ठा सव्वत्थेव पयट्टमाणस्स उक्कड्डणाकरणस्स किट्टीकरणपढमसमए मोहणीयविसए वोच्छेदुव लभादो। तदो पढमसमयकिट्टीकारगमादिं कादूण जाव चरिमसमयसकसायो ताव ट्ठिदि अणुभागेहिं मोहणीयकम्मपदेसाणमोकड्डगो चेव एसो उवसामगो ण पुणो उक्कड्डगो त्ति एसो एदस्स भावत्थो। जइ वि सुहुमसांपराइयपढमट्ठिदीए आवलिय पडिआवलियमेत्तसेसाए आगाल-पडिआगालो वोच्छिज्जदि तो वि विदियट्ठिदिसमवट्ठिदपदेसग्गस्स सत्थाणे ओकड्डणा संभवो अत्थि त्ति 'सुहुमसांपराइयचरिमसमओ एत्थ ओकड्डणाकरणस्स मज्जादाभावेण णिद्दिट्ठो। तत्तो परं सव्वोवसामणाए उवसंतस्स मोहणीयस्स सव्वेसिं करणाणं वोच्छेदणियमदंसणादो। उवसंतकसाए वि दंसणमोहणीयस्स ओकड्डणाकरणमत्थि त्ति णासंकणिज्ज, तेणेत्थ अहियारा-

§ १५२ कृष्टियोंको करनेवाला उपशामक भी होता है और क्षपक भी होता है। उनमेंसे जो क्षपक है वह कृष्टियोंको करनेके प्रथम समयसे लेकर उनका सकम करनेके अंतिम समय तक मोहनीय कर्मके प्रदेशपुंजका अपकर्षक ही होता है परन्तु उत्कर्षक नहीं होता यह यहाँ इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। इस सूत्रमें 'जाव सकमो' ऐसा कहनेपर सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक एक आवलि कालके शेष रहने है तक अपकर्षणाकरण प्रवृत्त रहता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

* परन्तु उपशामक जीव कृष्टिकरणके प्रथम समयसे लेकर कषायभावके अन्तिम समय तक अपकर्षक ही होता है, उत्कर्षक नहीं होता।

§ १५३ कषायोंको उपशमानेवाला जीव लोभवेदक कालके दूसरे त्रिभागमें लोभसम्बन्धी अनुभागकी कृष्टियोंको करता हुआ उस अवस्थामें लोभ संज्वलनकी स्थिति और अनुभागका अपकर्षक ही होता है, क्योंकि कृष्टिकरणसम्बन्धी कालके पूर्वमें सर्वत्र ही प्रवृत्त हुए मोहनीय विषयक उत्कर्षणकरणकी कृष्टिकरणके प्रथम समयमें व्युच्छित्ति हो जाती है। इसलिए कृष्टिकारकके प्रथम समयसे लेकर सकषायभावके अंतिम समय तक यह उपशामक स्थिति और अनुभागकी अपेक्षा मोहनीयके कर्मप्रदेशोंका अपकर्षक ही होता है, परन्तु उत्कर्षक नहीं होता यह इस सूत्रका भावार्थ है। यद्यपि सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम स्थितिमें आवलि और प्रत्यावलिमात्र कालके शेष रहनेपर आगाल और प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति हो जाती है तो भी द्वितीय स्थितिमें अवस्थित प्रदेशपुंजकी स्वस्थानमें अपकर्षणा सम्भव है, इसलिए सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक यहाँ पर अपकर्षणाकरणका मर्यादारूपसे निर्देश किया है। उसके बाद सर्वोपशामनाके द्वारा उपशान्त हुए मोहनीयके सभी करणोंकी व्युच्छित्तिका नियम देखा जाता है।

शंका—उपशान्तकषायमें भी दर्शनमोहनीयका अपकर्षणाकरण होता है ?

भावादो। संपहि एवस्सेव उवसामगस्स ओवरमाणावत्थाए ओकड्डुक्कड्डुणाकरणाणं पवुत्ति विसेसावहारणट्ठं उत्तरसुत्तावयारो—

*** पडिवदमाणगो पुण पढमसमयसकसायप्पहुडि ओकड्डगो वि उक्कड्डगो वि ।**

§ १५४ ओवरमाणगस्स पढमसमयसुहुमसांपराइयप्पहुडि सव्वत्थेवावत्थाविसेसे ओकड्डुक्कड्डुणाकरणाण णत्थि पडिसेहो, सव्वेसिं करणाणं तत्थ पुणरुप्पत्तिदसणादो त्ति वुत्तं होइ। जइ वि एत्थ सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणे मोहणीयस्स बंधाभावेण उक्कड्डणाए णत्थि संभवो तो वि सत्ति पडुच्च तत्थुक्कड्डुणाकरणस्स संभवो पदुविदो। जहा ओकड्डुक्कड्डुणाकरणाणमेत्थ मोहणीयसंबंधेण किट्टीकारगमहिकिच्च मग्गणा कदा तहा सेसकरणाण पि जहासंभव मग्गणा कायव्वा, विरोहाभावादो। एवं मग्गणाए कदाए 'किट्टीए किं करणं' त्ति मूलगाहाए तदिओ अत्थो समत्तो।

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उसका यहाँपर अधिकार नहीं है।

अब इसी उपशामकके उतरनेकी अवस्थामें अपकर्षण उत्कर्षणकरणकी प्रवृत्ति विशेषका निश्चय करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

*** परन्तु गिरनेवाला उपशामक सकषाय होनेके प्रथम समयसे लेकर अपकर्षक भी होता है और उत्कर्षक भी होता है।**

§ १५४ उपशमश्रेणिसे उतरनेवाले जीवके सूक्ष्मसाम्परायिक होनेके प्रथम समयसे लेकर सर्वत्र ही अवस्थाविशेषमें अपकर्षणकरण और उत्कर्षणकरणका प्रतिषेध नहीं है, क्योंकि वहाँ सभी करणोंकी पुनरुत्पत्ति देखी जाती है यह उक्त कथनका आशय है। यद्यपि यहाँ सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानमें मोहनीयकर्मका बन्ध नहीं होनेसे उत्कर्षणाकरण सम्भव नहीं है तो भी शक्तिकी अपेक्षा वहाँ उत्कर्षणाकरण सम्भव है यह कहा है। तथा जिस प्रकार यहाँपर मोहनीय कर्मके सम्बन्धसे कृष्टिकरणको अधिकृत करके अपकर्षणाकरण और उत्कर्षणाकरणकी मार्गणा की है, उसी प्रकार शेष करणोंकी भी यथा-सम्भव मार्गणा कर लेनी चाहिए, क्योंकि इसमें कोई विरोध नहीं है। इस प्रकार मार्गणा करनेपर 'कृष्टिकरणमें कौन करण होता है' इस प्रकार मूल गाथाका तीसरा अर्थ समाप्त होता है।

विशेषार्थ—प्रतिपात दो प्रकारका है—उपशामनाक्षयनिमित्तक और भवक्षयनिमित्तक। जो भवक्षयनिमित्तक प्रतिपात होता है उसमें तो आठों ही करण उद्घाटित हो जाते हैं। किन्तु उपशामनाक्षयनिमित्तक प्रतिपातमें अपकर्षणाकरण और उदीरणाकरण ये दोनों करण वहाँ उद्घाटित हो जाते हैं। तथा इसी प्रकार अप्रशस्त उपशामनाकरण, निधत्तीकरण और निकाचनाकरण भी उद्घाटित हो जाते हैं। मात्र उत्कर्षणाकरण और संक्रमकरणका शक्तिकी अपेक्षा ही वहाँ सद्भाव स्वीकार किया गया है। अब रहा बन्धनकरण सो मोहनीय कर्मका नौवें गुणस्थान तक ही बन्ध होता है। अतः वहाँ इसे व्युच्छिन्न जानना चाहिए। यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि बन्धन करणके अभावमें उत्कर्षणाकरण और संक्रमकरणको भी शक्ति अपेक्षा नहीं स्वीकार करना चाहिए। सो इस शंकाका समाधान यह है कि जिन कर्मोंका बन्धके समय उत्कर्षण और संक्रमण होता है वे कर्म सत्तारूपमें बन्धके अभावमें उस समय भी पाये जाते हैं, अतः वहाँ शक्ति अपेक्षा इन दोनों करणोंको स्वीकार किया गया है।

संपहि मूलगाहाचरिमावयवमस्सियूण चउत्थमत्थं विहासेमाणो तत्थ पडिबद्धाए तदियभासगाहाए अवसरकरणट्ठमुवरिमं सुत्तमाह—

* 'लक्खणमध किं च किट्टीए' त्ति एत्थ एक्का भासगाहा। तिस्से समुक्कित्तणा।

§ १५५ 'लक्खणमध किं च किट्टीए' त्ति एदम्मि मूलगाहाचरिमावयवबीजपदे णिबद्धस्स चउत्थस्स अत्थस्स विहासणट्ठमेक्का भासगाहा होदि। तिस्से समुक्कित्तणा एसा बट्ठव्वा त्ति वुत्तं होइ।

(११२) गुणसेढि अणंतगुणा लोभादी कोधपच्छिमपदादो।
कम्मस्स य अणुभागे किट्टीए लक्खणं एदं ॥१६५॥

§ १५६ एदिस्से तदियभासगाहाए किट्टीलक्खणपरूवणट्ठमोइण्णाए अत्थविवरणं कस्सामो। तं जहा—'गुणसेढि अणंतगुणा' गुणस्स सेढी गुणसेढी सा अणंतगुणा भवदि। कम्हि पुण विसए एसा गुणसेढी अणंतगुणा त्ति वुत्ते 'लोभादी कोधपच्छिमपदादो' लोभजहण्णकिट्टिमादिं कादूण जाव कोहसंजलणसव्वपच्छिमउक्कस्सकिट्टि त्ति जहाकममवट्ठिदचदुसंजलणकम्माणुभागविसए एसा अणंतगुणा गुणओली बट्ठव्वा' त्ति वुत्तं होदि। 'किट्टीए लक्खणं एदं' लोभसंजलणजहण्णकिट्टिमादिं कादूण जाव कोधुक्कस्सकिट्टि त्ति एदासिमणुभागस्स अण्णोण्णं पेक्खियूणाविभागपडिच्छेदुत्तरकमवड्डीए विणा जमणंतगुणवड्डीए पुव्वापुव्वफद्दयाणुभागादो अणंत

अब मूल गाथाके अन्तिम चरणका अवलम्बन करके चौथे अर्थकी विभाषा करते हुए उसमे प्रतिबद्ध तीसरी भाष्यगाथाका अवसर उपस्थित करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* 'लक्खणमध किं च किट्टीए—कृष्टिका क्या लक्षण है' इस अर्थमें एक भाष्यगाथा आयी है।

§ १५५ 'कृष्टिका क्या लक्षण है' इस मूल गाथाके बीजपदस्वरूप चौथे चरणमे निबद्ध चौथे अर्थकी विभाषा करनेके लिए एक भाष्यगाथा है उसकी यह समुत्कीर्तना जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

(११२) लोभ सञ्ज्वलनकी जघन्य कृष्टिसे लेकर क्रोध सञ्ज्वलनकी सबसे पश्चिम पद अर्थात् विलोमक्रमसे अन्तकी उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक चारों सञ्ज्वलनोंके अनुभागमें गुणश्रेणि उत्तरोत्तर अनन्तगुणी होती है यह कृष्टिका लक्षण है ॥१६५॥

§ १५६ कृष्टिके लक्षणका कथन करनेके लिए अवतीर्ण हुई इस तीसरी भाष्यगाथाके अर्थका खुलासा करते हैं। वह जैसे—'गुणसेढि अणंतगुणा' गुण अर्थात् गुणकारकी जो श्रेणि अर्थात् पंक्ति है वह अनन्तगुणी होती है। परन्तु किस विषयमें यह गुणश्रेणि अनन्तगुणी होती है ऐसी पृच्छा होनेपर कहते हैं—'लोभादी कोधपच्छिमपदादो' अर्थात् लोभकी जघन्य कृष्टिसे लेकर क्रोध सञ्ज्वलनकी सबसे पश्चिम (पीछेकी) उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक क्रमसे अवस्थित चारों सञ्ज्वलन कर्मोंके अनुभागमें यह अनन्तगुणी गुणश्रेणि जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'किट्टीए लक्खणमेदं' अर्थात् लोभ संज्वलनकी जघन्य कृष्टिसे लेकर क्रोधसंज्वलनकी उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक इन सब कृष्टियोंका जो अनुभाग एक-दूसरी कृष्टिको देखते हुए अविभागप्रतिच्छेदोंकी उत्तरोत्तर क्रमवृद्धिके बिना अनन्तगुणी वृद्धिरूपसे तथा पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोंके अनुभागसे

गुणहाणीए परिणमिय समवट्ठाण तमेदं किट्टीए लक्खणमवहारेयव्वमिदि वुत्त होइ।

संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमिमा परूवणा कीरदे। त जहा—फद्दयलक्खणं णाम अणंता परमाणू जहण्णाविभागपडिच्छेदपरिणामेण परिणदा लब्भंति, सा एगा वग्गणा होदि। पुणो पुव्विल्लकम्मपरमाणूहितो एगाविभागपडिच्छेदब्भहिया अणता कम्मपदेसा लब्भंति, सा बिदिया वग्गणा णाम भवदि। जहण्णवग्गणादो पुण एसा वग्गणा एयवग्गणविसेसमेत्तेण परिहीणा होदि। एवमेगेगाविभागपडिच्छेदेण अहिया होदूण कम्मपदेसा च जहाकम हीयमाणा होदूण उवरिम-उवरिमवग्गणासु गच्छंति जाव अभवसिद्धिएहितो अणतगुण सिद्धाणतभागमेत्तद्धाण गतूण अविभागपडिच्छेदुत्तरकमवड्ढीए पज्जवसाणं जाद त्ति। तदो एदम्मि उद्देसे अविभाग-पडिच्छेदुत्तरा अण्णा वग्गणा ण लब्भदि त्ति तत्थेदं फद्दय होदि। पुणो सेसकम्मपदेसपुजादो अण्णमेग परमाणुमादेसजहण्णसत्तिसजुत्तमणतसरिसधणियपरमाणूहि सह गद घेत्तूणा विभागपडिच्छेदे कदे सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणमतर होदूण पुव्विल्लजहण्णफद्दयादिवग्गणादो बिदियफद्दयादिवग्गणा दुगुणसत्तिजुत्ता समुप्पज्जदि। एवमेदीए दिसाए णेदव्व जाव उक्कस्स-

---

अनन्तगुणहानिरूपसे परिणमन करके अवस्थित है वह यह कृष्टिका लक्षण है ऐसा अवधारण करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

विशेषार्थ—इस भाष्यगाथामें कृष्टिके ऊपर स्पष्ट प्रकाश डाला गया है। उसे स्पष्ट करते हुए परस्पर कृष्टियोमे उत्तरोत्तर अनन्तगुणवृद्धिको दिखलानेके लिए पश्चादानुपूर्वीका सहारा लिया गया है। लोभ संज्वलनकी जो सबसे जघन्य कृष्टि है उसमे सबसे कम अनुभाग होता है। उससे उपान्त्य कृष्टिमें अनन्तगुणा अनुभाग पाया जाता है। इसी प्रकार लोभसज्वलनकी सबसे उत्कृष्ट कृष्टि तक प्रत्येक कृष्टिमे क्रमसे उत्तरोत्तर अनन्तगुणा-अनन्तगुणा अनुभाग जानना चाहिए। उससे माया मान और क्रोधकी उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक यह प्रक्रिया समझ लेनी चाहिए। परन्तु पूर्व और अपूर्व स्पर्धकोके अनुभागमे अविभागप्रतिच्छेदोकी अपेक्षा जैसी क्रमवृद्धि स्वीकार की गयी है एक तो वह क्रमवृद्धि इन कृष्टियोमे घटित नही होती, दूसरे क्रोधसज्वलनकी उत्कृष्ट कृष्टिमे भी जघन्य स्पर्धकके अनुभागसे भी अनन्तगुणा हीन अनुभाग पाया जाता है। इस प्रकार उक्त विधिसे परिणमन करके अवस्थित हुए अनुभागको ही यहाँ पर कृष्टि कहा गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए यह प्ररूपणा करते हैं। वह जैसे, स्पर्धकका लक्षण—अनन्त परमाणु जघन्य अविभाग प्रतिच्छेद परिणामरूप परिणत होकर प्राप्त है। उन सबके समुदायरूप यह एक वर्गणा है। पुन पहलेके कर्मपरमाणुओसे एक अधिक अविभागप्रतिच्छेदवाले अनन्त कर्मप्रदेश प्राप्त होते हैं। यह दूसरी वर्गणा है। किन्तु जघन्य वर्गणासे यह वर्गणा एक वर्गणा विशेषमात्र परमाणुओसे हीन होती है। इस प्रकार एक एक अविभागप्रतिच्छेदरूपसे अधिक होकर और कर्मप्रदेश क्रमसे हीन होकर अभव्योसे अनन्तगुणी और सिद्धोके अनन्तवें भागप्रमाण आगेकी वर्गणाएँ प्राप्त होकर जहाँ अविभागप्रतिच्छेदोकी उत्तर क्रमवृद्धिका अन्त हो जाता है। इस कारण उस स्थानमें एक अधिक अविभागप्रतिच्छेदवाली अन्य वर्गणा नही प्राप्त होती है, अत वहाँ तककी वर्गणाओको मिलाकर एक स्पर्धक होता है। पुन शेष रहे कर्मप्रदेशोके पुंजमेसे आदेशरूप जघन्य शक्तिसे संयुक्त तथा अनन्त सदृश धनवाले परमाणुओके साथ एक परमाणुको ग्रहणकर अविभागप्रतिच्छेद करनेपर सब जीवोसे अनन्तगुणा अन्तर होकर पूर्वके जघन्य स्पर्धककी आदि वर्गणासे दूसरे स्पर्धककी आदि वर्गणा दुनी शक्तिसे युक्त उत्पन्न होती है। इस प्रकार इस विधिसे उत्कृष्ट स्पर्धककी अन्तिम वर्गणाके प्राप्त होने तक यह क्रम जान लेना चाहिए। इस

फद्दयचरिमवग्गणा त्ति। एवं णेदे जत्थ जत्थ अंतरं भवदि तत्थ तत्थ अंतरस्स हेट्ठा फद्दयमिदि गहेयव्वं। तदो एवंविहो अणुभागविण्णासविसेसो फद्दयलक्खणमिदि घेत्तव्वं।

संपहि किट्टीलक्खणे भण्णमाणे जहण्णकिट्टीए सरिसधणियअणंतपरमाणूहिंतो बिदियकिट्टीए अविभागपलिच्छेदुत्तरा होदूण ट्ठिदा कम्मपरमाणवो णत्थि णियमा अणंतगुणाविभागपडिच्छेदसंजुत्ता होदूणच्छंति। एवं चेव बिदियकिट्टिसरिसधणियसव्वाविभागपडिच्छेदपुंजादो तदियकिट्टीए सरिसधणियसव्वाविभागपडिच्छेदपुंजो णियमा अणंतगुणो चेव होदूण चिट्ठदि। पुणो वि अणंतगुणंतरादो एवं चेव होदूण गच्छदि जाव कोधुक्कस्सकिट्टि त्ति। एवमविभागपडिच्छेदुत्तरकमवड्ढीए विणा णियमा अणंतगुणक्कमेण अवट्ठाणं तं किट्टीए लक्खणमिदि घेत्तव्वं।

प्रकार लाते समय जहां जहां अन्तर प्राप्त होता है वहां वहां अन्तरके पूर्वतक स्पर्धक ग्रहण करना चाहिए। इसलिए इस प्रकारका जो अनुभागका विन्यास विशेष होता है वह स्पर्धकका लक्षण है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—प्रकृतमें स्पर्धकके लक्षणपर प्रकाश डालते हुए जो स्पष्टीकरण किया है उसका आशय यह है - पहले ऐसे अनन्त परमाणु लो जिनमेंसे प्रत्येक परमाणुमें सबसे जघन्य अविभाग प्रतिच्छेदोंसे परिणत सदृश अनुभागशक्ति पायी जावे इसका नाम एक वर्गणा है और प्रत्येक परमाणुका नाम वर्ग है। यह सबसे जघन्य शक्तिसे युक्त प्रथम वर्गणा है। पुनः जिसमें एक अधिक अविभागप्रतिच्छेदोंसे परिणत प्रत्येक परमाणु हो ऐसे अनन्त परमाणुके समुदायरूप दूसरी वर्गणा होती है। मात्र इस वर्गणामें पूर्वकी वर्गणासे एक वर्गणाविशेषमात्र परमाणु हीन पाये जाते हैं। इस प्रकार इस विधिसे अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण वर्गणाएं जिसमें होती हैं उसे एक स्पर्धक कहते हैं। इसी प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा अन्तर देकर इसी क्रमसे दूसरा स्पर्धक प्राप्त कर लेना चाहिए। मात्र प्रथम स्पर्धककी आदि वर्गणामें जितने अविभाग प्रतिच्छेद पाये जाते हैं उनसे दूसरे स्पर्धककी आदि वर्गणामें दूने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं। तथा आगे भी यही क्रम जान लेना चाहिए।

अब कृष्टिका लक्षण कहने पर जघन्य कृष्टिके सदृश धनवाले अनन्त परमाणुओंसे दूसरी कृष्टिमें एक अधिक अविभागप्रतिच्छेदोंसे युक्त कर्म परमाणु नहीं होते, किन्तु नियमसे अनन्तगुण अविभागप्रतिच्छेदरूप शक्तिसे संयुक्त परमाणु होते हैं। इसी प्रकार दूसरी कृष्टिके सदृश धनवाले सब अविभागप्रतिच्छेद पुंजसे तीसरी कृष्टिमें सदृश धनवाले सब अविभागप्रतिच्छेदोंका पुंज नियमसे अनन्तगुणा होकर ही अवस्थित है। इसके आगे भी क्रोधकी उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक आगे आगे इसी प्रकार होकर सब कृष्टियां प्राप्त होती हैं। इस प्रकार एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेदका क्रम वृद्धिके बिना जिनमें नियमसे अनन्तगुणेके क्रमसे अविभागप्रतिच्छेदोंका सद्भाव पाया जाता है वह कृष्टिका लक्षण है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—एक स्पर्धककी जितनी वर्गणाएं होती हैं उनकी प्रत्येक वर्गणामें उत्तरोत्तर एक-एक अधिक प्रतिच्छेदोंके समुदायरूप परमाणुपुंज पाया जाता है। जब कि कृष्टियोंकी यह स्थिति नहीं है। किन्तु लोभ संज्वलनकी जो जघन्य कृष्टि है उसके प्रत्येक परमाणुमें जितने अविभागप्रतिच्छेदरूप अनुभागशक्ति होती है उससे दूसरी कृष्टिके प्रत्येक परमाणुमें अनन्तगुणे अविभागप्रतिच्छेद रूप अनुभागशक्ति होती है। यह क्रम लोभ, माया, मान और क्रोधके क्रमसे क्रोधकी उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक समझ लेना चाहिए। यही स्पर्धक और कृष्टिके लक्षणमें अन्तर है।

§ १५७ संपहि एवंविहमेविस्से तदियभासगाहाए अत्थ विहासेमाणो उवरिमविहासा णथमाह—

* विहासा ।

§ १५८ सुगम ।

* लोभस्स जहण्णिया किट्टी अणुभागेहिं थोवा । विदियकिट्टी अणुभागेहिं अणत-गुणा । तदिया किट्टी अणुभागेहिं अणतगुणा । एवमणंतराणतरेण सव्वत्थ अणंत-गुणा जाव कोधस्स चरिमकिट्टि त्ति ।

§ १५९ कुदो एव ? किट्टीगदाणुभागस्स पुव्वाणुपुव्वीए अणंतगुणवड्ढि मोत्तूण पयारंतरा सभवादो । संपहि किट्टीगदाणुभागस्स सत्थाणे अणतगुणवड्ढिदस्स वि फद्दयाणुभाग पेक्खियूणाणंत-गुणहीणत्तमेवेत्ति इममत्थविसेस जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* उक्कस्सिया वि किट्टी आदिफद्दयआदिवग्गणाए अणतभागो ।

§ १६० सव्वुक्कस्सिया वि कोहसजलणचरिमकिट्टी अविभागपडिच्छेदेहिं अपुव्वफद्दयादि वग्गणाए अणतभागमेत्तो चेव होदि । तत्तो अणतगुणहाणीए परिणमियूण किट्टीगदाणुभागस्सा वट्ठाणणियमदसणादो । तदो चेव एदासिं किट्टीसण्णा वि अत्थाणुगया दट्ठव्वा त्ति जाणावणट्ठमुत्तर सुत्त भणइ—

§ १५७ अब इस प्रकार इस तीसरी भाष्यगाथाके अर्थका स्पष्टीकरण करके आगेके विभाषाग्रन्थको कहते हैं—

* अब उक्त भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं ।

§ १५८ यह सूत्र सुगम है ।

* लोभ सज्वलनकी जघन्य कृष्टि अनुभागकी अपेक्षा सबसे कम है । दूसरी कृष्टि अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणी है । तीसरी कृष्टि अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणी है । इस प्रकार क्रोध सज्वलनकी उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक सर्वत्र कृष्टियाँ अनन्तर अनन्तररूपसे अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हुई चली गयी हैं ।

§ १५९ शका—ऐसा किस कारणसे है ।

समाधान—क्योकि कृष्टियोके अनुभागमें पूर्वानुपूर्वीसे अनन्तगुणी वृद्धिको छोडकर अन्य प्रकार सम्भव नही है । इस प्रकार यद्यपि कृष्टियोका अनुभाग स्वस्थानमें उत्तरोत्तर अनन्तगुणी वृद्धिरूप होकर अवस्थित है तो भी स्पर्धकमे रहनेवाले अनुभागको देखते हुए कृष्टिगतअनुभाग अनन्तगुणा हीन ही है इस प्रकार इस अर्थ विशेषका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* किन्तु सज्वलन क्रोधकी उत्कृष्ट भी कृष्टि प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अनुभागकी अपेक्षा अनन्तवें भागप्रमाण है ।

§ १६० सज्वलन क्रोधकी सबसे उत्कृष्ट अन्तिम कृष्टि भी अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा अपूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण ही होती है । यही कारण है कि कृष्टिगत अनुभाग अनन्त गुणहानिरूपसे परिणत होकर अवस्थित है ऐसा नियम देखा जाता है । और इसीलिए इसकी कृष्टि सज्ञा भी अर्थानुगत—सार्थक जाननी चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* एव किट्टीसु थोवो अणुभागो ।

§ १६१ सुगम ।

* किस कम्म कद जम्हा तम्हा किट्टी ।

§ १६२ जम्हा सजलणाणमणुभागसतकम्म किस थोवयर कदं तम्हा एदस्साणुभागस्स किट्टीसण्णा जादा त्ति भणिद होइ। 'कृश तनूकरण' इत्यस्य धातो कृशिशब्दस्य व्युत्पत्त्यव लम्बनात् ।

* एद लक्खण ।

§ १६३ एवमणतरपरूविद किट्टीण लक्खणमिदि वुत्त होइ। एव पढमम्लगाहाए तिण्ह भासगाहाणमत्थविहासा समत्ता ।

* एत्तो विदियमूलगाहा ।

§ १६४ पढममूलगाहाए विहासिय समत्ताए तदणंतरमेत्तो विदियमूलगाहा विहासियव्वा त्ति वुत्त होदि ।

* त जहा ।

§ १६५ सुगम ।

(११३) कदिसु च अणुभागेसु च ट्ठिदीसु वा केत्तियासु का किट्टी ।
सव्वासु वा ट्ठिदासु च आहो सव्वासु पत्तेय ॥१६६॥

* इस प्रकार कृष्टियोमे अनुभाग सबसे अल्प होता है ।

§ १६१ यह सूत्र सुगम है ।

* यत संज्वलन कर्म अनुभागकी अपेक्षा कृश किया गया है अत उसका नाम कृष्टि है ।

§ १६२ यत चारो सज्वलनोका अनुभागसत्कर्म कृश अर्थ सबसे अल्प किया गया है इसलिए इस अनुभागको कृष्टि सज्ञा हो गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है कृशधातु सूक्ष्म करने रूप अर्थमे आयी है। इस प्रकार इस धातुसे व्युत्पादित कृश शब्दका अवलम्बन लेकर कृष्टि शब्द निष्पन्न किया गया है ।

* यह कृष्टिका लक्षण है ।

§ १६३ यह अनन्तर पूर्व कहा गया कृष्टियोका लक्षण है यह उक्त वचनका तात्पर्य है। इस प्रकार प्रथम मूलगाथासम्बन्धी तीन भाष्यगाथाओके अर्थकी विभाषा समाप्त हुई ।

* इससे आगे दूसरी मूल गाथाकी विभाषा की जाती है ।

§ १६४ प्रथम मूल गाथाकी विभाषा समाप्त होनेपर तदनन्तर दूसरी मूलगाथाकी विभाषा करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* वह जैसे ।

§ १६५ यह सूत्र सुगम है ।

* ११३ कितने अनुभागोंमे और कितनी स्थितियोमे कौन कृष्टि अवस्थित है। क्या सब स्थितियोमे सब कृष्टियाँ सम्भव हैं या सब स्थितियोमेसे प्रत्येक स्थितिपर एक-एक कृष्टि सम्भव है ॥१६६॥

§ १६६ किमट्ठमेसा विदियमूलगाहा समोइण्णा त्ति चे ? वुच्चदे—किट्टीणं ठिदि अणुभागेसु अवट्ठाणविसेसगवेसणट्ठमेसा गाहा समोइण्णा। तं जहा—'कदिसु च अणुभागेसु च, एवं भणिदे केत्तियमेत्तेसु अणुभागाविभागपडिच्छेदेसु कदमा किट्टी वट्टदे, किं सखेज्जेसु आहो असखेज्जेसु किं वा अणतेसु त्ति पुच्छा कदा होदि। एसा च पुच्छा सगहकिट्टीसु तदवयवकिट्टीसु च जोजेयव्वा। 'ट्ठिदीसु वा केत्तियासु का किट्टी' एवं भणिदे केत्तियमेत्तीसु वा ट्ठिदीसु कदमा किट्टी होदि, किमेक्किस्से दोसु तिसु वा एवं गतूण किं सखेज्जासु असखेज्जासु वा त्ति पुच्छा कदा होदि। एत्थ वि सगहकिट्टीण तदवयवकिट्टीण च पादेक्कमेसो पुच्छाहिसबधो जोजेयव्वो।

एवमेदेण सुत्तावयवेण णिद्दिट्ठाए ट्ठिदिविसयपुच्छाए पुणो वि विसेसियूण परूवणट्ठं गाहापच्छद्धमोइण्ण—'सव्वासु वा ट्ठिदीसु च०' चदुण्हं सजलणाण जहासभव पढमविदिय किट्टीट्ठिदीसु सभवतीसु तत्थ किं सव्वासु चेव तदवयट्ठिदीसु अविसेसेण सव्वा किट्टी सभवइ, आहो ण सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वासि किट्टीणमत्थि सभवो। किंतु एक्केक्किस्से ट्ठिदीए एक्केक्का चेव किट्टी होदूण पादेक्कमसकिण्णसरूवेण तत्थ तदवट्ठाणसभवादो त्ति। एवमेसा गाहा पुच्छासुत्त होदूण सेसासेसणिण्णयपरूवणाए भासगाहाए पडिबद्धाए बीजपदभावेणावट्ठिदा दट्ठव्वा। सपहि एदीए सुत्तगाहाए सूचिदत्थविहासण कुणमाणो चुण्णिसुत्तयारो तत्थ पडिबद्धाण दोण्हं भासगाहाणमत्थित्त परूवणट्ठमुत्तर पबधमाह—

* एदिस्से वे भासगाहाओ।

§ १६६ शंका—यह दूसरी मूल गाथा किस लिए अवतीर्ण हुई है ?

समाधान कहते हैं—स्थितियोंमें और अनुभागोमे कृष्टियोके अवस्थानविशेषका अनुसन्धान करनेके लिए यह गाथा अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'कदिसु अणुभागेसु च' ऐसा कहनेपर अनुभागके कितने अविभागप्रतिच्छेदोमें कौन कृष्टि अवस्थित है क्या सख्यात अविभागप्रतिच्छेदोमें या असंख्यात अविभागप्रतिच्छेदोमे या अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोमे इस प्रकार यह पृच्छा की गयी है। और यह पृच्छा सग्रहकृष्टियोमे और उनकी अवयव कृष्टियोमे योजित कर लेनी चाहिए। 'ट्ठिदीसु वा केत्तियासु का किट्टी' ऐसा कहनेपर कितनी स्थितियोमे कौन कृष्टि अवस्थित है ? क्या एक स्थितिमें, दो स्थितियोमे या तीन स्थितियोमें इस प्रकार जाकर क्या संख्यात स्थितियोमें या असख्यात स्थितियोमे यह पृच्छा की गयी है। यहाँपर भी सग्रह कृष्टियो और उनकी अवयव कृष्टियोमेसे प्रत्येकके साथ इस पृच्छाका सम्बन्ध कर लेना चाहिए।

इस प्रकार इस सूत्र वचन द्वारा स्थितिविषयक पृच्छाके निर्दिष्ट किये जानेपर फिर भी विशेष कथन करनेके लिए गाथाका उत्तरार्ध अवतीर्ण हुआ है—'सव्वासु वा ट्ठिदीसु च०' संज्वलनोकी यथासम्भव कृष्टिसम्बन्धी प्रथम स्थिति और द्वितीयस्थिति सम्भव होनेपर उनमेंसे उनकी सभी अवयव स्थितियोमें भेद किये बिना क्या सब कृष्टियाँ सम्भव हैं या सब स्थितियोंमें सब कृष्टियाँ सम्भव नहीं हैं, किन्तु एक-एक स्थितिमें एक एक ही होकर कृष्टि रहती है, क्योकि अलग-अलग असकीर्णरूपसे ही उन स्थितियोमें उन कृष्टियोका अवस्थान सम्भव है। इस प्रकार यह गाथा पृच्छासूत्र होकर भाष्यगाथासे प्रतिबद्ध शेष समस्त निर्णयकी प्ररूपणाके द्वारा बीजपद रूपसे अवस्थित जाननी चाहिए। अब इस सूत्रगाथा द्वारा सूचित हुए अथका विशेष व्याख्यान करते हुए चूर्णिसूत्रकार उससे सम्बन्ध रखनेवाली दो भाष्यगाथाओके अस्तित्वका कथन करनेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* इस मूल गाथाकी दो भाष्य गाथाएँ हैं।

§ १६७ सुगमं।

* मूलगाहापुरिमद्धे एक्का भासगाहा।

§ १६८ मूलगाहापुरिमद्धे पडिबद्धा तत्थ इमा पढमा भासगाहा वट्ठव्वा त्ति भणिदं होदि।

* तिस्से समुक्कित्तणा।

§ १६९ सुगमं।

(११४) किट्टी च ट्ठिदिविसेसेसु असंखेज्जेसु णियमसा होदि।
णियमा अणुभागेसु च होदि हु किट्टी अणंतेसु ॥१६७॥

§ १७० संपहि मूलगाहा पुरिमद्धविहासणट्ठमोइण्णाए एदिस्से पढमभासगाहाए अत्थ परूवणं कस्सामो। तं जहा—'किट्टी च०' किट्टी खलु ट्ठिदिविसेसेसु ठिदिभेदेसु असंखेज्जेसु असंखेज्जपमाणावच्छिण्णेसु णियमसा णिच्छयेणेव होदि, चदुण्हं संजलणाणं विदियट्ठिदी संखेज्जा वलियपमाणा अत्थि, तत्थ एक्केक्किस्से ट्ठिदीए अप्पप्पणो सव्वासिमेव संगहकिट्टीणं तदवयवकिट्टीणं च संभवे पडिसेहो णत्थि, तेण कारणेण सव्वा किट्टी सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु णियमा समवट्ठिदा वट्ठव्वा त्ति वुत्तं होइ। एत्थ वेदिज्जमाणसंगहकिट्टीए पढमट्ठिदीए वि सव्वासु ट्ठिदीसु संभवो एदेणेव सुत्तावयवेण संगहिदो त्ति वट्ठव्वो।

'णियमा अणुभागेसु य' एवं भणिदे एक्केक्का संगहकिट्टी तदवयवकिट्टी वा अणंतसंखाव च्छिण्णेसु अणुभागाविभागपडिच्छेदेसु वट्टदि त्ति घेत्तव्वं। किं कारणं? एक्केक्किस्से किट्टीए अणंत

---

§ १६७ यह सूत्र सुगम है।

* मूल गाथाके पूर्वार्धमें सम्बन्ध रखनेवाली एक भाष्य गाथा है।

§ १६८ मूलगाथाके पूर्वार्धसे सम्बन्ध रखनेवाली प्रकृतमें यह प्रथम भाष्यगाथा है।

* अब उसकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ १६९ यह सूत्र सुगम है।

* ११४ असंख्यात स्थितिविशेषोंमें सभी कृष्टियाँ नियमसे होती हैं। उसी प्रकार अनन्त अनुभागोंमें प्रत्येक संग्रह कृष्टि और अवयव कृष्टि नियमसे होती है ॥१६७॥

§ १७० अब मूल गाथाके पूर्वार्धकी विभाषा करनेके लिए अवतीर्ण हुई इस प्रथम गाथाके अर्थका कथन करेंगे। वह जैसे—'किट्टी च०' प्रत्येक कृष्टि 'असंखेज्जेसु' असंख्यात संख्यासे युक्त 'ट्ठिदिविसेसेसु' स्थितिभेदोंमें 'णियमसा' नियमसे होती है। चारों संज्वलनोंकी द्वितीय स्थिति संख्यात आवलिप्रमाण होती है। उनमेंसे एक एक स्थितिमें अपनी अपनी सभी संग्रह कृष्टियाँ और उनकी अवयव कृष्टियाँ सम्भव हैं इसमें निषेध नहीं है। इस कारण सभी कृष्टियाँ सभी स्थिति विशेषोंमें नियमसे अवस्थित जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर वेदी जानेवाली संग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थिति भी सभी स्थितियोंमें सम्भव है इस बातका इसी सूत्रवचन द्वारा संग्रह कर लिया गया जानना चाहिए।

विशेषार्थ—जिस समय जिस संज्वलन कषायका उदय होता है उस समय उसकी प्रथम स्थिति होकर उसका उदय होता है। अन्य कालमें वह मात्र द्वितीय स्थितिमें ही अवस्थित रहता है। शेष कथन सुगम है।

'णियमा अणुभागेसु य' ऐसा कहनेपर एक एक संग्रह कृष्टि और उनकी अवयव कृष्टि अनुभागके अनन्त संख्यासे युक्त अविभागप्रतिच्छेदोंमें रहती है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए,

सरिसधणियपरमाणुसमूहारद्धाए परमाणुं पडि अणंताणमविभागपडिच्छेदाणमुवलंभादो। तदो जहण्णिया वि किट्टी अविभागपडिच्छेदगणणं पेक्खियूण अणंतसंखावच्छिण्णाणुभागविसेस मवट्ठिदा। एवं सेसाओ वि किट्टीओ वट्टव्वाओ त्ति गाहापच्छद्धे सुत्तत्थसमुच्चओ। संपहि एवं विहमेदिस्से गाहाए अत्थं विहासेमाणो चुण्णिसुत्तयारो विहासागंथमुवरिमं भणइ—

* विहासा।

§ १७१ सुगमं।

* कोधस्स पढमसंगहकिट्टिं वेदेंतस्स तिस्से संगहकिट्टीए एक्केक्का किट्टी विदियट्ठिदीसु सव्वासु पढमट्ठिदीसु च उदयवज्जासु एक्केक्का किट्टी सव्वासु ट्ठिदीसु।

§ १७२ एदस्स सुत्तस्सत्थो वुच्चदे। तं जहा—कोहपढमसंगहकिट्टिं वेदेमाणस्स तदवत्थाए कोहसंजलणस्स पढम-विदियट्ठिदिभेदेण दो ट्ठिदीओ भवंति। तत्थ ताव विदियट्ठिदीए सव्वासु अवयवट्ठिदीसु तिस्से वेदिज्जमाणकोहपढमसंगहकिट्टीए एक्केक्का अवयवकिट्टी अविसेसेण दीसइ, तत्थ तदवट्ठाणस्स पडिसेहाभावादो। पढमट्ठिदीए पुण उदयवज्जासु सव्वासु ट्ठिदीसु तिस्से संगह-किट्टीए एक्केक्का अवयवकिट्टी समुवलब्भदे। एत्थ 'एक्केक्का किट्टी' त्ति भणिदे कोहसंजलणस्स जहण्णिया किट्टी एदासु णिरुद्धट्ठिदीसु भवदि। एवं विदियकिट्टी तदियकिट्टी च जाव पढमसंगह किट्टीए चरिमकिट्टि त्ति एदाओ सव्वाओ किट्टीओ पादेक्कं तत्थ समुवलब्भंति त्ति वुत्तं होइ।

क्योंकि सदृश धनवाले परमाणुसमूहसे निष्पन्न हुई एक एक कृष्टिके प्रत्येक परमाणुके प्रति अनन्त अविभागप्रतिच्छेद उपलब्ध होते हैं, इसलिए जघन्य भी कृष्टि अविभागप्रतिच्छेदोंकी गणनाको देखते हुए अनन्त संख्यासे युक्त अनुभाग विशेषरूपसे अवस्थित है। इसी प्रकार शेष कृष्टियोंके विषयमें भी जानना चाहिए। इस प्रकार यह गाथाके उत्तरार्धका समुच्चयरूप अर्थ है। अब इस गाथाके इस प्रकारके अर्थकी विभाषा करते हुए चूर्णिसूत्रकार आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ १७१ यह सूत्र सुगम है।

* क्रोध संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले जीवके उस संग्रह कृष्टिकी एक एक अवयव कृष्टि सब द्वितीय स्थितियोंमें और उदय रहित प्रथम स्थितियोंमें इस प्रकार एक एक अवयव कृष्टि सब स्थितियोंमें अवस्थित रहती है।

§ १७२ अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह जैसे—क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले जीवके उस अवस्थामें क्रोध संज्वलनकी प्रथम और द्वितीय स्थितिके भेदसे दो स्थितियाँ होती हैं। उनमेंसे सर्वप्रथम द्वितीय स्थितिकी सब अवयव स्थितियोंमें उस वेद्यमान क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी एक-एक अवयव कृष्टि अविशेषरूपसे दिखाई देती है, क्योंकि उन स्थितियोंमे उनके अवस्थानका निषेध नहीं है। परन्तु प्रथम स्थितिकी उदयरहित सब स्थितियोंमे उस संग्रह कृष्टिकी एक एक अवयव कृष्टि उपलब्ध होती है। यहाँपर 'एक्केक्का किट्टी' ऐसा कहनेपर क्रोध संज्वलनकी जघन्य अवयव कृष्टि इन विवक्षित स्थितियोंमें पायी जाती है। इसी प्रकार दूसरी अवयव कृष्टि और तीसरी अवयव कृष्टिसे लेकर प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तिम अवयव कृष्टि तक जानना चाहिए। ये सब कृष्टियाँ अलग अलग उन स्थितियोंमें उपलब्ध होती हैं

संपहि उदयट्ठिदीए किमट्ठमेत्थ परिवज्जण कीरदे ? को वा तत्थ विसेससंभवो त्ति आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* उदयट्ठिदीए पुण वेदिज्जमाणियाए संगहकिट्टीए जाओ किट्टीओ तासिमसंखेज्जा भागा ।

§ १७३ विवक्खिदसंगहकिट्टीए हेट्ठिमोवरिमासंखेज्जभागं मोत्तूण मज्झिमकिट्टीसरूवेणेव उदयाणुभागो परिणमदि त्ति एदेण कारणेण उदयट्ठिदीए वेदिज्जमाणियाए संगहकिट्टीए अवयवकिट्टीणमसंखेज्जा भागा संभवंति त्ति सुत्तणेदेण णिद्दिट्ठं ।

§ १७४ संपहि सेसाणमवेदिज्जमाणियाणमेक्कारसण्हं पि संगहकिट्टीणमेत्थि पढमट्ठिदिसंबंधाभावादो तासिमेक्केक्का किट्टी विदियट्ठिदीए चेव सव्वासु ट्ठिदीसु दट्ठव्वा, ण पढमट्ठिदीए त्ति इममत्थविसेसं जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* सेसाणमवेदिज्जमाणिगाणं संगहकिट्टीणमेक्केक्का किट्टी सव्वासु विदियट्ठिदीसु, पढमट्ठिदीसु णत्थि ।

§ १७५ गयत्थमेदं सुत्तं ।

यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब उदय स्थितिका यहाँपर किसलिए निषेध किया है अथवा उसमे क्या विशेष सम्भव है ऐसी आशका होनेपर निर्णय करनेके लिए आगेके सूत्रका कहते हैं—

* किन्तु वेद्यमान संग्रह कृष्टिकी जितनी अवयव कृष्टियाँ हैं उनका असंख्यात बहुभाग उदय स्थितिमे पाया जाता है।

§ १७३ विवक्षित संग्रह कृष्टिके अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भाग प्रमाण अवयव कृष्टियोंको छोड़कर मध्यकी जो असंख्यात बहुभागप्रमाण अवयव कृष्टियाँ हैं उस रूपसे ही उदयरूप अनुभाग परिणत होता है, इस कारण वेद्यमान संग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टियोंका असंख्यात बहुभाग उदय स्थितिमे सम्भव है यह बात इस सूत्र द्वारा निर्दिष्ट की गयी है।

विशेषार्थ—तात्पर्य यह है कि क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिका उदय होनेपर न तो असंख्यातवें भागप्रमाण अधस्तन अवयव कृष्टियाँ अपने स्वरूपसे उदयको प्राप्त होती है और न ही असंख्यातवें भाग प्रमाण उपरिम अवयव कृष्टियाँ अपने स्वरूपसे उदयको प्राप्त होती हैं। किन्तु मध्यकी असंख्यात बहुभागप्रमाण अवयव कृष्टियाँ ही उदयरूपसे परिणत होती हैं इसलिए पूर्व सूत्रमे उदयस्थितिको छोड़कर यह वचन कहा है। शेष कथन सुगम है।

§ १७४ अब अवेद्यमान शेष ग्यारह संग्रह कृष्टियोंका प्रथम स्थितिके साथ सम्बन्ध न होनेसे उनकी एक एक अवयव कृष्टि द्वितीय स्थितिकी ही सब स्थितियोमे जानना चाहिए, प्रथम स्थितिमे नही इस प्रकार इस अर्थ विशेषका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते है—

* शेष अवेद्यमान ग्यारह संग्रह कृष्टियोंकी एक एक अवयव कृष्टि द्वितीय स्थितिकी सब अवान्तर स्थितियोमे पायी जाती है, किन्तु प्रथम स्थितिकी अवान्तर स्थितियोमे नही पायी जाती।

§ १७५ यह सूत्र गतार्थ है।

§ १७६ एवमेत्तिएण पबंधेण 'ट्ठिदीसु वा केत्तियासु का किट्टी' त्ति एदं मूलगाहावयव मस्सियूण 'किट्टीसु च ट्ठिदिविसेसेसु असंखेज्जेसु०' त्ति एदस्स पढमभासगाहापुव्वद्धस्स विहासणं काढूण संपहि 'कदिसु च अणुभागेसु च' इच्चेदं मूलगाहावयवमस्सियूण 'णियमा अणुभागेसु च अणंतेसु' त्ति एदस्स भासगाहापच्छद्धस्स विहासणं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* एक्केक्का किट्टी अणुभागेसु अणंतेसु ।

§ १७७ एक्केक्का संगहकिट्टी तदवयवकिट्टी वा णियमा अणंतेसु अणुभागेसु वट्टदि त्ति वुत्तं होइ । एदेण संखेज्जासंखेज्जाणुभागेसु किट्टीण संभवो णत्थि त्ति जाणाविदं, सव्वजहण्णियाए किट्टीए सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणमेत्ताणमविभागपडिच्छेदाणमुवलंभादो । संपहि एक्केक्का किट्टी असंखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु वट्टदि त्ति वुत्ते जहा सव्वासिं किट्टीणं सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु अवट्ठाणसंभवो जादो एवमेत्थ वि एक्केक्का किट्टी अणंतेसु अणुभागेसु वट्टदि त्ति एदेण वयणेण एक्किस्से णिरुद्धकिट्टीए अप्पणो अणुभागेसु सेसकिट्टीणमणुभागेसु च संभवो पसज्जदि त्ति एवंविहविप्पडिवत्तीए णिरायरणट्ठमुत्तरसुत्तं भणइ—

* जेसु पुण एक्का ण तेसु विदिया ।

विशेषार्थ—क्रोध संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदनके समय शेष ग्यारह संग्रह कृष्टियों सम्बन्धी अवान्तर कृष्टियोंका वेदन नहीं होता और इसलिए तत्सम्बन्धी द्वितीय स्थितिमेंसे प्रदेशपुंजका प्रथम स्थितिके साथ सम्बन्ध नहीं पाया जाता । इसी कारण प्रकृतमें उक्त ग्यारह संग्रह कृष्टियोंसम्बन्धी प्रदेशपुंजका प्रथम स्थितिमें निषेध किया है ।

§ १७६ इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा 'ट्ठिदीसु वा केत्तियासु का किट्टी' इस प्रकार मूल गाथाके इस वचनका आश्रय कर 'किट्टी च ट्ठिदिविसेसेसु असंखेज्जेसु०' इस प्रथम भाष्यगाथा सम्बन्धी पूर्वार्धकी प्ररूपणा कर अब 'कदिसु अणुभागेसु च' मूलगाथाके इस वचनका आश्रय कर 'णियमा अणुभागेसु च अणंतेसु०' भाष्यगाथासम्बन्धी इस उत्तरार्धकी प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* एक एक संग्रह कृष्टि अनन्त अनुभागोंमें रहती है ।

§ १७७ एक एक संग्रह कृष्टि अथवा उनकी अवयव कृष्टि नियमसे अनन्त अनुभागोंमें रहती है । इस वचन द्वारा संख्यात और असंख्यात अनुभागोंमें कृष्टियाँ सम्भव नहीं हैं इस बातका ज्ञान करा दिया है, क्योंकि सबसे जघन्य कृष्टिमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे अविभागप्रतिच्छेद पाये जाते हैं । अब एक एक कृष्टि असंख्यात स्थितिविशेषोंमें रहती है ऐसा कहनेपर जिस प्रकार सब कृष्टियोंका सब स्थिति विशेषोंमें अवस्थान सम्भव हो जाता है इसी प्रकार प्रकृतमें भी 'एक-एक कृष्टि अनन्त अनुभागोंमें रहती है' इस प्रकार इस वचनसे एक विवक्षित कृष्टिका अपने-अपने अनुभागोंमें जिस प्रकार रहना सम्भव है उसी प्रकार शेष कृष्टियोंके अनुभागोंमें भी रहना सम्भव प्राप्त होता है इस प्रकार इस तरहकी विप्रतिपत्तिका निराकरण करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* किन्तु जिन अनुभागोंमें एक कृष्टि रहती है उनमें दूसरी कृष्टि नहीं रहती ।

§ १७८ जेसु पुण अणुभागेसु एक्का णिरुद्धकिट्टी वट्टदे ण तेसु चेवाणुभागेसु अण्णा किट्टी वट्टदे। किंतु तत्तो भिण्णसहावेसु चेवाणुभागेसु वट्टदि त्ति घेत्तव्वं, किट्टीगदाणुभागस्स जहण्ण किट्टिप्पहुडि अणंतगुणवड्ढीए वड्ढिदस्स परोप्परपरिहारेण समवट्ठाणणियमदंसणादो। तम्हा ण तासिमणुभागस्स अण्णोण्णविसयसंकरप्पसंगो त्ति एसो एदस्स भावत्थो।

§ १७९. एवमेत्तिएण पबंधेण पढमभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि बिदियभासगाहाए समुक्कित्तणं कुणमाणो चुण्णिसुत्तयारो इदमाह—

* बिदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ १८० सुगमं।

(११५) सव्वाओ किट्टीओ बिदियट्ठिदीए दु होंति सव्विस्से।
जं किट्टिं वेदयदे तिस्से अंसो च पढमाए ॥१६८॥

§ १८१ एसा बिदियभासगाहा मूलगाहाए पच्छद्धविहासणट्ठमोइण्णा। तं जहा—मूलगाहापच्छद्धे किं सव्वासु ट्ठिदीसु एक्केक्का किट्टी होदि आहो ण होदि त्ति पुच्छा णिद्दिट्ठा। संपहि तहा पयट्टाए पुच्छाए पढमबिदियट्ठिदिभेदविवक्खं कादूण तदवयवट्ठिदीसु किट्टीणमवट्ठाणभेदेण सरूवेण

§ १७८ परन्तु जिन अनुभागोंमें एक विवक्षित कृष्टि रहती है उन्हीं अनुभागोंमें अन्य कृष्टि नहीं रहती। किन्तु उस अनुभागसे भिन्न स्वभाववाले ही अनुभागोंमें वह दूसरी कृष्टि रहती है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक कृष्टिका अनुभाग जघन्य कृष्टिसे अनन्तगुणवृद्धि रूप वृद्धिको प्राप्त हुआ है, इसलिए परस्परके परिहाररूपसे ही कृष्टियोंमें अनुभागके अवस्थानका नियम देखा जाता है। इसलिए उन कृष्टियोंके अनुभागके विषयमें परस्पर संकरका प्रसंग नहीं प्राप्त होता इस प्रकार यह इस सूत्रका भावार्थ है।

विशेषार्थ—लोभ संज्वलनकी जो जघन्य कृष्टि है उसमें जो अनुभाग अर्थात् (फलदान शक्ति) पाया जाता है उससे दूसरी कृष्टिमें अनन्त गुणवृद्धिको लिये हुए अन्य ही अनुभाग (फलदानशक्ति) पाया जाता है। आशय यह है कि कृष्टियोंका विभागीकरण ही अनुभागभेदसे किया गया है, इसलिए उक्त सूत्रमें यह कहा है कि जिन अनुभागोंमें एक कृष्टि रहती है उनमें दूसरी कृष्टि नहीं रहती। किन्तु स्थितिके विषयमें ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि प्रत्येक कृष्टिमें अनन्त परमाणु होते हैं, इसलिए उनका अपनी सभी स्थितियोंमें पाया जाना सम्भव है। अतः अनुभागके समान स्थितिके विषयमें ऐसा विभाग नहीं किया जा सकता।

§ १७९ इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा प्रथम भाष्यगाथाके अर्थकी प्ररूपणा समाप्त करके अब दूसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हुए चूर्णिसूत्रकार इस सूत्रको कहते हैं—

* अब दूसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ १८० यह सूत्र सुगम है।

(११५) सब संग्रह और अवयव कृष्टियाँ समस्त द्वितीय स्थितिमें होती हैं। किन्तु यह जीव जिस संग्रह कृष्टिका वेदन करता है उसका एक भाग प्रथम स्थितिमें होता है ॥१६८॥

§ १८१ यह दूसरी भाष्यगाथा मूलगाथाके उत्तरार्धकी प्ररूपणा करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—मूलगाथाके उत्तरार्धमें सब स्थितियोंमें एक एक कृष्टि रहती है अथवा नहीं रहती यह पृच्छा निर्दिष्ट की गयी है। अब उक्त पृच्छाके उस प्रकारसे प्रवृत्त होनेपर प्रथम स्थिति

होदि त्ति पदुप्पायणट्ठमेद गाहासुत्तमोइण्णमिदि। संपहि एदस्स किंचि अवयवत्थपरूवणं कस्सामो- 'सव्वाओ किट्टीओ विदिय०' एवं भणिदे सव्वाओ संगहकिट्टीओ तदवयवकिट्टीओ च विदियट्ठिदीए सव्वत्थ चेव होंति, ण तत्थ एक्किस्से वि किट्टीए पडिसेहो अत्थि त्ति भणिदं होदि। 'जं किट्टिं वेदयदे०' जमेव खलु संगहकिट्टिं वेदेदि, तिस्से चेव अंता भागो पढमट्ठिदीए दट्ठव्वो, अवेदिज्जमाणकिट्टीणं पढमट्ठिदीए संभवाभावादो त्ति वुत्तं होइ। वेदिज्जमाणसंगहकिट्टीए वि अंसो पढमट्ठिदीए होंतो उदयवज्जासु सव्वासु ट्ठिदीसु अविसेसेण सव्वकिट्टीसरूवो होदूण लब्भदे। उदयट्ठिदीए पुण वेदिज्जमाणकिट्टीए असंखेज्जा भागा चेव होंति त्ति एसो विसेसो एत्थेव सुत्ते अंतब्भूदो दट्ठव्वो।

§ १८२ एवंविहो च एदिस्से गाहाए अत्थो पढमभासगाहाविहासावसरे चेव विहासिदो, तदो ण पुणो पवेयव्वो त्ति जाणावणट्ठमिदमाह—

* एदिस्से विहासा वुत्ता चेव पढमभासगाहाए।

§ १८३ पढमभासगाहाविहासावसरे चेव एदेसिं विहासा परूविदा, तत्थ 'किट्टी च ट्ठिदिविसेसेसु असंखेज्जेसु णियमसा होदि' त्ति एदेणेदत्थसंबंधेण पढमविदियट्ठिदीसु किट्टीणमवट्ठाणस्स

और द्वितीय स्थितिके भेदकी विवक्षा करके उन अवयवरूप स्थितियोमे कृष्टियोका अवस्थान इस रूपसे है इस बातका कथन करनेके लिए यह गाथासूत्र अवतीर्ण हुआ है। अब इस भाष्यगाथाके अवयवोके अर्थकी किंचित् प्ररूपणा करेंगे—'सव्वाओ किट्टीओ विदिय०' ऐसा कहनेपर सब संग्रह कृष्टियाँ और उनकी अवयव कृष्टियाँ द्वितीय स्थितिकी सभी स्थितियोमे पायी जाती हैं, उनमे एक भी कृष्टिके होनेका निषेध नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। किन्तु 'जं किट्टिं वेदयदे०' अर्थात् नियमसे जिस संग्रह कृष्टिका वेदन करता है उसीका कुछ भाग प्रथम स्थितिमे जानना चाहिए, क्योंकि अवेद्यमान कृष्टियोंका प्रथम स्थितिमें होना सम्भव नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। वेद्यमान संग्रह कृष्टिका भी कुछ अंश प्रथम स्थितिमें होता हुआ उदयरहित सब स्थितियोमे अविशेषरूपसे समस्त कृष्टिस्वरूप होकर प्राप्त होता है। परन्तु उदयस्थितिमे वेद्यमान कृष्टिका असंख्यात बहुभाग ही होता है इस प्रकार इतना विशेष इसी सूत्रमें अन्तर्भूत जानना चाहिए।

विशेषार्थ—जिस समय इस जीवके जिस संग्रह कृष्टिका उदय होता है उस समय उसका असंख्यात बहुभाग ही उदयरूपसे परिणत होता है, शेष एक भाग उस समय प्रथम स्थितिमे होता हुआ भी उदयरूपसे परिणत न होकर उदय रहित सब स्थितियोंमें सर्व कृष्टिरूपसे अवस्थित रहता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ?

§ १८२ इस गाथाका इस प्रकारके अर्थका प्रथम भाष्य गाथाकी विभाषाके समय ही व्याख्यान कर आये है, इसलिए उसका पुन कथन नहीं करना चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* इस भाष्यगाथाकी विभाषा प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करते समय ही कही गयी है।

§ १८३ प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषाके समय ही इसकी विभाषा कही गयी है, क्योंकि वहाँपर 'किट्टी च ट्ठिदिविसेसेसु असंखेज्जेसु णियमसा होदि' अर्थात् असंख्यात स्थितिविशेषोंमें कृष्टि नियमसे रहती है इस प्रकार इस अर्थके सम्बन्धसे प्रथम और द्वितीय स्थितियोमे कृष्टियोंके

सवित्थरमणुमग्गिदत्तादो। तम्हा णेदाणिमेदिस्से विहासा कीरदि त्ति वुत्तं होदि। जइ एवं, णारंभणिज्जमेदं गाहासुत्तं, पढमगाहासुत्तेणेव गयत्थत्तादो त्ति णासंकणिज्जं, तत्थासंखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु एक्केक्का किट्टी होदि त्ति सामण्णेण णिद्दिट्ठस्स अत्थस्स पढमविदियट्ठिदीहिं विसेसिऊण वेदिज्जमाणावेदिज्जमाणकिट्टीसंबंधेण परूवणट्ठमेदस्स गाहासुत्तावयारस्स सहलत्तदंसणादो।

§ १८४ एवमेत्तिएण पबंधेण विदियमूलगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि जहावसरपत्ताए तदियमूलगाहाए अवयारं कुणमाणो उवरिमं पबंधमाह—

* एत्तो तदियाए मूलगाहाए समुक्कित्तणा।

§ १८५ सुगमं।

(११६) किट्टी च पदेसग्गेणणुभागग्गेण का च कालेण।
अधिगा समा व हीणा गुणेण किं वा विसेसेण ॥१६९॥

§ १८६ किमट्ठमेसा तदियमूलगाहा समोइण्णा? पढममूलगाहाए णिद्दिट्ठलक्खणाणमवहारिदपमाणविसेसाणं च किट्टीणं पुणो विदियमूलगाहाए ट्ठिदीसु अणुभागेसु च अवट्ठाणविसेसं परूविय

अवस्थानका विस्तारके साथ अनुसंधान कर आये हैं, इसलिए इस समय इसकी विभाषा नहीं करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—यदि ऐसा है तो इस भाष्यगाथा सूत्रका आरम्भ नहीं करना चाहिए, क्योंकि प्रथम भाष्यगाथा सूत्रसे ही उक्त अर्थका ज्ञान हो जाता है।

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वहाँपर असंख्यात स्थिति विशेषोंमें एक एक कृष्टि रहती है इस प्रकार सामान्यरूपसे निर्दिष्ट किये गये अर्थका प्रथम और द्वितीय स्थितियोंके द्वारा विशेषताको प्राप्त हुई वेद्यमान और अवेद्यमान कृष्टियोंके सम्बन्धसे कथन करनेके लिए इस भाष्यगाथा सूत्रका अवतार सफल देखा जाता है।

विशेषार्थ—प्रथम भाष्यगाथामें इतना ही कहा था कि एक एक कृष्टि असंख्यात स्थिति विशेषोंमें रहती है, परन्तु यहाँपर स्थितिके प्रथम स्थिति और द्वितीय स्थिति ऐसे भेद करके वेद्यमान संग्रह कृष्टिका कुछ अंश प्रथम स्थितिमें रहता है और अवेद्यमान कृष्टियाँ द्वितीय स्थितिमें रहती हैं इस बातका विशेषरूपसे ज्ञान करानेके लिए इस भाष्यगाथा सूत्रका अवतार हुआ है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ १८४ इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा दूसरी मूलगाथाके अर्थकी विभाषा समाप्त करके अब क्रमसे अवसरप्राप्त तीसरी मूलगाथाका अवतार करते हुए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* अब इससे आगे तीसरी मूलगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ १८५ यह सूत्र सुगम है।

(११६) कौन कृष्टि किस कृष्टिसे प्रदेशपुंजकी अपेक्षा, अनुभागसमूहकी अपेक्षा और कालकी अपेक्षा अधिक है, समान है या हीन है। इस प्रकार गुणकारकी अपेक्षा या विशेषकी अपेक्षा कौन कृष्टि किस कृष्टिसे हीन या अधिक है ॥१६९॥

§ १८६ शंका—यह मूल गाथा किसलिए अवतीर्ण हुई है?

समाधान—प्रथम मूल गाथा द्वारा जिनका लक्षण कहा गया है और जिनके प्रमाणविशेषका अवधारण किया है उन कृष्टियोंका पुनः दूसरी मूल गाथा द्वारा स्थितियों और अनुभागोंमें

संपहि तासिं चेव पदेसग्गेणाणुभागग्गेण कालविसेसेण च हीणाहियभावगवेसणट्ठमेसा तदियमूलगाहा समोइण्णा। त जहा—'किट्टी च पदेसग्गेण०' एवं भणिदे कदमा किट्टी कम्हादो किट्टीदो पदेसग्गेण अहिया हीणा समा वा होदि ? का वा किट्टी कम्हादो किट्टीदो अणुभागग्गेण अहिया हीणा समा वा होदि, कालविसेसेण वा णिहालिज्जमाणा कदमा किट्टी कम्हादो किट्टीदो अहिया हीणा समा वा होदि त्ति पादेक्कमभिसंबंधं कादूण सुत्तत्थसमत्थणा एत्थ कायव्वा। तदो तिण्णि पुच्छाओ तिसु अत्थविसेसेसु पडिबद्धाओ एत्थ णिद्दिट्ठाओ दट्ठव्वाओ। एदासिं चेव पुच्छाण पुणो वि विसेसियूण परूवणट्ठं 'गुणेण किं वा विसेसेणेत्ति' भणिदं। एत्थ 'कालेणेत्ति' वुत्ते बारसण्ह संगहकिट्टीण वेदग कालो घेत्तव्वो, कोह-माण माया लोभोदएहिं चडिदाण पढमसमयकिट्टीवेदगाण मोहणीयस्स ट्ठिदिकालो तत्थतणपदेसग्गविसयजवमज्झादिपरूवणा च एत्थेवंतब्भूदा दट्ठव्वा। एवमेदासिं तिण्हं पुच्छाण णिण्णयकरणट्ठमेसा तदियमूलगाहा समोइण्णा त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो। संपहि एवंविहत्थपडिबद्धाए एदिस्से सुत्तगाहाए विहासणं कुणमाणो चुण्णिसुत्तयारो उवरिमं पबंधमाह—

* एदिस्से तिण्णि अत्था।

§ १८७ एदिस्से मूलगाहाए तिण्णि अत्थविसेसा णिबद्धा त्ति वुत्तं होइ। संपहि के ते तिण्णि अत्था, कम्हि वा अत्थे केत्तियाओ भासगाहाओ पडिबद्धाओ त्ति इममत्थविसेसंपदुप्पाइयदु-कामो उवरिमं पबंधमाढवेदि—

* किट्टी च पदेसग्गेणेत्ति पढमो अत्थो। एदम्मि पंच भासगाहाओ।

अवस्थान विशेषका कथन करके अब उन्हीके प्रदेशपुंज अनुभागपुंजकी अपेक्षा और काल विशेष की अपेक्षा हीनाधिकभावकी गवेषणा करनेके लिए यह तीसरी मूल गाथा अवतीर्ण हुई है।

वह जैसे—'किट्टी च पदेसग्गेण०' ऐसा कहनेपर कौन कृष्टि किस कृष्टिसे प्रदेशपुंजकी अपेक्षा अधिक हीन या समान होती है। अथवा कौन कृष्टि किस कृष्टिसे अनुभागसमूहकी अपेक्षा अधिक, हीन या समान होती है। अथवा कालविशेषकी अपेक्षा देखी गयी कौन कृष्टि किस कृष्टिसे अधिक हीन या समान होती है। इस प्रकार प्रत्येकके साथ सम्बन्ध करके यहाँपर सूत्रार्थका समर्थन करना चाहिए। इसलिए तीन पृच्छाएँ इस मूल सूत्रगाथामें तीन अर्थविशेषोंमें प्रतिबद्ध निर्दिष्ट जाननी चाहिए। अतः इन्हीं पृच्छाओंका फिर भी विशेषकर कथन करनेके लिए 'गुणेण किं वा विसेसेण' यह वचन कहा है। यहाँपर 'कालेण' ऐसा कहने पर बारहों संग्रह कृष्टियोंका वेदककाल ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि क्रोध, मान माया और लोभके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढ़कर कृष्टियोंका वेदन करनेवाले जीवोंका प्रथम समयमें मोहनीय कर्मका स्थितिकाल और वहाँ सम्बन्धी प्रदेशपुंजविषयक यवमध्य आदिकी प्ररूपणा इसीमें अन्तर्भूत जाननी चाहिए। इस प्रकार इन तीनों पृच्छाओंका निर्णय करनेके लिए तीसरी मूलगाथा अवतीर्ण हुई है इस प्रकार यह यहाँपर सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। अब इस प्रकारके अर्थोंमें प्रतिबद्ध इस सूत्र-गाथाकी विभाषा करते हुए चूर्णिसूत्रकार उपरिम प्रबन्धको कहते हैं—

* इस सूत्रगाथाके तीन अर्थ हैं।

§ १८७ इस मूल गाथामें तीन अर्थविशेष निबद्ध हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब वे तीन अर्थ कौन हैं और कौन अर्थमें कितनी भाष्यगाथाएँ प्रतिबद्ध हैं इस प्रकार इस अर्थविशेष का कथन करनेकी इच्छासे आगेके प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* 'किट्टी च पदेसग्गेण' अर्थात् कौन कृष्टि किस कृष्टिसे प्रदेशपुंजकी अपेक्षा अधिक, हीन या समान है यह प्रथम अर्थ है। इस अर्थमें पाँच गाथाएँ निबद्ध हैं।

§ १८८ 'किट्टी च पदेसग्गेणेत्ति' एदम्मि मूलगाहापढमावयवे किट्टीसु पदेसग्गस्सावट्ठाण परूवणालक्खणो पढमो अत्थो णिबद्धो। तत्थ य पच भासगाहाओ होंति, ताहिं विणा पयदत्थ विसयणिण्णयपरूवणाणुववत्तीदो त्ति वुत्त होइ।

※ अणुभागग्गेणेत्ति विदियो अत्थो। एत्थ एक्का भासगाहा।

§ १८९ 'अणुभागग्गेणेत्ति' एदम्मि गाहासुत्तविदियावयवकिट्टीसु अणुभागस्स थोवबहुत्त परूवणप्पओ विदियो अत्थो णिबद्धो। तम्हि विहासिज्जमाणे एक्का भासगाहा होदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसगहो। सेसं सुगम।

※ का च कालेणेत्ति तदिओ अत्थो। एत्थ छब्भासगाहाओ।

§ १९० 'का च कालेणेत्ति' एदम्मि मूलगाहातदियावयवभूदबीजपदे तदिओ अत्थो किट्टीण कालविसेसावहारणलक्खणो णिबद्धो। तत्थ य छब्भासगाहाओ पडिबद्धाओ। तासिं समुक्कित्तण विहासण च जहाकममेव कस्सामो त्ति वुत्त होइ। 'गुणेण किं वा विसेसेणेत्ति' एसो चरिमो सुत्तावयवो तिण्हमेदेसिमत्थाण विसेसणभावेण णिद्दिट्ठो, अण्णहा सुत्तत्थस्सासपुण्णत्तप्पसगादो। सपहि जहाकममेदेसिं तिण्हमत्थाणमप्पप्पणो भासगाहाहिं विहासण कुणमाणो चुण्णिसुत्तयारो विहासागथमुत्तर भणइ।

※ पढमे अत्थे भासगाहाण समुक्कित्तणा।

---

§ १८८ 'किट्टी च पदेसग्गेण' मूल गाथाके इस प्रथम वचनमें कृष्टियोमे प्रदेशपुजके अवस्थान की प्ररूपणा करनेरूप लक्षणवाला प्रथम अर्थ निबद्ध है। उस अर्थमें पाँच भाष्यगाथाएँ हैं, क्योंकि उनके बिना प्रकृत अर्थविषयक निर्णयकी प्ररूपणा नही हो सकती यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

※ 'अणुभागग्गेण' अर्थात् कौन कृष्टि किस कृष्टिसे अनुभागपुजकी अपेक्षा अधिक, हीन या समान है यह दूसरा अर्थ है। इस अर्थमें एक भाष्यगाथा निबद्ध है।

§ १८९ 'अणुभागग्गेण' इस गाथासूत्रके दूसरे अवयवसम्बन्धी कृष्टियोमें अनुभागके अल्प बहुत्वका प्ररूपणा करनेवाला दूसरा अर्थ निबद्ध है। उसको विभाषा करनेके अर्थमे एक भाष्यगाथा आयी है इस प्रकार यहाँपर यह सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। शेष कथन सुगम है।

※ 'का च कालेण' अर्थात् कौन कृष्टि किस कृष्टिसे कालकी अपेक्षा अधिक, हीन या समान है यह तीसरा अर्थ है। इस अर्थमे छह भाष्यगाथाएँ प्रतिबद्ध हैं।

§ १९० 'का च कालेण' मूल गाथाके तीसरे अवयवभूत इस बीजपदमे कृष्टियोके काल विशेषका अवधारण करनेरूप लक्षणवाला तीसरा अर्थ निबद्ध है। उस अर्थमें छह भाष्यगाथाएँ प्रतिबद्ध है। उनकी समुत्कीर्तना और विभाषा क्रमानुसार ही करेगें यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'गुणेण किं वा विसेसेण' यह अन्तिम सूत्रवचन है जो इन तीन अर्थोंमेंसे प्रत्येकमें विशेषता दिखलानेके प्रयोजनसे निर्दिष्ट किया गया है अन्यथा सूत्रार्थकी असम्पूर्णताका प्रसंग प्राप्त होता है। अब क्रमानुसार इन तीन अर्थोंका अपनी अपनी भाष्यगाथाओंके साथ विभाषा करते हुए चूर्णिसूत्रकार आगेके विभाषाग्रन्थको कहते हैं—

※ अब प्रथम अर्थमे निबद्ध भाष्यगाथाओंकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ १९१ पढमे अत्थे पडिबद्धाण भासगाहाण पचसंखाविसेसियाणं पुव्वमेव ताव समुक्कि त्तणा कायव्वा त्ति वुत्तं होदि यथोद्देशस्तथा निर्देश इति न्यायात् ।

(११७) विदियादो पुण पढमा संखेज्जगुणा भवे पदेसग्गे ।
विदियादो पुण तदिया कमेण सेसा विसेसहिया ॥१७०॥

§ १९२ एसा पढमभासगाहा संगहकिट्टीसु बारसभावविभत्तासु सत्थाणपरत्थाणेहिं विसेसि यूण पदेसग्गस्स थोवबहुत्तपरूवणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'विदियादो पुण पढमा०' एव भणिदे कोहस्स विदियादो सगहकिट्टीदो तस्सेव पढमसगहकिट्टीपदेसग्गेण संखेज्जगुणा होदि त्ति भणिद होइ। एत्थ कारणं गुणगारपमाण च परदो चुण्णिसुत्तसबधेण वत्तइस्सामो। 'विदियादो पुण तदिया' एव भणिदे विदियसगहकिट्टीए सयलपदेसपिंडादो तदियसगहकिट्टीए पदेसग्ग विसेसाहिय होदि त्ति सुत्तत्थसबंधो। उवरिमविसेसाहियग्गहणस्सेत्थाहिसंबधादो तदो कोहस्स तिण्ह सगहकिट्टीणं सत्थाणप्पाबहुअमेदेण सुत्तावयवकलावेण णिद्दिट्ठं होदि। कोहग्गहणमेत्थाणिद्दिट्ठमण हिकयं च कथमुवलब्भदि त्ति णासका कायव्वा, अत्थवसेण तदहिसंबधोववत्तीदो। 'कमेण सेसा विसेसहिया' एव भणिदे जहाकमेण वुत्तसेसाण माण माया लोभाण तिण्णि तिण्णि सगहकिट्टीओ सत्थाणे विसेसाहियाओ होंति त्ति वुत्त होदि। अप्पप्पणो वेदगपढमसगहकिट्टिमादिं कादूण तत्थ

---

§ १९१ अब प्रथम अर्थमें प्रतिबद्ध पाँच सख्याक भाष्यगाथाओकी सर्वप्रथम पहले ही समुत्कीर्तना करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पय है, क्योंकि उद्देश्यके अनुसार निर्देश किया जाता है ऐसा न्याय है।

(११७) क्रोध संज्वलनकी दूसरी सग्रह कृष्टिसे प्रथम सग्रह कृष्टि प्रदेशपुजकी अपेक्षा संख्यातगुणी है। परन्तु दूसरीसे तीसरी व क्रमसे शेष सभी संग्रह कृष्टियाँ आगे आगे विशेष अधिक हैं ॥१७०॥

§ १९२ यह प्रथम भाष्यगाथा बारह प्रकारसे विभक्त सग्रह कृष्टियोमे अवस्थित प्रदेशपुज- के स्वस्थान और परस्थान दोनो प्रकारसे अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'विदियादो पुण पढमा' ऐसा कहनेपर क्रोधसंज्वलनकी दूसरी सग्रह कृष्टिसे उसीकी प्रथम संग्रह कृष्टि प्रदेशपुजकी अपेक्षा सख्यातगुणी होती है यह उक्त कथनका तात्पय है। यहाँपर कारण और गुणकारका प्रमाण आगे चूर्णिसूत्रके सम्बन्धसे बतलावेंगे। 'विदियादो पुण तदिया' ऐसा कहनेपर दूसरी सग्रह कृष्टिके समस्त प्रदेशपिंडसे तीसरी सग्रह कृष्टिका समस्त प्रदेशपुज विशेष अधिक होता है यह उक्त सूत्रका समुच्चयरूप अथ है। आगे विशेष अधिक पदका ग्रहण किया है उसका यहाँ सम्बन्ध हो जाता है। इस कारण क्रोध सज्वलनकी तीनो सग्रह कृष्टियोका स्वस्थान अल्पबहुत्व इस समुदायरूप सूत्रवचन द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।

शका—इस गाथासूत्रमे एक तो क्रोधपदका ग्रहण नही किया गया है और उसका अधिकार भी नही है, अत उसका ग्रहण कैसे प्राप्त होता है?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अर्थवश प्रकृतमें उसका सम्बन्ध बन जाता है।

'कमेण सेसा विसेसाहिया' ऐसा कहनेपर यथाक्रम कही गयी शेष मान, माया और लोभ की तीन-तीन संग्रह कृष्टियाँ स्वस्थानमें विशेष अधिक हैं यह उक्त कथनका तात्पय है, क्योंकि वेदकके अपनी अपनी प्रथम संग्रह कृष्टिसे लेकर उनमें विशेष अधिकके क्रमसे प्रदेशपुजका

विसेसाहियकमेण पदेसग्गावट्ठाणस्स किट्टीवेदगपढमसमए परिप्फुडमुवलंभादो। एदेण चेव परत्थाणप्पाबहुअं पि सूचिदं दट्ठव्वं। संपहि एवंविहमेदिस्से पढमभासगाहाए अत्थविसेसं विहासिदु-कामो चुण्णिसुत्तयारो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

* विहासा।

§ १९३ सुगमं।

* तं जहा।

§ १९४ सुगमं।

* कोहस्स विदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं थोवं।

§ १९५ किं कारणं? मोहणीयसयलदव्वस्स किंचूणचउवीसभागपमाणत्तादो।

* पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं तेरसगुणमेत्तं।

§ १९६ एत्थ 'पढमसंगहकिट्टि' त्ति वुत्ते वेदगपढमसंगहकिट्टीए गहणं कायव्वं। तेण पुव्वुत्तकोहविदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गादो कोहस्स चेव पढमसंगहकिट्टीए पदेसग्गं संखेज्जगुणमिदि सुत्तत्थसंबंधो। तत्थ 'संखेज्जगुणं' इदि सामण्णणिद्देसेण गुणगारविसए विसेसणिण्णओ ण जादो त्ति तव्विसयणिण्णयजणणट्ठं 'तेरसगुणमेत्तं' इदि विसेसियूण भणिदं। एवमेदेण मुत्तकंठ-मुवइट्ठस्स तेरसरूवमेत्तगुणगारस्स साहणट्ठमिमा परूवणा कीरदे। तं जहा—मोहणीयसव्वदव्व

अवस्थान कृष्टियोंका वेदन करनेवालेके प्रथम समयमें स्पष्टरूपसे उपलब्ध होता है। तथा इसीसे परस्थान अल्पबहुत्वका भी सूचन कर दिया है ऐसा जानना चाहिए। अब इस प्रथम भाष्यगाथाके अर्थविशेषकी विभाषा करनेकी इच्छासे चूर्णिसूत्रकार आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* अब प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ १९३ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ १९४ यह सूत्र सुगम है।

* क्रोधकी दूसरी संग्रहकृष्टिका प्रदेशपुंज सबसे स्तोक है।

§ १९५ क्योंकि वह मोहनीय कर्मसम्बन्धी समस्त द्रव्य कुछ कम चौबीसवें भाग प्रमाण है।

* उससे प्रथम संग्रहकृष्टिका प्रदेशपुंज संख्यातगुणा अर्थात् तेरहगुणा है।

§ १९६ इस सूत्रमें 'प्रथम संग्रह कृष्टि' ऐसा कहनेपर उसका वेदन करनेवाले जीवके प्रथम संग्रह कृष्टिका ग्रहण करना चाहिए। इस कारण पूर्वोक्त क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिके प्रदेशपुंजसे क्रोधकी ही प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज संख्यातगुणा है यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। उसमें 'संख्यातगुणा' ऐसा सामान्य निर्देश करनेसे गुणकारके विषयमें विशेष निर्णय नहीं हो पाता, इसलिए तद्विषयक निर्णयको उत्पन्न करनेके लिए 'तेरहगुणा है' ऐसा विशेषरूपसे कहा है। इस प्रकार इस सूत्र द्वारा मुक्तकण्ठ कहे गये तेरहगुणे प्रमाणरूप गुणकारका साधन करनेके लिए

सविट्ठीए एत्तियमिदि ,घेत्तव्व,४९। पुणो एदं,बे भागे काढूण तत्थेगभागो असखेज्जभागब्भहियो कसायदव्व भवदि। तस्स पमाणमेदं २५। पुणो सेसभागो असखेज्जभागोग णोकसायदव्व होदि। त च एद २४। सपहि कसायभागो बारससु संगहकिट्टीसु जहापविभागमवचिट्ठदि त्ति कसाय दव्वस्स बारसमभागो कोधपढमसगहकिट्टीए दिस्सदि। सो पुण मोहणीयसयलदव्वावेक्खाए थोवूणचउवीसभागमेत्तो होदि। सविट्ठीए तस्स पमाणमेत्तिय होदि २। पुणो णोकसायदव्व पि सव्व कोहसजलणे सकामिदमत्थि, तं च सव्वमेव किट्टीओ करेमाणस्स कोहपढमसंगहकिट्टी सरूवेणेव परिणमिय चिट्ठदि। किं कारण ? तस्स सेसकिट्टीपरिहारेण वेदगपढमसगहकिट्टीसरूवेणेव परिणामणियमदसणादो। तदो णोकसायदव्वमेव पुव्विल्लभागपमाणेण कोरमाण बारसण्ह गुणगाररूवाणमुप्पत्तीए णिमित्तं होदि। सपहि पुव्वुत्तबारसमभागमेत्तकोहपढमसगहकिट्टीपदेसग्ग मेत्थेव पक्खिविय हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिम्मि ओवट्टिदे कोहविदियसगहकिट्टीदो पढमसगहकिट्टी पदेसग्गेण तेरसगुणा जादा। एदेण कारणेण सुत्ते 'तेरसगुणमेत्त' इदि भणिदं।

यह प्ररूपणा करते हैं। वह जैसे—मोहनीय कर्मका समस्त द्रव्य सदृष्टिकी अपेक्षा इतना ग्रहण करना चाहिए—४९। पुन इन द्रव्यके दो भाग करके उनमेसे असख्यातवां भाग अधिक एक भागप्रमाण कषायसम्बन्धी द्रव्य होता है। उसका प्रमाण यह है २५। पुन शेष असख्यातवां भाग कम नोकषायसम्बन्धी द्रव्य होता है। उसका प्रमाण यह है २४। अब कषायसम्बन्धी बारह भाग सग्रह कृष्टियोमे यथाविभाग अवस्थित है, इसलिए कषायसम्बन्धी द्रव्यका बारहवां भाग क्रोधकषायकी प्रथम सग्रह कृष्टिमे दिखाई देता है। परन्तु वह द्रव्य मोहनीय कषायके समस्त द्रव्यको अपेक्षा चौबीसवां भागमात्र होता है। सदृष्टिसे उसका प्रमाण इतना है–२। पुन नोकषाय द्रव्य भी सम्पूर्ण क्रोधसज्वलनमे संक्रमित हुआ है और वह सभी द्रव्य कृष्टियोको करनेवालेके क्रोध सज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिरूपसे ही परिणमकर अवस्थित रहता है।

शका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योकि उस नोकषायसम्बन्धी द्रव्यके शेष कृष्टियोके परिहार द्वारा वेदक जीवके प्रथम सग्रह कृष्टिरूपसे ही परिणमनका नियम देखा जाता है।

इसलिए इस नोकषायके द्रव्यका पहलेके भागप्रमाणसे करते हुए वह बारह गुणकाररूप अंकोकी उत्पत्तिका कारण होता है। अब पूर्वोक्त बारहवें भागप्रमाण क्रोधकषायसम्बन्धी प्रथम सग्रह कृष्टिके प्रदेशपुजको इसीमे प्रक्षिप्त करके अधस्तन राशिसे उपरिम राशिके भाजित करनेपर क्रोधकी दूसरी सग्रह कृष्टिसे प्रथम सग्रह कृष्टि प्रदेशपुजकी अपेक्षा तेरहगुणी हो जाती है। इस कारणसे सूत्रमे 'तेरहगुणाप्रमाण' ऐसा कहा है।

विशेषार्थ—यहाँ क्रोध सज्वलनसे श्रेणिपर आरोहण करनेवाला जीव विवक्षित है। अत उसके १२ सग्रह कृष्टियां नियमसे पायी जाती है। अब प्रकृतमे यह देखना है कि जो जीव क्रोध सज्वलनकी प्रथम सग्रहकृष्टिका प्रथम समयमे वेदन कर रहा है उसमे उस दूसरी सग्रह कृष्टिकी अपेक्षा कितना अधिक द्रव्य पाया जाता है, हीन या समान पूरा द्रव्य तो पाया नहीं जा सकता, क्योकि उस प्रथम कृष्टिके वेदन करनेके समय ही उसमे नोकषायोका द्रव्य भी संक्रमित हो चुकता है। अत वह दूसरी कृष्टिकी अपेक्षा अधिक ही होना चाहिए। कितना अधिक होता है इसी बातका स्पष्टीकरण करते हुए क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे तेरहगुणा अधिक होता है यह बतलाया है। वह तेरहगुणा कैसे घटित होता है इस बातका स्पष्टीकरण करते हुए वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि चारित्रमोहनीयकर्मका कुल द्रव्य अंकसदृष्टिकी अपेक्षा ४९ स्वीकार करनेपर

§ १९७ सपहि विदियसंगहकिट्टीए जहण्णकिट्टिप्पहुडि अणंतगुणकमेण गदकिट्टीओलीदो पढमसंगहकिट्टीए जहण्णकिट्टिमादि कादूणाणंतगुणकमेण गदाकिट्टीओली त्ति संखेज्जगुणा चेव होदि। किं कारणं? कोहविदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टिसरिसधणियपदेसपिंडादो पढमसंगहकिट्टीए जहण्णकिट्टिसरिसधणियपदेसग्गमणंतभागहीणं होदि त्ति पुव्वमणंतरोवणिधाए भणिदं। तेण जाणिज्जदि तेरसगुणमेत्तपदेसपिंडेण विदियसंगहकिट्टीए सह एयगोवुच्छासेढीए णिव्वत्तिज्जमाण पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीण पंती विदियसंगहकिट्टीए सयलकिट्टीआयामादो णियमा तेरसगुणा चेव होदि त्ति, अण्णहा तासिमेयगोवुच्छत्ताणुववत्तीदो।

§ १९८ संपहि एदेण सुत्तेण परूविदकोहस्स जलणसत्थाणप्पाबहुअस्सुच्चारणक्कमो वुच्चदे। तं जहा—सव्वत्थोवं कोहस्स विदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं। तदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागेण खंडिदेयखंडमेत्तेण। कुदो एदं

असंख्यातवाँ भाग अधिक आधा भाग २१ कषायसम्बन्धी द्रव्य होता है और शेष असंख्यातवाँ भाग हीन आधा २४ नोकषायसम्बन्धी द्रव्य होता है। यतः चारों संज्वलनोंकी संग्रह कृष्टियाँ १२ हैं, अतः कषायसम्बन्धी द्रव्यको इन १२ संग्रह कृष्टियोंमें विभाजित करनेपर क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका साधिक २ अंक प्रमाण द्रव्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार आगेकी प्रत्येक संग्रह कृष्टिको भी साधिक २ अंक प्रमाण द्रव्य प्राप्त होता है। पुनः नोकषायोंके समस्त द्रव्यके क्रोधसंज्वलनके प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होनेपर उसका कुल द्रव्य सब मिलाकर २४+२=२६ अंक प्रमाण होता है। अब इसमें क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिके २ अंक प्रमाण द्रव्यका भाग देनेपर क्रोध संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका कुल द्रव्य २६ ÷ २ = १३ अंक प्रमाण प्राप्त होता है जो क्रोधसंज्वलनकी द्वितीय संग्रह कृष्टिके २ अंक प्रमाण द्रव्यसे तेरहगुणा सिद्ध होता है।

§ १९७ अब दूसरी संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिसे लेकर अनन्त गुणितक्रमसे प्राप्त कृष्टिसम्बन्धी पंक्तिसे प्रथम संग्रह कृष्टिकी जघन्य कृष्टिसे लेकर अनन्त गुणितक्रमसे प्राप्त कृष्टिसम्बन्धी पंक्ति संख्यातगुणी ही होती है।

शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तिम कृष्टिके सदृश धनवाले प्रदेशपिण्डसे प्रथम संग्रह कृष्टिसम्बन्धी जघन्य कृष्टिका सदृश धनवाला प्रदेशपुंज अनन्त भागहीन होता है यह पहले अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा कह आये हैं। इससे जानते हैं कि तेरहगुणे प्रदेश पिण्डकी अपेक्षा दूसरी संग्रह कृष्टिके साथ एक गोपुच्छा श्रेणिरूपसे निष्पद्यमान प्रथम संग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तर कृष्टियोंकी पंक्ति दूसरी संग्रह कृष्टि सम्बन्धी समस्त कृष्टिआयामसे नियमसे तेरहगुणी ही होती है, अन्यथा उनकी एक गोपुच्छा नहीं बन सकती।

विशेषार्थ—पूर्वमें दूसरी संग्रह कृष्टिसे प्रथम संग्रह कृष्टि तेरहगुणी है यह सिद्ध कर आये हैं सो उससे ऐसा समझना चाहिए कि दूसरी संग्रह कृष्टिकी जितनी अन्तर कृष्टियोंकी पंक्ति है उससे प्रथम संग्रह कृष्टिसम्बन्धी अन्तर कृष्टियोंकी पंक्ति तेरहगुणी है।

§ १९८ अब इस सूत्र द्वारा कहे गये क्रोधसंज्वलनके स्वस्थान अल्पबहुत्वके उच्चारण क्रमका कथन करते हैं। वह जैसे—क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज सबसे अल्प है। उससे तीसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है।

शंका—कितना अधिक है?

परिच्छिज्जदे ? उवरिमपरत्थाणप्पाबहुए सुत्तणिबद्धतप्परूवणोवलंभादो। कोधतदियसंगहकिट्टीदो उवरि तस्सेव पढमसंगहकिट्टीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं। पुव्वुत्तेण णाएण तस्स तेरसगुणत्तदंसणादो। किट्टीओलीगुणगारो वि एदम्हादो चेव साहेयव्वो।

§ १९९. संपहि एदेणेव सुत्तेण सूचिदं माणादीणं पि सत्थाणप्पाबहुअं वत्तइस्सामो। तं जहा—माणस्स पढमसंगहकिट्टीए पदेसग्गं थोवं। विदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं। तदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं। विसेसो पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागिओ। एवं मायालोभाणं पि सत्थाणप्पाबहुअं कायव्वं, विसेसाभावादो। एवमेवं सत्थाणप्पाबहुअं परूविय संपहि 'कमेण सेसा विसेसाहिया' त्ति गाहासुत्तचरिमावयवमस्सियूण परत्थाणप्पाबहुअपरूवणट्ठ मुवरिमं सुत्तपबंधमाह—

* माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं थोवं।

§ २००. एत्थ 'माणस्स पढमसंगहकिट्टि' त्ति वुत्ते कारगस्स तदियसंगहकिट्टी घेत्तव्वा, वेदगपढमसंगहकिट्टीए एत्थ पयदत्तादो। तदो तिस्से पदेसग्गमुवरि भणिस्समाणासेससंगहकिट्टीणं पदेसग्गादो थोवमिदि वुत्तं होइ।

समाधान—क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिमें पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आता है उतना अधिक है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—उपरिम परस्थान अल्पबहुत्वसम्बन्धी सूत्रमें निबन्ध उक्त अल्पबहुत्वसम्बन्धी प्ररूपणाके उपलब्ध होनेसे यह जाना जाता है।

क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिसे ऊपर उसीकी प्रथम संग्रह कृष्टिसम्बन्धी प्रदेशपुंज संख्यात गुणा है, क्योंकि पूर्वोक्त न्यायसे वह तेरहगुणा देखा जाता है। कृष्टियोंकी पंक्तिसम्बन्धी गुणकार भी इसीसे साध लेना चाहिए।

§ १९९. अब इसी सूत्रसे सूचित हुआ मानादिक कषायसम्बन्धी स्वस्थान अल्पबहुत्व भी बतलावेंगे। वह जैसे—मानकषायकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज सबसे अल्प है। उससे दूसरी संग्रहकृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है। उससे तीसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है। परन्तु विशेषका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाणका भाग देनेपर एक भागप्रमाण है। इसी प्रकार मायाकषाय और लोभकषायका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व करना चाहिए क्योंकि इस अल्पबहुत्वसे माया और लोभकषायके अल्पबहुत्वमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार इस स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करके अब 'कमेण सेसा 'विसेसाहिया' इस प्रकार गाथासूत्रके अन्तिम चरणका आश्रय लेकर परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* मानसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज सबसे अल्प है।

§ २००. इस सूत्रमें 'मानकी प्रथम संग्रह कृष्टि' ऐसा कहनेपर कृष्टिकारककी तीसरी संग्रह कृष्टि ग्रहण करनी चाहिए, क्योंकि यहाँपर वेदककी प्रथम संग्रह कृष्टि प्रकृत है। इसलिए उसका प्रदेशपुंज ऊपर (आगे) कहे जानेवाले समस्त संग्रह कृष्टियोंके प्रदेशपुंजसे अल्प है यह उक्त कथन का तात्पर्य है।

* विदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ २०१ माणस्स विदियसंगहकिट्टीए पदेसपिंडो, तस्सेव पढमसंगहकिट्टीए पदेसपिंडादो विसेसाहिओ त्ति सुत्तत्थसंबंधो । कुदो एदस्स तत्तो विसेसाहियत्तमवगम्मदे ? ण, तिव्वयराणुभागपरिणदपदेसपिंडादो मंदयराणुभागपरिणदपदेसपिंडस्स तहाभावसिद्धीए णाइयत्तादो । एत्थ विसेसाहियपमाणं हेट्ठिमदव्वस्सासंखेज्जदिभागमेत्तमिदि घेत्तव्वं । तस्स पडिभागो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

* तदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ २०२ एत्थ वि विसेसपमाणं हेट्ठिमदव्वस्सासंखेज्जदिभागमेत्तमिदि घेत्तव्वं । संपहि एदस्सेव विसेसाहियभावस्स फुडीकरणट्ठमेत्थ को पडिभागो त्ति आसंकाए उत्तरसुत्तमाह—

* विसेसो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागो ।

§ २०३ जो एसो सत्थाणे विसेसो परूविदो सो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण हेट्ठिमदव्वे खंडिदे तत्थेयखंडमेत्तो त्ति वुत्तं होइ । एवमुवरिमपदेसु वि विसेसाहियप्पमाणमेदेणेव पडिभागेण परूवेयव्वं । णवरि परत्थाणविसेसो सव्वत्थावलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागिओ गहेयव्वो, तत्थ पयडिविसेसेण विसेसाहियत्तं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो ।

---

* उससे दूसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

§ २०१ मानसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपिण्ड उसीकी प्रथम संग्रह कृष्टिके प्रदेशपिण्डसे विशेष अधिक है यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है ।

शंका—मानकी यह संग्रह कृष्टि उसीकी प्रथम संग्रह कृष्टिसे विशेष अधिक है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि तीव्रतर अनुभागसे परिणत प्रदेशपिण्डसे मन्दतर अनुभागसे परिणत प्रदेशपिण्डकी उस रूपसे सिद्धि होना न्यायप्राप्त है ।

यहाँपर विशेषाधिकका प्रमाण अधस्तन द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । उसका प्रतिभाग पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

* उससे तीसरी संग्रहकृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

§ २०२ यहाँ भी विशेषका प्रमाण अधस्तन द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । अब इसी विशेषाधिकपनेका स्पष्टीकरण करनेके लिए यहाँपर क्या प्रतिभाग है ऐसी आशंका होनेपर आगेके सूत्रको कहते हैं—

* विशेषका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागका प्रतिभागी है ।

§ २०३ जो यह स्वस्थानमें विशेषका प्रमाण कहा है वह पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अधस्तन द्रव्यके भाजित करनेपर उसमेंसे एक भागप्रमाण है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार उपरिम पदोंमें भी विशेष अधिक प्रमाणको इसी प्रतिभागके अनुसार कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि परस्थानसम्बन्धी विशेषका प्रमाण सर्वत्र आवलिके असंख्यातवें भागका प्रतिभागी ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि वहाँपर प्रकृतिविशेषकी अपेक्षा विशेष अधिकपनेको छोड़कर प्रकारान्तर असम्भव है ।

* कोहस्स विदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ २०४ एत्थ विसेसपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागियं, परत्थाणविसेसत्तादो।

* तदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ २०५ केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागियसत्थाणविसेसमेत्तेण ।

* मायाए पढमसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ २०६ केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागखंडिदेयखंडमेत्तेण । कारणं सुगमं ।

* विदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

* तदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ २०७ एदेसु दोसु वि सुत्तेसु विसेसपमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागियमिदि घेत्तव्वं । सेसं सुगमं ।

* लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ २०८ केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेयखंडमेत्तेण । एत्थ सत्थाणविसेसो व्व परत्थाणविसेसो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागिओ त्ति के वि

---

* उससे क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

§ २०४ यहाँ पर विशेषका प्रमाण परस्थान विशेषके कारण आवलिके असंख्यातवें भागका प्रतिभागीस्वरूप है ।

* उससे तीसरी संग्रहकृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

§ २०५ शंका—कियत्प्रमाण अधिक है ?

समाधान—स्वस्थान विशेषका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागका प्रतिभागीस्वरूप है, अतः उतना अधिक है ।

* उससे मायासंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

§ २०६ शंका—कियत्प्रमाण अधिक है ?

समाधान—तीसरी संग्रह कृष्टिमें आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतना अधिक है । कारणका कथन सुगम है ।

* उससे दूसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

* उससे तीसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

§ २०७ इन दो सूत्रोंमें भी विशेषका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागका प्रतिभागी स्वरूप है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* उससे लोभसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ।

§ २०८ शंका—कियत्प्रमाण अधिक है ?

समाधान—मायासंज्वलनकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतना अधिक है ।

भणंति ? णेदं समजसं, तहाब्भुवगमस्स जुत्तिबाहियत्तादो। ण च विसेसो पलिदोवमस्स असखेज्जविभागपडिभागिओ त्ति एदेण सुत्तेण तस्स तहाभावसिद्धी, सत्थाणविसेसमुद्देसिय तस्स पयट्टत्तादो। तम्हा परत्थाणे सव्वत्थ पयडिविसेसो चेव आवलियाए असखेज्जदिभागपडिभागिओ घेत्तव्वो।

※ विदियाए सगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं।

※ तदियाए सगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं।

§ २०९. एदेसु दोसु सुत्तेसु विसेसो पलिदोवमस्स असखेज्जविभागपडिभागिओ घेत्तव्वो, सत्थाणे पयारंतरासंभवादो।

शंका—इस अल्पबहुत्वमें स्वस्थान विशेषके प्रमाणके समान परस्थान विशेषका प्रमाण भी पल्योपमके असंख्यातवें भागका प्रतिभागीस्वरूप होता है ऐसा कितने ही आचार्य व्याख्यान करते हैं ?

समाधान—किन्तु उनका यह कथन समंजस नही है क्योंकि उस प्रकारसे स्वीकार करना युक्तिसे बाधित है। यदि कहा जाय कि 'विशेषका प्रमाण पल्योपमके असख्यातवें भागका प्रतिभागी स्वरूप होता है' इस प्रकार इस सूत्र द्वारा विशेषके प्रमाणकी उसरूपसे सिद्धि हो जायगी सो ऐसा कहना ठीक नही है क्योंकि उक्त सूत्र स्वस्थानविशेषको लक्ष्य कर प्रवृत्त हुआ है। इसलिए परस्थानमे सवत्र प्रकृति विशेषका प्रमाण आवलिके असख्यातवें भागका प्रतिभागीस्वरूप होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—प्रकृतमे अल्पबहुत्वके दो भेद हैं—१ स्वस्थान अल्पबहुत्व और २ परस्थान अल्पबहुत्व। प्रत्येक कषायकी तीन तीन सग्रह कृष्टियाँ हैं। उनमेंसे प्रत्येक कषायकी अपनी सग्रह कृष्टियोमे प्रदेशपुजकी अपेक्षा अल्पबहुत्वका विचार करना स्वस्थान अल्पबहुत्व है और विवक्षित कषायकी तीसरी संग्रह कृष्टिकी अपेक्षा दूसरी कषायकी प्रथम सग्रह कृष्टिके मध्य अल्पबहुत्वका विचार करना परस्थान अल्पबहुत्व है। स्वस्थान अल्पबहुत्वमे विशेषका प्रमाण लानेके लिए पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देकर एक भागप्रमाण विशेषका प्रमाण प्राप्त किया जाता है और परस्थान अल्पबहुत्वमे आवलिके असख्यातवे भागका भाग देकर एक भागप्रमाण विशेषका प्रमाण प्राप्त किया जाता है। यहाँ मानसज्वलनकी तीनों सग्रह कृष्टियोमे स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय मानकी प्रथम सग्रह कृष्टिसे दूसरी सग्रह कृष्टि और दूसरीसे तीसरी सग्रह कृष्टि कितनी विशेष अधिक है इसका 'विसेसो पलिदोवमस्स०' इत्यादि सूत्र द्वारा स्पष्ट रूपसे जैसे उल्लेख कर दिया है वैसे ही परस्थान अपल्पबहुत्वमें पिछली कषायकी तीसरी सग्रह कृष्टिसे अगली कषायकी प्रथम सग्रह कृष्टि विशेष अधिक होते हुए भी कितनी विशेष अधिक है इसका किसी सूत्र द्वारा प्रकृतमे उल्लेख नही किया गया है। इसलिए शंकाकार दोनो स्थलोपर विशेषका प्रमाण लानेके लिए एक ही भागहार स्वीकार करता है। किन्तु वीरसेन स्वामीने इस कथनको युक्तिसे बाधित स्वीकार करके परस्थान अल्पबहुत्वमे विशेषका प्रमाण प्राप्त करनेके लिए भागहार आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण स्वीकार किया है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

※ उससे दूसरी सग्रह कृष्टिका प्रदेशपुज विशेष अधिक है।

※ उससे तीसरी संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुज विशेष अधिक है।

§ २०९. इन दोनो सूत्रोंमें विशेष पल्योपमके असंख्यातवें भागका प्रतिभागीस्वरूप ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि स्वस्थानमें अन्य प्रकार सम्भव नही है।

* कोहस्स पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।

§ २१० तेरसगुणमेत्तमिदि वुत्त होदि । कुदो ? णोकसायसव्वदव्वेण सहकसायदव्व बारसमभागस्स कोहपढमसगहकिट्टीसरूवेण परिणदत्तादो । एवमेत्तिएण पबंधेण पढमभासगाहाए अत्थविहासणं काऊण संपहि जहावसरपत्त विदियभासगाहाए विहासणं कुणमाणो उवरिम सुत्तपबंधमाह—

* विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ २११ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ २१२ सुगमं ।

(११८) विदियादो पुण पढमा संखेज्जगुणा दु वग्गणग्गेण ।
विदियादो पुण तदिया कमेण सेसा विसेसहिया ॥१७१॥

§ २१३ एसा विदियभासगाहा पुव्वुत्तपदेसग्गाणुसारेणेव बारसण्हं संगहकिट्टीणं वग्गण ग्गस्स वि सत्थाण परत्थाणप्पाबहुअपरूवणट्ठमोइण्णा । संपहि एदिस्से किंचि अवयवत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा—'विदियादो पुण पढमा०' एवं भणिदे कोहविदियसंगहकिट्टीए सव्व वग्गणाहिंतो पढमसंगहकिट्टीए वग्गणासमूहो संखेज्जगुणो त्ति भणिदं होदि, पुव्वुत्तविहाणेण

* उससे क्रोध संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुंज संख्यातगुणा है ।

§ २१० तेरहगुणा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि नोकषायके समस्त द्रव्यके साथ कषायसम्बन्धी द्रव्यका बारहवाँ भाग क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिरूपसे परिणत हुआ है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा प्रथम भाष्यगाथाके अर्थकी प्ररूपणा करके अब यथावसर प्राप्त दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* अब दूसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ २११ यह सूत्र सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ २१२ यह सूत्र सुगम है ।

(११८) क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे प्रथम संग्रह कृष्टि वर्गणा समूहकी अपेक्षा संख्यातगुणी है । किन्तु उसीकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे तीसरी संग्रह कृष्टि वर्गणासमूहकी अपेक्षा विशेष अधिक है । इसी प्रकार मान आदिकी भी संग्रह कृष्टियाँ क्रमसे वर्गणासमूहकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं ॥१७१॥

§ २१३ यह दूसरी भाष्यगाथा पूर्वोक्त प्रदेशपुंजके अनुसार ही बारह संग्रह कृष्टियों सम्बन्धी वर्गणासमूहके भी स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके प्ररूपण करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। अब इसके अवयवोंकी किंचित् अर्थप्ररूपणा करेंगे। वह जैसे— 'विदियादो पुण पढमा०' ऐसा कहनेपर क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिके समस्त वर्गणासमूहसे प्रथम संग्रह कृष्टिका वर्गणा समूह संख्यातगुणा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि पूर्वोक्त विधिसे उसमें तेरहगुणे वर्गणा

तत्थ तेरसगुणसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो। एत्थ 'वग्गणा' त्ति वुत्ते एक्केक्का अंतरकिट्टी चेव अणंतसरिसधणियपरमाणुसमूहारद्धा एगेगा वग्गणा त्ति घेत्तव्वा। तासिं समूहो वग्गणग्गमिदि भण्णदे। तदो विदियसंगहकिट्टीए सव्ववग्गणासमूहादो पढमसंगहकिट्टीए सव्वो वग्गणाकलावो अप्पणो किट्टीअद्धाणपरिच्छिण्णपमाणो संखेज्जगुणो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ।

§ २१४ 'विदियादो पुण तदिया' एवं भणिदे कोहस्स विदियसंगहकिट्टीए सव्ववग्गणाहिंतो तस्सेव तदियसंगहकिट्टीसयलवग्गणासमूहो विसेसाहिओ होइ त्ति सुत्तत्थसंबंधो। विसेसपमाणमेत्थ दव्वाणुसारेणेव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागियमिदि घेत्तव्वं। एवमेदेण सुत्तावयवकलावेण कोहसंजलणस्स तिण्हं संगहकिट्टीणं वग्गणग्गमस्सियूण सत्थाणप्पाबहुअमुवइट्ठं। संपहि 'कमेण सेसा विसेसहिया' एवं भणिदे जहाकममेव माणादीणं पि तिण्हं संगहकिट्टीणं पादेक्कं वग्गणग्गमस्सियूण विसेसाहियकमेण सत्थाणप्पाबहुअं कायव्वं। तदो परत्थाणप्पाबहुअं च णेदव्वमिदि वुत्तं होइ। सेसं जहा पढमभासगाहाए वुत्तं तहा वत्तव्वं, विसेसाभावादो। तदो चेव पढमभासगाहाणुसारेणेदिस्से विहासा कायव्वा त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* विहासा।

§ २१५ सुगमं।

* जहा पदेसग्गेण विहासिदं तहा वग्गणग्गेण विहासिदव्वं।

समूहकी सिद्धि निर्बाध पायी जाती है। इस भाष्यगाथामें 'वग्गणा' ऐसा कहनेपर एक एक अन्तर कृष्टि ही अनन्त सदृश धनवाले परमाणुसमूहसे आरम्भ की गयी एक एक वर्गणा है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। और उनका समूह वर्गणासमूह कहा जाता है। अतएव दूसरी संग्रह कृष्टिके समस्त वर्गणासमूहसे प्रथम संग्रह कृष्टिका समस्त वर्गणासमूह अपनी कृष्टिके आयामरूपसे परिच्छिन्न प्रमाणवाला होकर संख्यातगुणा है इस प्रकार यह यहाँपर सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है।

§ २१४ 'विदियादो पुण तदिया' ऐसा कहनेपर क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिकी सब वर्गणाओंसे उसीकी तीसरी संग्रह कृष्टिका समस्त वर्गणासमूह विशेष अधिक है इस प्रकार सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। विशेषका प्रमाण यहाँ द्रव्यके अनुसार ही पल्योपमके असंख्यातवें भागका प्रतिभागरूप है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार भाष्यगाथाके इस अवयवसमूहसे क्रोधसंज्वलनकी तीनों संग्रह कृष्टियोंके वर्गणासमूहका आलम्बन लेकर स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन किया। अब 'कमेण सेसा विसेसाहिया' ऐसा कहनेपर क्रमानुसार ही मान आदि तीनों संग्रह कृष्टियोंसम्बन्धी प्रत्येकके वर्गणासमूहका आलम्बन लेकर विशेष अधिकके क्रमसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिए। तत्पश्चात् परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। शेष कथन जिस प्रकार प्रथम भाष्यगाथामें किया है उसी प्रकार कथन करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। और इसीलिए प्रथम भाष्यगाथाके अनुसार ही इसकी विभाषा करनी चाहिए इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ २१५ यह सूत्र सुगम है।

* जिस प्रकार प्रदेशपुञ्जकी अपेक्षा अल्पबहुत्वकी विभाषा की उसी प्रकार वर्गणासमूहकी अपेक्षा उसकी विभाषा करनी चाहिए।

§ २१६ जहा पवेसग्गमस्सियूण सत्थाण परत्थाणप्पाबहुअं पढमभासगाहाए विहासिदं तहा चेव वग्गणग्गमहिकिच्च एत्थ वि विहासियव्वं, पवेसप्पाबहुआणुसारेणेव वग्गणप्पाबहुअस्स वि णाणत्तेण विणा पवुत्तिदंसणादो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। एवं विदियभासगाहाए विहासा समत्ता। संपहि तदियभासगाहाए विहासणं कुणमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

* एत्तो तदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ २१७. सुगमं।

* तं जहा।

§ २१८ सुगमं।

(११९) जा हीणा अणुभागेणहिया सा वग्गणा पदेसग्गे।
भागेणणंतिमेण दु अधिगा हीणा च बोद्धव्वा ॥१७२॥

§ २१९ एसा तदियभासगाहा बारसण्हं पि संगहकिट्टीणं जहण्णकिट्टिमादिं कादूण जावुक्कस्स किट्टि त्ति जहाकममवट्ठिदाणमंतरकिट्टीणमणंतरोवणिधाए पदेसग्गेण हीणाहियभावगवेसणट्ठमवइण्णा। संपहि एदिस्से अत्थो वुच्चदे। तं जहा—'जा हीणा अणुभागेण०' जा वग्गणा अणुभागेण हीणा सा पदेसग्गेण अहिया होदि त्ति गाहापुव्वद्धे सुत्तत्थसंबंधो। तत्थ 'वग्गणा' त्ति वुत्ते जहण्ण-किट्टीए सरिसधणियसव्वपरमाणुसमूहो एगा आदिवग्गणा त्ति घेत्तव्वा। एवं विदियादिकिट्टीणं

---

§ २१६ जिस प्रकार प्रथम भाष्यगाथा द्वारा प्रदेशपुंजकी अपेक्षा स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वकी विभाषा की उसी प्रकार वर्गणासमूहका आलम्बन लेकर यहाँपर भी विभाषा करनी चाहिए, क्योंकि प्रदेश अल्पबहुत्वके अनुसार ही वगणा अल्पबहुत्वकी भी नानापनके बिना प्रवृत्ति देखी जाती है इस प्रकार यह इस सूत्रका भावार्थ है। इस प्रकार दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा समाप्त हुई। अब तीसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* अब आगे तीसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ २१७ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ २१८ यह सूत्र सुगम है।

(११९) जो वगणा अनुभागकी अपेक्षा हीन है वह प्रदेशपुंजकी अपेक्षा अधिक होती है। इस प्रकार इन वगणाओंमेंसे प्रत्येक वगणा अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अनन्तवें भागसे हीन या अधिक जाननी चाहिए ॥१७२॥

§ २१९ यह तीसरी भाष्यगाथा बारह ही संग्रह कृष्टियोंमेंसे जघन्य कृष्टिसे लेकर उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक यथाक्रम अवस्थित अन्तर कृष्टियोंकी अनन्तरोपनिधाके अनुसार प्रदेशपुंजकी अपेक्षा हीनाधिकभावकी गवेषणा करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। अब इसका अर्थ कहते हैं। वह जैसे—'जा हीणा अणुभागेण०' जो वर्गणा अनुभागकी अपेक्षा हीन है वह प्रदेशपुंजकी अपेक्षा अधिक होती है इस प्रकार गाथाके पूर्वार्धमें सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। उसमें 'वगणा' ऐसा कहनेपर जघन्य कृष्टिमें सदृश धनवाला समस्त परमाणुसमूहरूप एक आदि वगणा है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार द्वितीयादि कृष्टियोंकी अपेक्षा भी अपनी-अपनी कृष्टिके सदृश धनवाले परमाणुओंकी एक पंक्तिमें रचना करके उत्कृष्ट कृष्टिके प्राप्त होने

पि अप्पप्पणो सरिसधणियपरमाणूणमेगावलियाए विरयणं कादूण पादेक्कमेगेगा वग्गणा समुप्पाएदव्वा जाव उक्कस्सकिट्टि त्ति। एवं च विरचणाए कदाए किट्टीअद्धाणमेत्तिओ चेव वग्गणाओ जादाओ। एवं कयविण्णासाणमेदासिं हेट्ठिमहेट्ठिमा वग्गणा अणुभागेण हीणा होदि। उवरिमउवरिमा अणुभागेणहिया होदि, अणंतगुणवड्ढिकमेणेव तासिमवट्ठाणणियमदंसणादो। एवमवट्ठिदाणमेदासिमोहि पदेसग्गमस्सियूण सेढिपरूवणाए कीरमाणाए विदियवग्गणं पेक्खियूणादिवग्गणा पदेसग्गेण अहिया होदि, जहण्णसत्तीए परिणमंताणं परमाणूणं सुलहत्तदंसणादो। एवमणंतरोवणिधाए सव्वासिं किट्टीवग्गणाणं पदेसग्गेण हीणाहियभावो जाणेयव्वो। संपहि हेट्ठिमवग्गणा उवरिमवग्गणं पेक्खियूण केत्तियमेत्तेण अहिया होदि त्ति एदस्स णिण्णयकरणट्ठं गाहापच्छद्धमोइण्णं 'भागेणणंतिमेण दु०'। अणंतिमभागेणेव हेट्ठिमादो उवरिमा हीणा होदि त्ति भणिदं होइ एगेगवग्गणविसेसमेत्तेण सव्वासिं किट्टीणमणंतराणंतरादो हीणत्तणियमदंसणादो। संपहि एवंविहमेदिस्से गाहाए अत्थं विहासेमाणो विहासागंथमुत्तरं भणइ—

*** विहासा।**

§ २२० सुगमं।

*** तं जहा।**

§ २२१ सुगमं।

*** जहण्णियाए वग्गणाए पदेसग्गं बहुअं।**

तक पृथक् पृथक् एक एक वर्गणा उत्पन्न करनी चाहिए। इस प्रकार रचना करनेपर कृष्टियोंके आयामप्रमाण ही वर्गणाएं हो जाती हैं। इस प्रकार एक पंक्तिमें रचित इन वर्गणाओंमेंसे नीचे नीचेकी वर्गणा अनुभागकी अपेक्षा हीन होती है और उपरिम उपरिम वर्गणा अनुभागकी अपेक्षा अधिक अधिक होती है, क्योंकि अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणी वृद्धिरूपसे ही उनके अवस्थानका नियम देखा जाता है। इस प्रकार इस समय अवस्थित हुई इन वर्गणाओंके प्रदेशपुंजका आलम्बन लेकर श्रेणिप्ररूपणा करनेपर दूसरी वर्गणाको देखते हुए आदि वर्गणा प्रदेशपुंजकी अपेक्षा अधिक होती है, क्योंकि जघन्य शक्तिरूपसे परिणमन करनेवाले परमाणुओंकी सुलभता देखी जाती है। इस प्रकार अनन्तरोपनिधाके अनुसार सब कृष्टिवर्गणाओंके प्रदेशपुंजकी अपेक्षा हीनाधिकपनेकी योजना कर लेनी चाहिए। अब अधस्तन वर्गणा उपरितन वर्गणाको देखते हुए कितने प्रमाणमें अधिक होती है इस प्रकार इस तथ्यका निर्णय करनेके लिए भाष्यगाथाका उत्तरार्ध अवतीर्ण हुआ है— 'भागेणणंतिमेण दु०' अनन्तवें भागप्रमाण ही अधस्तन वर्गणासे उपरिम वर्गणा हीन होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि अनन्तर अनन्तर क्रमसे सभी वर्गणाओंमें एक एक विशेषप्रमाण हीनताका नियम देखा जाता है। अब इस प्रकार इस गाथाके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

*** अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।**

§ २२० यह सूत्र सुगम है।

*** वह जैसे।**

§ २२१ यह सूत्र सुगम है।

*** जघन्य वर्गणामें प्रदेशपुंज बहुत है।**

§ २२२ एत्थ 'जहण्णिया' वग्गणा त्ति वुत्ते जहण्णकिट्टी समाणंतसरिसधणियपरमाणुसहिदा गहेयव्वा । एदिस्से पदेसग्गमुवरिमासेसकिट्टीण पदेसग्गादो बहुगमिदि वुत्त होदि ।

* बिदियाए वग्गणाए पदेसग्गं विसेसहीणमणंतभागेण ।

§ २२३ एत्थ वि बिदियकिट्टी चेव सरिसधणियाणंतपरमाणुसहिदा बिदिया वग्गणा त्ति घेत्तव्वा । अणंतभागेणेत्ति वुत्ते एगवग्गणविसेसमेत्तेणेत्ति घेत्तव्वं । सुगममण्णं ।

* एवमणंतराणंतरेण विसेसहीणं सव्वत्थ ।

§ २२४ एवमणंतराणंतरादो विसेसहीणं कादूण उवरिमवग्गणासु वि सव्वत्थ एसा सेढि परूवणा णदव्वा त्ति वुत्तं होदि । एसा च सेढिपरूवणा सव्वासि संगहकिट्टीण सत्थाणे परत्थाणे च जोजेयव्वा, लोभजहण्णकिट्टिमादिं कादूण जाव कोधुक्कस्सवग्गणा त्ति । परत्थाणे वि अणंतभाग हाणिं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो । एवमणंतरोवणिधाए किट्टीवग्गणासु पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं कादूण संपहि तत्थेव परंपरोवणिधापरूवणट्ठं चउत्थभासगाहाए अवयारं कुणमाणो उवरिम पबंधमाह—

* एत्तो चउत्थी भासगाहा ।

§ २२५ सुगमं ।

§ २२२ इस सूत्रमे 'जघन्य वर्गणा' ऐसा कहनेपर अपने सदृश धनवाले अनन्त परमाणुओ से युक्त जघन्य कृष्टि ग्रहण करनी चाहिए । इसका प्रदेशपुज उपरिम समस्त कृष्टियोके प्रदेशपुजकी अपेक्षा बहुत होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* उससे दूसरी वर्गणामे प्रदेशपुज अनन्तवें भागरूप एक वर्गणाविशेषसे हीन है ।

§ २२३ यहाँपर भी दूसरी कृष्टि ही सदृश धनवाले अनन्त परमाणुओसे युक्त दूसरी वर्गणा है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । 'अणंतभागेण' ऐसा कहनेपर पिछली वर्गणासे अगली वर्गणामे विशेषरूप होनेका जितना प्रमाण हो उतना ग्रहण करना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* इस प्रकार अनन्तर-अनन्तर रूपसे सब वर्गणाओमे विशेष हीन प्रदेशपुज जानना चाहिए ।

§ २२४ इस प्रकार अनन्तर अनन्तररूपसे विशेष हीन करके उपरिम वर्गणाओमें भी सर्वत्र यह श्रेणिप्ररूपणा जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इसी प्रकार इस श्रेणिप्ररूपणाकी सभी सग्रह कृष्टियोकी अपेक्षा स्वस्थान और परस्थानमें योजना कर लेनी चाहिए, क्योकि लोभ संज्वलनको जघन्य कृष्टिसे लेकर क्रोधसज्वलनकी उत्कृष्ट वर्गणाके प्राप्त होने तक परस्थानमें भी अनन्त भागहानिको छोडकर अन्य प्रकार असम्भव है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा कृष्टि वर्गणाओमे प्रदेशपुजकी श्रेणिप्ररूपणा करके अब उन्ही वर्गणाओमें परम्परोपनिधाकी प्ररूपणा करनेके लिए चौथी भाष्यगाथाका अवतार करते हुए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* अब आगे चौथी भाष्यगाथा का कथन करते हैं ।

§ २२५ यह सूत्र सुगम है ।

(१२०) कोधादिवग्गणादो सुद्ध कोधस्स उत्तरपद तु ।
सेसो अणतभागो णियमा तिस्से पदेसग्गे ॥१७३॥

§ २२६ एदस्स गाहासुत्तस्सत्थो वुच्चदे । त जहा—कोहस्स आदिवग्गणा कोहादिवग्गणा । कारगंपढमसंगहकिट्टीए जहण्णकिट्टि त्ति वुत्त होदि । तत्तो कोहादिवग्गणादो सुद्ध सोहिदं कायव्वं । किमेत्थ सोहेयव्वमिदि चे ? वुच्चदे—'कोधस्स उत्तरपद तु' कोधस्सेव चरिम किट्टीए पदेसग्गमेत्थ सोहेयव्वमिदि वुत्त होदि । एवं सोहिदसेसो अणतभागो तिस्से जहण्ण किट्टीए पदेसग्गस्स सुद्धसेसो णियमा अणतभागे चेव होदि, रूवूणकिट्टीसलागमेत्ताण चेव वग्गणविसेसाणमेत्थ सुद्धसेसाणमुवलंभादो । तदो परपरोवणिधाए वि जोइज्जमाणे कोहादि वग्गणाए पदेसग्ग कोधचरिमवग्गणापदेसग्गादो अणतभागब्भहियमेव जहण्णकिट्टीपदेसग्गादो वि उक्कस्सकिट्टीपदेसग्गमणतभागहीण चेव दट्ठव्वमिदि एसो एत्थ सुत्तत्थसगहो ।

(१२०) क्रोधसज्वलनकी आदि वर्गणामेसे क्रोधसज्वलनके उत्तरपद अर्थात् अन्तिम वर्गणाको घटावे । इस प्रकार घटानेपर जो अनन्तवाँ भाग शेष रहता है उतना उस आदि वर्गणामे शुद्ध शेषका प्रमाण होता है ॥१७३॥

§ २२६ अब इस गाथासूत्रका अर्थ कहते हैं । वह जैसे—क्रोधकी आदि वर्गणा क्रोधादि वर्गणा है । कृष्टिकारकके प्रथम सग्रहकृष्टिसम्बन्धी जघन्य कृष्टि यह उक्त पदका अर्थ है । उस क्रोधसम्बन्धी आदि वर्गणामेसे शुद्ध अर्थात् शोधित करना चाहिए ।

शका—इसमेसे किसे शोधित करना चाहिए ?

समाधान—कहते हैं 'कोधस्स उत्तरपद तु' क्रोधकी ही अन्तिम कृष्टिके प्रदेशपुञ्जको इसमेसे अर्थात् आदि वर्गणामेसे शोधित करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

इस प्रकार शोधित करनेके बाद जो अनन्तवाँ भाग शेष बचता है वह उस जघन्य कृष्टिके प्रदेशपुञ्जसम्बन्धी शुद्ध शेष नियमसे अनन्तवें भागमे अर्थात् अनन्तवें भागप्रमाण ही होता है, क्योंकि एक कम कृष्टिशलाका प्रमाण ही वर्गणाविशेषरूप शुद्ध शेष इस आदि वर्गणामे पाये जाते हैं । इसलिए परम्परोपनिधाकी अपेक्षासे भी देखनेपर क्रोधकी आदि वर्गणाका प्रदेशपुञ्ज क्रोधकी अन्तिम वर्गणाके प्रदेशपुञ्जसे अनन्तवें भागमात्र ही अधिक जानना चाहिए और क्रोधकी जघन्य कृष्टिके प्रदेशपुञ्जसे भी उत्कृष्ट कृष्टिका प्रदेशपुञ्ज अनन्तवें भागप्रमाण ही हीन जानना चाहिए यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है ।

विशेषार्थ—पहले अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा पूर्वकी वर्गणासे उसके आगेकी वर्गणामे कितना प्रदेशपुञ्ज हीन होता है इसका कथन करते हुए यह स्पष्ट कर आये हैं कि पहलेकी वर्गणासे अगली वर्गणामे अनन्तवें भागरूप एक विशेषप्रमाण प्रदेशपुञ्ज हीन हुआ है । इसी प्रकार आगे सर्वत्र जानना चाहिए । अब यहाँपर परम्परोपनिधासे विचार करनेपर क्रोधसंज्वलनसम्बन्धी प्रथम सग्रह कृष्टिकी आदि वर्गणामेसे अन्तिम वर्गणाके घटानेपर कितना शेष बचता है इसे स्पष्ट करते हुए उसे अनन्तवें भागप्रमाण ही शेष रहता है यह सूचित किया है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि परम्परोपनिधाकी अपेक्षा भी क्रोधसज्वलनकी जघन्यकृष्टिके प्रदेशपुञ्जसे उसीकी उत्कृष्ट कृष्टिका प्रदेशपुञ्ज अनन्तवें भागप्रमाण ही हीन होता है । इसीको इन शब्दोंमें भी कह सकते हैं कि क्रोधसज्वलनसम्बन्धी प्रथम सग्रह कृष्टिकी उत्कृष्ट कृष्टिके प्रदेशपुञ्जसे उसीकी जघन्य कृष्टिका प्रदेशपुञ्ज अनन्तवें भागप्रमाण अधिक है ।

---

१ ता प्रतौ कारण-इति पाठ ।

§ २२७ संपहि एवंविहमेविस्से गाहाए समुदायत्थ विहासेमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाह—

* विहासा ।

§ २२८ सुगम ।

* एदीए गाहाए परपरोवणिधाए सेढीए भणिद होदि ।

§ २२९. एदीए चउत्थभासगाहाए किट्टीगदवग्गणासु परपरोवणिधाए सेढीए पदेसग्गस्स हीणाहियत्त भणिदं होदि त्ति सुत्तत्थसंबंधो । एवमेविस्से गाहाए परंपरोवणिधाए पडिबद्धत्त मेदेण जाणाविय सपहि तिस्से चेव परपरोवणिधाए परूवणा एवंविहा होदि त्ति विहासणट्ठ मुत्तरसुत्त भणइ—

* कोहस्स जहण्णियादो वग्गणादो उक्कस्सियाए वग्गणाए पदेसग्गं विसेसहीणमणतभागेण ।

§ २३० गयत्थमेद सुत्तं । एव ताव कोहसंजलणस्स परपरोवणिधापरूवणमेदेण गाहासुत्तेण विहासिय सपहि माणादिसंजलणाण पि एवं चेव परपरोवणिधा परूवेयव्वा त्ति जाणावणट्ठ पचमीए भासगाहाए अवयारो कीरदे—

* एत्तो पचमीए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ २३१ सुगम ।

---

§ २२७ अब इस गाथाके इस प्रकार समुदायरूप अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्र प्रबन्धको कहते हैं—

* अब इस चौथी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं ।

§ २२८ यह सूत्र सुगम है ।

* इस भाष्यगाथा द्वारा परम्परोपनिधारूप श्रेणिकी अपेक्षा प्रदेशपुजकी हीनाधिकता कही गयी है ।

§ २२९ इस चौथी भाष्यगाथा द्वारा कृष्टिगत वर्गणाओमें परम्परोपनिधारूप श्रेणिकी अपेक्षा प्रदेशपुजकी हीनाधिकता कही गयी है यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है । इस प्रकार यह गाथा परम्परोपनिधासे प्रतिबद्ध है इसका इस कथन द्वारा ज्ञान कराकर अब उसी परम्परोपनिधाकी प्ररूपणा इस प्रकार होती है इस बातकी विभाषा करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* क्रोध संज्वलनकी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणाका प्रदेशपुज अनन्तवें भागरूपसे विशेष हीन होता है ।

§ २३० यह सूत्र गतार्थ है । इस प्रकार सर्वप्रथम क्रोध संज्वलनसम्बन्धी परम्परोपनिधाकी प्ररूपणाका इस गाथासूत्र द्वारा विशेषरूपसे कथन कर अब मानादि संज्वलनोकी भी परम्परोपनिधका इसी प्रकार कथन करना चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए पाँचवीं भाष्य गाथाका अवतार करते हैं—

* अब आगे पाँचवीं भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ २३१ यह सूत्र सुगम है ।

* त जहा ।

§ २३२ सुगम ।

(१२१) एसो कमो च कोधे माणे णियमा च होदि मायाए ।
लोभम्हि च किट्टीए पत्तेग होदि बोद्धव्वो ॥१७४॥

§ २३३ जो एसो कमो कोधे परूविदो सो चेव णिरवसेसो माण माया लोभेसु वि अप्पप्पणो किट्टीओ णिरुंभियूण पादेक्क जोजेयव्वो त्ति वुत्त होदि । सपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागथमाह—

* विहासा ।

§ २३४ सुगम ।

* जहा कोहे चउत्थीए गाहाए विहासा तहा माण माया-लोभाण पि णेदव्वा ।

§ २३५ जहा चउत्थीए भासगाहाए कोहसजलणमहिकिच्च परपरोवणिधा परूविदा तहा चेव माण माया-लोभाण पि परपरोवणिधा णेदव्वा त्ति सुत्तत्थसगहो । सपहि माणादिसु पयदत्थजोजणा एव कायव्वा त्ति जाणावणट्ठमिदमाह—

* माणादिवग्गणादो सुद्ध माणस्स उत्तरपद तु ।
सेसो अणतभागो णियमा तिस्से पदेसग्गे ॥

---

* वह जैसे ।

§ २३२ यह सूत्र सुगम है ।

(१२१) जो यह क्रम क्रोधसज्वलनकी कृष्टियोके विषयमे कहा है वही क्रम नियमसे मान, माया और लोभ इनमेसे प्रत्येक कषायकी कृष्टियोके विषयमे जानना चाहिए ॥१७४॥

§ २३३ जो यह क्रम क्रोध सज्वलनके विषयमे प्ररूपित किया है निश्शेषरूपसे वही क्रम मान, माया और लोभसज्वलनोके विषयमे भी अपनी अपनी कृष्टियोको विवक्षित कर प्रत्येकको योजना करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब इसी अथको स्पष्ट करनेके लिए आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस पाँचवीं भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं ।

§ २३४ यह सूत्र सुगम है ।

* जिस प्रकार चौथी भाष्यगाथामे क्रोधसज्वलनकी प्ररूपणा की उसी प्रकार मान, माया और लोभसज्वलनकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए ।

§ २३५ जिस प्रकार चौथा भाष्यगाथामे क्रोधसज्वलनको अधिकृत करके परम्परोपनिधा की प्ररूपणा की उसी प्रकार मान, माया और लोभकी अपेक्षा भी परम्परोपनिधाका कथन करना चाहिए यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है । अब मानादिकमे प्रकृत अथकी योजना इस प्रकार करनी चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* मानसज्वलनकी आदि वर्गणामेसे मानसज्वलनके उत्तरपद अर्थात् अन्तिम वर्गणाको घटावे । इस प्रकार घटानेपर जो अनन्तवाँ भाग शेष रहता है उतना उसकी आदि वर्गणामे शुद्ध शेषका प्रमाण होता है ।

* एवं चेव मायादिवग्गणादो० ।

* लोभादिवग्गणादो० ।

§ २३६ एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि त्ति ण एत्थ किंचि वक्खाणेयव्वमत्थि, जाणिदजाणावणे फलाभावादो। एवमेदासु पंचसु भासगाहासु विहासिदासु मूलगाहाए' किट्टी च पदेसग्गेणेत्ति' पढमो अत्थो समत्तो भवदि। संपहि 'अणुभागग्गेणेत्ति' मूलगाहाविदियावयवमस्सियूण विदियस्स अत्थस्स विहासणं कुणमाणो तत्थ पडिबद्धा एक्का भासगाहा अत्थि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* मूलगाहाए विदियपदमणुभागग्गेणेत्ति । एत्थ एक्का भासगाहा ।

§ २३७ 'अणुभागग्गेणेत्ति' जं मूलगाहाए विदियं बीजपदं संगहकिट्टीणमणुभागग्गेण हीणाहियभावगवेसणट्ठमोइण्णं तस्स विहासणट्ठमेत्थ एक्का भासगाहा होदि। तिस्से समुक्कित्तणमिदाणिं कस्सामो त्ति भणिदं होदि ।

* तं जहा ।

§ २३८ सुगमं ।

(१३२) पढमा च अणंतगुणा विदियादो णियमसा दु अणुभागो ।
तदियादो पुण विदिया कमेण सेसा गुणेणहिया ॥ १७९ ॥

इसी प्रकार माया सज्वलनकी आदि वर्गणामेंसे मायासंज्वलनके उत्तर पद अर्थात् अन्तिम वर्गणाको घटावे। इस प्रकार घटानेपर जो अनन्तवाँ भाग शेष रहता है उतना उसकी आदि वर्गणामें शुद्ध शेषका प्रमाण होता है।

तथा इसी प्रकार लोभसंज्वलनकी आदि वर्गणामेंसे लोभ संज्वलनके उत्तरपद अर्थात् अन्तिम वर्गणाको घटावे। इस प्रकार घटानेपर जो अनन्तवाँ भाग शेष रहता है उतना उसकी आदि वर्गणामे शुद्ध शेषका प्रमाण होता है।

§ २३६ ये सूत्र सुगम हैं, इसलिए यहाँपर कुछ व्याख्यातव्य नही है, क्योंकि जिनका ज्ञान करा दिया गया है उनका पुनः ज्ञान करानेमे फलका अभाव है। इस प्रकार इन पाँच भाष्यगाथाओ की विभाषा करनेपर मूलगाथाके 'किट्टी च पदेसग्गेण' इस चरणका प्रथम अर्थ समाप्त होता है। अब मूलगाथाके 'अणुभागग्गेण इस दूसरे पदका अवलम्बन लेकर दूसरे अर्थकी विभाषा करते हुए उस अर्थमे प्रतिबद्ध एक भाष्यगाथा है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* मूलगाथाका जो दूसरा पद 'अणुभागग्गेण' है उसमे एक भाष्यगाथा आयी है।

§ २३७ मूलगाथाका जो 'अणुभागग्गेण' दूसरा बीजपद है वह संग्रह कृष्टियोंके अनुभाग पुंजकी अपेक्षा हीनाधिक भावकी गवेषणा करनेके लिए अवतीर्ण हुआ है। उसकी विभाषा करनेके लिए प्रकृतमें एक भाष्यगाथा है। प्रकृतमें उसकी समुत्कीर्तना करेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* वह जैसे ।

§ २३८ यह सूत्र सुगम है।

(१२२) क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे प्रथम संग्रह कृष्टि अनुभागपुंजकी अपेक्षा नियमसे अनन्तगुणी अधिक है। पुन तीसरी संग्रहकृष्टिसे दूसरी संग्रहकृष्टि अनुभागपुंजकी अपेक्षा अनन्तगुणी है। इसी प्रकार मान, माया और लोभ सज्वलनकी तीनों संग्रह कृष्टियाँ तीसरीसे दूसरी और दूसरीसे पहली क्रमसे अनन्तगुणी अधिक हैं।

§ २३९. कोहसजलणस्स पढमसगहकिट्टी तस्सेव विदियादो संगहकिट्टीदो णिच्छएणेष अणुभागग्गेण अणतगुणा होदि त्ति गाहापुव्वद्धे सुत्तत्थसमुच्चओ। 'तदियादो पुण बिदिया' एव भणिदे कोहसजलणस्स तदियसगहकिट्टीदो विदियसगहकिट्टी अणुभागग्गेण णियमा अणतगुणा वट्टव्वा त्ति भणिद होदि। एदस्स भावत्थो—कोधवेदगतदियसंगहकिट्टीए सव्वाविभागपडिच्छेदपुजादो विदियसगहकिट्टीए सव्वाविभागपडिच्छेदपुजो अणतगुणो। तत्तो पुण पढमसगहकिट्टीए सव्वाविभागपडिच्छेदपुजो अणतगुणो। गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो अणतगुणमेत्तो, सत्थाण परत्थाणेसु अविभागपडिच्छेदगुणगाराण तहाभावसिद्धीए बाहाणुवलभादो त्ति।

§ २४०. 'कमेण सेसा गुणेणहिया' एव भणिदे माण माया लोभाणं पि तिण्णि संगहकिट्टीओ अप्पप्पणो तदियसगहकिट्टिमादि कादूण जहाकममणतगुणसरूवेण अहिया होति त्ति भणिद होदि। एवमेदेण गाहासुत्तेण कोह माण माया लोभाणमप्पप्पणो तिण्ह सगहकिट्टीणमप्पाबहुअ उवइट्ठ वट्टव्व। एदम्हादो चेव परत्थाणप्पाबहुअमतरकिट्टी अप्पाबहुअ किट्टीअंतरप्पाबहुअ च सूचिदमिदि गहेयव्व। सपहि एवविहमेदिस्से गाहाए अत्थे विहासमाणो चुण्णिसुत्तयारो विहासागथमुत्तर भाढवेइ—

* विहासा।

§२४१ सुगम।

* सगहकिट्टि पडुच्च कोहस्स तदियाए सगहकिट्टीए अणुभागो थोवो।

§ २३९. क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टि उसीकी दूसरी संग्रहकृष्टिसे अनुभागपिडकी अपेक्षा निश्चयसे ही अनन्तगुणी होती है यह इस भाष्यगाथाके पूर्वार्धमे सूत्रका समुच्चयरूप अथ है। 'तदियादो पुण विदिया' ऐसा कहनेपर क्रोधसज्वलनकी तीसरी सग्रहकृष्टिसे दूसरी सग्रहकृष्टि अनुभागपिण्डकी अपेक्षा नियमसे अनन्तगुणी जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इसका भावार्थ—क्रोधवेदकके तीसरी सग्रह कृष्टिके समस्त अविभागप्रतिच्छेदपुजसे दूसरी सग्रह कृष्टिका समस्त अविभाग प्रतिच्छेदपुज अनन्तगुणा है। पुन उससे प्रथम सग्रह कृष्टिका अविभाग प्रतिच्छेदपुञ्ज अनन्तगुणा है। गुणकार अभव्योसे अनन्तगुणा है क्योकि स्वस्थान और पर स्थानमे अविभागप्रतिच्छेदके गुणकारकी उसरूपमे सिद्धि होनेमे बाधा नही पायी जाती।

§ २४०. 'कमेण सेसा गुणेणहिया' ऐसा कहनेपर मान माया और लोभसज्वलन प्रत्येककी ये तीनो ही सग्रह कृष्टियाँ अपनी अपनी तीसरी सग्रह कृष्टिसे लेकर दूसरी और दूसरीसे पहली सग्रह कृष्टियाँ क्रमसे अनन्तगुणस्वरूपसे अधिक अधिक होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार इस गाथा सूत्र द्वारा क्रोध, मान माया और लोभसज्वलनसम्बन्धी अपनी अपनी तीनो संग्रह कृष्टियोका अल्पबहुत्व कहा हुआ जानना चाहिए। तथा इसी भाष्यगाथासे ही परस्थान अल्पबहुत्व, अन्तरकृष्टि अल्पबहुत्व और कृष्टि अन्तर अल्पबहुत्व सूचित किया गया है ऐसा जानना चाहिए। अब इस प्रकार इस गाथाके अर्थकी विभाषा करते हुए चूर्णिसूत्रकार आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ २४१ यह सूत्र सुगम है।

* सग्रहकृष्टिकी अपेक्षा क्रोधसज्वलनकी तीसरी सग्रह कृष्टिका अनुभाग सबसे स्तोक है।

§ २४२ एत्थ 'संगहकिट्टि पडुच्चेत्ति' णिद्देसो संगहकिट्टीओ अस्सियूण एवमप्पाबहुअं परूविज्जदि त्ति पदुप्पायणफलो। 'तदियाए संगहकिट्टीए' त्ति वुत्ते कारगपढमसंगहकिट्टीए गहणं कायव्वं। सेसं सुगमं।

* विदियाए संगहकिट्टीए अणुभागो अणंतगुणो।

§ २४३ सुगमं।

* पढमाए संगहकिट्टीए अणुभागो अणंतगुणो।

§ २४४ सुगममेदं पि। णवरि उहयत्थ वि गुणगारमभवसिद्धिएहिं अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमिदि घेत्तव्वं। कुदो एदं णव्वदे? सुत्ताविरुद्धपरमगुरूवएसादो।

* एवं माण-माया-लोभाणं पि।

§ २४५ जहा कोहसंजलणस्स तिण्हं संगहकिट्टीणं सत्थाणप्पाबहुअमेवं परूविदं तहा चेव माण माया लोभसंजलणाणं पि वत्तव्वं, विसेसाभावादो त्ति। संपहि एदेण सुत्तेण सूचिदो परत्थाणप्पाबहुआलावो सुगमो। अंतरकिट्टीणं किट्टीअंतराणं च अप्पाबहुअं पुव्वमेव पवंचिदमिदि ण पुणो तप्पवंचो कीरदे, जाणिदजाणावणे फलाणुवलंभादो। एवमेदीए परूवणाए समत्ताए तदो मूलगाहाए विदिओ अत्थो समत्तो।

---

§ २४२ इस सूत्रमें संगहकिट्टि पडुच्च यह निर्देश संग्रह कृष्टियोंका आलम्बन लेकर इस अल्पबहुत्वको कहते हैं यह इस कथनका फल है। 'तदियाए संगहकिट्टीए' ऐसा कहनेपर कृष्टि कारकका प्रथम संग्रहकृष्टिका ग्रहण करना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

* उससे दूसरी संग्रह कृष्टिका अनुभाग अनन्तगुणा है।

§ २४३ यह सूत्र सुगम है।

* उससे प्रथम संग्रहकृष्टिका अनुभाग अनन्तगुणा है।

§ २४४ यह सूत्र भी सुगम है। इतनी विशेषता है कि दोनों ही स्थलोंपर गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ग्रहण करना चाहिए।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—सूत्रके अविरुद्ध परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

* इसी प्रकार मान, माया और लोभ संज्वलनके अनुभाग सम्बन्धी अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिए।

§ २४५ जिस प्रकार क्रोध संज्वलनकी तीनों संग्रह कृष्टियोंका यह स्वस्थान अल्पबहुत्व कहा उसी प्रकार मान, माया और लोभसंज्वलनोंका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। अब इस सूत्र द्वारा सूचित किये गये परस्थान अल्पबहुत्वका आलाप सुगम है तथा अन्तरकृष्टियों और कृष्टिअन्तरोंके अल्पबहुत्वका पहले ही विस्तारसे कथन कर आये हैं, इसलिए पुन उनका विस्तारसे कथन नहीं करते, क्योंकि जिनका पूर्वमें ज्ञान करा दिया है उनका पुन ज्ञान करानेमें कोई फल नहीं पाया जाता। इस प्रकार इतनी प्ररूपणाके समाप्त होनेके पश्चात् मूलगाथाका दूसरा अर्थ समाप्त होता है।

§ २४६ सपहि मूलगाहाए तदियावयवमस्सियूण तत्थ पडिबद्धस्स तदियस्स अत्थस्स विहासणं कुणमाणो उवरिमसुत्तपबंधमाढवेइ—

* मूलगाहाए तदियपदं 'का च कालेणे'त्ति ।

§ २४७ जं मूलगाहाए तदियमत्थपदं तस्सेदाणिमत्थविहासणं कस्सामो त्ति वुत्तं होइ । संपहि एत्थ पडिबद्धाणं भासगाहाणं पमाणावहारणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* एत्थ छब्भासगाहाओ ।

§ २४८ एदम्हि पदे पडिबद्धस्स अत्थस्स विहासणट्ठमेत्थ छब्भासगाहाओ णादव्वाओ त्ति भणिदं होइ । जइ एवं, णाढवेयव्वमिदं सुत्तं, पुव्वमेव तत्थ छण्हं भासगाहाणमत्थित्तस्स परूविदत्तादो ? ण एस दोसो, तासिमण्णिं विहासणट्ठ पुव्वुत्तस्सेवत्थस्स संभालणे दोसाभावादो । संपहि जहाकममेव तासिं समुक्कित्तणं विहासणं च कुणमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाह—

विशेषार्थ– प्रकृतमें क्रोधसंज्वलनकी तीनों संग्रह कृष्टियोंका अनुभागकी अपेक्षा स्वस्थान अल्पबहुत्व कहा है । उसके क्रमका निर्देश मूलमें किया ही है । तथा मान, माया और लोभ संज्वलनमेंसे प्रत्येककी तीनों संग्रहकृष्टियोंके अनुभागसम्बन्धी स्वस्थान अल्पबहुत्वको इसी प्रकार जाननेकी सूचना की है । यद्यपि यहाँपर परस्थान अल्पबहुत्वका निर्देश नहीं किया है फिर भी उसे उसी प्रकारसे जान लेना चाहिए, क्योंकि जिस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्वमें गुणकारका प्रमाण अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता है वैसे ही परस्थान अल्पबहुत्वमें भी सामान्यरूपसे गुणकारका यही प्रमाण जानना चाहिए । अन्तरकृष्टियोंके मध्य एक अन्तरकृष्टिसे दूसरी अन्तरकृष्टि कितनी बड़ी या छोटी है तथा अन्तरकृष्टियोंके मध्य परस्पर जो अन्तराल है वह कितना है इसको प्राप्त करनेके लिए भी गुणकारका सामान्यरूपसे यही प्रमाण जानना चाहिए । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

§ २४६ अब मूलगाथाके तीसरे अवयवका आलम्बन लेकर उसमें प्रतिबद्ध तीसरे अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धका आरम्भ करते हैं—

* मूलगाथाका तीसरा पद है—'का च कालेण' ।

§ २४७ जो मूलगाथाका तीसरा अर्थपद है उसकी इस समय अर्थसम्बन्धी विभाषा करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब इस अर्थमें प्रतिबद्ध भाष्यगाथाओंके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इस अर्थमें छह भाष्यगाथाएँ हैं ।

§ २४८ इस पदमें प्रतिबद्ध अर्थकी विभाषा करनेके लिए प्रकृतमें छह भाष्यगाथाएं जानना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—यदि ऐसा है तो इस सूत्रका आरम्भ नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके पूर्व ही इस अर्थमें छह भाष्यगाथाओंका अस्तित्व कह आये हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि उनकी यहाँपर विभाषा करनेके लिए पूर्वोक्त अर्थकी सम्हाल की गयी है, इसलिए कोई दोष नहीं है ।

अब क्रमसे ही उनकी समुत्कीर्तना और विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* तासिं समुक्कित्तणा च विहासा च ।

§ २४९ सुगम ।

(१३३) पढमसमयकिट्टीण कालो वस्स व दो व चत्तारि ।
अट्ठ च वस्साणि ट्ठिदी विदियट्ठिदीए समा होदि ॥१७६॥

§ २५० एसा पढमभासगाहा किट्टीवेदगस्स पढमसमए मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्मपमाणावहारणट्ठमोइण्णा । सपहि एदस्स गाहासुत्तस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा—'पढमसमए किट्टीण कालो' एव भणिदे किट्टीकारगपढमसमय मोत्तूण किट्टीवेदगपढमसमए एसो कालणिद्देसो कीरदि त्ति घेत्तव्व[1] । सुत्ते तहाणिद्देसाभावे कथमेसो विसेसो लब्भदि त्ति णासंकणिज्ज, वक्खाणादो तहाविह विसेसपडिवत्तिसिद्धीदो । अण्ण च किट्टीण कालपमाणमेत्थ पक्कवेदुमाढत्त । ण च किट्टीकारगस्स पढमसमए पक्कविज्जमाण ट्ठिदिसतकम्मपमाण किट्टीण कालो त्ति वोत्तु सक्किज्जदे, किट्टीफद्दय साहारणस्स तस्स किट्टीण चेव कालो त्ति वोत्तुमसक्कियत्तादो । तम्हा विणट्ठेसु वि फद्दएसु किट्टीओ चेव सुद्धाओ घरेदूण ट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टिवेदगस्स तदवत्थाए पढमसमयकिट्टीओ णाम भणति । तासि पढमसमयकिट्टीण कालो किंपमाणो त्ति आसकिय 'वस्स व दो व चत्तारि अट्ठ य वस्साणि ट्ठिदी' त्ति तस्स पमाणणिद्देसो कदो । एगवस्सपमाणो दोवस्सपमाणो चत्तारिवस्सपमाणो अट्ठवस्स पमाणो च तासि ट्ठिदिकालो होदि त्ति वुत्त होदि ।

---

* अब उन भाष्यगाथाओकी समुत्कीतना और विभाषा करते हैं ।

§ २४९ यह सूत्र सुगम है ।

(१३३) कृष्टियोंके वेदन करनेके प्रथम समयमे द्वितीय स्थितिके साथ प्रथम स्थितिका काल एक वष, दो वष, चार वष या आठ वषप्रमाण होता है ।

§ २५० यह प्रथम भाष्यगाथा कृष्टि वेदकके प्रथम समयमे मोहनीयकमके स्थितिसत्कमके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए अवतीण हुई है । अब इस गाथासूत्रका अथ कहते हैं । वह जैसे—प्रथम समयमे कृष्टियोका काल ऐसा कहनेपर कृष्टिकारकके प्रथम समयको छोड़कर कृष्टिवेदकके प्रथम समयमे इस कालका निर्देश करते हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शका—सूत्रमे उस प्रकारके निर्देशके अभावमे यह विशेष कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान—ऐसी आशका नही करनी चाहिए, क्योकि व्याख्यानसे उस प्रकारके विशेषकी प्रतिपत्ति सिद्ध है । दूसरी बात यह है कि कृष्टियोके कालका प्रमाण यहाँपर कहनेके लिए आरम्भ किया है । कृष्टिकारकके प्रथम समयमे कहे जानेवाले स्थितिसत्कमके प्रमाणको कृष्टियो का काल कहना शक्य नही है, क्योकि जो काल कृष्टियो और स्पर्धकोमे साधारणरूपसे अवस्थित है उसे मात्र कृष्टियोका काल कहना अशक्य है । इसलिए स्पर्धकोके विनष्ट हो जानेपर भी शुद्ध (केवल) कृष्टियोका ही आश्रय लेकर जो प्रथम समयवर्ती कृष्टियोका वेदन करनेवाला जीव अवस्थित है उस प्रथम समयवर्ती कृष्टिवेदकके उसको उस अवस्थामे प्रथम समयवर्ती कृष्टियाँ कहलाती हैं ।

प्रथम समयमें स्थित उन कृष्टियोंके कालका क्या प्रमाण है ऐसी आशंका करके 'वस्स व दो व चत्तारि अट्ठ य वस्साणि ट्ठिदी' अर्थात् उनकी स्थिति एक वर्ष है, दो वर्ष है, चार वर्ष है और आठ वर्ष है—इस प्रकार उस कालका निर्देश किया है । एक वषप्रमाण, दो वषप्रमाण, चार वर्षप्रमाण और आठ वर्षप्रमाण उन कृष्टियोका स्थितिकाल है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

---

१ आ प्रतौ वक्तव्य इति पाठ ।

§ २५१ तत्थ लोभोदएण चडिदस्स सेससंजलणेसु फद्दयसरूवेण विणट्ठेसु संतेसु लोभसंजलणस्स किट्टीवेदगभावपढमसमए वट्टमाणस्स लोभसंजलणकिट्टीण ट्ठिदिसंतकम्मपमाणमेगवस्समेत्तं होदि । मायोदएण चडिदस्स माया लोभकिट्टीण ट्ठिदिसंतकम्मं वेवस्सपमाणं होदि । माणोदएण चडिदस्स माण माया लोभसंजलणाणं किट्टीविसेसिदट्ठिदिसंतकम्मं चत्तारिवस्सपमाणं होदि । कोहोदएण चडिदस्स चउण्हं संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं पढमसमयकिट्टीविसेसिदमट्ठवस्सपमाणं होदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो । 'विदियट्ठिदीए समा होदि' त्ति एवं भणिदे विदियट्ठिदीए सह पढमट्ठिदिं घेत्तूण एसो अणंतरो कालपमाणणिद्देसो कदो । ण केवलं विदियट्ठिदीए चेवेत्ति वुत्तं होइ, पढम विदियट्ठिदीओ अंतरट्ठिदीओ च घेत्तूण णिरुद्धसमयविसयट्ठिदिसंतकम्मस्स तप्पमाणत्तं दंसणादो ।

§ २५२ संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिमं विहासागंथमोदारइस्सामो—

* विहासा ।

§ २५३ सुगमं ।

~ ~ ~

§ २५१ लोभसंज्वलनके उदयसे क्षपक श्रेणिपर चढे हुए जीवके शेष संज्वलनोंके स्पर्धकरूपसे नष्ट हो जानेपर लोभसंज्वलनसम्बन्धी कृष्टियोंके वेदकभावके प्रथम समयमें विद्यमान हुए जीवके लोभसंज्वलनसम्बन्धी कृष्टियोंके स्थितिसत्कर्मका प्रमाण एक वर्ष मात्र होता है । मायासंज्वलनके उदयसे क्षपक श्रेणिपर चढे हुए जीवके माया और लोभ संज्वलनसम्बन्धी कृष्टियोंका स्थिति सत्कर्म दो वर्ष प्रमाण होता है । मानसंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढे हुए जीवके मान, माया और लोभसंज्वलनोंका कृष्टिसम्बन्धी स्थितिसत्कर्म चार वर्ष प्रमाण होता है । तथा क्रोधसंज्वलनके उदयसे क्षपक श्रेणि पर चढे हुए जीवके चारों संज्वलनोंका प्रथम समयवर्ती स्थितिसत्कर्मका काल आठ वर्षप्रमाण होता है यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है । विदियट्ठिदीए समा होदि इस प्रकार कहनेपर द्वितीय स्थितिके साथ प्रथम स्थितिको ग्रहण करके यह अनन्तर पूर्वकालका निर्देश किया है । यह केवल द्वितीय स्थितिका काल नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है क्योंकि प्रथम स्थिति, द्वितीय स्थिति और अन्तर कृष्टियोंको ग्रहण कर विवक्षित समयको विषय करने वाला स्थितिसत्कर्म तत्प्रमाण देखा जाता है ।

विशेषार्थ—लोभसंज्वलनके उदयसे जो जीव क्षपकश्रेणिपर चढ़ता है वह मात्र लोभ संज्वलनसम्बन्धी तीनों संग्रह कृष्टियोंका कारक होता है । इसी प्रकार मायासंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढ़नेवाला जीव माया और लोभसंज्वलनसम्बन्धी छह कृष्टियोंका कारक होता है । मानसंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढ़नेवाला जीव मान, माया और लोभसम्बन्धी नौ संग्रह कृष्टियोंका कारक होता है तथा क्रोधसंज्वलनके उदयसे क्षपक श्रेणिपर चढ़नेवाला जीव चारों संज्वलनोंसम्बन्धी बारह कृष्टियोंका कारक होता है । साथ ही ऐसा भी नियम है कि जब यह जीव उक्त कृष्टियोंका कारक होता है उस समय उसके विवक्षित कृष्टिगत स्थितिसत्कर्मके साथ स्पर्धकगत स्थितिसत्कर्म भी पाया जाता है और प्रकृतमें कृष्टिगत स्थितिसत्कर्मका ही काल कहा जा रहा है, इसलिए इसे कृष्टियोंके उदयके प्रथम समयका ही जानना चाहिए । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

§ २५२ अब इसी अर्थका स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं ।

§ २५३ यह सूत्र सुगम है ।

*** जदि कोधेण उवट्ठिदो किट्टीओ वेदेदि तदो तस्स पढमसमए वेदगस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्ममट्ठवस्साणि ।**

§ २५४ कोहोवएण[खवगसेढिमुवट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टीवेदगावत्थाए वट्टमाणस्स मोहणीय ट्ठिदिसतकम्मपमाणमट्ठवस्समेत्त होदि त्ति सुत्तत्थसगहो। एसो कालणिद्देसो चदुण्ह पि संजलणाणं सव्वासिमेव सगहकिट्टीण पढम बिदियट्ठिदीओ सपिडियूण अट्ठवस्समेत्तो त्ति गहेयव्वो। होउ णाम कोहसजलणपढमसंगहकिट्टीए एसो कालणिद्देसो, वेदिज्जमाणाए तिस्से पढमट्ठिदिसंभवेण पढमबिदियट्ठिदिसमूहारद्धस्स ट्ठिदिसतस्स तत्थ तप्पमाणत्तोवलभादो। ण सेसाण सगहकिट्टीणं, तासिं पढमट्ठिदिसभवाभावेण अतोमुहुत्तूणट्ठवस्समेत्तबिदियट्ठिदीए चेव गहणे कीरमाणे सपुण्णट्ठ-वस्समेत्तट्ठिदिसतकम्मपमाणाणुवलभादो त्ति ? ण एस दोसो, वेदिज्जमाणकोहसजलणपढमसगह किट्टीए पढमट्ठिदिपढमसमए वट्टमाणस्स सेससगहकिट्टीण पि तत्तो प्पहुडि जाव बिदियट्ठिदिचरिम समयो त्ति सपुण्णट्ठवस्समेत्तट्ठिदिसंतकम्मसिद्धीए णिप्पडिबधमुवलभादो। ण च णिसेगसुण्णाण मतरट्ठिदीणमेत्थ ट्ठिदित्तासभवो, कालपहाणत्तावलंबणे तासिं पि तदतब्भाववसणादो।

*** यदि क्रोधसज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढ़कर कृष्टियोंका वेदन करता है तब प्रथम समयमे वेदन करनेवाले उसके मोहनीय कर्मका स्थिति सत्कम आठ वर्षप्रमाण होता है।**

§ २५४ क्रोधके उदयसे जो क्षपकश्रेणि पर आरोहण करता है प्रथम समयमें कृष्टियोंका वेदन करनेवाले उस जीवके विद्यमान मोहनीयकर्मके स्थितिसत्कर्मका प्रमाण आठ वर्षमात्र होता है यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। यह कालका निर्देश चारो ही सज्वलनोसम्बन्धी सभी संग्रहकृष्टियोकी प्रथम और द्वितीय स्थितिको मिलाकर आठ वर्षप्रमाण होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शका—क्रोधसज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका यह कालनिर्देश भले ही होवे, क्योकि वेद्यमान उसकी प्रथम स्थिति सम्भव होनेसे प्रथम स्थिति और द्वितीय स्थितिके समूहसे आरम्भ किये गये स्थितिसत्कमकी वहाँपर तत्प्रमाण स्थिति उपलब्ध होती है, शेष सग्रह कृष्टियोकी यह स्थिति नही हो सकती, क्योकि उनकी प्रथम स्थिति सम्भव नही होनेसे अन्तर्मुहूर्त कम आठ वर्ष प्रमाण द्वितीय स्थितिके ही ग्रहण करनेपर उनकी सम्पूर्ण आठ वर्षप्रमाणमात्र स्थितिसत्कमका प्रमाण नही उपलब्ध होता ?

समाधान—यह कोई दोष नही है, क्योकि क्रोधसज्वलनकी वेद्यमान प्रथम सग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थितिके प्रथम समयमे विद्यमान हुए जीवके शेष संग्रह कृष्टियोकी भी उस समयसे लेकर द्वितीय स्थितिसत्कमके अन्तिम समयतक सम्पूर्ण आठ वर्षप्रमाण स्थितिसत्कर्मकी सिद्धि बिना बाधाके पाई जाती है। और निषेकोसे शून्य अन्तर स्थितियोका स्थितिपना यहाँपर असम्भव नही है, क्योकि कालकी प्रधानताका अवलम्बन करनेपर निषेकोसे शून्य अन्तर स्थितियोका भी उस कालमे अन्तर्भाव देखा जाता है।

विशेषार्थ—ऐसा नियम है कि जिस समय जिस सग्रह कृष्टिका वेदन करता है उस समय उस सग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थिति अन्तर्मुहूतप्रमाण होती है, शेष संग्रह कृष्टियोकी प्रथम स्थिति नही होती। अत यहाँ शकाकारका यह कहना है कि जिस समय यह जीव क्रोध सज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदन प्रारम्भ करता है उस समय शेष ग्यारह सग्रह कृष्टियोकी प्रथम स्थिति न होनेसे उनका स्थितिसत्कर्म अन्तर्मुहूर्तकम आठ वर्षप्रमाण कहना चाहिए। इसका समाधान यह है कि यहाँपर कालप्रधान स्थितिसत्कमका निर्देश किया गया है निषेकप्रधान स्थिति

§ २५५ जदि वि सुत्ते दव्वट्ठियणयमस्सियूण 'मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं' इदि सामण्ण णिद्देसो कदो तो वि चदुण्हं संजलणाण संगहकिट्टीभेदेण पादेक्क तिधाविभिण्णाणमेसो कालणिद्देसो जोजेयव्वो, सामण्णणिद्देसेण सव्वेसिमेव विसेसाण संगहेविरोहादो। 'संगृहीताशेषविशेषलक्षण सामान्यं' इति वचनात्।

※ माणेण उवट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टीवेदगस्स ट्ठिदिसंतकम्मं चत्तारि वस्साणि।

§ २५६ कोहेण उवट्ठिदो जम्हि उद्देसे कोहकिट्टीओ वेदेदि तम्हि उद्देसे माणोदयक्खवगो तिण्हं संजलणाण किट्टीकारगो होदूण पुणो कोहोदयक्खवगो जम्हि उद्देसे माणकिट्टीओ वेदेदुमाढवेदि तम्हि चेव उद्देसे पढमसमयकिट्टीवेदगो होदि। तत्थ ट्ठिदिसंतकम्मपमाणं तिण्हं संजलणाण संपुण्णचत्तारिवस्समेत्तं होइ त्ति सुत्तत्थसंगहो।

※ मायाए उवट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टीवेदगस्स वेवस्साणि मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं।

सत्कर्मका निर्देश नहीं किया गया है, अत द्वितीय स्थितिके कालमे अन्तर स्थितियोका काल सम्मिलित हो जानेसे शेष ग्यारह सग्रह कृष्टियोंके स्थितिसत्कमका काल भी पूरा आठ वर्षप्रमाण बन जाता है। यहाँ यह शका निषेकस्थितिको ध्यानमे रखकर की गई है। कारण कि प्रथम सग्रह कृष्टिका वेदन प्रारम्भ करते समय शेष ग्यारह सग्रह कृष्टियोके अन्तरायामप्रमाण निषेक नहीं होते इसलिए शेष ग्यारह सग्रह कृष्टियोंकी आठ वषप्रमाण स्थितिमेसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण स्थिति कम हो जानी चाहिए। यह शकाकारका कहना है, किन्तु सभी सग्रह कृष्टियोके द्वितीय स्थिति सम्बन्धी जो उपरितन निषेक हैं वे कितने काल प्रमाण स्थितिको लिये हुए है इसका यदि विचार किया जाता है तो क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिके उदयके प्रथम समयमें वह उनका स्थिति काल पूरे आठ वर्षप्रमाण प्राप्त होता है कारण कि अन्तरायामका अन्तर्मुहूर्त काल उसमें सम्मिलित है ही। इसलिए यहाँ सभी सग्रह कृष्टियोका काल पूरा आठ वर्षप्रमाण कहा है।

§ २५५ यद्यपि सूत्रमे द्रव्यार्थिकनयका आलम्बन लेकर 'मोहनीय कमका स्थितिसत्कर्म' ऐसा सामान्य निर्देश किया है तो भी चार संज्वलनोसम्बन्धी सग्रह कृष्टियोके भेदसे प्रत्येक तीन भेदोको प्राप्त हुई सग्रह कृष्टियोका यह काल निर्देश योजित करना चाहिए, क्योंकि सामान्य निर्देश करनेसे सभी विशेषोका सग्रह हो जाता है इसमें कोई विरोध नही है क्योंकि जिसमे अशेष विशेषोका सग्रह होता है वह सामान्यका लक्षण है ऐसा वचन है।

※ मानसज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुए कृष्टिवेदक जीवके प्रथम समयमे मोहनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म चार वर्षप्रमाण होता है।

§ २५६ क्रोधसंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुआ जीव जिस स्थानपर क्रोधसम्बन्धी कृष्टियोका वेदन करता है उस स्थानपर मानसज्वलनके उदयवाला क्षपक जीव मानादि तीन सज्वलनोकी कृष्टियोको करनेवाला होकर पुन क्रोधसंज्वलनके उदयवाला क्षपक जीव जिस स्थानपर मानसंज्वलनसम्बन्धी कृष्टियोंके वेदनका आरम्भ करता है उसी स्थानपर यह जीव प्रथम समयवर्ती मानकृष्टिका वेदक होता है। इस प्रकार वहाँपर तीनो संज्वलनोका स्थितिसत्कर्मका प्रमाण पूरा चार वर्षप्रमाण होता है।

※ मायासज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुए प्रथम समयवर्ती कृष्टि वेदकके मोहनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म दो वर्षप्रमाण होता है।

§ २५७ कोहेण उवट्ठिदो जम्हि उद्देसे माणकिट्टीओ वेदेदि तम्हि मायोदयक्खवगो दोण्हं संजलणाण किट्टीकारगो होदूण पुणो कोधोदयक्खवगस्स मायावेदगपढमसमये चेव मायाकिट्टीओ ओकड्डियूण पढमसमयकिट्टीवेदगो होदि। तत्थ दोण्हं संजलणाण ट्ठिदिसंतकम्मपमाणं संपुण्णदो वस्समेत्तं होइ त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ।

* लोमेण उवट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टीवेदगस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्ममेक्कं वस्सं।

§ २५८ कोहेण उवट्ठिदो जम्हि उद्देसे मायाकिट्टीओ वेदेदि तम्हि उद्देसे लोभोदयक्खवगो लोभसंजलणस्स तिण्णि संगहकिट्टीओ काढूण पुणो कोहोदयक्खवगस्स लोभकिट्टीवेदगावत्थाए चेव लोभकिट्टीओ ओकड्डेमाणो पढमसमयकिट्टीवेदगभावेण परिणमइ।

---

§ २५७ क्रोध संज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुआ जीव जिस स्थानपर मान-संज्वलनकी कृष्टियोका वेदन करता है उस स्थानपर मायासंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुआ जीव मायादि दो संज्वलनोका कृष्टिकारक होकर पुन क्रोधके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुआ क्षपक जीव मायासंज्वलनके वेदन करनेके प्रथम समयमें ही मायासंज्वलनसम्बन्धी कृष्टियोंका अपकर्षण करके प्रथम समयवर्ती मायाकृष्टिका वेदक होता है। वहाँपर दोनो संज्वलनोके स्थितिसत्कर्मका प्रमाण पूरा दो वर्षमात्र होता है। यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है।

विशेषार्थ—क्रोध या मानसंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुआ जीव जिस स्थानपर मायासंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अपकर्षण करके उसका प्रथम समयमें वेदक होता है मायासंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढ़ा हुआ जीव भी उसी स्थानपर मायासंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका अपकर्षण करके उसका प्रथम समयमे वेदक होता है इस तथ्यको ध्यानमें रखकर ही चूर्णिसूत्रके साथ उसकी टीकाकी संगति बिठा लेनी चाहिए क्योंकि चाहे क्रोधके उदयसे श्रेणिपर चढ़े चाहे मानके उदयसे श्रेणिपर चढ़े और चाहे मायाके उदयसे श्रेणिपर चढ़े इन तीनोके मायासंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदन एक ही कालमें प्राप्त होता है।

* लोभसंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ हुए प्रथम समयवर्ती कृष्टिवेदकके मोहनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म एक वर्षप्रमाण होता है।

§ २५८ क्रोधसंज्वलनके उदयसे श्रेणिपर आरूढ हुआ जीव जिस स्थानपर मायाकृष्टियों-का वेदन करता है उस स्थानपर लोभसंज्वलनके उदयसे श्रेणिपर चढ़ा हुआ जीव लोभसंज्वलन की तीन संग्रह कृष्टियोको करके पुन क्रोधसंज्वलनके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढ़ा हुआ जीव लोभ संज्वलनकी कृष्टियोके वेदन करनेकी अवस्थामे ही लोभसंज्वलनसम्बन्धी कृष्टियोका अपकर्षण करते हुए प्रथम समयमें कृष्टियोके वेदकपनेसे परिणत होता है।

विशेषार्थ—कोई जीव क्रोधसंज्वलनके उदयसे श्रेणिपर आरोहण करता है और कोई जीव मान, माया और लोभसंज्वलनमेसे किसी एकके उदयसे श्रेणिपर आरोहण करता है। यहाँ यह बतलाया गया है कि कोई एक जीव क्रोधसंज्वलनके उदयसे श्रेणिपर चढ़ा है और कोई दूसरा जीव लोभसंज्वलनके उदयसे श्रेणिपर चढ़ा है। उनमेसे पहला जीव जिस स्थानपर माया संज्वलनकी संग्रह कृष्टियोका अपकर्षण करके उसका वेदन करते हुए लोभसंज्वलनकी तीन संग्रह कृष्टियोका कारक होता है उसी स्थानपर लोभसंज्वलनसे श्रेणिपर चढ़ा हुआ जीव लोभसंज्वलनकी तीन संग्रह कृष्टियोका कारक होता है। और इस प्रकार भले ही यहाँपर क्रोधके उदयसे श्रेणिपर चढ़े हुए जीवकी मुख्यतासे कथन किया गया हो, फिर भी किसी भी कषायके उदयसे श्रेणिपर

§ २५९. तत्थ ट्ठिदिसतकम्मपमाणमेव सुत्तवद्दट्ठमवहारेयव्व, तदवत्थाए संपुण्णेगवस्समेत्त ट्ठिदिसतकम्मं मोत्तूण पयारतरासभवादो। एव पढमभासगाहाए अत्थविहासा समत्ता। सपहि विदियभासगाहाए अत्थविहासण कुणमाणो तिस्से समुक्कित्तणट्ठमिदमाह—

* एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ २६०. सुगम।

(१३४) जं किट्टिं वेदयदे जवमज्झं सांतरं दुसु ट्ठिदीसु।
पढमा जं गुणसेढी उत्तरसेढी य विदिया दु ॥१७७॥

§ २६१. एसा विदियभासगाहा किट्टीवेदगस्स पढमविदियट्ठिदीसु पदेसग्गस्स समवट्ठाण मेदीए सेढीए होदि त्ति पदुप्पायणट्ठमागदा। ण च एवविहो अत्थणिद्देसो मूलगाहाए णत्थि त्ति आसकणिज्ज, किट्टीण कालपरूवणावसरे तब्विसेसिदपदेसग्गस्स वि परूवणाए दोसाणुवलभादो। सपहि एदिस्से विदियभासगाहाए अवयवत्थपरूवण कस्सामो। त जहा—अवेदिज्जमाणाण सगह किट्टीण विदियट्ठिदीए चेव एयगोवुच्छायारेण समवट्ठाणादो। तत्थ दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढि परूवणा सुगमा। तदो ज किट्टि वेदयदे तिस्से पढम-विदियट्ठिदिविसेसभजाओ तव्विसए पदेसग्गस्स सेढिपरूवण कस्सामो त्ति जाणावणट्ठ 'ज किट्टि वेदयदे' इदि पढमो सुत्तावयवो। तत्थ पदेसग्गस्स जवमज्झसरूवेण समवट्ठाण होदि णाण्णहा त्ति जाणावणट्ठ 'जवमज्झ'—इदि सुत्तस्स विदिया

चढा हुआ जीव क्यों न हो उन सबके लोभसज्वलनकी सग्रह कृष्टियोंके वेदनका एक काल प्राप्त हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ २५९. वहाँपर स्थितिसत्कर्मके प्रमाणका सूत्रमे कहे गयेके अनुसार इस प्रकार अवधारण करना चाहिए, क्योंकि उस अवस्थामें पूरे एक वर्षप्रमाण स्थितिसत्कर्मको छोड़कर अन्य प्रकार सम्भव नहीं है। इस प्रकार प्रथम भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त हुई। अब दूसरी भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा करते हुए उसकी समुत्कीर्तना करनेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* यह दूसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना है।

§ २६०. यह सूत्र सुगम है।

(१३४) यह क्षपक जीव जिस कृष्टिका वेदन करता है उसका सान्तर यवमध्य सहित दोनों स्थितियोंमे अवस्थान होता है। उनमेसे जो प्रथम स्थिति है वह गुणश्रेणिरूप है। परन्तु द्वितीय स्थिति उत्तरश्रेणि अर्थात् हीयमान श्रेणिरूप है।

§ २६१. कृष्टिवेदकके प्रथम और द्वितीय स्थितिमे प्रदेशपुजका अवस्थान इस श्रेणिरूपसे होता है इस बातका कथन करनेके लिए यह दूसरी गाथा आया है। और इस प्रकारके अर्थका निर्देश मूल गाथामे नहीं है ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कृष्टियोंके कालसम्बन्धी प्ररूपणाके अवसरपर कृष्टियोंके कालसयुक्त प्रदेशपुजकी भी प्ररूपणा कर आये हैं, इसलिए उक्त कथनमे कोई दोष नहीं है। अब इस दूसरी भाष्यगाथाके अवयवोंके अर्थकी प्ररूपणा करेंगे। वह जैसे—अवेद्यमान सग्रह कृष्टियोंका द्वितीय स्थितिमे ही एक गोपुच्छाके आकारसे अवस्थान होता है। इसलिए उनके दृश्यमान प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा सुगम है। इस कारण जिस कृष्टिका वेदन करता है उसकी प्रथम स्थिति और द्वितीय स्थिति सम्भव होनेसे तद्विषयक प्रदेशपुजकी श्रेणि प्ररूपणा करेंगे इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'जं किट्टि वेदयदे' मूल गाथासूत्रका यह प्रथम अवयव कहा है। उस कृष्टिके प्रदेशपुजका यवमध्यरूपसे अवस्थान होता है अन्य प्रकारसे नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए उक्त मूल गाथासूत्रके 'जवमज्झ' इस दूसरे अवयवका निर्देश

वयवणिद्देसो। तं च जवमज्झं पढम विदियट्ठिदीसु वट्टमाणमंतरट्ठिदीहिं अंतरिदत्तादो सांतरमिदि जाणावणट्ठं 'सांतर दुसु ट्ठिदीसु' त्ति सुत्तस्स तदियावयवणिद्देसो। एदस्स भावत्थो—

§ २६२ पढमट्ठिदीए आदिमट्ठिदिम्हि पदेसग्गं थोवं होदूण पुणो जहाकममसंखेज्जगुणाए सेढीए जाव पढमट्ठिदिचरिमसमओ त्ति ताव वड्ढिदूण तदो अंतरमुल्लंघियूण विदियट्ठिदीए पढम-णिसेयम्मि असंखेज्जगुणवड्ढीए सइं वड्ढिदूण तत्तो परं सव्वत्थेव विसेसहाणीए गंतूण परिसमप्पदि त्ति एदेण कारणेण दोसु ट्ठिदिविसेसेसु पदेसग्गस्साणंतरमेव जवमज्झं होदि, अंतरस्स उभयपेरंतेसु थूलं होदूण दोसु ट्ठिदिविसेसेसु जहाकमेण पदेसग्गस्स समयाविरोहेण परिहाणिदंसणादो त्ति।

§ २६३ संपहि एदस्सेव जवमज्झसण्णिवेसस्स फुडीकरणट्ठं गाहापच्छद्धणिद्देसो 'पढमा जं गुणसेढी' 'पढमाए' पढमट्ठिदी 'जं' जम्हा 'गुणसेढी' गुणसेढिसरूवा होदूण चरिमट्ठिदीए थूला जादा। 'उत्तरसेढी य विदिया दु' विदियट्ठिदीए जम्हा मूले थूला होदूण उत्तरसेढीए हीयमाणा गच्छदि, तम्हा दोण्हमेदेसिं ट्ठिदीणं चरिम पढमट्ठिदीसु सांतरमेव जवमज्झमवहारेयव्वमिदि वुत्तं होइ।

किया है। और वह यवमध्य प्रथम और द्वितीय स्थितिमें विद्यमान होकर अन्तर स्थितियोंसे अन्तरित होकर अन्तर सहित होता है, इसलिए उसके अन्तर सहितपनेका ज्ञान करानेके लिए 'सांतर दुसु ट्ठिदीसु' इस प्रकार गाथासूत्रके इस तीसरे अवयवका निर्देश किया है। इसका भावार्थ इस प्रकार है—

§ २६२ प्रथम स्थितिकी सबसे पहली स्थितिमें प्रदेशपुंज सबसे थोड़ा होकर पुनः जो क्रम है उसके अनुसार असंख्यातगुणित श्रेणिरूपसे प्रथम स्थितिके अन्तिम समय तक बढ़कर, पश्चात् अन्तरका उल्लंघन करके द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकमें एक बार असंख्यातगुणित श्रेणिरूपसे बढ़कर तत्पश्चात् आगे सभी स्थितियोंमें विशेष हानिरूपसे जाकर समाप्त होता है। इस कारण दो स्थितिविशेषोंमें प्रदेशपुंजका अनन्तर कहा गया यह यवमध्य होता है, क्योंकि अन्तरके उभय पर्यन्त भागोंमें यवमध्य स्थूल होकर दोनों स्थितिविशेषोंमें क्रमानुसार प्रदेशपुंजकी आगमके अविरोधपूर्वक हानि देखी जाती है।

§ २६३ अब इसी यवमध्यकी रचनाको स्पष्ट करनेके लिए मूल गाथाके उत्तरार्धका निर्देश किया है— 'पढमा जं गुणसेढी' इस सूत्रका अर्थ है 'पढमाए' का अर्थ है प्रथम स्थिति, 'जं' पदका अर्थ है जिसकी और 'गुणसेढी' पदका अर्थ है गुणश्रेणि अर्थात् प्रथम स्थिति गुणश्रेणि स्वरूप होकर अन्तिम स्थितिमें स्थूल हो गया है। 'उत्तरसेढी य विदिया दु' अर्थात् द्वितीय स्थिति यतः मूलमें स्थूल होकर आगे श्रेणिरूपसे हीयमान होकर जाती है, इस कारण इन दोनों स्थितियोंकी अन्तिम और प्रथम स्थितिके मध्य सान्तर होकर यह यवमध्य जान लेना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

विशेषार्थ—यहाँपर कृष्टियोंके वेदनकालके समय जिस समय जिस कृष्टिका वेदन करता है उस समय उसका प्रदेशविन्यास किस प्रकारका दिखाई देता है। इसी तथ्यका यहाँ स्पष्टीकरण किया गया है। ऐसा नियम है कि जिस कृष्टिका वेदन करता है उसकी अन्तर सहित प्रथम और द्वितीय स्थिति होती है। प्रथम स्थिति उदयरूप निषेकसे लेकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है। उसके बाद उस कृष्टिके अन्तर्मुहूर्तप्रमाण निषेक अन्तररूप होते हैं। अर्थात् प्रथम स्थितिके अन्तर्मुहूर्त कालप्रमाण निषेकोंके ऊपर अन्तर्मुहूर्त कालप्रमाण निषेकोंका अभाव होता है। पुनः उसके बाद जितनी उस कृष्टिकी स्थिति हो वहाँ तक द्वितीय स्थितिके निषेक अवस्थित रहते हैं। यह तो स्थितिकी अपेक्षा विवक्षित कृष्टिके निषेकोंकी रचनाका क्रम है। अब विवक्षित कृष्टिके उदयके समय उस प्रथम स्थिति और द्वितीय स्थितिमें स्थित प्रदेशपुंजकी रचना किस प्रकार दिखाई देती

§ २६४ सपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागथमोदारइस्सामो—

* विहासा ।

§ २६५ सुगम ।

* जहा ।

§ २६६ सुगम ।

* ज किट्टि वेदयदे तिस्से उदयट्ठिदीए पदेसग्गं थोव । विदियाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसखेज्जगुण । एवममखेज्जगुण जाव पढमट्ठिदीए चरिमट्ठिदि त्ति ।

§ २६७ कुदो एव चे ? पढमट्ठिदीए उदयादिगुणसेढीणिक्खेव कादूण किट्टीओ वेदेमाणस्स तत्थ दिज्जमाण दिस्समाणपदेसग्गस्स सखेज्जगुणकमेणावट्ठाण मोत्तूण पयारतरासभवादो ।

* तदो विदियट्ठिदीए जा आदिट्ठिदी तिस्से असखेज्जगुण ।

§ २६८ कि कारण ? दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धेसु सखेज्जावलियाहि खडिदेसु तत्थेय खडमेत्तदव्वस्स विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदिम्मि समुवलब्भमाणस्स पुव्विल्लगुणसेढिसीसयदव्वादो पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागपडिभागियादो असखेज्जगुणत्तसिद्धीए परिप्फुडमुवलभादो ।

है इसे स्पष्ट करते हुए वह यवमध्यके समान दिखाई देती है यह स्पष्ट किया है। यव बीचमे स्थूल होकर दोनो ओर घटता हुआ होता है ठीक इसी प्रकार वेद्यमान कृष्टि भी प्रदेशपुजकी अपेक्षा प्रतीत होती है। शेष स्पष्टीकरण मूलमे किया ही है।

§ २६४ अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेके विभाषा ग्रथका अवतार करेंगे—

※ अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते है।

§ २६५ यह सूत्र सुगम है।

※ जैसे।

§ २६६ यह सूत्र सुगम है।

※ जिस कृष्टिका वेदन करता है उसकी उदयस्थितिमे प्रदेशपुज सबसे स्तोक होता है। उससे दूसरी स्थितिमे प्रदेशपुज असख्यातगुणा होता है। इस प्रकार प्रथम स्थितिसम्बन्धी अन्तिम स्थितिके प्राप्त होने तक प्रदेशपुज उत्तरोत्तर असख्यातगुणा होता है।

§ २६७ शका—ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान—क्योकि प्रथम स्थितिमे उदयादि गुणश्रेणिका निक्षेप करके कृष्टियोका वेदन करनेवाले जीवके उसमे दिये जानेवाले और दिखनेवाले प्रदेशपुजके सख्यातगुणे अवस्थानको छोड़कर अन्य प्रकार सम्भव नही है।

※ उससे द्वितीय स्थितिकी जो प्रथम स्थिति है उसमे असख्यातगुणे प्रदेशपुजका अवस्थान होता है।

§ २६८ शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—डेढ़ गुणहानिप्रमाण समयप्रबद्धोके सख्यात आवलियासे भाजित करनेपर वहाँ एक भागप्रमाण लब्ध हुए द्रव्यका द्वितीय स्थितिकी आदि स्थितिमे अवस्थान होता है, इसलिए पूर्वके गुणश्रेणिशीर्षसम्बन्धी द्रव्यसे यह पल्योपमके असंख्यातवें भागके प्रतिभागरूप असंख्यातगुणा सिद्ध होकर स्पष्टरूपसे उपलब्ध होता है।

* तदो सव्वत्थ विसेसहीणं।

§ २६९. तदो विदियट्ठिदिपढमणिसेगादो उवरि सव्वत्थ जाव विदियट्ठिदिचरिमणिसेगो त्ति ताव एगेगगोवुच्छविसेसहाणीए दिस्समाणपदेसग्गस्सावट्ठाणं होइ, णाण्णहा त्ति भणिदं होदि। एवं चेव दिज्जमाणपदेसग्गस्स वि सेढिपरूवणा कायव्वा। णवरि विदियट्ठिदीए विसेसहीणं० पदेसग्गं णिसिंचमाणो गच्छदि जाव समयाहियावलिय अपत्ता विदियट्ठिदीए अग्गट्ठिदि त्ति। तत्तो परमइच्छावणावलियब्भंतरे दिज्जमाणपदेसग्गस्स संभवाणुवलंभादो।

§ २७०. जदो एवं पढमविदियट्ठिदीसु पदेसग्गस्स कमवड्डिहाणीहिं अवट्ठाणणियमो तदो पढमविदियट्ठिदिविसए जवमज्झमेदं जादमिदि जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* जवमज्झं पढमट्ठिदीए चरिमट्ठिदीए च विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदीए च।

* उस द्वितीय स्थितिकी प्रथम स्थितिसम्बन्धी द्रव्यसे आगे सवत्र प्रदेशपुंज उत्तरोत्तर विशेषहीन होता है।

§ २६९. 'तदो' अर्थात् द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकसे ऊपर सर्वत्र द्वितीय स्थितिके अन्तिम निषेकके प्राप्त होने तक एक एक गोपुच्छाविशेषकी हानि होनेसे उसरूपसे दिखनेवाले प्रदेशपुंज का अवस्थान होता है, अन्य प्रकारसे नहीं होता यह उक्त कथनका तात्पर्य है। तथा इसी प्रकार दीयमान प्रदेशपुंजकी भी श्रेणिप्ररूपणा करनी चाहिए। इतनी विशेषता है कि द्वितीय स्थितिमें विशेष हीन प्रदेशपुंजका सिंचन करता हुआ, द्वितीय स्थितिकी अग्र स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण निषेक शेष रहनेके पूर्व तक सिंचन करता है क्योंकि उससे आगे अतिस्थापनावलिके भीतर दीयमान प्रदेशपुंजकी सम्भावना नहीं पायी जाती।

विशेषार्थ—यह प्रत्येक कृष्टिका वेदन करते समय उसमें दीयमान और दृश्यमान प्रदेशपुंज की अपेक्षा किस प्रकार यवमध्य बनता है इसे स्पष्ट किया गया है। वेद्यमान कृष्टिकी द्वितीय स्थितिमें स्थित जो अन्तिम निषेक है उसमेंसे प्रत्येक समयमें अपकर्षणके योग्य प्रदेशपुंजकी अपेक्षा द्वितीय स्थितिमेंसे एक समय कम किया गया है और उसके नीचे एक आवलिप्रमाण निषेकोंको अतिस्थापनावलिमें रखा गया है। इस प्रकार एक स्थितिकाण्डकके पतन होनेतक अन्तिम निषेकमेंसे प्रतिसमय विवक्षित प्रदेशपुंजका अपकर्षण होनेपर उसका उदयनिषेकसे लेकर प्रथम और द्वितीय स्थितिमें उपरितन एक निषेक अधिक एक आवलिप्रमाण निषेकोंको छोड़कर अन्तरके अतिरिक्त शेष सत्त्वस्थितिके सब निषेकोंमें यथाविधि निक्षेप होता है। यह अन्तिम निषेकमेंसे प्रदेशपुंजके अपकर्षणकी अपेक्षा कथन किया है। इसी प्रकार उपान्त्य आदि निषेकोंकी अपेक्षा भी अपकर्षणके नियमको ध्यानमें रखकर कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि विवक्षित जिस निषेकमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण इष्ट हो उसे और उससे नीचे एक आवलिप्रमाण निषेकोंको छोड़कर शेष सत्त्वस्थितिमें अपकर्षित प्रदेशपुंजका निक्षेप होता है ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

§ २७०. यतः इस प्रकार प्रथम और द्वितीय स्थितिमें प्रदेशपुंजके क्रमवृद्धि और क्रमहानि रूपसे अवस्थानका नियम है, अतः प्रथम और द्वितीय स्थितिसम्बन्धी प्रदेशपुंजमें यह यवमध्य घटित हो जाता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* प्रथम स्थितिकी अन्तिम स्थितिमें और द्वितीय स्थितिकी आदि स्थितिमें यह यवमध्य होता है।

§ २७१ किं कारणं ? एदेसु दोसु ट्ठिदिविसेसेसु हेट्ठदो उवरिदो च पेक्खमाणे पदेसग्गस्स थूलभावेणावट्ठाणदंसणादो । संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवसंहारवक्कमाह—

* एदं तं जवमज्झं सांतरं दुसु ट्ठिदीसु ।

§ २७२ गाहासुत्तम्मि सांतरं दुसु ट्ठिदीसु त्ति जं पख्विदं जवमज्झं तमेदमवहारेयव्वमिदि वुत्तं होइ ।

§ २७३ एवमेत्तिएण पबंधेण विदियभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि तदियभासगाहाए अहावसरपत्तमत्थविहासणं कुणमाणो तदवसरकरणट्ठमुवरिमसुत्तमाह—

* एत्तो तदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ २७४ सुगमं ।

(१३५) बिदियट्ठिदिआदिपदा सुद्धं पुण होदि उत्तरपदं तु ।
सेसो असंखेज्जदिमो भागो तिस्से पदेसग्गे ॥१७८॥

§ २७५ एसा तदियभासगाहा विदियट्ठिदीए पदेसग्गस्स उत्तरसेढीए चिट्ठमाणस्स परम्परोवणिधापरूवणट्ठमोइण्णा । तं जहा—'विदियट्ठिदिआदिपदा' एवं भणिदे विदियट्ठिदिपढम

§ २७१ शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि इन दोनों स्थितिविशेषोंको क्रमशः नीचेसे और ऊपरसे देखनेपर प्रदेशपुंजका स्थूलरूपसे अवस्थान देखा जाता है । अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए उपसंहार वाक्यको कहते हैं—

* वह यह यवमध्य दोनों स्थितियोंमें सान्तर होता है ।

§ २७२ गाथासूत्रमें जो यवमध्य दोनों स्थितियोंमें सान्तर कहा है वह यह है ऐसा अवधारण करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

विशेषार्थ—अन्तरके पूर्व प्रथम स्थितिमें उदयादि गुणश्रेणिरूप निक्षेप होनेसे उसका अन्तिम निषेक नीचेसे देखनेपर प्रदेशपुंजकी अपेक्षा स्थूल होता है । इसी प्रकार अन्तरके ऊपर द्वितीय स्थितिमें प्रथम निषेक ऊपरसे देखनेपर वह भी प्रदेशपुंजकी अपेक्षा स्थूल होता है । इस प्रकार दोनों ओरसे निषेक सन्निवेशको देखनेपर वह मध्यमें यवके मध्य भागके समान स्थूल दिखाई देता है, इसीलिए इसे यवमध्य शब्द द्वारा अभिहित किया गया है ।

§ २७३ इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा द्वितीय भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा करके अब तृतीय भाष्यगाथाकी अवसरप्राप्त अर्थविभाषा करते हुए उसका अवसर करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अब इससे आगे तीसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ २७४ यह सूत्र सुगम है ।

(१३५) द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकमेंसे अन्तिम निषेकको घटावे । ऐसा करनेपर द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकसम्बन्धी प्रदेशपुंजमें शुद्ध शेष असंख्यातवें भागप्रमाण होता है ॥१७८॥

§ २७५ यह तीसरी भाष्यगाथा द्वितीय स्थितिमें स्थित उत्तर श्रेणीसम्बन्धी प्रदेशपुंजकी परम्परोपनिधाकी प्ररूपणाके लिए अवतीर्ण हुई है । वह जैसे—'विदियट्ठिदिआदिपदा' ऐसा कहने-

णिसेगादो त्ति वुत्तं होदि। पडियतलोवं कादूण सुत्ते विदियट्ठिदिआदिपदा त्ति णिद्दिट्ठत्तादो। 'सुद्धं पुण उत्तरपद होदि तु' तस्स उत्तरपद णाम विदियट्ठिदिचरिमणिसेगपदेसग्गमिदि घेत्तव्वं। त सुद्धं सोधिद कायव्वं। एव सोहिदे 'सेसो असंखेज्जदिमो भागो' सुद्धसेसो 'तिस्से' विदियट्ठिदिपढमट्ठिदीए पदेसग्गस्स असखेज्जदिभागो होदि। विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदिपदेसग्गमसखेज्जे भागे कादूण तत्थेयखडमेत्तमेव सुद्धसेसदव्वस्स पमाणमिदि वुत्त होइ। कुदो एवमिदि चे ओट्टणट्ठाणमेत्ताण चेव गोवुच्छविसेसाणमेत्थ समहियत्तदसणादो। एवमेसा परंपरोवणिधा विदियट्ठिदिपदेसग्गविसये परूविदा होदि। अणतरोवणिधा वि एदेणेव सूचिदा त्ति घेत्तव्वं। सपहि एवविहमेदिस्से गाहाए अत्थ विहासेमाणो विहासागथमुत्तर भणइ—

* विहासा।

§ २७६ सुगमं।

* विदियाए टि्ठदीए उक्कस्सियाए पदेमग्गं तिस्से चेव जहण्णियादो टि्ठदीदो सुद्ध सुद्धसेस पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागपडिभागिय।

§ २७७ एत्थ सुद्धसेस पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागपडिभागिय इदि वुत्ते सखेज्जावलियो वट्टिदणिसेगभागहारेण विदियट्ठिदिपढमणिसेगे खडिदे तत्थेयखडमेत्त सुद्धसेसदव्वमिदि घेत्तव्वं। एदस्स भावत्थो—विदियट्ठिदिआयाम जेण वासपुधत्तपमाणो तेण तत्थतणचरिमणिसेगपदेसग्गादो

पर द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकमेसे यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'पडियत' अर्थात् विभक्तिका लोप करके गाथासूत्रमे 'विदियट्ठिदिआदिपदा' इस प्रकार निर्देश किया है। 'सुद्धं पुण उत्तरपद होदि' ऐसा कहनेपर उस द्वितीय स्थितिका 'उत्तरपद' अर्थात् द्वितीय स्थितिके अन्तिम निषेकका प्रदेशपुज ग्रहण करना चाहिए उसे शुद्ध अर्थात् शोधित करना चाहिए। इस प्रकार शोधित करने पर 'सेसो असखेज्जदिमो भागो' शुद्ध शेष 'तिस्से' द्वितीय स्थितिसम्बन्धी प्रथम स्थितिके प्रदेश पुजका असख्यातवॉ भाग होता है। द्वितीय स्थितिसम्बन्धी आदि स्थितिके असख्यात भाग करनेपर उनमेसे एक भागमात्र ही शुद्ध शेष द्रव्यका प्रमाण होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—यह किस कारणसे प्राप्त होता है ?

समाधान—क्योकि गोपुच्छविशेषोंका यहॉपर अधिकपना देखा जाता है। इस प्रकार यह परम्परोपनिधा द्वितीय स्थितिके प्रदेशपुजके विषयमे कही गयी है। अनन्तरोपनिधा भी इसीसे सूचित की गयी है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। अब इस गाथाके इस प्रकारके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके विभाषाग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ २७६ यह सूत्र सुगम है।

* द्वितीय स्थितिसम्बन्धी उत्कृष्ट स्थितिके प्रदेशपुंजको उसीकी जघन्य स्थितिमेंसे घटावे। घटानेपर शुद्ध शेषका प्रमाण पल्योपमके असख्यातवें भागका प्रतिभागी होता है।

§ २७७ यहॉपर 'सुद्धसेसं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागिय' ऐसा कहनेपर संख्यात आवलियोसे भाजित निषेक भागहारके द्वारा द्वितीय स्थितिसम्बन्धी प्रथम निषेकके भाजित करनेपर वहॉं एक भागप्रमाण शुद्ध शेष द्रव्य होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इसका भावार्थ—द्वितीय स्थितिका आयाम यत वर्षपृथक्त्वप्रमाण है इसलिए उसके अन्तिम निषेकसम्बन्धी

पढमणिसेगपदेसपिंडो संखेज्जगुणो असंखेज्जगुणो अण्णारिसो वा अहोदूण णियमा असंखेज्जभाग-ब्भहिओ चेव होदि उवरीदो पहुडि अणंतरोवणिधाए एगेगगोवुच्छविसेसमेत्तेण वड्ढिदूणागदपदेसग्गस्स णिरुद्धट्ठिदीए पलिदोवमासंखेज्जदिभागपडिभागियत्तं मोत्तूण पयारंतरसंभवाणुवलंभादो त्ति ।

§ २७८ एवं तदियभासगाहाए विहासणं समाणिय संपहि जहावसरपत्ताए चउत्थभासगाहाए अवयारं कुणमाणो इदमाह—

* एत्तो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ २७९ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ २८० सुगमं ।

(१३६) उदयादि या ट्ठिदीओ णिरंतरं तासु होइ गुणसेढी ।
उदयादिपदेसग्गं गुणेण गणणादियंतेण ॥१७९॥

प्रदेशपुंजसे प्रथम निषेकसम्बन्धी प्रदेशपिण्ड संख्यातगुणा असंख्यातगुणा या दूसरे रूप न होकर नियमसे असंख्यातवें भाग अधिक ही होता है, क्योंकि ऊपरसे लेकर अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा एक एक गोपुच्छविशेष मात्र बढ़कर प्राप्त हुआ प्रदेशपुंज विवक्षित स्थितिमें पल्योपमके असंख्यातवें भागके प्रतिभागीपनेको छोड़कर वहाँ अन्य प्रकार सम्भव नहीं है ।

विशेषार्थ—द्वितीय स्थितिके प्रथम निषेकमें जितना प्रदेशपुंज प्राप्त होता है उससे उसके दूसरे निषेकमें एक विशेषमात्र द्रव्य कम होता है। इसी प्रकार आगे आगे प्रत्येक निषेकमें एक एक विशेषमात्र द्रव्य कम होता जाता है। यहाँ द्वितीय स्थितिका स्थितिसत्कर्म वर्ष पृथक्त्वप्रमाण है। उसमें एक आवलिप्रमाण कालका भाग देनेपर संख्यात आवलियाँ प्राप्त होती हैं। इसीलिए यहाँपर संख्यात आवलियोंमें निषेक भागहारको भाजित करनेपर प्राप्त हुए लब्ध एक भागसे द्वितीय स्थितिके प्रदेशपुंजको भाजित करनेपर जो एक भाग लब्ध आया उतना द्वितीय स्थितिके अन्तिम निषेकके प्रदेशपुंजसे उसीके प्रथम निषेकके प्रदेशपुंजमें अधिक द्रव्यका प्रमाण होता है। इस प्रकार परम्परोपनिधाकी अपेक्षा देखनेपर द्वितीय स्थितिके अन्तिम निषेकके द्रव्यसे उसीके प्रथम निषेकका द्रव्य असंख्यातवाँ भाग अधिक होता है यह सिद्ध हुआ।

§ २७८ इस प्रकार तीसरी भाष्यगाथाकी विभाषा समाप्त करके अब यथावसरप्राप्त चौथी भाष्यगाथाका अवतार करते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

* यह चौथी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना है।

§ २७९ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ २८० यह सूत्र सुगम है।

(१३६) उदयसे लेकर प्रथम स्थितिसम्बन्धी जितनी स्थितियाँ हैं उनमें निरन्तररूपसे गुणश्रेणि होती है। उसकी अपेक्षा एक एक स्थितिमें उदयसे लेकर असंख्यातगुणित श्रेणिरूपसे प्रदेशपुंज दिया जाता है ॥१७९॥

§ २८१ एसा चउत्थभासगाहा पुव्वुत्तजवमज्झसण्णिवेसस्सेव फुडीकरणट्ठं पढमट्ठिदीए पदेसग्गस्सावट्ठाणमेदेण सरूवेण होदि त्ति जाणावणमिमित्तमोइण्णा, परिप्फुडमेदेत्थ तहाविहत्थस्स पडिबद्धत्तदसणादो। एत्थ पुव्वद्धे पदसंबंधो एवं कायव्वो—'उदयादि०' उदयप्पहुडि जाओ ट्ठिदीओ पढमट्ठिदिसंबंधिणीओ तासु णिरंतरसरूवेण गुणसेढी होइ त्ति। एदस्स चेव फुडीकरणट्ठ गाहापच्छद्धो समोइण्णो। तत्थ पदसंबंधो—उदयप्पहुडि जं पदेसग्गं दिज्जदि दिस्सदि वा तं गणणादियंतेण गुणगारेण वड्ढदि, असंखेज्जगुणसेढीए तत्थ पदेसग्गस्स समवट्ठाणमवहारियव्वमिदि वुत्तं होदि। णेदमेत्थासंकणिज्जं, 'पढमा जं गुणसेढी' इदि भणतेण विदियभासगाहाए चेव एसो अत्थविसेसो जाणाविदो, तदो किमेदेण पुणरुत्तगाहाणिद्देसेणेत्ति ? कुदो ? तत्थ सूचणामेत्तेण णिद्दिट्ठस्स गुणसेढिविण्णासस्स विसेसियूण परूवणे पुणरुत्तदोसाणवयारादो। संपहि एदिस्से भासगाहाए अत्थविहासणं कुणमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाह—

* विहासा।

§ २८२ सुगमं।

* उदयट्ठिदिपदेसग्गं थोवं।

§ २८३ सुगमं।

* विदियाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं।

§ २८४ को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

---

§ २८१ यह चौथी भाष्यगाथा पूर्वोक्त यवमध्यके संनिवेशको ही स्पष्ट करनेके लिए प्रथम स्थितिमें प्रदेशपुंजका अवस्थान इस क्रमसे होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिए अवतीर्ण हुई है क्योंकि इसमें सुस्पष्टरूपसे ही उस प्रकारका अर्थ प्रतिबद्ध देखा जाता है। प्रकृतमें पूर्वार्धका पदसम्बन्ध इस प्रकार करना चाहिए—'उदयादि०' उदयसे लेकर प्रथम स्थितिसम्बन्धी जो स्थितियाँ हैं उनमें निरन्तररूपसे गुणश्रेणि होती है। इस प्रकार इसी अर्थके स्पष्ट करनेके लिए गाथाका उत्तरार्ध अवतीर्ण हुआ है। प्रकृतमें पदसम्बन्ध इस प्रकार है—उदयसे लेकर जो प्रदेशपुंज दिया जाता है या दिखाई देता है वह गुणकारकी अपेक्षा असंख्यातगुणित जानना चाहिए। वहाँ असंख्यातगुणित श्रेणिरूपसे प्रदेशपुंजका अवस्थान अवधारित करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँ ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए कि 'पढमा जं गुणसेढी' ऐसा कथन करते हुए कषायप्राभृतकारने दूसरी भाष्यगाथा द्वारा ही इस अर्थविशेषका ज्ञान करा दिया है, इसलिए पुनरुक्त इस गाथाके निर्देश करनेसे क्या प्रयोजन है, क्योंकि उक्त दूसरी भाष्यगाथामें सूचनामात्ररूपसे निर्दिष्ट किये गये गुणश्रेणिनिर्देशका इस भाष्यगाथामें विशेषरूपसे प्ररूपणा करनेपर पुनरुक्त दोषका अवतार नहीं होता। अब इस भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ २८२. यह सूत्र सुगम है।

* उदयस्थितिमें प्रदेशपुंज थोड़ा है।

§ २८३ यह सूत्र सुगम है।

* उससे दूसरी स्थितिमें प्रदेशपुंज असंख्यातगुणा है।

§ २८४ शंका—गुणकार क्या है ?

* एवं सव्विस्से पढमट्ठिदीए ।

§ २८५ किं कारण ? उदयादिगुणसेढिसरूवेणावट्ठिदाण पढमट्ठिदिणिसेयाणमसंखेज्जगुणत्तं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो । एवमेदिस्से भासगाहाए विहासणं समाणिय संपहि पंचमभासगाहाए समुक्कित्तण कुणमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाह—

* एत्तो पंचमीए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ २८६ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ २८७ सुगमं ।

(१२७) उदयादिसु ट्ठिदीसु य जं कम्मं णियमसा दु तं हरस्सं ।
पविसदि ट्ठिदिक्खएण दु गुणेण गणणादियंतेण ॥१९०॥

§ २८८ एसा पंचमी भासगाहा पढमट्ठिदिपदेसग्गमाहार कादूण तत्थ समये समये वेदिज्जमाणपदेसग्गस्स थोवबहुत्तपरूवणट्ठमोइण्णा, ण च एसो अत्थो पुव्विल्लभासगाहाए चेव णिरत्थयत्तमासंकणिज्जं, तत्थ पुव्वमपरूविदउदयविसेसणेण विसेसियूण समयं पडि उदयं पविसमाणपदेसग्गस्स थोवबहुत्तपरूवणे एदिस्से गाहाए पडिबद्धत्तदंसणादो । संपहि एदिस्से अवयवत्थपरूवण

समाधान—पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है ।

* इस प्रकार सम्पूर्ण प्रथम स्थितिमें जानना चाहिए ।

§ २८५ शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि उदयादि गुणश्रेणिरूपसे अवस्थित प्रथम स्थितिसम्बन्धी निषेकोंमें असंख्यातगुणेपनको छोडकर अन्य प्रकार सम्भव नहीं है ।

इस प्रकार इस भाष्यगाथाकी विभाषा समाप्त करके अब पाँचवीं भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अब आगे पाँचवीं भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ २८६ यह सूत्र सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ २८७ यह सूत्र सुगम है ।

(१२७) उदयसे लेकर प्रथम स्थितिकी अवान्तर स्थितियोंसे उदय स्थितिमें जो कर्मद्रव्य उपलब्ध होता है वह नियमसे अल्पतर होता है । तथा उदय स्थितिके क्षय होनेसे उपरिम अनन्तर स्थितिका असंख्यातगुणित श्रेणिरूपसे कर्मद्रव्य उदयमें प्रवेश करता है ॥१८०॥

§ २८८ यह पाँचवी भाष्यगाथा प्रथम स्थितिसम्बन्धी प्रदेशपुंजको आधार करके वहाँ समय समयमें वेद्यमान प्रदेशपुंजके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए अवतीर्ण हुई है । और यह अर्थ पिछली भाष्यगाथामें ही कह आये हैं, इसलिए निरर्थक है सो ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उस भाष्यगाथामें पहले नहीं कहे गये उदयविशेषण सहित प्रत्येक समयमें उदयमें प्रवेश करनेवाले प्रदेशपुंजके अल्पबहुत्वके प्ररूपण करनेमें यह गाथा प्रतिबद्ध देखी जाती है ।

कस्सामो। त जहा—'उदयादिसु ट्ठिदीसु य०' एवं भणिदे उदयप्पहुडि जहाकममवट्ठिदासु पढमट्ठिदीए अवयवट्ठिदीसु जं दव्वमुदयट्ठिदीए एण्हिमुवलब्भइ त 'णियमसा दु' णिच्छयेणेव हुरस्स थोवयरं होदि, वट्टमाणसमए जं पदेसग्गमुदिण्ण त सव्वत्थोवमिदि वुत्त होदि। 'पविसदि ट्ठिदिक्खएण दु' एव भणिदे उदयट्ठिदीदो उवरिमाणतरट्ठिदीए ज पदेसग्ग से काले ठिदिक्खएण उदय पविसदि तं 'गुणण गणणादियंतेण' असखेज्जगुणसरूवेण पविसदि त्ति भणिदं होदि, असंखेज्जगुणकमेणा-वट्ठिदगुणसेढिगोवुच्छाओ वेदेमाणस्स पमाणतरासंभवादो। एवंविहो च एदिस्से गाहाए अवयवत्थ-परामरसो सुगमो त्ति समुदायत्थमेव विहासेमाणो विहासागंथमुत्तर भणइ—

* विहासा।

§ २८९ सुगम।

* त जहा।

§ २९० सुगम।

* ज अस्सि समए उदिण्ण पदेसग्ग त थोव।

§ २९१ वट्टमाणसमए उदयट्ठिदिम्मि ज दिस्सदि पदेसग्गं तं सव्वत्थोवमिदि वुत्त होदि।

* से काले ट्ठिदिक्खएण उदय पविसदि पदेसग्ग तमसंखेज्जगुण।

अब इस भाष्यगाथाके अवयवोके अर्थका प्ररूपण करेगे। वह जैसे—'उदयादिसु ट्ठिदीसु य०' ऐसा कहनेपर उदयसे लेकर प्रथम स्थितिसम्बन्धी क्रमसे अवस्थित अवयव स्थितियोमेसे जो द्रव्य उदयस्थितिमे इस समय उपलब्ध होता है वह 'णियमसा दु' निश्चयसे ही 'हुरस्स' स्तोकतर होता है। वर्तमान समयम जो द्रव्य उदीण होता है वह सबसे थोडा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'पविसदि ट्ठिदिक्खएण दु' ऐसा कहनेपर उदयस्थितिसे उपरिम अनन्तर स्थितिका जो प्रदेशपुंज तदनन्तर समयमे स्थितिक्षयसे उदयमे प्रवेश करता है वह 'गुणेण गणणादियतण असख्यात गुणित-स्वरूपसे प्रवेश करता है यह उक्त कथनका तात्पय है, क्योकि असख्यातगुणित क्रमसे अवस्थित गुणश्रेणि गोपुच्छाओका वेदन करनेवालेके अन्य प्रकार सम्भव नही है। और इस भाष्यगाथाका इस प्रकारका अवयवार्थपरामश सुगम है, इसलिए समुदायार्थकी ही विभाषा करते हुए आगेके विभाषा ग्र थको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ २८९ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ २९० यह सूत्र सुगम है।

* इस समय जो प्रदेशपुज उदीर्ण होता है वह सबसे स्तोक है।

§ २९१ वर्तमान समयमे जो प्रदेशपुंज उदयमे दिखाई देता है वह सबसे स्तोक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* अगले समयमे स्थितिक्षयसे जो प्रदेशपुज उदयमे प्रवेश करता है वह असख्यातगुणा होता है।

§ २९२ तदणंतरसमए ट्ठिदिक्खएण उदयं पविसदि जं पदेसग्गं तं पुव्विल्लादो असंखेज्ज गुणमिदि वुत्तं होदि। एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एवं किट्टीवेदगपढमसमए एवमप्पाबहुअं पर्खविदमुवरिमसमयेसु वि जोजेयव्वमिदि जाणावणट्ठमिदमाह—

* एवं सव्वत्थ किट्टीवेदगद्धाए।

§ २९३ सव्वत्थेव उदयं पविसमाणपदेसग्गस्स थोवबहुत्तमेवं चेव णेदव्वं, विसेसाभावादो त्ति वुत्तं होइ।

§ २९४ एवं पंचमीए भासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि छट्ठभासगाहाए अवयार करणट्ठमुत्तरं सुत्तपबंधमाह—

* एत्तो छट्ठीए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ २९५ सुगमं।

* तं जहा।

§ २९२ तदनन्तर समयमें स्थितिक्षयसे जो प्रदेशपुंज उदयमें प्रवेश करता है वह पूर्व समयसम्बन्धी प्रदेशपुंजसे असंख्यातगुणा होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर गुणकारका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इस प्रकार कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें यह अल्पबहुत्व कहा है। इसी प्रकार अगले समयोंमें भी इसकी योजना करनी चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिए।

§ २९३ सर्वत्र ही उदयमें प्रवेश करनेवाले प्रदेशपुंजका अल्पबहुत्व इसी प्रकार जानना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई भेद नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

विशेषार्थ—यहाँ गुणश्रेणिके द्वारा प्रतिसमय कृष्टिसम्बन्धी कितने कर्मपरमाणु द्वितीय स्थितिसे अपकर्षित होकर तथा उदयमें प्रवेश करके निर्जरित होते हैं इस तथ्यका निर्देश करते हुए बतलाया गया है कि क्रोधसंज्वलनकी प्रथम कृष्टिके जितने कर्मपरमाणु उदीर्ण होकर निर्जरित होते हैं, उनसे दूसरे समयमें असंख्यातगुणे कर्मपरमाणुओंकी निर्जरा होती है। इसी प्रकार सर्वत्र इसी विधिसे सभी कृष्टियोंकी गुणश्रेणि निर्जरा जान लेना चाहिए। यहाँ जो गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है सो उसका आशय यह है कि प्रथम समयमें उदयमें प्रवेश करके जितने कर्मपुंजकी निर्जरा होती है उसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर जो कर्मपुंज प्राप्त हो उतना कर्मपुंज दूसरे समयमें उदयमें प्रवेश करके निर्जरित होता है। इस प्रकारकी निर्जराका निर्देश जहाँ जहाँ किया है उसका ही नाम गुणश्रेणिनिर्जरा है।

§ २९४ इस प्रकार पाँचवीं भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त करके अब छठी भाष्यगाथाका अवतार करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* इससे आगे छठी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ २९५ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ २९६ सुगमं।

(१२८) वेदगकालो किट्टीय पच्छिमाए दु णियमसा हुस्सो।
सखेज्जदिभागेण दु सेसग्गाणं कमेणधिगो ॥१८१॥

§ २९७ एसा छट्ठी भासगाहा 'का च कालेणेत्ति' इममेव सुत्तावयवमस्सियूण बारसण्हं संगहकिट्टीण वेदगकालविसयप्पाबहुअपरूवणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'वेदगकालो किट्टीय पच्छिमाए दु०' एव भणिदे पच्छिमकिट्टी णाम लोभस्स तदियसंगहकिट्टी सुहुमसांपराइयकिट्टीसरूव मावण्णा घेत्तव्वा, सव्वपच्छा वेदिज्जमाणत्तादो। तिस्से वेदगकालो त्ति वुत्ते जेत्तियं कालं तिस्से वेदगो होदूणच्छइ सो कालो घेत्तव्वो। सो च सुहुमसांपराइयद्धामेत्तो होदूण 'णियमसा' णिच्छएणेव 'हुस्सो' थोवयरो होदि त्ति वुत्तं होइ।

§ २९८ 'सखेज्जदिभागेण दु०' एव भणिदे सेसिगाणं संगहकिट्टीण वेदगकालो जहाकममेव पच्छाणुपुव्वीए सखेज्जदिभागेणब्भहिओ द ट्ठव्वो, हेट्ठिमकिट्टीवेदगद्धाणमुवरिमकिट्टीवेदगद्धाहितो संखेज्जावलियमेत्तेणब्भहियत्तदंसणादो। एत्थ गाहापुव्वद्धे 'तु' सद्दणिद्देसो पाद पूरणट्ठे दट्ठव्वो। गाहापच्छद्धे च ' 'तु' सद्दो अवहारणट्ठे वट्टदे, सखेज्जदिभागेणेव विसेसाहिओ णाण्णहा त्ति अवहारणफलत्तादो। अथवा समुच्चयट्ठे दट्ठव्वो तेण किट्टीकरणद्धा अस्सकण्ण करणद्धा छण्णोकसायक्खवणद्धा इत्थीवेदक्खवणद्धा णवुंसयवेदक्खवणद्धा अंतरकरणद्धा अट्ठ कसायक्खवणद्धा त्ति एदासिं पि अद्धाणमेत्थ गहणं कायव्वं। सपहि एदासिमद्धाणमेसा संदिट्ठी—

---

§ २९६ यह सूत्र सुगम है।

(१२८) अन्तिम कृष्टिका वेदक काल नियमसे सबसे अल्प है। तथा शेष कृष्टियोंका क्रमसे उत्तरोत्तर संख्यातवाँ भाग अधिक है ॥१८१॥

§ २९७ यह छठो भाष्यगाथा 'का च कालेण' सूत्रके इसी अवयवका आलम्बन लेकर बारह संग्रह कृष्टियोंके वेदक कालविषयक अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—वेदककालो किट्टीय पच्छिमाए दु०' ऐसा कहनेपर यहाँ अन्तिम कृष्टिसे सूक्ष्मसाम्पराय कृष्टिस्वरूप को प्राप्त हुई लोभसंज्वलनकी तीसरी संग्रहकृष्टि ग्रहण करनी चाहिए, क्योंकि उसका सबसे अन्तमें वेदन होता है। उसका वेदककाल ऐसा कहनेपर जितने काल तक उसका वेदक अवस्थित रहता है उस कालका ग्रहण करना चाहिए। और वह सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानके कालप्रमाण होकर णियमसा' निश्चयसे ही हुस्सो अल्पतर होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ २९८ सखेज्जदिभागेण दु०' ऐसा कहनेपर शेष संग्रह कृष्टियोंका वेदककाल यथाक्रम ही उत्तरोत्तर पश्चादानुपूर्वीसे संख्यातवाँ भाग अधिक जानना चाहिए, क्योंकि अधस्तन कृष्टियोंका वेदककाल, उपरिम कृष्टियोंके वेदककालसे संख्यात आवलि अधिक देखा जाता है, यहाँ उक्त भाष्यगाथाके पूर्वार्धमें 'तु' शब्दका निर्देश पादपूरणरूप अर्थमें जानना चाहिए और गाथाके उत्तरार्धमें 'तु' शब्द अवधारणरूप अर्थमें आया है, क्योंकि उपरिम संग्रहकृष्टिसे अधस्तन प्रत्येक संग्रह कृष्टिका काल संख्यातवाँ भाग ही विशेष अधिक होता है, अन्य प्रकारसे अधिक नहीं होता इस प्रकार अवधारणा करना ही दूसरे 'तु' शब्दके निबद्ध करनेका फल है। अथवा यह दूसरा तु' शब्द समुच्चयरूप अर्थमें जानना चाहिए। उससे कृष्टिकरणकाल, अश्वकरणकाल, छह नोकषायक्षपणाकाल, स्त्रीवेदक्षपणाकाल, नपुंसकवेदक्षपणाकाल, अन्तरकरणकाल, आठ कषायक्षपणाकाल इस प्रकार इन कालोंको भी यहाँपर ग्रहण करना चाहिए। इन कालोंकी यह संदृष्टि है—

	१	२	३	४	५	
	0000 अट्ठकसायक्खवणद्धा	0000 अतरकरणद्धा	0000 णवुसयवेदक्खवणद्धा	0000 इत्थिवेदक्खवणद्धा	0000 छण्णोकसायक्खवणद्धा	→
←	६ 0000 अस्सकण्णकरणद्धा	७ 0000 किट्टीकरणद्धा	८ 0000 कोहपढमकिट्टीवेदगद्धा	९ 0000 कोहविदियकिट्टीवेदगद्धा	१० 0000 कोहतदियकिट्टीवेदगद्धा	→
←	११ 0000 माणपढमकिट्टीवेदगद्धा	१२ 0000 माणविदियकिट्टीवेदगद्धा	१३ 0000 माणतदियकिट्टीवेदगद्धा	१४ 0000 मायापढमकिट्टीवेदगद्धा	१५ 0000 मायाविदियकिट्टीवेदगद्धा	→
←	१६ 0000 मायातदियकिट्टीवेदगद्धा	१७ 0000 लोभपढमकिट्टीवेदगद्धा	१८ 0000 लोभविदियकिट्टीवेदगद्धा	१९ 0000 लोभतदियकिट्टीवेदगद्धा		

	१	२	३	४	५	
	0000 आठकषाय क्खवणद्धा	0000 अन्तरकरणद्धा	0000 नपुंसकवेद क्खवणद्धा	0000 इत्थीवेद क्खवणद्धा	0000 छण्णोकाय क्खवणद्धा	→
←	६ 0000 अस्सकण्ण करणद्धा	७ 0000 किट्टीकरणद्धा	८ 0000 कोहपढम किट्टीवेदगद्धा	९ 0000 कोहविदिय किट्टीवेदगद्धा	१० 0000 कोहतदिय किट्टीवेदगद्धा	→
←	११ 0000 माणपढम किट्टीवेदगद्धा	१२ 0000 माणविदिय किट्टीवेदगद्धा	१३ 0000 माणतदिय किट्टीवेदगद्धा	१४ 0000 मायापढम किट्टीवेदगद्धा	१५ 0000 मायाविदिय किट्टीवेदगद्धा	→
←	१६ 0000 मायातदिय किट्टीवेदगद्धा	१७ 0000 लोभपढम किट्टीवेदगद्धा	१८ 0000 लोभविदिय किट्टीवेदगद्धा	१९ 0000 लोभतदिय किट्टीवेदगद्धा		

२९९ एवमेदेण गाहासुत्तेण सूचिदप्पाबहुअस्स फुडीकरणट्ठमुवरिमं विहासागंथमाह—

* विहासा ।

§ ३०० सुगमं ।

* पच्छिमकिट्टीमंतोमुहुत्तं वेदयदि, तिस्से वेदगकालो थोवो ।

§ ३०१ किं कारणं ? सुहुमसांपराइयद्धापमाणत्तादो । एसो च अंतरकरणद्धादो संखेज्जगुणो त्ति घेत्तव्वो, संखेज्जट्ठिदिबंधसहस्सगब्भत्तादो ।

* एक्कारसमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

§ ३०२ एसो लोभविदियबादरसांपराइयकिट्टीए वेदगकालो, तेण विसेसाहिओ जादो । केत्तियमेत्तो विसेसो ? संखेज्जावलियमेत्तो । कुदो एवमवगम्मदे ? 'संखेज्जदिभागेण दु सेसिगाणं कमेणहिया त्ति गाहासुत्तावयवादो । एवमुवरिमपदेसु वि सव्वत्थ विसेसपमाणमेदं णायव्वं ।

* दसमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

§ ३०३ एसो लोभपढमसंगहकिट्टीवेदगकालो वट्ठव्वो[1] ? सेसं सुगमं ।

---

§ २९९ इस प्रकार इस गाथासूत्र द्वारा सूचित हुए अल्पबहुत्वका स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं ।

§ ३०० यह सूत्र सुगम है ।

* अन्तिम कृष्टिका अन्तमुहूर्त काल तक वेदन करता है । उसका वेदनकाल अल्प है ।

§ ३०१ शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि वह सूक्ष्मसाम्परायके गुणस्थानके काल प्रमाण है और यह काल अन्तरकरणके कालसे संख्यातगुणा है ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि इसमें संख्यात हजार स्थितिबन्ध अपसरणकाल गर्भित हैं ।

* ग्यारहवीं कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।

§ ३०२ यह लोभसंज्वलनकी दूसरी बादरसम्पराय कृष्टिका वेदककाल है, इसलिये विशेष अधिक हो गया है ।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—संख्यात आवलिप्रमाण विशेष है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—'संखेज्जदिभागेण दु कमेणहिया' इस गाथासूत्र वचनसे जाना जाता है ।

इस प्रकार उपरिम पदोंमें भी यह विशेषका प्रमाण जानना चाहिए ।

* दसवीं कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।

§ ३०३ यह लोभसंज्वलनकी प्रथमसंग्रह कृष्टिका वेदककाल जानना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

---

१. आ प्रतौ दट्ठव्वो इति पाठः ।

* णवमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* अट्ठमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* सत्तमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* छट्ठीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* पचमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* चउत्थीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* तदियाए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* बिदियाए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

* पढमाए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ ।

§ ३०४ एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । सपहि एत्थ सव्वत्थ विसेसो किंपमाणो त्ति आसकाए इदमाह—

* विसेसो सखेज्जदिभागो ।

§ ३०५ गयत्थमेदं सुत्त । एवम्हादो कोहपढमसगहकिट्टीवेदगकालादो उवरि किट्टीकरणद्धा सखेज्जगुणा, साविरेयतिगुणपमाणत्तादो । अस्सकण्णकरणद्धा विसेसाहिया । छण्णोकसायक्खवणद्धा विसेसाहिया । इत्थिवेदक्खवणद्धा विसेसाहिया । णवुसयवेदक्खवणद्धा विसेसाहिया । अतरकरणद्धा विसेसाहिया । अट्ठकसायक्खवणद्धा सखेज्जगुणा । एवं तदियमूलगाहाए अत्थविहासा समत्ता ।

* नवमीं कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* आठवीं कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* सातवीं कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* छटी कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* पाँचवीं कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* चौथी कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* तीसरी कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* दूसरी कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।
* पहली कृष्टिका वेदककाल विशेष अधिक है ।

§ ३०४ ये सूत्र सुगम हैं । अब यहाँ सर्वत्र विशेषका प्रमाण क्या है ऐसी आशका होनेपर इस सूत्रको कहते हैं—

* विशेषका प्रमाण संख्यातवाँ भाग है ।

§ ३०५ यह सूत्र गतार्थ है । इस क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदककालसे ऊपर कृष्टिकरणका काल सख्यातगुणा है, क्योकि यह साधिक तिगुना है । उससे अश्वकर्णकरणका काल विशेष अधिक है । उससे छह नोकषायोके क्षपणाका काल विशेष अधिक है । उससे नपुसकवेदका क्षपणाकाल विशेष अधिक है ! उससे अन्तरकरणकाल विशेष अधिक है । उससे आठ कषायोका क्षपणाकाल सख्यातगुणा है । इस प्रकार तीसरी मूलगाथाकी अर्थ विभाषा समाप्त हुई ।

* एत्तो चउत्थीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ ३०६ तदियमूलगाहाविहासणाणंतरमेत्तो चउत्थीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा कायव्वा त्ति वुत्तं होइ ।

* त जहा ।

§ ३०७ सुगमं ।

(१२९) कदिसु गदीसु भवेसु य ट्ठिदि-अणुभागेसु वा कसाएसु ।
कम्माणि पुव्वबद्धाणि कदीसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु ॥१८२॥

§ ३०८ एत्तो प्पहुडि तिण्णि मूलगाहाओ गदियादिमग्गणासु जत्थतत्थाणुपुव्वीए पुव्वबद्धाण कम्माण खवगसेढीए भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेणत्थित्तगवेसणट्ठमोइण्णाओ । तत्थ ताव किट्टीओ करेमाणस्स वेदेमाणस्स च खवगस्स गदि इंदिय काय-कसायमग्गणासु संचिदाणं पुव्वबद्धाणमुक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदि अणुभागसंचिदाणं च संभवासंभवणिण्णयविहाणट्ठमेसा चउत्थी मूलगाहा समोइण्णा । त जहा—'कदिसु गदीसु' केत्तियमेत्तीसु गदीसु पुव्वबद्धा कम्मपदेसा एदस्स खवगस्स संभवंति, किमेक्किस्से दोसु तिसु चदुसु वा त्ति एसो पढमो पुच्छाणिद्देसो गदिमग्गणाविसये पुव्वबद्धाण कम्माण भयणिज्जाभयणिज्जभावगवेसणे पडिबद्धो । तत्थ चदुण्ह गदीणमेग-दु ति चदुसजोगेण पण्णारसपच्छभंगा वत्तव्वा ।

---

* अब इससे आगे चौथी मूलगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ ३०६ तीसरी मूलगाथाकी विभाषा करनेके बाद चौथी मूलगाथाकी समुत्कीर्तना करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* वह जैसे ।

§ ३०७ यह सूत्र सुगम है ।

(१२९) कितनी गतियों, भवों, स्थितियों, अनुभागों और कषायोंमें तथा तत्सम्बन्धी कृष्टियों और उनकी स्थितियोंमें संचित इस पूवबद्ध कर्म क्षपकके पाये जाते हैं ॥१८२॥

§ ३०८ इससे आगे तीन मूलगाथाएँ गति आदि मागणाओमे यत्र-तत्रानुपूर्वीसे पूवबद्ध कर्मोंके क्षपकश्रेणिमें भजनीय और अभजनीयस्वरूपसे अस्तित्वकी गवेषणा करनेके लिए अवतीर्ण हुई हैं । वहाँ सवप्रथम कृष्टियोको करनेवाले और वेदन करनेवाले क्षपकके गति, इन्द्रिय, काय और कषाय मागणाओमे संचित हुए पूवबद्ध उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशो तथा स्थिति और अनुभागोके सम्भव और असम्भवका निर्णय करनेके लिए यह चौथी मूल गाथा अवतीर्ण हुई है । वह जैसे—'कदिसु गदीसु' कितनी गतियोमें पूर्वबद्ध कर्मप्रदेश इस क्षपकके सम्भव हैं, क्या एक गतिसम्बन्धी, दो गतिसम्बन्धी, तीन गतिसम्बन्धी या चारों गतिसम्बन्धी कर्मप्रदेश इस क्षपकके सम्भव हैं इस प्रकार यह प्रथम पृच्छानिर्देश गतिमार्गणाके विषयमें पूर्वबद्ध कर्मोंके भजनीय और अभजनीय पनेकी गवेषणा करनेमें प्रतिबद्ध है । वहाँ चारो गतियोके एक सयोग, दो सयोग, तीन संयोग और चार सयोगसे प्रश्नरूपमे पन्द्रह भंग कहने चाहिए ।

विशेषार्थ—नियम यह है कि चार बार २ अक रखकर परस्पर गुणा करके लब्ध १६ में से १ अंक कम करनेपर कुल १५ भग उत्पन्न होते हैं । उनमें एकसंयोगी ४, द्विसयोगी ६, तीनसंयोगी ४ और चारसयोगी १ भंग होते हैं । इस प्रकार उक्त विधिसे १५ विकल्प उत्पन्न करके यहाँ पृच्छा करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पय है ।

§ ३०९. तहा केत्तिएसु भवेसु सचिदाणि पुव्वबद्धाणि कम्माणि एदस्स खवगस्स संभवंति, किमेक्कम्हि भवग्गहणे, आहो दोसु तिसु चदुसु संखेज्जेसु असंखेज्जेसु वा त्ति एसो विदिओ पुच्छाणिद्देसो। काइंदियमग्गणापडिबद्धेसु भवग्गहणेसु पुव्वबद्धाण कम्माण परूवणाए पडिबद्धो। ट्ठिदि अणुभागेसु वा केत्तिएसु पुव्वबद्धाणि कम्माणि एदस्स खवगस्स किट्टीकरणप्पहुडि उवरिमावत्थाए वट्टमाणस्स संभवंति त्ति एसो तदिओ पुच्छाणिद्देसो। एदेण किमुक्कस्सट्ठिदीए उक्कस्साणुभागेण च सह बद्धाणि कम्माणि एदस्स संभवंति आहो अणुक्कस्सट्ठिदि अणुभागेहिं सह बद्धाणि त्ति एवंविहो अत्थणिद्देसो सूचिदो दट्ठव्वो।

§ ३१०. केत्तियमेसेस वा कसाएसु पुव्वबद्धा कम्मपरमाणवो एदस्स दीसंति, किमेक्कम्हि दोसु तिसु चदुसु वा त्ति एसो चउत्थो पुच्छाणिद्देसो। एदेण कसायमग्गणमस्सियूण पुव्वबद्धाण संभवासंभवादिणिण्णयपरूवणा सूचिदा दट्ठव्वा। एत्थ वि कोह-माण माया लोभाणमेग दु ति चदुसंजोगे पण्णारसपण्णरभंगा अणुगंतव्वा। एसो च सव्वो पुच्छाणिद्देसो गदि-इंदिय कायमग्गणावयवेसु ट्ठिदि अणुभागवियप्पेसु कसायभेदेसु च पुव्वबद्धाण कम्माण भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेण संभवतवियत्तावहारणं च उवेक्खदे। सव्वेसु च पुच्छाणिद्देसेसु 'कम्माणि पुव्वबद्धाणि' त्ति एसो सत्तावयवो पादेक्कमभिसंबंधणिज्जो।

---

§ ३०९ उसी प्रकार कितने भवोंमें सचित हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके सम्भव हैं। क्या एक भवग्रहणमे या दो भवोमें, तीन भवोमें चार भवोमें या संख्यात और असंख्यात भवोमे संचित हुए पूर्वबद्ध कम इस क्षपकके सम्भव हैं इस प्रकार यह दूसरा पृच्छानिर्देश है। कौन काय और इन्द्रियमार्गणासम्बन्धी भवग्रहणोमें संचित पूर्वबद्ध कर्मोंकी प्ररूपणा इस क्षपकके है। तथा कितनी स्थितियो और अनुभागोमें सचित पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके कृष्टिकरणसे लेकर उपरिम अवस्थामें विद्यमान जीवके सम्भव है इस प्रकार यह तीसरा पृच्छानिर्देश है। इससे क्या उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभागरूपसे बद्ध कम इस क्षपकके सम्भव हैं या अनुत्कृष्ट स्थिति और अनुत्कृष्ट अनुभाग रूपसे बद्ध कर्म इस क्षपकके सम्भव हैं इस प्रकारका अर्थनिर्देश सूचित जानना चाहिए।

विशेषार्थ—यहाँ कितनी गतियो और कितने भवो आदिको आलम्बन बनाकर कृष्टिकारक और कृष्टिवेदक जीवके कितनी स्थितिसे युक्त कितने अनुभागसे युक्त और कितने प्रदेशोंसे युक्त पूर्वबद्ध कर्म पाये जाते हैं। इस विषयमे क्या सम्भव है यह पृच्छा की गयी है ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

§ ३१० अथवा कितनी कषायोमे सचित पूर्वबद्ध कमपरमाणु इस जीवके दिखाई देते हैं। क्या एक कषायमे, दो कषायोमे, तीन कषायोंमे या चार कषायोमे संचित पूर्वबद्ध कर्म इस जीवके दिखाई देते हैं इस प्रकार यह चौथा पृच्छानिर्देश है। इससे कषायमार्गणाका आलम्बन लेकर इस जीवके पूर्वबद्ध कर्मोंके सम्भव और असम्भव आदिके निर्णयविषयक प्ररूपणा सूचित की गयी जाननी चाहिए। यहाँ पर भी क्रोध, मान, माया और लोभके एकसंयोग, द्विसंयोग तीनसंयोग और चारसंयोगसे पन्द्रह भंग जानने चाहिए। यह समस्त पृच्छानिर्देश गति, इन्द्रिय और कायमार्गणा के भेदोमें और कषायमार्गणाके भेदोमे स्थिति और अनुभागके विकल्पोकी अपेक्षा पूर्वबद्ध कर्मोंके भजनीय और अभजनीयपनेरूपसे सम्भव और असम्भवके अवधारणाकी अपेक्षा रखता है। अत समस्त पृच्छाओके कथनमें 'कम्माणि पुव्वबद्धाणि' इस सूत्रवचनका प्रत्येकके साथ सम्बन्ध कर लेना चाहिए।

§ ३११ 'कदीसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु' एसो गाहासुत्तस्स चरिमावयवो गदियादिसंचिदाणं पुव्वबद्धाण भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेण लब्भमाणाण केत्तियासु किट्टीसु ट्ठिदीसु च संभवो, किमविसेसेण सव्वासु आहो पडिणियदासु चेव किट्टीसु ट्ठिदीसु च तेसिमवट्ठाणणियमो त्ति इममत्थविसेसं जाणावेदि।

§ ३१२ एदस्स चरिमावयवस्स अत्थणिद्देसे भासगाहा एत्थ णत्थि, छट्ठमूलगाहा-विदियभासगाहाए एदस्स अत्थं भणिहिदि, तत्थेव तस्स णिण्णयं कस्सामो। संपहि एदिस्से मूलगाहाए पुव्वद्धणिबद्धाण चउण्हमत्थविसेसाण जहाकमं णिण्णयं कुणमाणो तत्थ पडिबद्धाणं भासगाहाणमियत्तावहारणट्ठमिदमाह—

* एदिस्से तिण्णि भासगाहाओ।

§ ३१३ एदिस्से मूलगाहाए अत्थविहासणट्ठमेत्थ तिण्णि भासगाहाओ होंति त्ति भणिदं होदि।

* त जहा।

§ ३१४ सुगमं।

(१३०) दोसु गदीसु अभज्जाणि दोसु भज्जाणि पुव्वबद्धाणि।
एइंदियकाएसु च पचसु भज्जा ण च तसेसु ॥१८३॥

---

§ ३११ 'कदीसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु' यह गाथासूत्रका अन्तिम अवयव है जो—गति आदि मार्गणाओंमें सचयरूपसे प्राप्त हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय और अभजनीयरूपसे कितनी कृष्टियों और उनकी स्थितियोंमें सम्भव हैं, क्या अविशेषरूपसे सभी कृष्टियों और उनकी स्थितियोंमें उनके अवस्थानका नियम है या प्रतिनियत कृष्टियों और उनकी स्थितियोंमें ही अवस्थानका नियम है—इस अर्थविशेषका ज्ञान कराता है।

§ ३१२ इस गाथासूत्रके अन्तिम अवयवका अर्थनिर्देश करनेवाली भाष्यगाथा प्रकृतमें नहीं है, किन्तु छठी मूलगाथाकी दूसरी भाष्यगाथा द्वारा इसका अर्थ कहेंगे, इसलिए वहींपर उसका निर्णय करेंगे। अब इस मूलगाथाके पूर्वार्धमें निबद्ध चार अर्थविशेषोंका क्रमसे निर्णय करते हुए उन अर्थोंमें प्रतिबद्ध भाष्यगाथाओंकी इयत्ताका अवधारण करनेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* इस चौथी मूल सूत्रगाथाकी तीन भाष्यगाथाएँ हैं।

§ ३१३ इस मूलगाथाके अर्थकी विभाषा करनेके लिए इसके अर्थके प्रतिपादनमें तीन भाष्यगाथाएँ हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* वह जैसे।

§ ३१४ यह सूत्र सुगम है।

(१३०) दो गतियोंमें सचित हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय नहीं हैं और दो गतियोंकी अपेक्षा भजनीय हैं। तथा एकेन्द्रियसम्बन्धी पाँच कायमार्गणाओंमें सचित हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं। किन्तु त्रसमार्गणामें भजनीय नहीं हैं ॥१८३॥

§ ३१५ एसा पढमभासगाहा गदिमग्गणाविसयपढमपुच्छाए भवग्गहणविसयविदिय पुच्छाए च णिण्णयविहाणट्ठमोइण्णा। संपहि एदिस्से अत्थो वुच्चदे। तं जहा—'दोसु गदीसु अभज्जाणि' एवं भणिदे दोगदीसु संचिदाणि पुव्वबद्धाणि एदस्स खवगस्स णियमा अत्थि, तदो ताणि ण भयणिज्जाणि त्ति घेत्तव्वं, तत्थ तेसिं भयणिज्जत्ते कारणाणुवलंभादो। 'दोसु भज्जाणि पुव्वबद्धाणि' एवं भणिदे णिरयदेवगदीसु संचिदाणि पुव्वबद्धाणि एदस्स खवगस्स सिया अत्थि सिया णत्थि त्ति भजिदाणि, तेसिमवस्सभाविणियमाभावादो। 'एइंदिय काएसु च' एवं भणिदे पुढवि० आउ० तेउ०-वाउ० वणप्फदि०सण्णिदेसु पंचसु थावर काएसु एइंदियजादिपडिबद्धेसु जाणि पुव्वबद्धाणि ताणि एदस्स खवगस्स भजियव्वाणि, तेसिं पि पयदविसये अवस्संभाविणियमाणुवलंभादो। तदो एदेसु पंचसु काएसु पादेक्क णिरुद्धेसु पुव्वबद्धाणि भयणिज्जाणि त्ति घेत्तव्वं। 'ण च तसेसु' एवं भणिदे तसकाइयसंचिदाणि पुव्वबद्धाणि णियमा अत्थि, ण तेसु भयणिज्जत्तसंभवो त्ति वुत्तं होदि। कुदो एवं चे? तसपज्जायमणागंतूण खवगसेढिसमारोहणोवायाभावादो। एत्थ तसकाइयसामण्णणिद्देसे वि तसकाइयविसेसेसु सण्णिपंचिंदिएसु पुव्वबद्धाणि ण भयणिज्जाणि, बि ति चउरिंदियासण्णि पंचिंदियेसु सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तेसु च पुव्वबद्धाणि भयणिज्जाणि चेवेत्ति एसो वि अत्थविसेसो एत्थेव सुत्तपदे णिलीणो त्ति दट्ठव्वो।

§ ३१५ यह प्रथम भाष्यगाथा गतिमार्गणाविषयक प्रथम पृच्छा और भवग्रहणविषयक दूसरी पृच्छाका निर्णय करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। अब इसका अर्थ कहते हैं। वह जैसे—'दोसु गदीसु अभज्जाणि' ऐसा कहनेपर दो गतियोंमें संचित हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे होते हैं, इसलिए वे भजनीय नहीं हैं ऐसा जानना चाहिए, क्योंकि वहाँपर उनके भजनीयपनेका कारण नहीं पाया जाता। 'दोसु भज्जाणि पुव्वबद्धकम्माणि' ऐसा कहनेपर नरकगति और देवगतिमें संचित हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके किसीके होते हैं और किसीके नहीं होते हैं, इसलिए भजनीय हैं, क्योंकि उनके अवश्य ही होनेके नियमका अभाव है। 'एइंदिय काएसु च' ऐसा कहनेपर पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक संज्ञावाले एकेन्द्रिय जातिसे प्रतिबद्ध पाँच स्थावरकायिक जीवोंमें संचित जो पूर्वबद्ध कर्म होते हैं वे इस क्षपकके भजनीय हैं, क्योंकि उनके भी प्रकृत विषयमें अवश्य होनेका नियम नहीं पाया जाता। इसलिए इन पाँच कायोंमेंसे प्रत्येक विवक्षित कायमें संचित पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। और 'ण च तसेसु' ऐसा कहनेपर त्रसकायिक जीवोंमें संचित हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे हैं, इसलिए उनकी अपेक्षा भजनीयपना सम्भव नहीं है।

शंका—ऐसा किस कारणसे है?

समाधान—क्योंकि त्रसपर्यायमें आये बिना क्षपकश्रेणिपर आरोहण करनेका अन्य कोई उपाय नहीं है।

गाथासूत्रमें त्रसकायिक ऐसा सामान्य निर्देश करनेपर भी त्रसकायिकके एक भेद संज्ञी-पंचेन्द्रियोंमें संचित पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय नहीं हैं, किन्तु द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञीपंचेन्द्रिय और संज्ञीपंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंमें संचित हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय ही होते हैं इस प्रकार यह अर्थविशेष भी इसी सूत्रपदमें निलीन है ऐसा जानना चाहिए।

१ ता प्रतौ भणिदे गदीसु इति पाठ।

§ ३१६ एत्थ जाणि भयणिज्जपदाणि तेसिमेक्को वि परमाणू सव्वासु किट्टीसु सव्वेसु च ट्ठिदिविसेसेसु अहोदूण लब्भइ, तेसिमसंभवपक्खे तदविरोहादो। संभव पक्खे पुण सिया एक्को परमाणू सिया दो परमाणू एव गंतूण उक्कस्सेणाणंता परमाणू सव्वासिं किट्टीण सरिसघणिएसु सव्वेसु च ट्ठिदिविसेसेसु होदूण लब्भंति। जाणि पुण ण भयणिज्जाणि पुव्वबद्धाणि तेसिमणंता पदेसा सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वासिं किट्टीण सरिसघणिय-सरूवा होदूण णियमा लब्भंति त्ति एवं भयणिज्जाभयणिज्जाणमत्थपदं सव्वत्थ जोजेयव्वं।

§ ३१६ यहाँ प्रकृतमे जिन मार्गणाओंके पूर्वबद्ध कर्म इस जीवके भजनीय कहे हैं उनका एक भी परमाणु सभी कृष्टियों और उनके स्थितिविशेषोंमें नहीं प्राप्त होते हैं, क्योंकि उनकी असम्भावनारूप पक्षके स्वीकार करनेमे कोई विरोध नही आता। सम्भव पक्षमे तो किसी क्षपकके एक परमाणु पाया जाता है, किसी क्षपकके दो परमाणु पाये जाते हैं। इस प्रकार जाकर सभी कृष्टियोंके सदृश धनवाले सभी स्थितिविशेषोंमें उत्कृष्टरूपसे अनन्त परमाणु होकर प्राप्त होते हैं। परन्तु जो पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय नहीं हैं उनके अनन्त परमाणु सभी कृष्टियोंकी सभी स्थितियोंमें सदृश धनरूपसे होकर इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं। यह भजनीय और अभजनीय पूर्वबद्ध कर्मोंका अर्थपद सर्वत्र योजित कर लेना चाहिए।

विशेषार्थ—प्रकृतमें कृष्टिकारक और कृष्टिवेदक क्षपक जीवके किन गति आदि मार्गणाओं सम्बन्धी भवोंमें बाँधे हुए चारित्रमोहनीय आदि कर्म नियमसे पाये जाते हैं और किन गति आदि मार्गणाओंसम्बन्धी भवोंमें बाँधे हुए कर्म पाये भी जाते हैं और नहीं भी पाये जाते हैं इस तथ्यका सांगोपांग विचार किया गया है। यह विचार करते हुए पहले मनुष्य और तिर्यंच इन दो गतियोंकी अपेक्षा विचार किया गया है। क्षपकके मनुष्यगति तो होती ही है क्योंकि उसके बिना संयत आदि पदोंकी प्राप्ति ही सम्भव नहीं है। अब रहीं शेष तीन गतियाँ सो ऐसा कोई नियम तो है नहीं कि जो कर्मस्थिति कालके भीतर देवगति और नरकगतिको नियमसे प्राप्त हुआ हो वही जीव आगे कर्मस्थिति कालके भीतर मनुष्य भवको प्राप्त कर क्षपक श्रेणीपर आरोहण करनेका अधिकारी होता है, इसलिए तो इन दो गतियोंकी अपेक्षा क्षपक जीवके पूर्वबद्ध कर्मोंको भजनीय कहा है। शेष रही तिर्यंच गति, सो मनुष्यगतिकी कायस्थिति पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपमप्रमाण है और इसमे देवगति और नरकगतिकी सम्भव भवस्थितिको भी सम्मिलित कर लिया जाय तो भी वह कर्मस्थिति कालप्रमाण नहीं हो पाती। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह क्षपक जीव विवक्षित मनुष्य पर्यायको प्राप्त करनेके पहले कर्मस्थिति कालके भीतर तिर्यंचगतिमें अवश्य हो रहा होगा। उसमें भी तिर्यंचगतिका ऐसा कौन-सा भेद है जिसमें वह अवश्य रहा होगा, क्योंकि असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक जितनी भी पर्यायें हैं वे सब तिर्यंचगति सम्बन्धी ही हैं। अतः यहाँ कर्मस्थितिके कालको देखते हुए इतना तो सुनिश्चित कहा जा सकता है कि वह पहले एकेन्द्रिय पर्यायमें अवश्य रहा होगा। और यह तथ्य सुनिश्चित है कि कतिपय ऐसे भी जीव होते हैं जो सीधे एकेन्द्रिय पर्यायसे आकर और मनुष्य पर्याय धारण करके मुक्तिगामी होते हैं। अतः त्रस पर्यायमें द्वीन्द्रियसे लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय और लब्ध्यपर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यायमें जिन कर्मोंका बन्ध होता है वे कर्म इस क्षपक जीवके नियमसे होते ही हैं ऐसा कोई नियम नहीं है। परन्तु एकेन्द्रिय पर्यायमें जिन कर्मोंका बन्ध होता है वे इस क्षपक जीवके नियमसे पाये जाते हैं। इतना अवश्य है कि पृथिवीकायिक आदि उत्तर भेदोंमेंसे विवक्षित किसी एक कायवाले जीवकी अपेक्षा एकान्तसे ऐसा नियम नहीं किया जा सकता है। शेष कथन मूल टीकामें स्पष्ट किया ही है।

§ ३१७ संपहि एवंविहमेदिस्से गाहाए अत्थं विहासेमाणो उवरिमं विहासागंथमाह—

* विहासा।

§ ३१८ सुगमं।

* एदस्स खवगस्स दुगदिसमज्जिदं कम्मं णियमा अत्थि। तं जहा—तिरिक्खगदिसमज्जिदं च मणुसगदिसमज्जिदं च।

§ ३१९ एदस्स खवगस्स किट्टीकरणप्पहुडि उवरिमावत्थाए वट्टमाणस्स दुगदिसमज्जिदं कम्मं णियमा अत्थि त्ति एदेण सामण्णणिद्देसेण विसेसणिण्णयो ण जादो त्ति तत्थेव विसेसणिण्णयजणणट्ठं 'तिरिक्खगदिसमज्जिदं च मणुसगदिसमज्जिदं च' इदि विसेसियूण णिद्देसो कदो। कधं पुण 'दोसु गदीसु अभजाणि' त्ति एदेण सामण्णणिद्देसेण तिरिक्खमणुसगदिविसेसपज्जाओ जायदि त्ति? ण पच्चवट्ठाणमिह कायव्वं, वक्खाणदो विसेसपडिवत्ती होदि त्ति णायेण तहाविहविसेससिद्धीए। तत्थ तिरिक्खगदिसमज्जिदं णियमा अत्थि त्ति वुत्ते तिरिक्खेहिंतो आगंतूण मणुस्सेसु चेव समुप्पज्जिय खवगसेढिमारूढस्स ताव तिरिक्खगदिसंचओ णिच्छएण लब्भदे। जो पुण तिरिक्खगदीदो णिस्सरियूण सेसगदीसु सागरोवमसदपुधत्तमेत्तकालमच्छिय खवगसेढिमारुहदि तस्स वि तिरिक्खगदिसंचिदं णियमा अत्थि, सागरोवमसदपुधत्तमेत्तकालब्भंतरे तिरिक्खगदिसमज्जिदस्स कम्मट्ठिदिसंचयस्स सुट्ठु णिल्लेवणाणुवलंभादो। मणुसगदिसमज्जिदं

§ ३१७ अब इस गाथाके इस प्रकारके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

* अब इसकी विभाषा करते हैं।

§ ३१८ यह सूत्र सुगम है।

* इस क्षपकके दो गतियोंमें अर्जित किया हुआ कर्म नियमसे है। वह जैसे—तिर्यंचगतिमें अर्जित किया गया कर्म भी है और मनुष्य गतिमें अर्जित किया गया कर्म भी है।

§ ३१९ कृष्टिकरणसे लेकर उपरिम अवस्थामें विद्यमान इस जीवके दो गतियोंमें अर्जित किया हुआ कर्म नियमसे है। इस प्रकार ऐसा सामान्य निर्देश करनेसे विशेषका निर्णय नहीं होता इसलिए वहीं पर विशेषका निर्णय करनेके लिए 'तिर्यंचगतिमें अर्जित किया गया कर्म भी है और मनुष्यगतिमें अर्जित किया गया कर्म भी है' ऐसा विशेषरूपसे निर्देश किया है।

शंका—'दो गतियोंमें अर्जित किया गया कर्म इस क्षपकके भजनीय नहीं है' इस प्रकार भाष्यगाथा द्वारा ऐसा सामान्य निर्देश करनेसे तिर्यंचगति और मनुष्यगति विशेष पर्यायका ग्रहण कैसे होता है?

समाधान—यहाँ ऐसा निश्चय नहीं करना चाहिए, क्योंकि व्याख्यानसे विशेषका ज्ञान होता है इस न्यायके अनुसार उस प्रकारके विशेषकी सिद्धि होती है।

वहाँ तिर्यंचगतिमें समर्जित किया गया कर्म नियमसे है ऐसा कहनेपर तिर्यंचगतिसे आकर मनुष्यगतिमें ही उत्पन्न होकर क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुए जीवके तिर्यंचगतिमें संचित हुआ कर्म निश्चयसे प्राप्त होता है। परन्तु जो तिर्यंचगतिसे निकलकर शेष गतियोंमें सौ पृथक्त्व सागरोपम काल तक रहकर क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उसके भी तिर्यंचगतिमें अर्जित किया गया कर्म इस क्षपकके नियमसे है, क्योंकि तिर्यंचगतिमें अर्जित होकर कर्मस्थितिमें हुए संचयका पूरी तरहसे निर्लेपन नहीं होता। परन्तु मनुष्यगतिमें संचित हुआ कर्म जिस किसी गतिमें कर्मस्थितिका पालन

पुण अत्थ वा तत्थ वा कम्मट्ठिदिमणुपालियूणागदस्स खवगस्स णिच्छएण अत्थि, मणुस पज्जाएणापरिणदस्स खवगसेढिसमारोहणासंभवादो। एवमेदेण सुत्तेण 'दोसु च गदीसु अभज्जाणि' त्ति एवं गाहासुत्तावयवं विहासिय संपहि 'दोसु भज्जाणि' त्ति इमं सुत्तावयवं विहासेमाणो इदमाह—

* देवगदिसमज्जिदं च णिरयगदिसमज्जिदं च भजियव्वं।

§ ३२० किं कारणं? देव णिरयगदीओ अगंतूण तिरिक्ख-मणुस्सेसु चेव कम्मट्ठिदिमेत्त कालमच्छिय खवगसेढिं चढिदस्स ताव तदुभयगदिसमज्जिदं णियमा णत्थि। जो च देव णेरइएसु पविसिय तत्थ केत्तिय पि कालमच्छिय पुणो तिरिक्खेसु पविसिय कम्मट्ठिदिमेत्तेण कालेण तत्तो अहिययरकालावट्ठाणेण वा णिरयदेवगदिसंचयं णिग्गालिय पुणो मणुसेसु आगंतूण खवगसेढिमारुहदि तस्स वि णिरय देवगदीसु पुव्वबद्धस्स एगो वि परमाणू णत्थि, कम्मट्ठिदीदो पर तत्थतणसंचयस्सावट्ठाणविरोहादो। जो पुण णिरय देवगदीओ पविसिय तत्थ केत्तिय पि कालमच्छियूण णिस्सरिदो कम्मट्ठिदिकालब्भंतरे चेवाविणट्ठेण तेण संचएण खवगसेढिं चढदि तस्स णिरयदेवगदिसमज्जिदं णियमा अत्थि त्ति वट्टव्वं, अगालिदेणेव तत्थतणसंचएण खवग सेढिमागयत्तादो। तम्हा देव णिरयगदिसंचिदस्स भयणिज्जत्तं सिद्धं।

करके आये हुए क्षपक जीवके निश्चयसे है, क्योंकि मनुष्यपर्यायसे अपरिणत हुए जीवके क्षपकश्रेणि पर आरोहण करना सम्भव नही है। इस प्रकार इस सूत्र द्वारा 'दोसु च गदीसु अभज्जाणि' गाथासूत्रके इस अवयवकी विभाषा करके अब 'दोसु भज्जाणि' सूत्रके इस अवयवकी विभाषा करते हुए इस सूत्र को कहते हैं—

* देवगतिमे अर्जित हुआ और नरकगतिमें अर्जित हुआ कर्म इस क्षपकके भजनीय है।

§ ३२० शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—क्योंकि देवगति और नरकगतिमें न जाकर तिर्यंच और मनुष्यगतिमें ही कर्मस्थितिप्रमाण काल तक रहकर क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुए जीवके उन दोनो गतियोमें अर्जित हुआ कर्म नियमसे नहीं पाया जाता।

अत जो जीव देवगति और नरकगतिमें प्रवेश करके और वहां कितने ही काल तक रहकर पुन तिर्यंचोमे प्रवेश करके कर्मस्थितिप्रमाण काल द्वारा या उससे अधिक काल द्वारा नरक गति और देवगतिसम्ब धी सचयको गलाकर पुन मनुष्योमें आकर क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उसके भी नरकगति और देवगतिमे संचित हुए पूर्वबद्ध कर्मका एक भी परमाणु इस क्षपकके नहीं पाया जाता, क्योंकि कर्मस्थितिके बाद उसके भीतर हुए संचयका क्षपकके अवस्थान होनेका विरोध है। परन्तु जो जीव नरकगति और देवगतिमें प्रवेश करके वहाँ कितने ही काल तक रहकर निकला तथा कर्मस्थितिप्रमाण कालके भीतर ही अविनष्ट हुए उस सचयके साथ क्षपकश्रेणिपर चढ़ता है उसके नरकगति और देवगतिमें संचित हुआ कर्म इस क्षपकके नियमसे होता है ऐसा जानना चाहिए, क्योंकि नरकगति और देवगतिमे जो संचय किया था उसे गलाये बिना ही वह जीव क्षपकश्रेणि पर आरूढ हुआ है। इसलिए देवगति और नगरकगतिमें संचित हुआ कर्म इस क्षपकके भजनीय है यह सिद्ध हुआ। यहाँपर तिर्यंचगति और मनुष्यगतिमें हुए संचयको ध्रुव करके शेष दो गतियोमे हुए संचयोके एकसंयोग और द्विसंयोगकी अपेक्षा तीन भंग उत्पन्न करने चाहिए। तथा ध्रुवपदके साथ चार भंग होते हैं।

एत्थ तिरिक्ख—मणुसगदिसंचयस्स धुवभावं कादूण सेसदोगदिसंचयाणमेगदुसंजोगेण तिण्णि भंगा समुप्पाएयव्वा। धुवपदेण सह चत्तारि भंगा ४।

§ ३२१ एवमेद विहासिय संपहि 'एइंदिय-कायेसु च पंचसु भज्जा' त्ति इमं सुत्तावयवं विहासेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

*** पुढविकाइय आउकाइय-तेउकाइय वाउकाइय वणप्फदिकाइएसु तत्तो एक्केक्केण काएण समज्जिद भजियव्वं।**

§ ३२२ एदेसु पंचसु थावरकाएसु एक्केक्केण काएण समज्जिद कम्ममेदस्स खवगस्स सिया अत्थि, सिया णत्थि त्ति वुत्तं होदि। एत्तो 'एक्केक्केण काएणे'त्ति विसेसणं पादेक्क मेदेसिं कायाणं णिरुंभणं कादूण भयणिज्जत्तमेदं जोजेयव्वमिदि पदुप्पायणफलं, समुदायप्पणाए तत्थतणसंचयस्स अण्णदरकायसंबंधेण खवगम्मि अवस्सभाविणियमदंसणादो। तम्हा एक्केक्क थावरकायमहिकिच्च तत्थतणसंचयस्स भयणिज्जत्तमेवमणुगंतव्वं। तं जहा—

§ ३२३ अप्पिदकायादो णिप्फिडियूण जाव कम्मट्ठिदी समप्पदि ताव सेसकाएसु चिट्ठिदूण पुणो मणुस्सेसु आगंतूण खवगसेढिं चडिदस्स अप्पिदकायम्मि संचिदकम्मपदेस

विशेषार्थ—कोई जीव पहले नरकगतिमें था। पुन वहाँसे निकलकर तिर्यंचगतिमें होता हुआ मनुष्यगतिमें आया। यह एक भंग है। कोई जीव पहले देवगतिमें था। पुन वहाँसे निकलकर तिर्यंचगतिमे होता हुआ मनुष्यगतिमें आया। यह दूसरा भंग है। तथा कोई जीव नरकसे निकलकर तिर्यंच या मनुष्य होकर देवपर्यायमे उत्पन्न हुआ। पुनः वहाँसे आकर तिर्यंचगतिमे उत्पन्न होकर मनुष्य हो गया। इस प्रकार तिर्यंचगति और मनुष्यगतिको ध्रुव करके नरकगति और देवगतिका अवलम्बन करके उक्त तीन भंग उत्पन्न होते हैं। इन तीन भंगोमे ध्रुव भंगके मिला देनेपर कुल चार भंग होते हैं। ये चारो भंग दोनो अपेक्षाओंसे बन जाते हैं। यह यहाँ विशेष समझना चाहिए।

§ ३२१ इस प्रकार इसकी विभाषा करके अब 'एकन्द्रिय और पाँचों कायमार्गणाओमें संचितकर्म इस क्षपकके भजनीय है इस सूत्रके अवयवकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

*** पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक इन पाँचोमे से एक एक कायके द्वारा समर्जित किया गया कर्म इस क्षपकके भजनीय है।**

§ ३२२ इन पाँच स्थावरकायिकोमेसे एक-एक कायिक जीवके द्वारा समर्जित कर्म इस क्षपकके स्यात् है और स्यात् नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इससे 'एक्केक्केण कायेण' यह विशेषण इन कायवाले जीवोंमेंसे प्रत्येकके साथ विवक्षित करके इस भजनीयपनेकी योजना कर लेनी चाहिए यह उक्त कथनका फल है, क्योंकि समुदायकी मुख्यतासे वहाँ हुए संचयका अन्यतर कायके सम्बन्धसे क्षपक जीवके अवश्य ही पाये जानेरूप नियम देखा जाता है। इसलिए एक-एक स्थावरकायिक जीवको अधिकृत करके वहाँ हुए संचयकी भजनीयता इस प्रकार जाननी चाहिए। यह जैसे—

§ ३२३ विवक्षित कायमेंसे निकलकर जबतक कर्मस्थिति समाप्त होती है तबतक शेष कायोमें रहकर पुन मनुष्योंमें आकर क्षपकश्रेणिपर चढे हुए जीवके विवक्षितकायमें संचित हुए

पिंडस्स एगो वि परमाणू णत्थि। जो पुण अप्पिदथावरकायादो णिस्सरिदूण कम्मट्ठिदिअब्भंतरे चेव मणुस्सेसुववज्जिय खवगसेढिमारुहदि तस्स अप्पिदथावरकायम्मि पुव्वबद्ध कम्मपदेसग्ग णियमा किट्टीसु अत्थि त्ति घेत्तव्व। होंत पि एक्को वा दो वा परमाणू जाव उक्कस्सेणाणंता परमाणू सव्वासु किट्टीसु सव्वेसु च ट्ठिदिविसेसेसु होदूण लब्भंति त्ति वत्तव्वं।

§ ३२४ संपहि 'ण च तसेसु' इच्चेदस्स सुत्तावयवस्स विहासणट्ठमुत्तरसुत्तमोइण्णं—

*** तसकाइय समज्जिद णियमा अत्थि।**

§ ३२५ जाव तसकाइयो ण जादो ताव खवगो ण होदि त्ति तेण कारणेण तसकाइय समज्जिदमेदस्स खवगस्स णियमा अत्थि त्ति घेत्तव्वं। एत्थ तसकाइयसमज्जिद धुव कादूण पुणो सेसकाएहिं सह एगसंजोगादिकमेण लद्धभंगा एक्कत्तीसं होंति ॥३१॥

§ ३२६ एवमेत्तिएण पबंधेण गदीसु कायेसु च पुव्वणिबद्धस्स कम्मस्स भयणिज्जाभयणिज्ज सरूवेणत्थित्तगवेसणं कादूण संपहि तत्थेव विसेसणिण्णयमुप्पायणट्ठमेगेगगदिसंचियस्स काय-संचियस्स च जहण्णुक्कस्सपदेसग्गस्स पमाणविणिण्णयमप्पाबहुअपरूवणं च कुणमाणो तण्णिबंधण-

---

कर्मप्रदेशपिण्डका एक भी परमाणु नहीं पाया जाता। परन्तु जो जीव विवक्षित स्थावरकायमेंसे निकलकर कर्मस्थितिके भीतर ही मनुष्योमे उत्पन्न होकर क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उसके विवक्षित स्थावरकायमें पूर्वबद्ध कर्मप्रदेशपुञ्ज कृष्टियोमे नियमसे पाया जाता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। पूर्वबद्ध प्रदेशपुञ्ज होता हुआ भी एक परमाणु होता है, दो परमाणु होते हैं इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे अनन्त परमाणु तक होते हैं जो सभी स्थितियोंमे सभी कृष्टियोमें और उनके सब स्थितिविशेषोमें प्राप्त होते हैं ऐसा यहाँ कहना चाहिए।

विशेषार्थ—यद्यपि प्रत्येक कायवाले जीवकी उत्कृष्ट कायस्थिति असख्यात लोकोंके समय प्रमाण है। परन्तु यहाँ प्रत्येक कायवाले जीवमें संचित हुए पूर्वबद्ध कर्मका क्षपक जीवके भजनीय-पना कैसे घटित होता है इस तथ्यको ध्यानमें रखकर मूल टीकामें उक्त प्रकारसे स्पष्टीकरण किया गया है ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

§ ३२४ अब 'ण च तसेसु' इस प्रकार उक्त भाष्यगाथाके इस अवयवकी विभाषा करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

*** त्रसकायिक जीवोंमे सर्माजत कर्म इस क्षपकके नियमसे पाया जाता है।**

§ ३२५ जबतक त्रसकायमें जन्म नहीं लेता तबतक क्षपक नहीं होता ऐसा नियम है। इस कारण त्रसकायिकमे सर्माजत कर्म इस क्षपकके नियमसे पाया जाता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। यहाँपर त्रसकायिकमें सर्माजत कर्मको ध्रुव करके पुन शेष कायोके साथ एक सयोगी आदिके क्रमसे प्राप्त हुए भंग ३१ होते हैं।

विशेषार्थ—यहाँ त्रसकायिकमे अर्जित कर्म ध्रुव है। उसका अन्वय सब भंगोमें होगा, इसलिए उसे ध्रुव रखकर शेष पृथिवीकायिक आदि पाँचकी अपेक्षा क्रमसे एक सयोगी ५, द्विसंयोगी १०, तीनसयोगी १०, चारसंयोगी ५ और पाँचसयोगी १ इस प्रकार कुल ३१ भग प्राप्त होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ ३२६ इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा चार गतियो और पाँच कायोमे पूर्वनिबद्ध कर्मके इस क्षपकके भजनीय और अभजनीयरूपसे अस्तित्वका ऊहापोह करके अब वहाँपर विशेष निर्णयको उत्पन्न करनेके लिए एक-एक गतिमे संचित हुए जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशपुंजके तथा

सुत्तरसुत्तमाह—

✽ एत्तो एक्केक्काए गदीए कायेहिं च समज्जिदल्लग्गस्स जहण्णुक्कस्सपदेसग्गस्स पमाणाणुगमो च अप्पाबहुअं च कायव्व।

§ ३२७ एत्तो उवरि एक्केक्काए गदीए तसथावरकायेहि य ज समज्जिद कम्मं खवगसेढीए भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेण समुवलब्भमाण तस्स पदेसग्गस्स जहण्णुक्कस्सपदविसेसिदस्स पमाणाणुगमो कायव्वो। तदो तव्विसयमप्पाबहुअ च कायव्व, अण्णहा तव्विसयविसेसणिण्णयाणुप्पत्तीदो त्ति भणिद होदि। सपहि एदेण सुत्तेण समप्पिदाण पमाणप्पाबहुआणमेत्थमणुगमो कायव्वो।

§ ३२८ तं जहा—गदीसु कायेसु च जेसु समज्जिद कम्म भयणिज्ज जाव तेसु समज्जिदस्स पदेसपिंडस्स पमाण जहण्णेण एगपरमाणू भवदि, उक्कस्सेण अणता कम्मपदेसा लब्भति। जेसु सचिददव्व णियमा अत्थि तेसु जहण्णुक्कस्सेण अणता कम्मपदेसा भवति। एसो पमाणाणुगमो।

§ ३२९ सपहि अप्पाबहुअ वुच्चदे—भयणिज्जाण जहण्णपदेसग्ग थोवं। उक्कस्सयं पदेसग्गमणतगुण। अभयणिज्जाण जहण्णओ पदेसपिंडो थोवो। उक्कस्सओ पदेसपिंडो असखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो।

एक-एक कायमें सचित हुए जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशपुञ्जके प्रमाणका निर्णय और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हुए उसको निमित्त कर आगेके सूत्रको कहते हैं—

✽ इससे आगे एक-एक गति द्वारा और एक एक काय द्वारा समर्जित होकर सम्बद्ध जघन्य और उत्कृष्ट कर्मप्रदेशपुञ्जके प्रमाणका अनुगम और अल्पबहुत्व करना चाहिए।

§ ३२७ इससे आगे एक एक गति द्वारा तथा त्रस और स्थावर काय द्वारा जो अर्जित किया गया कर्म क्षपकश्रेणिमें भजनीय और अभजनीयरूपसे उपलभ्यमान है उस जघ यपद और उत्कृष्टपदसे विशेषित प्रदेशपुञ्जके प्रमाणका अनुगम करना चाहिए। तदनन्तर तद्विषयक अल्प बहुत्व करना चाहिए, अन्यथा तद्विषयक विशेष निर्णय नहीं उत्पन्न होता यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब इस सूत्र द्वारा विवक्षित किये गये प्रमाण और अल्पबहुत्वका यहाँपर अनुगम करना चाहिए।

§ ३२८ वह जैसे—गतियोमे और कायोमेंसे जिस गति और कायमें अर्जित हुआ कम इस क्षपकके भजनीय होता है उस गति और कायमे अर्जित हुए प्रदेशपिण्डका प्रमाण जघन्यरूपसे एक परमाणु प्राप्त होता है और उत्कृष्टरूपसे अनन्त कमप्रदश पाये जाते हैं। परन्तु जिस गति और कायमे संचित हुआ कमद्रव्य इस क्षपकके नियमसे पाया जाता है उस गति और कायमें जघन्य और उत्कृष्टरूपसे अनन्त कमप्रदेश पाये जाते हैं। यह प्रमाणानुगम है।

§ ३२९ अब अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। भजनीय पदोका जघन्य प्रदेशपुञ्ज सबसे अल्प होता है। उससे उत्कृष्ट प्रदेशपुंज अनन्तगुणा होता है। अभजनीय पदोंका जघन्य प्रदेशपिण्ड सबसे अल्प होता है। उससे उत्कृष्ट प्रदेशपिण्ड असख्यातगुणा होता है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

§ ३३० तत्थ तिरिक्खगदीए बद्धजहण्णदव्वे इच्छिज्जमाणे एइंदिएसु खविदकम्म सियलक्खणेण कम्मट्ठिदिमणुपालिय तत्तो णिप्फिडियूण सेसगदीसु सागरोवमसदपुधत्तं परिभमिय खवणाए अब्भुट्ठिदस्स तिरिक्खगदिसंचिददव्वं जहण्णं भवदि। उक्कस्सं पुण गुणिदकम्मंसिय लक्खणेण तिरिक्खगदीए कम्मट्ठिदिं सव्वमणुपालियूण कयसंचएण सह खवगसेढिं चडिदस्स भवदि।

§ ३३१ मणुसगदीए बद्धजहण्णदव्वे इच्छिज्जमाणे अण्णगदीदो मणुसेसु आगंतूण वासपुधत्तेण सव्वलहुमेव खवगसेढिं चडिदस्स जहण्णं भवदि। उक्कस्सयं पुण मणुसगदीए तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि भवट्ठिदिमणुपालियूण समयाविरोहेण खवगसेढिं चडिदस्स दट्ठव्वं।

§ ३३२ तसकाइएसु जहण्णदव्वे इच्छिज्जमाणे थावरकायादो आगंतूण तसेसु वासपुधत्तं मच्छिय खवगसेढिं चडिदस्स जहण्णं होदि। उक्कस्सं पुण गुणिदकम्मंसियलक्खणेण तसट्ठिदिं सव्वं परिभमिय खवगसेढिमारूढस्स भवदि। तेण जहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं जादं। एवं पढमभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि बिदियभासगाहाए जहावसरपत्तमत्थविहासणं कुणमाणो उवरिमं पबंधमाढवेइ—

* एत्तो बिदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ ३३३ सुगमं।

---

§ ३३० वहाँ तिर्यंचगतिमें बद्ध जघन्य द्रव्यकी विवक्षा करनेपर एकेन्द्रियोंमें क्षपित कर्मांशिक लक्षणसे कर्मस्थितिका पालन करके और वहाँसे निकलकर शेष गतियोंमें सौ पृथक्त्व सागरोपम काल तक परिभ्रमण करके क्षपकश्रेणिको प्राप्त हुए जीवके तिर्यंचगतिमें संचित हुआ द्रव्य जघन्य होता है। परन्तु गुणितकर्मांशिक लक्षणसे तिर्यंच गतिमें पूरी कर्मस्थितिका पालन करके संचयरूप कर्मके साथ क्षपकश्रेणिपर चढ़े हुए जीवके संचित द्रव्य उत्कृष्ट होता है।

§ ३३१ मनुष्यगतिमें पूर्वबद्ध जघन्य द्रव्य इच्छित होनेपर जो जीव अन्य गतिसे आकर वर्षपृथक्त्व कालके द्वारा अतिशीघ्र क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुआ है उस क्षपकके जघन्य होता है। परन्तु जो पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम काल तक मनुष्यगतिसम्बन्धी भवस्थितिका पालन करके समयके अविरोधपूर्वक क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुआ है उस क्षपकके मनुष्यगति सम्बन्धी पूर्वबद्ध कर्म उत्कृष्ट होता है ऐसा प्रकृतमें जानना चाहिए।

§ ३३२ त्रसकायिकोंमें जघन्य द्रव्य इच्छित होनेपर जो जीव स्थावरकायमेंसे आकर त्रसोंमें वर्षपृथक्त्व काल तक रहकर क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुआ है उसके जघन्य होता है। परन्तु गुणितकर्मांशिक लक्षणसे पूरी त्रसस्थिति तक परिभ्रमण करके क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुए जीवके पूर्वबद्ध कर्म उत्कृष्ट होता है। इसलिए जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा होता है। इस प्रकार प्रथम भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त करके अब दूसरी भाष्यगाथाकी अवसरप्राप्त अर्थविभाषा करते हुए आगेके प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* इससे आगे दूसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ३३३ यह सूत्र सुगम है।

(१३१) एइंदियभवग्गहणेहिं असंखेज्जेहिं णियमसा बद्धं ।
एगादेगुत्तरियं संखेज्जेहिं य तसभवेहिं ॥१८४॥

§ ३३४ एसा विदियभासगाहा 'कदिसु गदीसु भवेसु च' इच्चेदं सुत्तावयवमस्सिदूण भवसंचिदस्स पदेसग्गस्स तसथावरभवेहिं विसेसियूण परूवणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'एइंदिय भवग्गहणेहिं'। एवं भणिदे एइंदियभवग्गहणेसु असंखेज्जेसु बद्धं कम्मं णिच्छयेणेव खवगम्मि अत्थि। कुदो कम्मट्ठिदिअब्भंतरे जहण्णदो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणमेइंदियभव ग्गहणाणमुवलंभादो। ण चेदमसिद्धं, णिल्लेवणकालमब्भहियतसट्ठिदीए परिहीणकम्मट्ठिदिम्मि संखेज्जावलियमेत्तेगेइंदियभवग्गहणपमाणेणोवट्टिदाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणमेइं-दियभवग्गहणाणमागमणदंसणादो। उक्कस्सदो पुण संखेज्जावलियूणकम्मट्ठिदीए अंतोमुहुत्तेणो वट्टिदाए तत्थ भागलद्धमेत्ताणि एइंदियभवग्गहणाणि कम्मट्ठिदिअब्भंतरे होंति त्ति घेत्तव्वं। तदो सिद्धमसंखेज्जेहिं एइंदियभवग्गहणेहिं संचिदं कम्मं णियमदो एदस्स खवगस्स संभवदि त्ति।

§ ३३५ 'एगादेगुत्तरियं' एवं भणिदे थावरकायादो आगंतूण मणुसेसुववज्जिय खवणाए अब्भुट्ठिदस्स एगतसभवसंचिदव्वं खवगसेढीए लब्भदि। एवं दो तिण्णिआदिकमेण एगेगुत्तरवड्ढीए णिरंतरं तसभवग्गहणाणि वड्ढावेयव्वाणि जाव उक्कस्सेण तप्पाओग्गसंखेज्जमेत्तेसु तसभवेसु बद्धपदेसपिंडो खवगम्मि संचयसरूवेण लद्धो त्ति। तेण एगादिएगुत्तरकमेण णिरंतरं वड्ढिदेहिं तसभवग्गहणेहिं संखेज्जेहिं चेव बद्धकम्ममेदस्स खवगस्स लब्भदि, णाणोरत्तमिदि सुत्तत्थणिच्छओ।

---

(१३१) असंख्यात एकेन्द्रियसम्बन्धी भवग्रहणोंके द्वारा बद्ध कर्म क्षपक जीवके नियमसे पाया जाता है। तथा एक त्रसभवसे लेकर उत्तरोत्तर संख्यात त्रसभवोंके द्वारा बद्ध कर्म क्षपक जीवके नियमसे पाया जाता है ॥१८४॥

§ ३३४ यह दूसरी भाष्यगाथा 'कदिसु गदीसु भवेसु च' इस प्रकार इस सूत्रके अवयवका आश्रय कर त्रस और स्थावर भवोंसे विशिष्ट भवसंचित प्रदेशपुंजका इस क्षपकके प्ररूपण करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'एइंदियभवग्गहणेहिं' ऐसा कहनेपर असंख्यात एकेन्द्रिय भवग्रहणोंमें बद्ध कर्म क्षपकके निश्चयसे होता है, क्योंकि कर्मस्थितिप्रमाण कालके भीतर जघन्यसे भी पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण एकेन्द्रियसम्बन्धी भवोंका ग्रहण उपलब्ध होता है। और यह कथन असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि निर्लेपन कालसे अधिक त्रसपर्यायसम्बन्धी स्थितिसे हीन कर्म स्थितिको संख्यात आवलिप्रमाण एकेन्द्रिय भवग्रहणके द्वारा भाजित करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण एकेन्द्रिय भवग्रहणोंका आगमन देखा जाता है। उत्कृष्टसे तो संख्यात आवलि कम कर्मस्थितिको अन्तर्मुहूर्तसे भाजित करनेपर वहाँ जितना भाग लब्ध आवे उतने एकेन्द्रिय भवग्रहण कर्मस्थितिके भीतर होते हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इसलिए असंख्यात एकेन्द्रिय भवग्रहणोंके द्वारा संचित कर्म इस क्षपकके नियमसे होता है यह सिद्ध हुआ।

§ ३३५ 'एगादेगुत्तरियं' ऐसा कहनेपर स्थावरकायिकोंमेंसे आकर और मनुष्योंमें उत्पन्न होकर क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुए जीवके एक त्रसभवमें संचित हुआ द्रव्य क्षपकश्रेणिमें पाया जाता है। इसी प्रकार दो, तीन भव आदिके क्रमसे आगे एक एककी वृद्धि द्वारा निरन्तर उतने त्रसभवग्रहणोंको बढ़ाना चाहिए जहाँ जाकर उत्कृष्टसे तत्प्रायोग्य संख्यात त्रसभवोंमें बद्ध पूर्व संचित प्रदेशपिण्ड क्षपकके संचयरूपसे पाया जाता है। इसलिए एकसे लेकर उत्तरोत्तर एक एककी वृद्धिके क्रमसे निरन्तर वृद्धिको प्राप्त हुए संख्यात त्रसभवग्रहणोंके द्वारा ही बद्ध कर्म इस

एत्तो अहियथराणं भवग्गहणाण तसट्ठिदीए अब्भतरे संभवाणुवलभादो। कम्मट्ठिदिअब्भतरे एइंदियभवग्गहणेसु पुणो पुणो अंतरादिय तसकाइएसु उप्पाइज्जमाणे असंखेज्जेसु तसभवेसु संचिददव्वमेदम्मि लब्भदे। ण चेवमसिद्धं, जहण्णपदेसविहत्तिसामित्तसुत्ते खविदकम्मंसियलक्खणे भण्णमाणे एइंदिएहिंतो आगतूण संजमासंजमादिगुणसेढिणिज्जराकरणट्ठं तसकाइएसु उप्पण्ण भववारा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति' त्ति परूविदत्तादो। तम्हा असंखेज्जेसु तसकाइयभवग्गहणेसु कम्मट्ठिदीए अब्भतरे लब्भमाणेसु तेसिं संखेज्जभवपमाणत्तावहारणमेदं कथं घडदि त्ति ? ण एस दोसो, एगादिएगुत्तरकमेण णिरंतरमुवलब्भमाणाण तसभवग्गहणाणं सुत्ते विवक्खियत्तादो।

§ ३३६ संपहि एवंविहो एदिस्से गाहाए अत्थो सुगमो त्ति कादूण सिस्साणमत्थसमप्पणं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

*** एदिस्से गाहाए विहासा चेव कायव्वा।**

§ ३३७ एदिस्से गाहाए अत्थविहासा समुक्कित्तणाए चेव साहेयूण भाणियव्वा सुबोहत्तादो। तदो ण तत्थ विहासंतरमाढवेयव्वं, जाणिदजाणावणे फलाभावादो त्ति वुत्तं होइ। एवमेदिस्से

क्षपकके प्राप्त होते हैं, अधिक नही यह इस सूत्रके अर्थका निश्चय है, क्योकि इनसे अधिक भव ग्रहणोका त्रसस्थितिके भीतर सम्भावना नही पायी जाती है।

शका—कर्मस्थितिके भीतर एकेन्द्रिय भवग्रहणोका पुन पुन अन्तर कराकर त्रसकायिकोमें उत्पन्न करानेपर असंख्यात त्रसभवोमे संचित हुआ द्रव्य इस क्षपकके पाया जाता है। और यह कथन असिद्ध भी नही है, क्योकि जघन्य प्रदेशाविभक्तिके स्वामित्वविषयक सूत्रमे क्षपित कर्माशिक लक्षणका कथन करनेपर एकेन्द्रियोमेसे आकर संयमासंयमादि गुणश्रेणिनिर्जराको करनेके लिए त्रसकायिकोमे उत्पन्न होनेके भववार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होते हैं ऐसा प्ररूपण किया गया है। इसलिए जब कि असंख्यात त्रसकायिकसम्बन्धी भवग्रहण कर्मस्थितिके भीतर प्राप्त होते हैं ऐसी अवस्थामे यहाँपर उनके संख्यात भवोका यह अवधारण करना कैसे घटित होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नही है, क्योकि एकसे लेकर एक-एक अधिकके क्रमसे निरन्तर उपलभ्यमान त्रससम्बन्धी भवग्रहणोको यहाँ सूत्रमे विवक्षित किया है।

विशेषार्थ—यद्यपि पूरे कर्मस्थितिप्रमाण कालके भीतर अन्तर देकर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण त्रस भव प्राप्त होते है। परन्तु यहाँ गाथासूत्रमें 'एगादिएगुत्तरकमेण' पद होनेसे एक साथ क्रमसे यदि हो तो त्रसोके संख्यात भव ही होंगे यह स्पष्ट किया गया है, इसलिए प्रदेश विभक्तिके स्वामित्वविषयक सूत्रसे इस कथनमे कोई विरोध नही आता। शेष कथन सुगम है।

§ ३३६ अब इस गाथाका इस प्रकारका अर्थ सुगम है ऐसा निश्चय करके शिष्योको अर्थका समर्पण करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इस गाथासूत्रके अर्थकी समुत्कीर्तनाको ही विभाषा कर लेनी चाहिए।

§ ३३७ इस गाथासूत्रकी अर्थविभाषा समुत्कीर्तनासे ही साधकर कहनी चाहिए, क्योकि वह सुबोध है। इसलिए उस विषयमें दूसरी विभाषा आरम्भ नही करनी चाहिए, क्योंकि जिसका ज्ञान करा दिया गया है उसका पुन ज्ञान करानेमे फलका अभाव है यह उक्त कथनका तात्पर्य

विदियभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय सपहि 'ट्ठिदि-अणुभागेसु वा कसायेसु' त्ति एवं मूलगाहावयवमस्सियूण तदियभासगाहाए विहासणं कुणमाणो तदवसरकरणट्ठमुवरिमं सुत्तमाह—

* एत्तो तदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ ३३८ सुगम ।

(१३२) उक्कस्सयअणुभागे ट्ठिदिउक्कस्साणि पुव्वबद्धाणि ।
भजियव्वाणि अभज्जाणि होंति णियमा कसाएसु ॥१८५॥

§ ३३९. एसा गाहा उक्कस्सट्ठिदि अणुभागविसेसिदाण पुव्वबद्धाण खवगम्मि भयणिज्जत्त पदुप्पायणट्ठं पुणो कोह माण माया लोभकसाएहिं पुव्वबद्धाणमभयणिज्जभावपदुप्पायणट्ठं च समो इण्णा । त जहा—'उक्कस्सयअणुभागे०' एव भणिदे उक्कस्साणुभागविसेसिदाणि उक्कस्सट्ठिदि विसेसिदाणि च पुव्वबद्धाणि एदम्मि खवगम्मि सिया अत्थि सिया णत्थि त्ति भजियव्वाणि । किं कारण ? उक्कस्सट्ठिदिमुक्कस्साणुभाग च बधियूण कम्मट्ठिदिअब्भंतरे चेव खवगसेढिं चढिदस्स तव्विसेसिदाण कम्मपदेसाण सभवदसणादो, कम्मट्ठिदिअब्भतरे सव्वत्थेव अणुक्कस्सट्ठिदिमणुभाग च बधिदूणागदस्स खवगस्स उक्कस्सट्ठिदिअणुभागविसेसिदाण पुव्वबद्धाण संभवाणुवलभादो च । 'अभज्जाणि होंति णियमा कसायसु, एवं भणिदे कोह माण-माया-लोभकसाएसु पुव्वबद्धाणि एदस्स खवगस्स णियमा अत्थि, तदो ण ताणि भयणिज्जाणि, अंतोमुहुत्तेण चदुकसायोवजोगेसु

है। इस प्रकार इस दूसरी भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त करके अब 'ट्ठिदि अणुभागेसु वा कसायेसु' इस मूलगाथाके अवयवका आलम्बन लेकर तीसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हुए उसका अवसर करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते है—

* इससे आगे तीसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ३३८ यह सूत्र सुगम है।

(१३२) उत्कृष्ट अनुभागविशिष्ट और उत्कृष्ट स्थितिविशिष्ट पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं। परन्तु क्रोधादि चारों कषायों द्वारा बद्ध पूर्व संचित कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं ॥१८५॥

§ ३३९ यह भाष्यगाथा उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभागविशिष्ट पूर्वबद्ध कर्म क्षपकके भजनीय हैं इस बातका कथन करनेके लिए तथा क्रोध, मान, माया और लोभकषायो द्वारा बद्ध पूर्वसचित कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं इस बातका कथन करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'उक्कस्सयअणुभागे०' ऐसा कहनेपर उत्कृष्ट अनुभागविशिष्ट और उत्कृष्ट स्थितिविशिष्ट पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके स्यात् हैं और स्यात् नहीं है, इसलिए भजनीय हैं।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभागको बाँधकर कर्मस्थितिके भीतर ही क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुए जीवके तद्विशिष्ट कर्मप्रदेश इस क्षपकके सम्भव देखे जाते हैं। किन्तु कर्मस्थितिके भीतर सर्वत्र ही अनुत्कृष्ट स्थिति और अनुभागको बाँधकर आये हुए क्षपकके उत्कृष्ट स्थिति और अनुभागविशिष्ट पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नहीं पाये जाते।

'अभज्जाणि होंति णियमा कसायेसु' ऐसा कहनेपर क्रोध, मान, माया और लोभकषायोमें बन्धको प्राप्त हुए पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं, इसलिए वे इस क्षपकके भजनीय नहीं हैं, क्योंकि अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा चारों कषायोस्वरूप उपयोगोंके परिवर्तमान होनेपर उनमें

परियत्तमाणेसु तेसिं भयणिज्जत्ते कारणाणुवलंभादो त्ति भणिदं होदि। संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागंथमाढवेइ—

* विहासा ।

§ ३४० सुगमं।

* उक्कस्सट्ठिदिबद्धाणि उक्कस्सअणुभागबद्धाणि च भजिदव्वाणि ।

§ ३४१ सुगम एत्थ कारणं, अणंतरमेव परूविदत्तादो ।

* कोह-माण-माया-लोभोवजुत्तेहि बद्धाणि अभजियव्वाणि ।

§ ३४२ कुदो ? अंतोमुहुत्तेण परियत्तमाणेसु चदुकसायोवजोगेसु तत्थ बद्धाणं कम्माणं णियमा अत्थित्तसिद्धीए विसंवादाणुवलंभादो। 'कदीसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु' त्ति एदस्स मूलगाहाचरिमावयवस्स अत्थविहासा एत्थ ण परूविदा छट्ठमूलगाहापडिबद्धबिदियभासगाहाए सव्वेसिमभयणिज्जाणमेक्कवारेणेव ट्ठिदि अणुभागेसु अवट्ठाणक्कमं जाणावेमि त्ति एदेणाहिप्पाएण, तदो तत्थेव तस्स णिण्णओ वट्टव्वो।

संचित हुए कर्मोंके इस क्षपकके भजनीय होनेमे कोई कारण नही पाया जाता यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेके विभाषाग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ३४० यह सूत्र सुगम है।

* उत्कृष्ट स्थितिबद्ध और उत्कृष्ट अनुभागबद्ध पूर्वसंचित कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं।

§ ३४१ यह सूत्र सुगम है, क्योंकि इस विषयमे कारणका कथन अनन्तर पूर्व ही कर आये हैं।

* क्रोध, मान, माया और लोभमें उपयुक्त होनेसे बद्ध पूर्वसंचित कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं।

§ ३४२ क्योकि चारो कषायोसम्बन्धी उपयोग अन्तर्मुहूर्तमें परिवर्तमान हैं, इसलिए उनके सद्भावमे बद्ध पूर्वसचित कर्मोंका अस्तित्व इस क्षपकके नियमसे पाया जाता है उसमें किसी प्रकारका विसंवाद नही उपलब्ध होता। 'कदीसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु' इस प्रकार मूलगाथाके इस अन्तिम अवयवकी अर्थविभाषा यहाँ नहीं कही गयी है। छठी मूलगाथामे प्रतिबद्ध दूसरी भाष्यगाथा द्वारा स्थिति और अनुभागोंमें सभी अभजनीयोके एक बारमें ही अवस्थानक्रमका ज्ञान करानेवाले हैं, इसलिए इस अभिप्रायसे वहीपर उसका निर्णय जान लेना चाहिए।

विशेषार्थ—जो जीव उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभागसे युक्त कर्मोंका बन्ध कर कर्म-स्थिति कालके भीतर ही क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उस क्षपकके उक्त विधिसे पूर्वबद्ध कर्म नियमसे पाये जाते हैं। किन्तु जो कर्मस्थिति कालके भीतर अनुत्कृष्ट स्थिति और अनुत्कृष्ट अनुभागसे युक्त कर्मका बन्ध कर उस कालके भीतर ही क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उसके उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभागसे युक्त पूर्वबद्ध कर्म नियमसे नही पाये जाते हैं ऐसा यहाँ समझना चाहिए। अब रही चार कषायें सो उनमेंसे प्रत्येक कषायका काल ही अन्तर्मुहूर्त है, ऐसी अवस्थामे किसी भी कषायके साथ बद्ध पूर्वसंचित कर्म इस क्षपकके नियमसे पाया जाता है, अत इस अपेक्षासे उसे अभजनीय कहा है।

§ ३४३ एवमेत्तिएण पबंधेण चउत्थमूलगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि पंचमीए मूलगाहाए अत्थविहासणं कुणमाणो उवरिमं पबंधमाह—

* एत्तो पंचमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ ३४४ सुगमं ।

* तं जहा—

§ ३४५ सुगमं ।

(१३३) पज्जत्तापज्जत्तेण तधा त्थी-पुण्णवुंसयमिस्सेण ।
सम्मत्ते मिच्छत्ते केण व जोगोवजोगेण ॥१८६॥

§ ३४६ एसा मूलगाहा पज्जत्तापज्जत्तावत्थासु वेद सम्मत्त जोग णाण-दंसणोवजोगमग्गणासु च पुव्वबद्धाणं कम्माणं खवगसेढीए भयणिज्जाभयणिज्जभावपदुप्पायणट्ठमोइण्णा । तं जहा—'पज्जत्तापज्जत्तेण०' एवं भणिदे पज्जत्तावत्थाए अपज्जत्तावत्थाए च वट्टमाणेण जीवेण पुव्वबद्धाणि कम्माणि किमेदस्स खवगस्स अत्थि आहो णत्थि त्ति पुव्वगाहासुत्तणिद्दिट्ठाणं चेव गदि इंदिय कायमग्गणाणं पज्जत्तापज्जत्तावत्थाहिं विसेसियूण पुच्छा कदा दट्ठव्वा । 'तधा त्थी पुण्णवुंसये' एवं भणिदे इत्थिवेदपुरिसवेदणवुंसयवेदपज्जाएसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि किमत्थि आहो णत्थि त्ति पुच्छाहिसंबंधो कायव्वो । एदेण वेदमग्गणाविसए पुव्वबद्धाणं भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेण अत्थित्त णत्थित्तपरिक्खा पुच्छामुहेण णिद्दिट्ठा दट्ठव्वा ।

§ ३४३ इस प्रकार इतने प्रबन्धद्वारा चौथी मूलगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त करके अब पाँचवी मूलगाथाकी अर्थविभाषा करते हुए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* इससे आगे पाँचवीं मूलगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ ३४४ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे ।

§ ३४५ यह सूत्र सुगम है ।

(१३३) पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थाके साथ, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदके साथ, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व और मिथ्यात्वके साथ तथा किस योग और किस उपयोगके साथ पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके पाये जाते हैं ॥१८६॥

§ ३४६ यह मूल सूत्रगाथा पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थाओमें तथा वेद, सम्यक्त्व, योग, ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग मार्गणाओमे पूर्वबद्ध कर्मके क्षपकश्रेणिमे भजनीय और अभजनीय पनेका कथन करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'पज्जत्तापज्जत्तेण' ऐसा कहनेपर पर्याप्त अवस्था और अपर्याप्त अवस्थामे विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म क्या इस क्षपकके पाये जाते हैं या नही पाये जाते हैं इस प्रकार पूर्वगाथा सूत्रमें जो गति, इन्द्रिय और काय मार्गणा कह आये हैं उन्हे ही पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थासे विशिष्ट करके यह पृच्छा की गयी जाननी चाहिए। 'तधा त्थी-पुंणवुंसए' इस प्रकार कहनेपर स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद पर्यायोमे विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म क्या इस क्षपकके पाये जाते है या नही पाये जाते हैं इस प्रकार पृच्छाके साथ सम्बन्ध करना चाहिए। इस प्रकार इससे वेदमार्गणामे पूर्वबद्ध कर्मोंके भजनीय और अभजनीयस्वरूपसे इस क्षपकके अस्तित्वकी परीक्षा पृच्छद्वारा निर्दिष्ट की गयी जाननी चाहिए।

§ ३४७ 'मिस्सेण सम्मत्ते मिच्छत्ते' एव भणिदे सम्मामिच्छाइट्ठि-सम्माइट्ठि-मिच्छाइट्ठीसु पुव्वबद्धाणि किमेदस्स खवगस्स अत्थि आहो णत्थि त्ति पुच्छाहिसंबंधेण सम्मत्तमग्गणाविसये पुव्वबद्धाणं भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेण गवेसणा सूचिदा दट्ठव्वा। 'केण व जोगोवजोगेण' एदेण वि सुत्तावयवेण जोगमग्गणाए णाणदंसणोवजोगमग्गणाविसए च पुव्वबद्धाणं भयणिज्जाभयणिज्जभावपरिक्खा णिद्दिट्ठा दट्ठव्वा। पण्णारसस जोगभेदेसु तत्थ केण जोगेण बद्धाणि पुव्वबद्धाणि भयणिज्जाणि केण वा ण भयणिज्जाणि। तहा सत्तसु छदुमत्थणाणेसु तिसु दंसणेसु च कदरेण णाणोवजोगेण च दंसणोवजोगेण च पुव्वबद्धाणि भजियव्वाणि केण वा अभयणिज्जाणि त्ति पुच्छा दुवारेणेदस्स तहाविहत्थणिद्देसे पडिबद्धत्तदंसणादो। संपहि एदीए गाहाए सूचिदाणमत्थविसेसाण विहासणट्ठमेत्थ चत्तारि भासगाहाओ अत्थि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* एत्थ चत्तारि भासगाहाओ।

§ ३४८ सुगम।

* त जहा।

§ ३४९ सुगमं।

(१३४) पज्जत्तापज्जत्ते मिच्छत्त णवुंसए च सम्मत्ते।
कम्माणि अभज्जाणि दु थी पुरिसे मिस्सगे भज्जा ॥१८७॥

---

§ ३४७ मिस्सेण सम्मत्ते मिच्छत्ते' ऐसा कहनेपर सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टियोंमे पूर्वबद्ध कर्म क्या इस क्षपकके हैं या नहीं हैं इस प्रकार पृच्छाके सम्बन्धसे सम्यक्त्वमार्गणामे पूर्वबद्ध कर्मोंके भजनीय और अभजनीयस्वरूपसे इस क्षपकके गवेषणा सूचित की गयी जाननी चाहिए। केण व जोगोवजोगेण' इस प्रकार सूत्रके इस अवयवसे भी योग मार्गणामे तथा ज्ञान और दर्शनोपयोगमार्गणामे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीयरूपसे हैं या अभजनीयरूपसे हैं यह परीक्षा निर्दिष्ट की गयी जाननी चाहिए। योगके पन्द्रह भेदोंमेंसे वहाँ किस योगके साथ पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं और किस योगके साथ पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय नहीं हैं यह परीक्षा की गयी जाननी चाहिए। उसी प्रकार सात छद्मस्थ ज्ञानोंमें और तीन दर्शनोंमे किस ज्ञानोपयोग और किस दर्शनोपयोगके साथ पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं तथा किस ज्ञानोपयोगके साथ और किस दर्शनोपयोगके साथ पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं इस प्रकार पृच्छाद्वारा यह गाथासूत्र इस प्रकारके अर्थका निर्देश करनेमे प्रतिबद्ध देखा जाता है। अब इस गाथाद्वारा सूचित हुए अर्थविशेषोंकी विभाषा करनेके लिए चार भाष्यगाथाएँ हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इस मूलगाथाके अर्थकी प्ररूपणामे चार भाष्यगाथाएँ निबद्ध हैं।

§ ३४८ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ ३४९ यह सूत्र सुगम है।

(१३४) पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें तथा मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, और सम्यक्त्व मार्गणामे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं। किन्तु स्त्रीवेद, पुरुषवेद और मिश्रमार्गणामें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ॥१८७॥

§ ३५० एसा पढमभासगाहा पज्जत्तापज्जत्तजीवसमासेसु वेदगसम्मत्तमग्गणासु च पयदत्थ णिण्णयकरणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'पज्जत्तापज्जत्ते' एवं भणिदे पज्जत्तेण अपज्जत्तेण च पुव्वबद्धाणि कम्माणि णियमा अत्थि त्ति सुत्तत्थसंबंधो, कम्मट्ठिदिअब्भंतरे पज्जत्तापज्जत्तपज्जायाणं दोण्हमवस्सभावणियमादो। पुव्वबद्धाणमेत्थाभयणिज्जत्तमवहारेयव्वं। 'मिच्छत्त णवुंसये च सम्मत्ते' एवं भणिदे मिच्छत्तपज्जाए णवुंसयवेदपज्जाये सम्मत्तपज्जाये च वट्टमाणेण जीवेण पुव्वपबद्धाणि कम्माणि अभज्जाणि त्ति सुत्तत्थसंबंधो कायव्वो।

§ ३५१ तत्थ मिच्छत्तपज्जाओ णवुंसयवेदपज्जाओ च कम्मट्ठिदिअब्भंतरे अवस्संभाविओ, तप्परिहारेण कम्मट्ठिदिसमाणणोवायाभावादो। सम्मत्तपज्जाओ वि एत्थवस्सभाविओ चेव, तेण विणा खवगसेढिसमारोहणासंभवादो। तदो एदेसु पज्जाएसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि कम्माणि एदस्स खवगस्स णियमा अत्थि त्ति सिद्धमभयणिज्जत्तं।

§ ३५२ 'त्थी पुरिसे मिस्सए भज्जा' एवं भणिदे इत्थीपुरिसवेदसम्मामिच्छत्तपज्जाएसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि भयणिज्जाणि त्ति घेत्तव्वं, कम्मट्ठिदिअब्भंतरे एदेसिमवस्सभावणियमाणुव

§ ३५० यह प्रथम भाष्यगाथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवसमासोंमें तथा वेद और सम्यक्त्वमार्गणामें प्रकृत अर्थका निर्णय करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'पज्जत्तापज्जत्ते' ऐसा कहनेपर पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थाके साथ पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं ऐसा इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है क्योंकि कर्मस्थितिके भीतर पर्याप्त और अपर्याप्त इन दोनों पर्यायोंके अवश्य ही होनेका नियम है। इसलिए पूर्वबद्ध कर्म यहाँपर अभजनीय हैं ऐसा निश्चय करना चाहिए। 'मिच्छत्त णवुंसये च सम्मत्ते' ऐसा कहनेपर मिथ्यात्व पर्यायमें, नपुंसकवेद पर्यायमें और सम्यक्त्व पर्यायमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं। ऐसा इस सूत्र और अर्थका परस्पर सम्बन्ध करना चाहिये।

§ ३५१ उनमेंसे मिथ्यात्वपर्याय और नपुंसकवेदपर्याय कर्मस्थितिके भीतर अवश्यभावी हैं क्योंकि इनकी प्राप्तिके बिना कर्मस्थितिकी समाप्तिका अन्य कोई उपाय नहीं है। सम्यक्त्व पर्याय भी यहाँपर अवश्यंभावी ही है, क्योंकि उसके बिना क्षपकश्रेणिपर आरोहण करना असम्भव है। इसलिए इन पर्यायोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वमें बाँधे गये कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं। इस प्रकार उक्त मार्गणाओंमें पूर्वबद्ध कर्म क्षपकके अभजनीय हैं यह सिद्ध हो गया।

विशेषार्थ—कर्मस्थिति कालके भीतर यह जीव अनेक बार पर्याप्त भी हुआ है और अपर्याप्त भी हुआ है। साथ ही त्रसपर्यायकी कायस्थिति साधिक दो हजार सागरोपम है, अतः उसका कर्मस्थितिके भीतर नपुंसकवेद और मिथ्यात्वके साथ एकेन्द्रियपर्यायमें रहना भी अवश्यंभावी है। इस प्रकार तो पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थाके साथ नपुंसकवेद मार्गणा और मिथ्यात्वगुणस्थानमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं। साथ ही यह भी नियम है कि सम्यक्त्वको प्राप्त करनेके बाद ही इस जीवका संयमपूर्वक क्षपकश्रेणिपर आरोहण करना बन सकता है, इसलिए सम्यक्त्वमार्गणामें पूर्वबद्ध कर्म इस जीवके नियमसे पाये जाते हैं।

§ ३५२ 'त्थी पुरिसे मिस्सए भज्जा' ऐसा कहनेपर स्त्रीवेद, पुरुषवेद और सम्यग्मिथ्यात्व पर्यायमें इस जीवके द्वारा बाँधे गये कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि कर्मस्थितिके भीतर इन मार्गणाओंके अवश्य होनेका नियम नहीं पाया जाता। सासादन

ऽभावो। सासणसम्माइट्ठिणा च बद्धाणि भयणिज्जाणि त्ति एसो वि अत्थो एत्थ वक्खाणेयव्वो, मिस्सणिद्दे सस्सेदस्स देसामासयभावेण पवुत्तिअब्भुवगमादो।

§ ३५३ संपहि एवस्सेव गाहासुत्तत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागंथमाढवेइ—

* विहासा।

§ ३५४ सुगमं।

* पज्जत्तेण अपज्जत्तेण मिच्छाइट्ठिणा सम्माइट्ठिणा णवुंसयवेदेण च एवभावभूदेण बद्धाणि णियमा अत्थि।

* इत्थीए पुरिसेण सम्मामिच्छाइट्ठिणा च एवभावभूदेण बद्धाणि भज्जाणि।

§ ३५५ एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि। णवरि 'एवभावभूदेणेत्ति' भणिदे एवंविहभाव-परिणदेण जीवेण बद्धाणि कम्माणि एदस्स खवयस्स भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेण अत्थि त्ति घेत्तव्वं। एवं पढमभासगाहाए विहासा समत्ता।

सम्यग्दृष्टिके द्वारा बद्ध कर्म भी इस क्षपकके भजनीय हैं इस अर्थका भी यहाँ व्याख्यान करना चाहिए, क्योंकि यहाँपर इस मिश्रपदके निर्देशकी देशामर्षकरूपसे प्रवृत्ति स्वीकार की गयी है।

विशेषार्थ—कर्मस्थितिके भीतर कोई जीव एकेन्द्रिय पर्यायसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी हुए बिना सीधा नपुंसकवेदके साथ मनुष्य और सम्यग्दृष्टि होकर तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि न होकर संयमपूर्वक क्षपकश्रेणिपर आरोहण करे यह सम्भव है। यही कारण है कि उक्त मार्गणाओंमें बाँधे गये कर्म इस क्षपकके अभजनीय कहे हैं, क्योंकि जो कर्मस्थितिके भीतर उक्त मार्गणाओंमेंसे विवक्षित किसी मार्गणाको प्राप्त कर क्रमशः क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उसके तो पूर्वोक्त विवक्षित मार्गणामें बाँधे गये कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं और जो कर्मस्थितिके भीतर शेष मार्गणाओंमेंसे किसी भी मार्गणाको प्राप्त हुए बिना क्षपकश्रेणिपर आरोहण करता है उस क्षपकके उक्त मार्गणामें बाँधा गया कर्म इस क्षपकके नियमसे नहीं पाया जाता है। इसीलिए शेष मार्गणाओंकी अपेक्षा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय कहे हैं।

§ ३५३ अब इसी गाथासूत्रका स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेके विभाषाग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* अब प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ३५४ यह सूत्र सुगम है।

* पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थासे युक्त मिथ्यादृष्टि, सम्यग्दृष्टि और नपुंसकवेद इस प्रकार इन भावोंसे परिणत जीवके द्वारा बद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं इसलिए अभजनीय हैं।

* स्त्रीवेद, पुरुषवेद और सम्यग्मिथ्यादृष्टि इस प्रकार इन भावोंसे परिणत जीवके द्वारा बद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं।

§ ३५५ ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं। इतनी विशेषता है कि 'एवभावभूदेण' ऐसा कहनेपर इस प्रकारके भावोंसे परिणत जीवके द्वारा बद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय और अभजनीयस्वरूपसे पाये जाते हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा समाप्त हुई।

* एत्तो बिदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ ३५६ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ ३५७ सुगमं ।

(१३५) ओरालिये सरीरे ओरालियमिस्सए च जोगे दु ।
चदुविधमण वचिजोगे च अभज्जगा सेसगे भज्जा ॥१८८॥

§ ३५८ एसा बिदियभासगाहा जोगमग्गणाविसये पयदत्थगवेसणट्ठमोइण्णा । तं जहा—'ओरालिये सरीरे०' एवं भणिदे ओरालियकायजोगेण ओरालियमिस्सकायजोगेण चउव्विहमण जोग चउव्विहवचिजोगभेदेसु च वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि एदस्स खवगस्स णियमा अत्थि, तदो ण ताणि भजियव्वाणि त्ति सुत्तत्थसंगहो। एदेसिमभज्जत्ते कारणं सुगमं। 'सेसगे भज्जा' एवं भणिदे सेसजोगेसु वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-आहार आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगसण्णिदेसु पुव्वबद्धकम्मपदेसा भजियव्वा, तेसिं कम्मट्ठिदिअब्भंतरे अवस्सभावणियमाणुवलंभादो त्ति घेत्तव्वं। संपहि एदस्सेव सुत्तत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिमो विहासागंथो—

* विहासा ।

§ ३५९ सुगमं ।

---

* इससे आगे दूसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीतना करते हैं।

§ ३५६ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ ३५७ यह सूत्र सुगम है।

(१३५) औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, चारो मनोयोग और चारों वचन योगोमे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं तथा शेष योगोंमे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ॥१२९॥

§ ३५८ यह दूसरी भाष्यगाथा योगमार्गणामे प्रकृत अर्थकी मार्गणा करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे ओरालिय सरीरे० ऐसा कहनेपर औदारिककाययोग, औदारिकमिश्र काययोग चारो प्रकारके मनोयोग और चारो प्रकारके वचनयोगके भेदोमे विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं, इसलिए वे भजनीय नही हैं इस प्रकार यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। इन योगोमे बद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं इस विषयमे कारणका कथन सुगम है। 'सेसगे भज्जा' ऐसा कहनेपर वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोगसंज्ञक इन योगोमें पूर्वबद्ध कर्मप्रदेश इस क्षपकके भजनीय हैं, क्योंकि ये योग कर्मस्थितिके भीतर अवश्य ही होते है ऐसा नियम नही पाया जाता ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। अब इसी सूत्रके अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेका विभाषाग्रन्थ आया है—

* अब दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ३५९ यह सूत्र सुगम है।

* ओरालिएण ओरालियमिस्सएण चउव्विहेण मणजोगेण चउव्विहेण वचिजोगेण बद्धाणि अभज्जाणि ।

* सेसजोगेसु बद्धाणि भज्जाणि ।

§ ३६० गयत्थमेदं सुत्तद्दयं । णवरि गाहासुत्ते 'ओरालिये सरीरे' इच्चादि सत्तमीविहत्तिणिद्देसो चुण्णिसुत्ते पुण 'ओरालिएण ओरालियमिस्सेणेत्ति' एवमादिओ तदियाविहत्तिणिद्देसो कदो। कथमेदेसिं दोण्हमविरोहो त्ति पुच्छिदे णत्थि विरोहो, विवक्षातः कारकाणि भवन्तीति न्यायात् । एवं विदियभासगाहाए अत्थविहासा समत्ता ।

* एत्तो तदियभासगाहा।

§ ३६१ सुगमं।

* तं जहा ।

§ ३६२ सुगमं।

(१३६) अध सुद-मदिउवजोगे होंति अभज्जाणि पुव्वबद्धाणि ।
भज्जाणि च पच्चक्खेसु दोसु छदुमत्थणाणेसु ॥१८९॥

§ ३६३ एसा तदियभासगाहा णाणमग्गणाए पुव्वबद्धाणं भयणिज्जाभयणिज्जभावगवेसणट्ठमोइण्णा। तं जहा 'अध सुद मदिउवजोगे' एवं भणिदे सुदणाणोवजोगे मदिणाणोवजोगे च वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि अभयणिज्जाणि होंति त्ति सुत्तत्थसंबंधो । मदि सुदअण्णाणं पि एत्थेव

---

* औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, चार प्रकारके मनोयोग और चार प्रकारके वचनयोगके साथ बद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय है। तथा शेष योगोमे बद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं।

§ ३६० ये दोनो सूत्र गतार्थ हैं। इतनी विशेषता है कि गाथासूत्रमें 'ओरालिये सरीरे' इस प्रकार सप्तमी विभक्तिका निर्देश किया है परन्तु चूर्णिसूत्रमे तो 'ओरालिएण ओरालियमिस्सेण' इस प्रकार तृतीया विभक्तिका निर्देश किया है, इसलिए इन दोनों वचनोंमे अविरोध किस प्रकार है ऐसी पृच्छा होनेपर कहते हैं कि इसमे कोई विरोध नही है, क्योकि विवक्षाके अनुसार कारकोकी प्रवृत्ति होती है ऐसा न्याय है। इस प्रकार दूसरी भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त हुई।

* इससे आगे तीसरी भाष्यगाथा कहते हैं।

§ ३६१ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ ३६२ यह सूत्र सुगम है।

(१३६) मतिज्ञान और श्रुतज्ञान इन दोनो उपयोगोमे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं तथा छद्मस्थके दो प्रत्यक्ष उपयोगोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं॥१८९॥

§ ३६३ यह तीसरी भाष्यगाथा ज्ञानमार्गणामे पूर्वबद्ध कर्मोंके इस क्षपकके भजनीय और अभजनीय भावकी गवेषणाके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'अध सुद-मदिउवजोगे' ऐसा कहनेपर श्रुतज्ञानोपयोगमे और मतिज्ञानोपयोगमे विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय

संगहो कायव्वो, मदि-सुदोवजोगत्तेण भेदाभावादो। तदो एदेसु चदुसु उवजोगेसु पुव्वबद्धाणि खवगस्स णियमा अत्थि त्ति घेत्तव्वं, एदेसिमुवजोगाणमेदस्स खवगस्स कम्मट्ठिदिअब्भंतरे णिच्छएण संभवदंसणादो। 'भज्जाणि च पच्चक्खेसु दोसु०' एवं भणिदे छदुमत्थविसये जाणि पच्चक्खाणि ओहिमणपज्जवणाणाणि तेसु पुव्वबद्धाणि भजियव्वाणि त्ति सुत्तत्थो, मदि-सुदणाणाणं व दोण्हमेदेसिं खवगस्स पुव्वावत्थाए अवस्संभाविणियमाणुवलंभादो। एत्थ ओहिणाणणिद्देसेणेव विहंगणाणस्स वि गहणं कायव्वं, तस्स वि तदंतब्भावत्तादो। संपहि एदस्सेव फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागंथमाह—

* विहासा।

§ ३६४ सुगमं।

* सुदणाणे अण्णाणे मदिणाणे अण्णाणे एदेसु चदुसु उवजोगेसु पुव्वबद्धाणि णियमा अत्थि।

* ओहिणाणे अण्णाणे मणपज्जवणाणे एदेसु तिसु उवजोगेसु पुव्वबद्धाणि भजियव्वाणि।

§ ३६५ एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि। एवं तदियभासगाहाए विहासा समत्ता।

* एत्तो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

हैं यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। मत्यज्ञान और श्रुताज्ञानका भी यहींपर संग्रह कर लेना चाहिए क्योंकि मतिज्ञान और श्रुतज्ञान उपयोग सामान्यकी अपेक्षा उनसे इनमें कोई भेद नहीं है, इसलिए इन चार उपयोगोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि ये चारों उपयोग इस क्षपकके कर्मस्थितिके भीतर नियमसे सम्भव देखे जाते हैं।' भज्जाणि च पच्चक्खेसु दोसु०' ऐसा कहनेपर छद्मस्थके जो प्रत्यक्ष अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान रूप दो उपयोग होते हैं उनमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं यह इस सूत्रका अर्थ है, क्योंकि मतिज्ञान और श्रुतज्ञानके समान ये दोनों उपयोग इस क्षपककी पूर्वावस्थामें अवश्य ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं उपलब्ध होता। यहाँ इस सूत्रमें अवधिज्ञानका निर्देश करनेसे ही विभंगज्ञानका भी ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि उसका भी उसमें अन्तर्भाव हो जाता है। अब इसी अर्थका स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेके विभाषाग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस तीसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ३६४ यह सूत्र सुगम है।

* श्रुतज्ञान, श्रुतअज्ञान, मतिज्ञान और मत्यज्ञान इन चार उपयोगोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं।

* अवधिज्ञान, अवधिअज्ञान और मनःपर्ययज्ञान इन तीन उपयोगोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं।

§ ३६५ ये दोनों सूत्र सुगम हैं। इस प्रकार तीसरी भाष्यगाथाकी विभाषा समाप्त हुई।

* इससे आगे चौथी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ३६६ सुगमं।

(१३७) कम्माणि अभज्जाणि दु अणगार-अचक्खुदंसणुवजोगे।
अध ओहिदंसणे पुण उवजोगे होंति भज्जाणि ॥१९०॥

§ ३६७ एसा चउत्थी भासगाहा दंसणमग्गणाविसये पुव्वबद्धाणं कम्माणं भयणिज्जाभयणिज्जसरूवेण अत्थित्तगवेसणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'कम्माणि अभज्जाणि दु०' एवं भणिदे चक्खुदंसणोवजोगे अचक्खुदंसणोवजोगे च वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि कम्माणि एदस्स खवगस्स णियमा अत्थि त्ति वुत्तं होइ, दोण्हमेदेसिमुवजोगाणमेदस्स खवगस्स कम्मट्ठिदिअब्भंतरे णिच्छएण सम्भवदंसणादो। एत्थ अणगारोवजोगे त्ति सामण्णणिद्देसे वि पारिसेसियणाएण चक्खुदंसणोवजोगस्सेव गहणं कायव्वं, सेसाणं दोण्हं छदुमत्थदंसणोवजोगाणं सुत्ते पुध णिद्देसदंसणादो। 'अध ओहिदसणे पुण०' एव भणिदे ओधिदसणोवजोगे वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि एदस्स खवगस्स भयणिज्जाणि त्ति घेत्तव्व, ओहिदसणावरणक्खओवसमस्स सव्वजीवेसु सभवाणुवलंभादो। सपहि एवविहो एदिस्से गाहाए अत्थो सुगमो त्ति कादूण ण तत्थ विहासतरमाढवेयव्वमिदि पदुप्पाएमाणो सत्तमुत्तर भणइ—

* विहासा एसा।

§ ३६८ एसा चेव समुक्कित्तणा एदिस्से गाहाए विहासासरूवेण पयट्टा, सुबोहत्तादो। तम्हा ण एदिस्से विहासतरमेण्हिमाढविज्जदि त्ति एसो एदस्स भावत्थो। एत्तिएण पबधेण पचमीए मूलगाहाए विहासण समाणिय सपहि जहावसरपत्ताए छट्ठमूलगाहाए विहासण कुणमाणो

---

§ ३६६ यह सूत्र सुगम है।

* अनाकार चक्षुदर्शनोपयोग और अचक्षुदर्शनोपयोगमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं। तथा अवधिदर्शनोपयोगमे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं।

§ ३६७ यह चौथी भाष्यगाथा दर्शनमार्गणाके विषयमें पूर्वबद्ध कर्मोंके इस क्षपकके भजनीय और अभजनीयस्वरूपसे अस्तित्वकी गवेषणा करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे'—कम्माणि अभज्जाणि दु' ऐसा कहनेपर चक्षुदर्शनोपयोग और अचक्षुदर्शनोपयोगमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि इन दोनों उपयोगोका इस क्षपकके कर्मस्थितिके भीतर निश्चयसे सम्भव देखा जाता है। इस सूत्रमें 'अणगारोवजोगे' ऐसा सामान्य निर्देश करनेपर भी परिशेषन्यायसे चक्षुदर्शनोपयोगका ही ग्रहण करना चाहिए क्योंकि शेष दो छद्मस्थ उपयोगोका सूत्रमें पृथक निर्देश देखा जाता है। 'अध ओहिदसणे पुण' ऐसा कहनेपर अवधिदर्शनोपयोगमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि अवधिदर्शनावरणका क्षयोपशम सब जीवोंमें सम्भवरूपसे नही उपलब्ध होता। अब इस प्रकारका इस भाष्यगाथाका अर्थ सुगम है ऐसा करके उसके विषयमें अन्य दूसरी विभाषा आरम्भ नही करनी चाहिए ऐसा कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* यह समुत्कीर्तना ही इसकी विभाषा है।

§ ३६८ यह समुत्कीतना ही इस भाष्यगाथाकी विभाषारूपसे प्रवृत्त है, इसलिए इस समय इसकी दूसरी विभाषा आरम्भ नही की जाती है यह इसका भावार्थ है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा पाँचवी मूल गाथाकी विभाषा समाप्त करके अब यथावसर प्राप्त छठी मूल गाथाकी विभाषा

उवरिम पबंधमाढवेइ—

* एत्तो छट्ठी मूलगाहा ।

§ ३६९. एत्तो उवरि छट्ठी मूलगाहा विहासियव्वा त्ति ।

(१३८) किं लेस्साए बद्धाणि केसु कम्मेसु वट्टमाणेण ।
सादेण असादेण च लिंगेण च कम्हि खेत्तम्हि ॥१९१॥

§ ३७०. एसा मूलगाहा लेस्सामग्गणाए सिप्पकम्मभेदेसु सादासादोदये तावसादिलिंग गहणेसु खेत्त-कालविभागेसु च वट्टमाणेण पुव्वबद्धाण कम्माण खवगसबंधेण भयणिज्जाभयणिज्ज सरूवेण संभवगवेसणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'किंलेस्साए बद्धाणि' एवं भणिदे छव्विहाए लेस्साए बद्धाणि कम्माणि किमेदस्स खवगस्स भयणिज्जाणि आहो ण भयणिज्जाणि त्ति पुच्छाहि संबंधो। तदो एसो सुत्तावयवो लेस्सामग्गणाए पुव्वबद्धाण कम्माण भयणिज्जाभयणिज्जभावगवे सणट्ठमुवणिबद्धो दट्ठव्वो।

§ ३७१. 'केसु व कम्मेसु वट्टमाणेण' जीवनोपायभूता क्रियाविशेषा कर्माणि कृष्यादीनि। तत्थ केसु कम्मेसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि कम्माणि एदस्स खवगस्स भज्जाणि केसु वा ण भज्जाणि त्ति पुच्छा एदेण कदा होइ।

§ ३७२. 'सादेण असादेण च' एदेण सुत्तावयवेण सादासादोदयविसेसिदेण जीवेण पुव्व बद्धाण कम्माण भयणिज्जाभयणिज्जभावमग्गणा पुच्छामुहेण णिद्दिट्ठा दट्ठव्वा।

करते हुए आगेके प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* अब इससे आगे छठी मूलगाथाका अवतार करते हैं।

§ ३६९. इससे आगे छठी मूलगाथाकी विभाषा करनी चाहिए।

(१३९) किस लेश्यामें, किन कर्मोंमें, किस क्षेत्र और कालमें वर्तमान जीवके द्वारा तथा साता, असाता और किस लिंगके साथ बद्ध कर्म इस क्षपकके पाये जाते हैं ॥१९१॥

§ ३७०. यह मूल सूत्रगाथा लेश्या मार्गणामें शिल्पकर्मके भेदोंमें साता और असाताके उदयमें, तापस आदि लिंगग्रहणोंमें तथा क्षेत्र और कालके भेदोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्मोंके क्षपकके सम्बन्धसे भजनीय और अभजनीयस्वरूपसे सम्भवकी गवेषणा करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'किंलेस्साए बद्धाणि' ऐसा कहनेपर छह प्रकारकी लेश्याओंमें बद्ध कर्म क्या इस क्षपकके भजनीय हैं या भजनीय नहीं हैं इस प्रकार इस पृच्छाका प्रकृतमें सम्बन्ध है। इसलिए यह सूत्रका अवयव लेश्यामार्गणामें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं या अभजनीय हैं इस बातकी गवेषणा करनेके लिए निबद्ध की गई जाननी चाहिए।

§ ३७१. 'केसु व कम्मेसु वट्टमाणेण'—जीवन संचालनके उपायभूत क्रियाविशेष कृषी आदि कर्म हैं। उनमेंसे किन कर्मोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं तथा किन कर्मोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय नहीं हैं यह पृच्छा इस वचन द्वारा की गयी है।

§ ३७२. तथा इस सूत्रके 'सादेण असादेण च' इस अवयवद्वारा सातावेदनीय और असाता वेदनीयके उदयसे युक्त जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं या अभजनीय हैं यह मार्गणा उक्त पृच्छाद्वारा की गयी जाननी चाहिए।

§ ३७३ 'लिंगेण च' एवं भणिदे लिंगग्गहणेसु तावसादिवेसग्गहणलक्खणेसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि कम्माणि किमेदस्स खवगस्स अत्थि आहो णत्थि त्ति पुच्छाणिद्देसो कदो होइ।

§ ३७४ 'कम्हि खेत्तम्हि' एवं भणिदे उड्ढाधोतिरियलोयभेयभिण्णेसु खेत्तवियप्पेसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणं कम्माणं भयणिज्जाभयणिज्जभावविसया पुच्छा णिद्दिट्ठा त्ति घेत्तव्वा। एदेणेव देसामासयभावेण कालविभागेसु वि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिभेयभिण्णेसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणं कम्माणं भयणिज्जाभयणिज्जभावविसओ पुच्छाणिद्देसो संगहेयव्वो। वुत्तसेसाणं संजमादिमग्गणाणं च एत्थेव संगहो वट्टव्वो, सुत्तस्सेदस्स देसामासयत्तादो। एवमेदीए मूलगाहाए पुच्छामेत्तेण सूचिदाव-सत्थविसेसाणं विहासणं कुणमाणो तत्थ पडिबद्धाणं भासगाहाणमियत्तावहारणट्ठमिदमाह—

* एदिस्से दो भासगाहाओ।

§ ३७५ सुगमं।

* तासिं समुक्कित्तणा।

§ ३७६ तासिं दोण्हं भासगाहाणं जहाकममेसा समुक्कित्तणा वट्टव्वा त्ति वुत्तं होइ।

(१३९) लेस्सा साद असादे च अभज्जा कम्म सिप्प लिंगे च।
खेत्तम्हि च भज्जाणि दु समाविभागे अभज्जाणि ॥१९२॥

---

§ ३७३ 'लिंगेण च' ऐसा कहनेपर तापस आदि लिंगग्रहणलक्षण लिंगग्रहणोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके हैं या नहीं हैं यह पृच्छानिर्देश किया गया है।

§ ३७४ 'कम्हि खेत्तम्हि' ऐसा कहनेपर ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग्लोकके भेदसे भेदको प्राप्त हुए क्षेत्रविशेषोंमे विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म भजनीय हैं या अभजनीय हैं यह पृच्छा निर्दिष्ट की गयी जाननी चाहिए। तथा इसी वचनके द्वारा देशामर्षकरूपसे ग्रहण किये गये अवसर्पिणी और उत्सर्पणीके भेदसे भेदको प्राप्त हुए कालके विभागोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं या अभजनीय हैं इस पृच्छानिर्देशका संग्रह करना चाहिए। तथा पूर्वमें जिन मार्गणाओंकी अपेक्षा निर्देश कर आये हैं उनसे शेष रहीं संयम आदि मार्गणाओं का संग्रह भी यहींपर कर लेना चाहिए। इस प्रकार इस मूलगाथामें पृच्छाद्वारा सूचित हुए अर्थ विशेषकी विभाषा करते हुए उक्त विषयमें प्रतिबद्ध भाष्यगाथाओंकी इयत्ताका अवधारण करनेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* इस छठी मूलगाथाकी दो भाष्यगाथाएँ हैं।

§ ३७५ यह सूत्र सुगम है।

* अब उनकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ३७६ उन दोनों भाष्यगाथाओंकी यथाक्रमसे समुत्कीर्तना जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

(१३९) सभी लेश्याओंमें तथा साता और असातामें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं। असि आदि सभी कर्मोंमें, सभी शिल्पोंमें, सभी लिंगोंमें और सभी क्षेत्रोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं। तथा कालके सभी विभागोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ॥१९२॥

§ ३७७ एसा पढमभासगाहा पुव्वुत्ताणं सव्वासिमेव पुच्छाणं णिण्णयविहाणट्ठमोइण्णा। संपहि एदिस्से किंचि अवयवत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा—'लेस्सा साद असादे च' एवं भणिदे छसु लेस्सासु सादासादोदएसु च वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि अभज्जाणि णियमा ताणि अत्थि त्ति वुत्तं होदि। कुदो एदेसिमभज्जत्तणियमो त्ति चे ? लेस्साभेदाण सादासादोदयाण च तिरिक्ख-मणुस्सेसु अंतोमुहुत्तेण परावत्तणणियमदंसणादो। ण चावट्ठिदलेस्सेसु देव-णेरइएसु पविट्ठस्स अण्णहाभाव संभवो आसंकणिज्जो, कम्मट्ठिदिमेत्तकालं तत्थावट्ठाणासंभवेण तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जिय छसु लेस्सासु परावत्तमाणस्स सव्वलेस्सासंचयाण खवगसेढीए अवस्सभावणियमदंसणादो।

§ ३७८ 'कम्म सिप्प लिंगे च' एवं भणिदे सव्वेसु कम्मेसु सव्वेसु सिप्पेसु सव्वेसु च लिंगग्गहणेसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि भजिदव्वाणि त्ति सुत्तत्थसंबंधो। कुदो एदेसिं भयणिज्जत्तमिदि चे ? तेसिमवस्सभावणियमाभावादो। णिग्गंथलिंगसंचयस्स अवस्सभावणियमदंसणादो ण

---

§ ३७७ यह प्रथम भाष्यगाथा पूर्वोक्त सभी पृच्छाओंका निर्णय करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। अब इसमें आये हुए पदोंके किंचित् अर्थकी प्ररूपणा करेंगे। वह जैसे—'लेस्सा साद असादे च' ऐसा कहनेपर छहों लेश्याओं और साता-असातावेदनीयके उदयोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं। उक्त स्थानोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—उक्त स्थानोंमें पूर्वबद्ध कर्मोंके इस क्षपकके अभजनीयपनेका नियम किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि तिर्यंचों और मनुष्योंमें लेश्याके भेदोंका और साता असाताके उदयका अन्तर्मुहूर्तमें परिवर्तनका नियम देखा जाता है। तथा अवस्थित लेश्यावाले देव और नारकियोंमें प्रविष्ट हुए जीवकी अपेक्षा अन्यथाभाव सम्भव है ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कर्मस्थितिमात्र काल तक उन गतियोंमें अवस्थान असम्भव होनेसे तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होकर छहों लेश्याओंमें परावर्तन करनेवाले जीवके सब लेश्याओंमें संचित हुए कर्मोंका क्षपकश्रेणिमें अवश्य ही पाये जानेरूप नियम देखा जाता है।

विशेषार्थ—देवगति और नरकगतिमें यद्यपि अवस्थित लेश्याएं पायी जाती हैं, परन्तु कर्मस्थितिप्रमाण कालके भीतर जो जीव इन गतियोंमें जन्म न लेकर मात्र तिर्यंचगति और मनुष्यगतिमें ही रहे और अन्तमें उसी कालके भीतर क्षपकश्रेणिपर आरोहण करे यह नियमसे सम्भव है। साथ ही इन गतियोंमें यथायोग्य छहों लेश्याएँ नियमसे पायी जाती हैं, क्योंकि इन गतियोंमें उनमेंसे प्रत्येक लेश्याका काल ही अन्तर्मुहूर्त है। इसलिए तो छहों लेश्याओंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं यह निश्चित होता है। इसी न्यायसे सातावेदनीय और असातावेदनीयके उदयकी अपेक्षा भी समझ लेना चाहिए।

§ ३७८ 'कम्म सिप्प लिंगे च' ऐसा कहनेपर सब कर्मोंमें, सब शिल्पोंमें और सभी लिंगग्रहणोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं यह सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है।

शंका—इन स्थानोंमें बद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय किस कारणसे हैं ?

समाधान—क्योंकि इन स्थानोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अवश्य ही होते हैं ऐसा नियम नहीं है।

सव्वलिंगसंचयस्स भयणिज्जत्तावहारणमेवं घडदि त्ति णासंकणिज्जं, पासंडिलिंगाणमेव सवियार वेसाणमेत्थ विवक्खियत्तादो। ण च जिणलिंगग्गहणे सवियारवेसग्गहणमत्थि, तस्स जादरूवसरूवत्तादो। तदो सव्वेसु परपासंडिलिंगेसु पुव्वबद्धाण भयणिज्जत्तमेवेत्ति सिद्धं।

§ ३७९. 'खेत्तम्हि य भज्जाणि दु' एव भणिदे तिरियलोयसचय धुव कादूण सेसखेत्तम्हि अधोलोगे उड्ढलोगे च वट्टमाणेण सचिदकम्मस्स भज्जत्त होइ त्ति सुत्तत्थो। सुत्ते एवंविहविसेस णिद्देसाभावे कथमेसो विसेसो विण्णादु सक्किज्जदे? ण, वक्खाणादो तहाविहविसेसपडिवत्तीदो।

§ ३८०. 'समाविभागे अभज्जाणि' एवं भणिदे समाविभागो णाम कालविभागो। सो वुण दुविहो ओसप्पिणि उस्सप्पिणिभेदेण। तत्थ एक्केक्को सुसमसुसमादिभेदेण छव्विहो होदि। तत्थ सव्वत्थ वट्टमाणेण बद्धाणि कम्माणि णियमा अत्थि, तदो ताणि ण भयणिज्जाणि त्ति सुत्तत्थो। कुदो वुण तेसिमभयणिज्जत्तमिदि चे? कम्मट्ठिदिअब्भतरे ओसप्पिणि उस्सप्पिणि कालाण सांतब्भेदाण परियत्तणणियमदसणादो। संपहि एवंविहमेदिस्से गाहाए अत्थं विहासेमाणो उवरिम विहासागथमाढवेइ—

शका—इस क्षपकके निर्ग्रन्थ लिंग अवश्य ही सम्भव देखा जाता है, इसलिए सब लिंगोमे सचित हुआ कर्म इस क्षपकके भजनीय है यह नियम नही घटित होता?

समाधान—ऐसी आशका नहीं करनी चाहिए, क्योकि विकारी वेशवाले पाखण्डी लिंग ही यहाँ विवक्षित हैं। और जिनलिंगके ग्रहणमे विकारी वेशका ग्रहण होता नही, क्योकि वह यथाजातस्वरूप होता है, इसलिए सब परमतोद्वारा स्वीकृत पाखण्डी लिंगोमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं यह सिद्ध हुआ।

§ ३७९. 'खेत्तम्हि य भज्जाणि दु' ऐसा कहनेपर तिर्यग्लोकके सचयको ध्रुव करके शेष अधोलोक और ऊर्ध्वलोकमे विद्यमान जीवके संचित हुआ कर्म इस क्षपकके भजनीय है यह इस सूत्रवचनका अर्थ है।

शका—सूत्रमें इस प्रकारके विशेषका निर्देश नही किया, अत इस विशेषको जानना कैसे शक्य है?

समाधान—नही, क्योकि व्याख्यानसे इस प्रकारके विशेषका ज्ञान हो जाता है।

§ ३८०. 'समाविभागे अभज्जाणि' ऐसा कहनेपर समाविभागका अर्थ कालका विभाग है। और वह अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके भेदसे दो प्रकारका है। उनमेसे एक एक काल सुषमा सुषमा आदिके भेदसे छह प्रकारका है। उन सब कालोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म नियमसे हैं। इसलिए वे भजनीय नही हैं यह इस सूत्रवचनका अर्थ है।

शका—इन कालोमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय कैसे हैं?

समाधान—क्योकि कर्मस्थितिके भीतर अपने अन्तर्भेदोंके साथ अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी कालोके परिवर्तनका नियम देखा जाता है। इसलिए इन कालोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं यह सिद्ध हो जाता है।

अब इस गाथाके इस प्रकारके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके विभाषाग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* विहासा ।

§ ३८१ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ ३८२ सुगमं ।

* छसु लेस्सासु सादेण असादेण च बद्धाणि अभज्जाणि ।

§ ३८३ छसु लेस्सासु सादासादोदयेसु च पुव्वबद्धाणि कम्माणि णियमा अत्थि, तेसिं भयणिज्जत्ते कारणाणुवलंभादो ।

* कम्म सिप्पेसु भज्जाणि ।

§ ३८४ कम्मेसु च सिप्पेसु च वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि भजियव्वाणि त्ति वुत्तं होदि । एत्थ भयणिज्जत्ते कारणं सुगमं । संपहि काणि ताणि कम्माणि जेसु वट्टमाणेण बद्धाणं कम्माणं भयणिज्जत्तमेवं परूविज्जदि त्ति आसंकाए कम्मभेदाण णिद्देसं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* कम्माणि जहा—अंगारकम्मं वण्णकम्मं पव्वदकम्ममेदेसु कम्मेसु भज्जाणि ।

§ ३८५ एत्थ 'अंगारकम्मं इदि भणिदे अंगारसपायणट्ठा कट्ठदहणकिरिया घेत्तव्वा, कट्ठंगारसमाणणेण बहूणं कम्मकराणं जीवणोवलंभादो । अथवा तेहिं तहा णिव्वत्तिदेहिं अगारेहिं

---

* अब इस प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं ।

§ ३८१ यह सूत्र सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ ३८२ यह सूत्र सुगम है ।

* छह लेश्याओंमे तथा सातोदय और असातोदयके साथ पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं ।

§ ३८३, इन छहों लेश्याओमे तथा सातोदय और असातोदयमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं, क्योंकि उनके भजनीयपनेमें कारण नही पाया जाता ।

* कर्मों और शिल्पोंमें पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ।

§ ३८४ कर्मोंमे और शिल्पकार्योंमे विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यहाँ भजनीयपनेमे कारण सुगम है । अब वे कर्म कौन हैं जिनमें विद्यमान जीवके द्वारा बद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं यह कहा जाता है ऐसी आशंका होनेपर इन कर्मोंका निर्देश करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* कर्म यथा—अंगारकर्म, वणकर्म और पर्वतकर्म इन कर्मोंमें बद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं ।

§ ३८५ इस सूत्रमें 'अगारकम्मं' ऐसा कहनेपर अंगारकार्यको सम्पादन करनेके लिए लकड़ीके जलानेरूप क्रियाको ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि यहाँ काष्ठागारसे बने भोजनसे बहुतसे कर्मकरोंका जीवन उपलब्ध होता है । अथवा अगारकर्मसे जो उसी प्रकारके अन्य अगार

जो सुवण्णसंभारणादिवावारो[1] सो वि अंगारकम्ममिदि घेत्तव्वं। वण्णकम्मं णाम, चित्तकम्मं वत्थरंजणादि घेत्तव्वं, हरियाल-हिंगुलुआदिवण्णाणमण्णोण्णसंजोगजणिदवण्णभेदेहि पड-कुड्डादिसु विचित्तचित्तकम्मसंपादणेण खोमंसुअ-दुगुलादिवत्थविसेसरंजणेण च ओवंताण बहुआणमुवलंभादो। 'पव्वदकम्मं' इदि वुत्ते लयणखणण सिलाथंभघडण-तलउडभसमारणादिसेलकम्मस्स गहणं कायव्वं। एवंपयारा अण्णे वि कम्मविसेसा मूसाकम्मादयो[2] एदेण देसामासयसुत्तेण णिद्दिट्ठा दट्ठव्वा। तदो एदेसु कम्मभेदेसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि कम्माणि एदस्स खवगस्स भजिदव्वाणि, सव्वेसु जीवेसु एदेसिमवस्संभाविणियमाभावादो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ। एदेणेव देसामासयसुत्तेण सिप्पभेदाणं पि पत्तछेदादीणं संगहो कायव्वो, 'हस्तनैपुण्यं शिल्पमिति' वचनात्।

* सव्वलिंगेसु च भज्जाणि।

§ ३८६ णिग्गंथलिंगवदिरित्तसेसाणं सलिंगग्गहणेसु वट्टमाणेण पुव्वबद्धाणि कम्माणि एदस्स खवगस्स भयणिज्जाणि त्ति वुत्तं होइ। किं कारणं? तावसादिवेसग्गहणाणं सव्वजीवेसु संभवणियमाणुवलंभादो। तदो सिद्धमेदेसिं भयणिज्जत्तं।

निष्पन्न किये जाते हैं उनसे जो स्वर्णका संस्कृत करना आदि व्यापार किया जाता है वह भी अंगारकर्म है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। वणकर्मसे वस्त्रका रँगना आदि चित्रकर्मको ग्रहण करना चाहिए। हरताल, हिंगुल आदि रंगोके परस्पर संयोगसे उत्पन्न हुए नाना प्रकारके रंगोद्वारा वस्त्र, दोवाल आदि पर नाना प्रकारके चित्रकर्मसम्पादन द्वारा तथा कपाससे बना हुआ वस्त्र और वृक्षकी छालसे बना हुआ वस्त्र आदि वस्त्रविशेषके रँगने द्वारा जीविका करनेवाले बहुत प्रकारके मनुष्य पाये जाते हैं। 'पव्वदकम्म' ऐसा कहनेपर गुफाका खोदना, शिला व स्तम्भका घढ़ना और तलगृहका निर्माण करना आदि शैलकर्मका ग्रहण करना चाहिए। तथा इसी प्रकारके मूसाकर्म (धातु गलानेका कम) आदि और भी कर्मविशेष इस पदद्वारा देशामर्षकरूपसे निर्दिष्ट किये गये जानने चाहिए। इसलिए कर्मके इन भेदोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय होते हैं। क्योकि जो जीव क्षपकश्रेणिपर चढ़ते हैं उन सबके ये कर्म अवश्य ही होते है ऐसा कोई नियम नहीं है। इस प्रकार यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। तथा इसी सूत्र द्वारा ही देशामर्षकभावसे शिल्पकर्मके भेद पत्रच्छदन आदि कर्मोंका भी संग्रह करना चाहिए, क्योकि हस्तकी निपुणताका नाम ही शिल्प है ऐसा वचन है।

* सब लिंगोमे पूर्व बद्धकम इस क्षपकके भजनीय हैं।

§ ३८६ निर्ग्रन्थ लिंगके अतिरिक्त शेष सब लिंगग्रहणोंमें विद्यमान जीवके द्वारा पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके भजनीय हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—क्योकि तापस आदि वेषोंका ग्रहण सब जीवोंमें सम्भव हो ऐसा नियम नहीं पाया जाता। इसलिए इन लिंगोंमें पूर्वबद्ध कर्मोंको भजनीयता सिद्ध हो जाती है।

* क्षेत्रकी अपेक्षा अधोलोक और ऊर्ध्वलोकमे पूर्वबद्ध कम इस क्षपकके स्यात् पाये जाते हैं। किन्तु तिर्यग्लोकमे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं।

---

१ ता० प्रती —समारणादिवावारो इति पाठ। २ ता० प्रती मासा (मसि) कम्मादयो।

* खेत्तम्हि सिया अधोलोगिग सिया उड्ढलोगिगं णियमा तिरियलोगिगं ।

§ ३८७ अधोलोगसंबंधेण उड्ढलोगसंबंधेण च ज बद्धं कम्मं तं सिया अत्थि सिया णत्थि त्ति भयणिज्जं। तिरियलोगिय तु कम्म णियमा अत्थि त्ति वुत्त होइ। त कथं ? कम्मट्ठिदि कालब्भतरे उड्ढलोगमगतूण अधोलोगे चेव अच्छियूणागदस्स उड्ढलोगसंचओ ण लब्भदे। एवमधो लोगपरिहारेण उड्ढलोगे चेव कम्मट्ठिदिमेत्तकालमच्छियूणागदस्स अधोलोगसंचओ ण लब्भदि त्ति 'दोण्णमेदेसि' भयणिज्जत्त जाद। उड्ढाधोलोगपरिहारेण तिरियलोगे चेव कम्मट्ठिदिमणुपालेदूणाग- दस्स वा खवगस्स तदुभयसचओ ण लब्भदि त्ति भजियव्वो जादो। तिरियलोयसंचयो पुण ण भजियव्वो। कम्मट्ठिदिमेत्तकालमुड्ढाधोलोगेसु चेव समयाविरोहेणावट्ठिदस्स वि पुणो तिरियलोग- खेत्तमणागतूण खवगसेढिसमारोहणे सभवाणुवलभादो। एत्थ तिरियलोयसचय धुवं कादूण उड्ढाधोलोयसचयस्स भयणिज्जभावेण चत्तारि भंगा वत्तव्वा। संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठ मुत्तरसुत्तमोइण्ण—

* अधोलोगमुड्ढलोगिग च सुद्ध णत्थि ।

§ ३८८ अधोलोगसंचयो उड्ढलोगसचयो च खवगसेढीए भयणिज्जभावेण सभवतो जम्हि काले संभवइ तम्हि सुद्धो होदूण ण लब्भइ, किंतु तिरियलोगसचयसम्मिस्सो चेव दीसइ। किं कारणं ? जहण्णदो वि संखेज्जावलियमेत्ततिरियलोयसचयस्स मणुसपज्जाएण सचिदस्स तत्थाव

§ ३८७ अधोलोकके सम्बन्धसे और ऊर्ध्वलोकके सम्बन्धसे जो कर्म बन्धको प्राप्त होता है वह इस क्षपकके स्यात् है और स्यात् नही है, इसलिए भजनीय है। परन्तु तिर्यग्लोकके सम्बन्धसे पूर्वबद्ध कम इस क्षपकके नियमसे पाया जाता है यह उक्त कथनका तात्पय है।

शका—वह कैसे ?

समाधान—क्योकि कमस्थिति सम्बन्धी कालके भीतर ऊर्ध्वलोकमें न जाकर अधोलोकमे ही रहकर वहांसे आये हुए इस क्षपक जीवके ऊर्ध्वलोकमें किया गया सचय नही पाया जाता। इसी प्रकार अधोलोकमे न जाकर कर्मस्थितिसम्बन्धी कालके भीतर ऊर्ध्वलोकमे ही रहकर वहांसे आये हुए इस क्षपक जीवके अधोलोकमें किया गया कर्मोंका संचय इस क्षपकके नहीं पाया जाता, इसलिए इन दोनो लोकोमें बद्ध कर्मोंकी भजनीयता इस क्षपकके बन जाती है। अथवा ऊर्ध्वलोक और अधोलोकका परिहार करके तिर्यग्लोकमे ही कर्मस्थितिका पालन करके आये हुए इस क्षपकके ऊर्ध्वलोक और अधोलोक उन दोनोमें हुआ कर्म संचय इस क्षपकके नहीं पाया जाता, इसलिए भजनीय हो जाता है। परन्तु तिर्यग्लोकमे हुआ सचय इस क्षपकके भजनीय नही है, क्योकि कर्मस्थितिसम्बन्धी कालके भीतर ऊर्ध्वलोक और अधोलोकमें समयके अविरोधपूर्वक रहे हुए जीवका तियग्लोकसम्बन्धी क्षेत्रमे गये बिना क्षपकश्रेणिपर आरोहण करना सम्भव नही है। यहांपर तिर्यग्लोकमें हुए संचयको ध्रुव करके ऊर्ध्वलोक और अधोलोकमें हुए संचयके भजनीयपनेके कारण चार भंग कहने चाहिए। अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

* अधोलोक और ऊर्ध्वलोकमें हुआ संचय इस क्षपकके शुद्ध नहीं पाया जाता।

§ ३८८ अधोलोकमे हुआ संचय और ऊर्ध्वलोकमें हुआ संचय क्षपकश्रेणिमें भजनीय रूपसे सम्भव है, अत जिस कालमें इस क्षपक जीवके सम्भव है उस कालमें शुद्ध होकर नहीं प्राप्त होता, किन्तु उक्त संचय तिर्यग्लोकमें हुए संचयके साथ सम्मिश्र होकर ही दिखाई देता है, क्योकि जघन्यरूपसे भी संख्यात आवलिप्रमाण कालके भीतर तिर्यग्लोकमें जो सचय हुआ है

स्सभावणियमदंसणादो। तिरिक्खलोयसंचओ पुण सुद्धो वि लब्भइ, कम्मट्ठिदिमेत्तकालं तिरियलोगे चेव अच्छियूण पुणो मणुसपज्जाए पडिलंभेण कम्मक्खयं कुणमाणस्स परिप्फुडमेव तदुवलंभादो। ण एत्थ मणुसगदिसंचयस्स तत्तो पुधभूदस्स संभवो आसंकणिज्जो, माणुसखेत्तस्स वि तिरिय-लोगंतब्भूदत्तणेण तत्तो पुधभूदाणुवलंभादो।

§ ३८९. संपहि 'समाविभागे अभज्जाणि' त्ति एदं सुत्तावयवमस्सियूण कालविभागे पुव्वबद्धाण भयणिज्जाभयणिज्जभावगवेसणं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* ओसप्पिणीए च उस्सप्पिणीए च सुद्धं णत्थि।

§ ३९० कुदो? कम्मट्ठिदिअब्भंतरे दोण्हमेदासिं परावत्तणणियमदंसणादो। तदो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिसंचओ अण्णोण्णसम्मिस्सो चेव होदूणेदस्स खवगस्स लब्भइ, ण सुद्धसरूवो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। एवमेत्तिएण पबंधेण पढमभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि जहावसरपत्ताए विदियभासगाहाए विहासणट्ठमुवरिमं सुत्तपबंधमाढवेइ—

* एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ ३९१ सुगमं।

(१४०) एदाणि पुव्वबद्धाणि होंति सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु।
सव्वेसु चाणुभागेसु णियमसा सव्वकिट्टीसु ॥१९३॥

वह मनुष्यपर्यायसम्बन्धी सचित कर्मद्रव्य है जो कि अवश्यभावी होनेसे उस क्षपकके नियमसे पाया जाता है। परन्तु तिर्यग्लोकमें हुआ सचय इस क्षपकके शुद्ध भी पाया जाता है, क्योकि कर्मस्थिति काल तक तिर्यग्लोकमें ही रहकर पुन मनुष्यपर्यायके प्राप्त हो जानेसे कर्मक्षय करने वाले जीवके स्पष्टरूपसे ही कर्मस्थितिके भीतर हुआ सचय पाया जाता है। यहाँ मनुष्यगति सम्बन्धी संचय उससे पृथग्भूत सम्भव है ऐसी आशका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्यक्षेत्र भी तिर्यग्लोकके अन्तर्भूत है, इसलिए यह उससे पृथक् उपलब्ध नहीं होता।

§ ३८९ अब 'समाविभागे अभज्जाणि' इस सूत्रावयवका आश्रय कर कालके विभागोंमें पूर्वबद्ध कर्मोंके भजनीय और अभजनीयपनेकी गवेषणा करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अवसर्पिणीमे और उत्सर्पिणीमे पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके शुद्ध नही पाया जाता।

§ ३९० क्योंकि कर्मस्थितिके भीतर इन दोनों कालोंके परावर्तनका नियम देखा जाता है, इसलिए अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी कालके भीतर परस्पर मिश्रित होकर ही इस क्षपकके प्राप्त होता है, शुद्धस्वरूप होकर प्राप्त नही होता यह इस सूत्रका भावार्थ है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध-द्वारा प्रथम भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा सम्पन्न करके अब यथावसरप्राप्त दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* यह दूसरी भाष्यगाथा समुत्कीर्तना है।

§ ३९१ यह सूत्र सुगम है।

(१४०) ये पूर्वबद्ध कर्म स्थितिके सब भेदोंमें, सब अनुभागोंमे और सब कृष्टियोंमें नियमसे पाये जाते हैं ॥१९३॥

§ ३९२ एसा बिदियभासगाहा 'कदीसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु' त्ति चउत्थमूलगाहाए चरिमावयवमस्सियूण तीहिं मूलगाहाहिं समुद्दिट्ठाणमभयणिज्जाणं पुव्वबद्धाणं कम्मपदेसाणं ट्ठिदि अणुभागेसु अवट्ठाणक्कमजाणावणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'एदाणि पुव्वबद्धाणि' जाणि इमाणि पुव्वबद्धाणि अभयणिज्जसरूवाणि तीसु मूलगाहासु समुद्दिट्ठाणि ताणि 'णियमसा' णिच्छयेणेव सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु वट्टव्वाणि, सव्वेसिं कम्माणं जहण्णट्ठिदिमादिं कादूण जावुक्कस्सट्ठिदि त्ति तेसिमवट्ठाणदंसणादो। 'सव्वेसु च अणुभागेसु' त्ति भणिदे चदुण्हं संजलणाणं सव्वसरिसधणियकिट्टीणं गहणं कायव्वं।

§ ३९३ 'सव्वकिट्टीसु' त्ति भणिदे सव्वासिं संगहकिट्टीणमवयवकिट्टीण च एगोलीए गहणं कायव्वं। तेण कोहादिसंजलणाणमेक्केक्किस्से किट्टीए अणंतेसु सरिसधणियकिट्टीसु संभवंतीसु तत्थ लोभसव्वजहण्णकिट्टिमादिं कादूण जाव कोधुक्कस्सकिट्टि त्ति ताव सव्वकिट्टीण सरिसधणिय

§ ३९२ यह दूसरी भाष्यगाथा 'कदीसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु' इस चौथी मूलगाथाके अन्तिम चरणका अवलम्बन करके तीन मूलगाथाओं द्वारा निर्दिष्ट किये गये अभजनीय पूर्वबद्ध कर्म प्रदेशोंके स्थिति और अनुभागोंमें अवस्थानक्रमका ज्ञान करानेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'एदाणि पुव्वबद्धाणि' अर्थात् जो ये पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके तीन मूलगाथाओंमें अभजनीय कहे गये हैं उन्हें 'णियमसा' निश्चयसे ही इस क्षपकके सब स्थितिविशेषोंमें जानना चाहिए क्योंकि सभी कर्मोंकी जघन्य स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति तक स्थितिके सभी भेदोंमें उनका अवस्थान देखा जाता है। 'सव्वेसु च अणुभागेसु' ऐसा कहनेपर चारों संज्वलनोंकी सदृश धनवाली सभी कृष्टियोंका ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—यहाँ 'सब स्थिति' ऐसा कहनेसे प्रथम और द्वितीय स्थितिका ग्रहण किया गया है, क्योंकि जब जिस कषायका उदय रहता है तब उसकी प्रथम स्थिति और द्वितीय स्थिति नियमसे होती है। अत जितने भी पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं वे इस क्षपकके प्रत्येक कषायकी सभी सम्भव स्थितियोंमें पाये जाते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। तथा इस क्षपकके कृष्टिकरणकी क्रिया सम्पन्न होनेपर जितना भी सम्भव संज्वलन कषायोंका अन भाग अवशिष्ट रहता है वह इस क्षपकके कृष्टिरूपमें ही पाया जाता है। यही कारण है कि यहाँ पर 'सव्वेसु च अणुभागेसु' इस पदका स्पष्टीकरण करते हुए उसे सदृश धनवाली कृष्टियों स्वरूप ही कहा गया है। तात्पर्य यह है कि पूर्वबद्ध कर्मोंका अभजनीयस्वरूपसे जो अनुभाग अवशिष्ट रहता है वह इस क्षपकके सम्भव सभी कृष्टियोंमें पाया जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँ सर्वत्र इतना विशेष जानना चाहिए कि प्रकृतमें क्रोध संज्वलनके उदयसे क्षपक श्रेणीपर आरूढ हुआ जीव विवक्षित हुआ है इसलिए १२ ही संग्रह कृष्टियाँ और उनकी अन्तर कृष्टियाँ पायी जाती हैं। किन्तु यदि क्रोध संज्वलनको छोड़कर मानादि किसी एक कषायके उदयसे क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ हुआ जीव विवक्षित हो तो उसकी अपेक्षा उस क्षपकके जितनी संग्रह और अन्तर कृष्टियाँ सम्भव हों उस अपेक्षासे निर्णय लेना चाहिए। यहाँ जो यह विशेष सूचना की गयी है वह इस क्षपकके पूर्वबद्ध कर्मोंके भजनीय और अभजनीयस्वरूपसे विचार करते समय सर्वत्र समझ लेनी चाहिए।

§ ३९३ 'सव्वकिट्टीसु' ऐसा कहनेपर सब संग्रह कृष्टियोंका और उनकी अवयव कृष्टियों का एक पंक्तिरूपसे ग्रहण करना चाहिए। इससे क्रोधादि संज्वलनों सम्बन्धी एक-एक कृष्टिकी अनन्त सदृश धनवाली कृष्टियाँ सम्भव होनेपर उनमें लोभ संज्वलनकी सबसे जघन्य कृष्टिसे

किट्टिअब्भंतरे एदाणि अभयणिज्जसरूवेणोवट्ठाणि पुव्वबद्धाणि णियमा अत्थि त्ति भणिदं होइ। अथवा सव्वासु किट्टीसु जे अणुभागा अविभागपडिच्छेदसरूवा तेसु सव्वेसु चेव सरिसधणियभावेण अभयणिज्जा पुव्वबद्धकम्मपदेसा अत्थि त्ति सुत्तत्थो गहेयव्वो। एदेणेव सुत्तेण देसामासयभावेण भयणिज्जाणं पि कम्मपदेसाणं संभवपक्खे एगादिएगुत्तरकमेण सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु सव्वेसु चाणुभागेसु सव्वासु च किट्टीसु समवट्ठाणसंभवो अणुमग्गियव्वो, विरोहाभावादो।

§ ३९४ संपहि एवंविहमेदिस्से गाहाए अत्थं विहासेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* विहासा।

§ ३९५ सुगमं।

* जाणि अभज्जाणि पुव्वबद्धाणि ताणि णियमा सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु णियमा सव्वासु किट्टीसु।

§ ३९६ गयत्थमेदं सुत्तं। एवं छट्ठमूलगाहाए अत्थविहासा समत्ता। एममेत्तिएण पबंधेण

लेकर क्रोधमज्वलनकी सबसे उत्कृष्ट कृष्टि तककी सब कृष्टियोसम्बन्धी सदृश धनवाली कृष्टियोके भीतर ये अभजनीय स्वरूप कहे गये पूवबद्ध कर्म इस क्षपकके नियमसे पाये जाते हैं यह उक्त कथनका तात्पय है। अथवा सब कृष्टियोमे जो अनुभाग अविभागप्रतिच्छेदस्वरूपसे विद्यमान हैं उन सबमें ही सदृशधनरूपसे अभजनीय पूर्वबद्ध कमप्रदेश पाये जाते हैं ऐसा इस सूत्रका अर्थ ग्रहण करना चाहिए। तथा इसी सूत्रसे देशामार्षकभावसे भजनीय कर्मप्रदेशोका भी, सम्भव पक्षके स्वीकार करनेपर एक परमाणुसे लेकर एक एक अधिक परमाणु क्रमसे, सब स्थितिविशेषोमें सब अनुभागो मे और सब कृष्टियोमे अवस्थान सम्भव है यह मागणा कर लेनी चाहिए, क्योकि ऐसा स्वीकार करनेमे कोई विरोध नही है।

विशेषार्थ—जिस मागणा आदि सम्बन्धी पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय है वे तो सभी कृष्टियोमे पाये जाते है। अथवा सभी कृष्टियोमें अविभागप्रतिच्छेदस्वरूप जो अनुभाग पाया जाता है उन सबमे सदृश धनरूप अनुभागवाले अभनीय कर्मप्रदेश नियमसे पाये जाते हैं ऐसा इस सूत्रका अर्थ करना चाहिए। साथ ही जा पूर्वबद्ध कर्मप्रदेश भजनीयरूपसे इस क्षपकके पाये जाते हैं उनका सम्भव पक्षमे कमसे कम एक परमाणु और अधिकसे अधिक अनन्त परमाणु इस क्षपकके पाये जाते हैं। इसलिए उनका भी सब स्थितियो, सब अनुभागो और सब कृष्टियोमे होनेका इसी विधिसे विचार कर लेना चाहिए।

§ ३९४ अब इस गाथाके इस प्रकारके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अब इस दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ३९५ यह सूत्र सुगम है।

* जो पूर्वबद्ध कर्म इस क्षपकके अभजनीय हैं वे स्थितिके सब भेदोंमें और सब कृष्टियोंमे नियमसे पाये जाते हैं।

§ ३९६ यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार छठी मूलगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त हुई। इस

---

१ ता प्रतौ देसामासयेण इति पाठः।

तीहि मूलगाहाहि गदिआदिमग्गणासु पुव्वबद्धाण भयणिज्जाभयणिज्जभावगवेसण काढूण सपहि सत्तमीए मूलगाहाए अवयार कुणमाणो इदमाह—

* एत्तो सत्तमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ ३९७ जहावसरपत्ताए सत्तमीए मूलगाहाए अत्थविहासणट्ठमेत्तो समुक्कित्तणा कायव्वा त्ति वुत्त होइ ।

(१४१) एगसमयपबद्धा पुण अच्छुत्ता केत्तिगा कहि ट्ठिदीसु ।
भवबद्धा अच्छुत्ता ट्ठिदीसु कहि केत्तिया होंति ॥१९४॥

§ ३९८ एसा सत्तमी मूलगाहा अतरकदपढमसमयप्पहुडि उवरिमावत्थाए वट्टमाणस्सेदस्स खवगस्स समयपबद्धा भवबद्धा वा केत्तिया उदये असछुद्धा सभवति । सभवताण तेसि केत्तिएसु ट्ठिदिविसेसेसु अणुभागभेदेसु अवट्ठाणं होइ त्ति एवविहस्स अत्थविसेसस्स णिण्णयविहाणट्ठमोइण्णा । त जहा—'एगसमयपबद्धा पुण' एव भणिदे एक्कम्हि समये जेत्तिया कम्मपदेसा बधमागया एत्ति समूहो एगसमयपबद्धो णाम । तस्स पुण समयभेदसंपण्णाए बहुत्तसभवो अत्थि त्ति बहुवयणतणिद्देसो कओ 'एगसमयपबद्धा' त्ति । अधवा एगेगसमयपबद्धा त्ति विच्छाणिद्देसावलबणेण बहुवयणणिद्देसो एसो घडावेयव्वो ।

§ ३९९ तदो एव पयारा एगसमयपबद्धा केत्तिया एदस्स खवगस्स अच्छुत्तसरूवा अत्थि किमेक्को वा, दो वा, तिण्णि वा एव गतूण सखेज्जा असखेज्जा वा त्ति पढमपुच्छाणिद्देसो । एत्थ

प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा तीन मूलगाथाओका अवलम्बन लेकर गति आदि मार्गणाओमे पूर्वबद्ध कर्मोंकी इस क्षपकके भजनीय और अभजीयभावकी गवेषणा करके अब सातवी मूलगाथाका अवतार करते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

* आगे सातवीं मूलगाथाकी समुत्कीतना करते है ।

§ ३९७ यथावसरप्राप्त सातवी मूलगाथाके अर्थकी विभाषा करनेके लिए यहाँसे आगे उसकी समुत्कीतना करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

(१४१) एक समयमे बाँधे गये कितने कर्मप्रदेश स्थितिके कितने भेदोमे असक्षुब्ध रहते हैं, तथा कितने भवबद्ध कर्मप्रदेश स्थितिके कितने भेदोमे असक्षुब्ध रहते हैं ॥१९४॥

§ ३९८ अन्तरकरण क्रियाके सम्पन्न करनेके प्रथम समयसे लेकर उपरिम समयमे विद्यमान इस क्षपकके कितने समयप्रबद्ध तथा कितने भवबद्ध कर्मप्रदेश उदयमे असक्षुब्धरूपसे सम्भव हैं तथा सम्भव उनका कितने स्थितिभेदोमे और अनुभागभेदोमें अवस्थान होता है इस प्रकार इस तरहके अर्थविशेषका निर्णय करनेके लिए यह सातवी मूलगाथा अवतीर्ण हुई हैं। वह जैसे— 'एगसमयपबद्धा पुण' ऐसा कहनेपर एक समयमे जितने कर्मप्रदेश बन्धको प्राप्त होते हैं इनके समूहका नाम एक समयप्रबद्ध है। परन्तु उसके समयभेदसे सम्पन्न होनेपर बहुत्व सम्भव है, इसलिए उनका 'एगसमयपबद्धा' इस प्रकार बहुवचनरूपसे निर्देश किया है। अथवा 'एक एक समयप्रबद्ध' इस प्रकार वीप्सानिर्देशके अवलम्बनद्वारा यह बहुवचनरूप निर्देश घटित हो जाता है।

§ ३९९ इसलिए इस प्रकार कितने एकसमयप्रबद्ध इस क्षपकके अछूते रहते हैं। क्या एक समयप्रबद्ध, दो समयप्रबद्ध या तीन समयप्रबद्ध इस प्रकार जाकर क्या संख्यात समयप्रबद्ध या

'अच्छुत्ता' त्ति वुत्तें जीवेण अच्छिक्का उदयट्ठिदिमणाणिदा त्ति वुत्तं होइ। अथवा अच्छुत्ता त्ति वुत्ते उदये असछुद्धा त्ति अत्थो घेत्तव्वो, उवरि चुण्णिसुत्ते तहाणिद्देसदंसणादो। ते वुण असंछुद्धसरूवा समयपबद्धा 'कहिं ट्ठिदीसु' केत्तिएसु ट्ठिदिभेदेसु वट्टंति किमेक्कम्हि, आहो दोसु तिसु वा त्ति एवंविहविसेसणिद्देसावेक्खो विदिओ पुच्छाणिद्देसो। एदेणेव देसामासयभावेण अणुभागविसयो वि पुच्छाणिद्देसो एत्थाणुगतव्वो, उवरिमभासगाहाए तस्स वि विहासणोवलंभादो। तदो समयपबद्धाण-मच्छुद्धसरूवाण संखाविसेसो तेसिं चेवावट्ठाणपाओग्गट्ठिदि अणुभागवियप्पा च गाहापुव्वद्धे पुच्छिदा त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ।

§ ४०० संपहि गाहापच्छद्धमस्सियूण भवबद्धविसयो पुच्छाणुगमो कीरदे। तं जहा— 'भवबद्धा अच्छुत्ता' एवं भणिदे एक्कम्मि भवग्गहणे जेत्तिओ कम्मपोग्गलो संचिदो तस्स भव बद्धसण्णा। सो वुण भवभेदेण एगभवविसयसमयपबद्धभेदेण च बहुत्तमावण्णो त्ति बहुवयणेण णिद्दिट्ठो। तदो एवमेत्थ सुत्तत्थसंबंधो कायव्वो—केत्तिया भवबद्धा एदस्स खवगस्स उदयट्ठिदीए अमच्छुद्धसरूवा भवंति, किमेक्कभवसंबंधिणो आहो दो तिण्णि आदि संखेज्जासंखेज्जभवग्गहण संबंधिणो, किं वा सव्वे वि भवबद्धा उदयपज्जाएण सच्छुत्ता चेव। ण एक्को वि भवबद्धो तदच्छुत्तसरूवो संभवइ, छुत्ताणमच्छुत्ताण वा तेसिं केत्तिएसु ट्ठिदिविसेसेसु केत्तिएसु वा अणुभाग भेदेसु अवट्ठाणसंभवो त्ति एत्थ वि अणुभागविसयाए पुच्छाए पुव्वं व अंतब्भावो वट्ठव्वो।

असंख्यात समयप्रबद्ध अछूते रहते हैं। इस प्रकार यह प्रथम पृच्छानिर्देश है। इस मूलगाथा सूत्रमें अच्छत्ता' ऐसा कहनेपर जीवके द्वारा अस्पृष्ट अर्थात् उदयस्थितिको नहीं प्राप्त कराये गये रहते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अथवा 'अच्छुत्ता' ऐसा कहनेपर उदयमें असंक्षुब्ध रहते हैं यह अर्थ ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि आगे चूर्णिसूत्रमे उस प्रकारका निर्देश देखा जाता है। किन्तु वे असंक्षुब्धस्वरूप समयप्रबद्ध 'कहिं ट्ठिदीसु' स्थितिके कितने भेदोंमे पाये जाते हैं? क्या एक स्थितिमे, दो स्थितियोमें या तीन स्थितियोमे पाये जाते हैं इस प्रकार विशेष निर्देशकी अपेक्षा रखनेवाला यह दूसरा पृच्छानिर्देश है। इस प्रकार इस कथनद्वारा देशामर्षकरूपसे अनुभाग विषयक भी पृच्छानिर्देश यहाँपर करना चाहिए, क्योंकि उपरिम भाष्यगाथामे उसकी भी विभाषा उपलब्ध होती है। इस प्रकार असंक्षुब्धस्वरूप समयप्रबद्धोकी संख्याविशेषकी और उन्हींके अवस्थानप्रायोग्य स्थिति और अनुभागके भेदोकी इस गाथासूत्रके पूर्वार्धमे पृच्छा की गयी है यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है।

§ ४०० अब उक्त गाथासूत्रके उत्तरार्धका अवलम्बन लेकर भवबद्ध विषयक पृच्छाका अनुगम करते हैं। वह जैसे—'भवबद्धा अच्छुत्ता' ऐसा कहनेपर एक भवग्रहणमें जितना कर्म पुद्गल संचित किया गया उसकी भवबद्ध संज्ञा है। परन्तु वह भवके भेदसे और एक भवविषयक समयप्रबद्धोके भेदसे बहुतपनेको प्राप्त हो जाता है, इसलिए बहुवचनका निर्देश किया है। इसलिए यहाँपर सूत्रका अर्थके साथ इस प्रकार सम्बन्ध करना चाहिए कि कितने भवबद्ध समयप्रबद्ध इस क्षपकके उदयस्थितिमे असंक्षुब्धस्वरूप होते हैं? क्या एक भवसम्बन्धी या दो तीन आदि संख्यात और असंख्यात भवग्रहणसम्बन्धी समयप्रबद्ध उदयरूपसे असंक्षुब्ध होते हैं। अथवा क्या सभी भवबद्ध समयप्रबद्ध उदयरूपमें संक्षुब्ध होते हैं या एक भी भवबद्ध समयप्रबद्ध उदयरूपसे अक्षुब्ध स्वरूप नहीं पाया जाता। इस प्रकार क्षुब्धस्वरूप और अक्षुब्धस्वरूप उन समयप्रबद्धोका कितने स्थितिके भेदोंमे अथवा कितने अनुभाग विशेषोंमें अवस्थान सम्भव है। इस प्रकार यहाँपर भी अनुभागविषयक पृच्छाका पहलेके समान अन्तर्भाव जान लेना चाहिए।

§ ४०१ अथवा कम्हि त्ति वुत्ते कम्हि उद्देसे समयपबद्धा भवबद्धा च केत्तिया असंछुद्धसरूवा लब्भंति त्ति पुच्छाहिसंबंधो कायव्वो। एसो च पुच्छाणिद्देसो अंतरकरणादो पुव्वुत्तरावत्थाओ उवेक्खदे।

§ ४०२ संपहि एवमेदीए सुत्तगाहाए सूचिदत्थविसये णिण्णयविहाणट्ठमेत्थ चत्तारि भासगाहाओ अत्थि त्ति तासिं समुक्कित्तणं विहासणं च जहाकममेव कुणमाणो उत्तरसुत्तपबंध माढवेइ—

* एदिस्से चत्तारि भासगाहाओ।

§ ४०३ सुगमं।

* तासिं समुक्कित्तणा।

§ ४०४ सुगमं।

(१४२) छण्हमावलियाणं अच्छुत्ता णियमसा समयपबद्धा।
सव्वेसु ट्ठिदिविसेसाणुभागेसु च चउण्हं पि ॥१९५॥

§ ४०१ अथवा 'कम्हि' ऐसा कहनेपर किस स्थानपर भवबद्ध कितने समयप्रबद्ध असंक्षोभस्वरूप प्राप्त होते हैं इस प्रकार पृच्छाका सम्बन्ध करना चाहिए। और यह पृच्छाका निर्देश अन्तरकरणसे पूर्व अवस्था और उत्तर अवस्थाकी अपेक्षासे प्रवृत्त हुआ है।

विशेषार्थ—एक समयमें एक जीवके द्वारा जितने कर्मप्रदेश बन्धको प्राप्त होते हैं उनकी एक समयप्रबद्ध संज्ञा है। तथा भवके भीतर जितने समयप्रबद्ध बन्धको प्राप्त होते हैं उनकी भव बद्ध संज्ञा है। इन दोनोंको लेकर यहाँ जो पृच्छाएँ की गयी हैं उनका आशय यह है—(१) अन्तर करण क्रिया सम्पन्न होनेपर उसके प्रथम समयसे लेकर एक या एक एक कर जो अनेक समय प्रबद्ध बंधते हैं वे कितनी स्थिति और कितने अनुभागके कितने भेदोंमें पाये जाकर उदयमें दिखाई देते हैं या नहीं दिखाई देते। इस प्रकार भवबद्ध कर्म पुञ्जके विषयमें भी यह पृच्छा कर लेना चाहिए। 'भवबद्धा' पदको लेकर अन्तरकरणसे पूर्वकी अवस्था तथा अन्तरकरणके बादकी अवस्थाको लेकर भी उक्त पृच्छा की गयी है यह इस पूरे कथनका तात्पर्य है।

§ ४०२ अब इस प्रकार इस सूत्रगाथा द्वारा सूचित किये गये अर्थके विषयमें निर्णयका विधान करनेके लिए इस विषयमें चार भाष्यगाथाएँ आयी हैं, इसलिए यथाक्रमसे ही उनकी समुत्कीर्तना और विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* इस सातवीं मूल सूत्रगाथाकी चार भाष्यगाथाएँ हैं।

§ ४०३ यह सूत्र सुगम है।

* अब उनकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ४०४ यह सूत्र सुगम है।

(१४२) अन्तरकरणके बाद उपरिम अवस्थामें विद्यमान क्षपकके छह आवलियोंके भीतर, बंधे हुए समयप्रबद्ध, असंक्षुब्ध (अनुदीरित) रहते हैं। वे समयप्रबद्ध चारों ही कषायोंसम्बन्धी सभी स्थितिभेदोंमें और सब अनुभागोंमें पाये जाते हैं ॥१९५॥

§ ४०५ एसा पढमभासगाहा मूलगाहाए पुरिमद्धमस्सियूण अंतरकरणादो उवरिमावत्थाए चदुण्ह संजलणाणमेत्तिया समयपबद्धा अच्छुत्तसरूवा लब्भंति, तेसिं च ट्ठिदि अणुभागेसु अवट्ठाण मेदेण सरूवेण होदि त्ति एदस्स अत्थविसेसस्स णिण्णयविहणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'छण्हमाव लियाणं' एवं भणिदे अंतरकरणादो उवरिमावत्थाए वट्टमाणस्स खवगस्स छण्हमावलियाणमब्भंतरे जे बद्धा समयपबद्धा ते 'णियमसा' णिच्छयेणेव उदये असछुद्धा भवंति। किं कारणं? अंतरकरणे कदे तत्तो परं छसु आवलियासु गदासु उदीरणा त्ति णियमदंसणादो। 'सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु' एवं भणिदे पुण असछुद्धसमयपबद्धा सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु सव्वेसु चेवाणुभागभेदेसु चदुसंजलण विसयेसु णियमेणावचिट्ठंति, ण एक्कम्हि वि ठिदिविसेसे अणुभागविसेसे च तेसिमवट्ठाणपडिसेहो अत्थि त्ति भणिदं होइ। जइ वि एत्थ बंधादो उवरिमसंतट्ठिदीसु अणुभागेसु च णिरुद्धसमय पबद्धाणमवट्ठाणसंभवो णत्थि तो वि अप्पणो पाओग्गट्ठिदि अणुभागवियप्पे सव्वे घेत्तूण सव्वेसु ट्ठिदिअणुभागविसेसेसु णियमा तेसिमवट्ठाणं होइ त्ति सुत्ते भणिदं। ण च एवंविहो

§ ४०५ यह प्रथम भाष्यगाथा मूलगाथाके पहले अर्ध भागका आश्रय कर अन्तरकरणसे उपरिम अवस्थामें चारों संज्वलनोंके इतने समयप्रबद्ध उदीरणारूप क्रियासे रहित प्राप्त होते हैं और उनका स्थिति और अनुभागमें अवस्थान इस रूपसे होता है इस प्रकार इस अर्थ विशेषके निर्णयका विधान करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'छण्हं आवलियाणं' ऐसा कहनेपर अन्तरकरणके बाद उपरिम अवस्थामें विद्यमान क्षपकके छह आवलियोंके भीतर जो बद्ध समय प्रबद्ध है वे 'णियमसा' निश्चयसे ही उदयमें असंक्षुब्ध (उदीरणासे रहित) रहते हैं क्योंकि अन्तर करण करनेपर उसके बाद छह आवलि काल जानेपर उदीरणा होती है ऐसा नियम देखा जाता है। 'सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु' ऐसा कहनेपर तो असंक्षुब्ध समयप्रबद्ध चार संज्वलन सम्बन्धी सब स्थितिविशेषोंमें और सब अनुभागके भेदोंमें नियमसे अवस्थित रहते हैं। एक भी स्थितिविशेषमें और अनुभागविशेषमें उनके अवस्थानका प्रतिषेध नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यद्यपि यहाँ पर बन्धसे उपरिम सत्त्वरूप स्थितियोंमें और सत्त्वरूप अनुभागोंमें विवक्षित समयप्रबद्धोंका सवत्र अवस्थान सम्भव नहीं है, तो भी अपने बन्ध योग्य सब स्थिति और सब अनुभागके भेदोंको ग्रहण कर सब स्थितिविशेषोंमें और सब अनुभागविशेषोंमें उनका अवस्थान नियमसे पाया जाता है यह इस सूत्रमें कहा गया है। और इस प्रकारका विशेष निर्देश सूत्रमें नहीं है ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि व्याख्यानसे उस प्रकारके विशेषका ज्ञान होता है।

विशेषार्थ—अन्तरकरण क्रिया सम्पन्न करनेके बाद चारों संज्वलनोंका जो नवीन कर्म बन्ध होता है वह सब स्थितियों और सब अनुभागविशेषोंमें पाया जाकर वह छह आवलि काल तक उदीरणाके अयोग्य रहता है यह इस कथनका तात्पर्य है। अब यहाँपर शंकाकारका कहना यह है कि इस जीवके प्रत्येक समयके नवीन बन्धमें जो स्थिति और अनुभाग प्राप्त होता है उससे सत्त्वस्थिति और सत्त्वानुभाग अधिक होता है, इसलिए नवीन बन्धके प्रदेशोंका उत्कर्षण सब सत्त्वस्थितियों और सब सत्त्वस्वरूप अनुभागोंमें न हो सकनेके कारण उनका सब स्थितियों और सब अनुभागोंमें पाया जाना कैसे सम्भव होगा? समाधान यह है कि चारों संज्वलनोंके नवीन बन्धकी उस कालमें जितनी स्थिति और अनुभाग प्राप्त होता है उस सीमा तक ही सब स्थिति विशेषोंमें और सब अनुभागोंमें नवक बन्धका उत्कर्षण होता है, इसलिए उस सीमा

विसेसणिद्दसो सुत्ते णत्थि त्ति आसकणिज्ज, वक्खाणादो तहाविहविसेसपडिवत्तीदो।

§ ४०६ अथवा चउण्ह पि सजलणाण सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु सव्वासु च सगहकिट्टीसु समयाविरोहेण त पदेसग्ग छण्हमावलियाणमब्भतरे जाव ण सकत ताव उदीरणापाओग्ग ण होदि त्ति जाणावणट्ठ गाहापच्छद्धो भणिदो।

§ ४०७ सपहि एदस्सेव गाहासुत्तत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागथमाढवेइ—

* विहासा।

§ ४०८ सुगम।

* जत्तो पाए अतर कद तत्तो पाए समयपबद्धो छसु आवलियासु गदासु उदीरिज्जदि।

§ ४०९ जदो प्पहुडि अतरकरण समाणिद तदो प्पहुडि जो बद्धो समयपबद्धो सो णियमा छसु आवलियासु गदास उदीरिज्जदि, णो हेट्ठा त्ति वुत्त होइ। एवमेदम्हि णियमे सजादे छण्हमावलियाण समयपबद्धा सछुहसरूवा होदूण एदम्हि विसए लब्भति त्ति जाणावणट्ठ मिदमाह—

तक ही नवक बन्धका उत्कषण द्वारा सद्भाव पाया जाता है ऐसा अर्थविशष यहाँ व्याख्यानसे समझ लेना चाहिए जो उत्कषणके नियमका ध्यानमे रखकर व्याख्यान द्वारा स्पष्ट किया गया है।

§ ४०६ अथवा चारो ही संज्वलनोकी सब स्थिति विशषोमे और सब सग्रह कृष्टियोमे समयके अविरोधपूर्वक वह प्रदेशपुज छह आवलियोके भीतर जब तक सक्रा त नही होता तब तक वह उदोरणाके प्रायोग्य नही होता इस बातका ज्ञान करानेके लिए गाथाका उत्तरार्ध कहा है।

विशेषार्थ—आनुपूर्वी सक्रमके कारण भो नवकबन्धकी छह आवलिके बाद उदीरणा होने रूप व्यवस्था यहाँ घटित कर लेनी चाहिए। वैस परमाथसे देखा जाय तो अन्तरकरण क्रियाके सम्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर उदीरणा छह आवलिके बाद ही होती है ऐसा नियम है।

§ ४०७ अब इसी गाथाके सूत्रका स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेके विभाषा ग्रन्थको आरम्भ करत हैं—

* अब इस प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ४०८ यह सूत्र सुगम है।

* जहाँ जाकर अन्तरकरण क्रियाको सम्पन्न किया है वहाँसे लेकर बद्ध समयप्रबद्ध छह आवलि प्रमाण काल जानेपर उदीरित होता है।

§ ४०९ जहाँ जाकर अन्तरकरण क्रिया सम्पन्न हुई है वहाँसे लेकर जो समयप्रबद्ध बँधता है वह नियमसे छह आवलि प्रमाण काल जानेपर उदीरित होता है, इससे पूर्व नहीं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार इस नियमके हो जानेपर इस कारण छह आवलि सम्बन्धी समय प्रबद्ध सक्षुब्धस्वरूप होकर इस स्थानपर प्राप्त होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रको कहते है—

*** अंतरादो कदादो तत्तो छसु आवलियासु गदासु तेण परं छण्हमावलियाणं समयपबद्धा उदये अछुद्धा भवंति ।**

§ ४१० जदो एस णियमो तदो अंतरसमत्तिसमणंतरसमयप्पहुडि छसु आवलियासु वोलीणासु तत्तो पर सव्वत्थेव छण्हमावलियाण जे समयपबद्धा ते णियमा उदये असंछुद्धा भवंति त्ति सुत्तत्थसगहो। सपहि एदस्स भावत्थो वुच्चदे। त जहा—अंतरकदपढमसमए आवलियमेत्ता णवकबधसमयपबद्धा उदये अच्छुद्धा अत्थि। पुणो वि एत्तिया चेव अवट्ठिदा होदूण गच्छंति जाव अतरकरणपढमसमयप्पहुडि आवलियमेत्तकालचरिमसमओ त्ति। तदो उवरिमेगेगसमयपबद्धो जहाकममहिओ होदूण विदियावलियमेत्तकाले वोलीणे तक्काल दो आवलियमेत्ता समयपबद्धा उदये अच्छुद्धा भवति। पुणो तत्तो प्पहुडि तेसिमुवरि एगेगो समयपबद्धो अहियो होदूण तदिया-वलियमेत्तकाले गदे तिण्हमावलियाणं समयपबद्धा अणुदीरिदा भवति। पुणो वि तत्तो प्पहुडि चउत्थावलियमेत्तकाले समइच्छिदे ताधे चउण्हमावलियाणं समयपबद्धा उदीरणा पज्जायविमुहा लब्भति। पुणो तत्तो प्पहुडि पचमावलियमेत्तकाले समइक्कते ताधे पचावलियमेत्तसमयपबद्धा उदयम्मि अच्छुद्धा भवति। पुणो तत्तो प्पहुडि आवलियमेत्तकाले वदिक्कते छण्हमावलियाण समयपबद्धा उदयम्मि असछुद्धसरूवा लब्भति। एत्तो पर सव्वत्थ छआवलियमेत्ता समयपबद्धा अवट्ठिदसरूवा उदए अच्छुद्धा भवति। एदेण कारणेण अतरकदपढमसमयप्पहुडि छसु आवलियासु गदासु तत्तो पर छण्हमावलियाण समयपबद्धा णियमा उदए अछुद्धा भवति त्ति सेससमयपबद्धा

* अन्तरकरण करनेके अनन्तर समयसे लेकर छह आवलियोंके व्यतीत होनेपर उसके बाद सवत्र ही छह आवलियो सम्बन्धी जो समयप्रबद्ध हैं वे उदयमे अक्षुब्ध होते हैं।

§ ४१० यत यह नियम है, इसलिए अन्तरकरण क्रियाके सम्पन्न करनेके अनन्तर समयसे लकर छह आवलियोके व्यतीत होनेपर वहाँसे आगे सवत्र ही छह आवलियोसम्बन्धी जो समय-प्रबद्ध हैं वे नियमसे उदयमे असक्षुब्ध होते है यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। अब इस सूत्रका भावार्थ कहते हैं। वह जैसे—अन्तरकरण करनेक अनन्तर प्रथम समयमे एक आवलिप्रमाण नवकबन्ध समयप्रबद्ध उदयमे अक्षुब्ध होते हैं। फिर भी इतने ही समयप्रबद्ध अवस्थित होकर अन्तरकरण करनेके प्रथम समयसे लेकर एक आवलिप्रमाण कालके अन्तिम समय तक प्राप्त होते हैं। उससे आगे एक-एक समयप्रबद्ध क्रमसे अधिक होकर द्वितीय आवलिप्रमाण कालके व्यतीत होनेपर उस कालमें दो आवलिप्रमाण समय प्रबद्ध उदयमे असक्षुब्ध होते हैं। पुन वहाँसे लेकर उनके ऊपर एक एक समयप्रबद्ध अधिक होकर तीसरी आवलिप्रमाण कालके जानेपर तीन आवलियोसम्बन्धी समयप्रबद्ध अनुदारित होते है। फिर भी वहाँसे लेकर चार आवलिप्रमाण कालके व्यतीत होनेपर उस समय चार आवलियोंसम्बन्धी समयप्रबद्ध उदीरणापर्यायसे विमुख प्राप्त होते हैं। पुन वहाँसे लेकर पाँच आवलिप्रमाण कालके व्यतीत होनेपर उस समय पाँच आवलिप्रमाण समयप्रबद्ध उदयमें अक्षुब्ध होते है। पुन वहाँसे लेकर आवलिप्रमाण कालके व्यतीत होनेपर छह आवलिसम्बन्धी समयप्रबद्ध उदयमें असंक्षुब्ध स्वरूप प्राप्त होते हैं। इससे आगे सर्वत्र छह आवलिप्रमाण समयप्रबद्ध यथास्थितिस्वरूप रहकर उदयमे अक्षुब्ध होते हैं। इस कारणसे अन्तरकरण करनेके बाद प्रथम समयसे लेकर छह आवलियोके जानेपर उससे आगे छह आवलियोसम्बन्धी समयप्रबद्ध नियमसे उदयमें अक्षुब्ध होते हैं। शेष सभी समयप्रबद्ध उदयमें सक्षुब्ध होते हैं यह उक्त कथनका तात्पय है।

सव्वे चेव उदये सछुद्धा भवंति त्ति भणिदं होदि ।

§ ४११ एवमेदेण सुत्तेण समयपबद्धाणं सछुद्धासछुद्धभावं णिरूविय संपहि भवबद्धाणं सव्वेसिमेव णियमेण उदये सछुद्धभावपदुप्पायणट्ठमुवरिमसुत्तमाह—

* भवबद्धा पुण णियमा सव्वे उदये सछुद्धा भवंति ।

§ ४१२ सव्वे चेव भवबद्धा णियमा एदस्स खवगस्स उदये सछुद्धा भवंति। कुदो? एक्कस्स वि भवबद्धस्स उदये असछुद्धसरूवस्स तक्कालमणुवलंभादो । एदस्स भावत्थो—एक्कम्मि भवम्मि बद्धसमयपबद्धाणब्भंतरे जइ वि एगस्स समयपबद्धस्स परमाणू उदये सछुद्धा तो वि सो भवबद्धो णिच्छयेण उदये सछुद्धो होदि त्ति एदेण कारणेण सव्वे भवबद्धा उदये सछुद्धा त्ति भणिदं । एसो च भवबद्धपडिबद्धो अत्थणिद्देसो जइ वि एदम्मि पढमभासगाहासुत्तम्मि णत्थि तो वि उवरि भण्णमाणचउत्थभासगाहावलंबणेण चुण्णिसुत्ते विहासिदो त्ति दट्ठव्वो, 'पुव्वेण परं वक्खाणिज्जदि, परेण वि पुव्वं वक्खाणिज्जदि' त्ति णायादो । एवं पढमभासगाहाए अत्थविहासा समत्ता ।

* एत्तो विदियभासगाहा ।

§ ४१३ पढमभासगाहाविहासणाणंतरमेत्तो विदियभासगाहा समोदारेयव्वा त्ति वुत्तं होदि ।

विशेषार्थ—(१) यहाँपर 'उदये असछुद्धा'का अर्थ उदीरणास्वरूप नहीं होने तथा 'उदये सछुद्धा' का अर्थ उदीरणारूप होते है । इस प्रकार इस अर्थको ध्यानमे रखकर पूरे प्रकरणका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। (२) टीकामे जो 'अंतरकदपढमसमयप्पहुडि छसु' इत्यादि वचन कहा है सो उसका यह भाव है कि अन्तरकरण क्रिया सम्पन्न करनेके बाद जब जो भी नवकबन्ध समयप्रबद्ध होता है वह सब छह आवलिकाल तक उदीरणारूप नहीं परिणमता यह अर्थ सर्वत्र घटित कर लेना चाहिए।

§ ४११ इस प्रकार इस सूत्र द्वारा समयप्रबद्धोके सक्षुब्ध और असक्षुब्ध भावका निरूपण करके अब सभी भवबद्धोके उदयमें नियमसे सक्षुब्धभावका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* परन्तु सब भवबद्ध समयप्रबद्ध इस क्षपकके उदयमे नियमसे सक्षुब्ध होते हैं ।

§ ४१२ सभी भवबद्ध समयप्रबद्ध नियमसे इस क्षपकके उदयमे सक्षुब्ध होते हैं, क्योंकि इस क्षपकके एक भी भवबद्ध समयप्रबद्ध उदयमे असक्षुब्धस्वरूप नहीं उपलब्ध होता । इसका भावार्थ—एक भवमे बद्ध समयप्रबद्धोके अन्तर्गत यद्यपि एक समयप्रबद्धका परमाणु इस क्षपकके उदयमे सक्षुब्ध होता है, यही कारण है कि सब भवबद्ध समयप्रबद्ध इस क्षपकके उदयमें संक्षुब्ध होते है यह इसका तात्पर्य है। और यह भवबद्धसे सम्बन्ध रखनेवाला अर्थनिर्देश यद्यपि इस प्रथम भाष्य गाथासूत्रमे नहीं है तो भी आगे कही जानेवाली चौथी भाष्य गाथासूत्रका अवलम्बन लेकर चूर्णिसूत्रमे व्याख्यान किया गया है ऐसा यहाँ जानना चाहिए । आगे कहे जानेवाले अर्थका पहले व्याख्यान किया जाता है और पहले कहे जानेवाले अर्थका पीछे भी व्याख्यान किया जाता है ऐसा न्याय है। इस प्रकार प्रथम भाष्यगाथाकी अर्थ विभाषा समाप्त हुई ।

* अब इससे आगे दूसरी भाष्यगाथाका अवतार करते हैं ।

§ ४१३ प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करनेके अनन्तर इससे आगे दूसरी भाष्यगाथाका अवतार करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

(१४३) जा चावि बज्झमाणी आवलिया होदि पढमकिट्टीए।
पुव्वावलिया णियमा अणंतरा चदुसु किट्टीसु ॥

§ ४१४ एसा विदियभासगाहा कोहसंजलणणवकबंधपदेसग्गस्स संगहकिट्टीसु संकमो एदेण कमेण होदि त्ति जाणावणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'जा चावि बज्झमाणी' एवं भणिदे जा खलु बज्झमाणी आवलिया बंधावलिया त्ति वुत्तं होइ। तत्थ कम्मपदेसेसु बज्झमाणेसु तस्सबंधेण तिस्से वि उवयारेण तव्ववएसोववत्तीदो। सा णियमा कोहसंजलणपढमसंगहकिट्टीए होइ। कुदो ? अणविक्कतबंधावलियपदेसग्गस्स ओकड्डुण परपयडिसंकमादिकिरियाणमप्पाओग्गत्तादो। 'पुव्वावलिया णियमा अणंतरा चदुसु किट्टीसु' एवं भणिदे तत्तो अणंतरोवरिमा जा विदियावलिया सा णियमा चदुसु किट्टीसु वट्टव्वा। एदस्स भावत्थो—कोहपढमसंगहकिट्टीसरूवेण बद्धपदेसग्गं तत्थ बंधावलियमेत्तकालमच्छियूण पुणो विदियावलियपढमसमये बंधावलियावदिक्कमवसेण कोहस्स चेव वेसंगहकिट्टीए माणपढमसंगहकिट्टीए च संकामिज्जदि तेण सा विदियावलिया कोहस्स तिसु वि संगहकिट्टीसु माणपढमसंगहकिट्टीए च णियमा समुवलब्भइ त्ति वुत्तं होइ। बंधावलियादिक्कंतसमये चेव सेसासेससंगहकिट्टीसु तं पदेसग्गं किण्ण संकामिज्जदे ? ण, आणुपुव्विसंकमवसेण किट्टीसु संकामिज्जमाणस्स णवकबंधपदेसग्गस्स अणंतरहेट्ठिमासु तिसु चेव संगहकिट्टीसु संकमणियम

(१४३) जो बध्यमान आवलि है वह प्रथम कृष्टि अर्थात् क्रोध सज्वलनकी प्रथम कृष्टिमे पायी जाती है। उसके अनन्तर जो पूर्व अर्थात् प्रथम आवलि है वह नियमसे चार कृष्टियोमे पायी जाती है।

§ ४१४ यह दूसरी भाष्यगाथा क्रोधसज्वलनके नवकबन्ध कर्मप्रदेशोका संग्रह कृष्टियोमें सक्रम इस क्रमसे होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'जा चावि बज्झमाणो' ऐसा कहनेपर जो नियमसे बध्यमान आवलि अर्थात् बन्धावलि है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। वहाँ कर्मप्रदेशोके बधते समय उसके सम्बन्धसे बध्यमान आवलिकी भी उपचारसे बन्धावलि संज्ञा बन जाती है। वह नियमसे क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिमे पायी जाती है, क्योंकि जबतक बन्धावलि अतिक्रान्त नही होती है तबतक उसका कर्मप्रदेशपुज अपवर्तन, परप्रकृतिसक्रम आदि क्रियाके अयोग्य होता है। 'पुव्वावलिया णियमा अणतरा चदुसु किट्टीसु' ऐसा कहनेपर उससे अनन्तर उपरिम जो द्वितीय आवलि है वह नियमसे चार कृष्टियोमे जाननी चाहिए। इसका भावार्थ—क्रोधसज्वलनके प्रथम सग्रह कृष्टिस्वरूपसे बद्ध कर्मपुंज वहाँ बन्धावलिप्रमाण काल तक तदवस्थ रहकर पुन द्वितीय आवलिके प्रथम समयमे बन्धावलिका अतिक्रम हो जानेके कारण क्रोधकी ही दो संग्रह कृष्टियोमे और मानकी प्रथम सग्रह कृष्टिमें संक्रामित होती है, इसलिए वह द्वितीय आवलि क्रोधकी तीनो ही सग्रहकृष्टियोमे और मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे नियमसे पायी जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शका—बन्धावलिके अतिक्रान्त होते समय ही वह प्रदेशपुज शेष समस्त संग्रह कृष्टियोमे क्यों नही सक्रमित हो जाता ?

समाधान—नही, क्योंकि आनुपूर्वी संक्रमके कारण कृष्टियोंमें सक्रम्यमाण नवकबन्ध प्रदेशपुजके अनन्तर अधस्तन तीन सग्रह कृष्टियोमें ही संक्रमका नियम देखा जाता है। इसलिए द्वितीय आवलि चारो ही संग्रह कृष्टियोमें पाई जाती है यह सिद्ध हुआ।

दंसणादो। तदो विदियावलिया चदुसु चेव सगहकिट्टीसु होइ त्ति सिद्ध ।

§ ४१५ संपहि एवविहमेदिस्से गाहाए अत्थ विहासेमाणो विहासागथमुत्तर भणइ—

* विहासा ।

§ ४१६ सुगम ।

* ज पदेसग्ग बज्झमाणय कोधस्स त पदेसग्ग सव्व बधावलिय कोहस्स पढम-सगहकीट्टीए दिस्सइ ।

§ ४१७ कुदो ? कोहपढमसगहकिट्टीसरूवेण बद्धणवकबधपदेसग्गस्स बधावलियमेत्तकाल तत्थेवावट्ठाण मोत्तूण पयारतरासभवादो ।

* तदो आवलियादिक्कत तिसु वि कोहकिट्टीसु दीसइ माणस्स च पढमकिट्टीए ।

§ ४१८ किं कारणं ? तत्थ बधावलियाइक्कतस्स तस्स पदेसग्गस्स वि विदियावलियपढम समए पुव्वुत्तणियमवसेण सकममाणस्स कोहस्स तिसु सगहकिट्टीसु माणपढमसगहकिट्टीए च सम वट्ठाणस्स परिप्फुडमुवलभादो ।

विशेषार्थ—उक्त दूसरी भाष्यगाथामे बध्यमान आवलिसे बन्धावलिका ग्रहण किया गया है। इसका आशय यह है कि जो भी कर्म बधता है वह अपने ब ध समयसे लेकर एक आवलि काल तक अपकर्षण आदि सकल करणोके अयोग्य रहता है। उसके बाद द्वितीय आवलिका काल प्रारम्भ होनेपर उस कर्मपुजका अपकर्षण आदि काय होने लगता है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

§ ४१५ अब इस भाष्यगाथाके इस प्रकारके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते हैं—

* अब दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ४१६ यह सूत्र सुगम है।

* क्रोध सज्वलनका जो प्रदेशपुज बध्यमान है वह पूरा प्रदेशपुज बन्धावलि काल तक क्रोधसज्वलनकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे दिखाई देता है।

§ ४१७ क्योकि क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रहकृष्टि स्वरूपसे बद्ध नवकबन्ध प्रदेशपुजका बन्धावलि काल तक वही अवस्थानको छोडकर अन्य प्रकार सम्भव नही है।

* तदनन्तर बन्धावलिको व्यतीत करके अवस्थित वह नवकबन्ध कर्मपुज क्रोधसज्वलनकी तीनो सग्रहकृष्टियोमे और मानसज्वलनकी प्रथम सग्रहकृष्टिमे दिखाई देता है।

§ ४१८ शका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—वहाँ ब धावलिको व्यतीत करके अवस्थित उसी प्रदेशपुजका द्वितीय आवलिके प्रथम समयमे पूर्वोक्त नियमके कारण सक्रमण करते हुए क्रोधसज्वलनको तीनो सग्रहकृष्टियोमें और मानसंज्वलनकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे अवस्थान स्पष्टरूपसे उपलब्ध होता है।

* एवं विदियावलिया चदुसु किट्टीसु दीसइ ।

§ ४१९. एदेण कारणेण विदियावलिया चदुसु किट्टीसु जादा त्ति वुत्तं होइ । एवमेत्ति एण पबंधेण विदियभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय सपहि तदियभासगाहमणुच्चारिय विदिय गाहत्थसंबंधेणेव तदत्थविहासणं कुणमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

* तदो जं पदेसग्गं कोहादो माणस्स पढमकिट्टीए गदं तं पदेसग्गं तदो आवलियाए पुण्णाए माणस्स विदिय-तदियासु मायाए च पढमसंगहकिट्टीए संकमदि ।

§ ४२०. एतवुक्तं भवदि—पुव्वणिरुद्धकोहसंजलणपदेसग्गं माणस्स पढमसंगहकिट्टीए विदियावलियमेत्तकालमच्छिय पुणो तदियावलियपढमसमए समयाविरोहेण संकममाणं कुणमाणो तत्तो पहुडि आवलियमेत्तकालं पुव्वुत्तचदुसु संगहकिट्टीसु पुणो माणविदिय तदियसंगहकिट्टीसु माया-पढमसंगहकिट्टीए च समुवलब्भइ, ण तत्तो अण्णासु किट्टीसु तस्स संकमणसत्तीए तक्कालमणुवलभादो त्ति । संपहि इममेवत्थमुवसंहारमुहेण परूवेमाणो इदमाह—

* एवं तदिया आवलिया सत्तसु किट्टीसु त्ति भण्णइ ।

§ ४२१. एदेण कमेण तदिया आवलिया सत्तसु किट्टीसु त्ति उवरिमगाहासुत्तावयवे भण्णमाणो अत्थो सुसंबद्धो त्ति भणिदं होइ । संपहि चउत्थावलियाए तस्स पदेसग्गस्स पवुत्ति विसेसावहारणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

---

* इस प्रकार द्वितीय आवलि चारों संग्रहकृष्टियोंमें दिखाई देती है ।

§ ४१९. इस कारण द्वितीय आवलि चारों संग्रहकृष्टियोंमें व्याप्त हो जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा दूसरी भाष्यगाथाको अर्थविभाषा समाप्त करके अब तीसरी भाष्य गाथाकी उच्चारणा करके दूसरी भाष्यगाथाके सम्बन्धसे ही उसके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* इस प्रकार उक्त विधिसे जो प्रदेशपुंज क्रोधसंज्वलनसे मानसंज्वलनकी प्रथम संग्रहकृष्टिको प्राप्त हुआ है वह प्रदेशपुंज तत्पश्चात् एक आवलि काल पूर्ण होनेपर मान संज्वलनकी दूसरी और तीसरी तथा मायासंज्वलनकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें संक्रमित होता है ।

§ ४२०. उक्त कथनका यह तात्पर्य है—पहले विवक्षित किया गया क्रोधसंज्वलनका प्रदेशपुंज मानसंज्वलनकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें द्वितीय आवलि प्रमाण कालतक रहकर पुनः तीसरी आवलिके प्रथम समयमें समयके अविरोधपूर्वक संक्रमण करता हुआ वहाँसे लेकर एक आवलि प्रमाण काल तक पूर्वोक्त चारों संग्रह कृष्टियोंमें पुनः मानसंज्वलनकी दूसरी और तीसरी संग्रह कृष्टियोंमें तथा मायासंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें पाया जाता है । उनसे अतिरिक्त अन्य संग्रह कृष्टियोंमें उसके संक्रमण करनेकी शक्ति उस कालमें नहीं पाई जाती । अब इसी अर्थका उपसंहार द्वारा कथन करते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

* इस प्रकार तीसरी आवलि सात संग्रह कृष्टियोंमें कही जाती है ।

§ ४२१. इस क्रमसे तीसरी आवलि सात संग्रह कृष्टियोंमें पायी जाती है यह उपरिम गाथा-सूत्रके प्रथम पादमें कहा जानेवाला अर्थ सुसम्बद्ध है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब चौथी आवलिमें उस प्रदेशपुंजकी प्रवृत्ति विशेषका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* जं कोहपदेसग्गं संछुब्भमाणयं मायाए पढमकिट्टीए संपत्तं तं पदेसग्गं तत्तो आवलियादिक्कंतं मायाए विदिय-तदियासु च किट्टीसु लोभस्स च पढमकिट्टीए संकमदि ।

§ ४२२ जं तं पुव्वणिरुद्धं कोहसंजलणपदेसग्गं पुव्वुत्तपणालीए आगंतूण मायाए पढम संगहकिट्टीए संकंतं तत्थ तदियावलियमेत्तकालमच्छियूण तदो चउत्थावलियपढमे समये अणंतर पह्वविदणियमाणुल्लंघणेण संकामिज्जमाणं मायाए विदियतदियसंगहकिट्टीए लोभपढमसंगहकिट्टीए च संकमदि, तत्तो परं तारिसे तहाविहसंकमणसत्तीए तत्थाणुवलंभादो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो । जदो एवं तदो चउत्थी आवलिया दससु किट्टीसु जादा त्ति जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* एवं चउत्थी आवलिया दससु किट्टीसु त्ति भण्णइ ।

§ ४२३ गयत्थमेदं सुत्तं । संपहि तस्सेव पदेसग्गस्स पंचमावलियाए पवुत्तिविसेसजाणावणट्ठमुत्तरसुत्तावयारो—

* जं कोहपदेसग्गं संछुब्भमाणं लोभस्स पढमकिट्टीए संपत्तं तदो आवलिया-दिक्कंतं लोभस्स विदिय-तदियासु किट्टीसु दीसइ ।

§ ४२४ जं तं कोहसंजलणपदेसग्गं पुव्वणिरुद्धं पुव्वुत्तपरिवाडीए लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए संकामिदं तं तत्थ संकमणावलियमेत्तकालमच्छिय तदो पंचमावलियपढमसमए लोभस्स विदिय

---

* जो क्रोधसंज्वलनका नवकबन्ध प्रदेशपुंज संक्रमित होकर मायासंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें प्राप्त हुआ है वह प्रदेशपुंज तत्पश्चात् एक आवलिप्रमाण काल जाकर मायासंज्वलनकी दूसरी और तीसरी संग्रह कृष्टियोंमें तथा लोभसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होता है ।

§ ४२२ जो पूर्वमें विवक्षित क्रोधसंज्वलनका प्रदेशपुंज पूर्वोक्त प्रणालीसे आकर माया संज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रान्त हुआ है वह वहीं तीसरी आवलिप्रमाण काल तक रहकर पश्चात् चौथी आवलिके प्रथम समयमें अनन्तर कहे गये नियमका उल्लंघन किये बिना संक्रमण करता हुआ मायासंज्वलनकी दूसरी और तीसरी संग्रहकृष्टिमें तथा लोभसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमण करता है, क्योंकि उससे आगे उस समय उसमें उस प्रकारकी संक्रमणशक्तिका अभाव है। इस प्रकार यह यहाँपर सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है । यतः ऐसा है, अतः चौथी आवलि दस संग्रह कृष्टियोंमें पायी जाती है इस प्रकार इस बातका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इस प्रकार चौथी आवलि दस संग्रह कृष्टियोंमें कही जाती है ।

§ ४२३ यह सूत्र गतार्थ है । अब उसी नवबन्ध प्रदेशपुंजके पाँचवीं आवलिमें प्रवृत्ति विशेषका ज्ञान करानेके लिये आगेके सूत्रका अवतार कहते हैं—

* जो क्रोध संज्वलनका नवकबन्ध प्रदेशपुंज संक्रमित होकर लोभसंज्वलनकी प्रथम कृष्टिको प्राप्त हुआ है वह तत्पश्चात् एक आवलिकालके बीतनेपर लोभसंज्वलनकी दूसरी और तीसरी संग्रह कृष्टियोंमें दिखाई देता है ।

§ ४२४ जो वह क्रोधसंज्वलनका नवबन्ध प्रदेशपुंज पूर्वमें विवक्षित किया था वह पूर्वोक्त परिवृद्धिके द्वारा लोभसंज्वलनकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें संक्रमित हुआ है वह वहीं संक्रमणावलि प्रमाण काल तक रहकर पश्चात् पाँचवीं आवलिके प्रथम समयमें लोभसंज्वलनकी दूसरी और

तदियासु संगहकिट्टीसु ओकड्डुणावसेण संकमदि त्ति भणिदं होदि। एवं च संकमो होदि त्ति काढूण पंचमावलियाए त पदेसग्ग सव्वासु चेव संगहकिट्टीसु आवमिदमाह—

* एव पचमी आवलिया सव्वासु किट्टीसु त्ति भण्णइ।

§ ४२५ गयत्थमेव सुत्तं। एव च विदियभासगाहाविहासावसरे चेव तदियभासगाहाए वि अत्थविहासण काढूण सपहि तिस्से विहासाए विणा समुक्कित्तणामेत्त चेव कायव्वमिदि पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

* तदियाए वि भासगाहाए अत्थो एत्थेव परूविदो। णवरि समुक्कित्तणा कायव्वा।

§ ४२६ तदियभासगाहमणुच्चारिय तदत्थो चेव विदियभासगाहत्थपरूवणासबधेण विहासिदो। तदो तिस्से समुक्कित्तणा चेव एण्हि कायव्वा त्ति वुत्त होइ।

* त जहा।

§ ४२७ सुगम।

(१४४) तदिया सत्तसु किट्टीसु चउत्थी दससु होइ किट्टीसु।
तेण परं सेसाओ भवति सव्वासु किट्टीसु ॥१९७॥

§ ४२८ एव समुक्कित्तिदाए तदियभासगाहाए अत्थो पुव्वमेव विहासिदो त्ति ण पुणो परूविज्जदे, 'जाणिज्जाणावणे फलाभावादो'। णवरि 'तेण पर सेसाओ' एवं भणिदे तत्तो

तीसरी सग्रह कृष्टियोमे अपकषणके कारण सक्रमित होता है यह उक्त कथनका तात्पय है। इस प्रकार सक्रम होता है ऐसा करके पाँचवी आवलिका वह प्रदेशपुंज सभी सग्रह कृष्टियोमे हो जाता है इस बातको कहते हैं—

* इस प्रकार पाँचवीं आवलि सभी सग्रह कृष्टियोमे कही जाती है।

§ ४२५ यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषाके अवसरपर ही तीसरी भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा करके अब उसकी विभाषाके बिना केवल समुत्कीर्तना ही करनी चाहिये इस प्रकार कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* तीसरी भाष्यगाथाका अर्थ भी यहींपर प्ररूपित कर दिया है। इतनी विशेषता है कि उसकी समुत्कीतना करनी चाहिये।

§ ४२६ तीसरी भाष्यगाथाकी उच्चारणा करके उसके अर्थको दूसरी भाष्यगाथाके अर्थकी प्ररूपणाके सम्बन्धमे विभाषा की, इसलिये उसकी समुत्कीतना ही इस समय करनी चाहिये यह यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* वह जैसे।

§ ४२७ यह सूत्र सुगम है।

(१४४) तीसरी आवलि सात सग्रह कृष्टियोंमे, चौथी आवलि दस सग्रह कृष्टियोंमे और उससे आगे शेष आवलियाँ सब सग्रह कृष्टियोंमे पायी जाती हैं ॥१९७॥

§ ४२८ इस प्रकार तीसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना की। अर्थकी विभाषा पहले ही कर आये हैं, इसलिये उसकी पुन प्ररूपणा नहीं करते, क्योंकि जिसका ज्ञान करा दिया है उसका

चउत्थावलियावो परमुवरि सेसाओ पंचम छट्ठ सत्तमावि आवलियाओ णियमा सव्वासु किट्टीसु होंति, पढमावलियपढमसमए चेव सेसकिट्टीसु समयाविरोहेण संकंतस्स कोहसंजलणपुव्वणिबद्ध पदेसग्गस्स बारससु वि संगहकिट्टीसु तदवत्थाए समवट्ठाणदंसणादो त्ति भणिदं होदि। एवं कोह संजलणणवकबंधमहिकिच्च एसा सव्वा मग्गणा दोहिं भासगाहाहिं समाणिदा। माणादिसंजलणेसु वि जहाकममेसो अत्थो अणुगंतव्वो। एवमेदीए मग्गणाए कदाए तदो तदियभासगाहाए विहासा समत्ता भवदि।

* एत्तो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ ४२९ सुगमं।

(१४५) एदे समयपबद्धा अच्छुत्ता णियमसा इह भवम्मि।
सेसा भवबद्धा खलु सछुद्धा होंति बोद्धव्वा ॥१९८॥

§ ४३० एसा चउत्थभासगाहा पढमभासगाहाणिद्दिट्ठस्सेवत्थस्स पुणो वि विसेसियूण परूवणट्ठमोइण्णा। संपहि एदिस्से गाहाए किंचि अवयवत्थपरामरसं कस्सामो। तं जहा—'एदे समयपबद्धा' एदे अणंतरपरूविदा छण्हमावलियाणं समयपबद्धा 'अच्छुत्ता' उदयट्ठिदीए असंछुद्धा भवंति। 'इह भवम्हि' एदम्मि वट्टमाणभवग्गहणे 'सेसभवबद्धा खलु' एवं वट्टमाणभवग्गहणं मोत्तूण सेसासेसकम्मट्ठिदिअब्भंतरभवट्ठिदिगहणपबद्धा सव्वे चेव समयपबद्धा उदए संछुद्धा होंति त्ति जाणिदव्वा, तेसिमसंछुद्धभावेणावट्ठाणस्स कारणाणुवलंभादो। तदो समयपबद्धविवक्खाए

पुनः ज्ञान करानेका कोई फल नहीं है। इतनी विशेषता है कि 'तेण परं सेसाओ' ऐसा कहनेपर चौथी आवलिके आगे शेष पाँचवी, छठी और सातवी आवलियाँ नियमसे सब कृष्टियोमे पायी जाती हैं, क्योंकि पाँचवी आवलिके प्रथम समयमें ही शेष कृष्टियोमे समयके अविरोधपूर्वक संक्रान्त हुए क्रोधसंज्वलनके पूर्व विवक्षित प्रदेश पुंजका बारह ही संग्रह कृष्टियोमे उस अवस्थामे अवस्थान देखा जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार क्रोधसंज्वलनके नवकबन्धको अधिकृत करके यह सब मार्गणा दो भाष्यगाथाओ द्वारा की गयी है। मानादि संज्वलनोके विषयमें भी क्रमसे यह अर्थ जान लेना चाहिये। इस प्रकार इस मार्गणाके किये जानेपर तीसरी भाष्यगाथाकी विभाषा समाप्त होती है।

* इससे आगे चौथी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ४२९ यह सूत्र सुगम है।

(१४५) ये अनन्तर कहे गये समयप्रबद्ध इस भवमे इस क्षपकके नियमसे असंक्षुब्ध रहते हैं। किन्तु शेष भवबद्ध समयप्रबद्ध इस क्षपकके नियमसे संक्षुब्ध जानने चाहिये ॥१९८॥

§ ४३० यह चौथी भाष्यगाथा प्रथम भाष्यगाथामे निर्दिष्ट किये गये अर्थका ही पुनरपि विशेषरूपसे कथन करनेके लिये अवतीर्ण हुई है। अब इस गाथाके किंचित् अवयवार्थका परामर्श करेंगे। वह जैसे—'एदे समयपबद्धा' ये अनन्तर कहे गये छह आवलियोके समयप्रबद्ध 'अच्छुत्ता' उदय स्थितिमे असंक्षुब्ध रहते हैं। 'इह भवम्हि' इस वर्तमान भवग्रहणमें 'सेसभवबद्धा खलु' इस भवग्रहणको छोडकर शेष समस्त कर्मस्थितिके भीतर भवग्रहणस्थितिमे बँधे हुए सभी समयप्रबद्ध उदयमे संक्षुब्ध होते हैं ऐसा जानना चाहिये, क्योंकि उनके असंक्षुब्धरूपसे अवस्थानका कोई कारण नहीं उपलब्ध होता। इसलिये समयप्रबद्धकी विवक्षामें ये संक्षुब्ध और असंक्षुब्ध रूपसे इस

सछुद्धासछुद्धभावो लब्भदे। भवबद्धा पुण णियमा सव्वे चेव सछुद्धा बोद्धव्वा, ण तत्थ पयारंतरा संभवो त्ति एसो एदस्स भावत्थो। एवंविहो च एदिस्से गाहाए अत्थो पढमभासगाहाविहासावसरे चेव विहासिदो, तदो ण पुणो एण्हिं विहासियव्वो त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* एदिस्से गाहाए अत्थो पढमभासगाहाए चेव परूविदो।

§ ४३१ कुदो? तत्थ समयपबद्धाणं सछुद्धासछुद्धभावगवेसणावसरे चेव भवबद्धपरूवणाए वि सवित्थरमणुमग्गिदत्तादो। एवं सत्तमीए मूलगाहाए अत्थविहासा समत्ता।

* एत्तो अट्ठमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा।

§ ४३२ सत्तमूलगाहाविहासणाणंतरमेत्तो अट्ठमीए मूलगाहाए जहावसरपत्ता समुक्कित्तणा कायव्वा त्ति वुत्तं होइ।

(१४६) एगसमयपबद्धाणं सेसाणि च कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु।
भवसेसगाणि कदिसु च कदि कदि वा एगसमएण ॥१९९॥

§ ४३३ एसा अट्ठमी मूलगाहा अंतरकरणादो उवरिमवत्थाए वट्टमाणस्स खवगस्स समयपबद्धसेसाणि च भवबद्धसेसाणि च केत्तियमेत्ताणि कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु संभवंति त्ति एवंविहस्स अत्थविसेसस्स णिण्णयविहाणट्ठमोइण्णा। संपहि एदिस्से अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा— 'एगसमयपबद्धाणं' एवं भणिदे एगसमयम्मि जेत्तिया कम्मपरमाणू बद्धा, तेसिमेगसमयपबद्धो

क्षपकके पाये जाते हैं। परन्तु भवबद्ध सभी समयप्रबद्ध इस क्षपकके नियमसे सक्षुब्ध जानने चाहिये। उनमें अन्य प्रकार सम्भव नहीं है यह इसका भावार्थ है। और इस प्रकारके इस गाथाके इस अर्थकी प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषाके समय ही विभाषा कर आये हैं इसलिये पुनः विभाषा नहीं करनी चाहिये। इस प्रकार प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इस गाथासूत्रका अर्थ प्रथम भाष्यगाथामें ही प्ररूपित कर आये हैं।

§ ४३१ क्योंकि उस गाथासूत्रमें समयप्रबद्धोंके सक्षुब्ध और असक्षुब्धभावकी गवेषणाके समय ही भवबद्ध समयप्रबद्धोंकी प्ररूपणाका भी विस्तारके साथ अनुमार्गण कर आये हैं। इस प्रकार सातवीं मूलगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त हुई।

* इससे आगे आठवीं मूलगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ४३२ सातवीं मूलगाथाकी विभाषा करनेके बाद आगे आठवीं मूलगाथाकी यथावसर प्राप्त समुत्कीर्तना करनी चाहिये यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

(१४६) कितने एक और नाना समयप्रबद्ध शेष तथा नाना भवबद्ध शेष कितने स्थिति विशेषों और अनुभाग विशेषोंमें पाये जाते हैं। इसी प्रकार एक और नाना कितने समय प्रबद्ध शेष और भवबद्ध शेष एक स्थिति विशेषमें पाये जाते हैं। तथा एक समयसम्बन्धी एक स्थितिविशेषमें नाना और एक कितने समयप्रबद्ध शेष और भवबद्ध शेष पाये जाते हैं ॥१९९॥

§ ४३३ यह आठवीं मूलगाथा अन्तरकरणसे उपरिम अवस्थामें विद्यमान क्षपकके कितने समयप्रबद्ध शेष और भवबद्ध शेष कितने स्थितिविशेषोंमें सम्भव हैं इस प्रकारके अर्थविशेषका निर्णय करनेके लिये अवतीर्ण हुई है। अब इसके अर्थकी प्ररूपणा करेंगे। वह जैसे—'एगसमयपबद्धाणं' ऐसा कहनेपर एक समयमें जितने कर्म परमाणु बँधते हैं उनकी एक समयप्रबद्ध संज्ञा है।

त्ति सण्णा। सो पुण समुदायप्पणाए एगो वि सतो सगावयवकम्मपदेसभेदप्पणाए बहुत्तमावण्णो त्ति बहुवयणणिद्देसो कओ।

§ ४३४ अथवा णाणासमयपबद्धाणेगसमयपबद्धावत्तीओ पडुच्च तस्स बहुत्तसंभवादो एसो बहुवयणणिद्देसो कओ दट्ठव्वो। तेसिं 'सेसाणि' त्ति वुत्ते कम्मट्ठिदिकालब्भंतरे वेदिदसेसाणं कम्मपदेसाणं से काले सुद्धं णिल्लेविज्जमाणसरूवाणं गहणं कायव्वं। तदो एगसमयपबद्धस्स वा णाणासमयपबद्धाणं वा सेसगाणि 'कदि' केत्तियमेत्ताणि 'कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु' केत्तियमेत्तेसु ट्ठिदिभेदेसु संभवंति त्ति गाहापुव्वद्धे सुत्तत्थसंबंधो। एत्थ 'कदि' सद्दो गाहापच्छद्धट्ठिदो अहिसंबंधेयव्वो। एत्थतण 'च' सद्दणावुत्तसमुच्चयट्ठेण अणुभागविसया पुच्छा सूचिदा दट्ठव्वा। तदो कम्मट्ठिदिअब्भंतरे बद्धणाणेगसमयपबद्धाण वेदिदसेसकम्मपरमाणवो से काले णिरवसेसं णिल्लेविज्जमाणसरूवा कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु अणुभागविसेसेसु च केत्तियमेत्ता जहण्णुक्कस्सेण संभवंति त्ति एसो गाहापुव्वद्धे सुत्तत्थसमुच्चओ।

§ ४३५ 'भवसेसयाणि कदिसु च' एवं भणिदे एक्कम्मि भवग्गहणे जेत्तियो कम्मपदेसपिंडो संचिदो तस्स भवबद्धसण्णा। सो च पुव्वं व णाणेगभवबद्धसंगहणट्ठं बहुवयणेण णिद्दिट्ठो। तेण णाणेगभवबद्धाणं वेदिदसेसा कम्मपदेसा से काले णिरवसेसं णिल्लेविज्जमाणसरूवा कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु 'च' सद्दसूचिदाणुभागविसेसेसु केत्तियमेत्ता होंति त्ति गाहापच्छद्धे सुत्तत्थसंगहो।

परन्तु वह समुदायकी विवक्षामें एक होता हुआ भी अपने अवयवरूप कर्मप्रदेशोंकी भेदविवक्षामें बहुत्वको प्राप्त हो जाता है इसलिए उक्त पदमें बहुवचनका निर्देश किया है।

§ ४३४ अथवा नाना समयप्रबद्धोंके एक एक समयप्रबद्धकी आवृत्तिकी अपेक्षा उसका बहुतपना सम्भव होनेसे सूत्रमें बहुवचनरूप निर्देश किया है ऐसा जानना चाहिये। उनके 'सेसाणि' ऐसा कहनेपर कर्मस्थितिप्रमाण कालके भीतर वेदे जानेके बाद जो शेष बचे हैं और जो तदनन्तर समयमें केवल निर्लेपित भावको प्राप्त होनेवाले हैं उनका ग्रहण करना चाहिये। इसलिए एक समयप्रबद्धके अथवा नाना समयप्रबद्धोंके 'कदि' अर्थात् कितने शेष रहते हैं वे 'कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु' अर्थात् कितने स्थितिसम्बन्धी भेदोंमें सम्भव हैं यह इस सूत्रगाथाके पूर्वार्धमें अर्थके साथ सम्बन्ध है। यहाँ गाथाके उत्तरार्धमें स्थित 'कति' शब्दका सम्बन्ध कर लेना चाहिये। तथा इस गाथामें जो 'च' शब्द आया है वह अनुक्त अर्थका समुच्चय करनेवाला होनेसे उस द्वारा अनुभाग विषयक पृच्छा सूचित की गयी जाननी चाहिये। इसलिये कर्मस्थिति कालके भीतर जो नाना समयप्रबद्ध और एक समयप्रबद्ध बन्धको प्राप्त हुए हैं तत्सम्बन्धी वेदे जानेसे शेष बचे कर्म परमाणु तदनन्तर समयमें निरवशेषरूपसे निर्लेपन भावको प्राप्त होते हुए कितने स्थितिविशेषोंमें और कितने अनुभागविशेषोंमें कितने कर्म परमाणु जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे सम्भव हैं यह गाथाके पूर्वार्धमें सूत्रका समुच्चय रूप अर्थ है।

§ ४३५ 'भवसेसयाणि च कदिसु' ऐसा कहनेपर एक भवग्रहणमें जितने कर्मप्रदेशपिण्डका संचय किया है उसकी भवबद्ध संज्ञा है। और उसका भी पहलेके समान नाना भवबद्ध और एक भवबद्ध कर्म पुंजका संग्रह करनेके लिये बहुवचनरूपसे निर्देश किया है। इसलिये नाना भवबद्ध और एक भवबद्ध कर्मपुंजके वेदे जानेके बाद जो कर्मप्रदेश शेष बचे वे तदनन्तर समयमें पूरी तरहसे निर्लेपनभावको प्राप्त होते हुए कितने स्थितिविशेषोंमें और 'च' पदसे कितने अनुभाग विशेषोंमें होते हैं यह इस गाथाके उत्तरार्धका समुच्चयरूप अर्थ है।

§ ४३६ 'कवि कवि वा एगसमएण' एसो गाहासुत्तस्स चरिमावयवो। तत्थ एगो कविसद्दो समयपबद्धसेसाण भवबद्धसेसाण च विसेसणभावेण पुव्वमेव संबंधिदो। संपहि 'कदि वा एगसमयेणे त्ति' एदस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा—एगणिसेगट्ठिदिमाधारं कादूण तत्थ णाणेगसमयपबद्धाणं भव बद्धाण च सेसयाणि केत्तियमेत्ताणि लब्भंति त्ति एदस्स अत्थविसेसस्स णिण्णयविहाणट्ठमेदं भणिद, एगसमयेण विसेसिवा एगगोवुच्छम्मि वट्टमाणा समयपबद्धाण च वेदिवसेसकम्मपरमाणू कदि वा लब्भंति त्ति सुत्तत्थाहिसबधवसेण तत्थ तहाविहत्थस्स परिप्फुडमुवलभादो। एत्थतण 'वा' सद्दो अणुत्तसमुच्चयट्ठो तिण्ह पुच्छाण पयदोवजोगिसयलविसेसपरूवणाए सूचयभावेण तस्सावट्ठाणब्भुवगमादो। एवमेदीए मूलगाहाए तिण्णि पुच्छाओ णिद्दिट्ठाओ भवति। त जहा—

§ ४३७ णाणेगसमयपबद्धाण सेसयाणि कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु केत्तियमेत्ताणि होति त्ति एसो पढमो पुच्छाणिद्देसो। णाणेगभवबद्धाण सेसयाणि कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु केत्तियमेत्ताणि होंति त्ति एसो विदियो पुच्छाणिद्देसो। 'कदि वा एगसमयेणेत्ति' एदम्मि चरिमावयवे एक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे वट्टमाणाणि केत्तियाणि णाणेगभवबद्धसमयपबद्धाण सेसयाणि होति त्ति तदिओ पुच्छाणिद्दसो त्ति। एत्थेव 'एगसमएणेत्ति' एदेण चरिमावयवेण समयपबद्धसेसभवबद्धसेसाण लक्खणणिद्देसो वि सूचिदो त्ति घेत्तव्वो। एगसमयेण जम्हि वेदिवसेसगे पदेसपिंडे णिरवसेस मोकड्डियूण उदये सछुद्धे पुणो णिरुद्धसमयपबद्धस्स भवबद्धस्स वा ण किंचि पदेसग्गमुव्वरदि तारिस पदेसग्गं से काले णिल्लेवणपाओग्ग होदूणेण्हिमुवलब्भमाणसमयपबद्धसेसयं भवबद्धसेसयं

§ ४३६ 'कदि कदि वा एगसमएण' यह इस गाथासूत्रका अन्तिम चरण है। उसमें जो एक 'कति' शब्द आया है उसका समयप्रबद्धशेष और भवबद्धशेषके विशेषणरूपसे पहले ही सम्बन्ध सूचित कर आये है। अब कदि वा एगसमएण' इस पदका अर्थ कहते हैं। वह जैसे—एक निषेकसम्बन्धी स्थितिको आधार करके उसमे कितने नाना समयप्रबद्धशेष और एक समय प्रबद्धशेष प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार कितने नाना भवबद्धशेष और एक भवबद्धशेष प्राप्त होते हैं इस अर्थविशेषका निर्णय करनेके लिये यह वचन कहा गया है, क्योकि एक समयवाले एक गोपुच्छमे विद्यमान तथा समयप्रबद्धोके वेदे जानेसे शेष बचे कम परमाणु कितने प्राप्त होते हैं इस प्रकार सूत्रार्थके सम्बन्धवश वहाँ उस प्रकारका अर्थ स्पष्ट रूपसे उपलब्ध होता है। इस चरण में आया हुआ 'वा' शब्द अनुक्त अर्थका समुच्चय करता हुआ तीन पृच्छाओं सम्बन्धी प्रकृतमे उपयोगी समस्त विशेषोकी प्ररूपणाके सूचकरूपसे उसका अवस्थान स्वीकार किया गया है। इस प्रकार इस मूल गाथामे तीन पृच्छाएँ निर्दिष्ट की गई हैं। वह जैसे—

§ ४३७ नाना और एक समयप्रबद्धोंके शेष कितने स्थितिविशेषोमे कितने होते हैं यह प्रथम पृच्छानिर्देश है। नाना भवो और एक भवमे बद्ध कर्मोंके शेष कितने स्थितिविशेषोमे कितने होते हैं यह दूसरा पृच्छानिर्देश है। 'कदि वा एगसमएण' इस अंतिम चरणमे एक स्थितिविशेषमे विद्यमान नाना और एक भवबद्ध और समयप्रबद्धोंके शेष कितने होते हैं यह तीसरा पृच्छानिर्देश है। तथा इसी गाथा सूत्रमे आये हुए 'एगसमएण' इस अन्तिम चरण द्वारा समयप्रबद्धशेष और भवबद्धशेषके लक्षणका निर्देश सूचित किया गया है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। एक समय द्वारा जिसका वेदन करनेके बाद शेष बचे हुए प्रदेशपिण्डको पूरा अपकर्षित करके उदयमें निक्षिप्त करनेपर पुन विवक्षित समयप्रबद्धका या भवबद्धका किंचित् मात्र प्रदेशपुंज अवशिष्ट नही रहता उस प्रकारका प्रदेशपुंज तदनन्तर समयमें निर्लेपनके योग्य होकर इस समय उपलभ्यमान समयप्रबद्धशेष और

च वट्टव्वमिदि वक्कज्झाहारं काढूण सुत्तत्थे वक्खाणिज्जमाणे तहाविहस्स लक्खणणिद्देसस्स वि एत्थेव पडिबद्धत्तदंसणादो। एवमेदीए मूलगाहाए पुच्छामेत्तेण सूचिदाणमेदेसिं तिण्हमत्थविसेसाणं विहासणं कुणमाणो तत्थ पडिबद्धभासगाहाणमियत्तावहारणट्ठमिदमाह—

* एत्थ चत्तारि भासगाहाओ।

§ ४३८ एदम्मि मूलगाहासुत्ते विहासिज्जमाणे तत्थ इमाओ चत्तारि भासगाहाओ होंति त्ति वुत्तं होइ।

* तासिं समुक्कित्तणा।

§ ४३९ सुगमं।

(१४७) एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे भवसेसगसमयपबद्धसेसाणि।
णियमा अणुभागेसु य भवंति सेसा अणंतेसु ॥२००॥

§ ४४० एसा पढमभासगाहा 'कदि वा एगसमयेणेत्ति' एवं मूलगाहाचरिमावयवमस्सियूण एगं ठिदिविसेसमाधारं काढूण तत्थ भवबद्धसेसगाणि समयपबद्धसेसयाणि च एत्तियमेत्ताणि होंति त्ति जाणावणट्ठं, पुणो तेसिं चेवाणुभागविसेसावहारणट्ठं च समोइण्णा। भव समयपबद्धसेसाणं लक्खणविसेसणिद्दसो वि देसामासयभावेण एसा गाहा सूचेदि, सव्वेसिं गाहासुत्ताणं देसामासयभावेणावट्ठाणब्भुवगमादो। संपहि एदिस्से अवयवत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा—

भवबद्धशेष कहलाता है ऐसा जानना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार इस वाक्यका अध्याहार करके सूत्रके अर्थका व्याख्यान करनेपर उस प्रकारके लक्षणका निर्देश भी इसीमें प्रतिबद्ध देखा जाता है। इस प्रकार इस मूल सूत्र गाथामें की गयी पृच्छामात्र यके द्वारा सूचित किये गये इन तीन अर्थ विशेषोंका व्याख्यान करते हुए उन अर्थोंमें प्रतिबद्ध भाष्यगाथाओंकी संख्याका अवधारण करनेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* इस मूलगाथाके अर्थमें प्रवृत्त चार भाष्यगाथाएँ हैं।

§ ४३८ इस मूल गाथासूत्रके अर्थकी विभाषा करनेमें प्रवृत्त प्रकृतमें ये चार भाष्यगाथाएँ हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* अब उनकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ४३९ यह सूत्र सुगम है।

(१४७) एक स्थितिविशेषमें भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष नियमसे होते हैं तथा अनन्त अनुभागोंमें भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष नियमसे होते हैं ॥२००॥

§ ४४० यह प्रथम भाष्यगाथा 'कदि वा एगसमएण' इस प्रकार मूलगाथाके अन्तिम चरणका आश्रय करनेके साथ एक स्थितिविशेषको आधार बनाकर उसमें भवबद्धशेष और समय-प्रबद्धशेष इतने होते हैं इसका ज्ञान करानेके लिए तथा उन्हींके अनुभाग विशेषका अवधारण करनेके लिए आयी है। तथा भवबद्धशेषों और समयप्रबद्धशेषोंके लक्षणविशेषका निर्देश भी देशामर्षक रूपसे यह गाथा सूचित करती है, क्योंकि सभी गाथासूत्रोंका देशामर्षकभावसे अवस्थान स्वीकार किया गया है। अब इस भाष्यगाथाके अवयवोंकी अर्थप्ररूपणा करेंगे। वह जैसे—

§ ४४१ 'एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे' समयाहियउदयावलियादो उवरि अण्णदरम्हि ट्ठिदिविसेसे उदयविदियट्ठिदीए वा 'भवसेसगसमयपबद्धसेसाणि' केत्तियमेत्ताणि होंति त्ति पुच्छिदे भवसेसयसमयपबद्धसेसाणि बहूणि होंति त्ति तेसिं पमाणणिद्देसो कओ। 'भवसेसय-समयपबद्धसेसाणि' त्ति एदेण बहुवयणणिद्देसेण तेसिं बहुसंखाविसेसिदपमाणणिद्देसोवलद्धीदो। जइ वि एदेण सामण्णणिद्देसेण तेसिं बहुत्तमेत्तं चेव जाणाविद तो वि 'वक्खाणादो विसेसपडिवत्ती होइ' णायादो एक्कम्मि ठिदिविसेसे उक्कस्सेण असंखेज्जाणि भवबद्धसेसाणि समयपबद्धसेसाणि च होंति त्ति घेत्तव्वं। तदो एक्कम्हि ठिदिविसेसे एक्कस्स वा समयपबद्धस्स सेसयं जहण्णेण एगपरमाणुमादिं कादूण जावुक्कस्सेणाणंतपरमाणुपमाणं होदूण लब्भइ। एवं दो तिण्णि आदि-कमेण गंतूण जावुक्कस्सेण पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागमेत्ताणं वा समयपबद्धाणं सेसयाणि जहण्णुक्कस्सेणेयाणंतपरमाणुपमाणाणि होदूण लब्भंति। एवं भवबद्धसेसयाणं पि णेदव्वमिदि गाहापुव्वद्ध सुत्तत्थसमुच्चओ। 'णियमा अणुभागेसु च' एवं भणिदे ताणि भवबद्धसेसयाणि समयपबद्धसेसाणि च तम्हि ट्ठिदिविसेसे वट्टमाणाणि णिच्छयेणेव अणतेसु अणुभागेसु होंति। किं कारणं? एयम्मि वि परमाणुम्मि जहण्णसत्तिपरिणदम्मि अणंताणंताणमविभागपडिच्छेदाण मणुभागसण्णिदाणमुवलंभादो। संपहि एवंविहमेदिस्से गाहाए अत्थं विहासेमाणो विहासागंथ मुत्तरं भणइ—

* विहासा।

§ ४४२ गाहासुत्तणिद्दिट्ठत्थविवरणं विहासा णाम। सा एण्हिमवहारिज्जदि त्ति वुत्तं होइ।

---

§ ४४१ 'एक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे' एक स्थितिविशेषमे अर्थात् एक समय अधिक उदयावलिसे ऊपर अन्यतर स्थितिविशेषमे या उदयके बाद दूसरी स्थितिमें भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष कितने होते हैं ऐसी पृच्छा करनेपर भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष बहुत होते हैं इस प्रकार उनके प्रमाणका निर्देश किया है, क्योंकि 'भवसेसय समयपबद्धसेसाणि' इस प्रकार इस चरणमे किये गये बहुवचन निर्देशसे उनके बहुत संख्यायुक्त प्रमाणका निर्देश बन जाता है। यहाँ यद्यपि इस प्रकार किये गये सामान्य निर्देश द्वारा उनके बहुत्वसामान्यका ही ज्ञान होता है तो भी 'व्याख्यानसे विशेषकी प्रतिपत्ति होती है' इस न्यायके अनुसार एक स्थितिविशेषमे भवबद्धशेष और समयप्रबद्ध-शेष असंख्यात होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। इस कारण एक स्थितिविशेषमें एक समय-प्रबद्धसम्बन्धी शेष जघन्यसे एक परमाणुसे लेकर उत्कृष्टसे अनन्त परमाणुप्रमाण तक होकर उपलब्ध होते है। इस प्रकार दो, तीन आदिके क्रमसे जाकर उत्कृष्टसे पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोके शेष जघ यसे एक परमाणुसे लेकर उत्कृष्टसे अनन्त परमाणुप्रमाण होकर उपलब्ध होते हैं। इसी प्रकार भवबद्धशेषोका भी कथन करना चाहिए। इस प्रकार यह गाथाके पूर्वार्धसम्बन्धी सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। 'णियमा अणुभागेसु च' ऐसा कहनेपर वे भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष उसी स्थितिविशेषमे निश्चयसे अनन्त अनुभागोमे पाये जाते हैं, क्योंकि जघन्य शक्तिरूपसे परिणत एक भी परमाणुमे अनुभागसज्ञक अनन्तानन्त अविभागप्रतिच्छेद पाये जाते हैं। अब इस प्रकार इस गथाके अर्थको विभाषा करते हुए आगे विभाषा ग्रन्थका कथन करते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाको विभाषा करते हैं।

§ ४४२ गाथासूत्रमें निर्दिष्ट किये गये अर्थका ब्योरेवार कथन करना विभाषा कहलाती

तत्थ ताव भवबद्धसेसस्स समयपबद्धसेसस्स च सरूवविसेसजाणावणट्ठं तल्लक्खणणिद्देसमेव सुत्तसूचिदं पुव्वं कुणमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

* समयपबद्धसेसयं णाम किं ।

§ ४४३ एवं पुच्छंतस्सायमहिप्पाओ—समयपबद्धसेससरूवे जाणिदे पच्छा तब्विसय पमाणादिपरूवणा घडदे, णाण्णहा । तदो तस्सेव ताव सरूवणिद्देसो पुव्वमेत्थ कायव्वो । तम्हि कीरमाणे केरिसं तं समयपबद्धसेसयं णाम, ण तस्स सरूवमम्हे जाणामो त्ति । एवं भवबद्धसेसस्स वि पुच्छाणुगमो कायव्वो, सुत्तस्सेदस्स देसामासयभावेण पवुत्तिअब्भुवगमादो । संपहि एदिस्से पुच्छाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तावयारो—

* जं समयपबद्धस्स वेदिदसेसग्गं पदेसग्गं दिस्सइ, तम्मि अपरिसेसिदम्मि एगसमयेण उदयमागदम्मि तस्स समयपबद्धस्स अण्णो कम्मपदेसो वा णत्थि तं समयपबद्धसेसगं णाम ।

§ ४४४ एदस्स सुत्तस्स अत्थविवरणं कस्सामो । तं जहा—जं समयपबद्धस्स कम्मट्ठिदि अब्भंतरे जहाकमं वेदिज्जमाणयस्स वेदिदसेसग्गं पदेसग्गं से काले णिल्लेवणाहिमुहं होदूण दीसइ तं समयपबद्धसेसयं णाम । संपहि एदस्सेव विसेसियूण परूवणट्ठमिदमाह—'तम्हि अपरिसेसिदम्हि उदयमागदम्हि' वेदिदसेसग्गे पदेसग्गे णिरवसेसमोकड्डियूण उदयम्मि सछुद्धे पुणो तस्स

है। उसका इस समय कथन करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। उसमें सर्वप्रथम भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेषके स्वरूपविशेषका ज्ञान करानेके लिए पहले गाथासूत्र द्वारा सूचित हुए उनके लक्षणका निर्देश करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* समयप्रबद्धशेष किसे कहते हैं ?

§ ४४३ ऐसा पूछनेवालेका यह अभिप्राय है कि समयप्रबद्धशेषके प्रमाणका ज्ञान हो जानेपर बादमें उसका प्रमाण कितना है इत्यादि प्ररूपणा घटित होती है, अन्यथा नहीं, इसलिए सर्वप्रथम उसीके स्वरूपका निर्देश करना चाहिए। उसके स्वरूपका निर्देश करनेपर उस समयप्रबद्धशेषका स्वरूप किस प्रकारका है, क्योंकि उसके स्वरूपको हम नहीं जानते। इसी प्रकार भवबद्धशेषके विषयमें भी पृच्छाका निर्देश करना चाहिए, क्योंकि इस सूत्रकी देशामर्षकरूपसे प्रवृत्ति स्वीकार की गयी है। अब इस पृच्छाका निर्णयका विधान करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

* समयप्रबद्धका वेदन करनेके बाद जो प्रदेशपुंज दिखलाई देता है पूरे उसके एक समय द्वारा उदयमें आनेपर उस समयप्रबद्धका फिर कोई अन्य कर्मप्रदेश (उदयमें आनेके लिए) शेष नहीं रहता है उसे समयप्रबद्धशेष कहते हैं।

§ ४४४ अब इस सूत्रके अर्थका स्पष्टीकरण करते हैं। वह जैसे—कर्मस्थितिके भीतर क्रमसे वेदन किये जानेवाले समयप्रबद्धका वेदन करनेके बाद जो प्रदेशपुंजशेष रहकर तदनन्तर समयमें निर्लेपनके अभिमुख होकर दिखाई देता है वह समयप्रबद्धशेष कहलाता है। अब इसीका विशेष रूपसे कथन करनेके लिए सूत्रमें यह वचन कहा है—'तम्हि अपरिसेसदम्हि उदयमागदम्हि' अर्थात् वेदन करनेके बाद जो प्रदेशपुंज शेष रहता है पूरे उसका अपकर्षण करके

णिरुद्धसमयपबद्धस्स एक्को वा कम्मपदेसो अणेगा वा कम्मपदेसा पढमट्ठिदीए वा विदियट्ठिदीए वा णियमा ण संभवंति, किंतु तेणेव पदेसग्गेण उदिण्णेण तस्स समयपबद्धस्स णिरवसेसं णिल्लेवणा भविस्सदि तं तारिसं पदेसग्गं से काले उदयाहिमुहं होदूण एण्हिमुवलब्भमाणसरूवं समयपबद्धसेसयमिदि वुत्तं होइ। उदयाहिमुहावत्थं मोत्तूण उदयसमये चेव वट्टमाणं तं पदेसग्गं समयपबद्धसेसयमिदि किण्ण घेप्पदे ? ण, तहा घेप्पमाणे एक्कम्हि चेव ट्ठिदिविसेसे समयपबद्धसेसस्सावट्ठाणप्पसंगादो। ण चेदमिच्छिज्जदे, अणगेसु ठिदिविसेसेसु सांतरणिरंतरसरूवेण समयपबद्धसेसयमवचिट्ठदि त्ति उवरिमपरूवणाए विरोहप्पसंगादो। संपहि एदस्स सुत्तस्स भावत्थो वुच्चदे। तं जहा—कम्मट्ठिदि-अब्भंतरे बद्धो एगसमयपबद्धो समयाहियबंधावलियप्पहुडि उदीरिज्जमाणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं णिरंतरमुदीरिज्जदि सो तस्स वेदगकालो णाम। तदो एगसमयमादिं कादूण जावुक्कस्सेण पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागमेत्तमवेदगकालमुल्लंघियूण पुणो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं णिरंतरमुक्कस्सेण वेदिज्जदे। एवमेदेण कमेण वेदिज्जमाणस्स तस्स समयपबद्धस्स कम्मट्ठिदिअब्भंतरे सगुक्कस्सणिल्लेवणकालमेत्ते सेसे तत्तो पहुडि णिल्लेवण पाओग्गभावेण वट्टमाणस्स वेदिदसेसग्गं पदेसग्गं केत्तियं पि पढमट्ठिदीए समयाहियउदयावलियं वज्जाए णिरंतरं होदूणच्छणं लहदि, विदियट्ठिदीए च सव्वासु ट्ठिदीसु होदूणावट्ठाणं लहदि। अथवा तासु दोसु वि ट्ठिदीसु णिरंतरमहोदूण अण्णदरम्मि एगट्ठिदिविसेसम्मि चेव एग दो तिण्णि

उदयमें निक्षिप्त करनेपर तत्पश्चात् उस विवक्षित समयप्रबद्धका एक भी कर्मप्रदेश अथवा अन्य बहुतसे कर्मप्रदेश प्रथम स्थितिमें और द्वितीय स्थितिमें नियमसे नहीं पाये जाते, किन्तु उसी प्रदेशपुंजके उदय होनेके बाद उस समयप्रबद्धका पूरा निर्लेपन हो जायेगा वह उस प्रकारका प्रदेश पुंज तदनन्तर समयमें उदयके अभिमुख होकर इस समय उपलभ्यमान होता हुआ समयप्रबद्धशेष कहलाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—उदयकी अभिमुख अवस्थाको छोड़कर उदय समयमें विद्यमान वह प्रदेशपुंज समयप्रबद्धशेष कहलाता है ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऐसा ग्रहण करनेपर एक ही स्थिति विशेषमें समयप्रबद्ध शेषके अवस्थानका प्रसंग प्राप्त होता है। परन्तु यह इष्ट नहीं है, क्योंकि ऐसा स्वीकार करनेपर अनेक स्थिति विशेषोंमें सान्तर और निरन्तर रूपसे समयप्रबद्धशेष अवस्थित रहता है इस उपरिम प्ररूपणाके साथ विरोधका प्रसंग प्राप्त होता है।

अब इस सूत्रका भावार्थ कहते हैं। वह जैसे—कर्मस्थितिके भीतर बन्धको प्राप्त हुआ एक समयप्रबद्ध एक समय अधिक बन्धावलिसे लेकर उदीरणाको प्राप्त होता हुआ पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर उदीरित होता रहता है। वह उसका वेदककाल कहलाता है। इसके बाद एक समयसे लेकर उत्कृष्टरूपसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अवेदक कालको उल्लंघन कर फिर भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर उत्कृष्टरूपसे वेदन करता है। इस प्रकार इस क्रमसे वेदे जानेवाले उस समय प्रबद्धका कर्मस्थितिके भीतर अपना उत्कृष्ट निर्लेपन कालके शेष रहनेपर वहाँसे लेकर निर्लेपन प्रायोग्यरूपसे विद्यमान उस समयप्रबद्धका वेदे जानेसे शेष बचा प्रदेशपुंज कितना ही एक समय अधिक आवलिसे रहित प्रथम स्थितिमें निरन्तररूपसे अवस्थित रहता है और द्वितीय स्थिति-सम्बन्धी सब स्थितियोंमें अवस्थित रहता है। अथवा उन दोनों ही स्थितियोंमें निरन्तररूपसे

परमाणुआदिकमेण जावुक्कस्सेणाणंता परमाणू सेसय होदूणच्छणं लहदि। पुणो एव ट्ठिद कम्मपरमाणू एगपरमाणुणा वि अपरिसेसो होदूण ओकड्डिय से काले उदयट्ठिदीए सछुहणपाओग्ग भावेणेण्हिमुवलब्भमाणा तस्स समयपबद्धस्स सेसयमिदि भण्णते, तत्तो पर णिरुद्धसमयपबद्धस्स एक्केण वि परमाणुणा विणा णिल्लेवणदसणादो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो। एवमेदेण सुत्तेण समयपबद्धसेसस्स सरूवणिद्देस कादण सपहि भवबद्धसेसगस्स वि एव चेव सरूवपरूवणा कायव्वा त्ति जाणावेमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

* एव चेव भवबद्धसेसय।

§ ४४५ जहा समयपबद्धसेसय तहा चेव भवबद्धसेसय पि दट्ठव्व, से काले ओकड्डणवसेण उदयट्ठिदीए णिल्लेविज्जमाणत्त पडि विसेसाणुवलभादो त्ति वुत्त होदि। णवरि समयपबद्धसेसयं णाम एगसमयपबद्धकम्मपरमाणू घेत्तूण भवदि। भवबद्धसेसय पुण जहण्णदो वि अतोमुहुत्त मेत्ताण समयपबद्धाणमेगभवपडिबद्धाण कम्मपरमाणू जहासभवमुवलब्भमाणे घेत्तूण होदि त्ति वत्तव्वं।

* एदीए सण्णापरूवणाए पढमाए भासगाहाए विहासा।

§ ४४६ एदीए अणतरणिद्दिट्ठाए सण्णापरूवणाए णिण्णीदसरूवाण समयपबद्धसेसाण भव बद्धसेसाण च एगम्मि ट्ठिदिविसेसे वट्टमाणाणमियत्तावहारणट्ठ तदणुभागविसेसगवेसणट्ठ च पढम भासगाहाए विहासा एण्हिमवयारिज्जदि त्ति वुत्त होइ।

न रहकर अनन्तर एक स्थितिविशेषमे ही एक, दो या तीन परमाणु आदिके क्रमसे लकर उत्कृष्ट-रूपसे अनन्त परमाणु शेष होकर अवस्थित रहते हैं। पुन इस प्रकारसे अवस्थित परमाणुओको, एक भी परमाणु शेष न रहे इस रूपसे, अपकर्षित करके तदनन्तर समयमे उदयस्थितिमे निक्षेपके योग्यरूपसे इस समय उपलभ्यमान होनेका नाम उस समयप्रबद्धका शेष कहा जाता है, क्योकि उसके बाद विवक्षित समयप्रबद्धका एक भी परमाणुके बिना निर्लेपन देखा जाता है यह इस सूत्रका समुच्चय रूप अर्थ है। इस प्रकार इस सूत्र द्वारा समयप्रबद्धशेषके स्वरूपका निर्देश करके अब भवबद्धशेषका भी इसी प्रकार स्वरूप कथन करना चाहिए इस बातका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इसी प्रकार भवबद्धशेषके स्वरूपका कथन करना चाहिए।

§ ४४५ जिस प्रकार समयप्रबद्धशेषका स्वरूप कहा उसी प्रकार भवबद्धशेषका स्वरूप भी जानना चाहिए, क्योकि तदनन्तर समयमे अपकर्षणके वशसे उदयस्थितिमे निर्लेपित होनेवाले के प्रति उससे इसमे विशेषता उपलब्ध नही होती यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इतनी विशेषता है कि एक समयप्रबद्धके परमाणुओको ग्रहण करके समयप्रबद्धशेष होता है। परन्तु भवबद्धशेष एक भवसम्बन्धी जघन्यसे अन्तमुहूर्त प्रमाण समयप्रबद्धोंके यथासम्भव उपलभ्यमान कर्मपरमाणुओ को ग्रहण करके प्राप्त होता है ऐसा यहां कहना चाहिए।

* अब इस संज्ञा प्ररूपणाके द्वारा प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ४४६ अब अनन्तर पूर्व कही गयी इस संज्ञा प्ररूपणाके द्वारा जिनके स्वरूपका निर्णय कर लिया है ऐसे एक स्थितिविशेषमें विद्यमान समयप्रबद्धशेष और भवबद्धशेषके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए तथा उनके अनुभाग विशेषकी गवेषणा करनेके लिए इस समय प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* तं जहा ।

§ ४४७ सुगमं ।

* एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे कदिण्हं समयपबद्धाणं सेसाणि होज्जासु ।

§ ४४८ एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे णिरुद्धे किमेक्कस्स समयपबद्धस्स सेसयं होज्ज, आहो दोण्हं तिण्हमेवं गंतूण संखेज्जाणमसंखेज्जाणं वा त्ति पुच्छा एदेण कदा होइ। संपहि एवंविहाए पुच्छाए णिण्णयविहाणट्ठमुवरिमो विहासागंथो—

* एक्कस्स वा समयपबद्धस्स दोण्हं वा तिण्हं वा एवं गंतूण उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाणं ।

§ ४४९. एदस्स सुत्तस्सत्थो वुच्चदे। तं जहा—एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे णिरुद्धे एगस्स समयपबद्धस्स एगपरमाणू सेसयं होदूण दीसइ। एवं दो तिण्णिआदिकमेण जावुक्कस्सेण अणंता परमाणू एगसमयपबद्धपडिबद्धा सेसयं होदूण तम्हि ट्ठिदिविसेसे दीसंति। एवं दिट्ठसव्वपरमाणू घेत्तूण एक्कस्स वा समयपबद्धस्स सेसयं होज्जंति त्ति भणिदं। एवं दोण्हं वा समयपबद्धाणं सेसयाणि तम्हि ट्ठिदिविसेसे होदूण लब्भंति, तिण्हं वा समयपबद्धाणं सेसाणि तम्हि ट्ठिदिविसेसे लब्भंति। एवं गंतूण जावुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं वा समयपबद्धाणं सेसयाणि तत्थेव होदूण दीसंति। तत्तो अब्भहियाणं समयपबद्धाणं सेसयाणि एक्कम्हि ट्ठिदि

---

* वह जैसे ।

§ ४४७ यह सूत्र सुगम है।

* एक स्थितिविशेषमें कितने समयप्रबद्धोंके कर्म परमाणु शेष होते हैं।

§ ४४८ एक स्थितिविशेषके विवक्षित होनेपर क्या एक समयप्रबद्धके कर्मपरमाणु शेष रहते हैं या दो, तीनसे लेकर संख्यात या असंख्यात समयप्रबद्धोंके कर्म परमाणु शेष रहते हैं इस प्रकार इस सूत्र द्वारा यह पृच्छा की गयी है। अब इस प्रकार की पृच्छाका निर्णय करनेके लिए आगेका विभाषा ग्रन्थ आया है—

* एक समयप्रबद्धके या दो या तीन से लेकर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण समयप्रबद्धोंके कर्मपरमाणु शेष रहते हैं।

§ ४४९. अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह जैसे—एक स्थितिविशेषके विवक्षित होनेपर एक समयप्रबद्धका एक परमाणु शेष होकर दिखाई देता है। इसी प्रकार दो या तीनसे लेकर उत्कृष्टसे अनन्त परमाणु तक एक समयप्रबद्धसम्बन्धी परमाणु शेष होकर उस स्थिति-विशेषमें दिखाई देते हैं। इस प्रकार दिखाई देनेवाले सब परमाणुओंको ग्रहण कर वे सब एक समयप्रबद्धके शेष होते हैं यह यहाँ कहा गया है। इसी प्रकार दो समयप्रबद्धोंके शेष कर्मपरमाणु उस स्थितिविशेषमें होकर प्राप्त होते हैं। अथवा तीन समयप्रबद्धोंके शेष कर्मपरमाणु उस स्थितिविशेषमें प्राप्त होते हैं। इस प्रकार जाकर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोंके शेष कर्मपरमाणु उस स्थितिविशेषमें होकर दिखाई देते हैं। किन्तु इससे अधिक समयप्रबद्धोंके शेष कर्म परमाणु एक स्थितिविशेषमें सम्भव नहीं हैं, क्योंकि नाना स्थिति और एक स्थितिको विषय करनेवाले उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपित होनेवाले

विसेसे ण संभवति, एगसमयम्हि णिल्लेविज्जमाणाणं समयपबद्धाणं णाणेगट्ठिदिविसयाणमुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं चेव संभवोवएसादो। तदो एगम्हि ट्ठिदिविसेसे णिरुद्धे एगसमयपबद्धसेसयमादिं कादूण जावुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाण सेसयाणि संभवंति त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो। एवमेक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे समयपबद्धसेसाणं पमाणविणिण्णयं कादूण संपहि भवबद्धसेसाणं एगट्ठिदिविसेसमहिकिच्च पमाणाणुगमं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* भवबद्धसेसयाणि वि एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे एक्कस्स वा भवबद्धस्स दोण्हं वा तिण्हं वा एवं गंतूण उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं भवबद्धाणं।

§ ४५० एदस्स वि सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जहा समयपबद्धसेसयमहिकिच्च परूविदं तहा चेव वत्तव्वं। णवरि समयपबद्धसेसयं णाम एगसमयपबद्धमुवेक्खदे। भवबद्धसेसयं पुण एगभवविसयाणाणासमयपबद्धाणं जहासंभवमुवलब्भमाणाणं सेसयाणि घेत्तूण भवदि त्ति एसो विसेसो जाणियव्वो। तदो एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि भवबद्धसेसयाणि होदूण एगट्ठिदिविसयसमयपबद्धसेसेहिंतो असंखेज्जगुणहीणाणि त्ति घेत्तव्वं।

समयप्रबद्ध एक समयमे सम्भव है ऐसा आगमका उपदेश है। इसलिए एक स्थितिविशेषके विवक्षित होनेपर उसमें एक समयप्रबद्धशेषसे लेकर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोके शेष परमाणु सम्भव हैं यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। इस प्रकार एक स्थिति विशेषमे समयप्रबद्धशेषोके प्रमाणका निर्णय करके अब भवबद्धशेषोका एक स्थितिविशेषको अधिकृत करके प्रमाणका अनुगम करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* एक स्थितिविशेषमे भवबद्धशेष भी एक भवसम्बन्धी, दो भवसम्बन्धी, तीन भव सम्बन्धी या उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भवसम्बन्धी होते हैं।

§ ४५० इस सूत्रका भी अर्थ कहनेपर जिस प्रकार समयप्रबद्धशेषको अधिकृतकर प्ररूपणा की है उसी प्रकार इसकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए। इतनी विशेषता है कि समयप्रबद्धशेष एक समयप्रबद्धकी अपेक्षासे निर्दिष्ट किया गया है। किन्तु भवबद्धशेष एक भवविषयक यथासम्भव उपलभ्यमान नाना समयप्रबद्धोके शेषको ग्रहण कर निर्दिष्ट किया गया है इस प्रकार इन दोनोमें इतना अन्तर जानना चाहिए। अतः एक स्थितिविशेषमे उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भवबद्धशेष होकर वे एक स्थितिसम्बन्धी समयप्रबद्धशेषोकी अपेक्षा असंख्यातगुणे हीन होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—यहाँ प्रकृतमे उपयोगी समयप्रबद्धशेष और भवबद्धशेषके अर्थको स्पष्ट करके एक स्थितिविशेषमें समयप्रबद्ध शेषका कमसे कम एक परमाणु पाया जाता है और अधिकसे अधिक अनन्त परमाणु पाये जाते हैं। तथा भवबद्धशेषकी विवक्षामे एक स्थितिविशेषमें कमसे कम एक भवसम्बन्धी और अधिकसे अधिक पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भवोंसम्बन्धी शेष पाये जाते हैं ऐसा यहाँ समझना चाहिए। यहाँ समयप्रबद्धशेषमे एक समयप्रबद्धसम्बन्धी परमाणु विवक्षित हैं और भवबद्धशेषमे कमसे कम एक भवसे लेकर अधिकसे अधिक पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भवोसम्बन्धी समयप्रबद्धशेष विवक्षित हैं।

§ ४५१ एवमेत्तिएण पबंधेण भासगाहापुव्वद्धं विहासिय संपहि गाहापच्छद्धविहासणट्ठ मुत्तरसुत्तमाह—

* णियमा अणंतेसु अणुभागेसु भवबद्धसेसगं वा समयपबद्धसेसगं वा ।

§ ४५२ कुदो ? एक्कम्मि वि परमाणुम्मि सेसभावेणोवलब्भमाणे तत्थाणंताणमविभाग पडिच्छेदाणमणुभागसण्णिदाणमुवलभादो । तदो वग्गणाओ फद्दयाणि किट्टीओ वा अस्सियूण णेदं भणिदं, किंतु सामण्णेण रसविसेसं पेक्खियूण भणिदमिदि दट्ठव्वं, अण्णहा एगपरमाणुम्मि सेसभावेण वट्टमाणे पयदणियमस्साणुववत्तीदो । एवमेत्तिएण पबंधेण पढमभासगाहाए अत्थ विहासणं समाणिय संपहि विदियभासगाहाए अत्थविहासणं कुणमाणो उवरिमं विहासागंथमाढवेइ—

* एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ ४५३ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ ४५४ सुगमं ।

(१४८) ट्ठिदिउत्तरसेढीए भवसेससमयपबद्धसेसाणि ।
एगुत्तरमेगादी उत्तरसेढी असंखेज्जा ॥२०१॥

§ ४५५ एसा विदियभासगाहा मूलगाहाए पुव्वपच्छद्धेसु पडिबद्धपुच्छाओ अस्सियूण णाणेगसमयपबद्धसेसयाणि भवबद्धसेसयाणि च जहण्णुक्कस्सेण एत्तियमेत्तेसु ट्ठिदिविसेसेसु होंति

---

§ ४५१ इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा भाष्यगाथाके पूर्वार्धकी विभाषा करके अब उक्त भाष्यगाथाके उत्तरार्धकी विभाषा करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* ये भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष नियमसे अनन्त अनुभागोंमें पाये जाते हैं।

§ ४५२ क्योंकि शेषरूपसे उपलभ्यमान एक भी परमाणुमें वहाँ अनुभाग संज्ञावाले अनन्त अविभागप्रतिच्छेद पाये जाते हैं। अतः यह वर्गणाओं, स्पर्धकों और कृष्टियोंकी अपेक्षासे नहीं कहा गया है, किन्तु सामान्यसे रसविशेषको देखते हुए कहा गया है ऐसा यहाँ जानना चाहिए, अन्यथा शेषरूपसे विद्यमान परमाणुमें प्रकृत नियम नहीं बन सकता। इस प्रकार इतने प्रबन्धद्वारा प्रथम भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा समाप्त करके अब दूसरी भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके विभाषा ग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* इससे आगे दूसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ४५३ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ ४५४ यह सूत्र सुगम है।

(१४८) जो एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे असंख्यात स्थितिविशेषोंकी वृद्धिरूप उत्तरश्रेणि है उस स्थितिउत्तरश्रेणिमें भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष पाये जाते हैं ॥२३१॥

§ ४५५ यह दूसरी भाष्यगाथा मूलगाथाके पूर्वार्ध और उत्तरार्धमें प्रतिबद्ध पृच्छाओंका आश्रय लेकर नाना समयप्रबद्धशेष, एक समयप्रबद्धशेष और नाना तथा एक भवबद्धशेष जघन्य और

त्ति परूवणट्ठमोइण्णा। तं जहा—'ट्ठिदि उत्तरसेढीए' एवं भणिदे एगसमयपबद्धसेसयं जहण्णेण एगट्ठिदिविसेसम्मि होदूण लब्भइ, दोसु वि ट्ठिदिविसेसेसु होदूण लब्भइ, तिसु वि ट्ठिदिविसेसेसु होदूण लब्भइ। एवं गंतूण संखेज्जेसु असंखेज्जेसु वा ठिदिविसेसेसु होदूण लब्भइ। एवमेसा समयुत्तरकमेण ट्ठिदिविसेसाणं परिवड्ढी ट्ठिदिउत्तरसेढी णाम। एवमेगभवबद्धसेसयस्स वि ट्ठिदि उत्तरसेढी अणुगंतव्वा। एवं चेव णाणासमयपबद्धसेसयाणं णाणाभवबद्धसेसयाणं च ट्ठिदिउत्तर-सेढीए अवट्ठाणं वत्तव्वं। एवमेदीए ट्ठिदिउत्तरसेढीए णाणेगभवबद्धसमयपबद्धसेसयाणि होंति त्ति वुत्तं होइ।

§ ४५६ संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठं गाहापच्छद्धणिद्देसो—'एगुत्तरमेगादी' एगादि एगुत्तरकमेण जा ठिदीणं परिवड्ढी सा ठिदिउत्तरसेढी णाम। सा असंखेज्जासंखेज्जट्ठिदिविसेसपडि-बद्धा दट्ठव्वा त्ति वुत्तं होदि। तदो जहण्णेण एगट्ठिदिविसेसे एगसमयपबद्धसेसयं होदूण पुणो समयुत्तरवड्ढीए गंतूण उक्कस्सदो असंखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु एगसमयपबद्धसेसयमवट्ठाणं लहदि। एवमेगभवबद्धसेसयस्स वि एगादिएगुत्तरवड्ढिदेसु असंखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु अवट्ठाणसंभवो दट्ठव्वो त्ति एसो एदस्स भावत्थो।

§ ४५७ एवं चेव णाणासमयपबद्धभवबद्धसेसयाणं पि ट्ठिदिउत्तरसेढीए असंखेज्जेसु ट्ठिदिवियप्पेसु अवट्ठाणक्कमो अणुगंतव्वो। णवरि णाणाभवसमयपबद्धसेसयाणि जहण्णो वि असंखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु जिणदिट्ठभावेण होदूण तदो ट्ठिदिउत्तरसेढीए गंतूण उक्कस्सेण वि

उत्कृष्टरूपसे इतने स्थितिविशेषोमे होते हैं इस बातका प्ररूपण करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। वह जैसे—'ट्ठिदिउत्तरसेढीए' ऐसा कहनेपर एक समयप्रबद्धशेष जघन्यसे एक स्थितिविशेषमे प्राप्त होता है, दो स्थिति विशेषोमे प्राप्त होता है तीन स्थितिविशेषोमें भी प्राप्त होता है। इस प्रकार जाकर संख्यात और असंख्यात स्थितिविशेषोमे प्राप्त होता है। इस प्रकार यह समयोत्तरके क्रमसे स्थितिविशेषोकी परिवृद्धिका नाम स्थिति उत्तरश्रेणि है। इस प्रकार एक भवबद्धशेषकी भी स्थितिउत्तरश्रेणि जाननी चाहिए। तथा इसी प्रकार नाना समयप्रबद्धशेषो और नाना भवबद्धशेषोका स्थितिउत्तर श्रेणिमे अवस्थान कहना चाहिए। इस प्रकार इस स्थिति उत्तरश्रेणिमे नाना और एक भवबद्धशेष तथा नाना और एक समयप्रबद्ध शेष होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ ४५६ अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए गाथाके उत्तरार्धका निर्देश हुआ है—'एगुत्तरमेगादी' अर्थात् एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे जो स्थितियोकी वृद्धि होती है उसका नाम स्थिति उत्तरश्रेणि है। उसे असंख्यातासंख्यात स्थितिविशेषोसे सम्बद्ध जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इसलिए जघन्यसे एक स्थितिविशेषमे एक समयप्रबद्धशेष होकर पुन एक एक समयकी वृद्धिके क्रमसे जाकर उत्कृष्टसे असंख्यात स्थितिविशेषोमे एक समयप्रबद्ध शेषका अवस्थान प्राप्त होता है। इसी प्रकार एक भवबद्धशेषका भी एकसे लेकर एक-एक अधिकके क्रमसे असंख्यात स्थितिविशेषोमे अवस्थान सम्भव है ऐसा जानना चाहिए, इस प्रकार यह इसका भावार्थ है।

§ ४५७ तथा इसी प्रकार नाना समयप्रबद्धशेष और नाना भवबद्धशेषोका भी स्थिति उत्तरश्रेणिके द्वारा असंख्यात स्थितिविशेषोमे अवस्थानका क्रम जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि नाना भवबद्धशेष और नाना समयप्रबद्धशेष जघन्यसे भी असंख्यात स्थितिविशेषोमे

असंखेज्जेसु ट्ठिदिवियप्पेसु चिट्ठंति त्ति वत्तव्वं। एदस्स विसेसणिण्णयमुवरिमगाहासुत्तमस्सियूण कस्सामो। तदो एगसमयपबद्धसेसयमेगभवबद्धसेसयं च पहाणं कादूण एगादिएगुत्तरकमेण ठिदिउत्तरसेढी एदेण गाहासुत्तेण णिद्दिट्ठव्वा।

§ ४५८ संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागंथमाह—

* विहासा।

§ ४५९ सुगमं।

* तं जहा।

§ ४६० सुगमं।

* **समयपबद्धसेसयमेक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे दोसु वा तीसु वा एगादिएगुत्तरमुक्कस्सेण विदियट्ठिदीए सव्वासु ट्ठिदोसु पढमट्ठिदीए च समयाहियउदयावलियं मोत्तूण सेसासु सव्वासु ठिदीसु णाणासमयपबद्धसेसाणं णाणेगभवबद्धसेसयाणं च।**

जिने द्रदेवके देखे अनुसार होकर आगे स्थितिउत्तरश्रेणिके द्वारा जाते हुए उत्कृष्टसे भी असख्यात स्थितिविशेषोमे अवस्थित रहते हैं ऐसा कथन करना चाहिए। इसलिए एक भवबद्धशेष और एक समयप्रबद्धशेषको प्रधान करके एकसे लेकर एक एक उत्तरके क्रमसे इस गाथासूत्र द्वारा स्थितिउत्तरश्रेणिका निर्देश किया गया है ऐसा जानना चहिए।

विशेषार्थ—उदयकालमे तदनन्तर समयका एक भवसबन्धी जो कमपुज शेष रहता है वह एक भवबद्धशेष कहलाता है और इसी प्रकार उदयकालमें तदनन्तर समयका एक समयप्रबद्ध सम्बन्धी जो कर्मपुंज शेष रहता है वह एक समयप्रबद्धशेष कहलाता है। ये दोनो जघन्यसे एक स्थितिसम्बन्धी शेष हो सकते हैं और अधिकसे अधिक असख्यात स्थितिसम्बन्धी भी शेष हो सकते हैं। किन्तु एकसे अधिक भवोमे बद्ध जो कमपुंज शेष रहता है और इसी प्रकार एकसे अधिक समयोमे बद्ध जो कमपुंज उदयकालके तदनन्तर स्थितिमे शेष रहता है वह नियमसे असख्यात स्थितिविशेषसम्बन्धी होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

§ ४५८ अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेके विभाषा ग्रन्थको कहते है—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ४६९ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ ४६० यह सूत्र सुगम है।

* **एक समयप्रबद्धशेष एक स्थितिविशेषमे पाया जाता है अथवा दो स्थितिविशेषोमे पाया जाता है, अथवा तीन स्थितिविशेषोमे पाया जाता है। इस प्रकार एकसे लकर एक एक उत्तरक्रमसे उत्कृष्टसे द्वितीय स्थितिसम्बन्धी सब स्थितियोंमे पाया जाता है। तथा प्रथम स्थितिसम्बन्धी एक समय अधिक एक आवलिको छोड़कर शेष सब स्थितियोंमे पाया जाता है। इसी प्रकार नाना समयप्रबद्धशेषोको तथा एक भवबद्धशेष और नाना समयप्रबद्धशेषोको प्ररूपणा करनी चाहिए।**

§ ४६१ देसामासयभावेण एगसमयपबद्धसेसगमहिकिच्च विहासासुत्तमेदमोइण्णं। तं कधं? एगसमयपबद्धसेसय सेसासेसट्ठिदिपरिहारेण एक्कम्मि चेव ट्ठिदिविसेसे होदूण कदाइमुवलब्भइ, दोसु वि ट्ठिदिविसेसेसु होदूण लब्भइ। एवं तिण्णि चत्तारिआदिकमेण एगादिएगुत्तरपरिवड्ढीए गतूण उक्कस्सेण विदियट्ठिदीए सव्वासु ट्ठिदीसु वासपुधत्तपमाणासु होदूण णिरुद्धसमयपबद्धसेसयमुव लब्भदे। ण केवलं विदियट्ठिदीए चेव सव्वासु ट्ठिदीसु, किंतु अण्णदरसंजलणस्स पढमट्ठिदीए वि समयाहियउदयावलियमेत्तीओ ट्ठिदीओ मोत्तूण सेसासु सव्वासु चेव ट्ठिदीसु णिरुद्धसमयपबद्ध सेसयमवट्ठिदं। किं पुण कारणं समयाहियउदयावलियाए परिवज्जणमेत्थ कीरदि त्ति वुत्ते वुच्चदे—ण ताव उदयट्ठिदीए समयपबद्धसेसयस्स संभवो, से काले उदये णिल्लेविज्जमाणसरूवस्स तस्स वट्टमाणउदयट्ठिदीए तक्कालमेव णिल्लेविज्जमाणसरूवाए संभवविरोहादो। णोदयावलिय बाहिरेयट्ठिदीए वि तस्सावट्ठाणसंभवो अत्थि, तत्थतणपदेसग्गस्स से काले णियमा उदयावलिय पविसमाणस्स तदवत्थाए ओकड्डियूणुदये संछोहणासंभवादो। एवमुदयावलियब्भतरसेसट्ठिदीसु वि तदसंभवणियमो वट्ठव्वो।

§ ४६२ णवरि उदयट्ठिदीदो जा अणंतरविदियट्ठिदी तिस्से समयपबद्धसेसस्स संभवो अत्थि, से काले उदयभावेण णियमदो परिणममाणाए तिस्से समयपबद्धसेसस्स संभवे विरोहाणुव लंभादो। सुत्ते पुण एरिसो विसेसणिद्देसो ण कदो, वक्खाणदो चेव तारिसविसेसपडिवत्ती होदि

§ ४६१ देशामर्षकरूपसे एक समयप्रबद्धशेषको अधिकृत कर यह विभाषासूत्र अवतीर्ण हुआ है।

शंका—वह कैसे?

समाधान—एक समयप्रबद्धशेष शेष समस्त स्थितियोका परिहार करके कदाचित् एक ही स्थितिविशेषमे उपलब्ध होता है, दो स्थितिविशेषोमे भी उपलब्ध होता है। इसी प्रकार तीन, चार आदिके क्रमसे एकको आदि करके एक एककी वृद्धि द्वारा जाकर उत्कृष्टसे द्वितीय स्थिति सम्बन्धी वर्षपृथक्त्वप्रमाण सब स्थितियोमे विवक्षित समयप्रबद्धशेष उपलब्ध होता है। केवल द्वितीय स्थितिसम्बन्धी ही सभी स्थितियोमे नही उपलब्ध होता है, किन्तु किसी एक संज्वलनकी प्रथम स्थितिसम्बन्धी एक समय अधिक एक आवलि प्रमाण स्थितियोको छोडकर शेष सब स्थितियोमे विवक्षित समयप्रबद्धशेष अवस्थित रहता है।

शंका—यहाँपर एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थितियोका निषेध करनेका क्या कारण है?

समाधान—ऐसा प्रश्न करनेपर उत्तरस्वरूप कहते है—उदयस्थितिमे तो समयप्रबद्धशेषकी प्राप्ति सम्भव है नही, क्योकि यह अनन्तर समयमे उदय द्वारा निर्लेप्यमानस्वरूप है, अतः उसका उसी समय निर्लेप्यमानस्वरूप वर्तमान उदय स्थितिमे सम्भव होनेमे विरोध आता है। उदयावलिके बाहर प्रथम स्थितिमे भी उसका अवस्थित रहना सम्भव नही है, क्योकि उस स्थितिमे रहनेवाला प्रदेशपुज अनन्तर समयमे नियमसे उदयावलिमे प्रवेश करनेवाला है, अतः उस अवस्थामें उसका अपकर्षण होकर उदयमे निक्षिप्त होना सम्भव नही है। इसी प्रकार उदयावलिके भीतर शेष स्थितियोमे भी उसके असम्भव होनेका नियम जानना चाहिए।

§ ४६२ इतनी विशेषता है कि उदयस्थितिसे अनन्तर स्थित जो द्वितीय स्थिति है उसमे समयप्रबद्धशेष सम्भव है, क्योकि अनन्तर समयमे उदयरूपसे नियमसे परिणमन करनेवाली उसमें समयप्रबद्धशेषका होना सम्भव है इसमे कोई विरोध नही उपलब्ध होता। परन्तु सूत्रमे इस प्रकारके

त्ति ओकड्डिदूण उदये णिल्लेविज्जमाणस्सेव पदेसग्गस्स सेसभावेण सुत्ते विवक्खियत्तादो वा। एवमेगभवबद्धसेसयं पि णिरुद्धं काढूण एसो सव्वो वि सुत्तत्थो जोजेयव्वो। णाणासमयपबद्धसेसयाण भवबद्धसेसयाण च पादेक्कं णिरुंभण काढूण एसो अत्थो समयाविरोहेणाणुगंतव्वो। एव बिदियभासगाहाए अत्थविहासा समत्ता।

* एत्तो तदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ ४६३ सुगम।

(१४९) एक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे सेसाणि ण जत्थ होंति सामण्णा।
आवलिगासंखेज्जदिभागो तहिं तारिसो समयो ॥२०२॥

§४६४ पढम बिदियभासगाहाहि मूलगाहाए पुव्वपच्छद्धेसु विहासिदेसु पुणो किमट्ठमेसा तदियभासगाहा समोइण्णा त्ति पुच्छिदे वुच्चदे—ट्ठिदिउत्तरसेढीए भवसेसयसमयपबद्धसेसाणि चिट्ठमाणाणि असंखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु चिट्ठंति त्ति बिदियभासगाहाए परूविद। तेसु च ट्ठिदिविसेसेसु णाणेयसमयपबद्धसेसाण णाणाभवबद्धसेसाण च किं णिरंतरसरूवेणावट्ठाणणियमो आहो सांतरसरूवेणेत्ति ण एसो विसेसो तत्थ जाणाविदो। तदो तत्थ तेसिमवट्ठाणक्कमजाणावणट्ठं भवसमयपबद्धसेसाणमाधाराणाधारभूदसामण्णासामण्णट्ठिदीण सरूवविसेसजाणावणट्ठं च एसा तदियभासगाहा समोइण्णा।

विशेषका निर्देश नही किया गया है, व्याख्यानसे ही उस प्रकारके विशेषका ज्ञान होता है। अथवा अपकर्षण करके उदयमे निर्लेप्यमान प्रदेशपुज ही शेषरूपसे सूत्रमें विवक्षित है। इसी प्रकार एक भवबद्धशेषको भी विवक्षित करके यह सब सूत्रका अर्थ योजित करना चाहिए। तथा नाना समयप्रबद्धशेष और भवबद्धशेषोमेसे प्रत्येकको विवक्षित करके आगमके अविरोधपूर्वक यह सब अर्थ कहना चाहिए। इस प्रकार दूसरी भाष्यगाथाकी अथविभाषा समाप्त हुई।

* यह तीसरी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना है।

§ ४६३ यह सूत्र सुगम है।

(१४९) जिस किसी एक स्थितिविशेषमे जो भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष सामान्य नहीं होते हैं वे असामान्य कहलाते हैं। वे असामान्य स्थितिविशेष परस्पर सलग्न होकर अधिकसे अधिक आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण होते हैं। और वे वषपृथक्त्व कालमे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर पाये जाते है ॥२०२॥

§ ४६४ शंका—प्रथम और दूसरी भाष्यगाथाओ द्वारा मूल गाथाके पूर्वार्धके भाषित कर देनेपर पुन यह तीसरी भाष्यगाथा किस लिए अवतीर्ण हुई है ?

समाधान—ऐसी पृच्छा होनेपर आचार्य कहते हैं कि स्थिति उत्तरश्रेणिमें भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष अवस्थित रहते हुए असंख्यात स्थितिविशेषोमें पाये जाते हैं यह दूसरी भाष्यगाथा द्वारा कहा गया है। किन्तु उन स्थितिविशेषोमे नाना और एक समयप्रबद्धशेषोका तथा नाना और एक भवबद्धशेषोका निरन्तररूपसे रहनेका नियम है या सान्तररूपसे रहनेका नियम है इस प्रकार इस विशेषका उस दूसरी गाथामें ज्ञान नही कराया गया है, इसलिए उस क्षपकके उनके अवस्थानके क्रमका ज्ञान करानेके लिये भवबद्धशेषोका आधारभूत और अनाधारभूत सामान्य और असामान्य स्थितियोके स्वरूप विशेषका ज्ञान करानेके लिए यह तीसरी भाष्यगाथा अवतीर्ण हुई है।

§ ४६५ त जहा—'एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे०' एव भणिदे जम्हि अण्णदरट्ठिदिविसेसे समयपबद्धसेसयाणि ण सभवति सा ट्ठिदी असामण्णसण्णिदा णादव्वा त्ति गाहापुव्वद्धे सुत्तत्थ सबधो। तेण भवबद्धसेसयाणि समयपवद्धसेसयाणि च जिस्से ट्ठिदीए णिम्मूलदो ण सति सा ट्ठिदी असामण्णसण्णाए ववहारेयव्वा त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसगहो। एदेणेव जम्हि ट्ठिदिविसेसे भवसमय पबद्धसेसयाणि अत्थि सा ट्ठिदी सामण्णसण्णाए ववहारेयव्वा त्ति एसो वि अत्थो सूचिदो दट्ठव्वो, दोण्हमेदासिमण्णोण्णसव्वपेक्खत्तादो भवसमयपबद्धसेसयाणमाहारभावेण समण्णिदाओ ट्ठिदीओ सामण्णट्ठिदीओ। तेसिमणाधारभूदाओ ट्ठिदीओ असामण्णाओ त्ति एसो एदस्स भावत्थो।

§ ४६६ एवमेदेण गाहापुव्वद्धेण सामण्णासामण्णट्ठिदीण सरूवपरूवण कादूण सपहि असामण्णट्ठिदीओ णिरतरमुक्कस्सेण एत्तियमेत्तीओ होंति त्ति जाणावणट्ठ गाहापच्छद्धमाह—'आवलियासखेज्जदिभागो' आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्ता 'तम्हि' खवगम्हि तम्हि वा वास पुधत्तमेत्त व ट्ठिदिविसेसे 'तारिसा समया' भवसमयपबद्धसेसविरहिदा असामण्णट्ठिदिविसेसा णिरतरसरूवेण लब्भति, तत्तो अहियपराणमसामण्णट्ठिदीण णिरतरसरूवेण खवगसढिम्मि सभवाणुवलभादो त्ति भणिद होदि।

§ ४६७ एसो उक्कस्सपक्खेण असामण्णट्ठिदीण पमाणणिद्देसो सुत्ते कओ। तदो जहण्णेण एगा चेव असामण्णट्ठिदी एदस्स खवगस्स लब्भइ। एव दो तिण्णिआदिकमेण गतूण उक्कस्सेण

§ ४६५ वह जसे—'एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे ऐसा कहनेपर जिस अन्यतर स्थितिविशषमे समयप्रबद्धशष सम्भव नही हैं उस स्थितिको असामान्य सज्ञक जाननी चाहिए यह इस भाष्यगाथाके पूर्वाधमे सूत्राथका सम्ब ध है। इसलिए जिस स्थितिमे भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष पूरी तरहसे नही होते हैं वह स्थिति असामा य सज्ञाके द्वारा व्यवहृत करनी चाहिए यह यहाँ सूत्राथका सग्रह है। तथा इसीसे जिस स्थितिमे भवबद्धशेष और समयबद्धशेष पाये जाते हैं उस स्थितिका सामान्य सज्ञारूपसे व्यवहार करना चाहिए। इस प्रकार इस भाष्यगाथाके पूर्वार्ध द्वारा यह अथ भी सूचित कर दिया गया जानना चाहिए। यहा इन दोनोके परस्पर सापेक्ष होनेके कारण भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशषके आधाररूपसे समन्वित जितनी भी स्थितियाँ हाती हैं वे सामा य स्थितियाँ कहलती हैं और जो स्थितियाँ उन दोनोकी आधार नही होता हैं वे असामा य स्थितियाँ कहलाती हैं इस प्रकार यह इसका भावार्थ है।

§ ४६६ इस प्रकार इस गाथाका पूर्वाध द्वारा सामान्य और असामान्य स्थितियोके स्वरूपका कथन करके अब असामा य स्थितियाँ निर तर उत्कृष्टरूपसे इतनी होती हैं इस बातका ज्ञान कराने के लिए उक्त भाष्यगाथाके उत्तरार्धका कथन करते हैं— आवलियासखेज्जदिभागो' आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण 'तारिसा समया भवबद्ध और समयप्रबद्धसे रहित आसामान्य स्थितिविशेष उस क्षपकके वषपृथक्त्व काल तक पुन पुन निरन्तररूपसे पाये जाते है क्योंकि उनसे अधिक असामा य स्थितियाँ क्षपकश्रेणिमे निर तररूपसे उपलब्ध होना सम्भव नही है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

विशेषार्थ—यहाँ असामान्य स्थितियाँ एक बारमे लगातार अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातव भाग प्रमाण होकर भी अन्तरके साथके वर्षपृथक्त्व कालके भोतर आवलिके असख्यातवें भाग वार प्राप्त हो जाती हैं यह इस कथनका तात्पय है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

§ ४६७ यह उत्कृष्टपक्षके अवलम्बन द्वारा असामान्य स्थितियोके प्रमाणका निर्देश सूत्रमें किया है। इसलिए जघन्यसे एक ही असामान्य स्थिति इस क्षपकके उपलब्ध होती है। इसी प्रकार

आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ असामण्णट्ठिदीओ लब्भंति त्ति घेत्तव्वं। संपहि एदस्से वत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागंथमाढवेइ—

* विहासा ।

§ ४६८ सुगमं।

* सामण्णसण्णा ताव ।

§ ४६९ सामण्णसण्णाए अविण्णादाए असामण्णसण्णा ण जाणिज्जदि त्ति कादूण पुव्वमेव ताव सामण्णसण्णाए परूवणं कस्सामो त्ति भणिदं होइ।

* एक्कम्हि ठिदिविसेसे जम्हि समयपबद्धसेसयमत्थि सा ट्ठिदी सामण्णा त्ति णादव्वा ।

§ ४७० जम्हि एक्कम्हि णिरुद्धट्ठिदिविसेसे समयपबद्धसेसयमेगपरमाणुमादिं कादूण जावुक्कस्सेणाणंता परमाणु त्ति दीसइ सा ठिदी सामण्णट्ठिदिसण्णं लहदि त्ति वुत्तं होइ। कुदो पुण एदस्स ट्ठिदिविसेसस्स सामण्णसण्णा जादा त्ति चे? ण, समयपबद्धसेसपरमाणूणमियर परमाणूणं च साहारणभावेणावट्ठिदस्स तिस्से तव्ववएसाविरोहादो। भवबद्धसेसयं पि अस्सियूण सामण्णट्ठिदिसण्णा एवं चेव जोजेयव्वा, सुत्तस्सेदस्स देसामासयभावेणावट्ठिदत्तादो।

* जम्मि णत्थि सा ट्ठिदी असामण्णा त्ति णादव्वा ।

दो, तीन आदिके क्रमसे जाकर उत्कृष्टसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण असामान्य स्थितियाँ इस क्षपकके उपलब्ध होती हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगे विभाषाग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* अब उक्त सूत्र गाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ४६८ यह सूत्र सुगम है।

* सर्वप्रथम सामान्य संज्ञाका स्वरूप कहते हैं।

§ ४६९ क्योंकि सामान्य संज्ञाके अविज्ञात रहनेपर असामान्य संज्ञाका ज्ञान नहीं होता ऐसा समझकर पहले ही सामान्य संज्ञाकी प्ररूपणा करेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* जिस एक स्थितिविशेषमें समयप्रबद्धशेष पाया जाता है वह स्थिति सामान्य संज्ञावाली है ऐसा जानना चाहिए।

§ ४७० जिस विवक्षित एक स्थितिविशेषमें एक परमाणुसे लेकर उत्कृष्टसे अनन्त परमाणु तक समयप्रबद्धशेष दिखाई देता है वह स्थिति सामान्य स्थिति संज्ञाको प्राप्त होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—इस स्थितिविशेषकी सामान्य संज्ञा किस कारणसे हो गयी है?

समाधान—नहीं क्योंकि समयप्रबद्धशेषके परमाणु तथा दूसरे परमाणु साधारणरूपसे उस स्थितिमें अवस्थित रहते हैं, इसलिए उसकी सामान्य संज्ञा है इसमें कोई विरोध नहीं पाया जाता।

भवबद्धशेषका भी आलम्बन लेकर सामान्य स्थिति संज्ञाकी इसी प्रकार योजना करनी चाहिए, क्योंकि यह सूत्र देशामर्षकरूपसे अवस्थित है।

* जिसमें सामान्य स्थिति नहीं पायी जाती वह स्थिति असामान्य संज्ञावाली होती है ऐसा जानना चाहिए।

§ ४७१ सामण्णाओ अण्णा असामण्णा त्ति गहणाओ जम्हि ट्ठिदिविसेसे समयपबद्धसेसयं भवबद्धसेसयं वा णत्थि सा ट्ठिदी असामण्णा त्ति णिच्छेयव्वा, भव समयपबद्धसेसयाणमणाहार भावेणावट्ठिदाए तिस्से तव्ववएससिद्धीए णाइयत्तादो। एव गाहापुव्वद्धमस्सियूण सामण्णा सामण्णसण्णाण परूवण काद्रूण सपहि गाहापच्छद्धमस्सियूण असामण्णट्ठिदीओ जहण्णुक्कस्सेण णिरतरमेत्तियमेत्तीओ होति त्ति इममत्थविसेसं विहासेमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

✻ एवमसामण्णाओ ट्ठिदीओ एक्का वा दो वा उक्कस्सेण अणुबद्धाओ आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तीओ।

§ ४७२ एव भणिदे अणतरणिद्दिट्ठसरूवाओ असामण्णट्ठिदीओ एक्का वा दो वा होंति। एवमेगुत्तरवड्ढीए गतूण उक्कस्सेणावलियाए असखेज्जदिभागमेत्तीओ अण्णोण्णाणुसबंधाओ लब्भति, ण तत्तो अहियाओ त्ति भणिद होइ। विदियभासगाहाए अत्थे भण्णमाणे एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे सेसय भवदि, दोसु वि ट्ठिदिविसेसेसु सेसय भवदि। एव रूवुत्तरकमेण गतूण उक्कस्सेण सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु समयाहियउदयावलियवज्जेसु सेसय होदि त्ति भणिद। तत्थ एगट्ठिदिविसेसे सेसय होदि त्ति भणतेण सेसासेसट्ठिदीओ समयपबद्धसेससुण्णाओ असामण्ण ट्ठिदिसण्णिदाओ होति त्ति जाणाविद, तेण कारणेण असामण्णट्ठिदीण आवलियाए असखेज्जदि भागमेत्तवक्कस्ससखावहारणमिद ण घडदे, वासपुधत्तमेत्तीणमसामण्णट्ठिदीणमुक्कस्सपक्खेणेत्थ

---

§ ४७१ सामान्यसे अन्य असामान्य कहलाती है ऐसा ग्रहण करनेसे जिस स्थितिविशेषमें समयप्रबद्धशेष और भवबद्धशेष नहीं होते हैं वह स्थिति असामान्य कहलाती है ऐसा निश्चय करना चाहिए, क्योंकि भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेषके अनाधाररूपसे अवस्थित उसकी उक्त संज्ञाकी सिद्धि न्यायप्राप्त है। इस प्रकार उक्त सूत्रगाथाके पूर्वार्धका आलम्बन लेकर सामान्य और असामान्य सज्ञाओंकी प्ररूपणा करके अब उक्त गाथाके उत्तरार्धका आलम्बन लेकर असामान्य स्थितियाँ जघन्य और उत्कृष्टरूपसे इतनी होती हैं इस अर्थविशेषका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

✻ इस प्रकार असामान्य स्थितियाँ एक अथवा दोसे लेकर उत्कृष्टसे परस्पर सलग्न होकर आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण होती हैं।

§ ४७२ उक्त सूत्रमे इस प्रकार कहनेपर अनन्तर पूर्व निर्दिष्ट स्वरूपवाली असामान्य स्थितियाँ एक अथवा दो होती हैं। इस प्रकार आगे एक एकको वृद्धिरूपसे जाकर उत्कृष्टसे परस्पर सलग्न आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उपलब्ध होती हैं, उनसे अधिक नहीं होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार दूसरी भाष्यगाथाके अर्थके कहनेपर एक स्थितिविशेषमें शेष प्राप्त होता है दो स्थितिविशेषोमे भी शेष प्राप्त होता है। इस प्रकार आगे एक एकके क्रमसे जाकर उत्कृष्टसे एक समय अधिक उदयावलिसे रहित सब स्थितिविशेषोमे शेष होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शका—इस क्षपकके एक स्थितिविशेषमे शेष होता है ऐसा कहते हुए आचार्यने, समय प्रबद्धसम्बन्धी शेषसे शून्य असामान्य स्थिति संज्ञावाली शेष समस्त स्थितियाँ होती है, इस बात का ज्ञान कराया है, इस कारण असामान्य स्थितियाँ आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण होती हैं इस प्रकार संख्याका अवधारण करना घटित नही होता, क्योंकि यहाँपर उत्कृष्ट रूपसे वर्षपृथक्त्व प्रमाण असामान्य स्थितियाँ उपलब्ध होती हैं ?

समुवलंभादो त्ति ? ण एस दोसो, एगसमयपबद्धसेसं पेक्खियूण तत्थ तहा परूविदत्तादो। एत्थ पुण णाणासमयपबद्धपडिबद्धसेसयाणि अस्सियूण उक्कस्सेणावलियाए असखेज्जदिभागमेत्तीओ चेव असामण्णट्ठिदीओ होंति त्ति भणिद तम्हा ण एत्थ को वि दोसावयारो त्ति सिद्धं।

§ ४७३ सपहि एदस्सेव असामण्णट्ठिदीण जहण्णुक्कस्सपमाणणिद्देसस्स फुडीकरणट्ठ मुवरिम पबधमाह—

*** एक्केक्केण असामण्णाओ थोवाओ। दुगेण विसेसाहियाओ। तिगेण विसेसाहियाओ। आवलियाए असखेज्जदिभागे दुगुणाओ।**

§ ४७४ एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे अण्णदरसजलणपयडीए वासपुधत्तावच्छिण्णट्ठिदीए रचण कादूण पुणो एत्थ जेत्तियाओ असामण्णट्ठिदीओ सांतरणिरतरेणावट्ठिदाओ अत्थि ताओ सव्वाओ बुद्धीए पुध कादूण ठवेयव्वाओ। पुणो एत्थ 'एक्केक्केण असामण्णाओ थोवाओ' एव भणिदे वासपुधत्तमेत्तट्ठिदीसु एक्केक्कसरूवेण जाओ ट्ठिदीओ असामण्णट्ठिदिसलागाओ ताओ थोवाओ त्ति वुत्त होइ। 'दुगेण विसेसाहियाओ' एव भणिदे णिरतर दो दो होदूण जाओ ट्ठिदीओ असामण्णट्ठिदीओ तासिं सलागाओ विसेसाहियाओ त्ति भणिद होदि। केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असखेज्जदिभागेण खडिदेयखडमेत्तो। एत्थतणगुणहाणिअद्धाणस्स आवलियाए असखेज्जदिभागपमाणत्तादो। 'तिगेण विसे' एव भणिदे तिण्णि तिण्णि होदूण जाओ

समाधान—यह कोई दोष नही है, क्योकि एक समयप्रबद्धशेषको देखकर वहांपर उस प्रकार कथन किया है। परन्तु यहांपर नाना समयप्रबद्धोसे प्रतिबद्ध शेषोका आलम्बन लेकर उत्कृष्टसे आवलिके असख्यातव भागप्रमाण ही असामान्य स्थितियाँ होती हैं यह कहा है, इसलिए यहांपर किसी प्रकारका दोष नही प्राप्त होता है यह सिद्ध हुआ।

§ ४७३ अब इसी असामान्य स्थितियोके जघन्य और उत्कृष्ट प्रमाणके निर्देशको स्पष्ट करनेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

*** एक एकरूपसे असामान्य स्थितियाँ थोडी हैं। दो-दोरूपसे वे विशेष अधिक हैं। तीन तीनरूपसे वे विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिके असख्यातवें भागपर यह क्रम दूना हो जाता है।**

§ ४७४ इस सूत्रके अथके कहनेपर किसी एक सज्वलन प्रकृतिकी वषपृथक्त्व कालप्रमाण स्थितिकी रचना करके पुन इनमे जितनी असामान्य स्थितियाँ सान्तर और निरन्तररूपसे अव स्थित हैं उन सबको बुद्धि द्वारा पृथक्-पृथक् करके स्थापित करे। पुन इनमे 'एक एकरूपसे असामान्य स्थितियाँ थोडी हैं ऐसा कहनेपर वर्षपृथक्त्वप्रमाण स्थितियोमें एक-एकरूपसे जो असामान्य स्थितियाँ स्थित हैं वे थोडी हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'दो-दोरूपसे वे विशेष अधिक हैं' ऐसा कहनेपर निरन्तर दो दो होकर जो असामान्य स्थितियाँ स्थित हैं उनकी शलाकाएँ विशेष अधिक हैं यह उक्त कथनका तात्पय है।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—आवलिके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर जो प्रमाण आता है उतना यहाँ विशेष अधिकका प्रमाण है, क्योकि यहाँपर वह गुणहानि अध्वान (लम्बाई) आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

ट्ठिदाओ[1] असामण्णट्ठिदीओ तासिं गहिदसलागाओ विसेसाहियाओ त्ति वुत्त होइ। एत्थ वि विसेस पमाण पुव्व व वत्तव्व। एवमेगादिएगुत्तरवड्ढीए ट्ठिदाणमसामण्णट्ठिदिवियप्पाण गहिदसलागाओ विसेसाहियाओ होदूण गच्छंति जाव आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तद्धाण गतूण तदित्थवियप्पस्स ठविदसलागाओ दुगुणमेत्तीओ जादाओ त्ति एदमेग दुगुणवड्ढिट्ठाणतर णाम। एवमेद दुगुणवड्ढि अद्धाणमवट्ठिद कादण दुगुण दुगुणमेत्तविसेसपडिबद्धाओ आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तदुगुण वड्ढीओ णेदव्वाओ। तदो तम्मि उद्देसे सयलवियप्पाणमसखेज्जदिभागभूदे आवलियाए असखेज्जदि भागे जवमज्झ होदि त्ति जाणावणट्ठमिदमाह—

* आवलियाए असंखेज्जदिभागे जवमज्झ ।

§ ४७५ आदीदोप्पहुडि आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तगुणहाणिगब्भे आवलियाए असखेज्जदिभागे गदे तदो आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्ताणमसामण्णट्ठिदीण ठविदसलागाओ आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तीओ घेत्तूण जवमज्झमेत्थ जादमिदि वुत्त होइ। एत्तो उवरि जेणेव कमेण वड्ढिदाओ तेणेव कमेण हीयमाणाओ गच्छंति जाव जवमज्झादो उवरिमसखेज्जाओ गुण हाणीओ गतूण पढमवियप्पसलागाहि समाणाओ होदूण पुणो वि हीयमाणाओ तत्तो असखेज्जाओ गुणहाणीओ गतूण चरिमवियप्पसलागपमाण पत्ताओ त्ति चरिमवियप्पसलागाओ वि आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तीओ चेव होदूण सव्वत्थोवाओ दट्ठव्वाओ। एत्थापेसासेसविगतरपरिसुद्धी

'तीन तीन करके असामान्य स्थितियाँ विशेष अधिक हैं' ऐसा कहनेपर तीन तीन होकर जो असामान्य स्थितियाँ अवस्थित हैं उनकी ग्रहण की गयी शलाकाएँ विशेष अधिक हैं यह उक्त कथनका तात्पय है। यहाँपर भी विशेषका प्रमाण पहलेके समान कहना चाहिए। इस प्रकार एकसे लेकर आगे एक एककी वृद्धि द्वारा स्थित असामान्य स्थितियोके भेदोकी ग्रहण की गयी शलाकाए विशेष अधिक होकर तब तक जाती हैं जब जाकर आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वहाँ स्थित भेदको प्राप्त शलाकाएँ दूनी हो जाती हैं। इस प्रकार यह एक द्विगुण वृद्धि स्थानान्तर है। इस प्रकार इस द्विगुणवृद्धिअध्वानको अवस्थित करके द्विगुण द्विगुणप्रमाण विशेषोसे सम्बद्ध आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणवृद्धियाँ ले जानी चाहिए। अत उस स्थानपर समस्त भेदोके असख्यातवें भागरूप आवलिके असख्यातवें भागमे यवमध्य होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* आवलिके असख्यातवें भागमे यवमध्य होता है।

§ ४७५ आदिमे लेकर आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण गुणहानिके अन्तगत आवलिके असंख्यातवे भागके जानेपर वहाँसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण असामान्य स्थितियोकी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थापित शलाकाओंको ग्रहण कर यहाँ यवमध्य हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पय है। इससे आगे जिस क्रमसे वृद्धि हुई है उसी क्रमसे इमसे आगे जिस क्रमसे वे स्थितियाँ बढी हैं उसी क्रमसे वे हीयमान होकर तब तक जाती हैं जब जाकर यवमध्यसे ऊपर असख्यात गुणहानियाँ जाकर प्रथम भेदकी शलाकाओके समान होकर फिर भी हीयमान होती हुई वहाँ असंख्यात गुणहानियाँ जाकर अन्तिम भेदसम्बन्धी शलाकाओके प्रमाणको प्राप्त होती हैं। इस प्रकार अन्तिम भेदसम्बन्धी शलाकाएँ भी आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण ही होकर सबसे

[1] आ प्रतौ ट्ठिदीओ इति पाठ ।

सुत्ताविरोहेण चिंतिय वत्तव्वा ।

§ ४७६ अथवा 'एक्केक्केण असामण्णाओ थोवाओ' एवं भणिदे एक्केक्केण सामण्णेण अंतरिदाणमसामण्णट्ठिदीण वियप्पसलागाओ थोवाओ त्ति भणिद होइ। दोसु वि पासेसु एगेग सामण्णट्ठिदी होदूण पुणो मज्झे एक्का वा, दो वा, बहुआ वा सामण्णट्ठिदीओ होदूण जाओ लब्भंति तासि सलागाओ सपिंडिय गहिदाओ थोवाओ त्ति भावत्थो ।

§ ४७७ 'दुगेण विसेसाहिया' एव भणिदे दोहि दोहि सामण्णाहि अंतरिदाओ असामण्ण-ट्ठिदीओ केत्तियमेत्तीओ वि होदूण लब्भमाणाओ अत्थि, तासि सलागाओ सव्वत्थ सपिंडियूण गहिदाओ विसेसाहियाओ त्ति घेत्तव्वाओ। एत्थ विसेसपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागपडि भागमिदि घेत्तव्व। 'तिगेण विसेसाहिया' एव भणिदे तीहि तीहि सामण्णाहि अंतरिदाओ असामण्णट्ठीदीओ सपिंडिय गहिदवियप्पसलागाओ विसेसाहियाओ त्ति भणिद होदि। एत्थ वि विसेसपमाण पुव्व व वत्तव्व। एवमेदीए परूवणाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाण गंतूण दुगुणवड्ढी होइ। एवविहाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ दुगुणवड्ढीओ गतूण तदित्थ वियप्पसलागासु जवमज्झ होदि । तदो विसेसहीणकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं गतूण दुगुणहाणी होदि। एव दुगुणहाणीओ होदूण गच्छंति जाव चरिमवियप्पो त्ति ।

§ ४७८ सपहि एदेणेव देसामासयसुत्तेण सामण्णट्ठिदीण पि जवमज्झपरूवणा सूचिदा।

थोडी जाननी चाहिए। यहाँपर पूरी अशेष उपदेशान्तरकी शुद्धि सूत्रके अविरोधपूर्वक विचारकर कहनी चाहिए।

§ ४७६ अथवा 'एक एक रूपसे असामान्य स्थितियाँ थोडी हैं' ऐसा कहनेपर एक एक सामान्य स्थितिसे अन्तरित असामान्य स्थितियोके भेदोकी शलाकाएँ थोडी हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। दोनो ही पार्श्व भागोमे एक एक सामान्य स्थिति होकर पुन मध्यमे एक अथवा दो अथवा बहुत सामान्य स्थितियाँ होकर जो प्राप्त होती हैं उनकी शलाकाएँ मिलाकर ग्रहण करने पर वे थोडी होती है यह इसका भावार्थ है।

§ ४८७ 'दुगेण विसेसाहिया' ऐसा कहनेपर दो दो सामान्य स्थितियोसे अन्तरित असामान्य स्थितियाँ कितनी भी होकर प्राप्त होती हैं, उनकी शलाकाएं पूरी मिलाकर ग्रहण करनेपर विशेष अधिक होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। यहाँपर विशेषका प्रमाण आवलिके असख्यातवें भागके प्रतिभागरूप ऐसा ग्रहण करना चाहिए। 'तिगेण विसेसाहिया ऐसा कहनेपर तीन तीन सामान्य स्थितियोसे अन्तरित असामान्य स्थितियोको मिलाकर ग्रहण की गयी भेदोकी शलाकाएँ विशेष अधिक होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर भी विशेषका प्रमाण पहलेके समान कहना चाहिए। इस प्रकार इस प्ररूपणाके अनुसार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर द्विगुणवृद्धि होती है। इस प्रकारकी आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणवृद्धियाँ जाकर वहाँ स्थित भेदोकी शलाकाओपर यवमध्य होता है। तत्पश्चात् विशेष हीनक्रमसे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर द्विगुणहानि प्राप्त होती है। इस प्रकार अन्तिम विकल्पके प्राप्त होने तक द्विगुणहानियाँ होकर जाती है।

§ ४७८ अब इसी देशामर्षक सूत्रके द्वारा सामान्य स्थितियोंकी भी यवमध्य प्ररूपणा

तस्स परूवणमिदाणिं कस्सामो। तं जहा—'एक्केक्केण सामण्णाओ थोवाओ' एवं भणिदे अट्ठवस्समेत्तखवगपाओग्गट्ठिदीणं मज्झे दोसु वि पासेसु असामण्णट्ठिदीहिं अंतरिदाओ मज्झे एक्केक्काओ होदूणच्छिदसामण्णट्ठिदीओ णिवदिय गहिदाओ। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ होदूण थोवाओ त्ति गहेयव्वाओ। 'दुगेण विसेसाहियाओ' एवं भणिदे दो दो सामण्णट्ठिदीओ होदूण पुणो केत्तियाहिं मि असामण्णट्ठिदीहिं दोसु वि पासेसु णिरुद्धाओ वासपुधत्तमेत्तट्ठिदीसु सव्वत्थ णिवदिय गहिदाओ विसेसाहियाओ भण्णंति। केत्तियमेत्तो विसेसो? हेट्ठिमवियप्पसलागाणमसंखेज्जदिभागमेत्तो। तस्स पडिभागो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एवं 'तिगेण विसेसाहियाओ' इच्चादिकमेण गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागे दुगुणवड्ढिदाओ। एवं दुगुणवड्ढिदाओ दुगुणवड्ढिदाओ जाव जवमज्झं आवलियाए असंखेज्जदिभागे च जवमज्झमेदं दट्ठव्वं। तत्तो परमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणमुवरि विसेसहाणीए गंतूण दुगुणहीणाओ। एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव चरिमवियप्पो त्ति।

§ ४७९. अथवा 'एक्केक्केण असामण्णेण अंतरिदाओ सामण्णाओ थोवाओ' एवं भणिदे एक्केक्कअसामण्णट्ठिदीहिं दोसु वि पासेसु अंतरिदाओ सामण्णट्ठिदीओ मज्झे केत्तियाओ वि होदूण लब्भंति। तासिं गहिदसलागाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ होदूण थोवाओ भवंति। 'दुगेण अंतरिदाओ विसेसाहियाओ' एत्थ वि पुव्वं व वत्तव्वं। एवं जाव आवलियाए

सूचित की गया है। अत उसकी प्ररूपणा इस समय करेंगे। वह जैसे—'एक्केक्केण सामण्णाओ थोवाओ' ऐसा कहनेपर आठ वषप्रमाण क्षपकप्रायोग्य स्थितियोके मध्यमे दानो ही पार्श्वोंमे असामान्य स्थितियोके द्वारा अ तरित बीचमे एक एक होकर स्थित सामान्य स्थितियाँ प्राप्त हुई ग्रहण की गयी हैं। वे आवलिके असख्यातव भागप्रमाण होकर सबसे थोडी होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए। 'दुगेण विसेसाहियाओ' ऐसा कहनेपर दो दो सामान्य स्थितियां होकर पुन कितनी ही असामा य स्थितियो द्वारा दानो ही पार्श्वोंमे निरुद्ध होकर वर्षपृथक्त्वमात्र स्थितियोमे सवत्र प्राप्त हुई ग्रहण की गयी विशेष अधिक कही जाती हैं।

शंका– विशषका प्रमाण कितना है?

समाधान—अधस्तन भेदसम्ब धी शलाकाओके असख्यातवें भागप्रमाण है। और उसका प्रतिभाग आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण है।

इसी प्रकार तीन-तीन रूपसे सामा य स्थितियाँ विशेष अधिक हैं। इत्यादि क्रमसे जाकर आवलिके असख्यातव भागमे द्विगुणवृद्धियाँ होती हैं। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक द्विगुण वृद्धियाँ द्विगुणवृद्धियाँ होती है। वह यवमध्य आवलिके असंख्यातवें भागमे जानना चाहिए। उससे आगे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण तक आगे विशष हीनरूपसे द्विगुणहानियाँ होती हैं। इस प्रकार अन्तिम विकल्पके प्राप्त होने तक द्विगुणहानियाँ द्विगुणहानियाँ होती हैं।

§ ४७९. अथवा एक्केक्केण असामण्णेण अंतरिदाओ सामण्णाओ थोवाओ ऐसा कहनेपर एक एक असामान्य स्थितियोसे दोनो ही पार्श्वभागोमे अन्तरित सामान्य स्थितियाँ मध्यमें कितनी ही होकर प्राप्त होती हैं। उनकी ग्रहण की गयी शलाकाएँ आवलिके असख्यातवें भाग प्रमाण होकर सबसे थोडी होती हैं। 'दुगेण अंतरिदाओ विसेसाहियाओ' अर्थात् दो दो असामान्य स्थितियोसे दोनो ही पार्श्वभागोमे अन्तरित होकर सामा य स्थितियाँ विशेष अधिक होती हैं। इस प्रकार यहाँपर भी पहलेके समान कथन करना चाहिए। इस प्रकार आवलिके असख्यातवें

असखेज्जदिभागेणंतरिदाओ दुगुणाओ त्ति। तदो आवलियाए असंखेज्जदिभागे जवमज्झ।

§ ४८० जवमज्झस्सुवरि आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं गतूण दुगुणहाणी होदि। एव णेदव्व जाव चरिमवियप्पो त्ति। जवमज्झस्सुवरिमअद्धाणपमाणमावलियाए असखेज्जदिभाग मेत्तमिह गहेयव्व। कि कारण ? असामण्णट्ठिदीओ सव्वुक्कस्साओ वि णिरतरमावलियाए असंखे ज्जदिभागमेत्तो चेव होंति त्ति भणिदत्तादो। एवमेव पढविय संपहि जम्हि समयपबद्धसेसयमत्थि सा ट्ठिदी सामण्णा त्ति एदेणेव संबंधेण सामण्णट्ठिदिविसयाण समयपबद्धसेसाणमेगादिएगुत्तर ट्ठिदिविसेसेसु पडिबद्धाणमवट्ठाणक्कमजाणावणट्ठ विहासागथमुत्तरमाढवेइ —

* समयपबद्धस्स एक्केक्कस्स सेसगमेक्किस्से ट्ठिदीए ते समयपबद्धा थोवा।

§ ४८१ एदस्सत्थो—जस्स वा तस्स वा एक्कस्स समयपबद्धस्स सेसग सेसासेसट्ठिदि परिहारेणेक्किस्से चेव अण्णदरट्ठिदीए पडिबद्धमत्थि तस्सेगा सलागा घेत्तव्वा। पुणो अण्णस्स वि एक्कस्स समयपबद्धस्स सेसगमण्णदरम्मि एगट्ठिदिविसेसे पडिबद्धमत्थि, तस्स बिदिया सलागा घेत्तव्वा। एवमेगेगट्ठिदिपडिबद्धसेससबधिणो जेत्तिया समयपबद्धा लब्भति तेसि सव्वेसि पादेक्कमेक्केक्का सलागा घेत्तव्वा। एव गहिदसलागाओ सव्वत्थोवाओ होति, उवरिमवियप्प पडिबद्धसमयपबद्धसलागाणमेत्तो बहुत्तदसणादो त्ति।

* जे दोसु ट्ठिदीसु ते समयपबद्धा विसेसाहिया।

भागप्रमाण अन्तरित द्विगुणवृद्धियाँ होती हैं। इसलिए वहाँ आवलिके असख्यातवे भागमे यवमध्य होता है।

§ ४८० तत्पश्चात् यवमध्यके ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर द्विगुणहानि होती है। इस प्रकार अ तिम विकल्पके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। यहाँ यवमध्यके आगेक स्थानका प्रमाण आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि असामा य स्थितियाँ सबसे उत्कृष्ट भी निर तर आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ऐसा कहा गया है। यहाँ इस प्रकारका कथन करके अब जिस स्थितिमें समयप्रबद्धशेष है वह सामान्य स्थिति है। इस प्रकार एकसे लेकर आगे एक एक अधिकके क्रमसे स्थितिविशेषोमें प्रतिबद्ध सामान्य स्थितिविषयक समयप्रबद्धशेषोके अवस्थानके क्रमका ज्ञान करानेके लिए आगेके विभाषा ग्र थको प्रारम्भ करत है—

* एक एक समयप्रबद्धके शेष एक एक स्थितिमे होकर वे समयप्रबद्ध सबसे थोडे हैं।

§ ४८१ इसका अर्थ—जिस किसी एक समयप्रबद्धका शेष शेष समस्त स्थितियोको छोड़ कर एक ही अ यतर स्थितिमे प्रतिबद्ध है। उसकी एक शलाका ग्रहण करनी चाहिए। पुन अन्य भी एक समयप्रबद्धका शेष अन्यतर एक स्थितिविशेषमे प्रतिबद्ध है। उसकी दूसरी शलाका ग्रहण करनी चाहिए। इस प्रकार एक-एक स्थितिविशेषमे प्रतिबद्ध शेषसम्बन्धी जितने समयप्रबद्ध प्राप्त होते हैं उन सबमेंसे प्रत्येककी एक एक शलाका ग्रहण करनी चाहिए। इस प्रकार ग्रहण की गयी शलाकाएं सबसे थोड़ी होती हैं, क्योंकि उपरिम विकल्पोंसे प्रतिबद्ध समयप्रबद्धोकी शलाकाएँ इनसे बहुत देखी जाती हैं।

* जो समयप्रबद्ध प्रत्येक दो-दो स्थितियोमे प्रतिबद्ध हैं वे समयप्रबद्ध विशेष अधिक हैं।

§ ४८२ वोसु ट्ठिदिविसेसेसु सेसभावेण ट्ठिदा जे समयपबद्धा तेसिं गहिदसलागाओ पुव्विल्लं सलागाहिंतो विसेसाहियाओ होंति त्ति वुत्त होदि। विसेसपमाणमेत्थ हेट्ठिमसमयपबद्धसलागाण मावलियाए असंखेज्जविभागपडिभागियमिदि घेत्तव्व, एत्थतणणिसेगभागहारस्स गुणहाणिअद्धाण मेत्तस्स तप्पमाणत्तादो।

* आवलियाए असंखेज्जदिभागे दुगुणा।

§ ४८३ जे तिसु ट्ठिदिविसेसेसु सेसभावेण ट्ठिदा समयपबद्धा ते विसेसाहिया इच्चादि कमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणमुवरि गतूण आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्त ट्ठिदिविसेसेसु सेसभावेणावट्ठिदा जे समयपबद्धा तेसिं गहिदसलागाओ पढमवियप्पसलागाहिंतो दुगुणमेत्तीओ होंति त्ति वुत्त होइ।

§ ४८४ एत्तो उवरि पुणो वि विसेसाहियवड्ढीए णेदव्व जाव पुव्विल्लदुगुणवड्ढिअद्धाणेण सरिसमद्धाणमुवरि गतूण विदिया दुगुणवड्ढी समुप्पण्णा त्ति। एवमेदेण कमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ दुगुणवड्ढीओ गतूण तदित्थदुगुणवड्ढीए चरिमवियप्पे जवमज्झ समुप्पज्जदि त्ति इममत्थविसेस जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

§ ४८२ दो स्थितिविशेषोमे शेषरूपसे स्थित जो समयप्रबद्ध हैं उनकी ग्रहण की गयी शलाकाएँ विशेष अधिक हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँ विशेषका प्रमाण अधस्तन समय प्रबद्धोकी शलाकाओका आवलिके असंख्यातवें भागके प्रतिभागस्वरूप है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। अर्थात् अधस्तन समयप्रबद्धोकी शलाकाओमे आवलिके असंख्यातवे भागका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उतनी शलाकाएँ यहाँ अधस्तन शलाकाओसे विशेष अधिक हैं यह उक्त कथनका भाव है, क्योंकि यहाँका निषेकभागहार गुणहानिस्थानोका जितना प्रमाण है तत्प्रमाण है।

* इस प्रकार क्रमसे जाते हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितिविशेषोमे शेष रूपसे जो समयप्रबद्ध प्रतिबद्ध हैं उनकी शलाकाएं दूनी हैं।

§ ४८३ तीन स्थितिविशेषोमे शेषरूपसे स्थित जो समयप्रबद्ध हैं वे विशेष अधिक हैं इत्यादि क्रमसे आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण स्थान ऊपर जाकर आवलिके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिविशेषोमें शेषरूपसे स्थित जो समयप्रबद्ध हैं उनमेसे प्रत्येककी ग्रहण की गयी शलाकाएँ प्रथम विकल्पकी शलाकाओसे दूनी होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

विशेषार्थ—एक एक स्थितिविशेषमे शेषरूपसे प्रतिबद्ध जितने समयप्रबद्ध हैं वे सबसे थोडे हैं। दो-दो स्थितिविशेषोमे शेषरूपसे प्रतिबद्ध जितने समयप्रबद्ध हैं वे विशेष अधिक हैं। तीन तीन स्थितिविशेषोमे शेषरूपसे प्रतिबद्ध जितने समयप्रबद्ध हैं वे विशेष अधिक हैं। इस प्रकार क्रमसे जाते हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितिविशेषोमें शेषरूपसे प्रतिबद्ध जो समयप्रबद्ध हैं वे प्रथम विकल्पकी अपेक्षा दूने हैं। यह एक द्विगुणवृद्धिस्थान है।

§ ४८४ इससे आगे फिर भी जब जाकर पहलेके द्विगुणवृद्धिस्थानके सदृश स्थान ऊपर जाकर दूसरी द्विगुणवृद्धि उत्पन्न होती है वहाँ तक विशेष अधिकके क्रमसे वृद्धिको ले जाना चाहिए। इस प्रकार इस आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणवृद्धियाँ हो जानेपर वहाँके द्विगुणवृद्धिके अन्तिम भेदमे यवमध्य उत्पन्न होता है इस अर्थविशेषका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* आवलियाए असंखेज्जदिमागे जवमज्झं ।

§ ४८५ आदीदोप्पहुडि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्वाणं तप्पाओग्गासंखेज्जगुणवड्ढि गब्भं गंतूण तदित्थवियप्पपडिबद्धाणं समयपबद्धाणं ठविदसलागाओ जवमज्झसरूवेण वट्टव्वाओ त्ति भणिदं होइ। आदीदोप्पहुडि कमवड्ढीए जाव एद्दूरं ताव आगंतूण एत्तो पर विसेसहीणसरूवेण उवरिमवियप्पसलागाणं गमणदंसणादो जवमज्झमेव जादमिदि एसो एत्थ भावत्थो। संपहि एदस्सेव फुडीकरणट्ठमुवरिमं सुत्तमोइण्णं—

* तदो हायमाणट्ठाणाणि वासपुधत्तं ।

§ ४८६ एत्तो परमुवरिमवियप्पेसु समयपबद्धसलागाओ जहाकमं हीयमाणाओ गच्छंति जाव असंखेज्जगुणहाणिगब्भं वासपुधत्तमेत्तद्धाणं जवमज्झादो उवरि गंतूण चरिमवियप्पो समुप्पण्णो त्ति। तत्थ चरिमवियप्पे वासपुधत्तमेत्तट्ठिदीसु सेसभावेण ट्ठिदसमयपबद्धा सव्व थोवा होदूण पयदजवमज्झपरूवणाए पज्जवसाणं होंति त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो। एत्थ जव मज्झादो उवरिमद्धाणं वासपुधत्तमेत्तमेवेत्ति कुदो णव्वदे ? ण, विदियट्ठिदिपमाणस्स वासपुधत्तादो अहियस्सासंभवादो। एवं भवबद्धसेसयाणं पि एसा जवमज्झपरूवणा णिरवयवमणुगंतव्वा, विसेसाभावादो। एत्थ सव्वत्थ भवसेसयं समयपबद्धसेसयमिदि च वुत्ते एक्केक्कस्स समय

* आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणवृद्धिस्थानोंके अन्तिम भेदमें यवमध्य प्राप्त होता है।

§ ४८५ प्रारम्भसे लेकर तत्प्रायोग्य द्विगुणवृद्धिस्थान गर्भ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वहाँ सम्बन्धी विकल्पोंसे प्रतिबद्ध समयप्रबद्धोंकी स्थापित हुई शलाकाएँ यवमध्य स्वरूप होती हैं ऐसा जानना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि प्रारम्भसे लेकर क्रम वृद्धि द्वारा इतने दूर आकर इससे आगे विशेष हीनरूपसे उपरिम भेदोंकी शलाकाएँ प्राप्त होती हुई देखी जानेसे यहाँ यवमध्य हो जाता है यह इस सूत्रका भावार्थ है। अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

* उससे आगे हीयमान स्थान वर्षपृथक्त्वप्रमाण हैं।

§ ४८६ इससे आगे आगेके भेदोंमें समयप्रबद्ध शलाकाएँ क्रमसे हीयमान होकर तबतक जाती हैं जब जाकर यवमध्यसे ऊपर असंख्यात गुणहानिगर्भ वर्षपृथक्त्वप्रमाण स्थान जाकर अन्तिम विकल्प उत्पन्न हुआ है। वहाँ अन्तिम भेदमें वर्षपृथक्त्वप्रमाण स्थितियोंमें शेषरूपसे अवस्थित समयप्रबद्ध सबसे थोड़े होकर प्रकृत यवमध्यप्ररूपणाका अन्त होता है यह यहाँ इस सूत्रके साथ अर्थका सद्भावसूचक सम्बन्ध है।

शंका—यहाँ यवमध्यसे उपरिम स्थान वर्षपृथक्त्वप्रमाण ही है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रकृतमें द्वितीय स्थितिका प्रमाण वर्षपृथक्त्वसे अधिक नहीं पाया जाता।

इस प्रकार भवबद्धशेषोंकी यह यवमध्यप्ररूपणा भी पूरी तरहसे इसी प्रकार जाननी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें अन्य कोई विशेषता नहीं है। यहाँपर सर्वत्र भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष

पबद्धस्स भवबद्धस्स वा वेदिदसेसगा कम्मपदेसा से काले णिरवसेसमोकड्डणाए उदयमागच्छंति त्ति पुव्विल्लसमये चेव अप्पप्पणो पडिबद्धउवरिमट्ठिदिविसेसेसु वट्टमाणा घेत्तव्वा । एवमेत्तिएण पबंधेण तदियभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि जहावसरपत्ताए चउत्थभासगाहाए विहासणं कुणमाणो उवरिमसुत्तपबंधमाढवेइ—

※ एत्तो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

§ ४८७ सुगमं ।

(१५०) एदेण अंतरेण दु अपच्छिमाए दु पच्छिमे समए ।
भवसमयसेसगाणि दु णियमा तम्हि उत्तरपदाणि ॥२०३॥

§ ४८८ तदियभासगाहाए जहा उत्थाणत्थपरूवणा कदा तहा चेव एदिस्से चउत्थभासगाहाए कायव्वा, विसेसाभावादो । णवरि तदियभासगाहा सामण्णट्ठिदीणमंतरभूदाओ असामण्णट्ठिदीओ पहाणभावेण परूवेइ । एसा पुण असामण्णट्ठिदीहिं अंतरिदाणं सामण्णट्ठिदीणं पहाणभावेण परूवणं कुणदि त्ति एसो विसेसो जाणियव्वो ।

§ ४८९ संपहि एदिस्से चउत्थभासगाहाए अवयवत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा—'एदेण अंतरेण दु' एदेणाणंतरपरूविदेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुक्कस्संतरेण 'अपच्छिमाए दु' पुव्वुत्तावलियासंखेज्जदिभागमेत्तुक्कस्संतरस्स जा अपच्छिमा चरिमा असामण्णट्ठिदी तिस्से

ऐसा कहनेपर एक एक समयप्रबद्धके और एक एक भवबद्धके वेदे जानेके बाद जो शेष कर्मप्रदेश रहे व अनन्तर समयमें पूरेके पूरे अपकर्षण द्वारा उदयको प्राप्त हो जाते हैं, इसलिए उदयसे पहलेके समयमें अपने अपने सम्बन्धी उपरिम स्थितिविशेषोंमें विद्यमान ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा तीसरी भाष्यगाथाको अर्थविभाषाको समाप्त कर अब यथावसर प्राप्त चौथी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

※ इससे आगे चौथी भाष्यगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं ।

§ ४८७ यह सूत्र सुगम है ।

(१५०) इस अनन्तर कहे गये आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उत्कृष्ट अन्तरसे युक्त अन्तमें जो असामान्य स्थिति प्राप्त होती है उससे अनन्तर उपरिम स्थितिमें भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष नियमसे उस क्षपकके उत्तरपदरूप होते हैं ॥२०३॥

§ ४८८ तीसरी भाष्यगाथाके जिस प्रकार उत्थानरूप अर्थकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार इस चौथी भाष्यगाथाके अर्थकी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि उसकी प्ररूपणासे इसकी प्ररूपणामें कोई विशेषता नहीं है। इतनी विशेषता है कि तीसरी भाष्यगाथा सामान्य स्थितियोंसे अन्तरित असामान्य स्थितियोंकी प्रधानरूपसे प्ररूपणा करती है। परन्तु यह गाथा असामान्य स्थितियोंसे अन्तरित सामान्य स्थितियोंकी प्रधानरूपसे प्ररूपणा करती है यह विशेष इन दोनोंमें जानना चाहिए।

§ ४८९ अब इस चौथी भाष्यगाथाकी प्ररूपणा करेंगे। वह जैसे—'एदेण अंतरेण दु' इस अनन्तर कहे गये आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उत्कृष्ट अन्तरसे 'अपच्छिमाए दु' अर्थात् पूर्वोक्त आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्तरकी जो 'अपश्चिम' अर्थात् अन्तिम असामान्य

पच्छिमे समए तदणंतरोवरिमट्ठिदीए 'भवसमयसेसाणि समयपबद्धसेसयाणि च णियमा' णिच्छयेणेव 'तम्हि' तम्हि खवगे 'तम्हि' वा अट्ठवस्समेत्तट्ठिदिसंतकम्मब्भंतरे 'उत्तरपदाणि' एगादिएगुत्तरकमेण परिवड्ढिदाणि एगादिएगुत्तरट्ठिदिविसेसेसु वा लद्धावट्ठाणाणि बद्धव्वाणि त्ति सुत्तत्थसंबंधो ।

§ ४९० संपहि एदस्स समुदायत्थे भण्णमाणे सामण्णठिदीणमंतरमसामण्णट्ठिदीओ भवंति । ताओ च जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा एवं गतूण जावुक्कस्सेणावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ णिरंतरमुवलब्भंति त्ति पुव्वसुत्ते भणिद । पुणो तासिमसामण्णट्ठिदीणं चरिमट्ठिदीदो जा उवरिमाणंतरट्ठिदी तम्मि समयपबद्धसेसयाणि भवबद्धसेसयाणि च णियमा होंति । होंताणि वि एगादिएगुत्तरपरिवड्ढीए जाव उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाणं भवबद्धाण च सेसयाणि तम्मि ट्ठिदिविसेसे होदूण लब्भंति । ताणि च ण केवलमेक्कम्मि चेव ट्ठिदिविसेसे चिट्ठंति, किंतु एगादिएगुत्तरपरिवड्ढिदेसु ट्ठिदिविसेसेसु उक्कस्सेण वासपुधत्तावच्छिण्णपमाणेसु णिरंतरमवचिट्ठंति त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थपरमत्थो ।

§ ४९१ संपहि एदस्सेव फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागथमाढवेइ—

* विहासा ।

स्थिति है उसके पच्छिमे समए अनन्तर उपरिम स्थितिमे 'भव-समयसेसाणि दु' भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेष 'णियमा तम्हि' नियमसे उस क्षपकके या 'तम्हि' आठ वर्षप्रमाण स्थितिसत्कर्मके भीतर 'उत्तरदाणि' एकसे लेकर आगे एक एक अधिकके क्रमसे बढे हुए स्थान जानने चाहिए या एकसे लेकर आगे एक एक अधिकके क्रमसे बढे हुए स्थितिविशेषोमे उत्तरपद जानने चाहिए ।

§ ४९० अब इसके समुच्चयरूप अर्थके कहनेपर सामान्य स्थितियोके अन्तरस्वरूप असामान्य स्थितियाँ होती हैं । और वे जघन्यसे एक अथवा दो अथवा तीन होती हैं । इस प्रकार एक एक बढाते हुए वे उत्कृष्टसे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण अन्तररहित उपलब्ध होती हैं यह पूर्व सूत्रमे कह आये हैं । पुन उन असामान्य स्थितियो सम्बन्धी अन्तिम स्थितिसे उपरिम जो अनन्तर स्थिति है उसमें समयप्रबद्धशेष नियमसे होते हैं । होते हुए भी एकसे लेकर आगे एक एककी वृद्धिसे युक्त वे उत्कृष्ट पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धो और भवबद्धोके शेष उस स्थितिविशेषमे होकर प्राप्त होते हैं । और वे केवल एक ही स्थितिविशेषमें नही पाये जाते, किन्तु एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे बढ़े हुए उत्कृष्टसे वर्षपृथक्त्वप्रमाण स्थितिविशेषोमें निरन्तर रूपसे अवस्थित रहते हैं इस प्रकार यह यहाँ इस सूत्रका परमार्थस्वरूप अर्थ है ।

विशेषार्थ—आशय यह है कि असामान्य स्थितियोंके बीच-बीचमें सामान्य स्थितियाँ होती हैं । कही एक असामान्य स्थितिके अनन्तर एकादि सामान्य स्थितियाँ होती हैं । कहीं दो असामान्य स्थितियोके अनन्तर एकादि सामान्य स्थितियाँ पायी जाती हैं । यहाँ एकादि सामान्य स्थितियोके अन्तरस्वरूप स्थित असामान्य स्थितियाँ एकसे लेकर आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण तक हो सकती हैं और इसी प्रकार एकादि असामान्य स्थितियोके बाद सामान्य स्थितियाँ भी उतनी ही हो सकती हैं ।

§ ४९१ अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेके विभाषाग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* अब इस भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं ।

§ ४९२ सुगम ।

* समयपबद्धसेसय जिस्से ट्ठिदीए णत्थि तदो विदियाए ट्ठिदीए ण होज्ज, तदियाए ठिदीए ण होज्ज, तदो चउत्थीए ण होज्ज । एवमुक्कस्सेण आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तीसु ट्ठिदीसु ण होज्ज समयपबद्धसेसय ।

§ ४९३ णाढवेयव्वमिद सुत्त, पुव्वसुत्तेणेव णिण्णीदत्थविसेसस्स पुणो परूवणाए फल विसेसाणुवलभादो त्ति णासकियव्व, पुव्वुत्तमेवत्थस विसेसमणुसंभालिय पुणो एत्तो उवरि सामण्णट्ठिदीओ एदेण कमेण लब्भति त्ति जाणावणट्ठ तप्परूवणे कीरमाणे दोसाणुवलभादो। एवमेद सभालिय पुणो एत्तियमेत्तमंतरमुल्लघिय तत्तो पर णियमा समयपबद्धसेसएण अवि रहिदाओ ट्ठिदीओ होति त्ति जाणावणट्ठमिदमाह—

* आवलियाए असखेज्जदिभाग गतूण णियमा समयपबद्धसेसएण अविरहिदाओ ट्ठिदीओ ।

§ ४९४ अतरचरिमट्ठिदिमुल्लघिय तत्तो पर समयपबद्धसेसएण अविरहिदाओ ट्ठिदीओ एगादि एगुत्तरकमेण लब्भमाणाओ उक्कस्सेण वासपुधत्तमेत्तीओ होति त्ति एसो एत्थ सत्तत्थसगहो। सपहि एदासिं चेव एगाणेगसमयपबद्धसेसएहिं अविरहिदाण ठिदीण थोवबहुत्तगवेसणट्ठमुत्तर सुत्तावयारो—

§ ४९२ यह सूत्र सुगम है ।

* जिस स्थितिमे समयप्रबद्धशेष नही है, उससे आगे दूसरी स्थितिमे वह न होवे, तीसरी स्थितिमे न होवे, उससे आगे चौथी स्थितिमे न होवें, इस प्रकार क्रमसे जाते हुए वह समयप्रबद्धशेष उत्कृष्टसे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोमे नही होवें यह सम्भव है ।

§ ४९३ शका—यह सूत्र आरम्भ नही करना चाहिए, क्योकि पूर्व सूत्रके द्वारा ही इस सूत्रके अर्थविशेषका निर्णय किया जा चुका है, अत इसकी पुन प्ररूपणा करनेमे फलविशेष नही उपलब्ध होता ?

समाधान—ऐसी आशका नही करनी चाहिए, क्योकि पहले कहे गये अर्थकी विशेष सम्हाल करके पुन इससे आगे सामान्य स्थितियाँ इस क्रमसे पायी जाती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए उसकी प्ररूपणा करनेमे कोई दोष नही पाया जाता ।

इस प्रकार इस अर्थकी सम्हाल करके पुन इतने मात्र अन्तरका उल्लघन करके उससे आगे नियमसे समयप्रबद्धशेषसे युक्त स्थितियाँ होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते है—

* किन्तु उत्कृष्टसे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण स्थितिया जानेपर समयप्रबद्धशेषसे युक्त स्थितियाँ नियमसे होती हैं ।

§ ४९४ अन्तरकी अन्तिम स्थितियोंका उल्लघन कर उससे आगे समयप्रबद्धशेषसे युक्त एकसे लेकर आगे एक एकके क्रमसे बढकर प्राप्त होती हुई वे स्थितियाँ उत्कृष्टसे वर्षपृथक्त्वप्रमाण तक होती हैं इस प्रकार यह यहाँपर सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है । अब इन्ही एक और अनेक समयप्रबद्धोसे युक्त स्थितियोके अल्पबहुत्वका अनुसधान करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

* जाओ ताओ अविरहिदट्ठिदीओ ताओ एगसमयपबद्धसेसएण अविरहिदाओ थोवाओ। अणेगाणं समयपबद्धाण सेसएण अविरहिदाओ असखेज्जगुणाओ। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताण समयपबद्धाण सेसएण अविरहिदाओ असंखेज्जा भागा।

§ ४९५ एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा—'जाओ ताओ अविरहिदट्ठिदीओ' एव भणिदे जाओ अणतरमेव णिद्दिट्ठाओ समयपबद्धसेसएणाविरहिदाओ सामण्णट्ठिदीओ तासिमेसा थोवबहुत्तपरिक्खा अहिकीरदि त्ति वुत्त होइ। ताओ एगसमयपबद्धसेसएण अविरहिदाओ थोवाओ एव भणिदे वासपुधत्तमेत्तट्ठिदीसु जाओ एगसमयपबद्धसेसएणाविरहिदाओ ट्ठिदीओ आवलियाए असंखेज्जदिभागपमाणाओ होदूण उवरिमवियप्पपडिबद्धट्ठिदिविसेसेहिंतो थोवाओ त्ति भणिद होइ। 'अणयाणं समयपबद्धाण सेसएण अविरहिदाओ असखेज्जगुणाओ' एव भणिदे दो तिण्णिआदि जाव सखेज्जाणमसखेज्जाण वा समयपबद्धाणं सेसयेणाविरहिदट्ठिदीओ हेट्ठिमरासि पेक्खियूण सखेज्जगुणाओ त्ति णिद्दिट्ठ होइ। ण च तत्तो एदासिमसखेज्जगुणत्तमसिद्ध, एयवियप्पपडिबद्ध ट्ठिदिविसेसेहिंतो अणेयवियप्पपडिबद्धाणमेदासिमसखेज्जगुणत्तसिद्धीए णिव्वाहमुवलभादो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। 'पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ताण असखेज्जा भागा' एव भणिदे पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाणं सेसएहि अविरहिदाओ ट्ठिदीओ वासपुधत्तमेत्तीणं सयलसामण्णट्ठिदीणमसखेज्जदिभागमेत्ता होंति। सेसासेसहेट्ठिम वियप्पपडिबद्धसामण्णट्ठिदीओ पुण आवलियाए असखेज्जदिभागपमाण होदूण सयलसामण्ण

* जो समयप्रबद्धशेषसे सयुक्त स्थितियाँ कह आये हैं वे एक समयप्रबद्धशेषसे सयुक्त स्थितियाँ सबसे थोडी है। उनसे अनेक समयप्रबद्धशेषसे सयुक्त स्थितियाँ असख्यातगुणी हैं। उनमे पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धशेषसे सयुक्त स्थितियाँ असख्यात बहुभागप्रमाण हैं।

§ ४९५ अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह जैसे—'जाओ ताओ अविरहिदट्ठिदीओ' ऐसा कहनेपर जो अनन्तर पूर्व ही समयप्रबद्धशेषसे संयुक्त सामान्य स्थितियाँ कह आये हैं उनके यह अल्पबहुत्वकी परीक्षा प्रकृतमे अधिकृत है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'वे एक समयप्रबद्ध शेषसे सयुक्त स्थितियाँ थोडी हैं' ऐसा कहनेपर वर्षपृथक्त्वप्रमाण स्थितियोमे जो एक समयप्रबद्ध शेषसे सयुक्त स्थितियाँ हैं वे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण होकर आगेके विकल्पसे प्रतिबद्ध स्थितिविशेषोकी अपेक्षा स्तोक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। उनसे 'अनेक समयप्रबद्धशेषसे सयुक्त स्थितिया असख्यातगुणी हैं' ऐसा कहनेपर दो, तीन आदि स्थितियोसे लेकर क्रमसे सख्यात या असख्यात समयप्रबद्धोंके शेषसे युक्त स्थितियाँ अधस्तन राशिको देखते हुए असख्यातगुणी हैं ऐसा इस सूत्रमे निर्देश किया गया है। पहलेकी स्थितियोसे इनका असख्यातगुणापना असिद्ध नहीं है, क्योंकि एक विकल्पसे सम्बद्ध स्थितिविशेषोकी अपेक्षा अनेक विकल्पोसे सम्बद्ध इनके असंख्यातगुणपनेकी सिद्धि निर्बाधरूपसे उपलब्ध होती है।

शंका—यहाँपर गुणकार क्या है?

समाधान—यहाँपर आवलिके असख्यातवे भागप्रमाण गुणकार है।

'पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ताण० असखेज्जाभागा' ऐसा कहनेपर पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोके शेषोसे सयुक्त स्थितियाँ वर्षपृथक्त्वमात्र समस्त सामान्य स्थितियोके असंख्यात बहुभागप्रमाण होती हैं। परन्तु शेष समस्त अधस्तन विकल्पोसे प्रतिबद्ध

ट्ठिदीणमसंखेज्जदिभागमेत्तीओ होंति त्ति भणिदं होइ ।

संपहि एत्थ एगसमयपबद्धसेसएण अविरहिदट्ठिदीहिंतो दोण्हं समयपबद्धाण सेसएहिं अविरहिदाओ ट्ठिदीओ विसेसाहियाओ भवंति । एवं तिण्णि-चत्तारि-आदिसमयपबद्धाणं सेसयेणा विरहिदट्ठिदीओ विसेसाहियकमेण णेदव्वाओ जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताण समयपबद्धाण सेसएहिं अविरहिदाओ ट्ठिदीओ दुगुणाओ जादाओ त्ति एवमुवरि वि जाणियूण णेदव्वं । एवं च गमणसंभवे ताओ ट्ठिदीओ वियप्पेदूण अप्पाबहुअमेदमभणिय 'अणेयाण समयपबद्धाण सेसएहिं अविरहिदाओ ट्ठिदीओ असंखेज्जगुणाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताण सेसएहिं अविरहिदाओ ट्ठिदीओ असंखेज्जा भागा त्ति अव्वोगाढसरूवेण घेत्तूण तासिमप्पाबहुअं भणंतस्स चुण्णिसुत्तयारस्स को अहिप्पाओ त्ति पुच्छिदे भणदे—ठिदीओ थोवाओ, वासपुधत्तादो अब्भहिय पमाणाण तासिमेत्था संभवादो । समयपबद्धासेसवियप्पा पुण एगादि—एगुत्तरकमेण वड्ढमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जभागमेत्ता होंति त्ति ठिदिवियप्पेहिंतो असंखेज्जा अत्थि, तदो रूवुत्तरकमेण तेसिमेत्थ परूवणा ण संभवदि त्ति अव्वोगाढसरूवेण तेसिं जहासंभवमुवलब्भमाणाणमप्पाबहुअमेदं मुवइट्ठं त्ति वट्टव्वं । जहा समयपबद्धसेसयाणमेसा सव्वा परूवणा चउत्थभासगाहाणिबद्धा विहासिदा, तहा चेव भवबद्धसेसयाण पि णिरवसेसमणुगंतव्वा, विसेसाभावादो । एवं मूलगाहाए वसद्दसूचिदो अत्थो तदिय चउत्थभासगाहाहिं विहासिदो वट्टव्वो । अथवा 'कदि वा एगसमयेण' त्ति' एदं मूलगाहापच्छिमपदं मोत्तूण सेसाणं मूलगाहाए सव्वपदाणमत्थो पढम विदियभासगाहाहिं

सामान्य स्थितियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर समस्त सामान्य स्थितियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—अब यहाँ एक समयप्रबद्धशेष संयुक्त स्थितियोंसे दो समयप्रबद्धोंके शेषोंसे संयुक्त स्थितियाँ विशेष अधिक होती हैं । इसी प्रकार तीन चार आदि समयप्रबद्धोंके शेषोंसे संयुक्त स्थितियाँ विशेष अधिक क्रमसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोंके शेषोंसे संयुक्त स्थितियाँ दूनी होने तक ले जाना चाहिए । इसी प्रकार ऊपर भी जानकर ले जाना चाहिए । यहाँ इस प्रकार (आगे भी) गमन सम्भव होनेपर उन स्थितियोंको विकल्प करके अल्पबहुत्वके भेदका कथन न करके 'अणेयाण समयपबद्धाण सेसएहिं अविरहिदाओ ट्ठिदीओ असंखेज्जगुणाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताण सेसएहिं अविरहिदाओ ट्ठिदीओ असंखेज्जा भागा' इस प्रकार अव्यवगाढ़रूपसे ग्रहण कर उनका अल्पबहुत्व कहनेवाले चूर्णिसूत्रकारका क्या अभिप्राय रहा है ?

समाधान—ऐसी पृच्छा होनेपर आचार्य समाधान करते हुए कहते हैं—स्थितियाँ थोड़ी हैं, क्योंकि वर्षपृथक्त्वसे अधिक प्रमाणवाली उनका यहाँ प्राप्त होना असम्भव है । परन्तु समयप्रबद्धोंके समस्त भेद एकसे लेकर आगे एक-एकके क्रमसे वृद्धिको प्राप्त होते हुए पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होते है, इसलिए वे स्थितियोंके भेदोंसे असंख्यातगुणे हैं, इस कारण आगे एक अधिकके क्रमसे उनकी यहाँ प्ररूपणा सम्भव नहीं है, अतः अव्यवगाढरूपसे यहाँ यथासम्भव उपलभ्यमान उनका यह अल्पबहुत्व कहा गया जानना चाहिए ।

यहाँ जिस प्रकार चौथी भाष्यगाथामें निबद्ध समयप्रबद्धशेषोंकी यह पूरी प्ररूपणा विशेषरूपसे कही उसी प्रकार भवबद्धशेषोंकी भी पूरी प्ररूपणा जाननी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार मूल गाथामें आये हुए 'व' शब्दसे सूचित होनेवाले अर्थकी तीसरी और चौथी भाष्यगाथा द्वारा विभाषा की । अथवा 'कदि वा एगसमएण' इस प्रकार मूलगाथाके इस अन्तिम

विहासिदो। पुणो 'कदि वा एगसमएणेत्ति' एदस्स पच्छिमपदस्स अत्थो तदिय-चउत्थभासगाहाहिं विहासिदो त्ति वक्खाणेयव्वं। कदि वा सामण्णासामण्णाट्ठिदीओ एगसमयेण एगसंबंधेण णिरंतर-भावमुवगयाओ समुवलब्भंति त्ति पुच्छाहिसंबंधं काढूण वक्खाणे कीरमाणे तदिय चउत्थभास गाहाणमत्थस्स परिप्फुडमेव तत्थ पडिबद्धत्तदंसणादो। एवमेत्तिएण पबंधेण खवगसंबंधेण चउण्हं भासगाहाणमत्थविहासणं काढूण संपहि पयदमत्थमुवसंहरेमाणो इदमाह—

* एसा सव्वा चदुहिं गाहाहिं खवगस्स परूवणा कदा।

§ ४९६ गयत्थमेदमुवसंहारवक्कं।

* एदाओ चेव चत्तारि वि गाहाओ अभवसिद्धियपाओग्गे णेदव्वाओ।

§ ४९७ पुव्वमेदाओ चत्तारि भासगाहाओ भवसिद्धियपाओग्गविसए खवगसेढिसंबंधेण विहासिदाओ। पुणो एण्हिमदाओ चेव चत्तारि वि भासगाहाओ अट्ठमीए मूलगाहाए अत्थविहासणे पडिबद्धाओ अभवसिद्धियपाओग्गविसये विहासियव्वाओ, अण्णहा तव्विसये भवबद्धसेसयाण समय पबद्धसेसयाण च एत्तियमेत्ताणमेदविएसु ट्ठिदिविसेसेसु एदेण कमेणावट्ठाणं होदि त्ति जाणावणोवायाभावादो त्ति भणिदं होदि। को अभवसिद्धियपाओग्गविसयो णाम? भवसिद्धियाणमभवसिद्धियाण च जत्थ ट्ठिदि अणुभागबंधादिपरिणामा सरिसा होदूण पयट्टंति सो अभवसिद्धियपाओग्गविसयो त्ति

पदको छोड़कर मूलगाथाके शेष सब पदोके अर्थकी प्रथम और दूसरी भाष्यगाथा द्वारा विभाषा की। पुन 'कदि वा एगसमएण' इस प्रकार मूलगाथाके इस अन्तिम पदके अर्थकी तीसरी और चौथी भाष्यगाथा द्वारा विभाषा की ऐसा व्याख्यान करना चाहिए, क्योकि कितनी सामान्य और असामान्य स्थितियाँ एक समयमें एकके सम्बन्धसे निरन्तरपनेको प्राप्त होकर उपलब्ध होती हैं ऐसी पृच्छाका सम्बन्ध करके व्याख्यान करनेपर तीसरी और चौथी भाष्यगाथाओंकी स्पष्टरूपसे ही वहाँ प्रतिबद्धता देखी जाती है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा क्षपकके सम्बन्धसे चार भाष्यगाथाओंके अर्थकी विभाषा करके अब प्रकृत अर्थका उपसंहार करते हुए इस सूत्रको कहते हैं।

* चार भाष्यगाथाओ द्वारा क्षपककी यह सब प्ररूपणा की।

§ ४९६ यह उपसंहार करनेवाला वचन गतार्थ है।

* ये चारो भाष्यगाथाएँ अभव्यसिद्धिक जीवोंके भी प्रायोग्य हैं, अत उनकी अपेक्षा इनकी विभाषा करनी चाहिए।

§ ४९७ पूर्वमे ये चारो भाष्यगाथाएँ भव्यसिद्धिकप्रायोग्य जीवोंके विषयमे क्षपकश्रेणिके सम्बन्धसे विभाषित की गयी। पुन इस समय आठवी मूलगाथाके अर्थकी विभाषा करनेमे प्रतिबद्ध ये ही चारो भाष्यगाथाएँ अभव्यसिद्धिक जीवोके विषयमें विभाषा करने योग्य है, अन्यथा उनके विषयमें इतने भवबद्धशेषो और समयप्रबद्धशेषोका इतने स्थितिविशेषोमें इस क्रमसे अवस्थान होता है यह जाननेका कोई उपाय नही पाया जाता यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—अभवसिद्धिक जीवोके योग्य विषय क्या है?

समाधान—जहाँ भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक जीवोके योग्य स्थितिबन्ध और अनुभागबन्ध आदिके योग्य परिणाम सदृश होकर प्रवृत्त होते हैं, वह अभवसिद्धिक जीवोंके योग्य विषय है यह कहा जाता है।

भण्णदे। तदो एदम्मि अभवसिद्धियपाओग्ग विसयेभवसमयपबद्धसेसयाण पक्कवणट्ठमिमाओ अणतरणिद्दिट्ठाओ चत्तारि भासगाहाओ पुणो वि विहासियव्वाओ त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो।

* तत्थ पुव्व गमणिज्जा णिल्लेवणट्ठाणाणमुवदेसपरूवणा।

§ ४०८ तत्थ अभवसिद्धियपाओग्गविसये चदुण्हं भासगाहाणमत्थविहासणावसरे पुव्व पढममेव ताव गमणिज्जा अणुगतव्वा णिल्लेवणट्ठाणाणमुवदेसपरूवणा, तेसु अविण्णादेसु तण्णि बंधणभवसमयपबद्धसेसयाण चदुहि भासगाहाहि विहासणोवायाभावादो त्ति वुत्त होइ। तत्थ कि णिल्लवणट्ठाण णाम? एगसमये बद्धकम्मपरमाणवो बधावलियमेत्तकाले बोलिदे पच्छा उदय पविसमाणा केत्तिय पि काल सांतर णिरतरसरूवेणुदयमागतूण जम्हि समयम्हि सव्वे चेव णिस्सेस मुदय काऊण गच्छति तेसि णिरुद्धभवसमयपबद्धपदेसाण तण्णिल्लवणट्ठाणमिदि भण्णदे, तत्थ तेसि णिरवसेसभावेण णिल्लवणदसणादो। एवविहणिल्लेवणट्ठाणमक्कस्स समयपबद्धस्स भव बद्धस्स वा किमयविय‍प्प चेव होइ, आहो अणयवियप्पमिदि णिण्णयकरणट्ठमेसा उवएसपरूवणा एत्थाढविज्जदे। सा पुण णिल्लवणट्ठाणाणमुवदेसपरूवणा एत्थ दुविहा होदि त्ति जाणावणट्ठ मिदमाह—

* एत्थ दुविहो उवएसो।

इसलिए अभवसिद्धिक जीवोके योग्य इस विषयमे भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेषकी प्ररूपणा करनेके लिए इन अनन्तर पूर्व कही गयी चार भाष्यगाथाओकी यहाँ फिर भी विभाषा करनी चाहिए यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है।

* इस विषयमे सर्वप्रथम निर्लेपनस्थानोके उपदेशकी प्ररूपणा जानने योग्य है।

४०८ 'तत्थ' अर्थात् अभवसिद्धिक जीवोके योग्य विषयमे चार भाष्यगाथाओके अर्थकी विभाषा करते समय पुव्व अर्थात् सर्वप्रथम निर्लेपनस्थानोके उपदेशकी प्ररूपणा 'गमणिज्जा' अर्थात् जानने योग्य है, क्योकि उनके अविज्ञात रहनेपर तन्निमित्तक भवबद्धशेष और समयप्रबद्धशेषो की विभाषा करनेका अन्य कोई उपाय नही पाया जाता यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शका—यहाँ निर्लेपनस्थान किसे कहते है?

समाधान—एक समय द्वारा बन्धको प्राप्त हुए कर्मपरमाणु बन्धावलिकालके बीत जानेपर पश्चात् उदयमे प्रवेश करते हुए कितने ही काल तक सान्तर और निरन्तररूपसे उदयमे आकर जिस समय सभी उदयमे आकर निकल जाते हैं उन विवक्षित भवबद्धशेषो और समयप्रबद्धशेषोंका वह निर्लेपनस्थान कहलाता है, क्योकि वहाँपर उन कर्मपरमाणुओका पूरी तरहसे निर्लेपन देखा जाता है।

इस प्रकारका निर्लेपनस्थान एक समयप्रबद्धका या भवबद्धका क्या एक भेदरूप होता है या अनेक भेदरूप होता है इस बातका निर्णय करनेके लिए यह उपदेशकी प्ररूपणा यहाँपर आरम्भ की जाती है। परन्तु वह निर्लेपनस्थानके उपदेशकी प्ररूपणा यहाँ दो प्रकार की है इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* प्रकृतमे दो प्रकारका उपदेश पाया जाता है।

§ ४९९ एदम्मि णिल्लेवणट्ठाणाणं परूवणावहारणे दुविहो पुव्वाइरियाणमुवएसो वट्टदि त्ति भणिदं होदि, पवाइज्जमाणापवाइज्जमाणभेदेण दोण्हमुवएसाणमेत्थ संभवदंसणादो।

* एक्केण उवदेसेण कम्मट्ठिदीए असंखेज्जा भागा णिल्लेवणट्ठाणाणि ।

§ ५०० पुव्वुत्ताणं दोण्हमुवएसाणं मज्झे एक्केण ताव उवएसेण कम्मट्ठिदीए असंखेज्जभागमेत्ताणि एगसमयपबद्धस्स भवबद्धस्स वा णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति त्ति सुत्तत्थसंबंधो। संपहि कधमेत्तियमेत्ताणि एगसमयपबद्धस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि जादाणि त्ति पुच्छाए णिण्णयं कस्सामो। तं जहा—जो समयपबद्धो णिरुद्धकम्मट्ठिदीए आदिसमयम्मि बद्धो, तस्स पदेसग्गं बंधसमयप्पहुडि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं णिच्छयेण होदूण पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालचरिमसमए णिस्सेसं होदूण गमणपाओग्गं होदि, हेट्ठिमकालब्भंतरे ओकड्डियूण वेदिज्जमाणस्स तस्स तम्मि उद्देसे णिरवसेसं णिल्लेवणे विरोहाणुवलंभादो। तदो एवमेदं णिरुद्धसमयपबद्धस्स णिल्लेवणट्ठाणं होदि।

§ ५०१ अथवा तत्तो उवरिमसमयम्मि वि तं पदेसग्गं णिस्सेसं होदूण गमणपाओग्गं होदि, हेट्ठिमओकड्डणापरिणामाणं तहाविहणिल्लेवणट्ठाणुप्पत्तीए वि कारणभूदाणं संभवोवलंभादो। एवं समयुत्तरकमेण णिरुद्धसमयपबद्धस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि बज्झंतरंगकारणसव्वपेक्खाणि होदूण गच्छंति जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति। तदो कम्मट्ठिदीए असंखेज्जभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि णिरुद्धसमयपबद्धस्स लद्धाणि होंति। एवं सव्वेसिं पि समयपबद्धाणमप्पणो कम्मट्ठिदीए असंखेज्जा भागा णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति त्ति वत्तव्वं। एवं चेव भवबद्धाण

---

§ ४९९ इस निर्लेपनस्थानोंकी प्ररूपणाके अवधारण करनेमें पूर्व आचार्योंका उपदेश दो प्रकारका जानना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि यहांपर प्रवाह्यमान और अप्रवाह्यमानके भेदसे दो प्रकारके उपदेश सम्भव दिखाई देते हैं।

* एक उपदेशके अनुसार कर्मस्थितिके असंख्यात बहुभागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं।

§ ५०० पूर्वोक्त दोनों प्रकारके उपदेशोंमें एक उपदेशके अनुसार तो एक समयप्रबद्धके या भवबद्धके कर्मस्थितिके असंख्यात बहुभागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। अब एक समयप्रबद्धके इतने निर्लेपनस्थान कैसे हो जाते हैं ऐसी पृच्छा होनेपर आगे उसका निर्णय करेंगे। वह जैसे—जो समयप्रबद्ध विवक्षित कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बन्धको प्राप्त हुआ है उसका प्रदेशपुंज बन्धसमयसे लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निश्चयसे रहकर पुनः पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके अन्तिम समयमें निःशेष होकर गमनके योग्य होता है, मात्र अधस्तन कालके भीतर अपकर्षण होकर वेद्यमान उसके उस स्थानमें पूरी तरह निर्लेपनको प्राप्त होनेमें विरोध नहीं उपलब्ध होता। इसलिए वह एक विवक्षित समयप्रबद्धका निर्लेपनस्थान है।

§ ५०१ अथवा उससे अगले समयमें भी उसका प्रदेशपुंज निःशेष होकर गमनके योग्य होता है, क्योंकि इससे पहले उस प्रकारके निर्लेपनस्थानकी उत्पत्तिमें कारणभूत अपकर्षणप्रायोग्य परिणाम सम्भव नहीं हैं। इस प्रकार एक एक समय अधिकके क्रमसे विवक्षित समयप्रबद्धके बाह्य और आभ्यन्तर कारणसापेक्ष निर्लेपनस्थान होकर कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक जाते हैं। इसलिए विवक्षित समयप्रबद्धके निर्लेपनस्थान कर्मस्थितिके असंख्यात बहुभाग प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार सभी समयप्रबद्धोंके अपनी-अपनी कर्मस्थितिके असंख्यात बहुभागप्रमाण निर्लेपनस्थान

पि णिल्लेवणट्ठाणाणमेसो पमाणाणुगमो कायव्वो, एदम्मि उवदेसे अवलंविज्जमाणे पयारंतरा संभवादो। एसो च अपवाइज्जमाणोवएसो णाम बहुएहिं आइरिएहिं अणभिमयत्तादो। संपहि पवाइज्जतोवएसमस्सियूण णिल्लेवणट्ठाणाण पमाणविसेसावहारणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* एक्केण उवएसेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

§ ५०२ एक्केण उवएसेण पवाइज्जमाणेण उवएसेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग मेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति त्ति सुत्तत्थसंबंधो। कुदो पुण एदस्स उवएसस्स पवाइज्ज माणत्तमवगम्मदे? उवरिमचुण्णिसुत्तणिद्देसादो। एदस्स भावत्थो—कम्मट्ठिदीए आदिसमयम्मि जो बद्धो समयपबद्धो सो बंधसमयप्पहुडि जाव कम्मट्ठिदीए असंखेज्जा भागा गच्छंति ताव णिच्छयेण अच्छिदूण तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकम्मट्ठिदिसेसे तम्हि सेसे अपरिसेस मुदयं कादूण सुद्धं णिल्लविज्जदि, तेण तमेगं णिल्लवणट्ठाणं जाद। अधवा तदुवरिमसमयम्मि णिस्सेसमुदयं कादूण गच्छदि त्ति तं विदियं णिल्लेवणट्ठाणं होइ। एवं समयुत्तरकमेण णिल्ले वणट्ठाणाणि गच्छंति जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति। तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग मेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि पवाइज्जमाणोवएसमस्सियूण लब्भंति त्ति घेत्तव्वं। संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुत्तरसुत्तणिद्देसो—

* जो पवाइज्जइ उवएसो तेण उवदेसेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि वग्गमूलाणि णिल्लेवणट्ठाणाणि।

होते हैं ऐसा कहना चाहिए। इसी प्रकार भवबद्धोके भी निर्लेपनस्थानोंका यह प्रमाणानुगम करना चाहिए, क्योंकि इस उपदेशका अवलम्बन करनेपर अन्य प्रकार सम्भव नहीं है। यह अप्रवाह्य मान उपदेश है, क्योंकि यह बहुत आचार्योंके द्वारा सम्मत नहीं है। अब प्रवाह्यमान उपदेशका आश्रय लेकर निर्लेपनस्थानोंके प्रमाणविशेषका अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* एक उपदेशके अनुसार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं।

§ ५०२ 'एक्केण उवएसेण' अर्थात् प्रवाह्यमान उपदेशके अनुसार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है।

शंका—यह उपदेश प्रवाह्यमान है यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—आगे चूर्णिसूत्रके निर्देशसे जाना जाता है कि यह उपदेश प्रवाह्यमान है।

इस सूत्रका भावार्थ—कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो समयप्रबद्ध बंधता है वह बन्धसमयसे लेकर कर्मस्थितिके असंख्यात बहुभाग जाने तक नियमसे अवस्थित रहकर पश्चात् पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कर्मस्थितिके शेष रहनेपर उस शेष समयमें पूरा उदयको प्राप्त होकर पूरी तरहसे निर्लेपनको प्राप्त हो जाता है। इस कारण वह इस प्रकार निर्लेपनस्थान हो जाता है। अथवा उससे अगले समयमें पूरी तरहसे उदयको प्राप्त हो जाता है इसलिए वह दूसरा निर्लेपन स्थान हो जाता है। इस प्रकार एक एक समय अधिकके क्रमसे निर्लेपनस्थान कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक प्राप्त होते जाते हैं। इस कारण प्रवाह्यमान उपदेशके अनुसार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान प्राप्त होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेके सूत्रका निर्देश करते हैं—

* जो प्रवाह्यमान उपदेश है उस उपदेशके अनुसार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं। जिनका प्रमाण असंख्यात वर्गमूलप्रमाण है।

§ ५०३ जो पवाइज्जइ उवएसो सव्वाइरिएहिं अविसंवादसरूवेण वक्खाणिज्जदि तेण उवएसेण णिल्लेवणट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जभागमेत्ताणि होंति । होंताणि वि ताणि असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलमसंखेज्जरूवेहिं पलिदोवमद्धच्छेदणएहिंतो असंखेज्जगुण-हीणेहिं पलिदोवमे ओवट्टिदे भागलद्धम्मि तप्पमाणाणमणवसणादो । एवमेत्तिएण पबंधेण णिल्लेवणट्ठाणाणमुवएसभेदावलंबणेण पमाणविणिण्णयं काऊण तत्थ जो पवाइज्जमाणो उवएसो त चेव घेत्तूण उवरिमं परूवणमाढवेमाणो पुव्वमेव ताव जहण्णणिल्लेवणट्ठाणप्पहुडि जावुक्कस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि त्ति एदेसु णिल्लेवणट्ठाणेसु णिल्लेविदपुव्वाणं समयपबद्धाणमगजीवसंबंधेण अदीदकालविसये णिल्लेवणकालप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तपबंधमाह—

* अदीदे काले एगजीवस्स जहण्णए णिल्लेवणट्ठाणे णिल्लेविदपुव्वाण समय-पबद्धाणमेसो कालो थोवो ।

§ ५०४ एदस्स सुत्तस्सत्थो वुच्चदे—अदीदकाले एगजीवस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणप्पहुडि जाव उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणे त्ति ताव एदेसु णिल्लेवणट्ठाणेसु पादेक्कमणंताणंता णिल्लेवणवारा गदा । तत्थ जहण्णए णिल्लेवणट्ठाणे पुणो पुणो ठाइदूण समयपबद्धे णिल्लेवेमाणस्स तस्स जो कालो अणंतसमयावच्छिण्णपमाणो अदीदकालब्भंतरे सव्वत्थ जहासंभवमुच्चिणिदूण गहिदसरूवो सो सव्वत्थोवो त्ति वुत्तं होदि ।

§ ५०३ जो उपदेश प्रवाहित हो रहा है अर्थात् सब आचार्योंके द्वारा अविसंवादीरूपसे व्याख्यान हो रहा है उस उपदेशके अनुसार निर्लेपनस्थान पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण होते हैं। ऐसा होते हुए भी वे असख्यात पल्योपमके प्रथम वर्गमूलप्रमाण हैं। अर्थात् पल्योपमके अर्धच्छेदोसे असंख्यातगुणे हीन असंख्यातसे पल्योपमके भाजित करनेपर जो भाग लब्ध आवे वे तत्प्रमाण है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा उपदेशभेदका अवलम्बन लेकर निर्लेपनस्थानोके प्रमाणका निर्णय करके उनमे जो प्रवाह्यमान उपदेश है उसे ग्रहण कर आगेके प्रबन्धका आरम्भ करते हुए सवप्रथम जघन्य निर्लेपनस्थानसे लेकर उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानोके प्राप्त होने तक इन निर्लेपनस्थानोमे जिनका पहले निर्लेपन किया गया है ऐसे निर्लेपनस्थानोके एक जीवके सम्बन्धसे अतीत कालविषयक निर्लेपनकालसम्बन्धी अल्पबहुत्वका प्ररूपण करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* अतीत कालमे जघन्य निर्लेपनस्थानमे स्थित एक जीवका निर्लेपितपूर्व समयप्रबद्धों सम्बन्धी यह काल सबसे थोड़ा है।

§ ५०४ अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अतीत कालमें एक जीवके जघन्य निर्लेपनस्थानसे लेकर उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान तकके इन निर्लेपनस्थानोमें प्रत्येकके अनन्तान त निर्लेपनवार व्यतीत हुए हैं। उनमे जघन्य निर्लेपनस्थानमें पुन पुन स्थापित करके समयप्रबद्धोका निर्लेपन करनेवाले का जो अनन्त समयप्रमाण काल अतीत कालके भीतर व्यतीत हुआ है, यथासम्भव एकत्रित करके ग्रहण किया गया व$_2$ काल सबसे थोडा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

विशेषार्थ—जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट तक जितने भी निर्लेपनस्थान हैं उनमेसे जघन्य निर्लेपन-स्थानको अतीत कालमें एक जीवने जितनी बार किया है तत्सम्बन्धी समयप्रबद्धोका जो समुदित काल है वह सबसे थोडा है यह इस सूत्रका भाव है।

* समयुत्तरे विसेसाहिओ ।

§ ५०५ जहण्णणिल्लेवणट्ठाणादो समयुत्तरे विदियणिल्लेवणट्ठाणे अच्छिदूण णिल्लेविद पुव्वाणं समयपबद्धाण एसो कालो अदीदकालविसये सव्वत्थ संकलिदसरूवो एगजीवपडिबद्धो पुव्वुत्तजहण्णट्ठाणपडिबद्धणिल्लेवणकालादो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तो विसेसो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेयखंडमेत्तो । असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणमेत्थतणमेगगुणहाणिट्ठाणंतरं विरलेयूण जहण्णट्ठाणणिल्लेवणकाले समखंडं कादूण दिण्णे तत्थेगरूवधरिदमेत्तेण तत्तो विदियणिल्लेवणट्ठाणपडिबद्धो एसो णिल्लेवणकालो विसेसाहिओ त्ति वुत्तं होइ ।

* पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ते दुगुणो ।

§ ५०६ एवं दुसमयुत्तरतिसमयुत्तरादिकमेण णिल्लेवणकालो अणंतरोवणिधाए विसेसाहिओ होदूण गच्छमाणो परंपरोवणिधाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणेसु गदेसु तत्थतणणिल्लेवणकालो जहण्णट्ठाणणिल्लेवणकालादो दुगुणमेत्तो जादो, पुव्वुत्तगुणहाणिमेत्तविरलणाए सव्वरूवधरिदाणमेत्थ पवेसदंसणादो। पुणो वि एदेणेव कमेण उप्पण्णुप्पण्णदुगुणवड्ढिट्ठाणमवट्ठिदगुणहाणिविरलणाए खंडियूण तत्थेगखंडं विसेसाहियं कादूण णेदव्वं जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदुगुणवड्ढीओ गंतूण तदित्थदुगुणवड्ढीए जवमज्झसरूवेण

---

* उससे अनन्तर समयसम्बन्धी निर्लेपनस्थानमें स्थित जीवका निर्लेपित पूर्व समयप्रबद्धोंका सम्बन्धित काल विशेष अधिक है ।

§ ५०५ जघन्य निर्लेपनस्थानसे अनन्तर समयवर्ती दूसरे निर्लेपनस्थानमें रहकर निर्लेपित-पूर्व समयप्रबद्धोंका अतीत कालविषयक सर्वत्र सकलित हुआ यह काल पूर्वोक्त जघन्य स्थानसे सम्बन्ध रखनेवाले निर्लेपनकालसे विशेष अधिक है ।

शंका—कितना अधिक है ?

समाधान—पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतना अधिक है। अर्थात् असंख्यात पल्योपमोंके प्रथम वर्गमूलप्रमाण यहाँके एक गुणहानिस्थानान्तरको विरलित करके उसे जघन्य निर्लेपनस्थानके कालके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहाँ जो काल एक अंकके प्रति प्राप्त हो उतना दूसरे निर्लेपनस्थानसे सम्बन्ध रखनेवाला यह निर्लेपनकाल विशेष अधिक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* इस विधिसे क्रमसे जाते हुए पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंके जाने पर वहाँ अन्तिम निर्लेपनस्थानका प्राप्त हुआ काल दूना होता है ।

§ ५०६ इसी प्रकार दो समय अधिक, तीन समय अधिक आदिके क्रमसे निर्लेपनकाल अनन्तर उपनिधाकी अपेक्षा विशेष अधिक होकर जाता हुआ परम्परोपनिधाकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंके जानेपर वहाँ प्राप्त निर्लेपनस्थानका काल जघन्य निर्लेपन स्थानके कालसे दूना हो जाता है, क्योंकि पूर्वोक्त गुणहानिप्रमाण विरलन करनेपर वहाँ समस्त अंकोंके प्रति प्राप्त कालका यहाँ प्रवेश देखा जाता है। आगे फिर भी इसी क्रमसे पुन पुन उत्पन्न हुए द्विगुणवृद्धिस्थानको अवस्थित गुणहानिके विरलनके द्वारा खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण कालको विशेष अधिक करके तब तक ले जाना चाहिए जब जाकर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणवृद्धियाँ जाकर वहाँ प्राप्त हुई वृद्धिमें यवमध्यस्वरूपसे निर्लेपनकाल उत्पन्न

णिल्लेवणकालो समुप्पण्णो त्ति। एवं च जवमज्झट्ठाणमुप्पज्जमाणं णिल्लेवणट्ठाणसयलद्धाणस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं चेव गतूण समुप्पण्णमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* ठाणाणमसंखेज्जदिभागे जवमज्झं।

§ ५०७ आदीदो प्पहुडि कमवड्ढीए जाव एद्दूर ताव आगतूण पुणो एत्तो उवरि कमहाणीए गमणं पेक्खियूणेत्थ जवमज्झववएसो पयट्टाविदो। तदो णिल्लेवणट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे असंखेज्ज-दुगुणवड्ढिअद्धाणसमण्णिदे जवमज्झं होदूण पुणो जवमज्झणिल्लेवणट्ठाणकालादो उवरिमणिल्ले-वणट्ठाणकालो हायमाणो गच्छदि जाव हेट्ठिमद्धाणादो असंखेज्जगुणमेत्तद्धाणमुवरि गतूण उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणम्मि णिल्लेविदपुव्वाणं समयपबद्धाणं णिल्लेवणकालो पयदजवमज्झपरूव-णाए चरिमवियप्पो जादो त्ति। सव्वेसु च ट्ठाणेसु पादेक्कमदीदकालस्सासंखेज्जदिभागमेत्तो चेव णिल्लेवणकालो समुवलद्धो दट्ठव्वो। सेसासेसविसेसपरूवणा जाणिय कायव्वा। संपहि एत्थ जवमज्झादो हेट्ठिमोवरिमणाणागुणहाणिसलागाणं पमाणविसेसावहारणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* णाणादुगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमच्छेदणाणमसंखेज्जदिभागो।

§ ५०८ एयगुणहाणिट्ठाणंतरेण असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणेण सव्वणिल्ले-वणट्ठाणद्धाणे ओवट्टिदे णाणागुणहाणिसलागाओ आगच्छंति। तासिं च पमाणं पलिदोवमच्छेद-णयाणमसंखेज्जदिभागमेत्तं चेव होइ। कुदो एदमवगम्मदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो। संपहि एवं

होता है। और यह यवमध्यस्थान उत्पन्न होता हुआ निर्लेपनस्थानसम्बन्धी स्थानोंके असंख्यातवें भागप्रमाण ही जाकर उत्पन्न हुआ है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* इस विधिसे निर्लेपनस्थानोंके असंख्यातवें भागपर यवमध्य होता है।

§ ५०७ प्रारम्भसे लेकर क्रमवृद्धिपूर्वक सर्वप्रथम यहाँ तक आकर पुनः इससे आगे क्रमसे होनेवाली हानिको देखकर यहाँ यवमध्य संज्ञा रखनी चाहिए। इसलिए निर्लेपनस्थानोंके असंख्यातवें भागमें असंख्यात द्विगुणवृद्धिस्थानोंसे युक्त मध्यमें यवमध्य होकर पुनः यवमध्य निर्लेपन स्थानके कालसे उपरिम निर्लेपनकाल घटता हुआ तबतक जाता है जब आकर अधस्तन स्थानसे असंख्यातगुणे स्थान आगे जाकर उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानमें जिनका पहले निर्लेपन किया है ऐसे समयप्रबद्धोंका प्रकृत यवमध्य प्ररूपणाके अन्तिम विकल्परूप निर्लेपनकाल हो जाता है। इस प्रकार और सब स्थानोंमें प्रत्येक अतीत कालका असंख्यातवाँ भागप्रमाण ही निर्लेपनकाल उपलब्ध होता है ऐसा जानना चाहिए। शेष समस्त विशेषोंकी प्ररूपणा जानकर करनी चाहिए। अब यहाँपर यवमध्यसे अधस्तन और उपरिम नाना गुणहानिशलाकाओंके प्रमाणविशेषका अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* नाना द्विगुणगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके अर्धच्छेदोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

§ ५०८ असंख्यात पल्योपमके प्रथम वर्गमूलोंके प्रमाणस्वरूप एक गुणहानिस्थानान्तरसे समस्त निर्लेपनस्थानोंके अध्वानके भाजित करनेपर नाना गुणहानिशलाकाएँ आ जाती हैं। उनका प्रमाण पल्योपमके अर्धच्छेदोंके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है।

परिच्छिण्णपमाणाहिं णाणागुणहाणिसलागाहिं णिल्लेवणट्ठाणसयलद्धाणे ओवट्टिदे एयगुणहाणिट्ठाणंतरपमाणमागच्छदि त्ति घेत्तव्वं ।

* णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ।

§ ५०९ सुगमं ।

* एयगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।

§ ५१० को गुणगारो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि, हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिम्मि ओवट्टिदे तहाविहगुणगारसमुप्पत्तिदंसणादो । एसा सव्वा वि परूवणा समयपबद्धणिल्लेवणट्ठाणाणि अस्सियूण परूविदा । एवं चेव भवबद्धाण पि णिल्लेवणट्ठाणाणि पवाइज्जंतोवएसभेदमस्सियूण णेदव्वाणि विसेसाभावादो । णवरि समयपबद्धस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणादो उवरि असंखेज्जाओ ट्ठिदीओ अब्भुस्सरियूण भवबद्धाण जहण्णणिल्लेवणट्ठाण होदि त्ति । तत्तो प्पहुडि पुव्वुत्ता जवमज्झपरूवणा कालविसया णेदव्वा, जम्हि चेव उद्देसे समयपबद्धणिल्लेवणट्ठाणाण जवमज्झं जादं तम्हि चेव भवबद्धाणि णिल्लेवणट्ठाणाण पि जवमज्झं होदि त्ति घेत्तव्वं । कुदो एदं परिच्छिज्जदे ? उवरि भणिस्समाणचुण्णिसुत्तादो । एवमेत्तिएण पबंधेण भवबद्ध समयपबद्धणिल्लेवणट्ठाणाण सरूवं जाणाविय संपहि एदेसु णिल्लेवणट्ठाणेसु णिल्लेविज्जमाणभव समयपबद्ध

अब इस प्रकार जिनका प्रमाण अवगत कर लिया है ऐसी नाना गुणहानिशलाकाओंके द्वारा निर्लेपनस्थानके सकल अध्वानके भाजित करनेपर एक गुणहानिस्थानान्तरका प्रमाण प्राप्त होता है यह ग्रहण करना चाहिए ।

* नाना गुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ।

§ ५०९ यह सूत्र सुगम है ।

* उनसे एक गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ।

§ ५१० शंका—गुणकारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकारका प्रमाण है, क्योंकि अधस्तन राशिसे उपरिम राशिके भाजित करनेपर उस प्रकारके गुणकारकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

यह सब प्ररूपणा समयप्रबद्ध निर्लेपनस्थानोंका आलम्बन लेकर की है । इसी प्रकार भवबद्धोंके निर्लेपनस्थानोंकी भी प्ररूपणा प्रवाह्यमान उपदेशका अवलम्बन लेकर जाननी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई भेद नहीं है । इतनी विशेषता है कि समयप्रबद्धके जघन्य निर्लेपनस्थानसे ऊपर असंख्यात स्थितियोंको उत्सारित करके भवबद्धोंका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है । पुन उससे आगे कालविषयक पूर्वोक्त यवमध्यप्ररूपणा ले जानी चाहिए । जिस स्थानपर समयप्रबद्ध निर्लेपनस्थानोंका यवमध्य प्राप्त होता है उसी स्थानपर भवबद्ध निर्लेपनस्थानोंका भी यवमध्य प्राप्त होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—आगे कहे जानेवाले चूर्णिसूत्रसे जाना जाता है ।

इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा भवबद्ध और समयप्रबद्ध निर्लेपनस्थानोंके स्वरूपका ज्ञान कराकर अब इन निर्लेप्यमानस्थानोंमें निर्लेप्यमान भवबद्धशेषोंकी और समयप्रबद्धशेषोंको चार

सेसयाणं चदुण्हं भासगाहाणं विसेसिऊण पवणं कुणमाणो तत्थ ताव पढमभासगाहाए अत्थ विहासणट्ठमुवरिम पबंधमाह—

*** एकम्हि ट्ठिदिविसेसे एक्कस्स वा समयपबद्धस्स सेसयं दोण्हं वा तिण्हं वा उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाणं।**

§ ५११ 'कदि वा एगसमयेणेत्ति' एवं मूलगाहाए चरिमावयवमस्सियूण अभवसिद्धियपाओग्गविसये पढमभासगाहाए अत्थविहासणे कीरमाणे भवसिद्धियपाओग्गविसयपरूवणादो णत्थि किंचि णाणत्तमिदि एदेण सुत्तेण जाणाविदं, उहयत्थ वि एगट्ठिदिविसेसेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धसेसाणमुक्कस्सपक्खेण संभवं पडि विसेसाभावादो।

*** एवं चेव भवबद्धसेसाणि।**

§ ५१२ जहा समयपबद्धसेसयाणि एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि तहा चेव भवबद्धसेसाणि वि होंति त्ति भणिदं होइ। सेसं सुगमं। एवमेत्तिये अत्थे विहासिदे तदो पढमभासगाहाए अत्थविहासा अभवसिद्धियपाओग्गविसये समप्पइ त्ति जाणावणट्ठमुवसंहारवक्कमाह—

*** पढमाए गाहाए अत्थो समत्तो भवदि।**

§ ५१३ सुगमं। णवरि एत्थुद्देसे किंचि परूवणाविसेसं पढमभासगाहापडिबद्धमत्थि तमेत्थ

भाष्यगाथाओ द्वारा विशेषरूपसे प्ररूपणा करते हुए यहाँ सर्वप्रथम प्रथम भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा करनेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* एक स्थितिविशेषमें एक समयप्रबद्धका शेष पाया जाता है, दो या तीन समयप्रबद्धोंके शेष पाये जाते हैं। इस विधिसे उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोंके शेष पाये जाते हैं।

§ ५११ मूलगाथाके 'कदि वा एगसमयेणेत्ति' इस अन्तिम चरणका आश्रय लेकर अभव्यसिद्धिक जीवोंके योग्य विषयमें प्रथम भाष्यगाथाका अर्थ करनेपर भव्यसिद्धिक जीवोंके योग्य विषयकी प्ररूपणासे कुछ भी भेद नहीं है यह इस सूत्र द्वारा ज्ञान कराया गया है, क्योंकि दोनों प्रकारके ही जीवोंके एक स्थितिविशेषमें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धशेष उत्कृष्ट पक्षकी अपेक्षा भी सम्भव होनेके प्रति कोई भेद नहीं पाया जाता।

* इसी प्रकार भवबद्धशेषोंकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए।

§ ५१२ जिस प्रकार एक स्थितिविशेषमें समयप्रबद्धशेष उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पाये जाते हैं उसी प्रकार भवबद्धशेष भी पाये जाते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। शेष कथन सुगम है। इस प्रकार इतने अर्थकी विभाषा करनेपर अभव्यसिद्धिक जीवके विषयमें प्रथम भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त होती है। इस प्रकार इस बातका ज्ञान करानेके लिए उपसंहारस्वरूप सूत्रको कहते हैं।

* प्रथम भाष्यगाथाका अर्थ समाप्त होता है।

§ ५१३ यह सूत्र सुगम है। इतनी विशेषता है कि इस स्थानपर प्रथम भाष्यगाथासे

पुव्वावरपरामरसकुसलेहिं चिंतिऊण णवव्वमिदि अत्थसमप्पणं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* जवमज्झं कायव्वं विस्सरिदं लिहिदुं ।

§ ५१४ एवं भणतस्साहिप्पाओ—खवगपाओग्गपरूवणाए अभवसिद्धियपाओग्गपरूवणाए च पढमभासगाहाए अत्थपरूवणं कादूण पुणो तत्थ तेहिं भव समयपबद्धसमयेहिं एगट्ठिदिविसय-पडिबद्धेहिं णाणाकालसबंधेण एगादिएगुत्तरकमेण लब्भमाणेहिं समयाविरोहेण जवमज्झं पि कायव्वमत्थि। णवरि तमम्हेहिं लिहिदुं विस्सरिदं छदुमत्थभावेण। तदो तमत्थ वक्खाणाइरिएहिं चिंतिय णवव्वमिदि। कधं पुण पुव्वावरपरामरसकुसलस्स सुत्तयारस्स विस्सरणसंभवो त्ति णासंक-णिज्ज, अविस्सरिदसरूवं पि तं जवमज्झं सुबोहं ति कादूण विस्सरणणिभेण सिस्साणमत्थसमप्पणं कुणमाणस्स तद्दोसाणवयारादो। 'विचित्रा शैली सूत्रकाराणाम्' इति न्यायात्। तदो तमत्थ परम गुरुसंपदायबलेण वत्तइस्सामो। तं जहा—

एगट्ठिदिविसेसम्मि अदीदे काले एक्कस्स जीवस्स एगेगसमयपबद्धसेसयमच्छिऊण तेण सरूवेण जे णिल्लेविदा समयपबद्धा ते थोवा। तेसिं पादेक्कं गहिदसलागाओ अणंताओ होदूण थोवाओ त्ति भणिदं होदि। पुणो दोण्णि दोण्णि समयपबद्धसेसयाणि एगट्ठिदिविसेसे होदूण उदयं कादूण गदा जे समयपबद्धा ते विसेसाहिया। एत्थ विसेसपडिभागो पलिदोवमस्स असंखेज्जदि

सम्बंध रखनेवाला किंचित् प्ररूपणाविशेष है उसे यहाँपर पूर्वापर अर्थका परामर्श करनेमें कुशल जीवोंको विचारकर जान लेना चाहिए। इस प्रकार अर्थकी समाप्ति करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* यहाँपर यवमध्य करना चाहिए। उसे लिखनेका स्मरण नहीं रहा।

§ ५१४ इस प्रकार कहनेवाले आचार्यका यह अभिप्राय है कि क्षपकके योग्य प्ररूपणामें और अभव्यसिद्धिक जीवोंके योग्य प्ररूपणामें प्रथम भाष्यगाथाके अर्थकी प्ररूपणा करके पुनः वहाँ एक स्थितिके विषयमें सम्बन्ध रखनेवाले नाना कालोंके सम्बन्धसे एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे प्राप्त होनेवाले भवबद्ध और समयप्रबद्धसम्बन्धी समयोंके द्वारा समयके अविरोधपूर्वक यवमध्य भी करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि छद्मस्थ होनेके कारण उसे लिखनेका हमें स्मरण नहीं रहा। इसलिए उसका यहाँपर व्याख्यानाचार्योंके द्वारा विचार करके कथन करना चाहिए।

शंका—पूर्वापर आगमका परामर्श करनेमें कुशल सूत्रकारका इसका विस्मरण होना कैसे सम्भव है ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह यवमध्य अविस्मरणस्वरूप होकर भी सुबोध है, ऐसा समझकर मानो उसे भूल गये हों इस प्रकार शिष्योंको अर्थके समर्पण करनेमें कुशल आचार्यपर उक्त दोषका अवतार नहीं होता अर्थात् उक्त दोष लागू नहीं होता, क्योंकि 'सूत्रकारोंके कथन करनेकी शैली विचित्र अर्थात् अनेक प्रकारकी होती है' ऐसा न्याय है। इसलिए उसका यहाँपर परम गुरुके सम्प्रदायके बलका अवलम्बन लेकर बतलावेंगे। वह जैसे—

अतीत कालविषयक एक स्थितिविशेषमें एक जीवके एक एक समयप्रबद्धशेष होकर उस रूपसे जो समयप्रबद्ध निर्लेपित हुए हैं वे सबसे थोड़े हैं। उनमेंसे प्रत्येककी ग्रहण की गयी शलाकाएँ अनंत होकर सबसे थोड़ी हैं यह कहा गया है। पुनः एक स्थितिविशेषमें दो दो समय प्रबद्ध उदयको प्राप्त कर जो समयप्रबद्ध गत हो गये वे विशेष अधिक हैं। यहाँपर विशेष लानेके

भागो। एवं तिण्णि-चत्तारिआदिकमेण गंतूण पुणो पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तसमयपबद्धसेसयाणि एक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे अच्छिदूण उदय काढूण जाणि गदाणि तेसिं गहिदसलागाओ दुगुणाओ। एव पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तदुगुणवड्ढीओ गंतूण तदो जवमज्झ होदि। तत्तो उवरि सव्वत्थ विसेसहीणकमेण गच्छदि जाव सव्वुक्कस्सपलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तसमयपबद्धसेससलागाहिं एगट्ठिदिविसयाहिं विसेसिदा समयपबद्धा चरिमवियप्पा होदूण पज्जवसिदा त्ति। एव भवबद्धसेसयाण पि णेदव्व त्ति।

§ ५१५ अथवा एवमेत्थ जवमज्झ कायव्वमिदि अण्णे वक्खाणाइरिया भणति। त कथ? एगट्ठिदिविसेसे सेसभावेणच्छिदूण ओकड्डुणाए उदयमागंतूण णिल्लेवणभावं गदसमयपबद्धा थोवा। जे दोसु ट्ठिदिविसेसेसु सेसभावेणच्छिदूण ओकड्डुणावसेणुदय काढूण णिल्लेविदा समयपबद्धा ते विसेसाहिया। एव गतूण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदीसु सेसभावेणच्छिदूण उदय कादूण णिल्लेवणपज्जाय गदाण सलागाओ दुगुणाओ भवति। एव गतूण तदो जवमज्झ होदूण पुणो विसेसहाणीए गच्छदि जाव चरिमवियप्पो त्ति। ण समीचीणमेद वक्खाण, एगट्ठिदिविसयाण समयपबद्धसेसयाण जवमज्झपरूवणावसरे णाणाट्ठिदिविसयाण तेसिं जवमज्झपरूवणाए असबद्धत्तादो। एदविहाए परूवणाए वट्टमाणादीदकालविसयाए विदियभासगाहासुत्ते णिबद्धत्तदसणादो च। तम्हा पुव्वुत्तो चेव जवमज्झविसेसो एत्थ सुत्तसूचिदो त्ति घेत्तव्व।

लिए प्रतिभाग पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण है। इसी प्रकार तीन, चार आदिके क्रमसे जाकर पुन पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण जो समयप्रबद्धशेष एक स्थितिविशेषमे रहकर और उदयको प्राप्त होकर गत हो जाते हैं उनकी ग्रहण की गयी शलाकाएँ दूनी होती हैं। इस प्रकार पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणवृद्धियाँ जाकर यवमध्य होता है। पुन इससे आगे सवत्र विशेष हीनके क्रमसे तब तक जाते है जब जाकर सबसे उत्कृष्ट पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धशेष सम्बन्धी शलाकाओसे युक्त एक स्थितिविषयक समयप्रबद्ध अन्तिम विकल्परूपसे अन्तको प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार भवबद्धशेषोका भी कथन करना चाहिए।

§ ५१५ अथवा इस प्रकार यहाँपर यवमध्य करना चाहिए ऐसा अन्य आचार्य व्याख्यान करते है। वह कैसे? एक स्थितिविशेषमे शेषरूपसे रहकर अपकर्षणके द्वारा उदयको प्राप्त होकर निर्लेपनभावको प्राप्त हुए समयप्रबद्ध सबसे थोडे हैं। जो दो स्थितिविशेषोमें शेषरूपसे रहकर अपकर्षणके वशसे उदयको प्राप्त होकर निर्लेपनभावको प्राप्त हुए समयप्रबद्ध है वे विशेष अधिक हैं। इस प्रकार जाकर पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोमे शेषरूपसे रहकर उदयको प्राप्त होकर निर्लेपनपर्यायको प्राप्त हुई शलाकाएँ दूनी होती है। इस प्रकार जाकर यवमध्य होकर पुन विशेष हानिके क्रमसे अन्तिम विकल्पके प्राप्त होने तक जाते हैं। किन्तु यह व्याख्यान समीचीन नहीं है, क्योंकि एक स्थितिविषयक समयप्रबद्धशेषोके यवमध्यकी प्ररूपणाके अवसरपर नाना स्थितिविषयक उन समयप्रबद्धशेषोकी प्ररूपणा करना असम्बद्ध है क्योंकि वर्तमान, अतीत कालविषयक इस प्रकारकी प्ररूपणा दूसरे भाष्यगाथासूत्रमे निबद्ध देखी जाती है। इसलिए पूर्वोक्त यवमध्यविशेष ही यहाँपर सूत्रसूचित ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—प्रथम भाष्यगाथामे एक स्थितिको आलम्बन बनाकर एक या एकसे अधिक समयप्रबद्धशेषोकी अपेक्षा यवमध्य प्ररूपणा की गयी है। किन्तु व्याख्यानाचार्य एक या एकसे अधिक स्थितिविशेषोको आलम्बन बना समयप्रबद्धशेषोकी अपेक्षा यवमध्यप्ररूपणा इस भाष्यगाथाके

§ ५१६ संपहि जहावसरपत्ताए बिदियभासगाहाए अत्थविहासणमभवसिद्धियपाओग्गविसये कुणमाणो उवरिम विहासागंथमाढवेइ—

* विदियाए भासगाहाए अत्थो जहावसरपत्तो ।

§ ५१७ विहासियव्वो त्ति वक्कसेसो । सेसं सुगमं ।

* तं जहा ।

§ ५१८ सुगमं ।

* समयपबद्धसेसयमेक्किस्से ट्ठिदीए होज्ज, दोसु तीसु वा । उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेसु ।

§ ५१९. गयत्थमेदं सुत्तं, भवसिद्धियपाओग्गविसयपरूवणाए विहासियत्तादो । णवरि भवसिद्धियपाओग्गविसये उक्कस्सेण वासपुधत्तमेत्तट्ठिदीसु समयपबद्धसेसयं जाद । एत्थ पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदीसु समयपबद्धसेसयमुक्कस्सपक्खेण लब्भदि त्ति एसो एत्थतणो विसेसो सुत्तणिद्दिट्ठो दट्ठव्वो । एगसमयपबद्धसेसयं च पहाणीकरिय सुत्तमेदं पयट्टं । णाणासमयपबद्धसेसाणं पहाणत्ते जहण्णदो वि तेसिमेक्किस्से ट्ठिदीए अवट्ठाणासंभवादो । संपहि एदेसिं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिविसेसाणं णिल्लेवणट्ठाणेहिंतो थोवबहुत्तपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

आधारसे सूचित करते हैं । जो प्रकृत भाष्यगाथाकी अपेक्षा घटित नहीं होती ऐसा यहाँ टीकाकार का अभिप्राय समझना चाहिए । शेष कथन टीकासे ही स्पष्ट है ।

§ ५१६ अब यथावसरप्राप्त दूसरी भाष्यगाथाको अर्थविभाषा अभव्यसिद्धिकप्रायोग्य जीवोंके विषयमें करते हुए आगेके विभाषाग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* अब दूसरी भाष्यगाथाका अर्थ अवसरप्राप्त है ।

§ ५१७ 'उसकी विभाषा करनी चाहिए' इतना शेष वाक्य युक्त कर लेना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ ५१८ यह सूत्र सुगम है ।

* समयप्रबद्धशेष एक स्थितिमें हो सकता है, दो या तीन स्थितियोंमें हो सकता है । इस प्रकार एक-एक अधिकके क्रमसे उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोंमें हो सकता है ।

§ ५१९ यह सूत्र गतार्थ है, क्योंकि भवसिद्धिकप्रायोग्यविषयक प्ररूपणाके समय इसकी विभाषा कर आये हैं । इतनी विशेषता है कि भवसिद्धिकप्रायोग्य जीवोंके विषयमें उत्कृष्टसे वर्ष पृथक्त्वप्रमाण स्थितियोंमें समयप्रबद्धशेष प्राप्त होता है । परन्तु यहाँपर अर्थात् अभव्योंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोंमें समयप्रबद्धशेष उत्कृष्ट पक्षकी अपेक्षा प्राप्त होता है इस प्रकार यह यहाँ सम्बन्धी विशेष सूत्रमें निर्दिष्ट जानना चाहिए । किन्तु एक समयप्रबद्धशेषको प्रधान करके यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है, क्योंकि नाना समयप्रबद्धशेषोंकी प्रधानतामें जघन्यसे भी उनका एक स्थितिमें अवस्थान असम्भव है । अब पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण इन स्थिति विशेषोंके निर्लेपनस्थानोंकी अपेक्षा अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* णिल्लेवणट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे समयपबद्धसेसयाणि ।

§ ५२० णाणेगसमयपबद्धसेसएहिं अविरहिदाओ सव्वाओ ट्ठिदीओ संपिंडिदाओ णिल्लेवण ट्ठाणाणमसंखेज्जविभागमेत्तीओ चेव, ण तत्तो अदिरित्ताओ त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो । संपहि एदेणेव संबंधेण एगादि एगुत्तरेसु ट्ठिदिविसेसेसु लद्धावट्ठाणाणं णाणासमयपबद्धसेसयाणमणंतरपर परोवणिधाहि सेढिपरूवणं कुणमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

* समयपबद्धसेसयाणि एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे जाणि ताणि थोवाणि ।

§ ५२१ पुव्वुत्तणिल्लेवणट्ठाणाणमसंखेज्जविभागमेत्तट्ठिदिविसेसेसु णाणेगसमयपबद्धसेसयेहिं अविरहिदेसु तत्थ एक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे केत्तियाणि वि होदूण ट्ठिदाणि समयपबद्धसेसाणि अत्थि तेसिं गहिदसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ होदूण सव्वत्थोवा त्ति वुत्तं होइ ।

* दोसु ट्ठिदिविसेसेसु विसेसाहियाणि ।

§ ५२२ दोसु ट्ठिदिविसेसेसु जाणि सेसभावेण समवट्ठिदाणि तेसिं गहिदसलागाओ पुव्विल्ल सलागाहितो विसेसाहियाओ भवंति । केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । तस्स को पडिभागो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एत्थतणएगदुगुणवड्ढिअद्धाणस्स तप्पमाणत्तादो ।

---

* निर्लेपनस्थानोके असंख्यातवें भागमे समयप्रबद्धशेष होते हैं ।

§ ५२० नाना समयप्रबद्धशेष और एक समयप्रबद्धशेषसे रहित सब स्थितियाँ मिलाकर निर्लेपनस्थानके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं । उनसे अधिक नहीं होती यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है । अब इसी सम्बन्धसे एकसे लेकर एक-एक अधिकरूपसे स्थित स्थितिविशेषोंमें जिन्होंने अवस्थान प्राप्त कर लिया है ऐसे नाना समयप्रबद्धशेषोंकी अनन्तरोपनिधा और परम्परोप निधाकी अपेक्षा श्रेणिकी प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* एक स्थितिविशेषमे जो समयप्रबद्धशेष पाये जाते हैं वे सबसे थोड़े हैं ।

§ ५२१ पूर्वोक्त निर्लेपनस्थानोके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितिविशेषोमे नाना समय प्रबद्धशेषो और एक समयप्रबद्धशेषसे युक्त स्थानोमेसे एक स्थितिविशेषमे जितने भी समयप्रबद्ध शेष अवस्थित रहते हैं उनकी ग्रहण की गयी शलाकाएँ पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर सबसे थोड़ी होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* दो स्थितिविशेषोमे पाये जानेवाले समयप्रबद्धशेष विशेष अधिक हैं ।

§ ५२२ दो स्थितिविशेषोमे जो समयप्रबद्ध शेषरूपसे अवस्थित है उनकी ग्रहण की गयी शलाकाएँ पहलेकी शलाकाओकी अपेक्षा विशेष अधिक होती हैं ।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—अधस्तन राशिका असंख्यातवाँ भाग है ।

शंका—उसका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—उसका प्रतिभाग पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि यहाँका द्विगुणवृद्धि अध्वान तत्प्रमाण है ।

* तिसु ट्ठिदिविसेसेसु विसेसाहियाणि ।

§ ५२३ तिसु ट्ठिदिविसेसेसु होदूण जाणि समयपबद्धसेसयाणि समवट्ठिदाणि ताणि पुव्विल्लेहिंतो विसेसाहियाणि । विसेसपमाणमेत्थ वि पुव्वं व वत्तव्वं ।

* पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे जवमज्झं ।

§ ५२४ एवमणंतराणतरादो अवट्ठिदेगेगविसेसवड्ढीए गंतूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदीओ आधार कादूण ट्ठिदसमयपबद्धसेसयाणि घेत्तूण दुगुणवड्ढी होदि । एवविहाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदुगुणवड्ढिट्ठाणंतराणि गंतूण तदित्थगुणवड्ढीए चरिमवियप्पम्मि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिविसेसेसु वट्टमाणाण समयपबद्धसेसाण सलागाओ जवमज्झसरूवेण वट्ठव्वाओ । तदो जवमज्झादो उवरि विसेसहाणीए असंखेज्जगुणहाणीओ गंतूण चरिमवियप्पे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिविसेसेसु सव्वुक्कस्सेसु वट्टमाणाण समयपबद्धसेसयाण सलागाओ असंखेज्जगुणहीणाओ होदूण पयदपरूवणाए पज्जवसाणभावेण णिद्दिट्ठाओ । एत्थ जवमज्झादो हेट्ठिमोवरिमणाणागुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ होंति । एयगुणहाणिट्ठाणतर वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्त चेव होइ । होत पि णाणागुणहाणिट्ठाणतरसलागाहिंतो असंखेज्जगुणमेव होदि त्ति परूवणट्ठमुत्तरसुत्तणिद्देसो—

* णाणतराणि थोवाणि ।

---

* तीन स्थितिविशेषोमे पाये जानेवाले समयप्रबद्धशेष विशेष अधिक हैं ।

§ ५२३ तीन स्थितिविशेषोमे रहकर जो स्थितिविशेष अवस्थित हैं वे पूर्वके स्थिति विशेषोकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं । यहाँपर विशेषका प्रमाण पहलेके समान कहना चाहिए ।

* इस विधिसे आगे जाकर पल्योपमके असख्यातवें भागमे समयप्रबद्धशेषोंका यवमध्य प्राप्त होता है ।

§ ५२४ इस प्रकार अन तर तदनन्तररूपसे स्थित एक-एक विशेषकी वृद्धि होनेपर पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण अध्वानमे पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोको आधार करके जो समयप्रबद्धशेष अवस्थित हैं उन्हे ग्रहण कर द्विगुणवृद्धि होती है । इस प्रकार पल्योपमके असख्यातवे भागप्रमाण द्विगुणवृद्धिस्थानान्तर जाकर वहाँ प्राप्त द्विगुणवृद्धिके अन्तिम भेदमे पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण स्थितिविशेषोमें विद्यमान समयप्रबद्धशेषोकी शलाकाएँ यवमध्यरूपसे जाननी चाहिए । तत्पश्चात् यवमध्यके ऊपर विशेष हानि द्वारा असंख्यात गुण हानियाँ जाकर अन्तिम भेदमे प्राप्त सबसे उत्कृष्ट पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण स्थितिविशेषो मे विद्यमान समयप्रबद्धशेषोकी शलाकाए असंख्यात गुणहानिरूप होकर प्रकृत प्ररूपणामे पयवसानरूपसे निर्दिष्ट की गयी है । यहाँपर यवमध्यसे पहलेकी और आगेकी नाना गुणहानि स्थानान्तरशलाकाए पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । और एक गुणहानिस्थानान्तर भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है । ऐसा होते हुए भी नाना गुणहानिशलाकाओसे असख्यातगुणा ही होता है इस बातका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रका निर्देश करते हैं—

* नाना गुणहानिस्थानान्तर अल्प हैं ।

§ ५२५ कुदो ? पलिदोवमद्धच्छेदणयाणमसंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

* एगंतरमसंखेज्जगुणं ।

§ ५२६ कुदो ? असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो । एवं समयपबद्धसेसयाणि अस्सियूण विदियभासगाहाए अत्थपरूवणं कादूण संपहि भवबद्धसेसयेसु वि एसा चेव परूवणा णिरवसेसमणुगंतव्वा त्ति जाणावेमाणो इदमाह—

* एवं भवबद्धसेसयाणि ।

§ ५२७ जहा समयपबद्धसेसयाणि ट्ठिदीओ आधारं कादूण भणिदाणि एवं चेव भवबद्धसेसयाणि वि णेदव्वाणि, पयदपरूवणाए उभयत्थ णाणत्तेण विणा पवुत्तिदंसणादो त्ति भणिदं होदि । एत्थ जवमज्झपरूवणा खवगपाओग्गपरूवणाए कीरमाणाए तदियभासगाहासुत्तसबंधेण विहासिदो । एत्थ पुण अभवसिद्धियपाओग्गपरूवणाए विदियभासगाहाविहासणावसरे चेव विहासिदा । एवं विहासेमाणस्स सुत्तयारस्स को अहिप्पाओ त्ति चे ? वुच्चदे—एसो अत्थविसेसो दोसु वि गाहासुत्तेसु मुत्तकंठमणुवइट्ठो । किंतु अत्थसंबंधेण विहासिज्जदे, तदो तत्थ वा एत्थ वा विहासिदे दोसो णत्थि त्ति एदेणाहिप्पाएण विदियभासगाहासंबंधेणेदेत्थ पयदत्थविहासा आढत्ता । तदो ण पुव्वावरविरोहदोससंभवो त्ति । एवमेत्तिये अत्थे विहासिदे तदो विदियभासगाहाए अत्थविहासा समप्पइ त्ति जाणावणट्ठमुवसंहारवक्कमाह—

---

§ ५२५ क्योंकि वे पल्योपमके अर्धच्छेदोके असख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

* उनसे एक गुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणा है ।

§ ५२६ क्योंकि वह असख्यात पल्योपमोके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इस प्रकार समयप्रबद्धशेषोका आश्रय लेकर दूसरी भाष्यगाथाके अर्थकी प्ररूपणा करके अब भवबद्धशेषोंमे भी यही प्ररूपणा पूरी जाननी चाहिए इस बातका ज्ञान कराते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

* इसी प्रकार भवबद्धशेषोकी प्ररूपणा करनी चाहिए ।

§ ५२७ जिस प्रकार स्थितियोको आधार करके समयप्रबद्धशेषोकी प्ररूपणा की इसी प्रकार भवबद्धशेषोंकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि दोनो जगह भेद किये बिना प्रकृत प्ररूपणाकी प्रवृत्ति देखी जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यहाँपर यवमध्यप्ररूपणा क्षपक प्रायोग्य प्ररूपणाके करनेपर तीसरी भाष्यगाथासूत्रके सम्बन्धसे विभाषित की । परन्तु यहाँपर अभवसिद्धिक जीवोके योग्य प्ररूपणामे दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषाके समय ही कर आये हैं ।

शंका—इस प्रकार विभाषा करनेवाले सूत्रकारका क्या अभिप्राय है ?

समाधान—आगे उसका समाधान करते हैं—यह अर्थविशेष दोनो ही गाथासूत्रोमे स्पष्टरूपसे नहीं कहा गया है । किन्तु अर्थके सम्बन्धसे विभाषित किया जाता है, इसलिए उस भाष्यगाथामें या इस भाष्यगाथामें विभाषा करनेमे दोष नही है, इसलिए दूसरी भाष्यगाथाके सम्बन्धसे यहाँपर प्रकृत अर्थकी विभाषा आरम्भ की गयी है, इसलिए पूर्वापर विरोधरूप दोष सम्भव नही है । इस प्रकार इतने अर्थके विभाषित करनेपर दूसरी भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा समाप्त होती है इसका ज्ञान करानेके लिए उपसंहारवाक्यको कहते हैं—

* बिदियाए गाहाए अत्थो समत्तो भवदि ।

* तदियाए गाहाए अत्थो ।

§ ५२८ बिदियभासगाहाविहासणाणंतरमेत्तो तदियाए भासगाहाए अत्थो विहासिज्जदे त्ति वुत्तं होइ ।

* असामण्णाओ ट्ठिदीओ एक्को वा दो वा तिण्णि वा एवमणुबद्धाओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ।

§ ५२९ जम्हि ट्ठिदिविसेसे समयपबद्धसेसयं वा भवबद्धसेसयं वा णत्थि सा ट्ठिदी असामण्णा त्ति भण्णदि । जत्थ पुण तदुभयं संभवइ सा सामण्णट्ठिदी णाम । तत्थ असामण्णट्ठिदीणं पमाणावहारणट्ठमेसा तदियभासगाहाए विहासा समोइण्णा । तं जहा—जहण्णेण उभयदो सामण्णट्ठिदीहिं णिरुद्धा एक्का चेव असामण्णट्ठिदी होदूण लब्भइ । एवं दो तिण्णिआदिकमेण णिरंतरं गंतूण उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ असामण्णट्ठिदीओ अण्णोण्णाणुगयाओ होंति, अभवसिद्धियपाओग्गविसये तहाविहसंभवस्स परिप्फुडमुवलंभादो । जहा खवगपाओग्गपरूवणाए असामण्णट्ठिदीणमप्पाबहुअमणंतरपरंपरोवणिधाहिं भणिदं 'एक्केक्केण असामण्णाओ थोवाओ' इच्चादिकमेण तहा एत्थ वि असामण्णट्ठिदिसलागाहिं जवमज्झगब्भमप्पाबहुअं णेदव्वं, अण्णहा तव्विसयणिण्णयाणुप्पत्तीदो । णवरि एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं असामण्णट्ठिदिसलागाहिं दुगुणवड्ढी होदि । खवगसेढीए पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाण

---

* दूसरी भाष्यगाथाका अर्थ समाप्त होता है ।

* अब तीसरी भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा करते हैं ।

§ ५२८ दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषाके अनन्तर आगे तीसरी भाष्यगाथाका अर्थ विभाषित किया जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* असामान्य स्थितियाँ एक, दो अथवा तीन होती हैं । इस प्रकार क्रमसे एक एक अधिक होकर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ।

§ ५२९ जिस स्थितिविशेषमें समयप्रबद्धशेष अथवा भवबद्धशेष नहीं होता वह स्थिति असामान्य कही जाती है । किन्तु जिस स्थितिविशेषमें सामान्य और असामान्य दोनों स्थितियाँ सम्भव हैं वह सामान्य स्थिति कहलाती है । उनमेंसे असामान्य स्थितियोंके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए यह तीसरी भाष्यगाथाकी विभाषा अवतीर्ण हुई है । वह जैसे—जघन्यसे दोनों ओरसे सामान्य स्थितियोंके द्वारा निरुद्ध एक ही असामान्य स्थिति होकर प्राप्त होती है । इसी प्रकार दो, तीन आदिके क्रमसे निरन्तर जाकर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण असामान्य स्थितियाँ एक दूसरेसे सम्बद्ध होकर प्राप्त होती हैं, क्योंकि अभवसिद्धिक जीवोंके योग्य विषयमें उस प्रकारका होना सम्भव है यह स्पष्टरूपसे उपलब्ध होता है । जिस प्रकार क्षपकोंके योग्य प्ररूपणा करते समय असामान्य स्थितियोंका अल्पबहुत्व अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधाकी अपेक्षा 'एक एककी अपेक्षा असामान्य स्थितियाँ सबसे थोड़ी होती हैं' इत्यादि क्रमसे पूर्वमें कह आये हैं उसी प्रकार यहाँपर भी असामान्य स्थितियोंकी शलाका द्वारा यवमध्यगर्भ अल्पबहुत्व जानना चाहिए, अन्यथा तद्विषयक निर्णय नहीं हो सकता । इतनी विशेषता है कि यहाँपर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण असामान्य स्थितियोंकी शलाकाओंके द्वारा द्विगुणवृद्धि होती

गंतूण दुगुणवड्ढी जादा। तत्थ जवमज्झादो हेट्ठिमोवरिमद्धाणपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो, एत्थ पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एवं णाणागुणहाणिसलागाण वि पमाणविसये भेदो वत्तव्वो। तदो तदियभासगाहाए अत्थविहासा समप्पदि त्ति जाणावेमाणो उवसंहारवक्कमुत्तरं भणइ—

* एवं तदियाए गाहाए अत्थो समत्तो।

* एत्तो चउत्थीए गाहाए अत्थो।

§ ५३० असामण्णट्ठिदीहिं अंतरिदाणं सामण्णट्ठिदीणमियत्तावहारणट्ठं चउत्थीए भास गाहाए अत्थो एण्हिमहिकीरदि त्ति वुत्तं होदि।

* सामण्णट्ठिदीओ एक्कंतरिदाओ थोवाओ।

§ ५३१ एवं भणिदे दोसु वि पासेसु एगेगअसामण्णट्ठिदी होदूण पुणो तासिं मज्झे जत्तियाओ सामण्णट्ठिदीओ अच्छिदाओ तासिं सव्वासिं पि एगा सलागा घेत्तव्वा। पुणो वि एवं चेव दोसु वि पासेसु एगेगा चेव असामण्णट्ठिदी होदूण पुणो तासिं मज्झे जत्तियाओ सामण्णट्ठिदीओ तासिं सव्वासिं विदिया सलागा गहेयव्वा। एवं सव्वत्थ लद्धसलागाओ घेत्तूण एक्कदो मेलाविदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ सलागाओ होंति। एदाओ थोवाओ, उवरिमवियप्पपडिबद्ध सलागाणमेत्तो बहुत्तवसणादो।

है। परन्तु क्षपकश्रेणिमे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर द्विगुणवृद्धि प्राप्त होती है, क्योंकि वहाँपर यवमध्यसे अधस्तन और उपरिम स्थानोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागरूप होता है। परन्तु यहाँपर वह पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। इसी प्रकार नाना गुणहानि शलाकाओंका भी प्रमाणविषयक भेदका कथन करना चाहिए। तत्पश्चात् तीसरी भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त होती है इसका ज्ञान कराते हुए आगे उपसंहारसूत्रको कहते हैं—

* इस प्रकार तीसरी भाष्यगाथाका अर्थ समाप्त हुआ।

* आगे चौथी भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा करते हैं।

§ ५३० असामान्य स्थितियोंसे अन्तरित सामान्य स्थितियोंके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए चौथी भाष्यगाथाका अर्थ इस समय अधिकृत है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* एक एक असामान्य स्थितिमे अन्तरित सामान्य स्थितियाँ सबसे थोड़ी हैं।

§ ५३१ ऐसा कहनेपर दोनों ही पार्श्वोंमें एक एक असामान्य स्थिति होकर पुनः उनके मध्यमें जितनी सामान्य स्थितियाँ अवस्थित हैं उन सबकी एक शलाका ग्रहण करनी चाहिए। फिर भी इसी प्रकार दोनों ही पार्श्वोंमें एक एक असामान्य स्थिति होकर पुनः उनके मध्यमें जितनी सामान्य स्थितियाँ होती हैं उन सबकी दूसरी शलाका ग्रहण करनी चाहिए। इसी प्रकार सर्वत्र प्राप्त हुई शलाकाओंको ग्रहण कर एक साथ मिलानेपर वे सब पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं। ये सबसे थोड़ी होती हैं, क्योंकि उपरिम भेदोंसे सम्बन्ध रखनेवाली शलाकाएँ इनसे बहुत देखी जाती हैं।

* दुअंतरिदा विसेसाहिया ।

§ ५३२ एव भणिदे दोहिं दोहिं असामण्णट्ठिदीहिं अतरिदाओ जाओ सामण्णट्ठिदीओ तासि सव्वत्थ गहिदसलागाओ पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तीओ होदूण पुव्विल्लसलागाहिंतो विसेसाहियाओ त्ति घेत्तव्व। विसेसपमाणमेत्थ पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागेण खंडिदेयखडं, एत्थतणगुणहाणिअद्धाणस्स तप्पमाणत्तादो।

* एव गतूण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागे जवमज्झं[1] ।

§ ५३३ मोत्तूण पुणो एक्क दो तिण्णि चत्तारिआदिअसामण्णट्ठिदीहिं दोसु वि पासेसु अतरिदाण म ज्झे समुवलब्भमाणाण सामण्णट्ठिदीण सलागाओ घेत्तूण विसेसाहियकमेण णेदव्व जाव पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ताहिं असामण्णट्ठिदीहिं अतरिदाण सामण्णट्ठिदीणं सलागाओ पढमवियप्पसलागाहिंतो दुगुणमेत्तीओ जादाओ त्ति। एवमेदेण कमेण असखेज्जासु दुगुणवड्ढीसु गदासु तदो दोसु वि पासेसु पलिदोवमस्सासखेज्जदिभागेहिंतो उवरिमट्ठिदीहिं अतरिदसामण्ण ट्ठिदीणं सलागाओ घेत्तूण जवमज्झमुप्पज्जदि त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। एत्थ जवमज्झादो हेट्ठा उवरि च पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ चेव णाणा गुणवड्ढि हाणिसलागाओ होति। एत्थ णाणागुणहाणिसलागाओ थोवाओ, एयगुणवड्ढिहाणिट्ठाणतरमसखेज्जगुण होदि त्ति इममत्थ विसेसं जाणावेमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

---

* दो दो असामा य स्थितियोसे अन्तरित सामान्य स्थितियाँ विशेष अधिक होती हैं।

§ ५३२ ऐसा कहनेपर दो दो असामान्य स्थितियोसे अ तरित जो सामा य स्थितियाँ पायी जाती हैं, उनकी सवत्र ग्रहण की गयी शलाकाएँ पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण होकर पूर्वकी शलाकाओसे विशेष अधिक होती हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। यहाँपर विशेषका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित एक भागप्रमाण है क्योकि यहाँ सम्ब धो गुणहानिअध्वान तत्प्रमाण है।

* इस प्रकार क्रमसे जाकर पल्योपमके असंख्यातवें भागके अन्तमे यवमध्य होता है।

§ ५३३ को छोडकर पुन एक, दो, तीन और चार आदि असामान्य स्थितियोसे दोनो ही पाश्व भागोमे अ तरित होकर मध्यमें समुपलभ्यमान सामा य स्थितियोकी शलाकाओको ग्रहण कर तब तक ले जाना चाहिए जब जाकर पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण असामान्य स्थितियोसे अ तरित सामा य स्थितियोकी शलाकाएँ प्रथम विकल्पसम्ब धी शलाकाओंसे दूनी हो जाती हैं। इस प्रकार इस क्रमसे असख्यात द्विगुणवृद्धियोके जानेपर तदन तर दोनो ही पाश्व भागोमे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण उपरिम स्थितियोसे अन्तरित सामान्य स्थिति शलाकाओको ग्रहण कर यवमध्य उत्प न होता है यह इस सूत्रका भावाथ है। यहाँपर यवमध्यसे पहले और आगे पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण ही नाना गुणहानिशलाकाएँ होती हैं। यहाँ नाना गुणहानिशलाकाए थोड़ी हैं। उनसे एक गुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणा है इस प्रकार इस अर्थविशेषका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

---

1 ता०—क प्रत्यो मोत्तण इति पाठ ।

* णाणागुणहाणिसलागाणि थोवाणि ।

§ ५३४ जवमज्झादो हेट्ठिमोवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ सपिंडिदाओ थोवाओ त्ति भणिद होइ ।

* एक्कतरमसंखेज्जगुण ।

§ ५३५ एयगुणहाणिट्ठाणतरमसंखेज्जगुणमिदि वुत्त होइ । कुदो एदस्स तत्तो असंखेज्ज गुणत्तमवगम्मदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च सुत्तमप्पमाणं होइ, विप्पडिसेहादो । एदं च सुत्त देसामासय तेण एगादिएगुत्तरकमेण वड्ढिदाहि सामण्णट्ठिदीहि अंतरिदाणमसामण्णट्ठिदीणं च समयाविरोहेण जवमज्झपरूवणा एत्थाणुगतव्वा । ण च तदियगाहाए एरिसो परूवणा पडि बद्धा त्ति आसंकणिज्ज, तत्थ एगादिएगुत्तरकमेण लब्भमाणाणमसामण्णट्ठिदिसलागाण जवमज्झ परूवणाए पहाणभावेण पडिबद्धत्तदसणादो । पुणो एक्केक्कसरूवेण जाओ सामण्णट्ठिदीओ लब्भति तासि सलागाओ थोवाओ। दुगेण विसेसाहिया, तिगेण विसेसाहिया। पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागे दुगुणाओ, पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागे जवमज्झमिदि एसा वि जवमज्झपरूवणा एत्थेव सुत्ते णिलीणा वक्खाणेयव्वा ।

* एदमक्खवगस्स णादव्व ।

§ ५३६ एदमणतरपरूविद पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागमेत्त सामण्णट्ठिदीणमुवक

* नाना गुणहानिशलाकाएँ थोड़ी हैं ।

§ ५३४ यवमध्यसे अधस्तन और उपरिम नाना गुणहानिशलाकाएँ मिलकर थोड़ी हैं यह उक्त कथनका तात्पय है ।

* एक गुणहानिस्थानका अन्तर असख्यातगुणा है ।

§ ५३५ एक गुणहानिस्थानका अन्तर असख्यातगुणा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—यह नाना गुणहानिशलाकाओसे असख्यातगुणा है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

उसमे भी यह सूत्र देशामषक है इस कारण एकसे लेकर एक एकके क्रमसे बढ़ी हुई सामान्य स्थितियो और असामान्य स्थितियोसे अन्तरित आगमके अविरोधपूर्वक यवमध्यप्ररूपणा यहाँपर जाननी चाहिए। इस प्रकारकी प्ररूपणा तीसरी गाथासे सम्बद्ध है ऐसी आशंका नही करनी चाहिए, क्योकि उसमे एकसे लकर एक एक अधिकके क्रमसे प्राप्त होनेवाली असामान्य स्थितियोकी शलाकासम्बन्धी यवमध्यप्ररूपणाकी प्रधानरूपसे प्रतिबद्धता देखी जाती है । पुन एक एकरूपसे जो सामा य स्थितियाँ प्राप्त होती हैं उनकी शलाकाएँ थोडी हैं। दो-दोरूपसे प्राप्त होनेवाली सामान्य स्थितियाँ विशेष अधिक हैं। तीन-तीनरूपसे प्राप्त होनेवाली सामान्य स्थितियाँ विशेष अधिक हैं । इस विधिसे पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होनेवाली शलाकाएँ दूनी हैं। पल्योपमके असख्यातवें भागमें यवमध्य होता है । इस प्रकार यह भी यवमध्य प्ररूपणा इसी सूत्रमे गर्भित है, अत उसका व्याख्यान करना चाहिए ।

* यह प्ररूपणा अक्षपकके जाननी चाहिए ।

§ ५३६ यह अनन्तरपूर्व कहा गया पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण सामान्य स्थितियोंका

स्सतरमक्खवगस्स अभवसिद्धियपाओग्गविसये वट्टमाणस्स णादव्वमिदि वुत्त होइ। खवगस्स पुण णेदमुक्कस्सतर सभवइ, उक्कस्सेण वि तत्थावलियाए असखेज्जदिभागमेत्तीण चेव असामण्ण ट्ठिदीणमतरभावेण सामण्णट्ठिदीसु वि पवुत्तिदसणादो त्ति इममत्थविसेसमुत्तरसुत्तेण णिद्दिसइ—

※ खवगस्स आवलियाए असखेज्जदिभागो अतर।

§ ५३७ गतार्थमेतत्सूत्रम्।

※ इमस्स पुण सामण्णाण ट्ठिदीणमतर पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो।

§ ५३८ गयत्थमेद पि सुत्त, पुव्वुत्तस्सेवत्थस्स पुणो वि उवसहारमुहेण परूवणादो। एव मेत्तिएण पबधेण समयपबद्धसेसयाणि अस्सियूण चउत्थभासगाहाए अत्थविहासण काऊण सपहि भवबद्धसेसयाणि वि अस्सियूण सामण्णासामण्णट्ठिदीणमेव चेव पयदपरूवणा अणुगतव्वा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्त भणइ—

※ जहा समयपबद्धसेसयाणि तहा भवबद्धसेसाणि कादव्वाणि।

§ ५३९ सुगम। सपहि खवगपाओग्गपरूवणाए भण्णमाणाए चउत्थगाहासुत्ते एगादि एगुत्तरकमेण असखेज्जाओ असामण्णट्ठिदीओ उल्लघियूण तदो अतरचरिमट्ठिदीदो उवरिमाणतर ट्ठिदिप्पहुडि एगादिएगुत्तरवड्ढिदेस असखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु समयपबद्धसेसयाणि भवबद्धसेसयाणि

उत्कृष्ट अन्तर अभव्यसिद्धिक जीवोके योग्य विषयमे विद्यमान अक्षपकके जानना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। परन्तु क्षपकके यह उत्कृष्ट अन्तर सम्भव नही है, क्योकि उत्कृष्ट अन्तर होवे तो भी वहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही असामान्य स्थितियोके अन्तररूपसे उसकी सामान्य स्थितियोमे ही प्रवृत्ति देखी जाती है इस प्रकार इस अर्थविशेषका आगेके सूत्र द्वारा दिखलाते है—

※ क्षपकके यह उत्कृष्ट अन्तर आवलिके असख्यातवे भागप्रमाण होता है।

§ ५३७ यह सूत्र गतार्थ है।

※ परन्तु अक्षपकके सामान्य स्थितियोका उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण होता है।

§ ५३८ यह सूत्र भी गतार्थ है, क्योकि इस द्वारा पूर्वोक्त अर्थकी ही पुनरपि उपसंहार करते हुए प्ररूपणा की गयी है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा समयप्रबद्धशेषोका आलम्बन लेकर चौथी भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा करके अब भवबद्धशेषोका भी आश्रय करके सामान्य और असामान्य स्थितियोकी इसी प्रकार प्रकृतप्ररूपणा जाननी चाहिए इस प्रकार इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

※ जिस प्रकार समयप्रबद्धशेषोकी सामान्य और असामान्य स्थितियोके आलम्बनसे प्ररूपणा की है उसी प्रकार भवबद्धशेषोकी भी वह प्ररूपणा करनी चाहिए।

§ ५३९ यह सूत्र सुगम है। अब क्षपकप्रायोग्य प्ररूपणाके कथनमे चौथी भाष्यगाथासूत्रमें एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे असख्यात असामान्य स्थितियोको उल्लंघन कर तत्पश्चात् अन्तरसम्बन्धी अन्तिम स्थितिसे उपरिम अनन्तर स्थितिसे लेकर एकसे लेकर एक-एकके क्रमसे वृद्धि करनेपर असख्यात स्थितिविशेषोमे समयप्रबद्धशेष और भवबद्धशेष होते हैं इस प्रकार इस

च होति त्ति एवंविहो अत्थो विहासिदो, गाहासुत्ते तहाविहत्थस्स परिप्फुडमेव पडिबद्धसदंसणादो। अण्णं च पुव्वुत्तमंतरमुल्लंघिय एगादिएगुत्तरकमेण लब्भमाणेसु सामण्णट्ठिदीसु जाओ ताओ एगसमयपबद्धसेसएण अविरहिदाओ थोवाओ, अणेगाणं समयपबद्धाण सेसएण अविरहिदाओ असंखेज्जगुणाओ इच्चादि परूवणा सुत्तसूचिदा तेण तत्थ वक्खाणिदा। एण्हि पुण अभवसिद्धियपाओग्गपरूवणाए तहाविह सुत्तणिबद्धत्थपरूवणमुज्झियूण अण्णेण पयारेण चुण्णिसुत्ते परूवणंतरमाढत्तं, तदो कथं ण पुव्वावरविरोहदोसो पसज्जदि त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—खवगपाओग्गपरूवणाए जो अत्थो विहासिदो सो चेव एत्थ विहासेयव्वो, ण तत्थ पडिसेहो अत्थि। किंतु तहाविहत्थपरूवणा गाहासुत्तणिबद्धा सुबोहा त्ति तमुल्लंघियूण सुत्तस्स भावत्थभूदो एसो अत्थो विहासासुत्तयारेणेत्थ विहासिदो, सुगमत्थविहासणट्ठं गंथगउरवं मोत्तूण फलविसेसाणुवलंभादो त्ति। तदो जो खवगम्मि विहासिदो अत्थो सो एत्थ वि समयाविरोहेण जोजेयव्वो, एत्थ विहासिदो जो अत्थो सो खवगसंबंधेण विहासियव्वो त्ति एसो एत्थ सुत्ताहिप्पाओ। एत्तिओ पुण विसेसो—तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ असामण्णट्ठिदीओ उल्लंघियूण सामण्णट्ठिदीण भवसमयपबद्धसेसएहिं अविरहिदाणमेगादिएगुत्तरकमेण उक्कस्सदो वासपुधत्तमेत्ताण संभवो। एत्थ पुण उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ असामण्णट्ठिदीओ उल्लंघियूण एगादिएगुत्तरकमेण भवसमयपबद्धसेसएहिं अविरहिदाओ सामण्णट्ठिदीओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ

प्रकारके अर्थकी विभाषा की, क्योंकि गाथासूत्रमे उस प्रकारके अर्थका स्पष्टरूपमे सम्बन्ध देखा जाता है।

शंका—दूसरी बात यह है कि पूर्वोक्त अन्तरको उल्लंघन करके एकसे लेकर एक एकके अधिकके क्रमसे प्राप्त होनेवाली सामान्य स्थितियामे जो एक समयप्रबद्धशेषमे सहित स्थितियाँ हैं व सबसे थोडी हैं। अनेक समयप्रबद्धशेषोसे सहित स्थितियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं इत्यादि प्ररूपणा सूत्र सूचित है, इसलिए उसको वहाँ प्ररूपणा की। परन्तु इस समय अभव्यसिद्धिक जीवोके प्रायोग्य प्ररूपणामे उस प्रकारकी सूत्रनिबद्ध अर्थकी प्ररूपणाको छोडकर अन्य प्रकारसे चूर्णिसूत्रमे प्ररूपणाविषयक अन्तर प्रारम्भ किया है, इसलिए पूर्वापरविरोध दोष कैसे प्राप्त नही होता ?

समाधान—अब यहाँ इस दोषका परिहार करते है—क्षपकप्रायोग्य प्ररूपणामे जिस अर्थकी विभाषा की है उसी अर्थकी यहा विभाषा करनी चाहिए, उसमे कोई प्रतिषेध नही है। किन्तु उस प्रकारके अर्थकी प्ररूपणा गाथासूत्रमे निबद्ध होकर सुगम है, इसलिए उसे उल्लंघन कर सूत्रके भावार्थरूपमें इस अर्थकी विभाषासूत्रकारने यहाँपर विभाषा की है, क्योंकि सुगम अर्थकी विभाषा करनेके लिए प्रयत्न करनेपर ग्रन्थ ही बढता है, उसके सिवाय अन्य कोई फल नही उपलब्ध होता। इसलिए क्षपकके कथनके समय जिस अर्थकी विभाषा की है उसकी समयके अविरोधपूर्वक यहाँ भी योजना करनी चाहिए। और यहाँपर जिस अर्थकी विभाषा की है उसकी क्षपकके सम्बन्धसे भी विभाषा करनी चाहिए इस प्रकार यह यहाँपर सूत्रका अभिप्राय है। मात्र इतनी विशेषता है कि वहाँपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितियोको उल्लंघन कर भवबद्ध शेषो और समयप्रबद्धशेषोसे युक्त सामान्य स्थितियाँ एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे उत्कृष्ट रूपसे वर्षपृथक्त्वप्रमाण सम्भव हैं। परन्तु यहाँपर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण असामान्य स्थितियोको उल्लंघन कर एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे भवबद्धशेषो और समयप्रबद्धशेषोसे युक्त सामान्य स्थितियाँ उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवे भागप्रमाण सम्भव हैं

सम्भवति त्ति । एवमेदीए सव्वमग्गणाए सवित्थरमणुमग्गिदाए तदो चउत्थीए भासगाहाए अत्थ विहासा समप्पदि । तत्तो च अट्ठमीए मूलगाहाए अत्थविहासा अभवसिद्धियपाओग्गविसये समप्पदि त्ति जाणावणट्ठमुवसंहारवक्कमाह—

* एवं चउत्थीए गाहाए अत्थो समत्तो भवदि ।

* अट्ठमीए मूलगाहाए विहासा समत्ता भवदि ।

* इमा अण्णा अभवसिद्धियपाओग्गे परूवणा ।

§ ५४० चदुहि भासगाहाहि अट्ठममूलगाहाए अत्थे भवाभवसिद्धियपाओग्गविसये सवित्थर विहासिय समत्ते पुणो किमट्ठमेसा अण्णा परूवणा अभवसिद्धियपाओग्गविसये आढविज्जदे ? ण, पुव्वुत्तत्थस्सेव चूलियाभावेण तत्थेव सुत्तसूचिदविसेसंतरपदसणट्ठमेदिस्से परूवणाए अवयारब्भु वगमादो । तं कधं ? अभवसिद्धियपाओग्गे णिल्लेवणट्ठाणाणं पमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग मेत्तं होदि त्ति भणिदं । संपहि जत्थेव समयपबद्धाणं जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं किं तत्थेव भवबद्धाणं जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं होइ आहो ण होइ त्ति ण एसो विसेसो तत्थ जाणाविदो, एवमण्णो वि विसेसो तत्थ परूविदो अत्थि, तदो तप्परूवणट्ठमेत्तो उवरिमो चुण्णिसुत्तपबंधो समोइण्णो त्ति घेत्तव्वं ।

इस प्रकार इस विधिसे इस पूरी मार्गणाके विस्तारके साथ अनुसन्धान करनेपर इसके बाद चौथी भाष्यगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त होती है। और तदनन्तर अभवसिद्धिक जीवोंके प्रायोग्य विषयमें आठवीं मूलगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए उप संहार वाक्यको कहते हैं—

* इस प्रकार चौथी भाष्यगाथाका अर्थ समाप्त हुआ ।

* और इसके साथ आठवीं मूलगाथाकी विभाषा समाप्त होती है ।

* अब अभवसिद्धिक जीवोंके योग्य विषयमें यह अन्य प्ररूपणा की जाती है ।

§ ५४० शंका—चार भाष्यगाथाओं द्वारा आठवीं मूलगाथाके अर्थकी भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक जीवोंके योग्य विषयमें विस्तारके साथ विभाषाके समाप्त होनेपर पुनः अभवसिद्धिक जीवोंके विषयमें यह अन्य प्ररूपणा किस लिए आरम्भ करते हैं ?

समाधान—नहीं क्योंकि पूर्वोक्त अर्थका ही चूलिकारूपसे वहीं सूत्रमें सूचित हुए विशेष अन्तरके दिखलानेके लिए इस प्ररूपणाका अवतार स्वीकार किया जाता है ।

शंका—वह कैसे ?

समाधान—अभवसिद्धिकके योग्य निर्लेपनस्थानोंका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है यह कहा गया है। अब जहाँपर समयप्रबद्धोंका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है वहींपर क्या भवबद्धोंका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है या नहीं होता है इस प्रकार इस विशेषका वहाँ ज्ञान नहीं कराया गया है। इसी प्रकार अन्य भी विशेष वहाँपर कहा गया है, इसलिए उसकी प्ररूपणा करनेके लिए यहाँ उपरिम चूर्णिसूत्रप्रबन्ध अवतीर्ण हुआ है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

* तं जहा ।

§ ५४१ सुगममेदं पयदपरूवणापबंधावयारावेक्खं पुच्छावक्कं ।

* भवबद्धाणं णिल्लेवणट्ठाणं जहण्णगं समयपबद्धस्स णिल्लेवणट्ठाणाणं जहण्णयादो असंखेज्जाओ ट्ठिदीओ अब्भुस्सरिदूण ।

§ ५४२ एदस्सत्थो वुच्चदे—जम्हि ट्ठिदिविसेसे समयपबद्धाणं जहण्णयं णिल्लेवणट्ठाणं जादं ण तम्हि चेव भवबद्धाणं जहण्णं णिल्लेवणट्ठाणं होइ। किंतु तत्तो उवरि असंखेज्जाओ ट्ठिदीओ अब्भुस्सरिदूण होदि त्ति वट्टव्वं। तं जहा—तिरिक्खस्स मणुस्सस्स वा अंतोमुहुत्ताउगभवे उप्पज्जिदूण बंधमाणस्स जाव तमाउअं समप्पइ ताव तम्मि भवम्मि बद्धसमयपबद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता भवंति। तदो एत्तियमेत्तसमयपबद्धाणं समूहमेक्कदो कादूण गहिदे एगं भवबद्धं णाम भण्णदे। पुणो तस्स भवस्स पढमसमयम्मि तप्पाओग्गजहण्णुववादजोगेण बद्धजहण्णपदेसपिंडो कम्मट्ठिदीए असंखेज्जेसु भागेसु समयाविरोहेणाइक्कंतेसु पुणो जम्मि समये णिस्सेसं गलिदूण गच्छदि तम्मि समये समयपबद्धस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं होइ। तम्मि चेव समए पढमसमयपबद्धेणूणमेगभवबद्धं दीसइ। तदो पढमसमयम्मि बद्धसमयपबद्धे णिल्लेविदे पुणो सेसा समयूणअंतोमुहुत्तमेत्ता समयपबद्धा जम्मि समए णिस्सेसा गलिदूण गच्छिहिंति तम्मि समए भवबद्धस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं भविस्सदि त्ति एदेण कारणेण दोण्हं पि जहण्णणिल्लेवणट्ठाणाणि एगत्थ ण जादाणि, समयपबद्धजहण्ण णिल्लेवणट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तमेत्तीओ ट्ठिदीओ णिच्छएण अब्भुस्सरिदूण भवबद्धस्स जहण्ण

---

* वह जैसे।

§ ५४१ प्रकृत प्ररूपणासम्बन्धी प्रबन्धके अवतारकी अपेक्षा करनेवाला यह पृच्छावाक्य सुगम है।

* भवबद्धोंका जघन्य निर्लेपनस्थान समयप्रबद्धके जघन्य निर्लेपनस्थानोंके असंख्यात स्थितियाँ आगे जाकर प्राप्त होता है।

§ ५४२ अब इसका अर्थ कहते हैं—जिस स्थितिविशेषमें समयप्रबद्धोंका जघन्य निर्लेपनस्थान उत्पन्न हुआ है उसी स्थितिविशेषमें भवबद्धोंका जघन्य निर्लेपनस्थान नहीं होता। किन्तु उससे ऊपर असंख्यात स्थितियाँ आगे जाकर वह होता है ऐसा जानना चाहिए। वह जैसे—अन्तमुहूर्त प्रमाण आयुवाले भवमें उत्पन्न होकर बन्ध करनेवाले तिर्यंच या मनुष्यके जबतक वह आयु समाप्त होती है तबतक उस भवमें बाँधे गये समयप्रबद्ध अन्तमुहूर्तप्रमाण हो जाते हैं। इसलिए इयत्प्रमाण समयप्रबद्धोंके समूहको एकत्र करके ग्रहण करनेपर उसका नाम एक भवबद्ध कहलाता है। पुन उस भवके प्रथम समयमें तत्प्रायोग्य जघन्य उपपाद योगसे बाँधा गया जघन्य प्रदेशपिण्ड, कर्मस्थितिके असंख्यात भागोंके समयके अविरोधपूर्वक उल्लघन करनेपर, पुन जिस समय निश्शेष होकर निर्जीर्ण होता है उस समय समयप्रबद्धका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है। और उसी समय प्रथम समयप्रबद्धसे न्यून एक भवबद्ध दिखाई देता है। पश्चात् प्रथम समयसम्बन्धी समयप्रबद्धके निर्लेपित होनेपर शेष एक समय कम अन्तमुहूर्तप्रमाण समयप्रबद्ध जिस समय पूरी तरहसे गलकर निकल जाते हैं उस समय भवबद्धका जघन्य निर्लेपनस्थान होगा। इस प्रकार इस कारणसे दोनोंके ही जघन्य निर्लेपनस्थान एक स्थितिमें नहीं प्राप्त होते हैं, क्योंकि

णिल्लेवणट्ठाण होदि त्ति पडिवज्जेयव्व । जम्हि चेव समए भवबद्धस्स पढमसमयपबद्धो णिल्लेविदो तम्हि चेव समए सेससमयपबद्धाण अतोमुहुत्ताणमक्कमेण णिल्लवणा किण्ण जायदे ? ण, तेसि जहण्णणिल्लवणट्ठाणस्स समयुत्तरकमेणावट्ठिदस्स अक्कमवुत्तिविरोहादो । एसो अत्थो एगट्ठिदिविसेसे असखेज्जाणि समयपबद्धसेसाणि अत्थि त्ति एदेण सह किण्ण विरुज्झदि त्ति भणिदे ण विरुज्झदे । त कध ? णिरुद्धगसमयपबद्धस्स जहण्णणिल्लवणट्ठाणब्भूदट्ठिदिविसेसे अण्णेगसमयपबद्धस्स कम्मट्ठिदीए समत्ताए तमग समयपबद्धसेसय भवदि । पुणो तम्मि चेव ट्ठिदिविसेसे अण्णेग समयपबद्धकम्मट्ठिदिदुचरिमसमये सजादे तत्थ तस्स णिल्लवणसभववसेण तमग समयपबद्धसेसय मुवलब्भदे । पुणो तम्मि चेव ट्ठिदिविसेसे कम्मट्ठिदितिचरिमसमयपत्त पि समयपबद्धसेसयं तक्कालणिल्लवणपाओग्गमत्थि । एव गतूण जाव जहण्णणिल्लेवणट्ठाणादो समयुत्तरट्ठिदिपत्तमवि कम्मट्ठिदिसमयपबद्धसेसय तम्हि चेव ट्ठिदिविसेसे अत्थि त्ति वत्तव्व । तेण एक्कम्मि ठिदिविसेसे असखेज्जाण समयपबद्धाण सेसाणमत्थित्तोवएसेण णव विरुज्झदे, णिल्लेवणट्ठाणमेत्ताण चेव समयपबद्धसेसाण तत्थ सेचियभावेण सभवोवलभादो । जइ वि एत्तियमेत्ताणमक्कमेण णिल्लेवणट्ठाण सभवो णत्थि तो वि णियमा असंखेज्जाण समयपबद्धाण तप्पाओग्गाणं सेसयाणि तत्थ सभवति

समयप्रबद्धके जघन्य निर्लेपनस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण स्थितिया वास्तवमे आगे जाकर भवबद्धका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है ऐसा निश्चय करना चाहिए ।

शका—जिस ही समय भवबद्धका प्रथम समयप्रबद्ध निर्लेपित हुआ उसी समय अन्तमुहूर्त प्रमाण शेष समयप्रबद्धोकी अक्रमसे निर्लेपना क्यो नही हो जाती ?

समाधान—नही, क्योकि उनका जघन्य निर्लेपनस्थान एक एक समय अधिकके क्रमसे अवस्थित है अत उसकी अक्रमसे वृत्ति (प्राप्ति) होनेमे विरोध आता है ।

शका—यह कथन एक स्थितिविशेषमे असख्यात समयप्रबद्धशेष पाये जाते है इस प्रकार इसके साथ विरोधको क्यो नही प्राप्त होता है ?

समाधान—ऐसी शका करनेपर कहते हैं कि विरोधको नही प्राप्त होता है ।

शका—सो कैसे ?

समाधान—विवक्षित एक समयप्रबद्धके जघन्य निर्लेपनस्थानभूत स्थितिविशेषमे अन्य एक समयप्रबद्धकी कर्मस्थितिके समाप्त होनेपर वह एक समयप्रबद्धशेष होता है । पुन उसी स्थिति विशेषमें अन्य एक समयप्रबद्धकी स्थितिके द्विचरम समय हो जानेपर वहाँपर उसका निर्लेपनस्थान प्राप्त होनेके योग्य होनेसे वह एक अन्य समयप्रबद्धशेष उपलब्ध होता है । पुन उसी स्थिति विशेषमे कर्मस्थितिका त्रिचरम समय प्राप्त हुआ, इसलिए समयप्रबद्धशेष उस समय निर्लेपनके योग्य होता है । इस प्रकार आगे तबतक जाना चाहिए जब जाकर उसी स्थितिविशेषमें जघन्य निर्लेपनस्थानसे क्रमसे एक एक समय अधिक कर्मस्थितिमय भी, समयप्रबद्धशेष पाया जाता है ऐसा कहना चाहिए । इस कारण एक स्थितिविशेषमे असख्यात समयप्रबद्धशेषोके अस्तित्वका उपदेश होनेसे यह कथन विरोधको प्राप्त नही होता, क्योकि जितने निर्लेपनस्थान हैं उतने ही समयप्रबद्धशेषोका वहाँपर सिंचितरूपसे पाया जाना सम्भव है । यद्यपि इतने निर्लेपनस्थान वहाँपर अक्रमसे सम्भव नही हैं तो भी तत्प्रायोग्य असख्यात समयप्रबद्ध शेषरूपसे वहाँपर सम्भव

त्ति णिच्छओ कायव्वो, उवरिमप्पाबहुअसुत्ताहिप्पायेण णिल्लेवणट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागमेत्ताणं चेव भवसमयपबद्धसेसयाणमेगसमयेण णिल्लेवणोवलंभादो त्ति ।

§ ५४३ सपहि एत्तोप्पहुडि भवबद्धाणं समयाविरोहेण णिल्लेविज्जमाणाणं पुव्वुत्तकालजव मज्झमदीदकालविसयमेगजीवविसेसिद णेदव्वमिदि पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* तदो जवमज्झं कायव्वं ।

§ ५४४ तदो अणंतरणिद्दिट्ठादो भवबद्धपडिबद्धजहण्णणिल्लेवणट्ठाणादो आढविय भवबद्धाण णिल्लेविज्जमाणाण कालजवमज्झमणुगंतव्वं । समयपबद्धाण पुण एत्तो हेट्ठा अंतोमुहुत्त मोसरियूण ट्ठिदजहण्णणिल्लेवणट्ठाणप्पहुडि पयदजवमज्झपरूवणा आढवेयव्वा त्ति सुत्तत्थसंगहो । एत्थ जवमज्झमिदि वुत्ते पुव्वुत्तकालजवमज्झस्सेव परामरसो, णाण्णस्सेत्ति कथमेदं परिच्छिज्जदे ? ण, अण्णस्स जवमज्झस्स एदम्मि विसये संभवाणुवलंभादो । संपहि जहा दोण्हमेदेसिं जवमज्झाणं भिण्णुद्देसे पारंभो किमवं मज्झपदेसस्स वि भेदो अत्थि आहो णत्थि त्ति पुच्छाए णिण्णयकरणट्ठ मुत्तरसुत्तावयारो—

* जम्हि चेव समयपबद्धणिल्लेवणट्ठाणाण जवमज्झं तम्हि चेव भवबद्धणिल्लेवणट्ठाणाण जवमज्झं ।

हैं ऐसा निश्चय करना चाहिए, क्योंकि उपरिम चूर्णिसूत्रके अभिप्रायानुसार निर्लेपनस्थानोके असख्यातवें भागप्रमाण ही भवबद्धशेषो और समयप्रबद्धशेषोका एक समय द्वारा निर्लेपन प्राप्त होता है ।

§ ५४३ अब इससे आगे समयके अविरोधपूर्वक निर्लेप्यमान भवबद्धोका एक जीवसम्बन्धी अतीत कालविषयक पूर्वोक्त काल यवमध्यको ले जाना चाहिए इस बातका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* तत्पश्चात् यवमध्यकी प्ररूपणा करनी चाहिए ।

§ ५४४ 'तदो' अर्थात् अनन्तर पूर्व निर्दिष्ट किये गये भवबद्धसम्बन्धी जघन्य निर्लेपन स्थानसे आरम्भ करके निर्लेप्यमान भवबद्धोका काल यवमध्य जानना चाहिए । समयपबद्धोका तो इससे नीचे (पूर्व) अन्तमुहूर्त सरककर स्थित जघन्य निर्लेपनस्थानसे लेकर प्रकृत यवमध्यकी प्ररूपणा आरम्भ करनी चाहिए यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है ।

शंका—इस सूत्रमें यवमध्य ऐसा कहनेपर पूर्वोक्त काल यवमध्यका ही परामर्श किया गया है, अन्यका नही इस प्रकार यह बात कैसे जानी जाती है ?

समाधान—नही, क्योंकि अन्य यवमध्य इस विषयमें सम्भव नही है ।

अब जिस प्रकार इन दोनो यवमध्योका भिन्न भिन्न स्थानपर प्रारम्भ होता है उस प्रकार बीचके प्रदेशमे भी क्या भेद है या नही है ऐसी पृच्छा होनेपर निर्णय करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

जिस प्रदेशमें समयप्रबद्धोके निर्लेपनस्थानोका यवमध्य होता है उसी प्रदेशमें भवबद्धके निर्लेपनस्थानोका यवमध्य होता है ।

§ ५४५ कुदो पुण दोण्हमेदेसि भिण्णुद्देसेसु पारद्धाणमेक्कम्मि चेव उद्देसे मज्झसंभवो ? ण, एदम्हादो चेव सुत्तादो तहाविहसंभवावगमादो। तदो समयपबद्धणिल्लेवणट्ठाणाणं जवमज्झस्स पढममेव पारंभो होदूण पुणो तत्तो अंतोमुहुत्तमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि गंतूण तत्थ भवबद्धाणं जहण्ण णिल्लेवणट्ठाणस्स पारंभो होदूण पुणो दोण्हं पि जवमज्झाणमुवरि समयाविरोहेण गच्छमाणाण मेक्कम्मि चेव ट्ठिदिविसेसे मज्झपदेसो होदूण पुणो उवरि समाणट्ठाणाणि हेट्ठिमद्धाणादो असंखेज्ज गुणमेत्ताणि गंतूण दोण्हं पि उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणविसए जुगवमेव परिसमत्ती होदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थ संगहो।

अहवा एत्थ जवमज्झमिदि वुत्ते कालजवमज्झं पुव्वमेव परूविदमिदि तं मोत्तूण जहण्णणिल्लेवणट्ठाणप्पहुडि जावुक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणेत्ति एदेसु ट्ठाणेसु णिल्लेविदपुव्वाणं समयपबद्धाणं भवबद्धाणं च अदीदकालविसयाओ सलागाओ घेत्तूण जवमज्झपरूवणा कायव्वा। तं जहा—जहण्णए णिल्लेवणट्ठाणे णिल्लेविदपुव्वा समयपबद्धा भवबद्धा वा थोवा समयुत्तरे विसेसाहिया। एवं गंतूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे दुगुणवड्ढिदा। तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमुवरि गंतूण णिल्लेवणट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे जवमज्झं। तत्तो विसेसहीणकमेण णेदव्वं जाव उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणेत्ति। णवरि सव्वणिल्लेवणट्ठाणेसु णिल्लेविदपुव्वा समयपबद्धा भवबद्धा च अणंतसंखाविसेसिदा चेव होंति, अदीदकालप्पणाए तदविरोहादो। सव्वहि अभवसिद्धिय

शंका—इन दोनोका यवमध्य भिन्न भिन्न प्रदेशोमे प्रारम्भ होता है, तो भी इनका एक ही प्रदेशमे मध्य कैसे सम्भव है ?

समाधान—नही, क्योकि इसी सूत्रसे उनके उस प्रकारके सम्भव होनेका ज्ञान होता है।

§ ५४५ इस कारण समयप्रबद्धोके निर्लेपनस्थानोका यवमध्य पहले ही प्रारम्भ होकर पुन उससे अन्तर्मुहूतप्रमाण निर्लेपनस्थान जाकर वहाँपर भवबद्धोके जघन्य निर्लेपनस्थानका प्रारम्भ होकर पुन समयके अविरोधपूर्वक दोनोके ही जाते हुए यवमध्योके ऊपर एक ही स्थितिविशेषमे मध्यका प्रदेश होकर पुन अधस्तन स्थानसे ऊपर असंख्यातगुणे समान स्थान जाकर दोनोके ही उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानविषयक एक साथ समाप्ति होती है इस प्रकार यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चयरूप अथ है।

अथवा यहाँपर यवमध्य ऐसा कहनेपर काल यवमध्यका कथन तो पहले ही कर आये हैं, इसलिए उसे छोडकर जघन्य निर्लेपनस्थानसे लेकर उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानके प्राप्त होने तक इन स्थानोमे जिनका पूवमे निर्लेपन कर आये हैं ऐसे समयप्रबद्धो और भवबद्धोको अतीत कालविषयक शलाकाओको ग्रहण कर यवमध्यप्ररूपणा करनी चाहिए। वह जैसे—जघन्य निर्लेपनस्थानमें पूर्वमें निर्लेपित किये गये समयप्रबद्ध अथवा भवबद्ध सबसे थोडे होते हैं। उनसे एक समय अधिक पूर्वमे निर्लेपित किये गये वे दोनो विशेष अधिक होते हैं। इस प्रकार एक एक अधिकके क्रमसे जाकर पल्योपमके असंख्यातवें भागमे वे दोनो दूनी वृद्धिसे युक्त होते हैं। तदनन्तर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाकर निर्लेपनस्थानोके असंख्यातवें भागमे यवमध्य प्राप्त होता है। तत्पश्चात् विशेष हीनक्रमसे लेकर उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। इतनी विशेषता है कि पूर्वमें निर्लेपित किये गये समयप्रबद्ध और भवबद्ध अनन्त सख्यासे सहित ही होते हैं क्योकि अतीत

पाओग्गविसये चेव परूवणंतरमाढवेमाणो सुत्तपबंधमुत्तरं भणइ—

* अदीदे काले जे समयपबद्धा एक्केण पदेसग्गेण णिल्लेविदा ते थोवा ।

§ ५४६ अदीदकाले पुव्वुत्तणिल्लेवणट्ठाणेसु जत्थ वा तत्थ वा णिल्लेविज्जमाणा समयपबद्धा एक्केक्केण परमाणुणा सेसभूदेण णिल्लेविदा अणंता अत्थि ते सव्वे चेव एक्कदो मेलाविदा थोवा होंति, उवरिमवियप्पपडिबद्धाणमेत्तो बहुत्तदंसणादो ।

* बेहि पदेसेहि विसेसाहिया ।

§ ५४७ अदीदे काले दोहिं दोहिं कम्मपरमाणूहिं सेसभूदेहिं जे णिल्लेविदा समयपबद्धा ते पुव्विल्लेहिंतो विसेसाहिया त्ति वुत्तं होइ । केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमवियप्पसलागाणमणंतिमभागमेत्तो । तस्स को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणो, सिद्धाणमणंतभागो, एत्थतण एयगुणवड्ढिअद्धाणस्स तप्पमाणत्तोवएसादो ।

* एवमणंतरोवणिधाए अणंताणि ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।

§ ५४८ एवं तीहिं पदेसेहिं णिल्लेविदा विसेसाहिया चदुहिं पदेसेहिं णिल्लेविदा विसेसाहिया इच्चादिकमेणाणंताणि ट्ठाणाणि विसेसाहियकमेण गंतूण तदो जहण्णट्ठाणं पेक्खियूण दुगुण

कालकी मुख्यता करनेपर उनके इतने होनेमें कोई विरोध नहीं आता । अब अभव्यसिद्धिक जीवोंके योग्य विषयमे ही दूसरी प्ररूपणाका आरम्भ करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अतीत कालमे जो समयप्रबद्ध अन्तमें शेष रहे एक एक परमाणुको लेकर निर्लेपित हुए हैं वे सबसे थोडे हैं ।

§ ५४६ अतीत कालमे पूर्वोक्त निर्लेपनस्थानोंमें जहाँ कहीं निर्लेप्यमान समयप्रबद्ध अन्तमें शेष रहे एक एक परमाणुको लेकर निर्लेपित हुए हैं एक साथ मिलाये हुए वे सब सबसे थोडे होते हैं, क्योंकि उपरिम भेदोंको प्राप्त समयप्रबद्ध इनसे अधिक देखे जाते हैं ।

* अतीत कालमे जो समयप्रबद्ध अन्तमें शेष रहे दो दो परमाणुओंको लेकर निर्लेपित हुए हैं वे विशेष अधिक होते हैं ।

§ ५४७ अतीत कालमे अन्तमें शेष रहे दो दो परमाणुओंको लेकर जो समयप्रबद्ध निर्लेपित हुए हैं वे पूर्वके समयप्रबद्धोंकी अपेक्षा विशेष अधिक होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—अधस्तन भेदकी शलाकाओंके अनन्तवें भागप्रमाण है ।

शंका—उसका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण उसका प्रतिभाग है, क्योंकि यहाँके गुणहानिअध्वानके तत्प्रमाण होनेका उपदेश पाया जाता है ।

* इस प्रकार एक एक परमाणुकी वृद्धिके क्रमसे अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अनन्त स्थान उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक हैं ।

§ ५४८ इस प्रकार अन्तमें तीन-तीन परमाणुओंको लेकर निर्लेपित हुए समयप्रबद्ध विशेष अधिक हैं । अनन्तर चार-चार परमाणुओंको लेकर निर्लेपित हुए समयप्रबद्ध विशेष अधिक हैं इत्यादि क्रमसे अनन्त स्थान एकके बाद एक विशेष अधिकके क्रमसे जाते हुए तत्पश्चात् जघन्य स्थानको

वड्डिट्ठाणंतरं तम्हि उद्देसे समुप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि। पुणो वि तत्तो हेट्ठिमद्धाणमेत्तमुवरि गंतूण विदियं दुगुणवड्डिट्ठाणमुप्पज्जदि। एवमेदेण कमेण असंखेज्जेसु दुगुणवड्डिट्ठाणेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणेसु गदेसु तदित्थदुगुणवड्डीए चरिमवियप्पे अणंतेहि परमाणूहि अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणसिद्धाणंतभागमेत्तेहि णिल्लेविदाणं समयपबद्धाणं सलागाओ अदीदकालविसयाओ अणंताओ घेत्तूण तत्थ जवमज्झट्ठाणमुप्पज्जदि त्ति इममत्थविसेसं पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* ठाणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागे जवमज्झं।

§ ५४९. एगपरमाणुमादिं कादूण जावुक्कस्सेणाणंता परमाणू त्ति एगादिएगुत्तरकमेण वड्डिदाणि अणंताणि ट्ठाणाणि एत्थत्थि, एगसमयपबद्धउक्कस्ससेसमेत्ताणं चेव ट्ठाणाणमेत्थ संभवोवलंभादो। उक्कस्ससेसयं पुण एगसमयपबद्धस्सासंखेज्जदिभागमेत्तं होइ। पुणो एत्तियमेत्ताणं समयपबद्धसेसट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे जवमज्झट्ठाणमुप्पज्जदि, तप्पाओग्गपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागेण सयलट्ठाणद्धाणे ओवट्टिदे तत्थ भागलद्धमेत्ताणं ठाणाणं चरिमवियप्पे जवमज्झसमुप्पत्तिदंसणादो। पुणो जवमज्झादो उवरि विसेसहाणीए अणंताणि ट्ठाणाणि गंतूण दुगुणहाणी होइ। एवं णेदव्वं जाव हेट्ठिमद्धाणादो असंखेज्जगुणमद्धाणमुवरि गंतूण चरिमवियप्पो उक्कस्ससमयपबद्धसेसपडिबद्धो समुप्पण्णो त्ति। एदेण जवमज्झादो हेट्ठिमद्धाणं सयलट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागो उवरिमद्धाणमसंखेज्जा भागा त्ति जाणाविदं होदि।

देखते हुए उस स्थानमे द्विगुण वृद्धिस्थानान्तर उत्पन्न होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। फिर भी उससे अधस्तन स्थानोका जितना प्रमाण है उतने स्थान ऊपर जाकर दूसरा द्विगुणवृद्धिप्रमाण स्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार इस क्रमसे पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात द्विगुणवृद्धिस्थानोके जानेपर वहाँके द्विगुणवृद्धिस्थानके अन्तिम भेदमे अभव्योसे अनन्तगुणे और सिद्धोके अनन्तवें भागप्रमाण अनन्त परमाणुओको लेकर निर्लेपित हुए समयप्रबद्धोकी अतीत कालविषयक अनन्त शलाकाओको ग्रहण कर वहाँ यवमध्यस्थान उत्पन्न होता है इस प्रकार इस अर्थविशेषका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* स्थानोके असख्यातवें भागके प्रतिभागमे यवमध्य होता है।

§ ५४९. एक परमाणुसे लेकर उत्कृष्टसे अनन्त परमाणुओके प्राप्त होने तक एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे बढे हुए अनन्त स्थान यहाँ होते हैं क्योंकि एक समयप्रबद्धके उत्कृष्ट शेषप्रमाण ही स्थान यहाँ सम्भवरूपसे उपलब्ध होते हैं। परन्तु उत्कृष्ट शेष एक समयप्रबद्धके असख्यातवें भागप्रमाण होता है। पुन इतने समयप्रबद्धशेष स्थानोके असख्यातवें भागमे यवमध्य स्थान उत्पन्न होता है क्योंकि तत्प्रायोग्य पल्योपमके असख्यातवें भागके प्रतिभागसे समस्त स्थानोके आयामको भाजित करनेपर वहाँ लब्ध एक भागप्रमाण स्थानोके अन्तिम भेदमे यवमध्य उत्पन्न होता है। पुन यवमध्यसे ऊपर (आगे) विशेष हानिवश अनन्त स्थान जाकर द्विगुणहानि होती है। इस प्रकार अधस्तन आयाममे असख्यातगुणे आयाम ऊपर (आगे) जाकर उत्कृष्ट समयप्रबद्धशेषसम्बन्धी अन्तिम भेद उत्पन्न होता है। इस प्रकार इस कारणसे यवमध्यसे अधस्तन (पूर्वका) आयाम समस्त स्थानोके असख्यातवें भागप्रमाण होता है और उपरिम (आगेका) आयाम असंख्यात बहुभागप्रमाण होता है यह ज्ञान कराया गया है।

* णाणतरं थोव ।

§ ५५० जवमज्झादो हेट्ठिमोवरिमसयलणाणागुणहाणिसलागाओ मिलिदूण थोवाओ त्ति वुत्तं होइ। तासिं च पमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति उवरि सुत्तयारो सयमेव भणिहिदि। तदो सिद्धमेदासिं णाणंतरसलागाणं थोवत्तमिदि।

* एगतरमणतगुण ।

§ ५५१ एयगुणहाणिट्ठाणंतरमणंतगुणमिदि वुत्तं होइ। पुव्वुत्तणाणागुणहाणिसलागाहिं सयलट्ठाणद्धाणे ओवट्टिदे अणंतसंखावच्छिण्णपमाणमेयगुणहाणिअद्धाणमुप्पज्जदि तम्हा तत्तो एदस्साणंतगुणत्तमसंदिद्धं सिद्धं। संपहि एत्थ णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणविसये णिण्णयुप्पायणट्ठमुवरिमसुत्तमाह—

* अंतराणि अंतरट्ठिदाए पलिदोवमच्छेदणाणं पि असंखेज्जदिभागो।

§ ५५२ अंतराणि णाणागुणहाणिणाणंतराणि त्ति वुत्तं होइ। अंतरट्ठिदाए एगेगगुणहाणिणाणंतरणिमित्तं ठविदसलागाओ त्ति तेसिं चेव सरूवणिद्देसो कदो दट्ठव्वो। पलिदोवमच्छेदणाणं पि असंखेज्जदिभागो एदेण सुत्तावयवेण तेसिं पमाणपरिच्छेदो कदो दट्ठव्वो, पलिदोवमद्धच्छेदणयसलागाणं पि असंखेज्जदिभागमेत्तेण मुत्तकंठमेव तासिं पमाणावहारणादो तासिं पमाणावच्छेदवंसणादो। जदो एवमेदाओ पलिदोवमच्छेदणाणं पि असंखेज्जदिभागो। तदो एदाहिंतो एयगुणहाणि

* यहाँ इन स्थानोंकी नाना गुणहानिशलाकाएँ सबसे थोडी होती हैं।

§ ५५० नानान्तर अर्थात् यवमध्यसे अधस्तन और उपरिम स्थानोकी समस्त नाना गुणहानिशलाकाएँ मिलकर थोडी होती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और वे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हे यह बात आगे सूत्रकार स्वयं ही कहेंगे, इसलिए इन नानान्तर शलाकाओका स्तोकपना सिद्ध हो जाता है।

* उनसे एकान्तर अर्थात् एक गुणहानिस्थान अनन्तगुणा है।

§ ५५१ एक गुणहानिस्थानान्तर अनन्तगुणा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। पूर्वोक्त नाना गुणहानिशलाकाओंसे समस्त स्थानोंके आयामके भाजित करनेपर अनन्त संख्यासे युक्त प्रमाणवाला एक गुणहानिस्थान उत्पन्न होता है, इसलिए यहाँपर नाना गुणहानि शलाकाओंके प्रमाणके विषयमें निर्णय उत्पन्न करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* 'अन्तर' अर्थात् एक एक गुणहानिस्थानान्तरके निमित्त स्थापित शलाकारूप 'अन्तराणि' अर्थात् नानागुणहानिस्थानान्तर पल्योपमसम्बन्धी अर्धच्छेदोंके भी असंख्यातवें भागप्रमाण है।

§ ५५२ 'अंतराणि' पदसे नाना गुणहानिस्थानान्तर लिये गये हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'अंतरट्ठिदाए' पदसे एक एक गुणहानिस्थानान्तरके निमित्त स्थापित की गयी शलाकाएँ ली गयी हैं। इस प्रकार उक्त कथन द्वारा उन्हींके स्वरूपका निर्देश किया गया जानना चाहिए। 'पलिदोवमच्छेदणाणं असंखेज्जदिभागो' इस सूत्रवचन द्वारा उन्हीके प्रमाणका निर्णय किया गया जानना चाहिए, क्योंकि पल्योपमके अर्धच्छेदशलाकाओंके भी असंख्यातवें भाग द्वारा मुक्तकण्ठरूपसे उन्हींके प्रमाणका अवधारण किया गया है अर्थात् उन्हींके प्रमाण निर्णय देखा जाता है।

ट्ठाणतरमणतगुणमिदि ण एत्थ को वि वामोहो कायव्वोत्ति पुव्वुत्तमेवत्थमुवसहारमुहेण परूवेमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

* णाणतराणि थोवाणि । एक्कतरमणतगुण ।

§ ५५३ गयत्थमेद सुत्त । एवं भवपबद्धसेसयाण पि पयदजवमज्झपरूवणा णिरवयव-मणुगतव्वा, विसेसाभावादो। एवमेद परूविय पुणो भवसिद्धियपाओग्गे अभवसिद्धियपाओग्ग विसये च साहारणभूद परूवणतरमाढवेमाणो सुत्तपबधमुत्तर भणइ—

* खवगस्स वा अक्खवगस्स वा समयपबद्धाण वा भवबद्धाण वा अणुसमय-णिल्लेवणकालो एगसमइओ बहुगो ।

§ ५५४ अणुसमयणिल्लेवणकालो णाम समयपबद्धाण वा भवपबद्धाण वा णिरतरणिल्लेवण कालो। सो पुण जहण्णेण एगसमयमेत्तो होदि, दोसु वि पासेसु णिल्लेवणट्ठिदीणमुदयो होदूण मज्झे एगसमय चेव भवसमय पबद्धणिल्लेवणट्ठिदिविवेगभावेण परिणममाणस्स तदुवलभादो। एव दुसमइय तिसमइयादिकमेण अणुसमयणिल्लेवणकालो अणगतव्वो जावुक्कस्सेणावलियाए असखेज्जदिभागमेत्तो अणुसमयणिल्लेवणकालो समुवलद्धो त्ति, खवगसेढीए ससारावत्थाए वा एत्तो अहिययराणुसमय णिल्लेवणकालस्साणुवलभादो। एवमेदे अणुसमयणिल्लेवणकालवियप्पे जहण्णकालप्पहुडि जावुक्क स्सकालो त्ति समयुत्तरकमेण ठवेदूण एत्थ अणुसमयणिल्लेवणकालो 'एगसमओ बहुओ त्ति' वुत्ते

यत इस प्रकार ये पल्योपमके अर्धच्छेदोके भी असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, इसलिए इनमे एक गुणहानिस्थाना तर अन तगुणा है इस प्रकार इम विषयमे किसी प्रकारका भो व्यामोह नही करना चाहिए। अब पूर्वोक्त अर्थकी ही उपसहार द्वारा प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* णाणतराणि' अर्थात् नाना गुणहानिस्थानान्तर सबसे थोडे हैं। तथा उनसे 'एकांतर' अर्थात् एक गुणहानिस्थाना तर अन तगुणा है।

§ ५५३ यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार भवबद्धशेषोकी भी प्रकृत यवमध्यप्ररूपणा समग्र रूपसे करनी चाहिए, क्योकि उससे इसमें कोई विशेषता नही है। इस प्रकार इतना प्ररूपण करके पुन भवसिद्धिक जीवोके योग्य और अभवसिद्धिक जीवोके योग्य विषयमे साधनभूत दूसरी प्ररूपणाको आरम्भ करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते है—

* क्षपकके अथवा अक्षपकके समयप्रबद्धोंका अथवा भवबद्धोका एक समयसम्बन्धी अनुसमय निर्लेपनकाल बहुत है।

§ ५५४ समयप्रबद्धोका अथवा भवबद्धोका जो निरन्तर हानेवाला निर्लेपनकाल है वह जघन्यसे एक समयप्रमाण होता है, क्योकि दोनो ही पार्श्वभागोमे निर्लेपनरूप स्थितियोका उदय होकर मध्यमे एक समय तक ही भवबद्ध और समयप्रबद्धनिर्लेपन स्थितिरूपसे परिणमन करनेवाले-का वह काल पाया जाता है। इसी प्रकार दो समयवाले और तीन समयवालेके क्रमसे प्रत्येक समयमें निर्लेपनकाल तबतक जानना चाहिए जब जाकर उत्कृष्टसे आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण प्रतिसमय निर्लेपनकाल उपलब्ध होता है इस प्रकार क्षपकश्रेणिमें अथवा संसार अवस्थामें इससे अधिकतर प्रतिसमय निर्लेपनकाल उपलब्ध नही होता। इस प्रकार इन निर्लेपनकालके भेदोंको जघन्य कालसे लेकर उत्कृष्ट कालके प्राप्त होने तक एक-एक अधिक समयके क्रमसे स्थापित करके

अक्खवगस्स ताव अदीदे काले होसु वि फासेसु अणिल्लेवणट्ठिदीणमुदओ होदूण पुणो तासिं मज्झे एगा णिल्लेवणट्ठिदी होदूण उदयं लहदि। एवंविहणिल्लेवणट्ठिदीणमुदयकालस्स अदीदे काले सव्वत्थ गहिदसलागाओ अणंताओ होदूण उवरिमवियप्पपडिबद्धसलागाहिंतो बहुगीओ जादाओ। एवं खवगस्स वि वत्तव्वं। णवरि णाणाजीवावेक्खाए एस कालो घेत्तव्वो। एगजीवावेक्खाए वि एस कालो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो होदूण सव्वबहुगो होदि त्ति घेत्तव्वं।

* दुसमइओ विसेसहीणो।

§ ९५५ 'खवगस्स वा अक्खवगस्स वा अणुसमयणिल्लेवणकालो' त्ति पुव्वसुत्तादो अणुवट्टदे। तेणेवमेत्थ सुत्तत्थसंबंधो कायव्वो—खवगस्स वा अक्खवगस्स वा भवबद्धाणं वा समयपबद्धाण वा अणुसमयणिल्लेवणकालो दुसमइओ पुव्वुत्तकाल पेक्खियूण विसेसहीणो होदि त्ति। किं कारणं? दो दोणिल्लेवणट्ठिदीणमंतरिदसरूवेण संजोगो अदीवदुल्लहो होइ तेण पुव्विल्ल कालादो एसो कालो विसेसहीणो जादो। एत्थ विसेसहीणपमाणं हेट्ठिमरासिस्सासंखेज्जदिभागो। तस्स पडिभागो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एत्थ वि पुव्वं व खवगस्स अदीदकालविसये णाणाजीवप्पणाए एसो कालो अणंतो घेत्तव्वो। एगजीवप्पणाए आवलियाए असंखेज्जदिभाग पमाणो त्ति वत्तव्वं। उवरिमपदेसु वि एसो अत्थो सव्वत्थ जोजेयव्वो।

यहाँपर अनुसमयसम्बन्धी निर्लेपनकाल 'एक समयसम्बन्धी बहुत है' ऐसा कहनेपर अक्षपकके तो अतीत कालमें दोनों ही पार्श्वभागोंमें अनिर्लेपनरूप स्थितियोंका उदय होकर पुनः उनके मध्यमें एक निर्लेपन स्थिति होकर उदयको प्राप्त होती है। इस प्रकार निर्लेपनरूप स्थितियोंके उदयकालकी अतीत कालमें सर्वत्र ग्रहण की गयी शलाकाएँ अनन्त होकर उपरिम भेदसे सम्बन्ध रखनेवाली शलाकाओंसे बहुत हो जाती हैं। इस प्रकार क्षपकके भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यह काल नाना जीवोंकी अपेक्षा ग्रहण करना चाहिए। एक जीवकी अपेक्षा भी यह काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर सबसे अधिक होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

* दो समयवाला अनुसमय निर्लेपनकाल विशेष हीन है।

§ ५५५ क्षपकके अथवा अक्षपकके समयप्रबद्धोंका अथवा भवबद्धोंका 'अनुसमयवाला निर्लेपनकाल' इसकी पिछले सूत्रसे अनुवृत्ति होती है, इसलिए यहाँपर उस पदके साथ सूत्रके अर्थका सम्बन्ध कर लेना चाहिए—क्षपकके अथवा अक्षपकके भवबद्धोंका अथवा समयप्रबद्धोंका अनुसमय निर्लेपनकाल दो समयवाला पूर्वोक्त कालको देखते हुए विशेष हीन होता है।

शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—क्योंकि दो दो निर्लेपन स्थितियोंका अन्तरितरूपसे संयोग अतीव दुर्लभ है। इसलिए पूर्वके कालसे यह काल विशेष हीन हो जाता है।

यहाँपर विशेष हीनका प्रमाण अधस्तन राशिका असंख्यातवाँ भाग है और उसका प्रतिभाग आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। यहाँपर भी पहलेके समान क्षपकके अतीत कालमें नाना जीवोंकी मुख्यतासे यह काल अनन्त ग्रहण करना चाहिए। तथा एक जीवकी मुख्यतासे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा कहना चाहिए। आगेके पदोंमें भी यह सर्वत्र योजित कर लेना चाहिए।

* एवं गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागे दुगुणहीणो ।

§ ५५६ एवं तिसमइय-चदुसमइयादीण पि अणुसमयणिल्लेवणकालाणं विसेसहीणभावो णेदव्वो जाव आवलियाए असंखेज्जभागमेत्तआवलियाए असंखेज्जदिभागिओ अणुसमयणिल्लेवण कालो एगसमइयणिल्लेवणकालादो दुगुणहीणो जादो त्ति । एवमेगं गुणहाणिअद्धाणमेत्तो । उवरि पुणो वि विसेसहीणकमेण णेदव्वं जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसव्वुक्कस्साणुसमयणिल्लेवणकालो त्ति । एत्थावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ गुणहाणीओ होंति त्ति घेत्तव्वं । संपहि एत्थतणचरिमवियप्पपडिबद्धो उक्कस्सओ अणुसमयणिल्लेवणकालो खवगाखवगेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो चेव, ण तत्तो अब्भहियपमाणो त्ति एदस्स अत्थविसेसस्स फुडीकरणट्ठ मुत्तरसुत्तावयारो—

* उक्कस्सओ वि अणुसमयणिल्लेवणकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

§ ५५७ खवगस्स वा अक्खवगस्स वा भव समयपबद्धणिल्लेवणट्ठिदीणमुदयकालो णिरंतर-सरूवेण लब्भमाणो उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो चेव होदि त्ति वुत्तं होइ । एत्थ सव्वत्थ 'अणुसमयणिल्लेवणकालो' त्ति वुत्ते भव समयपबद्धसेसाणं चेव सुद्धाणमुदयकालो त्ति ण घेत्तव्वं, तहाविहसंभवाणुवलंभादो । किंतु तत्थ केत्तियाणं पि भव-समयपबद्धाणं णिल्लेवणं संभवं पेक्खियूण मिस्सोदयकालस्स वि अणुसमयणिल्लेवणकालत्तमेत्थ परूविदमिदि दट्ठव्वं । एदं च सुत्तं देसामासयं, तेण अणुसमयणिल्लेवणकालं वि घेत्तूण पयदप्पाबहुआणुगमो समया

---

* इस प्रकार विशेष हीनके क्रमसे जाकर अनुसमय निर्लेपनकाल आवलिके असंख्यातवें भागमें द्विगुण हीन होता है ।

§ ५५६ इस प्रकार तीन समयवाले, चार समयवाले आदि भी अनुसमय निर्लेपन कालोंका उत्तरोत्तर विशेष हीनपना तबतक ले जाना चाहिए जब जाकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागिक अनुसमय निर्लेपनकाल एकसमयके निर्लेपनकालसे द्विगुण हीन हो जाता है । इस प्रकार यह एक गुणहानिस्थान मात्र होता है । आगे फिर भी विशेष हीनके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सबसे उत्कृष्ट अनुसमय निर्लेपनकालके प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिए । यहाँपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणहानियाँ होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए । अब यहाँ सम्बन्धी अन्तिम विकल्पसे सम्बन्ध रखनेवाला अनुसमय निर्लेपनकाल क्षपक और अक्षपक दोनोंमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है उससे अधिक प्रमाणवाला नहीं । इस प्रकार इस अर्थविशेषको स्पष्ट करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार हुआ है—

* उत्कृष्ट भी अनुसमय निर्लेपनकाल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है ।

§ ५५७ क्षपकके अथवा अक्षपकके भवबद्ध और समयप्रबद्धोंकी निर्लेपन स्थितियोंका उदय काल निरन्तररूपसे प्राप्त होता हुआ उत्कृष्टसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है यह इस कथनका तात्पर्य है । यहाँपर सर्वत्र 'अनुसमय निर्लेपनकाल' ऐसा कहनेपर केवल भवबद्धोंका और केवल समयप्रबद्धोंका उदयकाल ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि उस प्रकार वह सम्भव नहीं पाया जाता । किन्तु वहाँपर कितने ही भवबद्धों और समयप्रबद्धोंके निर्लेपनका सम्भव देखकर मिश्र उदयकालका भी अनुसमय निर्लेपन कालपना यहाँपर कहा गया है ऐसा जानना चाहिए । अतः यह सूत्र देशामर्षक है इस कारण अनुसमय निर्लेपनकालको भी ग्रहणकर समयके

विरोहेणाणुगंतव्वो। संपहि एगादिएगुत्तरकमेण परिवड्ढिदाहि अणिल्लेवणट्ठिदीहि अंतरिदाणं णिल्लेवणट्ठिदीणमुदयेण णिल्लेविदपुव्वाणं भव-समयपबद्धाणमदीदकालविसये थोवबहुत्तमक्खवग सबंधेण परूवेमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाढवेइ—

* अक्खवगस्स एगसमइयेण अंतरेण णिल्लेविदा समयपबद्धा वा भवबद्धा वा थोवा।

§ ५५८ एदस्सत्थो वुच्चदे—अक्खवगस्स अदीदे काले णाणाकम्मट्ठिदिअब्भंतरे वा एगकम्मट्ठिदिअब्भंतरे वा दोसु वि पासेसु एगेगअणिल्लेवणट्ठिदि अंतर होदूण पुणो तासिं मज्झे जेत्तियाओ भवसमयपबद्धाण णिल्लेवणट्ठिदीओ उदयमागदाओ अत्थि तासु लद्धसमयपबद्धाणं भवबद्धाणं च तत्थेव णिल्लेविदसरूवाण सव्वत्थ उच्चिणिदूण गाहिदसलागाओ अणंताओ असखेज्जाओ च होदूण सव्वत्थोवाओ भवंति, उवरिमवियप्पपडिबद्धभव समयपबद्धसलागाणमेत्तो जहाकम बहुत्तदंसणादो।

* दुसमएण अंतरेण णिल्लेविदा विसेसाहिया।

§ ५५९ दोसु वि पासेसु दो दोअणिल्लेवणट्ठिदीओ होदूण पुणो तासिं मज्झे केत्तियाओ वि भव समयपबद्धणिल्लेवणट्ठिदीओ उदय कादूण गदाओ अदीदकालप्पणाए अणंताओ अत्थि। कम्मट्ठिदिविवक्खाए च असखेज्जाओ। पुणो तासु णिल्लेविदसमयपबद्धाण भवबद्धाण च गहिद सलागाओ हेट्ठिमवियप्पसलागाहिंतो विसेसाहियाओ होंति त्ति सुत्तत्थसबंधो। विसेसपमाणमेत्थ

अविरोधपूर्वक प्रकृत अल्पबहुत्वका अनुगम जानना चाहिए। अब एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे परिवर्धित अनिर्लेपन स्थितियोसे अन्तरित निर्लेपन स्थितियोका उदयसे निर्लेपितपूर्व भवबद्ध और समयप्रबद्धोके अतीत कालसम्बन्धी अल्पबहुत्वको अक्षपकके सम्बन्धसे प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* अक्षपकके एक समयिक अन्तरसे निर्लेपित समयप्रबद्ध अथवा भवबद्ध सबसे थोडे हैं।

§ ५५८ अक्षपकके अतीत कालमें नाना कर्मस्थितियोके भीतर अथवा एक कर्मस्थितिके भीतर दोनो ही पार्श्वभागोमे एक एक अनिर्लेपनरूप स्थितिका अन्तर होकर पुन उनके मध्यमें जितनी भवबद्धो और समयप्रबद्धोकी निर्लेपनस्थितियाँ उदयको प्राप्त हुई हैं उनमें वही निर्लेपित स्वरूप प्राप्त हुए समयप्रबद्धो और भवबद्धोकी सर्वत्र मिलाकर ग्रहण की गयी शलाकाएँ अनन्त और असंख्यात होकर सबसे थोडी होती हैं, क्योकि उपरिम विकल्पोसम्बन्धी भवबद्ध और समय प्रबद्धोकी शलाकाएँ आगे आगे क्रमसे बहुत देखी जाती हैं।

* दो समयिक अन्तरसे निर्लेपित समयप्रबद्ध और भवबद्ध विशेष अधिक होते हैं।

§ ५५९ दोनो ही पार्श्वभागोमें दो दो अनिर्लेपनरूप स्थितियाँ होकर पुन उनके मध्यमें कितनी ही भवसिद्ध और समयप्रबद्धसिद्ध निर्लेपन स्थितियाँ उदयको प्राप्त होकर अतीत कालकी मुख्यतामें अनन्त होती हैं और कर्मस्थितिकी मुख्यतामे असंख्यात होती हैं। पुन उनमें जिनका निर्लेपन हो गया है ऐसे समयप्रबद्धो और भवबद्धोकी ग्रहणकी गयी शलाकाएँ अधस्तन भेदोंकी शलाकाओसे विशेष अधिक होती हैं यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। यहाँपर विशेषका प्रमाण अधस्तन शलाकाओंके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

हेट्ठिमसलागाणमसंखेज्जदिभागो। तस्स को पडिभागो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एत्थतणगुणहाणिअद्धाणस्स तप्पमाणत्तोवएसादो। एवं तिसमयेण अंतरेण णिल्लेविदा विसेसाहिया, चदुसमइयणिल्लेविदा विसेसाहिया, इच्चादिकमेण गंतूण तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-मेत्तद्धाणे दुगुणवड्ढी होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो —

* एवं गंतूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे दुगुणा।

§ ५६० पुव्वुत्तभागहारमेत्तद्धाणमुवरि गंतूण तदित्थवियप्पसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणंतरेण णिल्लेविज्जमाणाणं भवसमयपबद्धाणमदीदकालप्पणाए अणंताओ कम्मट्ठिदिविवक्खाए च असंखेज्जपमाणाओ होदूण दुगुणवड्ढिदाओ दट्ठव्वाओ त्ति वुत्तं होइ। एवमेगं दुगुणवड्ढिअद्धाणं। एवंविहेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु दुगुणवड्ढिअद्धाणेसु गदेसु तत्थ सयलद्धाणस्स असंखेज्जदिभागे पयदवियप्पसलागाहि जवमज्झमुप्पज्जदि त्ति इममत्थविसेसं जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* ट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे जवमज्झं।

§ ५६१ एत्थतणसयलट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि एगादिएगुत्तरकमेण परिवड्ढिवाणमणिल्लेविदट्ठिदिसलागाणं तत्तो अहियपराणमणुवलंभादो। एवंविहस्स सयल

शंका—उसका प्रतिभाग क्या है?

समाधान—पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग प्रतिभाग है, क्योंकि यहाँका गुणहानिअध्वान तत्प्रमाण है ऐसा आगमका उपदेश है।

इसी प्रकार तीन-तीन समयके अन्तरसे निर्लेपित वे विशेष अधिक हैं, चार चार समयके अन्तरसे निर्लेपित वे विशेष अधिक हैं इत्यादि क्रमसे जाकर उसके बाद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंके प्राप्त होनेपर द्विगुण वृद्धि होती है। इस प्रकार इसका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* **इस प्रकार विशेष अधिकके क्रमसे जाकर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जानेपर वहाँ उनका प्रमाण दूना होता है।**

§ ५६० पूर्वोक्त भागहारप्रमाण स्थान ऊपर क्रमसे जाकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण अन्तरसे निर्लेप्यमान भवबद्ध और समयप्रबद्धोंकी वहाँ प्राप्त हुई शलाकाएँ अतीत कालकी मुख्यतासे अनन्त और कर्मस्थितिकी विवक्षामें असंख्यातप्रमाण होकर दूनी वृद्धिको प्राप्त हुई जाननी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यह एक दूना वृद्धिरूप स्थान है। इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंके व्यतीत होनेपर वहाँ समस्त स्थानोंके असंख्यातवें भागमें प्रकृत भेदरूप शलाकाओंके आश्रयसे यवमध्य उत्पन्न होता है इस प्रकार इस अर्थविशेषका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* **वहाँ जितने द्विगुण वृद्धिरूप स्थान प्राप्त होते हैं उनके असंख्यातवें भागमें यवमध्य होता है।**

§ ५६१ यहाँ समस्त स्थान पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं क्योंकि एकसे लेकर एक-एक अधिकके क्रमसे परिवर्धित अनिर्लेपित स्थितिसम्बन्धी शलाकाएँ उनसे अधिक नहीं पाई

ट्ठाणस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठाणे तप्पाओग्गपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ततरवियप्पेण अंतरिदाण ठिदीणमुदयेण णिल्लेविदपुव्वाण भवसमयपबद्धाण सलागाओ पुव्व व अणंताओ असंखेज्जाओ च होदूण जवमज्झभावेण समुप्पण्णाओ दट्ठव्वाओ त्ति सुत्तत्थसंबंधो। एत्तो उवरिमेसु सयलट्ठाणट्ठाणस्स असंखेज्जेसु भागेसु विसेसहाणीए असंखेज्जाओ गुणहाणीओ गंतूण सव्वुक्कस्स णिल्लेवणंतरेण णिल्लेविदाण भव समयपबद्धाणं सलागाओ अणंताओ असंखेज्जाओ च घेत्तूण एत्थतणचरिमवियप्पो होदि त्ति घेत्तव्वं। एत्थ णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागो। एयगुणहाणिट्ठाणंतर पि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। णवरि णाणागुणहाणि सलागाहिंतो एयगुणहाणिट्ठाणतरमसंखेज्जगुणं। संपहि एत्थतणचरिमवियप्पस्स फुडीकरणट्ठ मुत्तरसुत्तावयारो—

* उक्कस्सय पि णिल्लेवणतर पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

§ ५६२ कुदो? एत्तो अब्भहियाणमणिल्लेवणट्ठिदीण णिरंतरसरूवेण सव्वत्थमणुवलंभादो। एद पि सुत्त देसामासय तेण णिल्लेवणट्ठिदीहिं मि एगादिएगुत्तरकमेण अंतरिदाणमणिल्लेवणट्ठिदीणं भव समयपबद्धसलागाहिं पयदजवमज्झपरूवणाविसेससंभव जाणिय कायव्वो। जहा एसो अत्थो अक्खवगस्स मग्गिदो तहा चेव खवगस्स वि मग्गियव्वो। णवरि तत्थ उक्कस्सय पि णिल्लेवणं तरमावलियाए असंखेज्जदिभागो। एवमेद समाणिय संपहि एगसमएण णिल्लेविज्जमाणाणं संभवसमयपबद्धाण पमाणावहारणट्ठमुवरिम सुत्तपबंधमाह—

जाती। अत इस प्रकारके समस्त स्थानोके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानमें तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्तरसम्बन्धी भेदोंसे अन्तरित स्थितियोके उदयसे निर्लेपित पूर्व भवबद्ध और समयप्रबद्धोकी शलाकाएँ पहलेके समान अनन्त और असंख्यात होकर यवमध्यरूपसे उत्पन्न हुई जाननी चाहिए। यह इस सूत्रका अथके साथ सम्बन्ध है। आगे इससे उपरिम स्थानके असंख्यात बहुभागप्रमाण स्थानोमे विशेषहानि द्वारा असंख्यात गुणहानियाँ जाकर सबसे उत्कृष्ट निर्लेपनके अन्तरसे निर्लेपित भवबद्ध और समयप्रबद्धोकी अनन्त और असंख्यात स्थानोको ग्रहण करके यहाँका अन्तिम भेद उत्पन्न होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। यहाँपर नाना गुणहानि शलाकाएँ पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है तथा एक गुणहानि स्थानान्तर भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अब यहाँ अन्तिम विकल्पको स्पष्ट करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

* उत्कृष्ट भी निर्लेपनरूप स्थितिका अन्तर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

§ ५६२ क्योंकि इससे अधिक अनिर्लेपित स्थितियाँ निरन्तर सवत्र उपलब्ध नहीं होती हैं। यह सूत्र भी देशामर्षक है, इसलिए निर्लेपनरूप स्थितियोसे एकसे लेकर एक-एक अधिकके क्रमसे अन्तरित अनिर्लेपनरूप स्थितियोकी भवबद्ध और समयप्रबद्ध शलाकाओंके द्वारा प्रकृत यव मध्य प्ररूपणाविशेष सम्भव जानकर करना चाहिए। यहाँ जिस प्रकार यह अर्थ अक्षपककी अपेक्षा कहा है उसी प्रकार क्षपककी अपेक्षा भी जान लेना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वहाँ पर उत्कृष्ट भी निर्लेपन अन्तर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। इस प्रकार इस कथनको समाप्त करके अब एक समयके द्वारा निर्लेप्यमान सम्भव समयप्रबद्धोके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* एक्केण समयेण णिल्लेविज्जंति समयपबद्धा वा भवबद्धा वा एक्को वा, दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

§ ५६३ एगादिएगुत्तरपरिवड्ढीए गतूण उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव समयपबद्धा भवबद्धा च एगसमएणणिल्लेविज्जमाणा होंति, णादिरित्ता त्ति भणिदं होइ । एसा च परूवणा खवगस्स अक्खवगस्स च साहारणभूदा दट्ठव्वा, उभयत्थ वि उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताण भवसमयपबद्धाणमेगसमयेण णिल्लेवणसंभवं पडि विसेसाभावादो ।

* एदेण वि जवमज्झं ।

§ ५६४ एदेण वि अणंतरसुत्तणिद्दिट्ठेण अत्थविसेसेण परिच्छिण्णसरूवाणमेयमेगादिएगुत्तरकमेण एगसमयेण णिल्लेविज्जमाणाणं भवसमयपबद्धाणमदीदकालमस्सियूण जवमज्झपरूवणा कायव्वा त्ति भणिदं होइ । संपहि जइ वि एदस्स जवमज्झस्स परूवणा सुगमा तो वि मंदबुद्धिसोदारजणाणुग्गहट्ठं तव्विवरणं कुणमाणो चुण्णिसुत्तयारो उवरिमं विहासागंथमाढवेइ—

* एक्केक्केण णिल्लेविज्जंति ते थोवा ।

§ ५६५ एवं भणिदे अदीदे काले जे एगेगसमयपबद्धा भवबद्धा च होदूण णिल्लेविदा तेसिमदीदे काले सव्वत्थ उच्चिणिदूण गहिदसलागाओ अणंतसखावच्छिण्णाओ होदूण उवरिमवियप्पपडिबद्धसलागाहिंतो थोवाओ त्ति वुत्तं होइ ।

---

* जो समयबद्ध या भवबद्ध एक समय द्वारा निर्लेपित किये जाते हैं वे एक होते हैं, अथवा दो होते हैं अथवा तीन होते हैं । इस प्रकार क्रमसे जाकर उत्कृष्ट पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

§ ५६३ एकसे लेकर एक-एक अधिक परिवर्धित क्रमसे जाकर एक समय द्वारा निर्लेप्यमान समयप्रबद्ध और भवबद्ध उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं, इनसे अधिक नहीं होते यह उक्त कथनका तात्पर्य है । किन्तु यह प्ररूपणा क्षपक और अक्षपकके समानरूपसे जाननी चाहिए, क्योंकि दोनों ही स्थानोंपर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भवबद्ध और समयप्रबद्धों का निर्लेपन सम्भव होनेके प्रति विशेषताका अभाव है ।

* इस अर्थविशेषके अनुसार भी यवमध्य होता है ।

§ ५६४ 'एदेण वि' अर्थात् इस अनन्तर सूत्र निर्दिष्ट अर्थविशेषके अनुसार भी एकसे लेकर एक एक अधिकके क्रमसे परिच्छिन्न स्वरूप निर्लेप्यमान इन भवबद्ध और समयप्रबद्धोंकी अतीत कालके आश्रयसे यवमध्य प्ररूपणा करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब यद्यपि इस यवमध्यकी प्ररूपणा सुगम है, तो भी मन्दबुद्धि श्रोताओंके अनुग्रहके लिए उसका विवरण करते हुए चूर्णिसूत्रकार आगेके विभाषाग्रन्थका आरम्भ करते हैं—

* जो समयप्रबद्ध या भवबद्ध एक एक करके निर्लेपित किये गये हैं वे सबसे थोड़े हैं ।

§ ५६५ ऐसा कहनेपर अतीत कालमें जो एक एक समयप्रबद्ध और भवबद्ध निर्लेपित किये गये हैं उनकी अतीत कालमें सर्वत्र एकत्रित करके ग्रहण की गयी शलाकाएँ अनन्त संख्यारूप होकर आगेके भेदोंसे सम्बन्ध रखनेवाली शलाकाओंकी अपेक्षा थोड़ी होती हैं ।

* दोण्णि णिल्लेविज्जंति विसेसाहिया ।

§ ५६६ जे वो-हो समयपबद्धा भवबद्धा वा एगसमएण णिल्लेविदा त्ति अदीदकाले सव्वत्थ जहासंभवमुच्चिणिदूण गहिदा पुव्विल्लेहिंतो विसेसाहिया त्ति वुत्तं होइ । विसेसपमाण मेत्थ पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागपडिभागियं, एत्थतणगुणहाणिअद्धाणस्स तप्पमाणत्तादो ।

* तिण्णि णिल्लेविज्जति विसेसाहिया ।

§ ५६७ जे तिण्णि तिण्णि णिल्लेविदा भवबद्धा समयपबद्धा वा ते अदीदकाले सव्वत्थ समुच्चिदसरूवा अणंतरहेट्ठिमवियप्पसलागाहितो विसेसाहिया त्ति भणिद होइ ।

* एव गंतूण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागे दुगुणा ।

§ ५६८ एवमवट्ठिदेगेगविसेसपडिवड्ढीए गंतूण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तट्ठाणे दुगुणवड्ढी समुप्पज्जदि त्ति वुत्तं होइ । एव दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तीओ दुगुणवड्ढीओ गंतूण तदित्थवियप्पे जवमज्झ समुप्पण्ण ति तत्तो उवरि विससहीणकमेण असखेज्जाओ गुणहाणीओ गतूण सव्वुक्कस्सपलिदोवमासखेज्जभागमेत्त भवसमयपबद्धसलागाओ घेत्तूण पयदजवमज्झपरूवणाए चरिमवियप्पो होइ। एत्थ जवमज्झ हेट्ठिमसयलद्धाणादो उवरिमसयलद्धाणमसंखेज्जगुण, हेट्ठिमदुगुणवड्ढिसलागाहितो उवरिमदुगुण

* जो समयप्रबद्ध या भवबद्ध दो दो करके निर्लेपित किये गये हैं वे विशेष अधिक होते हैं।

§ ५६६ जो दो दो समयप्रबद्ध या भवबद्ध निर्लेपित किये गये हैं वे अतीतकालमे सर्वत्र यथासम्भव एकत्रित करके ग्रहण किये गये पहलेकी अपेक्षा विशेष अधिक होते हैं यह उक्त कथन का तात्पर्य है । यहाँपर विशेष भाग पल्योपमके असंख्यातवें भागके प्रतिभाग प्रमाण है, क्योकि यहाँका गुणहानि अध्वान तत्प्रमाण है ।

* जो समयप्रबद्ध या भवबद्ध तीन तीन करके निर्लेपित किये गये हैं वे विशेष अधिक होते हैं ।

§ ५६७ जो भवबद्ध या समयपबद्ध तीन तीन निर्लेपित किये गये हैं वे अतीत काल मे सर्वत्र एकत्रित किये गये अनन्तर अधस्तन भेदोकी शलाकाओसे विशेष अधिक होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* इस प्रकार एक एक अधिकके क्रमसे जाकर पल्योपमके असख्यातवें भागमे वे दूने हो गये हैं ।

§ ५६८ इस प्रकार अवस्थित एक एक विशेषकी परिवृद्धिसे जाकर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानके प्राप्त होनेपर दूनी वृद्धि उत्पन्न होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार द्विगुणवृद्धि-द्विगुणवृद्धि होती हुई पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणवृद्धियाँ जाकर वहाँ प्राप्त हुए विकल्पमें यवमध्य उत्पन्न होता है। पुन उससे आगे विशेषहीनके क्रमसे असंख्यात द्विगुणहानियाँ जाकर सबसे उत्कृष्ट पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भवबद्ध और समयप्रबद्ध शलाकाओको ग्रहण कर प्रकृत यवमध्य प्ररूपणामें अन्तिम विकल्प होता है। यहाँपर यवमध्यके अधस्तन समस्त अध्वानसे उपरिम पूरा अध्वान असख्यातगुणा होता है, क्योकि अधस्तन द्विगुण

१ ता आ प्रत्यो –पडिवत्तीए ।

हाणिसलागाओ असखेज्जगुणाओ त्ति एसो सव्वो वि अत्थविसेसो सुत्तणिलीणो वक्खाणेयव्वो। संपहि एत्थतणणाणागुणहाणिसलागाणमेयगुणहाणिट्ठाणंतरस्स च पमाणावहारणं कुणमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* णाणंतराणि थोवाणि ।

§ ५६९ एत्थतणणाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तीओ होदूण थोवाओ त्ति वुत्तं होइ ।

* एक्कंतरछेदणाणि वि असखेज्जगुणाणि ।

§ ५७० एगगुणहाणिट्ठाणंतरस्स अद्धच्छेदणयसलागाओ वि पुव्विल्लणाणागुणहाणि सलागाहितो असखेज्जगुणाओ, तेणेयगुणहाणिट्ठाणंतर णियमा असखेज्जगुण होदि त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। एद च एयगुणहाणिट्ठाणंतर पलिदोवमपढमवग्गमूलस्सासखेज्जदिभाग मेत्तमेवेत्ति णिच्छेयव्व, एत्थतणसयलट्ठाणाण पलिदोवमपढमवग्गमूल पेक्खियूणासखेज्जगुण हीणत्तस्स उवरिमप्पाबहुअसुत्तबलेण परिणिच्छिदत्तादो। संपहि एत्थ भणिदपदविसेसाण केसि पि थोवबहुत्तावहारणट्ठमुवरिम पबंधमाढवेइ—

* अप्पाबहुअं ।

§ ५७१ अदीदपरूवणाविसयाण केसि पि पदाणमप्पाबहुअमिदाणि कस्सामो त्ति भणिदं होइ ।

वृद्धि शलाकाओसे उपरिम द्विगुणवृद्धि शलाकाएँ असख्यातगुणी होती हैं। इस प्रकार यह पूरा ही अर्थविशेष सूत्रमे गर्भित है ऐसा व्याख्यान करना चाहिए। अब यहाँपर नाना गुणहानि शलाकाओके और एक गुणहानिस्थानान्तरके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

* यहाँ नाना तर अर्थात् नाना गुणहानिशलाकाएँ थोड़ी हैं।

§ ५६९ यहाँकी नाना गुणहानिशलाकाएँ पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण होकर थोड़ी हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* एकान्तरछेद अर्थात् एक गुणहानिस्थानान्तरके अर्धच्छेद असख्यातगुणे हैं।

§ ५७० एक गुणहानिस्थानान्तरकी अर्धच्छेदशलाकाए भी पहलेकी नाना गुणहानिकी शलाकाओकी अपेक्षा असख्यातगुणी हैं, इस कारण एक गुणहानिस्थानान्तर नियमसे असख्यातगुणा है यह इस सूत्रका भावार्थ है। और यह एक गुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असख्यातवें भाग प्रमाण ही होता है ऐसा निश्चय करना चाहिए, क्योकि यहाँके समस्त स्थान पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको देखते हुए असख्यातगुणे हीन हैं यह उपरिम सूत्रके बलसे निश्चित होता है। अब यहाँ पर कहे गये कितने ही पदविशेषोके अल्पबहुत्वका अवधारण करनेके लिए उपरिम प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* अब किन्हीं पदोंका अल्पबहुत्व कहते हैं।

§ ५७१ अब अतीत प्ररूपणाविषयक कितने ही पदोंका अल्पबहुत्व इस समय कहेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* सव्वत्थोवमणुसमयणिल्लेवणकंडयमुक्कस्सयं ।

§ ५७२ एत्थाणुसमयणिल्लेवणकडयमिदि भणिदे समय पडि भवबद्धाण समयपबद्धाणं च णिल्लेवणकालो गहेयव्वो । तस्साणुक्कस्सवियप्पपडिसेहट्ठमुक्कस्सविसेसणं कद, तेण सव्वुक्कस्सयमणुसमयणिल्लेवणकंडयमावलियाए असखेज्जदिभागपमाण होदूण सव्वत्थोवमिदि सुत्तत्थो ।

* जे एगसमएण णिल्लेविज्जति भवबद्धा ते असखेज्जगुणा ।

§ ५७३ कुदो ? पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागपमाणत्तादो । णचेदमसिद्ध, एक्कम्मि ठिदिविसेसे पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ता भवबद्धा होदण णिल्लेविज्जति त्ति पुव्वमेव परूविदत्तादो ।

* समयपबद्धा एगसमयेण णिल्लेविज्जति असंखेज्जगुणा ।

§ ५७४ एदे वि पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ता चेव होति, किंतु एगम्मि भवबद्धे णिल्लेविज्जमाणे असखेज्जा समयपबद्धा णिल्लेविज्जमाणा लब्भति, एगभवबद्धअब्भतरे जहण्णदो वि अतोमुहुत्तमेत्ताण समयपबद्धाण सभवोवलभादो । तदो सिद्धमेदेसि तत्तो असंखेज्ज गुणत्त । गुणगारपमाणमेत्थ अतोमुहुत्तमेत्तमिदि घेत्तव्व ।

* समयपबद्धसेसएण विरहिदाओ णिरतराओ ट्ठिदीओ असखेज्जगुणाओ ।

* उत्कृष्ट अनुसमय निर्लेपनकाण्डक सबसे अल्प है ।

§ ५७२ यहाँपर अनुसमय निर्लेपनकाण्डक ऐसा कहनेपर उससे प्रतिसमयके भवबद्ध और समयप्रबद्धोका निर्लेपनकाल ग्रहण करना चाहिए । उसके अनुत्कृष्ट भेदका निषेध करनेके लिए उत्कृष्ट विशेषण दिया है । इस कारण सबसे उत्कृष्ट अनुसमय निर्लेपनकाण्डक आवलिके असख्यातवे भागप्रमाण होकर सबसे अल्प है यह इस सूत्रका अर्थ है ।

* जो भवबद्ध एक समय द्वारा निर्लेपित किये जाते हैं वे असंख्यातगुणे हैं ।

§ ५७३ क्योकि ये पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । और यह कथन असिद्ध नही है, क्योकि एक स्थितिविशेषमें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भवबद्ध होकर निर्लेपित किये जाते हैं यह पूर्व ही कह आये हैं—

* जो समयप्रबद्ध एक समय द्वारा निर्लेपित किये जाते हैं वे असंख्यातगुणे हैं ।

§ ५७४ ये भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं, क्योकि एक भवबद्धके निर्लेप्यमान होनेमे असख्यात समयप्रबद्ध निर्लेप्यमान प्राप्त होते हैं, क्योकि एक भवबद्धके भीतर जघन्यसे भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण समयप्रबद्ध उपलब्ध होते हैं । इसलिए ये उनसे असख्यातगुणे हैं यह सिद्ध हुआ । यहाँपर गुणकारका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

* समयप्रबद्ध शेषसे रहित निरन्तर स्थितियाँ असंख्यातगुणी हैं ।

---

१ ताम्रपत्रप्रतौ प्रायोऽत्र खंडयमिदि इति पाठ ।

§ ५७५ एदाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ चेव णिरंतरमसामण्णाओ ट्ठिदीओ अभवसिद्धियपाओग्गे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ होंति त्ति पुव्वमेव भणिदत्तादो। किंतु पुव्विल्लेहिंतो एदाओ असंखेज्जगुणाओ। कथमेदं परिच्छिज्जदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो।

* पलिदोवमवग्गमूलमसंखेज्जगुणं।

§ ५७६ किं कारणं ? असामण्णट्ठिदीणं णिरंतरमुवलब्भमाणाणं पलिदोवमपढमवग्गमूलासंखेज्जभागपमाणत्तादो। ण चेदमसिद्धं एदं ? एदम्हादो चेव सुत्तादो तस्स तहाभावपरिणिच्छयादो।

* णिसेगगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं।

§ ५७७ कुदो ? असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो। णेदमसिद्धं, कम्मट्ठिदिणाणागुणहाणिसलागाहि कम्मट्ठिदीए भाजिदाए परिप्फुडमेवासंखेज्जपढमवग्गमूलमेत्तणिसेगगुणहाणिट्ठाणपमाणुप्पत्तिदंसणादो।

* भवबद्धाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि।

§ ५७८ एदाणि वि असंखेज्जपढमवग्गमूलमेत्ताणि चेव। किंतु असंखेज्जणिसेयगुणहाणिगब्भाणि तदो असंखेज्जगुणाणि जादाणि।

* समयपबद्धाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि।

---

§ ५७५ ये पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं, क्योंकि अभवसिद्धिक जीवोंके योग्य निरन्तर असामान्य स्थितियाँ पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं यह पहले ही कह आये हैं। किन्तु ये पूर्वकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—यह इसी सूत्रसे जाना जाता है।

* पल्योपमका प्रथम वर्गमूल असंख्यातगुणा है।

§ ५७६ शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि निरन्तर उपलब्ध होनेवाली असामान्य स्थितियाँ पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं। और इस प्रकार यह कथन असिद्ध नहीं है, क्योंकि इसी सूत्रसे उसके उस प्रकारके होनेका ज्ञान होता है।

* निषेकगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है।

§ ५७७ क्योंकि यह असंख्यात पल्योपमके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है और यह कथन असिद्ध नहीं है, क्योंकि कर्मस्थितिसम्बन्धी नाना गुणहानिशलाकाओंके द्वारा कर्मस्थितिके भाजित करनेपर स्पष्ट ही असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण निषेकगुणहानिस्थानोंके प्रमाणकी उत्पत्ति देखी जाती है।

* भवबद्धोंके निर्लेपनस्थान असंख्यातगुणे हैं।

§ ५७८ ये भी असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण ही हैं। किन्तु इनमें असंख्यात निषेकगुणहानियाँ गर्भित हैं, इस कारण ये असंख्यातगुणे हो जाते हैं।

* समयप्रबद्धोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं।

§ ५७९ केत्तियमेत्तेण ? अंतोमुहुत्तमेत्तेण। किं कारणं ? समयपबद्धाणं जहण्णणिल्लेवणट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तमेत्तीओ ट्ठिदीओ अब्भुस्सरियूण भवबद्धाणं जहण्णणिल्लेवणट्ठाणसमुप्पत्तिदंसणादो।

* समयपबद्धस्स कम्मट्ठिदीए अंतो अणुसमयअवेदगकालो असंखेज्जगुणो।

§ ५८० कम्मट्ठिदिआदिसमयप्पहुडि एगसमयपबद्धस्स पलिदोवमासंखेज्जदिभागमेत्तणिरंतरवेदगकालमुल्लंघियूण पुणो उवरि जत्थ वा तत्थ वा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो णिरुद्धसमयपबद्धस्स णिरंतरमवेदगकालो उक्कस्सेण असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणो कम्मट्ठिदीए अब्भंतरे लब्भइ, ओकड्डुक्कड्डुणावसेण णिरंतरमेत्तियमेत्ताण णिरुद्धसमयपबद्धपडिबद्धगोवुच्छाण सुण्णत्तदंसणादो। एसो च कालो असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तो होदूण हेट्ठिमरासीदो असंखेज्जगुणो त्ति घेत्तव्वो।

* समयपबद्धस्स कम्मट्ठिदीए अंतो अणुसमयवेदगकालो असंखेज्जगुणो।

§ ५८१ एवं भणिदे एगसमयम्मि बद्धो समयपबद्धो बंधावलियावदिक्कंतपढमसमयप्पहुडि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं णिरंतरमुदयमागच्छदि जाव णिरंतरवेदगकालचरिमसमओ त्ति। एसो कालो अणुसमयवेदगकालो त्ति भण्णदे। एसो च पुव्विल्लकालादो असंखेज्ज

---

§ ५७९ शंका—कितने अधिक हैं ?

समाधान—अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अधिक हैं।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि समयप्रबद्धोंके जघन्य निर्लेपनस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण स्थितियाँ सरककर भवबद्धोंके जघन्य निर्लेपनस्थानोंकी उत्पत्ति देखी जाती है।

* कर्मस्थितिके भीतर समयप्रबद्धका अनुसमय अवेदककाल असंख्यातगुणा है।

§ ५८० कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर एक समयप्रबद्धके पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण निरन्तर वेदककालका उल्लंघन कर ऊपर यहाँ अथवा वहाँ पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण विवक्षित समयप्रबद्धका निरन्तर अवेदककाल उत्कृष्टसे असंख्यात पल्योपमके प्रथम वर्गमूल-प्रमाण कर्मस्थितिके भीतर प्राप्त होता है, क्योंकि उत्कर्षण और अपकर्षणके वशसे निरन्तर इयत्प्रमाण विवक्षित समयप्रबद्धसे सम्बद्ध गोपुच्छाओंका शून्यपना देखा जाता है। और यह काल असंख्यात पल्योपमके प्रथम वर्गमूलप्रमाण होकर अधस्तन राशिसे असंख्यातगुणा होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

* समयप्रबद्धका कर्मस्थितिके भीतर अनुसमय वेदककाल असंख्यातगुणा है।

§ ५८१ इस प्रकार कहनेपर एक समयमें बद्ध समयप्रबद्ध बन्धावलिके अनन्तर प्रथम समयसे लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप कालप्रमाण निरन्तर वेदककालके अन्तिम समय तक निरन्तर उदयको प्राप्त होता है। इस कालको अनुसमय वेदककाल कहते हैं। और यह काल पिछले कालकी अपेक्षा असंख्यातगुणा है, क्योंकि दोनों कालोंके सामान्यसे असंख्यात पल्योपमके

गुणो, वोण्हमसंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्ताविसेसे वि परमागमोवएसबलेण तत्तो एदस्स असंखेज्जगुणत्तसिद्धीदो।

✽ सव्वो अवेदगकालो असंखेज्जगुणो।

§ ५८२ एगसमयपबद्धस्स णिरंतर—वेदगावेदगकालेसु कम्मट्ठिदीए अब्भंतरे सुक्ककिण्हपक्खेसु व परियत्तमाणसु तत्थ वेदगकाल मोत्तूण अवेदगकालो चेव संपिडिय गहिदे पयदकालो समुप्पज्जइ। एसो च पुव्विल्लादो अणुसमयवेदगकालादो[1] असखेज्जगुणो। णाणाकंडयसकलणसरूवस्सेदस्स एगखडयसरूवादो तत्तो असखेज्जगुणत्तसिद्धीए विरोहाभावादो।

✽ सव्वो वेदगकालो असखेज्जगुणो।

§ ५८३ तस्सेव णिरुद्धसमयपबद्धस्स कम्मट्ठिदिअब्भतरे वेदगकालो सव्वत्थ संपिडिय गहिदो सव्वो वेदगकालो त्ति भण्णदे, वेदगकालकंडयाण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ताण सव्वेसिमेव संपिडियूण गहिदाण समूहसिद्धत्तादो। एदस्स च पमाण कम्मट्ठिदीए असखेज्जा भागा भवंति, पुव्विल्लवेदगकालस्स सव्वस्सेव कम्मट्ठिदीए असखेज्जदिभागपमाणत्तादो। तदो सिद्धमेदस्स तत्तो असखेज्जगुणत्त।

✽ कम्मट्ठिदी विसेसाहिया।

प्रथम वर्गमूलप्रमाण होनेपर भी परमागमके उपदेशके बलसे पूर्व कालकी अपेक्षा यह काल असख्यातगुणा सिद्ध होता है।

✽ सम्पूर्ण अवेदककाल असख्यातगुणा है।

§ ५८२ एक समयप्रबद्धके कर्मस्थितिके भीतर निरन्तर वेदककाल और अवेदककालोके शुक्लपक्ष और कृष्णपक्षके समान परिवर्तमान होनेपर उनमेसे वेदककालको छोडकर अवेदककालको ही एकत्रित करके ग्रहण करनेपर प्रकृत काल उत्पन्न होता है। अत यह काल पिछले अनुसमय वेदककालकी अपेक्षा असख्यातगुणा है क्योकि यह नाना काण्डकोंके संकलनस्वरूप एक काण्डक स्वरूप है, इसलिए इसके पिछले कालकी अपेक्षा असख्यातगुणा सिद्ध होनेमे विरोधका अभाव है।

✽ सम्पूर्ण वेदककाल असंख्यातगुणा है।

§ ५८३ उसी विवक्षित समयप्रबद्धका कर्मस्थितिके भीतर जो पूरी स्थितिके भीतरका एकत्रित किया हुआ वेदककाल ग्रहण किया गया है वह सब वेदककाल कहलाता है, क्योकि वह पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण ग्रहण किये गये सभी वेदककाल काण्डकोका एकत्रित समूहरूप सिद्ध होता है। अत इसका प्रमाण कर्मस्थितिके असख्यात बहुभागप्रमाण है, क्योकि पिछला पूरा अवेदककाल कर्मस्थितिके असख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए यह काल पिछले कालकी अपेक्षा असख्यातगुणा सिद्ध होता है।

✽ कर्मस्थिति विशेष अधिक है।

---

१ ताम्रप्रतौ-वेदककालो इति पाठ ।

§ ५८४ केत्तियमेत्तेण ? सगअसंखेज्जदिभागभूदसव्वावेदगकालमेत्तेण। कुदो ? वेदगावेदग-कालसमूहस्स कम्मट्ठिदिववएसारहत्तादो। एवमेदम्मि चूलियप्पाबहुए समत्ते तदो अट्ठमीए मूल-गाहाए अत्थविहासा समत्ता भवदि।

* णवमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा।

§ ५८५ अट्ठममूलगाहाविहासणाणंतरमेत्तो जहावसरपत्ताए णवममूलगाहाए समुक्कित्तणा कायव्वा त्ति वुत्तं होइ।

(१५१) किट्टीकदम्मि कम्मे ट्ठिदि-अणुभागेसु केसु सेसाणि।
कम्माणि पुव्वबद्धाणि बज्झमाणाणुदिण्णाणि ॥२०४॥

§ ५८६ किमट्ठमेसा णवमी मूलगाहा समोइण्णा त्ति चे ? वुच्चदे—णाणावरणादिकम्माण किट्टिवेदगपढमसमए ठिदिअणुभागसतकम्मपमाणावहारणट्ठं तेसिं चेव ट्ठिदि-अणुभागबंधोदयविसे सावहारणट्ठं च गाहासुत्तमेवमोइण्णं, परिप्फुडमेवेत्थ तहाविहत्थणिद्देसदंसणादो।

त जहा—'किट्टीकदम्मि कम्मे' पुव्वमकिट्टीसरूवेण मोहणीयाणुभागसतकम्मे णिरवसेस किट्टीसरूवेण परिणामिदम्मि किट्टीवेदगपढमसमये वट्टमाणस्स तस्स ट्ठिदिसंतादिपमाणगवेसण कस्सामो त्ति वुत्त होइ। 'ठिदि अणुभागेसु० पुव्वबद्धाणि' एव भणिदे ताधे पुव्वबद्धाणि कम्माणि

§ ५८४ शंका—कियत्प्रमाण अधिक है ?

समाधान—अपने असख्यातवें भागप्रमाण समस्त अवेदककालप्रमाण अधिक है, क्योंकि वेदक और अवेदककालका समूह कर्मस्थिति संज्ञाके योग्य होता है। इस प्रकार इस चूलिकारूप अल्पबहुत्वके समाप्त होनेपर उसके अनन्तर आठवी मूलगाथाकी अर्थविभाषा समाप्त होती है।

* अब नौवीं मूलगाथाकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ५८५ आठवी मूलगाथाकी विभाषा करनेके अनन्तर यथावसरप्राप्त नौवी मूलगाथाकी समुत्कीर्तना करनी चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

(१५१) मोहनीयकर्मके पूरे कृष्टिरूप किये जानेके बाद कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें पूर्वबद्ध ज्ञानावरणादि शेष कर्म किन स्थितियोंमे और किन अनुभागोमे पाये जाते हैं। तथा बध्यमान और उदीर्ण ज्ञानावरणादि कर्म किन स्थितियोंमे ओर किन अनुभागोंमें पाये जाते हैं ॥२०४॥

§ ५८६ शंका—यह नवी मूलगाथा किसलिए अवतीर्ण हुई है ?

समाधान—कहते हैं—कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें ज्ञानावरणादि कर्मोंके स्थिति और अनुभागसत्कर्मके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए तथा उन्हीके स्थिति और अनुभागसम्बन्धी बन्ध और उदयविशेषके अवधारण करनेके लिए यह गाथासूत्र अवतीर्ण हुआ है, क्योकि इस गाथासूत्रमे उस प्रकारके अर्थका निर्देश स्पष्टरूपसे ही देखा जाता है।

यह जैसे—'किट्टीकदम्मि कम्मे' पहले अकृष्टिरूपसे अवस्थित मोहनीय कर्मसम्बन्धी अनुभागसत्कर्मके कृष्टिस्वरूपसे परिणमित होनेपर कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें स्थित हुए उसके स्थिति और सत्त्व आदिके प्रमाणका गवेषण करेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है। 'ठिदि अणुभागेसु'

णाणावरणीयादीणि केसु ट्ठिदि अणुभागेसु सेसाणि, केत्तिय ठिदिअणुभागसतकम्मं घादिय केत्ति येसु ट्ठिदि अणुभागभेदेसु परिसेसिदाणि त्ति वुत्तं होइ। एदेण ट्ठिदि-अणुभागसतकम्मपमाणविसया पुच्छा णिद्दिट्ठा दट्ठव्वा।

'बज्झमाणाणुदिण्णाणि' एदेण वि सुत्तावयवेण बज्झमाणाणि कम्माणि उदिण्णाणि च कम्माणि केसु ट्ठिदि-अणुभागेसु वट्टंति त्ति ट्ठिदि अणुभागबंधविसय ट्ठिदि अणुभागोदयविसया च पुच्छा णिद्दिट्ठा त्ति दट्ठव्वा। तदो तिण्हमेदासिं पुच्छाणं णिण्णयविहाणट्ठमेसा मूलगाहा समोइण्णा त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ। संपहि एदिस्से मूलगाहाए पुच्छामेत्तेण सूचिदत्थविहासणट्ठमेत्थ दो भासगाहाओ होंति त्ति जाणावणट्ठमिदमाह—

* एदिस्से दो भासगाहाओ।

§ ५८७ ठिदि अणुभागसतावहारणे पढमा भासगाहा, तेसिं चेव बंधावहारणे विदिया भासगाहा त्ति एवमेत्थ दो चेव भासगाहाओ होंति। तदिये अत्थे ट्ठिदि अणुभागोदयपरूवणप्पये तदिया भासगाहा एत्थ किण्णोवइट्ठा त्ति णासंकणिज्जं, बंध सतपरूवणादो चेव उदयपरूवणा वि जाणिज्जदि त्ति अहिप्पायेण तप्पडिबद्धगाहंतराणुवएसादो। एवमेत्थ दोण्हं भासगाहाणमत्थित्तं जाणाविय संपहि जहाकममेव तासिं समुक्कित्तणं कुणमाणो उवरिम पबंधमाह—

पुव्वबद्धाणि' ऐसा कहनेपर उस समय पूर्वबद्ध ज्ञानावरणादि कर्म किन स्थितियोमे और अनुभागोमें शेष रहते हैं अर्थात् कितने स्थिति और अनुभागसत्कर्मका घात करके कितने स्थिति और अनुभागो मे परिशेष रहते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस सूत्रवचन द्वारा स्थिति और अनुभाग सत्कर्मकी प्रमाणविषयक पृच्छा निर्दिष्ट की गयी जाननी चाहिए।

'बज्झमाणाणुदिण्णाणि' इस गाथासूत्रके अन्तिम पाद द्वारा भी बंधनेवाले कर्म और उदीर्ण कर्म किन स्थितियो और अनुभागोमें रहते हैं इस प्रकार स्थितिबन्ध और अनुभागबन्धविषयक तथा स्थितिउदय और अनुभागउदयविषयक पृच्छा निर्दिष्ट की गयी जाननी चाहिए। इसलिए इन तीनों पृच्छाओंका निर्णय करनेके लिए यह मूलगाथा अवतीर्ण हुई है, इस प्रकार यहाँपर इस सूत्रगाथाका यह समुच्चयरूप अर्थ है। अब इस मूलगाथाके पृच्छा मात्रसे सूचित हुए अर्थकी विभाषा करनेके लिए यहाँपर दो भाष्यगाथाएँ हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस वचनको कहते हैं—

* इस नौवीं मूल सूत्रगाथाकी दो भाष्यगाथाएँ हैं।

§ ५८७ स्थिति और अनुभागसत्कर्मके अवधारण करनेमें प्रथम भाष्यगाथा है तथा उन्हींके बन्धके अवधारण करनेमें दूसरी भाष्यगाथा है इस प्रकार प्रकृतमें दो ही भाष्यगाथाएँ हैं।

शंका—स्थिति और अनुभागके उदयकी प्ररूपणा जिसमें मुख्यरूपसे की गयी है ऐसे तीसरे अर्थमें तीसरी भाष्यगाथा यहाँपर क्यों नहीं उपदिष्ट की गयी है?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि स्थिति और अनुभागसम्बन्धी बन्ध और सत्त्वका प्ररूपण करनेसे ही उदयप्ररूपणाका भी ज्ञान हो जाता है इस अभिप्रायसे उदयसे सम्बन्ध रखनेवाली अन्य गाथाका उपदेश नहीं किया है। इस प्रकार यहाँपर दोनों भाष्यगाथाओंके अस्तित्वका ज्ञान कराकर अब यथाक्रमसे ही उनकी समुत्कीर्तना करते हुए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* तासिं समुक्कित्तणा।

§ ५८८ सुगमं।

(१५२) किट्टीकदम्मि कम्मे णामागोदाणि वेदणीय च।
वस्सेसु असंखेज्जेसु सेसगा होंति संखेज्जा ॥२०५॥

§ ५८९ एसा पढमभासगाहा किट्टीवेदगपढमसमए सत्तण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मपमाणा वहारणट्ठमोइण्णा। अणुभागसंतकम्मपमाणावहारणं पि देसामासयभावेणेत्थेव पडिबद्धमिदि घेत्तव्वं। संपहि एदिस्से अवयवत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा—'किट्टीकदम्मि कम्मे०' एवं भणिदे पुव्वमकिट्टीसरूवे किट्टीभावेण णिरवसेसं परिणमिदम्मि मोहणीयाणुभागसंतकम्मे तदवत्थाए वट्टमाणस्स पढमसमयकिट्टीवेदगस्स णामागोदाणि वेदणीयं च असंखेज्जेसु वस्सेसु संतकम्मसरूवेसु घादिदावसेसेसु वट्टंति त्ति सुत्तत्थसंबंधो। 'सेसगा होंति संखेज्जा' एवं भणिदे सेसाणि घादि कम्माणि संखेज्जवस्सावच्छिण्णट्ठिदिसंतकम्मपमाणाणि वट्टव्वाणि त्ति वुत्तं होइ। सव्वाणि च कम्माणि अणंतेसु अणुभागेसु समयाविरोहेण वट्टंति त्ति अणुसिद्धीदो अणुभागसंतकम्मणिद्देसो एत्थेव सुत्ते णिलीणो वक्खाणेयव्वो। संपहि एवंविहमेदिस्से गाहाए अवयवत्थं फुडीकरेमाणो उवरिमं विहासागंथमाढवेइ—

* विहासा।

---

* अब उन दोनों भाष्यगाथाओंकी समुत्कीर्तना करते हैं।

§ ५८८ यह सूत्र सुगम है।

(१५२) मोहनीयकर्मके कृष्टिरूप किये जानेके बाद कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें नाम, गोत्र और वेदनीयकर्म असंख्यात वर्षप्रमाण सत्कर्म स्थितिरूप पाये जाते हैं तथा शेष कर्म संख्यात वर्षप्रमाण सत्कर्मस्थितिरूप पाये जाते हैं ॥२०५॥

§ ५८९ यह प्रथम भाष्यगाथा कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें सात कर्मोंके स्थितिसत्कर्मके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए अवतीर्ण हुई है। अनुभागसत्कर्मके प्रमाणका अवधारण भी देशामर्षकरूपसे इसी भाष्यगाथामें प्रतिबद्ध है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। अब इसके अवयवार्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह जैसे—'किट्टीकदम्मि कम्मे' ऐसा कहनेपर पहले जो कर्म अकृष्टिस्वरूप है उसके कृष्टिरूपसे पूरा परिणत होनेपर मोहनीय कर्मसम्बन्धी अनुभागसत्कर्मके उस अवस्थामें विद्यमान प्रथम समयवर्ती कृष्टिवेदकके नाम, गोत्र और वेदनीयकर्म घात करनेके बाद असंख्यात वर्ष स्थितिसत्कर्मरूप शेष रहते हैं यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। 'सेसगा होंति संखेज्जा' ऐसा कहनेपर शेष चार घातिकर्म संख्यात वर्षरूप स्थितिसत्कर्मप्रमाण जानना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और सभी कर्म समयके अविरोधपूर्वक अनन्त अनुभागोंमें रहते हैं। यह अनुक्तसिद्ध होनेसे अनुभागसत्कर्मका निर्देश इसी सूत्रमें गर्भित है ऐसा व्याख्यान करना चाहिए। अब इस भाष्यगाथाके इस प्रकारके अवयवार्थका स्पष्टीकरण करनेवाले आगेके विभाषाग्रन्थको आरम्भ करते हैं—

* अब इस प्रथम भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ५९० सुगमं।

* किट्टीकरणे णिट्ठिदे किट्टीणं पढमसमयवेदगस्स णामागोदवेदणीयाणं ट्ठिदि-संतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि।

* मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्ममट्ठ वस्साणि।

* तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि।

§ ५९१ एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि। एवं पढमभासगाहाए अत्थविहासणं समाणिय संपहि विदियभासगाहाए अवयारं कुणमाणो इदमाह—

* एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

§ ५९२ सुगमं।

(१५३) किट्टीकदम्मि कम्मे सादं सुहणाममुच्चगोदं च।
बंधदि च सदसहस्से ट्ठिदि-अणुभागे सुदुक्कसं॥२०६॥

§ ५९३ एसा विदियभासगाहा अघादिकम्माणं ट्ठिदि अणुभागबंधपमाणावहारणे मुत्तकंठमेव पडिबद्धा होदूण पुणो घादिकम्माणं पि ठिदिअणुभागबंधपमाणावहारणं देसामासयभावेण सूचेदि त्ति घेत्तव्वं। संपहि एदिस्से अवयवत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा—'किट्टीकदम्मि कम्मे०' पुव्वमकिट्टीसरूवे किट्टीसरूवेण णिस्सेसं परिणामिदम्मि मोहणीयाणुभागसंतकम्मे तदवत्थाए

---

§ ५९० यह सूत्र सुगम है।

* कृष्टिकरणके सम्पन्न होनेपर कृष्टियोंका प्रथम समयमें वेदन करनेवाले जीवके नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मोंका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्षप्रमाण होता है।

* मोहनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म आठ वर्षप्रमाण होता है।

* शेष तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात वर्षप्रमाण होता है।

§ ५९१ ये तीनों सूत्र सुगम हैं। इस प्रकार प्रथम भाष्यगाथाके अर्थकी विभाषा समाप्त करके अब दूसरी भाष्यगाथाका अवतार करते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

* अब आगे इस दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ५९२ यह सूत्र सुगम है।

(१५३) मोहनीय कर्मके कृष्टिकरण कर दिये जानेपर सातावेदनीय, शुभ नाम और उच्च गोत्र कर्मोंकी शतसहस्र वर्षप्रमाण स्थितिको बाँधता है। तथा इन कर्मोंके अनुभागको आदेश उत्कृष्ट बाँधता है॥२०६॥

§ ५९३ यह दूसरी भाष्यगाथा अघाति कर्मोंके स्थिति और अनुभागबन्धके प्रमाणका अवधारण करनेमें मुक्तकण्ठसे प्रतिबद्ध होकर पुनः घातिकर्मोंके स्थितिबन्ध और अनुभागबन्धके प्रमाणके निर्णयको भी देशामर्षकभावसे सूचित करती है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। अब इसके अवयवार्थका प्ररूपण करेंगे। वह जैसे—'किट्टीकदम्मि कदे' पहले जो कर्म अकृष्टिरूपसे परिणत था उसके पूरी तरहसे कृष्टिरूपसे परिणत होनेपर मोहनीय कर्मके अनुभाग सत्कर्मके उस अवस्थामें

वट्टमाणो सादावेदणीय सुभणाम असगित्तिसण्णिदमुच्चागोदं च एदमेदासि पयडीणं ट्ठिदिबंधं करेमाणो 'बंधदि च सदसहस्से ट्ठिदि' सखेज्जवस्ससदसहस्सपमाणमेदासि ट्ठिदि बधदि त्ति सुत्तत्थसबधो। एत्थतण 'च' सद्देण पुण तिण्ह घादिकम्माणं सखेज्जवस्ससहस्समेत्तो मोहणीयस्स च चत्तारिमासमेत्तो ट्ठिदिबधो सूचिदो त्ति वट्ठव्वो। 'अणुभागे सुदुक्कस्स' एदेण सुत्तावयवेण पुव्वुत्ताण तिण्हमघादिकम्माणं पयडीणमादेसुक्कस्सो अणुभागबंधो जाणाविदो। 'तु' सद्दो विसेसणट्ठो होदूण पुव्वुत्ताण पसत्थपयडीणमोघुक्कस्साणुभागबंधणिरायरणदुवारेणादेसुक्कस्साणुभागबधसभव सूचेदि त्ति वट्ठव्व, सुहुमसांपराइयचरिमसमये तासिमोघुक्कस्साणुभागबंधदसणादो। 'तु' सद्देणेव घादिकम्माण पि अणुभागबंधणिद्देसो सूचिदो त्ति घेत्तव्वो। अथवा ईसदुक्कस्सं सुदुक्कस्स तप्पाओग्गुक्कस्समणुभागमेदेसि सुहाण कम्माण बंधदि त्ति वक्खाणेयव्व, ईषच्छव्दस्यादिलोपे उकारादेशे च कृते 'सुदुक्कस्स' निर्देशसिद्धे।

वतमान सातावेदनीय, शुभनाम, यश कीर्ति और उच्चगोत्र इस प्रकार इन प्रकृतियोके स्थितिबन्ध को करता हुआ 'बधदि च सहसहस्से ट्ठिदि' संख्यात शतसहस्र वर्षप्रमाण इन कर्मोंकी स्थितिको बाँधना है यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। यहाँपर आये हुए 'च' शब्दसे तीन घातिकर्मोंकी सख्यात हजार वषप्रमाण और मोहनीयकमको चार महाप्रमाण स्थितिको बाँधना है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। 'अणुभागे सुदुक्कस्स' इस सूत्रवचनके अनुसार पूर्वाक तीन अघाति कर्मोंके आदेश उत्कृष्ट अनुभागबन्धका ज्ञान कराया गया है। 'तु' शब्द विशेषणार्थक होकर प्रशस्त प्रकृतियोके ओघ उत्कृष्ट अनुभागबन्धका निराकरण द्वारा आदेश उत्कृष्ट अनुभाग बन्धके सम्भवको सूचित करता है ऐसा जानना चाहिए, क्योकि सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमे उन प्रकृतियोका ओघ उत्कृष्ट अनुभागबन्ध देखा जानेसे 'तु' शब्दके द्वारा ही घातिकर्मोंके भी अनुभागब धका निर्देश सूचित किया गया है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। अथवा 'सुदुक्कस्स का अथ है 'ईसदुक्कस्सं' उसके अनुसार इसका अर्थ होता है कि इन शुभ कर्मोंके तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अनुभागको बाँधता है ऐसा व्याख्यान करना चाहिए, क्योकि 'ईषत्' शब्दके आदि अक्षर 'ई' का लोप करके 'उकार' का आदेश करनेपर सुदुक्कस्स' निर्देशकी सिद्धि होती है।

विशेषार्थ—'सुदुक्कस्स पदका रूपान्तर 'ईसुदुक्कस्स व्याकरणके नियमानुसार इस प्रकार हो गया है— ईषत् + उत्कृष्ट' ये दो शब्द हैं। इनमेंसे 'ईषत्' पदके आदि अक्षर ई का 'कीरइ पयाण काण वि अइमज्झतवण्णसरलोवो' इस सूत्रके नियमानुसार लोप होकर 'षत्' शेष रहा। पुन —

वग्गे वग्गे आई अवट्ठिया दोण्णि जे वण्णा।
ते णियय-णिययवग्गे तइअत्तणय उवणमंति ॥

उक्त सूत्रके नियमानुसार 'ष' के स्थानमे 'स और 'त् के स्थानमें 'द्' हो जानेसे 'सद्' शब्द बन गया। पुन

एए छच्च समाणा दोण्णि अ सज्झक्खरा सरा अट्ठ।
अण्णोण्णस्सविरोहा उवेंति सव्वे समाएसं ॥

इस सूत्रके नियमानुसार 'सद्' के 'स' मे अवस्थित 'अ' के स्थानमे 'उ' आदेश हो जानेपर 'सुद्' रूप सिद्ध हुआ। पुन 'सुद् + उक्कस्स = सुदुक्कस' पाठ निष्पन्न हो गया है। यहाँ इसी प्रकार प्राकृत व्याकरणके नियमानुसार 'उत्कृष्ट' पदके स्थानमें 'उक्कस्स' पद निष्पन्न हुआ है इतना और समझ लेना चाहिए।

§ ५९४ सपहि एदस्सेव सुत्तस्सत्थ फुडीकरणट्ठमुवरिम विहासागथमाह—

* विहासा ।

§ ५९५ सुगम ।

* किट्टीणं पढमसमयवेदगस्स सजलणाणं ठिदिबधो चत्तारि मासा ।

* णामागोदवेदणीयाण तिण्ह चेव घादिकम्माण ठिदिबधो सखेज्जाणि वस्स-सहस्साणि ।

* णामागोदवेदणीयाणमणुभागबधो तस्समयउक्कस्सगो ।

§ ५९६ सुगमो च एसो विहासागथो, तदो ण एत्थ किंचि वक्खाणेयव्वमत्थि, जाणिद जाणावणे गथगउरव मोत्तण फलविसेसाणुवलभादो। णवरि णामागोदवेदणीयाणमणुभागबधो ओघुक्कस्सो ण होइ, किंतु तप्पाओग्गुक्कस्सो त्ति जाणावणट्ठ तस्समयउक्कस्सो त्ति णिद्दसो। तस्स समयस्स पाओग्गो उक्कस्सो तस्समयउक्कस्सो आदेसुक्कस्सो, तेसिमणभागबधो होदि त्ति वुत्त होइ। ओघुक्कस्सो पुण एदेसिमणभागबधो कत्थ होदि त्ति वुत्ते सुहुमसापराइयचरिमसमये भविस्सदि, तत्थ सव्वुक्कस्सविसोहीए बज्झमाणस्स तदणुभागस्स ओघुक्कस्सभावसिद्धीए णिप्पडिबधमुवलभादो। तिण्ह घादिकम्माण मोहणीयस्स च अणुभागबधो तप्पाओग्गजहण्णो होदि त्ति

§ ५९४ अब इसी सूत्रके अर्थका स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेके विभाषाग्रन्थको कहते हैं—

* अब इस दूसरी भाष्यगाथाकी विभाषा करते हैं।

§ ५९५ यह सूत्र सुगम है।

* कृष्टियोका प्रथम समय वेदन करनेवालेके चारो संज्वलनोका स्थितिबन्ध चार मास होता है।

* नाम, गोत्र और वेदनीय इन तीनो ही अघातिकर्मोंका स्थितिबन्ध सख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है।

* नाम, गोत्र और वेदनीयकर्मोंका अनुभागबन्ध उस समयके योग्य उत्कृष्ट होता है।

§ ५९६ यह विभाषाग्रन्थ सुगम है। इसलिए इसमे कुछ भी व्याख्यान करने योग्य नहीं है, क्योकि जिसको जान लिया गया है उसका पुन ज्ञान करनेमे ग्रन्थकी गुरुताको छोड़कर अन्य कोई फलविशेष नही पाया जाता। इतनी विशेषता है कि नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मका अनुभाग-बन्ध ओघ उत्कृष्ट नही होता है, किन्तु तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'तस्समयउक्कस्सो' यह निर्देश किया है। तस्स समयस्स पाओग्गो उक्कस्सो तस्समयउक्कस्सो आदेसुक्कस्सो' उस समयके प्रायोग्य उत्कृष्ट अर्थात् आदेश उत्कृष्ट उन कर्मोंका अनुभागबन्ध होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। परन्तु इनका ओघ उत्कृष्ट अनुभागबन्ध कहाँ होता है ऐसी जिज्ञासा होनेपर यह कहा गया है कि सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमे होगा, क्योकि वहाँपर सबसे उत्कृष्ट विशुद्धिके कारण बन्धको प्राप्त होनेवाले उस अनुभागकी ओघ उत्कृष्टपनेकी सिद्धि बिना बाधाके उपलब्ध होती है। तीन घातिकर्मों और मोहनीयकर्मका अनुभागबन्ध

एसो वि अत्थो एत्थेव सुत्ते अंतब्भूदो त्ति वट्टव्वो। ट्ठिदि-अणुभागोदओ वि सव्वेसिं कम्माण एत्थ समयाविरोहेणाणुगंतव्वो, सुत्तस्सेदस्स देसामासयभावेणावट्ठाणदंसणादो। तदो णवमीए मूलगाहाए अत्थविहासा समत्ता भवदि।

* एत्तो ताव दो मूलगाहाओ थवणिज्जाओ।

५९७ किट्टीकरणद्धाए पडिबद्धाओ एक्कारस मूलगाहा होंति त्ति पुव्वं सामण्णेण भणिदं। विसेसदो पुण एदाओ अणंतरविहासिदाओ णव चेव मूलगाहाओ किट्टीकरणद्धाए पडिबद्धाओ, एत्तो उवरिमाण दोण्हं मूलगाहाणं किट्टीवेदगाए पडिबद्धत्तदंसणादो। पुव्वुत्तमूलगाहासु वि काओ वि किट्टीवेदगद्धाए पडिबद्धाओ अत्थि त्ति णासंकणिज्ज, तासिमुहयत्थ साहारणभावेण पयट्टाण किट्टीकरणद्धासंबधेणेव विहाणे विरोहाणुवलभादो। तदो एत्तो उवरिमाओ दो मूलगाहाओ किट्टीवेदगद्धापडिबद्धाओ ताव थवणिज्जाओ कादूण किट्टीवेदगस्स परिभासत्थपरूवणमेव ताव सवित्थरं कस्सामो, पच्छा गाहासुत्तत्थविहासा भविस्सदि, गाहासुत्ताणं परिभासणत्थे अविहासिदे तेसिमवयवत्थपरामरसलक्खणस्स सुत्तफासस्स करणोवायाभावादो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। एवमेदासिं दोण्हं मूलगाहाणं थवणिज्जभावं कादूण किट्टीवेदगस्स परिभासत्थविहासणं कुणमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाह—

तत्प्रायोग्य जघन्य होता है इस प्रकार यह अर्थ भी इसी सूत्रमे अन्तर्भूत जानना चाहिए। तथा सभी कर्मोंका स्थिति और अनुभागका उदय भी यहींपर समयके अविरोधपूर्वक जानना चाहिए, क्योंकि इस सूत्रका देशामर्षक भावसे अवस्थान देखा जाता है। इसके बाद नौवी मूलगाथाकी अर्थ विभाषा समाप्त होती है।

* इससे आगे अब सर्व प्रथम दो मूल गाथाओंको स्थगित करते हैं।

§ ५९६ कृष्टिकरणसे सम्बन्ध रखनेवाली ग्यारह मूलगाथाएँ हैं यह पहले सामान्यसे कह आये हैं। विशेषरूपसे तो अनन्तर पूर्व जिनकी विभाषा कर आये हैं ऐसी ये नौ मूल गाथाएँ कृष्टिकरणके कालसे सम्बन्ध रखती हैं, इनसे आगेकी दो मूल गाथाएँ कृष्टिवेदकरूप अवस्थासे सम्बन्ध रखनेवाली देखी जाती हैं।

शंका—पूर्वोक्त मूल गाथाओंमें भी कितनी ही मूल गाथाएँ कृष्टिवेदक कालसे सम्बन्ध रखनेवाली हैं ?

समाधान—ऐसी आशंका नही करनी चाहिए, क्योंकि वे दोनों ही विषयोमे साधारण रूपसे प्रवृत्त हैं, इसलिए उनका मात्र कृष्टिकरण अद्धाके सम्बन्धसे विधान करनेमे कोई विरोध नही पाया जाता।

इसलिए इससे आगेकी दो मूल गाथाएँ कृष्टिवेदक कालसे सम्बद्ध हैं, अतः उन्हें स्थगित करके कृष्टिवेदककी परिभाषारूप प्ररूपणाको ही सर्वप्रथम विस्तारके साथ कहेंगे, बादमें गाथा सूत्रके अर्थकी विभाषा होगी, क्योंकि गाथासूत्रोंके परिभाषारूप अर्थकी विभाषा नही करनेपर उनके अवयवरूप अर्थका परामर्श करना है लक्षण जिसका ऐसे सूत्रस्पर्शके करनेका दूसरा उपाय नही पाया जाता इस प्रकार यह इस सूत्रका भावार्थ है। इस प्रकार इन दो मूल गाथाओंको स्थगित करके कृष्टिवेदकके परिभाषारूप अर्थकी विभाषा करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* किट्टीवेदगस्स ताव परूवणा कायव्वा ।

§ ५९८ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ ५९९ सुगमं ।

* किट्टीणं पढमसमयवेदगस्स संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्ममट्ठ वस्साणि ।

* तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

* णामागोदवेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

* संजलणाणं ठिदिबंधो चत्तारि मासा ।

* सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

§ ६०० एदाणि सुत्ताणि किट्टीवेदगपढमसमये सव्वेसिं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्म ट्ठिदिबंध पमाणावहारणपडिबद्धाणि सुबोहाणि त्ति ण एत्थ वक्खाणायरो । ण चेवमेत्थासंकणिज्जं णवमीए मूलगाहाए दोहि भासगाहाहि एसो अत्थो णिद्दिट्ठो चेव, पुणो किमट्ठं परूविज्जदे ? पुणरुत्त दोसप्पसंगादो त्ति ? किं कारणं, पुव्वुत्तस्सेवत्थस्स मंदबुद्धिजणाणुग्गहट्ठं पुणो वि परूवणे कीरमाणे पुणरुत्तदोसाणवयारादो । एवमेदम्मि सधिविसेसे वट्टमाणस्स ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिसंतकम्मपमाणं

* सबप्रथम कृष्टिवेदकको प्ररूपणा करनी चाहिए ।

§ ५९८ यह सूत्र सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ ५९९ यह सूत्र सुगम है ।

* कृष्टियोंका प्रथम समयमें वेदन करनेवाले क्षपकके सज्वलनोंका स्थितिसत्कम आठ वष प्रमाण होता है ।

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कम सख्यात हजार वषप्रमाण होता है ।

* नाम, गोत्र और वेदनीयकमका स्थिति सत्कम असख्यात वषप्रमाण होता है ।

* सज्वलनोंका स्थितिबन्ध चार मासप्रमाण होता है ।

* शेष कर्मोंका स्थितिबन्ध सख्यात वषप्रमाण होता है ।

§ ६०० ये सब सूत्र कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें सब कर्मोंके स्थितिसत्कर्म और स्थितिबन्ध के प्रमाणके अवधारण करनेसे सम्बन्ध रखनेवाले हैं और सुबोध हैं, इसलिए यहाँ इनका व्याख्यान नहीं करते हैं ।

शका—नौवीं मूलगाथाओ द्वारा यह अर्थ निर्दिष्ट किया ही गया है, फिर इसकी प्ररूपणा किस लिए की जाती है, क्योंकि पुन प्ररूपणा करनेपर पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है ।

समाधान—यहाँ ऐसी आशका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यद्यपि यह अथ पूर्वोक्त ही है तो भी म दबुद्धि जनोंका अनुग्रह करनेके लिए फिर भी उस अथकी प्ररूपणा करनेपर पुनरुक्त दोषका अवतार नहीं होता ।

सभालिय संपहि एत्तो पाए संजलणाणं किट्टीगवाणुभागस्स अणुसमयोवट्टणा एव पयट्टदि त्ति परूवेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* किट्टीण पढमसमयवेदगप्पहुडि मोहणीयस्स अणुभागाणमणुसमयोवट्टणा ।

§ ६०१ एत्तो पुव्वमस्सकण्णकरणद्धाए किट्टीकरणद्धाए च अंतोमुहुत्तुक्कीरणकालपडिबद्धो अणुभागघादो संजलणपयडीणमस्सकण्णकरणायारेण पयट्टदि। एण्हिं पुण मोहणीयस्स कोहसंजलणादि-भेदेण चउव्विहस्स वि जे अणुभागा किट्टीसरूवा सगहकिट्टीभेदेण बारसधा पविहत्ता तेसिमणु-समयोवट्टणा समये समये अणंतगुणहाणीए घादो पयट्टदि, एत्थतणपरिणामाण तहाविहाणुभाग घादहेदुत्तादो ।

§ ६०२ एदस्स भावत्थो—बारसण्हं पि सगहकिट्टीणमेक्केक्किस्से किट्टीए अग्गकिट्टीप्पहुडि असंखेज्जविभाग समयपबद्धाणमणुभाग मोत्तूण संजलणाणुभागसतकम्मस्स अणुसमयोवट्टणा एत्थ सजादा त्ति। णाणावरणादिकम्माण पुण पुव्वुत्तेणेव कमेण अंतोमुहुत्तिओ अणुभागघादो पयट्टदि, तहा चेव सव्वेसि कम्माण ट्ठिदिघादो वि पयट्टदि त्ति ण एत्थ किंचि णाणत्तमत्थि। एवमेदेण सुत्तेण संजलणाणमणुभागसतकम्मस्स अणुसमयोवट्टणाए पारंभ परूविय संपहि तेसिमणु-भागबंधोदयाण पि समय पडि पवुत्तिविसेसजाणावणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

इस प्रकार इस सन्धिविशेषमे विद्यमान क्षपकके स्थितिबन्ध और स्थितिसत्त्वके प्रमाणको सम्हाल करके अब इससे आगे प्राय संज्वलनोके कृष्टिगत अनुभागकी अनुसमय अपवर्तना इस प्रकार प्रवृत्त होती है इस बातका प्ररूपण करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* कृष्टियोके वेदकके प्रथम समयसे लेकर मोहनीय कर्मके अनुभागोंकी अनुसमय अपवर्तना होती है।

§ ६०१ इससे पूर्व अश्वकर्णकरणके कालमे और कृष्टिकरणके कालमें अन्तर्मुहूर्त काल तक उत्कीरण कालसे सम्बन्ध रखनेवाला सज्वलन प्रकृतियोका अनुभाग अश्वकर्णकरणके आकारसे प्रवृत्त होता है परन्तु इस समय क्रोध संज्वलन आदिके भेदसे चार प्रकारके मोहनीय कर्मका जो भी अनुभाग कृष्टिस्वरूप होकर संग्रहकृष्टिके भेदसे बारह प्रकारसे विभक्त हो गया है उनकी अनु समय अपवर्तना प्रत्येक समयमे अनन्तगुणहानिरूपसे घात होकर प्रवृत्त होती है, क्योकि यहाँ सम्बन्धी परिणाम उस प्रकारके अनुभागघातके हेतु हैं।

§ ६०२ इसका भावार्थ—बारह ही सग्रह कृष्टियोमेंसे एक एक कृष्टिकी अग्रकृष्टिसे लेकर असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोके अनुभागको छोड़कर संज्वलनोके अनुभागसत्कर्मकी अनुसमय अपवर्तना यहाँ प्रारम्भ हो गयी है। ज्ञानावरणादि कर्मोंका तो पूर्वोक्तरूपसे ही क्रमसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाणवाला अनुभागघात प्रवृत्त रहता है तथा उसी प्रकार सब कर्मोंका स्थितिघात भी प्रवृत्त रहता है। इस प्रकार इसमे किसी प्रकारका भेद नही है। इस प्रकार इस सूत्र द्वारा संज्वलनोके अनुभागसत्कर्मके अनुभागकी अपवर्तनाके प्रारम्भका कथन करके अब उनके प्रतिसमय होनेवाले अनुभागबन्ध और अनुभागउदयकी भी प्रवृत्तिविशेषका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध प्रारम्भ करते हैं—

* पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोहकिट्टी उदये उक्कस्सिया बहुगी बंधे उक्कस्सिया अणतगुणहीणा ।

§ ६०३ कोहसजलणस्स ताव पढमसगहकिट्टीसरूवेण बधोदया पयट्टमाणा हेट्ठिमोवरिमा सखेज्जविभाग मोत्तूण मज्झिमकिट्टीसरूवेणेव पयट्ट ति । एव पयट्टमाणाण बधोदयाणमग्गट्ठिदीओ समये समये अणतगुणहीणाओ वट्टति । तत्थ 'पढमसमय० कोहकिट्टी उदये उक्कस्सिया बहुगी' एव भणिदे उदयम्मि पविसमाणाओ अणताओ मज्झिमकिट्टीओ अत्थि, तासु जावुक्कस्सकिट्टी सव्वु वरिमा सा बहुगी तिव्वाणुभागा त्ति वुत्तं होइ । 'बधे उक्कस्सिया अणतगुणहीणा' एव भणिदे बज्झमाणकिट्टीओ वि अणताओ भवति । पुणो तासु जा बज्झमाणकिट्टी सव्वुक्कस्सिया सा अणतगुणहीणा । कि कारण, उदयग्गकिट्टीदो अणताओ किट्टीओ हेट्ठा ओसरियूणेदिस्से समवट्टाण दसणादो ।

* विदियसमये उदये उक्कस्सिया अणतगुणहीणा ।

§ ६०४ कुदो ? अणतगुणविसोहिमाहप्पेण पढमसमयबधग्गकिट्टीदो वि अणतगुणहाणीए परिणमिय विदियसमए उदयुक्कस्सकिट्टीए पवुत्तिणियमदसणादो ।

* बधे उक्कस्सिया अणतगुणहीणा ।

---

* प्रथम समयमे कृष्टिवेदक जीवके जो क्रोधकृष्टि उदयमे प्रवेश करती ह वह उत्कृष्ट होकर बहुत (तीव्र) अनुभागवाली होती है ।

§ ६०३ सर्वप्रथम क्रोधसंज्वलनके प्रथम सग्रहकृष्टिरूपसे प्रवर्तमान बन्ध और उदय नीचे और ऊपर असख्यातवें भागको छोड़कर मध्यम कृष्टिरूपसे ही प्रवृत्त होते हैं। इस प्रकार प्रवतमान बन्ध और उदयोकी अग्र स्थितियाँ प्रत्येक समयमे अनन्तगुणी हीन होकर ही प्रवृत्त होती है। उनमें 'पढमसमय० कोहकिट्टी उदये उक्कस्सिया बहुगी' ऐसा कहनेपर उदयमे प्रवेश करनेवाली अनन्त मध्यम कृष्टियाँ होती हैं, उनमेंसे जो सबसे उपरिम उत्कृष्ट कृष्टि है वह बहुत अर्थात् तीव्र अनुभागवाली होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । 'बधे उक्कस्सिया अणतगुणहीणा' इस प्रकार कहनेपर बध्यमान कृष्टियाँ भी अनन्त होती हैं । पुन उनमे जो बध्यमान कृष्टि सबसे उत्कृष्ट है वह अनन्तगुणी हीन होती है ।

शका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योकि उदयरूप अग्र कृष्टिसे अनन्त कृष्टियाँ नीचे सरककर इसका अवस्थान देखा जाता है ।

* दूसरे समयमे उदयमे प्रवेश करनेवाली उत्कृष्ट क्रोधकृष्टि अनन्तगुणहीन अनुभागवाली होती है ।

§ ६०४ क्योकि पूव समयसे अनन्तगुणी विशुद्धिके माहात्म्यवश प्रथम समयमें बंधनेवाली कृष्टिसे भी अनन्तगुणहानिरूपसे परिणमन कर दूसरे समयमे उदयरूप उत्कृष्ट कृष्टिकी प्रवृत्ति देखी जाती है ।

* किन्तु बन्धमे क्रोधकृष्टि उत्कृष्ट होकर अनन्तगुणहीन अनुभागवाली होती है ।

§ ६०५ पढमसमयबंधुक्कस्सकिट्टीदो अणंतगुणहीणविदियसमयउदयुक्कस्सकिट्टीदो वि अणंतगुणहाणीए परिणमिय विदियसमये बंधुक्कस्सकिट्टी पयट्टदि त्ति भणिदं होइ। कुदो एवमिदि चे ? परिणामपाहम्मादो।

* एवं सव्विस्से किट्टीवेदगद्धाए।

§ ६०६ जहा पढम विदियसमयेसु बंधोदयउक्कस्सकिट्टीणमप्पाबहुअकमो परूविदो एवं चेव सव्विस्से किट्टीवेदगद्धाए परूवेयव्वो, विसेसाभावादो त्ति भणिदं होइ। संपहि बंधोदयजहण्ण-किट्टीणं केरिसमप्पाबहुअं होदि त्ति आसंकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* पढमसमये बंधे जहण्णिया किट्टी तिव्वाणुभागा।

§ ६०७ कुदो ? उदयजहण्णकिट्टीदो उवरि अणंताओ किट्टीओ अब्भुस्सरिदूणेदिस्से पवुत्तिदंसणादो।

* उदये जहण्णिया किट्टी अणंतगुणहीणा।

§ ६०८ कुदो ? बंधजहण्णकिट्टीदो हेट्ठा अणंताओ किट्टीओ सयलकिट्टीअद्धाणस्सासंखेज्ज भागमेत्तीओ ओसरियूणेदिस्से पवुत्तिअब्भुवगमादो। एदस्स भावत्थो— वेदिज्जमाणसयलकिट्टीण हेट्ठिमोवरिमासंखेज्जदिभाग मोत्तूण मज्झिमबहुभागसरूवेणेव बंधो पयट्टदि। एवं च पयट्टमाण

§ ६०५ प्रथम समयवर्ती बन्धविषयक उत्कृष्ट कृष्टिसे तथा दूसरे समयवर्ती अनन्तगुणी हीन उदय उत्कृष्ट कृष्टिसे भी अनन्तगुणहानिरूपसे परिणमन करके दूसरे समयमे बन्धोत्कृष्ट कृष्टि प्रवत्त होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—ऐसा किस कारण होता है ?

समाधान—परिणामोके माहात्म्यवश ऐसा होता है।

* इसी प्रकार समस्त कृष्टिवेदक कालमें प्ररूपणा करनी चाहिए।

§ ६०६ जिस प्रकार प्रथम और द्वितीय समयमे बन्ध और उदयरूप कृष्टियोके अल्प बहुत्वके क्रमकी प्ररूपणा की है इसी प्रकार समस्त कृष्टिवेदक कालमे प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योकि उक्त कथनमें कोई भेद नही है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब बन्ध और उदयरूप जघन्य कृष्टियोका किस प्रकारका अल्पबहुत्व होता है ऐसी आशंका होनेपर नि शंक करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* प्रथम समयके बन्धमे जघन्य कृष्टि तीव्र अनुभागवाली होती है।

§ ६०७ क्योकि उदयमें प्रवत्त जघन्य कृष्टिसे ऊपर अनन्त कृष्टियाँ सरककर इस कृष्टिकी प्रवृत्ति देखी जाती है।

* उदयमे जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी हीन होती है।

§ ६०८ क्योकि बन्ध जघन्य कृष्टिसे नीचे अनन्त कृष्टियाँ समस्त कृष्टि अध्वानके असंख्यातवें भागप्रमाण सरककर इसकी प्रवृत्ति देखी जाती है। इसका भावार्थ—वेद्यमान समस्त कृष्टियोंके अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भागको छोडकर मध्यम बहुभागस्वरूपसे ही बन्ध प्रवत्त होता

बंधग्गकिट्टी उदयग्गकिट्टीदो अणंतगुणहीणा जादा। हेट्ठा पुण उदयजहण्णकिट्टीदो बंधजहण्णकिट्टी अणंतगुणा चेव, उवरि व हेट्ठा बंधाणुभागस्स सुट्ठु ओवट्टणासंभवादो त्ति।

* विदियसमये बंधा (बद्धा) जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा।

§ ६०९ कुदो ? परिणामपाहम्मादो।

* उदये जहण्णिया अणंतगुणहीणा।

§ ६१० परिणामविसेसमासेज्ज बंधजहण्णकिट्टीदो उदयजहण्णकिट्टीए पडिसमयमणंतगुणहाणीए चेव पवुत्तिणियमदंसणादो।

* एवं सव्विस्से किट्टीवेदगद्धाए।

* समये समये णिव्वग्गणाओ जहण्णियाओ वि य।

§ ६११ जहा पढम विदियसमयेसु बंधोदयजहण्णकिट्टीणमप्पाबहुअकमो परूविदो तहा चेव तदियादिसमएसु वि परूवेयव्वो, विसेसाभावादो त्ति वुत्तं होइ। एत्थ 'णिव्वग्गणाओ' त्ति वुत्ते बंधोदयजहण्णकिट्टीणमणंतगुणहाणीए ओसरणवियप्पा गहेयव्वा।

है। और इस प्रकार प्रवृत्त होनेवाली बन्धाग्रकृष्टि उदयाग्रकृष्टिसे अनन्तगुणी हीन हो गयी है। परन्तु नीचे उदय जघन्य कृष्टिसे बन्ध जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी ही होती है, क्योंकि ऊपर भी नीचे बन्धानुभागकी अच्छी तरह अपवर्तना सम्भव है।

* दूसरे समयमे बन्धको प्राप्त हुई जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी हीन होती है।

§ ६०९ क्योंकि परिणामविशेषके माहात्म्यसे ऐसा होता है।

* उदयमे जघन्य कृष्टि अनन्तगुणी हीन होती है।

§ ६१० क्योंकि परिणामविशेषका आश्रय कर बन्ध जघन्य कृष्टिसे उदयरूप जघन्य कृष्टिका प्रतिसमय अनन्तगुणी हानिरूपसे ही प्रवृत्तिका नियम देखा जाता है।

* इसी प्रकार सम्पूर्ण कृष्टिवेदककालमे बन्ध और उदयकी अपेक्षा जघन्य कृष्टियोका अल्पबहुत्व जानना चाहिए।

* तथा प्रत्येक समयमे जघन्य निवर्गणाएँ इसी प्रकार जाननी चाहिए।

§ ६११ जिस प्रकार प्रथम और द्वितीय समयमें बन्ध और उदयरूप जघन्य कृष्टियोंके अल्पबहुत्वके क्रमका कथन किया है, उसी प्रकार तृतीय आदि समयोमे भी कथन करना चाहिए, क्योंकि पूर्व कथनसे इस कथनमे कोई भेद नही है। यहाँ 'णिव्वग्गणाओ' ऐसा कहनेपर बन्ध और उदयसम्बन्धी जघन्य कृष्टियोके अनन्तगुणी हानिरूपसे अपसरणके विकल्प ग्रहण करने चाहिए।

विशेषार्थ— जो क्रोधकषायके उदयसे क्षपकश्रेणिपर चढ़ा है उसके कृष्टिवेदककालमें कृष्टियोका उदय और बन्ध किस क्रमसे प्रवृत्त होता है एतद्विषयक अल्पबहुत्वका प्रकृतमे प्ररूपण किया गया है। यह तो स्पष्ट ही है कि अनिवृत्तिकरणमे इस क्षपकके प्रत्येक समयमें परिणामो विषयक विशुद्धि अनन्तगुणी बढती जाती है और इस कारण मोहनीय कर्मके यथासम्भव अनुभाग की प्रतिसमय अपवर्तना होती जाती है। इस कारण यहाँ क्रोधकषायकी अपेक्षा उदय और बन्धकी प्रवृत्ति किस प्रकार होती है, इसी तथ्यको स्पष्ट करनेके लिए प्रकृतमे उदय और बन्धकी

* एसा कोहकिट्टीए परूवणा ।

६१२ एसा सव्वा वि बंधोदयजहण्णुक्कस्सकिट्टीणं णिव्वग्गणपरूवणा कोहपढमसंगहकिट्टीए परूविदा, तत्थ बंधोदयाणं दोण्हं पि संभवादो त्ति वुत्तं होइ। संपहि माणादीणं पढमसंगहकिट्टीसु एण्हिमुदयसंबंधो णत्थि, बंधो चेव केवलं संभवइ। सो च हेट्ठिमोवरिमासंखेज्जदिभागपरिहारेण मज्झिमबहुभागसरूवेण पयट्टमाणो पडिसमयमणंतगुणहाणीए दट्ठव्वो त्ति इममत्थविसेसं जाणावेमाणो उवरिमं सुत्तपबंधमाढवेइ—

अपेक्षा क्रोधकषायके अनुभागके अल्पबहुत्वका निर्देश करते हुए प्रथम बात तो यह स्पष्ट की गयी है कि क्रोधसंज्वलनकी जो तीन संग्रह कृष्टियाँ हैं उनमेसे प्रथम संग्रह कृष्टिरूपसे बंध और उदय प्रवृत्त होते हुए अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भागको छोड़कर मध्यम कृष्टिरूपसे ही प्रवृत्त होते हैं। और इस प्रकार जो मध्यम कृष्टियाँ उदयमे प्रवेश करती हैं उनमे जो सबसे उपरिम उत्कृष्ट क्रोधकृष्टि है वह अनन्तगुणी हीन होकर तीव्र अनुभागवाली होती है तथा जो बध्यमान अनन्त कृष्टियाँ हैं उनमे जो बध्यमान सबसे उत्कृष्ट कृष्टि है वह पूर्वोक्तसे अनन्तगुणी हीन होती है, क्योंकि उदयको प्राप्त होनेवाली अग्र कृष्टिसे अनन्त कृष्टियाँ नीचे सरककर इसका अवस्थान प्राप्त होता है। प्रथम समयमे जो अग्रकृष्टि बंधको प्राप्त होती है उससे दूसरे समयमे विशुद्धिके माहात्म्यवश उदयरूपसे परिणत उत्कृष्ट कृष्टि अनन्तगुणी हानिरूप अनुभागवाली होती है। तथा इसी समय बध्यमान उत्कृष्ट कृष्टि भी उदय कृष्टिकी अपेक्षा अनन्तगुणी हानिरूप परिणम कर प्राप्त होती है। अल्पबहुत्वका यह क्रम इसी विधिसे कृष्टिवेदकके अन्तिम समय तक जानना चाहिए। आगे इन बन्धरूप और उदयको प्राप्त होनेवाली कृष्टियोके अनुभागकी तीव्रता और मन्दताका निरूपण करते हुए बतलाया है कि प्रथम समयमें बंधको प्राप्त होनेवाली कृष्टियोंमें जो सबसे जघन्य कृष्टि बँधती है वह आगे उदय और बन्धको प्राप्त होनेवाली कृष्टियोकी तुलनामे तीव्र अनुभागवाली होती है। उससे उसी समय उदयको प्राप्त होनेवाली जो जघन्य कृष्टि होती है उसका अनुभाग अनन्तगुणा हीन होता है। दूसरे समयमे इसकी अपेक्षा बन्धको प्राप्त होनेवाली जघन्य कृष्टि अनन्तगुणे हीन अनुभागवाली होती है तथा उससे उसी समय उदयको प्राप्त होनेवाली जघन्य कृष्टि अनन्तगुणे हीन अनुभागवाली होती है। इस प्रकार अनुभागको तीव्रता मन्दताकी अपेक्षा यह अल्पबहुत्व आगे भी इसी प्रकार हृदयंगम करना चाहिए। समय समयमे बन्ध और उदयरूप कृष्टियोके अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणी हानिरूपसे जो अपसरण विकल्परूप निर्वर्गणाएँ प्राप्त होती हैं उन्हे भी इसी विधिसे जान लेना चाहिए।

* यह सब क्रोधसंज्वलनसम्बन्धी प्रथम संग्रह कृष्टिकी प्ररूपणा है।

§ ६१२ यह सब बन्ध और उदयरूप जघन्य और उत्कृष्ट कृष्टियोकी निर्वर्गणा प्ररूपणा क्रोधसंज्वलन कृष्टिकी अपेक्षा की गयी है, क्योंकि उसमे बन्ध और उदय दोनोंकी ही प्ररूपणा सम्भव है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब मानसंज्वलन आदिकी प्रथम संग्रह कृष्टियोका इस समय उदयका सम्बन्ध नही है, केवल बन्ध ही सम्भव है और वह अधस्तन और उपरिम असंख्यातवें भागको छोड़कर मध्यम बहुभागरूपसे प्रवृत्त होता हुआ प्रतिसमय अनन्त गुणहानिरूपसे ही जानना चाहिए इस प्रकार इस अर्थविशेषका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* किट्टीण पढमसमये वेदगस्स माणस्स पढमाए सगहकिट्टीए किट्टीणमसखेज्जा भागा बज्झति ।

§ ६१३ सुगम ।

* सेसाओ सगहकिट्टीओ ण बज्झति ।

§ ६१४ एव पि सुगम ।

* एव मायाए ।

* एव लोभस्स वि ।

§ ६१५ एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवमेत्तिएण पबधेण किट्टीवेदगपढमसमये किट्टीगदाणुभागस्स बधोदयविसय पवुत्तिविसेस णिरूविय सपहि तत्थेव किट्टीगदाणुभागसतकम्मस्स जा पुव्व परूविदा अणुसमयोवट्टणा सा एदेण सरूवेण पयट्टदि त्ति फुडीकरेमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

* किट्टीणं पढमसमयवेदगो बारसण्ह पि सगहकिट्टीणमग्गकिट्टिमादिं कादूण एक्केक्किस्से सगहकिट्टीए असखेज्जदिभाग विणासेदि ।

§ ६१६ अणतगुणविसोहीए वड्ढमाणो एसो पढमसमयकिट्टीवेदगो बारसण्ह पि सगह किट्टीणमुवरिमभागे उक्कस्सकिट्टिमादि कादूण अणंताओ किट्टीओ एक्केक्किस्से सगहकिट्टीए असखेज्जदिभागमेत्तीओ ओवट्टणाघादेणेगसमयेण विणासेदि, तेत्तियमेत्तीण किट्टीण सत्तीओ

* कृष्टियोका प्रथम समयमे वेदन करनेवाले क्षपकके मानसज्वलनको प्रथम सग्रह कृष्टि सम्बन्धी कृष्टियोंका असख्यात बहुभाग बँधता है ।

§ ६१३ यह सूत्र सुगम है ।

* यहाँ शेष दो सग्रह कृष्टियाँ नहीं बँधती हैं ।

§ ६१४ यह सूत्र भी सुगम है ।

* इसी प्रकार मायासज्वलनकी अपेक्षा जानना चाहिए ।

* तथा इसी प्रकार लोभसज्वलनकी अपेक्षा भी जानना चाहिए ।

§ ६१५ ये दोनो सूत्र भी सुगम हैं । इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा कृष्टिवेदकके प्रथम समयमे कृष्टिगत अनुभागका बन्ध और उदयविषयक प्रवृत्तिविशेषका निरूपण करके अब वहीपर कृष्टिगत अनुभागसत्कर्मकी जो पहले अनुसमय अपवर्तना कह आये हैं वह इस रूपसे प्रवृत्त होती है इस बातका स्पष्टीकरण करते हुए आगेके सूत्रको कहते है—

* कृष्टियोका प्रथम समयमे वेदन करनेवाला जीव बारहों सग्रहकृष्टियोंकी अग्र कृष्टिसे लेकर एक एक सग्रह कृष्टिके असख्यातवें भागका विनाश करता है ।

§ ६१६ अनन्तगुणी विशुद्धिसे वृद्धिको प्राप्त होनेवाला यह प्रथम समयवर्ती कृष्टिवेदक जीव बारहो सग्रह कृष्टियोके उपरिम भागमे उत्कृष्ट कृष्टिसे लेकर एक एक सग्रह कृष्टिको असंख्यातवें

१ आ प्रतौ किट्टीतदाणुभाग- इति पाठ ।

ओवट्टावेयूण[1] हेट्ठिमकिट्टीसरूवेणेव ठवेदि त्ति वुत्तं होइ। एवं विदियादिसमयेसु वि ओवट्टणाघादो एसो अणुगंतव्वो। णवरि पढमसमयविणासिदकिट्टीहिंतो विदियादिसमयेसु विणासिज्जमाणकिट्टीओ असंखेज्जगुणहीणकमेण वट्टव्वाओ, उवरि चुण्णिसुत्ते तहाविहपरूवणोवलंभादो। एवमेसो किट्टीणमणुसमयोवट्टणं कुणमाणो किट्टीवेदगपढमसमये चेव आढविय किट्टीकरणद्धाए पुव्वणिव्वत्तिद किट्टीणं हेट्ठा तदंतरालेसु च अण्णाओ अपुव्वकिट्टीओ एदेण विहाणेण णिव्वत्तेदि त्ति पदुप्पायणफलो उवरिमसमयपबंधो—

* कोहस्स पढमसंगहकिट्टिं मोत्तूण सेसाणमेक्कारसण्हं संगहकिट्टीणं अण्णाओ अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि।

§ ६१७ वेदिज्जमाणकोहपढमसंगहकिट्टीवज्जाणं सेसाणमेक्कारसण्णं संगहकिट्टीणं सबंधिणीओ अण्णाओ अपुव्वाओ किट्टीओ एसो पढमसमयकिट्टीवेदओ णिव्वत्तेदुमाढवेदि त्ति भणिदं होदि। कोहपढमसंगहकिट्टीए परिवज्जणमेत्थ ण कायव्वं, तत्थ वि बंधेण अपुव्वाणं किट्टीणं णिव्वत्तिज्जमाणाणं संभवोवलंभादो त्ति चे? सच्चमेदं, किंतु कोधपढमसंगहकिट्टीए बंधेणेवापुव्वाओ किट्टीओ अंतरेसु णिव्वत्तिज्जंति। सेसाणं पुण संगहकिट्टीणं संकामिज्जमाणपदेसग्गेण जहासंभवं बज्झमाणपदेसग्गेण च अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तिज्जंति त्ति एदस्स विसेसस्स

भागप्रमाण अनन्त संग्रह कृष्टियोका अपवतनाघात द्वारा एक समयमे विनाश करता है। तत्प्रमाण कृष्टियोकी शक्तिको अपवतना करके अधस्तनकृष्टिरूपसे उन्हे स्थापित करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इसी प्रकार द्वितीयादि समयोमे भी यह अपवर्तनाघात जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि प्रथम समयमे विनश्यमान कृष्टियोकी अपेक्षा असख्यात गुणहीनक्रमसे जानना चाहिए, क्योकि आगे चूर्णिसूत्रमे उस प्रकारसे प्ररूपणा उपलब्ध होती है। इस प्रकार यह कृष्टियो की अनुसमय अपवतना करता हुआ कृष्टिवेदकके प्रथम समयमे ही आरम्भ करके कृष्टिकरण कालमे पहले निष्पन्न की गयी कृष्टियोके नीचे और उनके अन्तरालोमें अन्य अपूर्व कृष्टियोको इस विधिसे निष्पन्न करता है इस प्रकारके कथनके फलस्वरूप आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिको छोड़कर शेष ग्यारह सग्रह कृष्टियोको अन्य अपूव कृष्टियोको निष्पन्न करता है।

§ ६१७ क्रोधसज्वलनकी वेद्यमान प्रथम सग्रह कृष्टिसे रहित शेष ग्यारह सग्रह कृष्टियोंसे सम्बन्ध रखनेवाली अन्य अपूव कृष्टियोको यह कृष्टिवेदक जीव प्रथम समयमे निष्पन्न करनेके लिए आरम्भ करता है यह उक्त कथनका तात्पय है।

शंका—क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका निषेध यहाँपर नही करना चाहिए, क्योकि उसमें भी बन्धसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियाँ उत्पन्न होती हुई उपलब्ध होती हैं ?

समाधान—यह कथन सत्य है, किन्तु क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिके अन्तरालोमें बन्धसे अपूव कृष्टियोको निष्पन्न करता है। परन्तु शेष सग्रह कृष्टियोकी सक्रम्यमाण प्रदेशके अग्रभागसे और यथासम्भव बध्यमान प्रदेशके अग्रभागसे अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न करता है। इस

---

१ आ प्रतौ वड्डावेयूण इति पाठ।

पदसणट्ठ 'कोहस्स पढमसंगहकिट्टिं मोत्तूण त्ति' वुत्त ।

* ताओ अपुव्वाओ किट्टीओ कदमादो पदेसग्गादो णिव्वत्तेदि ।

§ ६१८ तासिमपुव्वाण णिव्वत्तिज्जमाणीण किट्टीण कदमादो पदेसग्गादो णिव्वत्ती होदि, किं बज्झमाणियादो आहो संकामिज्जमाणयादो, उवाहो तदुभयादो त्ति पुच्छा एदेण कदा होइ । संपहि एदिस्से पुच्छाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* बज्झमाणयादो च संकामिज्जमाणयादो च पदेसग्गादो णिव्वत्तेदि ।

§ ६१९ चउण्ह पढमसंगहकिट्टीण बंधसंभवादो । तत्थ बज्झमाणएण पदेसग्गेण अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि । पुणो कोहपढमसंगहकिट्टिं मोत्तूण सेसाणमेक्कारसण्हं संगहकिट्टीण संकामिज्जमाणयादो च पदेसग्गादो अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो । एदस्स भावत्थो—कोहपढमसंगहकिट्टीए बज्झमाणपदेसग्गादो चेव अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि, तत्थ पयारंतरासंभवादो । माण माया लोभाण तिसु पढमसंगहकिट्टीसु बज्झमाणयादो संकामिज्जमाणयादो च पदेसग्गादो अपुव्वकिट्टीओ णिव्वत्तेदि, उहयहा वि तत्थ तप्पवुत्तीए विरोहाभावादो । सेससंगहकिट्टीसु संकामिज्जमाणयादो चेव पदेसग्गादो अपुव्वकिट्टीण णिव्वत्ती, तत्थ बज्झमाण पदेसग्गासंभवादो त्ति । एत्थ 'संकामिज्जमाणयादो' त्ति वुत्त ओकड्डुणासंकमदव्वस्स सव्वत्थ गहण कायव्व । एवमेदेण दुविहेण पदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणीसु अपुव्वकिट्टीसु किं बज्झमाण

प्रकार इस विशेषके दिखलानेके लिए चूर्णिसूत्रमे 'कोहस्स पढमसंगहकिट्टिं मोत्तूण कोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिको छोडकर यह वचन कहा है ।

* उन अपूर्व कृष्टियोको किस प्रदेशके अग्रभागसे निष्पन्न करता है ।

§ ६१८ निष्पन्न होनेवाली उन अपूर्व कृष्टियोको किस प्रदेशके अग्रभागसे निष्पन्न करता है ? क्या बध्यमान कृष्टिसे या संक्रम्यमाण कृष्टिसे, या दोनोसे, इस प्रकार यह पृच्छा इस सूत्र द्वारा की गयी है । अब इस पृच्छाका समाधान करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* बध्यमान प्रदेशके अग्रभागसे और संक्रम्यमाण प्रदेशके अग्रभागसे उन अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न करता है ।

§ ६१९ क्योकि प्रथम संग्रह कृष्टियोका बन्ध सम्भव है । वहाँ बध्यमान प्रदेशाग्रसे अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न करता है । पुन क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिको छोडकर शेष ग्यारह संग्रह कृष्टियोके संक्रम्यमाण प्रदेशके अग्रभागसे अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न करता है यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है । इसका भावार्थ—क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिके बध्यमान प्रदेशके अग्रभागसे ही अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न करता है, क्योकि वहाँपर अन्य प्रकार सम्भव नही है । तथा मान, माया और लोभसंज्वलनकी तीन प्रथम संग्रह कृष्टियोमे बध्यमान और संक्रम्यमाण प्रदेशके अग्रभागसे अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न करता है, क्योकि उनमे दोनो प्रकारसे ही उसकी प्रवृत्ति होनेमे विरोधका अभाव है । शेष संग्रह कृष्टियोमे संक्रम्यमाण प्रदेशके अग्रभागसे ही अपूर्व कृष्टियोकी निष्पत्ति होती है, क्योकि उनमें बध्यमान प्रदेशाग्रका होना असम्भव है । यहाँपर 'संकामिज्जमाणयादो' ऐसा कहनेपर यहाँ सर्वत्र अपकर्षण संक्रम द्रव्यका ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार इस दो प्रकारके प्रदेशपुंजमेसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियोमें क्या बध्यमान प्रदेश-

पदेसग्गादो णिव्वत्तिज्जमाणकिट्टीओ बहुगीओ, आहो संकामिज्जमाणयादो त्ति आसंकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरसुत्तावयारो—

* बज्झमाणियादो थोवाओ णिव्वत्तेदि ।

§ ६२० कुदो ? एगसमयपबद्धमेत्तदव्वेण णिव्वत्तिज्जमाणाणं तासिं थोवभावसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो ।

* संकामिज्जमाणयादो असंखेज्जगुणाओ ।

§ ६२१ कुदो ? दिवड्ढगुणहाणीणमसंखेज्जदिभागमेत्तसमयपबद्धेहिं एदासिं णिव्वत्तिदंसणादो । ण चेदमसिद्धं, तिगुणोकड्डणभागहारेण दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धेसु ओवट्टिदेसु संकामिज्जमाण दव्वस्सागमणदंसणादो । तदो दव्वमाहप्पमस्सियूण सिद्धमेदासिमसंखेज्जगुणत्तं । गुणगारो च पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । एवमेदासिं थोवबहुत्तं परूविय संपहि बज्झमाणेण पदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणाणं किट्टीणं सेससंगहकिट्टीपरिहारेण चदुसु चेव पढमसंगहकिट्टीसु संभव विसेसावहारणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* जाओ ताओ बज्झमाणयादो पदेसग्गादो णिव्वत्तिज्जंति ताओ चदुसु पढमसंगह किट्टीसु ।

पुंजमेसे निष्पन्न होनेवाली कृष्टियाँ बहुत होती हैं या संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजमेसे निष्पन्न होनेवाली कृष्टियाँ बहुत होती हैं ऐसी आशंका होनेपर निःशंक करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार करते हैं—

* बध्यमान प्रदेशपुंजमेसे स्तोक अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता है।

§ ६२० क्योंकि एक समयप्रबद्धमात्र द्रव्यसे निष्पन्न होनेवाली उन अपूर्व कृष्टियोंके स्तोकपनेकी सिद्धि निर्बाधरूपसे पायी जाती है।

* तथा संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजमेंसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियाँ असंख्यातगुणी होती हैं।

§ ६२१ क्योंकि डेढ़ गुणहानियोंके असंख्यातवें भागमात्र समयप्रबद्धोंसे इन अपूर्व कृष्टियों की निष्पत्ति देखी जाती है। और यह कथन असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि तिगुणे अपकर्षण भाग हारसे डेढ़ गुणहानिमात्र समयप्रबद्धोंके भाजित करनेपर संक्रम्यमाण द्रव्यका आना देखा जाता है। इसलिए द्रव्यकी अधिकताका आलम्बन लेनेपर इन अपूर्व कृष्टियोंका असंख्यातगुणपना सिद्ध हो जाता है। यहाँपर गुणकार पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। इस प्रकार इनके अल्पबहुत्वका कथन करके अब बध्यमान प्रदेशपुंजसे निष्पन्न होनेवाली कृष्टियाँ शेष संग्रह कृष्टियोंको छोड़कर चार ही प्रथम संग्रह कृष्टियोंमें सम्भव हैं इस विशेषका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* जो वे अपूर्व कृष्टियाँ बध्यमान प्रदेशपुंजमेंसे निष्पन्न की जाती हैं वे चारों प्रथम संग्रहकृष्टियोंमें पायी जाती हैं।

§ ६२२ बज्झमाणपदेसग्गणिव्वत्तिज्जमाणतब्विय चदुसु चेव पढमसंगहकिट्टीसु संभवो, णाण्णत्थे त्ति वुत्त होदि। कुदो एस णियमो चे? ण, तत्तो अण्णासिमेदम्मि विसये बंधसंभवाणुवलंभादो। संपहि तासिं बज्झमाणपदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीणं कदमम्मि ओगासे णिव्वत्ती होदि त्ति आसंकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

* ताओ कदमम्मि ओगासे ?

§ ६२३ किं ताव सगपदेसग्गमुवलभादो, आहो तदवयवकिट्टीणं अंतरंतरेसु त्ति पुच्छिदं होदि। संपहि एदिस्से पुच्छाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तणिद्देसो—

* एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए किट्टीअंतरेसु।

§ ६२४ संगहकिट्टीणमंतरेसु ताव बज्झमाणपदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीणं णत्थि संभवो, चदुण्हं पढमसंगहकिट्टीणं मज्झिमकिट्टीसरूवेण पयट्टमाणणवकबंधाणुभागस्स तत्तो हेट्ठा पवुत्तिविरोहादो। तदो एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए अवयवकिट्टीणमंतरेसु बज्झमाणपदेसग्गे णापुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि त्ति सिद्धं। संपहि किमविसेसेण एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए सव्वकिट्टीअंतरेसु तासिं संभवो आहो अत्थि को वि विसेससंभवो त्ति आसंकाए पुच्छासुत्तमाह—

---

§ ६२२ क्योंकि वे बध्यमान प्रदेशपुजसे निष्पन्न होनेवाली प्रथम संग्रह कृष्टियोमे सम्भव हैं, अन्य कृष्टियोमे नही यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शका—यह नियम किस कारणसे है ?

समाधान—नही, क्योकि उन चारोको छोडकर अन्य संग्रह कृष्टियोका इस स्थानमे बन्ध सम्भव नही उपलब्ध होता।

अब बध्यमान प्रदेशपुजमेसे निष्पन्न होनेवाली उन अपूर्व कृष्टियोकी किस अवकाश (अन्तराल) मे निष्पत्ति होती है ऐसी आशका होनेपर नि शंक करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्ध को कहते हैं—

* उन अपूर्व कृष्टियोको किस अवकाश (अन्तराल) मे निष्पन्न करता है ?

§ ६२३ क्या जहाँसे अपना प्रदेशपुज उपलब्ध होता है वहीसे निष्पन्न करता है या उनकी अवयव कृष्टियोके उत्तरोत्तर अन्तरालोमे निष्पन्न करता है इस प्रकार यह पृच्छा की गयी है। अब इस पृच्छाके निर्णयका निर्देश करनेके लिए आगेके सूत्रका निर्देश करते हैं—

* एक एक संग्रहकृष्टिके अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमे उन अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न करता है।

§ ६२४ संग्रह कृष्टियोके अन्तरालोमे तो बध्यमान प्रदेशपुजमेंसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियोका निष्पत्ति सम्भव नही है, क्योकि चारो प्रथम संग्रह कृष्टियोके मध्यम कृष्टिरूपसे प्रवर्तमान नवकबन्धसम्बन्धी अनुभागका उससे नीचे प्रवृत्ति होनेमे विरोध आता है। इसलिए एक एक संग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टियोके अन्तरालोमें बध्यमान प्रदेश पुजमेसे अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता है यह सिद्ध हुआ। अब क्या अविशेषरूपसे एक एक संग्रह कृष्टिकी सब अवयव कृष्टियोके अन्तरालोमें उनका प्राप्त होना सम्भव है या कोई विशेष सम्भव है ऐसी आशंका होनेपर पृच्छासूत्र कहते हैं—

* किं सव्वेसु किट्टीअंतरेसु आहो ण सव्वेसु ?

§ ६२५ सुगमं।

* ण सव्वेसु।

§ ६२६ ण सव्वेसु किट्टीअंतरेसु तासिमत्थि संभवो, किंतु पडिणियदकिट्टीअंतरेसु चेव तासिमुप्पत्ती होइ त्ति भणिदं होदि। एवं सो वुण जइ ण सव्वेसु किट्टीअंतरेसु तो कदमेसु किट्टीअंतरेसु तासिमुप्पत्तिविसओ त्ति भण्णमाणो पुणो वि पुच्छाणिद्देसमाह—

* जइ ण सव्वेसु, कदमेसु अंतरेसु अपुव्वाओ णिव्वत्तयदि।

§ ६२७ केत्तियमेत्ताणि किट्टीअंतराणि मोत्तूण पुणो केत्तिएसु किट्टीअंतरेसु ताओ अपुव्वाओ किट्टीओ बज्झमाणपदेससंबंधिणीओ णिव्वत्तेदि त्ति पुच्छा कदा होइ।

* उवसंदरिसणा।

§ ६२८ एत्तियाणि किट्टीअंतराणि उल्लंघियूण पुणो एत्तियमेत्तेसु किट्टीअंतरेसु तासिं णिव्वत्ती होदि त्ति एदस्स अत्थविसेसस्स फुडीकरणमुवसंदरिसणा णाम। तमिदाणिं परूवइस्सामो त्ति वुत्तं होइ।

---

* क्या सब अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमें उन अपूर्व कृष्टियोंकी रचना करता है या सभी अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमें उनकी रचना नहीं करता है ?

§ ६२५ यह सूत्र सुगम है।

* सब अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमें उन अपूर्व कृष्टियोंकी निष्पत्ति नहीं करता।

§ ६२६ सब अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमें उन अपूर्व कृष्टियोंकी निष्पत्ति करना सम्भव नहीं है, किन्तु प्रतिनियत अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमें ही उनकी निष्पत्ति होती है यह उक्त सूत्र द्वारा कहा गया है। इस प्रकार वह यदि सब अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमें उनकी निष्पत्ति नहीं होती तो कितने कृष्टियोंके अन्तरालोंमें वे निष्पत्तिका विषय होती हैं, ऐसा कहनेवाला फिर भी पृच्छाका निर्देश करता है—

* यदि सब अवयव कृष्टियोंमें उन्हें निष्पन्न नहीं करता है तो कितनी अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंमें उन अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता है।

§ ६२७ कितने अवयव कृष्टियोंसम्बन्धी अन्तरालोंको छोड़कर पुन कितने अवयव कृष्टियोंसम्बन्धी अन्तरालोंमें बध्यमान प्रदेशपुञ्जसम्बन्धी उन अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता है यहाँ यह पृच्छा की गयी है।

* आगे उसी विषयको स्पष्ट करते हैं।

§ ६२८ इयत्प्रमाण अवयव कृष्टियोंके अन्तरालोंका उल्लंघन कर पुन इयत्प्रमाण अवयव कृष्टि अन्तरालोंमें उन अपूर्व कृष्टियोंकी निष्पत्ति होती है इस प्रकार इस अर्थविशेषका स्पष्टीकरण करनेका नाम उपसदर्शना है। आगे इस समय उसकी प्ररूपणा करेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* बज्झमाणियाण जं पढम किट्टीअंतर तत्थ णत्थि ।

§ ६२९ बज्झमाणसगहकिट्टीण हेट्ठिमोवरिमासखेज्जदिभागविसयाण किट्टीणमतरेसु ताव बधेण अपुव्वकिट्टी ण णिव्वत्तिज्जदि, तदाधारेण बधपवुत्तीए असभवादो। तदो बज्झमाणमज्झिम किट्टीसरूवेण तदतरेसु च णवकबधपदेसग्गेण किट्टीओ णिव्वत्तिज्जति। तत्थ वि बज्झमाणियाण ज पढम किट्टीअतर तत्थ णत्थि अपुव्वाओ किट्टीओ। कुदो ? साहावियादो।

* एवमसखेज्जाणि किट्टीअतराणि अधिच्छिदूण ।

§ ६३० एवमेदेण कमेण असखेज्जाणि किट्टीअतराणि समुल्लघियूण तदित्थकिट्टीअतरे अपुव्वकिट्टीए सभवो त्ति भणिद होदि। सपहि एवस्स चेव अद्धाणस्स फुडीकरणट्ठमिदमाह—

* किट्टीअतराणि अतरट्ठदाए असखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

§ ६३१ एदाणि किट्टीअतराणि बधेण णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीए अतरभावेण पयट्ट माणाणि केत्तियमेत्ताणि त्ति पुच्छिदे असखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलाणि त्ति तेसिं पमाणणिद्देसो कदो। बज्झमाणजहण्णकिट्टिप्पहुडि जाव असखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तकिट्टीओ गच्छति ताव[1] णवकबधकिट्टीपवेसग्ग पुव्वकिट्टीसु चेव सरिसधणियसरूवेण परिणमिय पुणो तदणतरोवरिम

* बध्यमान कृष्टियोसम्बन्धी जो प्रथम अवयव कृष्टि अन्तर है उसमे उन अपूर्व कृष्टियोकी निष्पत्ति नही करता है।

§ ६२९ नीचे और ऊपर असख्यातवें भागप्रमाण बध्यमान सग्रह कृष्टियोके कृष्टि अन्तरालोमे तो बन्धरूपसे अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न नही करता है क्योकि उस रूपसे बन्धकी प्रवृत्ति होना सम्भव नही है। इसलिए बध्यमान मध्यम कृष्टियोके रूपसे और उनके अन्तरालोमे नवकबन्ध प्रदेशपुजमेसे अपूर्व कृष्टियोको निष्पन्न किया जाता है। उसमे भी बध्यमान कृष्टियोका जो प्रथम कृष्टि अन्तर है उसमे अपूर्व कृष्टियाँ नही पायी जाती क्योकि ऐसा स्वभाव है।

* इस प्रकार असख्यात कृष्टि अन्तरालोको उल्लघन कर—

§ ६३० इस प्रकार इस क्रमसे असख्यात कृष्टि अन्तरालोको उल्लघन कर वहाँ प्राप्त होनेवाले कृष्टि अन्तरालमे अपूर्व कृष्टिकी उत्पत्ति होती है यह उक्त सूत्रका तात्पर्य है। अब इसी स्थानको स्पष्ट करनेके लिए आगेका सूत्र कहते है—

* विवक्षित कृष्टि अन्तरालको प्राप्त करनेके लिए जो कृष्टि-अन्तराल होते हैं वे पल्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण होते हैं।

§ ६३१ बन्धसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टिके लिए अन्तररूपसे प्रवृत्त होनेवाले ये कृष्टि अन्तराल कितने होते हैं ऐसा पूछनेपर वे पल्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण होते हैं इस प्रकार उनके प्रमाणका निर्देश किया है। बध्यमान जघन्य कृष्टिसे लेकर पल्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण कृष्टियाँ जबतक व्यतीत होती हैं तब जाकर नवकबन्धरूप कृष्टिका प्रदेशपुंज पूर्व कृष्टियोमे ही सदृश धनरूपसे परिणमन करके पुन तदनन्तर उपरिम कृष्टि अन्तरालमें

१ ता आ प्रत्यो जाव इति पाठ ।

किट्टीअंतरे अपुव्वकिट्टीआयारेण परिणमिदुं लहदि, ण तत्थ पडिसेहो अत्थि त्ति भावत्थो। संपहि इममेवत्थमुवसंहारमुहेण पदसेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

❋ एत्तियाणि किट्टीअंतराणि गंतूण अपुव्वा किट्टी णिव्वत्तिज्जदि ।

§ ६३२ गयत्थमेदं सुत्तं। एत्तो उवरि पुणो वि एत्तियमद्धाणं गंतूण बिदिया अपुव्वकिट्टी णिव्वत्तिज्जदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमोइण्णं—

❋ पुणो वि एत्तियाणि किट्टीअंतराणि गंतूण अपुव्वा किट्टी णिव्वत्तिज्जदि ।

§ ६३३ गयत्थमेदं पि सुत्तं। एवमेदमवट्ठिदमद्धाणमंतरं कादूण णेदव्वं जाव सयलकिट्टी-अद्धाणस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीण बंधेण णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीण चरिमकिट्टी बंधगद्धा किट्टीदो हेट्ठा असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तद्धाणमोसरिदूण समुप्पण्णा त्ति एसो एत्थतण-चरिमवियप्पो। संपहि एदस्सद्धाणस्स सुत्तणिद्दिट्ठस्स फुडीकरणं कस्सामो। तं जहा—दिवड्ढ गुणहाणितिभागमेत्ताण समयपबद्धाण जइ एगसंगहकिट्टीए सयलावयवकिट्टीओ लब्भंति तो एगसमयपबद्धमेत्तणवकबंधपदेसग्गस्स केत्तियमेत्तीओ अपुव्वकिट्टीओ लहामो त्ति तेरासियं कादूण ०|३|९|० पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए बंधेण णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्व किट्टीण पमाणं पुव्वकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्तमागच्छदि ३।

अपूर्व कृष्टिके आकारसे परिणमनको प्राप्त करता है, वहाँ ऐसा होनेमें कोई प्रतिषेध नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब इसी अर्थको उपसंहार द्वारा दिखलाते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

❋ इतने कृष्टि अन्तरालोंको बिताकर अपूर्व कृष्टिको निष्पन्न करता है।

§ ६३२ यह सूत्र गतार्थ है। इससे आगे पुनरपि इतना स्थान जाकर दूसरी अपूर्व कृष्टि को निष्पन्न करता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र अवतीर्ण हुआ है—

❋ फिर भी इतने कृष्टि अन्तरालोंको उल्लंघन कर अपूर्व कृष्टिको निष्पन्न करता है।

§ ६३३ यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार इस अवस्थित स्थानरूप अन्तरालको प्राप्त करके जब जाकर समस्त कृष्टि-स्थानके असंख्यातवें भागप्रमाण बन्धसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियोंका अन्तिम कृष्टि बन्धक काल, विवक्षित कृष्टिसे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल स्थान पीछे सरकनेपर उत्पन्न होता है। इस प्रकार यह यहाँ सम्बन्धी अन्तिम विकल्प है। अब सूत्रनिर्दिष्ट इस स्थानका स्पष्ट करते है। वह जैसे—डेढ गुणहानिके त्रिभागमात्र समयप्रबद्धोंको यदि एक संग्रह कृष्टिसम्बन्धी समस्त अवयव कृष्टियाँ प्राप्त होती हैं तो एक समयप्रबद्धप्रमाण नवकबन्ध सम्बन्धी प्रदेशपुंजमें कितनी अपूर्व कृष्टियाँ प्राप्त करेंगे, इस प्रकार त्रैराशिक करके फलराशिसे गुणित इच्छाराशिको प्रमाणराशिसे भाजित करनेपर बन्धसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियोंका प्रमाण पूर्व कृष्टियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण ($\frac{9}{4}$) प्राप्त होता है।

उदाहरण—डेढ गुणहानिप्रमाण समयप्रबद्ध १२, त्रिभागप्रमाण समयप्रबद्ध ४, एक संग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टियाँ ९।

यदि त्रिभागप्रमाण समयप्रबद्ध ४ की ९ अवयव कृष्टियाँ बनती हैं तो एक समयप्रबद्ध सम्बन्धी नवकबन्धकी कितनी अपूर्व कृष्टियाँ बनेंगी, इस प्रकार इस विधिसे ९×१=९,

पुणो एत्तीयमेत्तीणमपुव्वकिट्टीण जइ सयलकिट्टीअद्धाण लब्भइ, तो एक्किस्से अपुव्वकिट्टीए केत्तियमद्धाणं लभामो त्ति ९/४ | ९/१ |१ पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए दिवड्ढगुणहाणिति भागमेत्तमेक्किस्से अपुव्वकिट्टीए लद्धद्धाण होदि। त च एद ४। तदो सिद्धमसखेज्जपलिदोवमपढम वग्गमूलमेत्तमद्धाणमुल्लघियूण एक्का अपुव्वकिट्टी बधेण णिव्वत्तिज्जमाणिया लब्भदि त्ति एसा च परूवणा कोह माण माया लोहसजलणाण पढमसगहकिट्टीओ पादेक्क णिरुभियूण जोजेयव्वा। णवरि कोहसजलणपढमसगहकिट्टीए तेरसगुणमेगकिट्टीदव्व ठविय तेरासिय कायव्व। एवमेवं परूविय सपहि बधेण णिव्वत्तिज्जमाणीसु पुव्वापुव्वकिट्टीसु णवकबधपदेसग्गस्स णिसेगक्कमपदं सणट्ठमुवरिम सुत्तपबधमाह—

* बज्झमाणयस्स पदेसग्गस्स णिसेगसेढिपरूवण वत्तइस्सामो।

§ ६३४ सुगम।

* तत्थ जहण्णियाए किट्टीए बज्झमाणियाए बहुअं।

* विदियाए किट्टीए विसेसहीणमणतभागेण।

९—४=९/४ त्रैराशिक करनेपर ९/४ अपूर्व कृष्टियाँ प्राप्त हुई। यहाँ फलराशि ९ है, इच्छाराशि १ है और प्रमाणराशि ४ है। अतएव फलराशि ९ से इच्छाराशि १ को गुणित कर प्रमाणराशि ४ का भाग देकर ९/४ अपूर्व कृष्टियाँ प्राप्त की गयी हैं।

पुन इयत्प्रमाण (९/४) अपूर्व कृष्टियोका यदि समस्त कृष्टिस्थान (९) प्राप्त होता है तो एक अपूर्व कृष्टिका कितना स्थान प्राप्त करगे इस प्रकार फलराशि (९) से गुणित इच्छाराशि (१) मे प्रमाणराशि (९/४) का भाग देनेपर डेढ़ गुणहानि (१२) का त्रिभागमात्र एक अपूर्व कृष्टिका लब्ध स्थान (४) प्राप्त होता है। और वह यह है—(४)।

उदाहरण—अपूर्व कृष्टियाँ ९/४ प्रमाणराशि, सकल कृष्टि अध्वान ९ फलराशि, इच्छाराशि १ अत ९×१=९, ९—९/४=४ अपूर्व कृष्टिका लब्धस्थान। यहाँ त्रैराशिक के नियमानुसार फलराशि ९ से इच्छाराशि १ का गुणा किया गया है और लब्ध ९ मे प्रमाणराशि ९/४ का भाग देकर लब्ध अपूर्व कृष्टि अध्वान ४ प्राप्त किया गया है।

इसलिए पल्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण स्थानोको उल्लघन कर बन्धसे निष्पन्न होनेवाली एक अपूर्व कृष्टि प्राप्त होती है। और इस प्रकार यह प्ररूपणा क्रोध, मान, माया और लोभसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टियोमेसे प्रत्येकको विवक्षित कर योजित कर लेनी चाहिए। इतनी विशेषता है कि क्रोधसज्वलनका प्रथम सग्रह कृष्टिके तेरहगुणे एक कृष्टि द्रव्यको स्थापित करके बन्धसे निष्पन्न होनेवाली पूर्व और अपूर्व कृष्टियोमे नवकबन्धके प्रदेशपुंजके निषेक क्रमको दिखलानेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* अब बध्यमान प्रदेशपुजके निषेकोसम्बन्धी श्रेणिप्ररूपणाको बतलावेंगे।

§ ६३४ यह सूत्र सुगम है।

* वहाँ बध्यमान जघन्य कृष्टिमे बहुत प्रदेशपुज देता है।

* दूसरी कृष्टिमे अनन्तवाँ भाग विशेष हीन देता है।

* तदियाए विसेसहीणमणंतभागेण ।

* चउत्थीए विसेसहीणं ।

* एवमणंतरोवणिधाए ताव विसेसहीणं जाव अपुव्वकिट्टिमपत्तो त्ति ।

§ ६३९ एदस्स सुत्तस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा—चउण्हं पढमसंगहकिट्टीणं हेट्ठिमोवरिमा-संखेज्जदिभाग मोत्तूण सेसासेसमज्झिमकिट्टीसरूवेण पयट्टमाणो णवकबंधाणुभागो पुव्वकिट्टीसरूवो वि अत्थि, अपुव्वकिट्टीसरूवो वि । तत्थ पुव्वकिट्टीसु णिसिच्चमाणपदेसग्गं णवकबंधसमयपबद्ध-स्साणंतिमभागमेत्तं होदि । सेसा अणंता भागा अपुव्वकिट्टिसरूवेण णिसिंचंति । तदो णवकबंध-समयपबद्धस्साणंतभागे पुध ठविय तदणंतिमभागं घेत्तूण पुव्वकिट्टीसु बंधजहण्णमादिं कादूण णिसिंचमाणो तत्थ जा बंधजहण्णकिट्टी तिस्से उवरि बहुअं पदेसग्गं देदि । णवकबंधसमयपबद्ध-स्साणंतिमभागे किट्टीअद्धाणेण खंडिदे तत्थेयखंडमेत्तदव्वमणंतभागब्भहियं कादूण णिरुद्धजहण्ण-किट्टीए णिसिंचदि त्ति वुत्तं होदि । तत्तो विदियाए किट्टीए विसेसहीणं देदि । केत्तियमेत्तेण ? अणंतिमभागमेत्तेण । बंधजहण्णकिट्टीए णिसित्तपदेसग्गं णिसेयभागहारेण खंडिय तत्थेयखंडमेत्तेण विसेसहीणं कादूण विदियकिट्टीए पदेसग्गमेसो णिसिंचदि । अण्णहा गोवुच्छायाराणुप्पत्तीदो त्ति भावत्थो । एवमेदेण कमेण तदियचउत्थादिकिट्टीसु वि अणंतभागहीणं कादूण णेदव्वं जाव असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि उल्लंघियूण तम्मि अंतरे णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीदो

---

* तीसरी कृष्टिमे अनन्तवाँ भाग विशेष हीन देता है ।

* चौथी कृष्टिमे विशेष हीन देता है ।

* इस प्रकार अनन्तरोपनिधाकी विधिके अनुसार श्रेणिरूपसे अपूर्व कृष्टिके प्राप्त होने तक उत्तरोत्तर विशेष हीन विशेष हीन प्रदेशपुज देता है ।

§ ६३९ अब इसका अर्थ कहते हैं । वह जैसे—चारों प्रथम संग्रह कृष्टियोके नीचे और ऊपर असख्यातवें भागको छोडकर शेष समस्त मध्यम कृष्टिरूपसे प्रवर्तमान नवकबन्धसम्बन्धी अनुभाग पूर्व कृष्टिस्वरूप भी होता है और अपूर्व कृष्टिस्वरूप भी होता है । उसमे पूर्व कृष्टियोमें सिंचित होनेवाला प्रदेशपुज नवकबन्धसम्बन्धी समयप्रबद्धके अनन्तवें भागप्रमाण होता है । शेष अनन्त बहुभागको अपूर्व कृष्टिरूपसे सिंचित करता है । इसलिए नवकबन्ध समयप्रबद्धके अनन्त बहुभागको पृथक स्थापित कर तथा उसके अनन्तवें भागको ग्रहण कर पूर्व कृष्टियोमें बन्ध-सम्बन्धी जघन्य कृष्टिसे लेकर सिंचन करता हुआ जो बन्धसम्बन्धी जघन्य कृष्टि है उसमें बहुत प्रदेशपुंजको देता है । तथा नवकबन्ध समयप्रबद्धके अनन्तवें भागके कृष्टि अध्वानके द्वारा खण्डित करनेपर वहाँ जो एक भागमात्र द्रव्यको अनन्तवाँ भाग अधिक करके विवक्षित जघन्य कृष्टिमें सिंचित करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । पुन उससे विशेष हीन दूसरी कृष्टिमें देता है ।

शंका—कियत्प्रमाण हीन देता है ?

समाधान—अनन्तवाँ भाग हीन देता है । अर्थात् बन्ध जघन्य कृष्टिमें सिंचित किये गये द्रव्यको निषेकभागहारसे खण्डित करके दूसरी कृष्टिमें प्रदेशपुंजको वह सींचता है, अन्यथा गोपुच्छाकारकी उत्पत्ति नहीं हो सकती यह इसका भावार्थ है ।

इस प्रकार इस क्रमसे तीसरी और चौथी आदि कृष्टियोमे उत्तरोत्तर अनन्त भागहीन अनन्त भागहीन करके पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंको उल्लंघन कर उस अन्तरालमें

हेट्ठिमाणतरकिट्टि त्ति, एदम्मि अद्धाणे अणतभागहाणि मोत्तण पयारतरासभवादो। पुणो एदम्मि अंतरे दोण्ह पुव्वकिट्टीणमतराले णिव्वत्तिज्जमाणपढमापुव्वकिट्टीए केरिसो पदेसणिसेगो होदि त्ति आसकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरसुत्तणिद्देसो—

* अपुव्वाए किट्टीए अणतगुण ।

§ ६३६ कि कारण ? पुव्वमवणिय ट्ठिद दुविहाणतभागमेत्तदव्वे अपुव्वकिट्टीअद्धाणेण खडिदे तत्थेयखडमेत्तदव्वस्स हेट्ठिमाणतरपुव्वकिट्टीए णिवदिददव्वादो अणतगुणस्स तत्थ णिक्खेव दसणादो। एदस्स दव्वस्स ओवट्टण ठविय सिस्साणमेत्थ अत्थपडिबोहो कायव्वो।

* अपुव्वादो किट्टीदो जा अणतरकिट्टी तत्थ अणतगुणहीण ।

§ ६३७ एत्थ वि कारणमणतरपरूविदमेव वट्टव्व। तदो पुव्वापुव्वकिट्टीसु एयगोवुच्छा सपायणट्ठ हेट्ठिमोवरिमपुव्वकिट्टीसयलदव्वादो अणतभागेणहीणमहिय च कादूण णिसिच्चमाणस्स मज्झिममापुव्वकिट्टीए णिसित्तपदेसग्गमणतगुण जादमिदि एसो एदस्स भावत्थो। सपहि एत्तो उवरि सव्वत्थ अणतरोवणिधाए अणतभागहीण पदेसणिक्खेव कुणमाणो गच्छदि जाव असखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तद्धाणमुवरि गतूण ट्ठिदविदियापुव्वकिट्टीए समणतरहेट्ठिम पुव्वकिट्टि त्ति, एदम्मि अद्धाणे अणतभागहीणपदेसणिक्खेव मोत्तूण पयारंतरासभवादो त्ति इममत्थविसेस पदुप्पायेमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टिसे अधस्तन अनन्तर कृष्टिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए, क्योकि इस अध्वानमे अनन्त भागहानिको छोडकर अन्य प्रकार सम्भव नही है। पुन इस अन्तरालमे दो पूर्व कृष्टियोके अन्तरालमे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टिमे प्रदेशनिषेक किस प्रकारका होता है ऐसी अशका होनेपर निःशक करनेके लिए आगेके सूत्रका निर्देश करते हैं—

* अपूर्व कृष्टिमे अनन्तगुणे प्रदेशपुजको निक्षिप्त करता है।

§ ६३६ शका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—पहले निकालकर पृथक रखे हुए अनन्त बहुभागमात्र द्रव्यको अपूर्व कृष्टिके अध्वानसे भाजित करनेपर वहाँ प्राप्त एक खण्डमात्र द्रव्य जो कि अधस्तन अनन्तर पूर्व कृष्टिमें निक्षिप्त द्रव्यसे अनन्तगुणा है—उसका उस अपूर्व जघन्य कृष्टिमे निक्षेप देखा जाता है। इस द्रव्यकी अपवर्तना स्थापित करके यहाँ शिष्योको अर्थका प्रतिबोध कराना चाहिए।

* अपूर्व कृष्टिसे जो अनन्तर कृष्टि है उसमे अनन्तगुणे हीन द्रव्यको निक्षिप्त करता है।

§ ६३७ यहाँपर भी अनन्तर कहा हुआ ही कारण जानना चाहिए। अत पूर्व और अपूर्व कृष्टियोमे एक गोपुच्छाका सम्पादन करनेके लिए अधस्तन और उपरिम पूर्व कृष्टियोंके समस्त द्रव्यसे अनन्तवें भागहीन द्रव्यको अधिक करके सिंचित करते हुए मध्यम अपूर्व कृष्टिमे निक्षिप्त प्रदेशपुज अनन्तगुणा हो जाता है इस प्रकार यह इसका भावार्थ है। अब इससे आगे सर्वत्र अनन्तरोपनिधाके क्रमसे अनन्त भागहीन प्रदेशपुजका निक्षेप करता हुआ पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अध्वान (स्थान) ऊपर जाकर स्थित दूसरी अपूर्व कृष्टिके समानान्तर अधस्तन अपूर्व कृष्टिके प्राप्त होने तकके इस अध्वानमे अनन्त भागहीन प्रदेशोके निक्षेपको छोड़कर अन्य प्रकार सम्भव नही है इस प्रकार इस अर्थविशेषका प्रतिपादन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* तदो पुणो अणतभागहीणं ।

§ ६३८ सुगम । सपहि एत्तो परमपुव्वकिट्टीसरूवेणाणतगुण पदेसग्गं णिसिंचिय पुणो तदुवरिमपुव्वकिट्टीए अणंतगुणहीण णिसिचदि । तत्तो परमणतभागहीण जाव अण्णमपुव्वकिट्टी ण पत्ता त्ति । पुणो अपुव्वकिट्टीए पुव्व वा अणतगुण, तदो अणतगुणहोणो, तत्तो परमणतभागहोण मिदि एदेण कमेण उवरि सव्वत्थ णेदव्वमिदि जाणावणफलो उवरिमसुत्तारभो—

* एव सेसासु सव्वासु ।

§ ६३९. गयत्थमेद सुत्त । एवमेत्तिएण सुत्तपवधेण बधेण णिव्वत्तिज्जमाणीणमपुव्वकिट्टीण सरूवविणिण्णयं कादूण सपहि सकामिज्जमाणण पदेसग्गेण कोहपढमसगहकिट्टि मोत्तूण सेसाण मेक्कारसण्ह सगहकिट्टीणमवयवभावेण णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीण परूवण कुणमाणो सत्तपबधमुत्तर भणइ—

* जाओ सकामिज्जमाणियादो पदेसग्गादो अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तिज्जति ताओ दुसु ओगासेसु ।

§ ६४० एत्थ सकामिज्जमाणपदेसग्गमिदि वुत्ते ओकड्डणासकमेण संकामिज्जमाणदव्वस्स गहण कायव्व, तस्सेव दव्वस्स सगहकिट्टीण साहारणभावेण पहाणभावोवलभादो । तेण सकामिज्जमाणएण पदेसग्गेण जाओ अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तिज्जति, ताओ दोसु ओगासेसु

---

* तदनन्तर पुन पूव कृष्टिमे अनन्त भागहीन प्रदेशपुज निक्षिप्त करता है ।

§ ६३८ यह सूत्र सुगम है । अब इससे आगे अपूव कष्टिरूपसे अन तगुणे प्रदेशपुजको निक्षिप्त करके पुन उससे आगेकी पूव कष्टिमें अनन्त गुणहीन प्रदेशपुजको निक्षिप्त करता है । पुन उससे आगे जबतक अ य अपूर्व कृष्टि नहीं प्राप्त होती तबतक अन त भागहीन प्रदेशपुजको निक्षिप्त करता है । पुन अपूव कष्टिमे पहलेके समान अनन्तगुणा प्रदेशपुज निक्षिप्त करके तदनन्तर पूव कष्टिमे अनन्तगुणा हीन प्रदेशपुजका निक्षेप करता है । फिर उससे आगे अनन्तभागहीन प्रदेशपुजका निक्षेप करता है । इस प्रकार इस क्रमसे आगे सवत्र ले जाना चाहिए इस प्रकारका ज्ञान कराना है फल जिसका ऐसे आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* इसी प्रकार बध्यमान सब कृष्टियोमे जानना चाहिए ।

§ ६३९ यह सूत्र गतार्थ है । इस प्रकार इतने सूत्र प्रबन्ध द्वारा बन्धसे निष्पन्न होनेवाली अपूर्व कृष्टियोके स्वरूपका निणय करके अब सक्रम्यमाण प्रदेशपुजसे क्रोधकी प्रथम सग्रह कष्टिको छोडकर शेष ग्यारह सग्रह कष्टियोके अवयवरूपसे निष्पद्यमान अपूव कष्टियोका कथन करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते है—

* सक्रम्यमाण प्रदेशपुजसे जो अपूव कृष्टियाँ निपजती हैं वे दो अवकाशो (अन्तरालो) मे निपजती हैं ।

§ ६४० यहाँपर संक मिज्जमाणपदेसग्ग' ऐसा कहनेपर अपकर्षण सक्रमके द्वारा सक्रम्यमाण द्रव्यका ग्रहण करना चाहिए, क्योकि उसी द्रव्यकी संग्रह कष्टियोके साधारणपनेसे प्रधानता पायी जाती है । इसलिए संक्रम्यमाण प्रदेशपुजके द्वारा जो अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं वे

णिव्वत्तिज्जति त्ति सुत्तत्थसबंधो। संपहि के ते दुवे ओगासा त्ति आसकिय पुच्छावक्कमाह—

❀ तं जहा।

§ ६४१ सुगम।

❀ किट्टीअंतरेसु च संगहकिट्टीअंतरेसु च।

§ ६४२ कोहपढमसंगहकिट्टि मोत्तूण सेसाणमेक्कारसण्हं संगहकिट्टीणं हेट्ठा तासिमसंखेज्जदिभागपमाणेण जाओ णिव्वत्तिज्जति अपुव्वकिट्टीओ ताओ संगहकिट्टीअंतरेसु त्ति भणंति। तासिं चेव एक्कारसण्हं संगहकिट्टीणं किट्टीअंतरेसु पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं गंतूण अंतरंतरे जाओ अपव्वकिट्टीओ णिव्वत्तिज्जति ताओ किट्टीअंतरेसु त्ति वुच्चति। वेदिज्जमाण कोहपढमसंगहकिट्टीए हेट्ठा किट्टीअंतरेसु वा संगपदेसग्गमोकड्डियूण अपुव्वकिट्टीओ किण्ण कीरंति? ण, विणासिज्जमाणाए तिस्से तहाविहसभवाणुवलभादो। तम्हा तप्परिहारेण सेसाणमेक्कारसण्हमेव संगहकिट्टीणं संबंधेण संकामिज्जमाणयेण पदेसग्गेण अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि त्ति भणिदं।

❀ जाओ संगहकिट्टीअंतरेसु ताओ थोवाओ।

६४३ एदाओ पुव्वकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्ताओ होदूण थोवाओ त्ति भणिदाओ। किं

दो अन्तरालोंमें निपजती है ऐसा इस सूत्रके साथ अर्थका सम्बन्ध है। अब वे दो अन्तराल कौन हैं ऐसी आशंका करके पृच्छावाक्य कहते हैं—

❀ वह जैसे।

§ ६४१ यह सूत्र सुगम है।

❀ वे संक्रम्यमाण अपूर्व कृष्टियाँ कृष्टि अन्तरालोंमें और संग्रह कृष्टि अन्तरालोंमें निपजती है।

§ ६४२ क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिको छोड़कर शेष ग्यारह संग्रह कृष्टियोंके नीचे उनके असंख्यातवें भागप्रमाण जो अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं वे संग्रह कृष्टियोंके अन्तरालोंमें कही जाती है। और उन्हीं ग्यारह संग्रह कृष्टियोंके कृष्टि अन्तरालोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर प्रत्येक अन्तरमें अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं वे कृष्टि अन्तरालोंमें कही जाती हैं।

शंका—वेद्यमान क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिके नीचे अथवा कृष्टि अन्तरालोंमें अपने प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके अपूर्व कृष्टियोंको क्यों नहीं करता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि विनश्यमान उसमें उस प्रकारसे सम्भव नहीं है। इसलिए उसके परिहार द्वारा शेष ग्यारहों संग्रह कृष्टियोंके सम्बन्धसे संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजसे अपूर्व कृष्टियोंको निपजाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

❀ संग्रह कृष्टियोंके अन्तरालोंमें जो अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं वे थोड़ी होती हैं।

§ ६४३ ये पूर्व कृष्टियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर थोड़ी कही गयी हैं।

कारण ? ओकड्डिदसयलदव्वस्सासंखेज्जदिभागमेत्तदव्वादो चेव संगहकिट्टीणं हेट्ठा अपुव्वकिट्टीणं णिव्वत्तणादो।

*** जाओ किट्टीअंतरेसु ताओ असंखेज्जगुणाओ।**

§ ६४४ एदाओ वि पुव्वकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्तीओ चेव, किंतु दव्वविसेसेण पुव्विल्ल किट्टीहिंतो असंखेज्जगुणाओ जादाओ, ओकड्डिदसयलदव्वस्सासंखेज्जासंखेज्जभागमेत्तदव्वं घेत्तूण किट्टीअंतरेसु अपुव्वकिट्टीण णिव्वत्तणोवलंभादो।

*** जाओ संगहकिट्टीअंतरेसु तासिं जहा किट्टीकरणे अपुव्वाणं णिव्वत्तिज्जमाणियाणं किट्टीण विधी, तहा कायव्वो।**

§ ६४५ तत्थ ताव जाओ संगहकिट्टीओ अंतरेसु ओकड्डिज्जमाणपदेसग्गेणापुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तिज्जंति परूवणाए जो किट्टीकरणे अपुव्वाणं णिव्वत्तिज्जमाणाणं किट्टीणं विधी पुव्वपरूविदो सो चेव णिरवसेसमेत्थाणुगंतव्वो, बज्झमाणपदेसग्गस्स उट्टकूडसेढीआगारेण णिसेगपरूवणं पडि तत्तो भेदाणुवलंभादो। एदं च उट्टकूडसेढिसामण्णावेक्खाए विसेसो णत्थि त्ति भणिदं। अत्थदो पुण ओइज्जमाणे तेण विधिणा सरिसो विधी एत्थ ण होदि, थोवयरविसेससंभवादो। तं कधं ? किट्टीकरणद्धाए पढमसमयम्मि किट्टीसरूवेण परिणदपदेसपिंडादो विदिय समयम्मि किट्टीसु णिसिंचमाणपदेसपिंडो असंखेज्जगुणो भवदि। तदियसमये तासु णिसिंचमाण

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि अपकर्षित किये गये समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यसे ही संग्रह कृष्टियोंके नीचे अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं।

*** कृष्टि-अन्तरालोंमें जो अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं वे असंख्यातगुणी हैं।**

§ ६४४ ये अपूर्व कृष्टियाँ भी पूर्व कृष्टियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं, किन्तु द्रव्यविशेषके कारण पूर्व कृष्टियोंसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं, क्योंकि अपकर्षित किये गये समस्त द्रव्यके असंख्यातासंख्यातवें भागमात्र द्रव्यको ग्रहण कर कृष्टि अन्तरालोंमें अपूर्व कृष्टियोंका उत्पन्न होना पाया जाता है।

*** संग्रह कृष्टि-अन्तरालोंमें जो अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं उनकी कृष्टिकरणमें निष्पद्यमान अपूर्व कृष्टियोंकी जो विधि कही गयी है वही विधि यहाँ करनी चाहिए।**

§ ६४५ वहाँ जो संग्रह कृष्टियाँ हैं उनके अन्तरालोंमें अपकृष्यमाण प्रदेशपुंजसे जो अपूर्व कृष्टियाँ निपजती हैं, कृष्टिकरणकी प्ररूपणाके समय निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोंकी जो विधि पहले कह आये हैं वही पूरी यहाँ जाननी चाहिए, क्योंकि उष्ट्रकूटश्रेणिके आकारसे निषेकप्ररूपणाके प्रति उससे इसमें भेद नहीं पाया जाता। और यह उष्ट्रकूटश्रेणि सामान्यकी अपेक्षा भेदरूप नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। विशेषरूपसे देखनेपर तो उस विधिके सदृश यह विधि नहीं है, क्योंकि उससे इसमें थोड़ा भेद सम्भव है।

शंका—वह कैसे ?

समाधान—कृष्टिकरणकालके प्रथम समयमें कृष्टिरूपसे परिणत प्रदेशपुंजसे दूसरे समयमें कृष्टियोंमें सींचा जानेवाला प्रदेशपुंज असंख्यातगुणा होता है। तीसरे समयमें उनमें सींचा जाने-

पदेसपिंडो असखेज्जगुणो। एव समय पडि विसोहिमाहप्पेण किट्टीसु णिसिंचमाणपदेसपिंडो असखेज्जगुणो होदूण गच्छदि जाव किट्टीकरणद्धाए चरिमसमओ त्ति।

एव होदि त्ति कटटु तत्थ वट्टमाणसमयम्मि णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीण चरिम किट्टीए णिसित्तपदेसग्गादो पुव्विल्लसमयम्मि कदपुव्वकिट्टीण जहण्णकिट्टीए णिसिंचमाणपदेसग्गमसखेज्जभागहीण होइ, तत्थ पुव्वावट्ठिदव्वमत्तेण परिहीणत्तदसणादो। तत्तो अणतभाग हाणीए जहाकम गतूण पुणो पुव्विल्लसमयम्मि कदसगहकिट्टीए चरिमकिट्टिम्मि णिसित्तपदेसग्गादो वट्टमाणसमयम्मि विदियसगहकिट्टीए हेट्ठा कीरमाणापुव्वजहण्णकिट्टीए दिज्जमाणपदेसपिंड मसखेज्जभागुत्तर होइ। पुणो सेसापुव्वकिट्टीसु अणतभागहीण चेव होदूण णिवददि। एवमुवरि वि णेदव्व। दिस्समाणपदेसग्ग पुण सव्वत्थाणतभागहीण चेव होदूण चिट्ठदि। एवमेसो कमो किट्टीकरणद्धाए विदियसमयप्पहुडि जाव तिस्से चेव चरिमसमयो त्ति ताव परूविदो।

§ ६४६ किट्टीवेदगद्धाए पुण एसो विधी ण होदि। कि कारण ? किट्टीवेदगद्धाए अपुव्व किट्टीस णिसिच्चमाणपदेसग्ग पुव्वकिट्टीपदेसपिंडस्स असखेज्जदिभागमेत्त चेव होइ। तेण किट्टी वेदगद्धाए पढमसमये णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीण चरिमकिट्टीए णिवदिदे पदेसग्गादो पुव्वकिट्टीणं जहण्णकिट्टीए पदमाण पदेसग्गमसखेज्जगुणहीणं होइ, अण्णहा पुव्वापुव्वकिट्टीण सधीसु एयगोवुच्छ भावाणुप्पत्तीदो। तदो एवविहविसेससभवपदसणट्ठमेत्थ सेढिपरूवण कस्सामो। त जहा—

वाला प्रदेशपुज उससे असख्यातगुणा है। इस प्रकार प्रत्येक समयमे विशुद्धिके माहात्म्यवश कृष्टियोमे सीचा जानेवाला प्रदेशपुज असख्यातगुणा होकर कृष्टिकरणकालके अन्तिम समय तक जाता है।

इस प्रकार होता है ऐसा करके वहाँ वर्तमान समयमे निर्वर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोकी अन्तिम कृष्टिमे निक्षिप्त किये गये प्रदेशपुजसे पिछले समयमे की गयी पूर्व कृष्टियोकी जघन्य कृष्टिमें निक्षिप्यमान प्रदेशपुज असख्यातभागहीन होता है क्योकि उसमे पूर्वके अवस्थित द्रव्यमात्रसे हीनता देखी जाती है। पुन वहाँसे अनन्त भागहानिके क्रमसे यथाक्रम जाकर पुन पिछले समयमे की गयी सग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिमें निक्षिप्त किये गये प्रदेशपुजसे वर्तमान समयमे दूसरी सग्रह कृष्टिके नीचे की जानेवाली अपूर्व जघन्य कृष्टिमें दिया जानेवाला प्रदेशपुज असख्यातवाँ भाग अधिक होता है। पुन शेष अपूर्व कृष्टियोमे अनन्तभागहीन ही होकर पतित होता है। इसी प्रकार आगे भी ले जाना चाहिए। परन्तु दृश्यमान प्रदेशपुज सर्वत्र अनन्तभागहीन होकर ही अवस्थित रहता है। इस प्रकार यह क्रम कृष्टिकरणकालके दूसरे समयसे लेकर उसीके अन्तिम समय तक कहा गया है।

§ ६४६ परन्तु कृष्टिवेदककालमे यह विधि नही होती है, क्योकि कृष्टिवेदककालमे अपूर्व कृष्टियोमे सिंचित होनेवाला प्रदेशपुज पूर्व कृष्टियोके प्रदेशपुजका असख्यातवाँ भागमात्र ही होता है। इस कारण कृष्टिवेदककालके प्रथम समयमे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोकी अन्तिम कृष्टिमें पतित होनेपर प्रदेशपुजसे पूर्व कृष्टियोकी जघन्य कृष्टिमे पतित होनेवाला प्रदेशपुज असंख्यातगुणा हीन होता है, अन्यथा पूर्व और अपूर्व कृष्टियोकी सन्धियोमे एक गोपुच्छापनेकी उत्पत्ति नही हो सकती। इसलिए इस प्रकारके विशेषकी सम्भावनाको दिखलानेके लिए यहाँपर श्रेणिप्ररूपणा करेंगे। वह जैसे—

§ ६४७ पुव्वाणुपुव्वीए जा लोभस्स पढमसंगहकिट्टी तिस्से हेट्ठा पढमसमयकिट्टीवेदगो अपुव्वाओ किट्टीओ ओकड्डिज्जमाणेण पदेसग्गेण णिव्वत्तेमाणो तत्थ जा जहण्णिया किट्टी तिस्से बहुग पदेसग्ग देदि । तत्तो अणंतभागहीण जाव अपुव्वाणं चरिमकिट्टि त्ति । तदो अपुव्वकिट्टीणं चरिमकिट्टीए पदिदपदेसग्गादो लोभपढमसगहकिट्टीए पुव्वकिट्टीण जा जहण्णिया किट्टी तत्थ असखेज्जगुणहीण देदि । तत्तो बिदियाए पुव्वकिट्टीए अणंतभागहीण देदि । एव णेदव्व जाव पढमसगहकिट्टीए चरिमकिट्टी त्ति ।

§ ६४८ पुणो तिस्से सगहकिट्टीए चरिमकिट्टिम्मि पदिदपदेसग्गादो बिदियसगहकिट्टीए हेट्ठा णिव्वत्तिज्जमाणियाणमपुव्वकिट्टीण जहण्णियाए किट्टीए असंखेज्जगुण देदि । एत्थ कारण सुगम । तदो उवरि अणतभागहीण णिसिचदि जाव अपुव्वाण चरिमकिट्टी त्ति । पुणो अपुव्वाण चरिमकिट्टीए णिसित्तपदेसग्गादो पुव्वणिव्वत्तिदाण बिदियसगहकिट्टीए अतरकिट्टीणं जा जहण्ण-किट्टी तिस्से पदेसपिंडमसखेज्जगुण देदि । तत्तो उवरिमाए पवमाण पदेसपिडमणतभागहीण होदूण गच्छदि । णवरि किट्टीअतरेसु णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीण सधीसु पदेसविण्णासभेदो जाणियव्वो । एवमेसो भणिदविही उवरि वि जाणियूण णेदव्वो ।

§ ६४९ एव किट्टीवेदगबिदियादिसमएसु वि णिसेगपरूवणमेवमणुगतव्व । सुत्ते पुण एवविहो विसेससभवो ण विवक्खिओ, एक्कारसण्ह सगहकिट्टीण हेट्ठा पादेक्क पुव्वकिट्टीण-मसखेज्जदिभागमेत्तवव्वमोकड्डियूण पुव्वकिट्टीणमसखेज्जदिभागमेत्तीओ अपुव्वकिट्टीओ करेमाणो

---

§ ६४७ पूर्वानुपूर्वीकी अपेक्षा जो लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टि है उससे नीचे प्रथम समयमे कृष्टिवेदक जीव अपकृष्यमाण प्रदेशपुजसे अपूव कृष्टियोका निपजाता हुआ वहाँ जो जघन्य कृष्टि है उसमे बहुत प्रदेशपुजको देता है । उसके बाद अन्तिम अपूव कृष्टिके प्राप्त होने तक उत्तरोत्तर अन तगुणे हीन प्रदेशपुजको देता है । तत्पश्चात् अपूव कृष्टियोकी अन्तिम कृष्टिके प्रदेशपुजसे लोभ-की प्रथम सग्रह कृष्टिमे जो पूव कृष्टियोकी जघन्य कृष्टि होती है उसमे असख्यातगुणा हीन प्रदेशपुज देता है। उससे दूसरी पूव कृष्टिमें अन तभागहीन प्रदेशपुज देता है । इस प्रकार प्रथम सग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टि तक ले जाना चाहिए ।

§ ६४८ पुन उस सग्रह कृष्टिकी अन्तिम कृष्टिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपुजसे दूसरी सग्रह कृष्टिके नीचे निवत्यमान अपूव कृष्टियोकी जघन्य कृष्टिमे असंख्यातगुणे प्रदेशपुजको देता है । यहाँ कारण का निर्देश सुगम है । उससे ऊपर अनन्तभागहीन प्रदेशपुजका अपूर्व कृष्टियोकी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक सिचन करता है । पुन अपूर्व कृष्टियाकी अन्तिम कृष्टिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपुजसे दूसरी संग्रह कृष्टिकी पहले निष्पन्न हुई अन्तर कृष्टियोकी जो जघन्य कृष्टि है उसमे असंख्यातगुणे प्रदेशपुजको देता है । उससे ऊपर कृष्टियोमें पतित होनेवाला प्रदेशपिण्ड अनन्तभागहीन होकर जाता है । इतनी विशेषता है कि कृष्टि-अन्तरालोमे निर्वत्यमान अपूर्व कृष्टियोकी सन्धियोंमें प्रदेशोके विन्यासमें फरकको जान लेना चाहिए । इस प्रकार यह कही गयी विधि आगे भी जानकर ले जाना चाहिए ।

§ ६४९ इस प्रकार कृष्टिवेदकके द्वितीयादि समयोमें भी यह निषेकप्ररूपणा जाननी चाहिए । परन्तु सूत्रमें इस प्रकारका विशेष सम्भव विवक्षित नही है, किन्तु ग्यारह सग्रह कृष्टियोंके

---

१ ता प्रतौ उवरि पमाण इति पाठ ।

किट्टीकारगोव्व उट्टकूडसेढीए तत्थ पदेसविण्णासमेसो करेदि त्ति एत्तियं चेव पेक्खियूण भणिदत्तादो। संपहि जाओ किट्टीओ अंतरेसु संकामिज्जमाणयेण पदेसग्गेण अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तिज्जंति तासिं परूवणा केरिसी होदि त्ति आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

*** जाओ किट्टीअंतरेसु तासिं जहा बज्झमाणयेण पदेसग्गेण अपुव्वाणं णिव्वत्तिज्जमाणियाण किट्टीण विधी तहा कायव्वो।**

§ ६५० जहा बज्झमाणयेण पदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणाओ अपुव्वकिट्टीओ असंखेज्जाणि किट्टीअंतराणि गंतूण णिव्वत्तिज्जंति, एवमेदाओ वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि किट्टीअंतराणि समुल्लंघियूण णिव्वत्तिज्जंति, तत्थ दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणा वि तहा चेव अणुगंतव्वा, विसेसाभावादो त्ति भणिदं होदि। संपहि एत्थतणविसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरं सुत्तमाह—

*** णवरि थोवदरगाणि किट्टीअंतराणि गंतूण संछुब्भमाणपदेसग्गेण अपुव्वा किट्टी णिव्वत्तिज्जमाणिगा दिस्सदि।**

§ ६५१ तत्थ असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि समुल्लंघियूण एगा अपुव्वकिट्टी बंधेण णिव्वत्तिज्जदि त्ति पदुप्पाइदं, एत्थ पुण पलिदोवमवग्गमूलादो वि असंखेज्जगुणहीणाणि थोवयराणि चेव किट्टीअंतराणि गंतूण संकामिज्जमाणयेण पदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणा अपुव्वा

नीचे अलग अलग पूर्व कृष्टियोंके असंख्यातवें भागमात्र द्रव्यका अपकर्षण करके पूर्व कृष्टियोंके असंख्यातवें भागमात्र अपूर्व कृष्टियोंको करनेवाले कृष्टिकारकके समान उष्ट्रकूटश्रेणिरूपसे उनमें प्रदेशविन्यासको यह करता है, मात्र इतना ही देखकर यह कहा है। अब जिन कृष्टियोंके अन्तरालोंमें संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजसे अपूर्व कृष्टियोंको निष्पन्न करता है उनकी प्ररूपणा किस प्रकारकी होती है ऐसी आशंका होनेपर निर्णयका विधान करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

*** जो अपूर्व कृष्टियाँ कृष्टि अन्तरालोंमें निष्पन्न की जाती हैं उनकी बध्यमान प्रदेशपुंजसे निर्वर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोंकी जिस प्रकारकी विधि की गयी है उस प्रकारका विधान यहाँ करना चाहिए।**

§ ६५० जिस प्रकारके बध्यमान प्रदेशपुंजसे निर्वर्त्यमान अपूर्व कृष्टियाँ असंख्यात कृष्टि अन्तराल जाकर निष्पन्न की जाती हैं इस प्रकार ये कृष्टियाँ भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टि अन्तरालोंको उल्लंघन कर निष्पन्न की जाती हैं तथा वहाँ दीयमान प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा भी उसी प्रकार जाननी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब यहाँपर प्राप्त होनेवाले विशेषका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

*** इतनी विशेषता है कि स्तोकतर कृष्टि अन्तराल जाकर संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजसे अपूर्व कृष्टि निर्वर्त्यमान होती हुई दिखाई देती है।**

§ ६५१ वहाँ पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंको उल्लंघन कर एक अपूर्व कृष्टि बन्धसे निष्पन्न होता है ऐसा कहा गया है। परन्तु यहाँपर पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे भी असंख्यातगुण हीन स्तोकतर कृष्टि अन्तर जाकर ही संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजसे निर्वर्त्यमान अपूर्व

किट्टी वट्टव्वा त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ। तत्थ दिवड्ढगुणहाणि तिभागमेत्तद्धाणं गंतूण एक्किस्से अपुव्वकिट्टीए णिव्वत्तिदंसणादो। एत्थ पुण ओकड्डुक्कड्डणभागहारमेत्तद्धाणं गंतूण एक्केक्काए अपुव्वकिट्टीए णिव्वत्तिदंसणादो। तं जहा—

§ ६५२ एगसमयपबद्धं ठविय पुणो एदस्स दिवड्ढगुणहाणिमेत्तगुणगारं ठवेयूण एदस्स हेट्ठा तिण्णि रूवाणि भागहारत्तेण ठवेयव्वाणि। एवं ठविदे जस्स वा तस्स वा एगकसायस्स एगसंगह-किट्टीपदेसग्गमागच्छदि। संपहि एवंविहदव्वस्स जदि सयलकिट्टीअद्धाणं लब्भइ तो एगसमय-पबद्धमेत्तणवकबंधदव्वस्स केत्तियाओ अपुव्वकिट्टीओ लहामो त्ति तेरासियं कादूण पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए $\frac{12}{3}$ | ९ | १ दिवड्ढगुणहाणितिभागेण एगसंगहकिट्टीअद्धाणं खंडेयूणेगखंडमेत्तीओ अपुव्वकिट्टीओ बंधेण णिव्वत्तिज्जमाणाओ आगच्छंति। एदासिं तेरासियविहाणेणद्धाणं साहेयव्वं, तस्सेसा ठवणा $\frac{9}{4}$ | ९ | १ एवं ठविय तेरासियकमेणोवट्टेदूण साहिदद्धाणमेत्तियं होइ ४। एदं च असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणमिदि घेत्तव्वं, दिवड्ढगुणहाणितिभागपमाणत्तादो।

§ ६५३ संपहि ओकड्डियूण गहिदपदेसग्गमस्सियूण भण्णमाणे एगसमयपबद्धं ठविय पुणो

कृष्टि जानना चाहिए इस प्रकार यह यहाँपर सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। वहाँ डेढ़ गुणहानिके त्रिभागप्रमाण स्थान जाकर एक अपूर्व कृष्टिकी निष्पत्ति देखी जाती है। परन्तु यहाँपर अपकर्षण भागहारप्रमाण स्थान जाकर एक एक अपूर्व कृष्टिकी निष्पत्ति देखी जाती है। वह जैसे—

§ ६५२ एक समयप्रबद्धको स्थापित करके पुनः इसका डेढ़ गुणहानिप्रमाण गुणकार स्थापित करके इसके नीचे तीन अंक भागहाररूपसे स्थापित करने चाहिए। इस प्रकार स्थापित करनेपर जिस किसी एक कषायकी एक संग्रह कृष्टिका प्रदेशपुञ्ज आ जाता है। अब इस प्रकारके द्रव्यका यदि समस्त कृष्टि स्थान (आयाम) प्राप्त होता है तो एक समयप्रबद्धमात्र नवकबन्धके द्रव्यमें कितनी अपूर्व कृष्टियाँ प्राप्त करेंगे इस प्रकार त्रैराशिक करके फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित करके उसमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर डेढ़ गुणहानिके त्रिभाग १२ – ३ = ४, से एक संग्रह कृष्टिके अध्वान ९ को खण्डित करके एक खण्डप्रमाण $\frac{9}{4}$ अपूर्व कृष्टियाँ बन्धसे निवर्त्यमान होकर प्राप्त होती हैं। यहाँ इनका त्रैराशिक विधिसे अध्वान साधकर ले आना चाहिए। उसकी यह स्थापना है—$\frac{9}{4}$, ९, १। इस प्रकार स्थापित करके त्रैराशिकक्रमसे अपवर्तन करके साधित हुआ अध्वान इतना होता है—४। और यह पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि यह डेढ़ गुणहानिके त्रिभागप्रमाण है।

उदाहरण—अंकसंदृष्टिके अनुसार डेढ़ गुणहानि = १२, संग्रह कृष्टि अध्वान ९, डेढ़ गुणहानि का त्रिभाग ४।

यहाँ एक संग्रह कृष्टिके अध्वान ९ में डेढ़ गुणहानिके त्रिभागसे भाजित करनेपर एक संग्रह कृष्टि अध्वानके भीतर $\frac{9}{4}$ प्रमाण अपूर्व कृष्टियाँ प्राप्त हुईं। पुनः यहाँ एक अपूर्व कृष्टिका अध्वान प्राप्त करनेपर एक संग्रह कृष्टिके अध्वान ९ में अपूर्व कृष्टियों $\frac{9}{4}$ का भाग देनेपर $\frac{9}{1} - \frac{9}{4} = ४$ एक अपूर्व कृष्टिका अध्वान प्राप्त हुआ। अर्थसंदृष्टिकी अपेक्षा देखनेपर यह पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण प्राप्त होता है ऐसा प्रकृतमें समझना चाहिए।

§ ६५३ अब अपकर्षण करके ग्रहण किये गये प्रदेशपुंजका आश्रय करके कथन करनेपर

एदस्स दिवड्ढगुणहाणिगुणगारं ठवेयूण पुणो एदस्स हेट्ठा भागहारो तिगुणोकड्डुक्कड्डुणभागहारमेत्तो ठवेयव्वो। एवं ठविदे एक्किस्से संगहकिट्टीए ओकड्डियूण गहिदसयलपदेसपिंडो आगच्छदि। संपहि एदेण दव्वेण णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीणं पमाणमिच्छामो त्ति एयसंगहकिट्टीए सयलपदेसग्गस्स जइ सयलकिट्टीओ लब्भंति, तो ओकड्डियूण गहिददव्वस्स केत्तियमेत्तीओ अपुव्वकिट्टीओ लहामो त्ति तेरासियं काढूण गहेयव्वं। तस्स संदिट्ठी ०१२ | ९ | ०१२ / ३ | | ३६

एवं तेरासियं काढूण पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धपमाणमोकड्डुक्कड्डुणभागहारेण एगसंगहकिट्टीअद्धाणं खंडिदे तत्थेयखंडमेत्तं होदि $\frac{९}{४}$। पुणो एदेण सयलकिट्टीअद्धाणे तेरासिय-विहाणेणोवट्टिदे लद्धमोकड्डुक्कड्डुणभागहारमत्तमेक्किस्से अपुव्वकिट्टीए लब्भमाणकिट्टीअंतरद्धाणमागच्छदि। तस्स संदिट्ठी ६। तदो थोवयराणि चेव किट्टीअंतराणि गंतूण संकामिज्जमाणपदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणा अपुव्वकिट्टी दीसइ त्ति सुत्ते भणिदं।

§ ६५४ संपहि एदस्सेवद्धाणस्स फुडीकरणट्ठमुत्तरसुत्तमोइण्णं—

* ताणि किट्टीअंतराणि पगणणादो पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो।

§ ६५५ कुदो? पलिदोवमपढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणहीणस्स ओकड्डुक्कड्डुणभागहारस्स पयदद्धाणत्तेणाणंतरमेव साहियत्तादो। संपहि एवंविहद्धाणं संकामिज्जमाणपदेसग्गेण किट्टीअंतरेसु णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीणं दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणा बधेण णिव्वत्तिज्जमाणा

एक समयप्रबद्धको स्थापित करके पुनः इसके डेढ़ गुणहानिरूप गुणकारको स्थापित करके पुनः इसके नीचे तिगुने अपकर्षण उत्कर्षण भागहारप्रमाण भागहारको स्थापित करना चाहिए। इस प्रकार स्थापित करनेपर एक संग्रह कृष्टिका अपकर्षण करके ग्रहण किया गया सम्पूर्ण प्रदेशपिण्ड आता है। अब इस द्रव्यसे निर्वर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोंके प्रमाणको लाना चाहते हैं, इसलिए एक संग्रह कृष्टिके समस्त प्रदेशपिण्डको यदि समस्त कृष्टियाँ प्राप्त होती हैं तो अपकर्षण करके ग्रहण किये गये द्रव्यमें कितनी अपूर्व कृष्टियोंको प्राप्त करेंगे इस प्रकार त्रैराशिक करके उन्हें ग्रहण करना चाहिए। उनकी यह संदृष्टि है—०$\frac{१२}{३}$ ९ ०$\frac{१२}{३६}$। इस प्रकार त्रैराशिक करके फलराशिसे इच्छा राशिको गुणित करके उसमें प्रमाणराशिसे भाजित करनेपर जो प्रमाण लब्ध आता है वह अपकर्षण उत्कर्षण भागहारसे एक संग्रह कृष्टिके अध्वानके खण्डित करनेपर वहाँ प्राप्त हुआ एक खण्डप्रमाण होता है $\frac{९}{४}$। पुनः इससे समस्त कृष्टि अध्वानको त्रैराशिक विधिसे भाजित करनेपर अपकर्षण उत्कर्षण भागहारप्रमाण एक अपूर्व कृष्टिका प्राप्यमाण कृष्टि अन्तररूप अध्वान लब्ध आता है। उसकी संदृष्टि ६। इसलिए स्तोकतर कृष्टि अन्तराल जाकर ही संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजसे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टि दिखाई देती है ऐसा सूत्रमें कहा है।

§ ६५४ अब इसी अध्वानको स्पष्ट करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

* वे कृष्टि अन्तर प्रगणनाके अनुसार पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं।

§ ६५५ क्योंकि पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यातगुणा हीन अपकर्षण उत्कर्षण भागहार-प्रमाण प्रकृत अध्वान है यह अनन्तर पूर्व ही साधित कर आये हैं। अब इस प्रकारके अध्वानमें संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजसे कृष्टि अन्तरालोंमें निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोंमें दीयमान प्रदेशपुंजकी

पुव्वकिट्टीणं भणिदविहाणेण णेदव्वा। णवरि संगहकिट्टीए हेट्ठा णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीसु पुव्वुत्तेण कमेण पदेसणिसेगं कादूण तदो अपुव्वाण चरिमकिट्टीदो पुव्वजहण्णकिट्टीए असंखेज्ज-गुणहीणं पदेसग्गं णिसिंचदि। तत्तो अणंतभागहीणं जाव ओकड्डुक्कड्डणभागहारमेत्तद्धाणमुवरि चडिदूण ट्ठिदतदित्थपुव्वकिट्टि त्ति। तदो तत्थ किट्टीअंतरे णिव्वत्तिज्जमाणापुव्वकिट्टीए असंखेज्जगुणं, तदो असंखेज्जगुणहीणं, तत्तो परमणंतभागहीणमिच्चादिकमेण संधीओ जाणियूण णेदव्वं जाव णिरुद्धसंगहकिट्टीए समत्ता त्ति। एत्तो उवरिमसंगहकिट्टीसु वि एदेणेव विहाणेण सेढिपरूवणा कायव्वा।

§ ६५६ अथवा संतकम्मस्स असंखेज्जदिभागभूदणवकबंधपदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणाणम पुव्वकिट्टीणं जहा अणंतगुणहीणं अणंतगुणहीणकमेण सेढिपरूवणा सुत्तणिबद्धा कया एवमेत्थ चिराण संतकम्मादो असंखेज्जगुणहीणसंकामिज्जमाणपदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणाणमपुव्वकिट्टीणं दुविहाण पि संधीसु अणंतगुणहीणाहियकमेण सेढिपरूवणा णिव्वामोहमणुगंतव्वा, एदस्सेवत्थस्स सुत्ताणु-सारित्तेण पहाणभावोवलंभादो। एवमेसा किट्टीवेदगस्स पढमसमये सव्वा परूवणा विदियादि समयेसु वि एव चेव वत्तव्वा, विसेसाभावादो। संपहि किट्टीवेदगपढमसमयप्पहुडि समये समये विणासिज्जमाणाण किट्टीण थोवबहुत्तपरूवणट्ठमुवरिमपबंधमाढवेइ—

*** पढमसमयकिट्टीवेदगस्स जा कोहपढमसंगहकिट्टी तिस्से असंखेज्जदिभागो विणासिज्जदि।**

श्रेणिप्ररूपणाको बध्यमान निवर्त्यमान पूर्व कृष्टियोकी कही गयी विधिके अनुसार ले जाना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सग्रह कृष्टिके नीचे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोमे पूर्वोक्त क्रमके अनुसार प्रदेशनिषेक करके वहाँसे अपूर्व कृष्टियोकी अन्तिम कृष्टिसे पूर्व जघन्य कृष्टिमे असख्यातगुणे हीन प्रदेशपुजको सीचता है। पुन वहाँसे अपकर्षण उत्कर्षण भागहारमात्र अध्वान ऊपर चढ़कर वहाँ-पर स्थित हुई पूर्व कृष्टिके प्राप्त होने तक असंख्यात भागहीन प्रदेशपुंजको निक्षिप्त करता है। तत्पश्चात् वहाँ कृष्टि अन्तरालमे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टिमे असख्यातगुणे प्रदेशपुजको निक्षिप्त करता है। तत्पश्चात् असंख्यातगुणे हीन प्रदेशपुजको निक्षिप्त करता है। तत्पश्चात् अनन्त भागहीन प्रदेशपुजको निक्षिप्त करता है। इस प्रकार इत्यादि क्रमसे सन्धियोको जानकर विवक्षित सग्रह कृष्टिकी समाप्ति तक ले जाना चाहिए। इससे उपरिम सग्रह कृष्टियोमे भी इसी विधानके अनुसार श्रेणिप्ररूपणा करनी चाहिए।

§ ६५६ अथवा सत्कर्मके असंख्यातवे भागप्रमाण नवकबन्धके प्रदेशपुजसे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोको जिस प्रकार अनन्तगुणहीन अनन्तगुणहीनके क्रमसे सूत्रमें निबद्ध श्रेणिप्ररूपणा की उसी प्रकार यहाँ चिरकालीन सत्कमसे असख्यातगुणहीन संक्रम्यमाण प्रदेशपुजसे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोकी दोनोकी ही सन्धियोमे अन तगुणहीन अधिकके क्रमसे श्रेणिप्ररूपणा व्यामोहको छोड़कर करनी चाहिए, क्योकि सूत्रके अनुसार यही अर्थ प्रधानरूपसे उपलब्ध होता है। इस प्रकार कृष्टिवेदकके प्रथम समयकी यह सम्पूर्ण प्ररूपणा द्वितीयादि समयोमें भी इसी प्रकार कहनी चाहिए, क्योकि उससे इसमे कोई भेद नही है। अब कृष्टिवेदकके प्रथम समयसे लेकर प्रत्येक समयमें विनश्यमान कृष्टियोके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेके प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

*** कृष्टिवेदकके प्रथम समयमे जो क्रोधसंज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टि है उसका असंख्यातवाँ भाग विनष्ट होता है।**

§ ६५७ विसोहिपाहम्मेण णिरुद्धसंगहकिट्टीए अग्गकिट्टिप्पहुडि असंखेज्जदिभागमेत्तकिट्टीओ अणुसमयोवट्टणाघादेण विणासेदि त्ति वुत्तं होदि। एदाओ च पढमसमये विणासिज्जमाणकिट्टीओ उवरिमासेससमएसु विणासिज्जमाणकिट्टीहिंतो बहुगीओ त्ति जाणावणट्ठमिदमाह—

* किट्टीओ जाओ पढमसमये विणासिज्जंति ताओ बहुगीओ।

§ ६५८ कुदो? सयलकिट्टीणमसंखेज्जदिभागपमाणत्तादो।

* जाओ विदियसमये विणासिज्जंति ताओ असंखेज्जगुणहीणाओ।

§ ६५९ जइ वि विदियसमये अणंतगुणविसोहीए वड्ढदि तो वि पढमसमये विणासिज्जमाणकिट्टीहिंतो असंखेज्जगुणहीणाओ चेव किट्टीओ तम्मि समये विणासेदि, घादिदसेसाणुभागघादहेदूण विसोहीणमेत्थतणीण तहा चेव पवुत्तिणियमदंसणादो। एवं तदियादिसमयेसु वि एसो चेव अणुसमयोवट्टणाकमो णेदव्वो त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* एवं ताव दुचरिमसमयअविणट्ठकोहपढमसंगहकिट्टि त्ति।

§ ६६० एवमसंखेज्जगुणहीणकमेण ताव किट्टीओ सगकिट्टीवेदगकालब्भंतरे विणासेमाणो गच्छदि जाव सगविणासणद्धादुचरिमसमओ त्ति, चरिमसमए अविणट्ठकोहपढमसंगहकिट्टीणवक- बंधुच्छिट्ठावलियवज्जाणमणुप्पादाणुच्छेदसरूवेण विणासदंसणादो। संपहि किट्टीवेदगपढमसमय

§ ६५७ विशुद्धिके माहात्म्यवश विवक्षित संग्रह कृष्टिकी अग्र कृष्टिसे लेकर असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टियोंको अनुसमय अपवर्तनाघात द्वारा विनष्ट करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और प्रथम समयमें विनश्यमान ये कृष्टियाँ अगले समयोंमें विनश्यमान कृष्टियोंसे बहुत हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* जो कृष्टियाँ प्रथम समयमें विनाशको प्राप्त होती हैं वे बहुत हैं।

§ ६५८ क्योंकि वे समस्त कृष्टियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

* जो कृष्टियाँ प्रथम समयमें विनाशको प्राप्त होती हैं वे असंख्यातगुणी हीन हैं।

§ ६५९ यद्यपि दूसरे समयमें यह क्षपक अनन्तगुणी विशुद्धिसे वृद्धिको प्राप्त होता है तो भी प्रथम समयमें विनश्यमान कृष्टियोंसे असंख्यातगुणी हीन कृष्टियोंको ही उस समयमें विनष्ट करता है क्योंकि घात होनेसे शेष रहे अनुभागघातके हेतुरूप यहाँ सम्बन्धी विशुद्धियोंका उसी प्रकारसे ही प्रवृत्तिका नियम देखा जाता है। इसी प्रकार तृतीय आदि समयोंमें भी इसी प्रकार अनुसमय अपवर्तनाका क्रम जानना चाहिए इस बातका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इसी प्रकार यह क्रम अविनष्ट क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिके द्विचरम समय तक जानना चाहिए।

§ ६६० इस प्रकार असंख्यातगुणहीन क्रमसे कृष्टियोंको अपने वेदक कालके भीतर विनष्ट करता हुआ अपने विनाश करनेके कालके द्विचरम समय तक जाता है, क्योंकि चरम समयमें विनाशको नहीं प्राप्त हुए क्रोधसंज्वलनको प्रथम संग्रह कृष्टिसम्बन्धी नवकबन्ध उच्छिष्टावलिके सिवाय शेषका अनुत्पादानुच्छेदस्वरूपसे विनाश देखा जाता है। अब कृष्टिवेदकके प्रथम समयसे

प्पहुडि जाव णिरुद्धपढमसंगहकिट्टीए विणासणकालदुचरिमसमओ त्ति ताव विणासिदासेसकिट्टीओ संपिंडिदाओ केत्तियमेत्तीओ होंति त्ति आसंकाए तप्पमाणावहारणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

*** एदेण सव्वेण तिचरिमसमयमेत्तीओ सव्वकिट्टीसु पढम-बिदियसमयवेदगस्स कोधस्स पढमकिट्टीए अवज्झमाणियाणं किट्टीणमसंखेज्जदिभागो ।**

§ ६६१ पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोहपढमसंगहकिट्टीए हेट्ठिमोवरिमासंखेज्जभागमेत्ता किट्टीओ अबज्झमाणियाओ णाम । पुणो तत्थ उवरिमाबज्झमाणकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्तीओ चेव किट्टीओ एदेण सव्वेण वि कालेण विणासिदाओ दट्ठव्वाओ, दोण्हमेदासिं किट्टीणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताविसेसे वि एत्तो तासिमसंखेज्जगुणत्तसिद्धीए परमागमुज्जोवबलेण परिच्छिण्णत्तादो । जहा कोहपढमसंगहकिट्टीमहिकिच्च एसो किट्टीविणासणकमो परूविदो, तहा चेव सेससंगहकिट्टीण समये समये अणुगंतव्वो, किट्टीवेदगपढमसमयप्पहुडि जाव अप्पप्पणो वेदगकाल दुचरिमसमओ त्ति सव्वासिं संगहकिट्टीणमवेदगकालस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकिट्टीओ अणुसमयो वट्टणाघादेण घादेमाणस्स तदविरोहाभावादो । एवमेदेण विहाणेण कोहपढमसंगहकिट्टीवेदगस्स मणुभूय तिस्से चरिमसमयवेदगभावेण पयट्टमाणस्स तदवत्थाए जो परूवणाभेदो तण्णिद्देसकरणट्ठ मुवरिमो सुत्तपबंधो—

लेकर विवक्षित प्रथम संग्रह कृष्टिके विनाश होनेके द्विचरम समय तक विनष्ट हुई अशेष कृष्टियाँ मिलाकर कितनी होती हैं ऐसी आशंका होनेपर उनके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

*** इस सब कालके द्वारा जो त्रिचरम समयमात्र कृष्टियाँ विनाशको प्राप्त होती हैं वे सम्पूर्ण कृष्टियोंमें प्रथम समय वेदकके और द्वितीय समय वेदकके क्रोधसंज्वलनको प्रथम कृष्टि-सम्बन्धी अबध्यमान कृष्टियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं।**

§ ६६१ प्रथम समयसम्बन्धी कृष्टिवेदकके क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रहकृष्टिके नीचे और ऊपर असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टियाँ अबध्यमान होती हैं। पुन उनमे उपरिम अबध्यमान कृष्टियोंके असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टियाँ ही इस सब कालके द्वारा विनष्ट होती हुई जाननी चाहिए, क्योंकि इन दोनों प्रकारकी कृष्टियोंमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाणकी अपेक्षा विशेषता न होनेपर भी इनसे उनके असंख्यातगुणेपनेकी सिद्धि परमागमरूप उद्योतके बलसे जानी जाती है। जिस प्रकार क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिको अधिकृत कर यह कृष्टियोंके विनाश होनेका क्रम कहा है उसी प्रकार शेष संग्रह कृष्टियोंका प्रत्येक समयमें जानना चाहिए, क्योंकि कृष्टिवेदकके प्रथम समयसे लेकर अपने अपने वेदककालके द्विचरम समय तक सम्पूर्ण संग्रह कृष्टियोंके अवेदक कालके असंख्यातवें भागप्रमाण कृष्टियोंका अनुसमय अपवर्तनाघातके द्वारा घात करते हुए वैसे होनेमे विरोधका अभाव है। इस प्रकार इस विधानसे क्रोधकी प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदनका अनुभव करके उसका अन्तिम समयमें वेदन करनेमें प्रवृत्त हुए क्षपकके उस अवस्थामे जो प्ररूपणा भेद है उसका निर्देश करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

*** क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपकके जो प्रथम स्थिति होती है उस प्रथम स्थितिके एक समय अधिक एक आवलि शेष रहनेपर इस समय जो विधि होती है उस विधिको बतलावेंगे।**

*** कोहस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए समयाहियाए आवलियाए सेसाए एदम्हि समये जो विही त विहिं वत्तइस्सामो ।**

§ ६६२ पढमसमयकिट्टीवेदगो कोहसजलणपढमसंगहकिट्टीए अवयवकिट्टीओ ओकड्डियूण पढमट्ठिदिं कुणमाणो तत्तोप्पहुडि जो कोहवेदगद्धा तिस्से सादिरेयतिभागमेत्तमावलियब्भहियं कादूण पढमट्ठिदिं करेदि । एव णिक्खित्ता जा कोहपढमट्ठिदी कोहपढमकिट्टिं वेदेमाणस्स पढमट्ठिदी सा कमेण वेदिज्जमाणा जाधे समयाहियावलियमेत्ता परिसेसा ताधे कोहपढमसगहकिट्टीए चरिमसमयवेदगो जायदे । एदम्मि अवत्थतरे वट्टमाणस्सेदस्स जो परूवणाभेदो तमिदाणिं वत्तइस्सामो त्ति भणिद होइ ।

*** त जहा ।**

§ ६६३ सुगमं ।

*** ताधे चेव कोहस्स जहण्णगो ट्ठिदिउदीरगो ।**

§ ६६४ समयाहियावलियमेत्तणिरुद्धपढमट्ठिदीए चरिमट्ठिदिमोकड्डियूण उदये सछुहमाणस्स तस्स तम्मि समये कोहसजलणस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा जादा त्ति एसो एदस्स भावत्थो। ण च एत्थ विदियट्ठिदीए उदीरणासभवो, हेट्ठा चेव आवलिय पडिआवलियसेसपढमट्ठिदीए वट्टमाणस्स आगाल पडिआगालवोच्छेदवसेण तहाविहसभवाणुवलभादो ।

*** कोहपढमकिट्टीए चरिमसमयवेदगो जादो ।**

---

§ ६६२ प्रथम समयवर्ती कृष्टिवेदक जीव क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टियोका अपवतन करके प्रथम स्थितिको करता हुआ वहाँसे लेकर जो क्रोध वेदककाल है उसकी एक आवलि अधिक कालको साधिक त्रिभागमात्र करके प्रथम स्थिति करता है। इस प्रकार निक्षिप्त हुई जो क्रोधकी प्रथम स्थिति है अर्थात् क्रोधकी प्रथम कृष्टिका वेदन करनेवाले की प्रथम स्थिति है वह क्रमसे वेदनमे आती हुई जिस समय एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण शेष रहती है उस समय क्रोधकी प्रथम सग्रह कृष्टिका अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है। और इस अवस्थाके मध्य विद्यमान इसकी प्ररूपणामे जो भेद होता है उसे इस समय बतलावेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

*** यह जैसे ।**

§ ६६३ यह सूत्र सुगम है ।

*** उसी समय यह क्षपक क्रोधसज्वलनका जघन्य स्थिति उदीरक होता है ।**

§ ६६४ एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण विवक्षित प्रथम स्थितिकी अन्तिम स्थितिका अपकषण करके उदयमे निक्षिप्त करनेवाल उस क्षपकके उस समय क्रोधसज्वलनकी जघन्य स्थिति उदीरणा होती है यह इस सूत्रका भावाथ है । कि तु यहाँपर द्वितीय स्थितिकी उदीरणा सम्भव नही है, क्योकि इसके पहले ही आवलि और प्रत्यावलिप्रमाण प्रथम स्थितिमे विद्यमान इस क्षपकके आगाल और प्रत्यगालकी व्युच्छित्ति हो जानेके कारण उस प्रकारका होना सम्भव नही है ।

*** तथा उस समय क्रोधकी प्रथम कृष्टिका अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है ।**

§ ६६५ से कालप्पहुडि कोहविदियसंगहकिट्टीवेदणभावेण परिणमणदंसणादो त्ति वुत्तं होइ [२]

* जा पुव्वपवत्ता संजलणाणुभागसंतकम्मस्स अणुसमयमोवट्टणा सा तहा चेव[३]

§ ६६६ किट्टीवेदगपढमसमयप्पहुडि जा पुव्वपवत्ता चदुसंजलणाणुभागस्स अणुसमयो-वट्टणा सा तहा चेव एण्हिं पि पयट्टदे, ण तत्थ किंचि णाणत्तमत्थि त्ति भणिदं होदि। एत्थ सुत्तसमत्तीए तिण्हमंकविण्णासो कदो, तदिओ एसो परूवणाभेदो एत्थ जाणेयव्वो त्ति पदुप्पायणट्ठं।

* चदुसंजलणाणं ट्ठिदिबंधो बे मासा, चत्तालीसं च दिवसा अंतोमुहुत्तूणा [४]

§ ६६७ पुव्वं किट्टीवेदगपढमसमये संपुण्णचत्तारिमासमेत्तो एदेसिं ट्ठिदिबंधो, तत्तो जहाकमं संखेज्जसहस्समेत्तेहिं ठिदिबंधोसरणेहिं ओहट्टियूण एण्हिमंतोमुहुत्तूणचत्तालीसदिवसाहिय बे मासमेत्तो संवुत्तो त्ति वुत्तं होइ। एत्थ चत्तारिमासमेत्तपुव्वुत्तसंधिविसयट्ठिदिबंधादो परिहीणा-सेसट्ठिदिपमाणं वीसदिवसा अंतोमुहुत्तब्भहिया त्ति दट्ठव्वं, तिण्हं कोहसंगहकिट्टीणं वेदगकालेण जदि दोण्हं मासाणं परिहाणी लब्भदि, तो एक्किस्से पढमसंगहकिट्टीए वेदगकालम्मि केत्तिय ठिदिबंधपरिहाणिं पेच्छामो त्ति तेरासियकमेण पयदट्ठिदिबंधपरिहाणी साहेयव्वा। तदो चउत्थमेदमावासयमिहावगंतव्वमिदि सिद्धं।

* संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं छ वस्साणि अट्ठ च मासा अंतोमुहुत्तूणा [५]

---

§ ६६५ तथा तदनन्तर समयसे लेकर क्रोधकी द्वितीय संग्रह कृष्टिके वेदकरूपसे परिणमन देखा जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। २।

* संज्वलनचतुष्कके अनुभागसत्कर्मकी जो अनुसमय अपवर्तना पहले प्रवृत्त हुई थी वह उसी प्रकारसे प्रवृत्त रहती है। ३।

§ ६६६ कृष्टिवेदकके प्रथम समयसे लेकर चारों संज्वलनोंके अनुभागकी जो अनुसमय अपवर्तना पहले प्रवृत्त हुई थी वह इस समय भी उसी प्रकार प्रवृत्त रहती है। उसमें कुछ भी नानापना (भेद) नहीं होता यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर सूत्रकी समाप्तिमें तीन अंकका विन्यास किया है, उससे यह तीसरा प्ररूपणाभेद है ऐसा जानना चाहिए इस प्रकार—

* चारों संज्वलनोंका स्थितिबन्ध दो महीना और अन्तर्मुहूर्त कम चालीस दिनप्रमाण होता है। ४।

§ ६६७ पहले कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें इन कर्मोंका सम्पूर्ण चार माहप्रमाण जो स्थितिबन्ध होता था, उससे संख्यात हजार स्थितिबन्धापसरणोंके द्वारा घटकर इस समय वह अन्तर्मुहूर्त कम चालीस दिन अधिक दो माहप्रमाण हो गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर चार माह प्रमाण पूर्वोक्त संधिविषयक स्थितिबन्धसे घटी हुई सम्पूर्ण स्थितिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त अधिक बीस दिन होता है ऐसा जानना चाहिए। तीन क्रोधसम्बन्धी संग्रह कृष्टियोंकी स्थिति यदि वेदक कालके द्वारा दो महीना कम होती है तो एक प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदककालमें स्थितिबन्धकी कितनी हानि देखेंगे इस प्रकार त्रैराशिकक्रमसे प्रकृत स्थितिबन्धकी हानि साध लेना चाहिए। इसलिए यह चौथा आवश्यक यहाँ जानना चाहिए यह सिद्ध हुआ।

* चारों संज्वलनोंका स्थितिसत्कर्म छह वर्ष और अन्तर्मुहूर्त कम आठ महीना होता है। ५।

§ ६६८ किट्टीवेदगपढमसमये अट्ठवस्समेत्तमेवेसिं ठिदिसंतकम्मं होदूण तत्तो कमेण परिहाइदूण एदम्मि समये छवस्साणि अंतोमुहुत्तूणट्ठमासब्भहियाणि होदूण परिसिद्धमिदि वुत्तं होदि। एत्थ अट्ठवस्समेत्तपुव्विल्लट्ठिदिसंतादो परिहीणा सेसट्ठिदिप्पमाणमंतोमुहुत्ताहियचत्तारिमासेहिं सादिरेय वस्समेत्तमिदि घेत्तव्वं। तिण्हं संगहकिट्टीणं वेदगकालब्भंतरे जदि चदुण्हं वस्साणं परिहाणी लब्भदि, तो पढमसंगहकिट्टीवेदगकालम्मि केत्तियं लभामो त्ति तेरासियं काढूण सादिरेयतिभागब्भहियएगवस्समेत्तट्ठिदिसंतपरिहाणी सिस्साणमेत्थ दरिसेयव्वा।

* तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिबंधो दस वस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि [६]

§ ६६९ पुव्विल्लसंधिविसये संखेज्जवस्ससहस्समेत्तो तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो तत्तो संखेज्जगुणहाणीए जहाकमं परिहाइदूण अंतोमुहुत्तूणदसवस्सपमाणो एदम्मि समये संजादो त्ति वुत्तं होइ।

* घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्साणि [७]

§ ६७० पुव्वुत्तसंधीए संखेज्जवस्ससहस्समेत्तमेवेसिं ठिदिसंतकम्मं संखेज्जेहिं ट्ठिदिखंडयसहस्सेहिं संखेज्जगुणहाणीए तत्तो सुट्ठु ओहट्टिदूण तप्पाओग्गसंखेज्जवस्सपमाणेणेण्हिं पयट्टदि त्ति भणिदं होइ।

* सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि [८]

§ ६७१ किं कारणं? अघादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मस्स असंखेज्जगुणहाणीए जहाकमं

---

§ ६६८ कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें इन कर्मोंका स्थितिसत्कर्म आठ वर्षप्रमाण होकर उससे क्रमसे घटकर इस समय छह वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम आठ माह अधिक होकर निश्चित होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर आठ वर्षप्रमाण पहलेके स्थितिसत्कर्मसे घटी हुई समस्त स्थितिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त चार माह अधिक एक वर्षप्रमाण होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। तीन संग्रह कृष्टियोंके यदि वेदककालके भीतर चार वर्षप्रमाण स्थितिकी हानि प्राप्त होती है तो प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदककालमें कितनी स्थिति प्राप्त करेंगे इस प्रकार त्रैराशिक करके साधिक तृतीय भाग अधिक एक वर्षप्रमाण स्थितिसत्कर्मकी हानि शिष्योंको यहाँपर दिखलानी चाहिए।

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त कम दस वर्षप्रमाण होता है।६।

§ ६६९ पिछली सन्धिमें तीन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता था, उससे संख्यात गुणहानि द्वारा क्रमसे घटकर इस समय अन्तर्मुहूर्त कम दस वर्षप्रमाण हो गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात वर्षप्रमाण होता है।७।

§ ६७० पूर्वोक्त सन्धिमें इन कर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता था वह संख्यात हजार स्थितिकाण्डकों द्वारा संख्यात गुणहानि होकर उससे पर्याप्त घटकर इस समय तत्प्रायोग्य संख्यात वर्षप्रमाण प्रवृत्त होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* शेष कर्मोंका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्षप्रमाण होता है।८।

§ ६७१ शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—अघाति कर्मोंका स्थितिसत्कर्म असंख्यात गुणहानि द्वारा क्रमसे घटता हुआ भी

मोवट्टिज्जमाणस्स वि एदम्मि विसये असंखेज्जवस्सपमाणेणेवावट्ठाणणियमदंसणादो। ठिदिबंधो पुण एदेसिं तक्कालभाविओ संखेज्जवस्ससहस्समेत्तो सुगमो त्ति ण तण्णिद्देसो सुत्तयारेण कदो। एवं कोहपढमसंगहकिट्टीए चरिमसमयवेदगभावमणुपालिय एत्तो से काले कोहसंजलणविदियसंगहकिट्टीए वेदगभावेण परिणममाणस्स परूवणापबंधमुवरिमचुण्णिसुत्ताणुसारेण वक्खाणइस्सामो।

* से काले कोहस्स विदियकिट्टीए पदेसग्गमोकड्डियूण कोहस्स पढमट्ठिदिं करेदि।

§ ६७२ पुव्विल्लपढमट्ठिदीए उच्छिट्ठावलियमेत्तसेसाए पढमसंगहकिट्टीवेदगद्धा समप्पदि। ताधे चेव कोहस्स विदियसंगहकिट्टीदो पदेसग्गं बिदियट्ठिदीए समवट्ठिदमोकड्डियूण उदयादिगुणसेढीए सगवेदगद्धादो आवलियब्भहियं कादूण पढमट्ठिदिमेसो कुणदि त्ति वुत्तं होइ। एवमोकड्डियूण विदियसंगहकिट्टीए पढमट्ठिदिमुप्पाएमाणस्स तम्मि समये कोहपढमसंगहकिट्टीए किमवसिट्ठं किं वा विणट्ठमिदि आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* ताधे कोधस्स पढमसंगहकिट्टीए संतकम्मं दो आवलियबंधा दुसमयूणा सेसा, जं च उदयावलियं पविट्ठं तं च सेसं।

§ ६७३ पढमकिट्टीए[1] दुसमयूणदोआवलियमेत्तणवकबंधपदेसग्गमुच्छिट्ठावलियं च मोत्तूण सेसासेसकोहपढमसंगहकिट्टीपदेसग्गं तक्कालमेव विदियसंगहकिट्टीए उवरि संकंतमिदि भणिदं

इस स्थानपर उसके असंख्यात वर्षप्रमाणरूपसे अवस्थानका नियम देखा जाता है। परन्तु इन कर्मोंका तत्काल भावी स्थितिबन्ध संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता हुआ सुगम है, इसलिए सूत्रकारने उसका निर्देश नहीं किया है। इस प्रकार प्रथम संग्रह कृष्टिक अन्तिम समयमें वेदक भावका अनुपालन करके इससे तदनन्तर समयमें क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिके वेदकभावसे परिणमन करते हुए प्ररूपणाप्रबन्धका उपरिम चूर्णिसूत्रके अनुसार व्याख्यान करेंगे।

* तदनन्तर समयमें क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिके प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके क्रोधकी प्रथम स्थिति करता है।

§ ६७२ पहलेके प्रथम स्थितिके उच्छिष्टावलिमात्र शेष रहनेपर प्रथम संग्रह कृष्टिका वेदककाल समाप्त होता है। तथा उसी समय क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे, द्वितीय स्थितिमें स्थित प्रदेशपुंजको अपकर्षित कर उदयादि गुणश्रेणिरूपसे अपने वेदककालसे एक आवलि अधिक करके यह क्षपक जीव प्रथम स्थितिको करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार अपकर्षण करके दूसरी संग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थितिको उत्पन्न करनेवाले इस क्षपक जीवके उस समय क्रोधसंज्वलनकी प्रथम स्थितिका क्या कुछ भाग अवशिष्ट रहता है या पूरा विनष्ट हो जाता है ऐसी आशंका होनेपर निर्णयका विधान करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* उस समय क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका सत्कर्म दो समय कम दो आवलिप्रमाण बन्ध शेष रहता है और जो उदयावलि प्रविष्ट द्रव्य है वह शेष रहता है।

§ ६७३ प्रथम कृष्टिके दो समय कम दो आवलिप्रमाण नवकबन्धसम्बन्धी प्रदेशपुंज और उच्छिष्टावलिको छोड़कर क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिका शेष रहा समस्त प्रदेशपुंज तत्काल

१ ता प्रतौ पढमकिट्टीए इति पाठ सूत्रांशरूपेणोपलभ्यते।

होदि। सपहि कोहविदियसंगहकिट्टीदो तेरसगुणायामा होदूण ट्ठिदपढमसंगहकिट्टी विदियसंगह-किट्टीए हेट्ठा अणंतगुणहाणीए परिणमिय तिस्से चेव अपुव्वकिट्टी होदूण पयट्टदि त्ति घेत्तव्वं। ताधे सेससंगहकिट्टीण पुध पुध जोइज्जमाणाणमायामादो एदिस्से आयामो चोद्दसगुणमेत्तो होदि त्ति वट्टव्वो, पढमसंगहकिट्टीदव्वपडिग्गहमाहप्पेण तत्थ तहाभावोववत्तीए आहाणुवलंभादो। णवक बधुच्छिट्ठावलियपदेसग्ग च जहाकममेव विदियसगहकिट्टीए समयाविरोहेण सकमदि त्ति घेत्तव्व।

* ताधे कोहस्स विदियकिट्टीवेदगो।

§ ६७४ सुगमं। सपहि एव कोहविदियसगहकिट्टीवेदगभावेण परिणदस्स पढमसमयप्पहुडि जाव सगवेदगकालचरिमसमओ त्ति ताव परूवणाणुगमे कीरमाणे जो कोहपढमसगहकिट्टीवेदगस्स

ही दूसरी संग्रह कृष्टिके ऊपर सक्रान्त हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पय है। अब क्रोधसज्वलन की दूसरी सग्रह कृष्टिसे तेरहगुणे आयामवाली होकर स्थित हुई प्रथम सग्रह कृष्टि दूसरी सग्रह कृष्टिके नीचे अनन्तगुणी हानिरूपसे परिणमकर उसीकी अपूर्व कृष्टि होकर प्रवृत्त होती है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। उस समय पृथक-पृथक् याज्यमान शेष सग्रह कृष्टियोके आयाममे इसका आयाम चौदह गुणा होता है ऐसा जानना चाहिए क्योकि प्रथम सग्रह कृष्टिके द्रव्यको ग्रहण करनेसे जो अधिकता आ जाती है उस कारण उसमे उस रूपसे व्यवस्था बननेमे कोई बाधा नही पायी जाती। नवकबन्ध और उच्छिष्टावलिका प्रदेशपुज क्रमसे दूसरी सग्रह कृष्टिमे समयके अविरोधपूवक सक्रमित होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—प्रतिसमय जो कर्मबन्ध होता है उसका उत्तरोत्तर विभाग करनेपर जो चारित्रमोहनीयको द्रव्य प्राप्त होता है उसमेसे साधिक आधा द्रव्य तो कषायसम्बन्धी द्रव्य है और कुछ कम आधा द्रव्य नोकषायसम्बन्धी है। उदाहरणाथ अकसदृष्टिकी अपेक्षा चारित्रमोहनीय का कुल द्रव्य ४९ मान लेनेपर असख्यातवाँ भाग अधिक आधा २५ कषायसम्बन्धी द्रव्य होता है। शेष असख्यातवाँ भागहीन आधा २४ नोकषायसम्बन्धी द्रव्य होता है। यहाँ चारो सज्वलनों की संग्रह कृष्टिया १२ हैं, अत कषायसम्बन्धी पूरे द्रव्यको इन १२ सग्रह कृष्टियोंमें विभाजित करनेपर क्रोधसंज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिको साधिक २ अकप्रमाण द्रव्य प्राप्त होता है। इसी विधिसे शेष ११ सग्रह कृष्टियोमेसे प्रत्येकको भी साधिक २ अकप्रमाण द्रव्य प्राप्त हुआ। पुन नोकषायके समस्त द्रव्यके क्रोधसज्वलनको प्रथम सग्रह कृष्टिमे सक्रमित होनेपर उसका कुल प्रमाण साधिक २+२४=२६ अकप्रमाण प्राप्त होता है। जो कि इसीकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे साधिक १३ गुणा अधिक है। पुन क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिके कुल द्रव्य साधिक २६ मे द्वितीय सग्रह कृष्टिके २ अकप्रमाण द्रव्यके मिलानेपर २६+२=२८ होना है जिसे क्रोधसज्वलनकी तीसरी सग्रहकृष्टि आदिको तुलनामे देखनेपर साधिक १४ भाग अधिक होता है। यही मूल टीकामें स्पष्ट किया गया है।

* उस समय क्रोधसज्वलनकी दूसरी सग्रह कृष्टिका वेदक होता है।

§ ६७४ यह सूत्र सुगम है। अब इस प्रकार क्रोधसज्वलनकी द्वितीय संग्रह कृष्टिके वेदकभावसे परिणत हुए क्षपकके प्रथम समयसे लेकर अपने वेदन करनेके अन्तिम समय तककी प्ररूपणाका अनुगम करनेपर क्रोधसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिके वेदकको जो विधि कह आये हैं

विधी परूविदो, सो चेव णिरवसेसमेत्थ कायव्वो, णत्थि किंचि णाणत्तमिदि अत्थसमप्पण कुणमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

* जो कोहस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी सो चेव कोहस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी कायव्वो ।

§ ६७५ जहा कोहपढमसंगहकिट्टीमहिकिच्च पुव्वुत्तासेसपरूवणा बंधोदयजहण्णुक्कस्स णिव्वग्गणाविकरणपडिबद्धा सवित्थरमणुमग्गिदा तहा चेव एत्थ वि परूवेयव्वा त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। सपहि को सो पुव्वुत्तो विधी, कदमेसु वा आवासएसु पडिबद्धो त्ति आसकाए पुव्वुत्तस्सेव अत्थविसेसस्स सभालणट्ठमुत्तर पबंधमाह—

* त जहा ।

§ ६७६ सुगममेदं पुच्छावक्क ।

* उदिण्णाण किट्टीण बज्झमाणीण किट्टीण विणासिज्जमाणीण अपुव्वाण णिव्वत्तिज्जमाणियाण बज्झमाणेण च पदेसग्गेण सछुब्भमाणेण च पदेसग्गेण णिव्व-त्तिज्जयाणियाण ।

§ ६७७ एदेसिं सव्वेसिं आवासयाण पढमसंगहकिट्टीपरूवणाए जो विधी परूविदो सो चेव

वही पूरी यहाँपर करनी चाहिए। उससे इसमे कुछ भेद नहीं है इस प्रकार इस अर्थका समर्पण करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* जो क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले जीवकी विधि प्ररूपित कर आये हैं वही विधि क्रोधसज्वलनकी दूसरी सग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवकी करनी चाहिए।

§ ६७५ जिस प्रकार क्रोधसज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिको अधिकृत करके बन्ध, उदय, जघन्य और उत्कृष्ट निर्वर्गणा आदि करणसे सम्बन्ध रखनेवाली पूर्वोक्त सम्पूर्ण प्ररूपणा विस्तारके साथ कर आये हैं उसी प्रकार यहाँपर भी कहनी चाहिए यह इस सूत्रका भावार्थ है। अब वह पूर्वोक्त विधि क्या है अथवा कितने आवश्यकोमे वह प्रतिबद्ध है ऐसी आशका होनेपर पूर्वोक्त अर्थविशेषकी ही सम्हाल करनेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

* वह जैसे।

§ ६७ यह पृच्छावाक्य सुगम है।

* उदीर्ण कृष्टियोकी, बध्यमान कृष्टियोंकी, विनश्यमान कृष्टियोकी, बध्यमान प्रदेशपुञ्जसे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोकी और सक्रम्यमाण प्रदेशपुञ्जसे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टियोकी विधिको प्रथम संग्रह कृष्टिके समान करना चाहिए।

§ ६७७ इन सब आवश्यकोकी प्रथम सग्रह कृष्टिकी प्ररूपणाके समय जो विधि प्ररूपित कर आये हैं वह सभी विधि पूरी यहाँ जानना चाहिए, क्योंकि उसकी प्ररूपणासे इसकी प्ररूपणामें

णिरवसेसमणुगतव्वो, विसेसाभावादो त्ति वुत्तं होइ। संपहि एत्थुद्देसे किट्टीसु पदेससंकमो कधं पयट्टदि त्ति एदस्स अत्थविसेसस्स णिण्णयकरणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

*** एत्थ संकममाणयस्स पदेसग्गस्स विधिं वत्तइस्सामो।**

§ ६७८ कदमादो संगहकिट्टीदो पदेसग्गं कत्थ संकमदि, किमविसेसेण सव्वं सव्वत्थ संकमदि, आहो अत्थि को वि विसेसणियमो त्ति एदस्स णिण्णयविहाणट्ठमेत्तो किट्टीसु संकममाणस्स पदेसग्गस्स णिक्खवणमेत्थ कस्सामो त्ति पइण्णावक्कमेदं।

*** तं जहा।**

§ ६७९ सुगमं।

*** कोधविदियकिट्टीदो पदेसग्गं कोहतदियं च माणपढमं च गच्छदि।**

§ ६८० कोधस्स विदियसंगहकिट्टीदो पदेसग्गं कोधतदियसंगहकिट्टीए माणपढमसंगहकिट्टीए च संकमदि, ण सेसासु। कुदो? एदम्मि विसये आणुपुव्वीसंकमवसेण संकममाणस्स तप्पदुप्पायण सप्पसंगादो। कुदो? तदो कोहविदियकिट्टी अप्पणो तदियकिट्टीए ओकड्डुणावसेण संकमदि, माणपढमसंगहकिट्टीए च अधापवत्तसंकमेण संकमदि त्ति घेत्तव्वं।

*** कोहस्स तदियादो किट्टीदो माणस्स पढमं चेव गच्छदि।**

कोई भेद नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब इस स्थलपर कृष्टियोंमें प्रदेशोंका संक्रम किस प्रकार प्रवृत्त होता है इस प्रकार इस अर्थविशेषका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

*** आगे यहाँ संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजकी विधिको बतलावेंगे।**

§ ६७८ किस संग्रह कृष्टिसे प्रदेशपुंज किस संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होता है, क्या सामान्यसे सब सबमें संक्रमित होता है या कोई विशेष नियम है, इस प्रकार इस बातके निर्णयका कथन करनेके लिए आगे कृष्टियोंमें संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजके निष्क्रमणको यहाँपर बतलावेंगे इस प्रकार यह प्रतिज्ञावाक्य है।

*** वह जैसे।**

§ ६७९ यह सूत्र सुगम है।

*** क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे प्रदेशपुंज क्रोधसंज्वलनकी तीसरी संग्रहकृष्टिमें और मानसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें प्राप्त होता है।**

§ ६८० क्रोधसंज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे प्रदेशपुंज क्रोधसंज्वलनकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें और मानसंज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होता है शेषमें नहीं, क्योंकि इस स्थानपर आनुपूर्वी संक्रमके कारण संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजको उसी प्रकारसे व्यवस्थाका प्रसंग प्राप्त होता है, क्योंकि इस कारण क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टि अपकर्षणके कारण अपनी तीसरी संग्रह कृष्टिमें और अधःप्रवृत्त संक्रमके कारण मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें संक्रमित होती है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

*** क्रोधकी तीसरी संग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुंज मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिको ही प्राप्त होता है।**

§ ६८१ कोहतवियसगहकिट्टीए पवेसग्ग सेसासेससंगहकिट्टीपरिहारेण माणस्स पढमसंगह-किट्टीए चेव संकमदि त्ति घेत्तव्वं, तत्थ पयारंतरासभवादो। एसो च अधापवत्तसंकमो बज्झमाण किट्टीसरूवेण बज्झमाणाबज्झमाणकिट्टीणमधापवत्तेणेव संकतिणियमदंसणादो।

* माणस्स पढमादो किट्टीदो माणस्स विदिय तदिय मायाए पढम च गच्छदि।

§ ६८२ एत्थ वि अप्पणो विदिय तदियसगहकिट्टीसु ओकड्डणासंकमो, मायाए पढमसंगह-किट्टीए अधापवत्तसंकमो त्ति णिच्छेयव्वं। सेस सुगमं।

माणस्स विदियकिट्टीदो माणस्स तदिय च मायाए पढम च गच्छदि।

* माणस्स तदियकिट्टीदो मायाए पढम गच्छदि।

* मायाए पढमादो पदेसग्ग मायाए विदिय तदिय च लोभस्स पढमकिट्टिं च गच्छदि।

* मायाए विदियादो किट्टीदो पदेसग्ग मायाए तदिय लोभस्स पढम च गच्छदि।

* मायाए तदियादो किट्टीदो पदेसग्ग लोभस्स पढम गच्छदि।

---

§ ६८१ क्रोधकी तीसरी सग्रहकृष्टिका प्रदेशपुज शेष समस्त सग्रह कृष्टियोका परिहार करके मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिमे ही सक्रमित होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योकि उसमें दूसरा प्रकार सम्भव नही है। और यह अध प्रवृत्त सक्रम है, क्योकि बध्यमान और अबध्यमान कृष्टियोके अध प्रवृत्त सक्रमरूपसे ही सक्रमका नियम देखा जाता है।

* मानकी प्रथम सग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज मानकी दूसरी और तीसरी सग्रहकृष्टिको तथा मायाकी प्रथम सग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है।

§ ६८२ यहाँ पर भी अपनी दूसरी और तीसरी संग्रहकृष्टियोमे अपकर्षण संक्रम और मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे अध प्रवृत्त सक्रम प्रवृत्त होता है ऐसा निश्चय करना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

* मानकी दूसरी संग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज मानकी तीसरी संग्रहकृष्टिको और मायाकी प्रथम सग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है।

* मानकी तीसरी सग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है।

* मायाकी प्रथम सग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज मायाकी दूसरी और तीसरी सग्रहकृष्टिको और लोभकी प्रथम सग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है।

* मायाकी दूसरी सग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज मायाकी तीसरी सग्रहकृष्टिको और लोभकी प्रथम सग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है।

* मायाकी तीसरी सग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है।

* लोभस्स पढमादो किट्टीदो पदेसग्गं लोभस्स विदिय च तदिय च गच्छदि ।

* लोभस्स विदियादो पदेसग्ग लोभस्स तदिय गच्छदि ।

§ ६८३ एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि त्ति ण एत्थ किंचि वक्खाणेयव्वमत्थि । कोहपढमसगह किट्टीवेदगद्धाए वि एसा सकमपरिवाडी अणुगतव्वा । णवरि कोहपढमसगहकिट्टीदो पदेसग्गमप्पणो विदिय तदियसगहकिट्टीओ च गच्छदि माणपढम च, तमादि कादूण सगहकिट्टीण जहा णिद्दिट्ठाए परिवाडीए सकमणियमदसणादो । एसो अत्थविसेसो सकामिज्जमाणण पदेसग्गेण णिव्वत्तिज्ज माणकिट्टीण साहणट्ठ परूविदो दट्ठव्वो । सपहि कोहविदियसगहकिट्टि वेदेमाणो किं सव्वेसि कसायाण विदियसगहकिट्टीओ चेव बधदि आहो कोहस्स विदियसगहकिट्टिसेसाण च पढमसगह किट्टिमेव बधदि त्ति आसकाए णिण्णयविहाण कुणमाणो पुच्छावक्कमाह—

* जहा कोहस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणो चदुण्ह कसायाण पढमकिट्टीओ बधदि किमेव चेव कोधस्स विदियकिट्टिं वेदेमाणो चदुण्ह कसायाण विदियकिट्टीओ बधदि आहो ण, वत्तव्व ।

§ ६८४ जहा कोहस्स पढमसगहकिट्टि वेदेमाणो णियमा चदुण्ह कसायाण पढमसगहकिट्टीओ चेव बधदि किमेव चेव कोहविदियसगहकिट्टि वेदेमाणो एसो चदुण्ह कसायाण विदियसगहकिट्टि

* लोभकी प्रथम सग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज लोभकी दूसरी और तीसरी सग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है ।

* लोभकी दूसरी सग्रहकृष्टिसे प्रदेशपुज लोभकी तीसरी सग्रहकृष्टिको प्राप्त होता है ।

§ ६८३ ये सूत्र सुगम हैं, इसलिए यहाँपर कुछ व्याख्यान करने योग्य नही है । क्रोधकी प्रथम सग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपकको भी यही सक्रम विषयक परिपाटी जाननी चाहिए । इतनी विशेषता है कि क्रोधकी प्रथम सग्रह कृष्टिसे प्रदेशपुज क्रोधकी दूसरी और तीसरी सग्रह कृष्टिको तथा मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिको प्राप्त होता है, क्योकि उससे लेकर सग्रह कृष्टियोके यथानिर्दिष्ट परिपाटीके अनुसार सक्रमका नियम देखा जाता है । यह अर्थ विशेष संक्रम्यमाण प्रदेशपुजसे निर्वर्त्यमान कृष्टियोका साधन करनेके लिए प्ररूपित किया हुआ जानना चाहिए । अब क्रोधकी दूसरी सग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाला क्षपक जीव क्या सभी कषायोकी दूसरी सग्रह कृष्टियोको ही बाँधता है या क्रोधकी दूसरी सग्रह कृष्टियोके अतिरिक्त शेष कषायोकी प्रथम सग्रह कृष्टिको ही बाँधता है ऐसी आशका होनेपर निर्णयका विधान करते हुए पृच्छा वाक्यको कहते हैं—

* जिस प्रकार क्रोधकी प्रथम सग्रह कृष्टिका वदन करनेवाला क्षपक जीव चारो कषायो को प्रथम सग्रह कृष्टियोको बाँधता है क्या इसी प्रकार क्रोधकी दूसरी सग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाला क्षपक जीव चारो कषायोकी दूसरी सग्रह कृष्टिको बाँधता है या नहीं बाँधता है, कहिए ?

§ ६८४ जिस प्रकार क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टिका वेदन करनेवाला क्षपक जीव नियमसे चारो कषायोकी प्रथम सग्रह कृष्टियोको ही बाँधता है क्या इसी प्रकार क्रोधकी दूसरी सग्रह-कृष्टिका वेदन करनेवाला यह क्षपक जीव चारो कषायोकी दूसरी सग्रह कृष्टियोको ही बाँधता है

चेव बंधदि त्ति णियमो, उदाहो ण तहा, वत्तव्वमिदि एदेण पुच्छा कदा होइ। संपहि एदस्सेव पुच्छाणिद्देसस्स फुडीकरणट्ठमिदमाह—

* किध खु।

§ ६८५ कथं खलु स्यात्, को न्वत्र निर्णय इति पूर्वोक्तस्यैव प्रश्नस्य स्फुटीकरणपरमेतद्वाक्यम्।

* समासलक्खणं भणिस्सामो।

§ ६८६ लक्ष्यतेऽनेनेति लक्षणं निर्णयविधानमित्यर्थः, तत्संक्षेपत एव व्याकरिष्याम इत्युक्तं भवति।

* जस्स जं किट्टिं वेदयदि तस्स कसायस्स तं किट्टिं बंधदि, सेसाणं कसायाणं पढमकिट्टीओ बंधदि।

§ ६८७ जस्स कसायस्स जं किट्टिं वेदयदि पढमं विदियं तदियं वा तस्स तमेव बंधदि, सेसाणं पुण कसायाणमेण्हिमवेदिज्जमाणाणं पढमसंगहकिट्टीओ चेव बंधदि, तत्थ पयारंतरासंभवादो त्ति वुत्तं होइ। तदो कोहविदियकिट्टिं वेदेमाणो एसो कोहस्स विदियकिट्टिं बंधदि, माण-माया-लोभाणं पुण पढमसंगहकिट्टीओ चेव बंधदि। एवमुवरिमकिट्टीओ वि वेदेमाणस्स पयदत्थजोजणा कायव्वा त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। संपहि कोहविदियकिट्टीवेदगस्स पढमसमये विस्स-

---

यह नियम है या उक्त प्रकारका नियम नहीं है, यह कहना चाहिए इस प्रकार इस सूत्र द्वारा पृच्छा की गयी है। अब इसी पृच्छाके निर्देशको स्पष्ट करनेके लिए इस सूत्रको कहते हैं—

* इस विषयमें किस प्रकार है?

§ ६८५ इस विषयमें किस प्रकार है—इस विषयमें क्या निर्णय है इस प्रकार पूर्वोक्त प्रश्नका ही स्पष्टीकरणपरक यह वाक्य है।

* आगे संक्षेपमें इसका लक्षण कहेंगे।

§ ६८६ जिस द्वारा कोई भी वस्तु लक्षित की जाती है वह लक्षण कहलाता है, विवक्षित वस्तुके निर्णयका विधान करना यह इसका भावार्थ है, उसका संक्षेपमें ही व्याख्यान करेंगे यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* जिस कषायकी जिस संग्रह कृष्टिका वेदन करता है उस कषायको उस संग्रह कृष्टिका बन्ध करता है तथा शेष कषायोंकी प्रथम संग्रहकृष्टिका बन्ध करता है।

§ ६८७ जिस कषायकी प्रथम, द्वितीय या तृतीय जिस संग्रहकृष्टिका वेदन करता है उस कषायको उसी संग्रह कृष्टिका बन्ध करता है, किन्तु जिन कषायोंका इस समय वेदन नहीं करता उन कषायोंकी तो प्रथम संग्रह कृष्टियोंको ही बाँधता है, क्योंकि उनमें अन्य प्रकार सम्भव नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इसलिए क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिका वेदन करता हुआ यह क्षपक जीव क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिको बाँधता है, परन्तु मान, माया और लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टियोंको ही बाँधता है। इसी प्रकार उपरिम कृष्टियोंका भी वेदन करनेवाले इस जीवके प्रकृत अर्थकी योजना कर लेनी चाहिए यह इस सूत्रका भावार्थ है। अब क्रोध सज्वलनकी दूसरी कृष्टि-

माणाणमेक्कारसण्हं संगहकिट्टीणमंतरकिट्टीसु कदमाओ थोवाओ कदमाओ च बहुगीओ त्ति एवंविहस्स अत्थविसेसस्स णिद्धारणट्ठमुवरिमपबंधमाढवेदि—

* कोधविदियकिट्टीए पढमसमये वेदगस्स एक्कारससु संगहकिट्टीसु अंतरकिट्टीणमप्पाबहुअं वत्तइस्सामो ।

§ ६८८ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ ६८९ सुगमं ।

* सव्वत्थोवाओ माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ ।

§ ६९० एत्थ पढमसंगहकिट्टि त्ति भणिदे वेदगपढमसंगहकिट्टीए गहणं कायव्वं, किट्टिवेदगेण पयदत्तादो । तदो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए अवयवकिट्टीओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणंतभागमेत्तीओ होदूण सव्वत्थोवाओ जादाओ, कुदो एदासि थोवभावो परिच्छिज्जदे ? थोवयरदव्वेण णिव्वत्तिदत्तादो ।

* विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

§ ६९१ कुदो ? दव्वविसेसादो । केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागिओ, सत्थाणविसेसस्स पुव्वं तहाभावेण समत्थियत्तादो ।

वेदकके प्रथम समयमें दृश्यमान ग्यारह संग्रह कृष्टियोकी अन्तर कृष्टियोमें कौन सी या कितनी कृष्टियाँ थोड़ी हैं और कितनी कृष्टियाँ बहुत हैं इस प्रकार इस अर्थविशेषका निर्धारण करनेके लिए आगेके प्रबन्धको आरम्भ करते है—

* क्रोध सज्वलनकी दूसरी कृष्टिके प्रथम समयमें वेदकको ग्यारह संग्रह कृष्टियोमें अन्तर कृष्टियोंके अल्पबहुत्वको बतलावेंगे।

§ ६८८ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे ।

§ ६८९ यह सूत्र सुगम है।

* मान सज्वलनकी प्रथम समयमें संग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ सबसे थोड़ी हैं।

§ ६९० यहाँ सूत्रमे 'पढमसंगहकिट्टीए' ऐसा कहनेपर वेदककी प्रथम संग्रह कृष्टिका ग्रहण करना चाहिए क्योंकि कृष्टिवेदक प्रकृत है । अतः मान सज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी अवयव कृष्टियाँ अभव्योसे अनन्तगुणी या सिद्धोके अनन्तवें भागप्रमाण होकर सबसे थोड़ी हो गयी हैं।

शंका—इनका स्तोकपना कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि इनकी स्तोकतर द्रव्यसे रचना हुई है।

* दूसरे समयमें संग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं।

§ ६९१ क्योंकि इनमे द्रव्यविशेषका निक्षेप हुआ है।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—विशेषका प्रमाण पल्योपमके असख्यातवें भागके प्रतिभागरूप है, क्योंकि स्वस्थान विशेषका पहले उसीरूपमे समर्थन कर आये हैं।

* तदियाए सगहकिट्टीए अतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

§ ६९२ एत्थ वि विसेसपमाण पुव्वं व वत्तव्वं ।

* कोहस्स तदियाए संगहकिट्टीए अतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

§ ६९३ कुदो ? दव्वविसेसादो । केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असखेज्जदिभागेण खंडिदेयखंडमेत्तो, परत्थाणविसेसस्स दव्वविसेसाणुसारेण तहाभावेण दंसणादो । एवमुवरिमपदेसु वि परत्थाणविसेसो एवं चेव वत्तव्वो ।

* मायाए पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

* विदियाए सगहकिट्टीए अतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

* तदियाए सगहकिट्टीए अतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

* लोभस्स पढमाए सगहकिट्टीए अतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

* विदियाए संगहकिट्टीए अतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

* तदियाए सगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ ।

§ ६९४ एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

* कोहस्स विदियाए सगहकिट्टीए अतरकिट्टीओ संखेज्जगुणाओ ।

§ ६९५ को एत्थ गुणगारो ? चोद्दसरूवाणि । त जहा—मायातदियसगहकिट्टीए दव्व

---

* तीसरी सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक है ।

§ ६९२ यहाँपर भी विशेषका प्रमाण पहलेके समान कहना चाहिए ।

क्रोध संज्वलनकी तीसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।

§ ६९३ क्योंकि इसमें द्रव्यविशेष पाया जाता है ।

शंका—विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—आवलिके असंख्यातवें भागसे भाजित एक भागप्रमाण है, क्योंकि परस्थान-विशेष द्रव्यविशेषके अनुसार उसी प्रकारसे देखा जाता है। इस प्रकार उपरिम पदोंमें भी परस्थानविशेष इसी प्रकारसे कहना चाहिए ।

* मायासज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।

* दूसरी सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।

* तीसरी सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।

* लोभसज्वलनकी प्रथम संग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।

* दूसरी सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।

* तीसरी संग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।

§ ६९४ ये सूत्र सुगम हैं ।

* क्रोधसज्वलनकी दूसरी सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियाँ संख्यातगुणी हैं ।

§ ६९५ शंका—यहाँपर गुणकार क्या है ?

समाधान—चौदह संख्या गुणकार है । वह जैसे—माया संज्वलनकी तीसरी संग्रह कृष्टिका

मोहणीयसयलदव्वस्स चउवीसभागमेत्त होइ। कोहविदियसगहकिट्टीए वि अप्पणो मूलदव्व मोहणीयसयलदव्व पेक्खिदिय चउवीसभागमेत्त चेव भवदि। पुणो एदस्सुवरि कोहपढमसगहकिट्टीए तेरसचउवीसभागमेत्तदव्वं च पविट्ठमत्थि, दव्वाणुसारेणेव अतरकिट्टीणमायामो होदि त्ति एदेण कारणेण हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिम्मि ओवट्टिदे चोद्दसरूवमेत्तगुणगारसमुप्पत्ती ण विरुज्झदे।

§ ६९६ जहा अतरकिट्टीणमेवमप्पाबहुअमणुमग्गिद एव तत्थतणपदेसपिडस्स वि थोवबहुत्ताणुगमो कायव्वो त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

* पदेसग्गस्स वि एव चेव अप्पाबहुअ।

§ ६९७ 'कायव्व' इदि वक्कसेसो एत्थ कायव्वो। सेस सुगम। एवमेदेण विहाणेण कोह विदियसगहकिट्टि वेदेमाणस्स पढमट्ठिदी कमेण परिहीयमाणा जाधे आवलिय पडिआवलियमेत्तीओ सेसा ताधे जो परूवणाभेदो तण्णिद्देसकरणट्ठमुत्तरसुत्तारभो --

---

द्रव्य मोहनीयके समस्त द्रव्यक चौबीसवे भागप्रमाण होता है। क्रोधसज्वलनका दूसरी संग्रह कृष्टिका अपना मूल द्रव्य भी मोहनीयके समस्त द्रव्यको देखते हुए चौबीसवें भागप्रमाण ही होता है। पुन इसके ऊपर क्रोधसज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिमे तेरह बटे चौबीस भागप्रमाण द्रव्य प्रविष्ट है, क्योकि द्रव्यके अनुसार ही अन्तर कृष्टियोका आयाम होता है। इस कारण अधस्तन राशिसे उपरिम राशिके भाजित करनेपर चौदह सख्याप्रमाण गुणकारकी उत्पत्ति विरोधको प्राप्त नही होती।

विशेषार्थ—यह तो हम पहल हा सूचित कर आये हैं कि अकसंदृष्टिकी अपेक्षा मोहनीयका समस्त द्रव्य ४९ अंकप्रमाण कल्पित करनेपर नौ नोकषायोको जितना द्रव्य मिलता है उससे कुछ अधिक द्रव्य अनन्तानुबधी आदि चारो कषायोको मिलता है, इस नियमके अनुसार नौ नोकषायोका कुल द्रव्य २४ अंकप्रमाण और कषायोका समस्त द्रव्य २५ अंकप्रमाण मान लेनेपर मोहनीयका समस्त द्रव्य ४९ अकप्रमाण प्राप्त हो जाता है। पुन कषायोके द्रव्यको १२ सग्रह कृष्टियोमे विभक्त करनेपर प्रत्येक सग्रह कृष्टिका साधिक दोभागप्रमाण द्रव्य प्राप्त होता है। चूँकि क्षपणाकालमे नोकषायोके द्रव्यका कषायोमे सक्रमित होनेपर क्रोधसंज्वलनकी प्रथम सग्रह कृष्टिका कुल द्रव्य २४+२=२६ अकप्रमाण होता है जो क्रोधसज्वलनकी द्वितीय सग्रह कृष्टिकी अपेक्षा समस्त द्रव्यके १३ भागप्रमाण होता है। पुन इसमे क्रोधकी द्वितीय सग्रह कृष्टिका द्रव्य प्रविष्ट होनेपर वह १४ भागप्रमाण हो जाता है। कारण स्पष्ट है। इसी प्रकार आगे भी सब सग्रह कृष्टियोके द्रव्यके प्रविष्ट होनेपर अन्तमे पूरे द्रव्यका प्रमाण आ जाता है। इसी तथ्यको यहाँ स्पष्ट किया गया है ऐसा समझना चाहिए।

§ ६९६ जिस प्रकार अन्तर कृष्टियोके भेदोका अल्पबहुत्वका अनुगम किया उसी प्रकार उनमे अवस्थित प्रदेशपिण्डका अनुगम करना चाहिए इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* अन्तर कृष्टियोंके प्रदेशपुजका भी इसी प्रकार अल्पबहुत्व करना चाहिए।

§ ६९७ सूत्रमें 'कायव्व' यह वाक्य शेष है। आशय यह है कि 'अल्पबहुत्व करना चाहिए' ऐसा अर्थ कर लेना। शेष कथन सुगम है। इस प्रकार इस विधिसे क्रोधसज्वलनकी दूसरी संग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपकके प्रथम स्थिति क्रमसे हीन होती हुई जब आवलि और प्रति आवलिप्रमाण शेष रहती है उस समय जो प्ररूपणा भेद होता है उसका निर्देश करनेके लिए आगेके सूत्रको आरम्भ करते हैं—

* कोहस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलिय-पडिआवलियाए सेसाए आगाल-पडिआगालो वोच्छिण्णो ।

§ ६९८ जइ वि एत्थ किट्टीकरणद्धापारभप्पहुडि मोहणीयस्स उक्कड्डुणाभावेण पढमट्ठिदीदो विदियट्ठिदिम्मि पदेससचारो णत्थि तो वि विदियट्ठिदीदो पढमट्ठिदीए ओकड्डिज्जमाणपदेसग्गस्स एण्हिमणागमण पेक्खियूणागालपडिआगालवोच्छेदो णिद्दिट्ठो । एवमागालपडिआगालवोच्छेदं कादूण पुणो वि समयूणावलियमेत्तकाले गालिदे पढमट्ठिदी समयाहियावलियमेत्ती सेसा होदि ताधे कोहसंजलणस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा, ताधे चेव विदियसगहकिट्टीए चरिमसमयवेदगभावेण परिणमदि त्ति जाणावणफलो उत्तरसुत्तारभो

* तिस्से चेव पढमट्ठिदीए समयाहियाए आवलियाए सेसाए ताहे कोहस्स विदियकिट्टीए चरिमसमयवेदगो ।

§ ६९९ गयत्थमेदं सुत्त । एवं च कोहविदियसगहकिट्टीए चरिमसमयवेदगभावेण पयट्ट माणस्स तक्कालभाविओ जो परूवणाभेदो तण्णिद्धारणट्ठमुत्तरो सुत्तपबंधो—

* ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो बेमासा वीस च दिवसा देसूणा ।

§ ७०० एत्थ पुव्वुत्तसघिविसयट्ठिदिबधादो ट्ठिदिबंधपरिहाणी पुव्वं व तेरासिय-कमेणाणेयव्वा ।

* क्रोधसज्वलनकी दूसरी कृष्टिका वेदन करनेवालेके जो प्रथम स्थिति होती है उस प्रथम स्थितिकी आवलि और प्रतिआवलिके शेष रहनेपर आगाल और प्रतिआगालकी व्युच्छित्ति हो जाती है।

§ ६९८ यद्यपि यहाँपर कृष्टिकरण कालके प्रारम्भ होनेसे लेकर मोहनीय कमका प्रथम स्थितिमेसे उत्कषण होकर द्वितीय स्थितिमे प्रदेश सचार नही होता तो भी द्वितीय स्थितिमेंसे प्रथम स्थितिमे अपकृष्यमाण प्रदेशपुजका नही आना देखकर इस समय आगाल और प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति कही है। इस प्रकार आगाल और प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति करके फिर भी एक समय कम आवलि प्रमाण कालके गलित होनेपर प्रथम स्थिति एक समय अधिक आवलिप्रमाण शेष रहती है। उस समय क्रोधसज्वलनकी जघन्य स्थिति उदीरणा होती है तथा उसी समय दूसरी सग्रह कृष्टिका अन्तिम समयमे वेदकरूपसे परिणमन होता है इस बातके ज्ञान करानेके फलस्वरूप आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* उसी प्रथम स्थितिके एक समय अधिक एक आवलिमात्र शेष रहनेपर उस समय क्षपक जीव क्रोधकी द्वितीय सग्रह कृष्टिका अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है।

§ ६९९ यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार क्रोधकी दूसरी सग्रह कृष्टिका अन्तिम समयमें वेदकरूपसे प्रवर्तमान क्षपकके तत्कालभावी जो प्ररूपणाभेद है उसका निर्धारण करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* उस समय सज्वलनोंका स्थितिबन्ध दो महीना और कुछ कम बीस दिन होता है।

§ ७०० यहाँपर पूर्वोक्त सन्धिविषयक स्थितिबन्धसे स्थितिबन्धकी हानि पहलेके समान त्रैराशिक क्रमसे ले आनी चाहिए।

* तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो वासपुधत्तं ।

§ ७०१ पढमसंगहकिट्टीवेदगस्स चरिमसमये दसवस्ससहस्समेत्तो होंतो तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो तत्तो कमेण परिहाइदूण एण्हिं तिण्हं वस्साणमुवरि जिणदिट्ठभावेण पयट्टदि त्ति वुत्तं होइ ।

* सेसाणं कम्माणं ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

§ ७०२ सुगममेदं सुत्तं ।

* संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं पंच वस्साणि चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तूणा ।

§ ७०३ एत्थ पुव्विल्लसंधिविसयट्ठिदिसंतकम्मादो अट्ठमासाहियछवस्सपमाणादो ठिदिसंतपरिहाणीसु संतिभागेगवस्समेत्ता तेरासियकमेण साहेयव्वा ।

* तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।

§ ७०४ सुगमं ।

* णामागोदवेदणीयाणं ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि ।

§ ७०५ सुगममेदं पि सुत्तं । एवं कोहकिट्टीवेदगद्धाए बिदियतिभागे बिदियसंगहकिट्टीवेदगत्तमणुभूय तदद्धाए परिसमत्ताए तदो से काले तदियसंगहकिट्टीवेदगभावेण परिणममाणो तिस्से पदेसग्गं बिदियट्ठिदीदो ओकड्डियूण पढमट्ठिदिमुदयादिगुणसेढीए सगवेदगद्धादो आवलियब्भहियं कादूण णिसिंचदि त्ति पदुप्पाएमाणो इदमाह—

* तदो से काले कोहस्स तदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि ।

---

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध वर्षपृथक्त्वप्रमाण होता है ।

§ ७०१ प्रथम संग्रह कृष्टि वेदकके अन्तिम समयमें दस हजार वर्षप्रमाण स्थितिबन्ध होता हुआ इस समय तीन घातिकर्मोंका आगे जैसा जिनदेवने देखा है उसके अनुसार प्रवृत्त होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* शेष कर्मोंका स्थितिबन्ध संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता है ।

§ ७०२ यह सूत्र सुगम है ।

* संज्वलनोंका स्थितिसत्कर्म पाँच वर्ष और अन्तमुहूर्त कम चार माहप्रमाण होता है ।

§ ७४३ यहाँपर पहलेके सन्धिविषयक आठ माह अधिक छह वर्षप्रमाण स्थितिसत्कर्मसे स्थितिसत्कर्मकी हानि तीन भाग अधिक एक वर्षप्रमाण त्रैराशिक विधिसे साध ले आनी चाहिए ।

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्षप्रमाण है ।

§ ७०४ यह सूत्र सुगम है ।

* नाम गोत्र और वेदनीय कर्मका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्षप्रमाण है ।

§ ७०५ यह सूत्र भी सुगम है । इस प्रकार क्रोध कृष्टि वेदक कालके दूसरे त्रिभागमें दूसरी संग्रह कृष्टिकी वेदकताका अनुभव करके उसके कालके समाप्त हो जानेपर उसके बाद अनन्तर समयमें तीसरी संग्रहकृष्टिके वेदकरूपमें परिणमन करनेवाला क्षपक जीव उसके प्रदेशपुञ्जको दूसरी स्थितिमेंसे अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको उदयादि गुणश्रेणीरूपसे अपने वेदक कालसे एक आवलि अधिक करके सिंचन करता है इस बातका कथन करते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

* उसके बाद अनन्तर समयमें क्रोधकी तीसरी कृष्टिमेंसे प्रदेशपुञ्जका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है ।

§ ७०६ सुगममेदं सुत्तं। णवरि एदम्मि समये बिदियसगहकिट्टीए दुसमयूणदोआवलियमेत्तणवकबंधुच्छिट्ठावलियवज्ज सव्वमेव पदेसग्ग तदियसगहकिट्टीसरूवेण परिणमिय सगसरूवेण णट्ठमिदि बट्ठव्व, तदियसंगहकिट्टी च सगपुव्विल्लायामादो पण्णारसगुणमेत्तायामा बिदियसगहकिट्टी दव्वपविसणमाहप्पेण सजादा त्ति वट्ठव्वा। एव च कोहतदियसगहकिट्टीवेदगभावेण परिणदस्स पढमसमये तिस्से तदियसगहकिट्टीए असखेज्जा भागा वेदिज्जति, तिस्से चेव असंखेज्जा भागा बज्झति त्ति इममत्थविसेसं फुडोकरेमाणो सुत्तणिद्देसमुत्तरं कुणइ—

* ताधे कोहस्स तदियसगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणमसखेज्जा भागा उदिण्णा।

* तासिं चेव असंखेज्जा भागा बज्झति।

§ ७०७ सुगममेव सुत्तद्दय। णवरि उदिण्णाहितो विसेसहीणाओ बज्झमाणियाओ होंति त्ति एसो विसेसणिद्देसो पुव्वुत्तबंधोदयणिव्वग्गणापरूवणादो अणुगंतव्वो, सव्वासिं चेव वेदिज्जमाणकिट्टीण साहारणभावेण तिस्से पयट्टत्तादो।

* जो विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी सो चेव विधी तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स वि कायव्वो।

§ ७०८ विदियसगहकिट्टिं वेदयमाणस्स जो विधी पुव्वं परूविदो सो चेव णिरवसेसमेत्थ

---

§ ७०६ यह सूत्र सुगम है। इतनी विशेषता है कि इस समय दूसरी सग्रहकृष्टिके दो समय कम दो आवलिप्रमाण नवकबन्ध उच्छिष्टावलिको छोड़कर सम्पूर्ण ही प्रदेशपुजको तीसरी सग्रह कृष्टिरूपसे परिणमाकर अपने रूपसे नष्ट कर देता है ऐसा जानना चाहिए तथा तीसरी संग्रहकृष्टि अपने पहिलेके आयामसे पन्द्रहगुणी आयामवाली दूसरी संग्रहकृष्टिके प्राप्त हुए माहात्म्यवश हो जाती है ऐसा जानना चाहिए, इस प्रकार क्रोधकी तीसरी संग्रहकृष्टिके वेदकभावसे परिणत हुए क्षपक जीवके प्रथम समयमे उस तीसरी सग्रहकृष्टिका असंख्यात बहुभाग प्रदेशपुंज वेदा जाता है और उसीका असंख्यात बहुभाग प्रदेशपुज बंधता है इस प्रकार इस अर्थविशेषको स्पष्ट करते हुए आगेके सूत्रका निर्देश करते हैं—

* उस समय क्रोधकी तीसरी सग्रहकृष्टिकी अन्तरकृष्टियोंका असख्यात बहुभाग उदीर्ण हो जाता है।

* तथा उन्हींका असख्यात बहुभाग बंधता है।

§ ७०७ ये दोनो सूत्र सुगम हैं। इतनी विशेषता है कि उदीर्ण हुए प्रदेशपुंजसे बंधनेवाले प्रदेशपुज विशेष हीन होते हैं। यहाँ 'विशेष' का निर्देश पूर्वोक्त बन्ध और उदय निर्वर्गणाकी प्ररूपणासे जान लेना चाहिए, क्योंकि सभी वेदी जानेवाली कृष्टियोंके साधारणरूपसे उसकी प्रवृत्ति होती है।

* दूसरी कृष्टिका वेदन करनेवालेकी जो विधि है वही विधि तीसरी सग्रहकृष्टिका वेदन करनेवालेकी भी करनी चाहिए।

§ ७०८ दूसरी सग्रहकृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवके जो विधि पहिले कह आये हैं

वि कायव्वो, विसेसाभावादो त्ति भणिदं होदि। एवमेदेण विहाणेण कोहतदियकिट्टिं वेदेमाणस्स पढमट्ठिदीए कमेण परिहीयमाणाए जाधे आवलिय पडिआवलियाओ सेसाओ ताधे आगाल पडिआगालवोच्छेदं कादूण तदो पुणो वि समयूणावलियं गालिय समयाहियावलियमेत्तपढमट्ठिदिं धरेदूणावट्ठिदस्स तम्मि समये कोधवेदगद्धा समप्पदि त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* तदियकिट्टिं वेदेमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलियाए समयाहियाए सेसाए चरिमसमयकोधवेदगो।

§ ७०९ गयत्थमेव सुत्तं।

* जहण्णगो ठिदिउदीरगो।

§ ७१० ताधे कोहसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो च होदि, किं कारणं ? एक्किस्से चेव ट्ठिदीए तत्थुदीरणदंसणादो। संपहि एत्थेव संधिविसये सव्वकम्माणं ट्ठिदिबंध ट्ठिदिसंतकम्मपमाणावहारणट्ठमुत्तरसुत्तकलावमाह—

* ताधे ट्ठिदिबंधो संजलणाणं दोमासा पडिवुण्णा।

§ ७११ पुव्वुत्तसंधिविसयट्ठिदिबंधादो अंतोमुहुत्तूणवीसदिवसमेत्तट्ठिदिबंधपरिहाणीए कमेण जादाए संपुण्णबेमासमेत्तट्ठिदिबंधसिद्धीए णिव्विसंवादमेत्थ समुवलंभादो।

वही पूरी विधि यहाँपर भी करनी चाहिए क्योंकि उससे इसमें कोई भेद नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार इस विधिसे क्रोधकी तीसरी संग्रहकृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवके प्रथम स्थितिके क्रमसे हीन होनेपर जिस समय आवलि और प्रत्यावलि शेष रह जाती है उस समय आगाल और प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति करके तदनन्तर फिर भी एक समय कम एक आवलिप्रमाण कालको गलाकर एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण प्रथम स्थितिको रखकर अवस्थित हुए क्षपक जीवके उस समय क्रोधका वेदककाल समाप्त होता है ऐसा कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* तीसरी कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवकी जो प्रथम स्थिति है उस प्रथम स्थितिके एक समय अधिक आवलिप्रमाण शेष रहनेपर वह क्षपक जीव अन्तिम समयवर्ती क्रोध संज्वलन का वेदक होता है।

§ ७०९ यह सूत्र गतार्थ है।

* तथा उसी समय जघन्य स्थितिका उदीरक होता है।

§ ७१० उस समय क्रोध संज्वलनकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है, क्योंकि वहाँपर एक ही स्थितिकी उदीरणा देखी जाती है। अब यहीं संधिके विषयमें सभी कर्मोंका स्थितिबन्ध और स्थितिसत्कर्मके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रसमूहको कहते हैं—

* उस समय संज्वलनोंका स्थितिबन्ध पूरा दो माहप्रमाण होता है।

§ ७११ पूर्वोक्त सन्धिविषयक स्थितिबन्धसे अन्तमुहूर्त कम बीस दिवसप्रमाण स्थितिबन्धकी क्रमसे हानि होनेपर सम्पूर्ण दो माहप्रमाण स्थितिबन्धकी सिद्धि विसंवादरहित होकर यहाँपर उपलब्ध हो जाती है।

* सतकम्म चत्तारि वस्साणि पुण्णाणि ।

§ ७१२ एत्थ सतिभागवस्समेत्तट्ठिविसतपरिहाणीए पुव्व व तेरासियकमेणाणयण काढूणं पयदट्ठिदिसतपमाणसिद्धो परूवेयव्वा । एत्थ सेसकम्माणं ट्ठिदिबध ट्ठिदिसतकम्मपमाणपरिक्खा सुगमा त्ति णाढत्ता । एवमेत्तिएण परूवणापबधेण कोहवेदगद्ध समाणिय सपहि एत्तो से काले जहावसरपत्त माणपढमसगहकिट्टिमोकड्डियूण पढमट्ठिदिविण्णासमेवेव विहाणेण काढूण वेदेदि त्ति पदुप्पाएमाणो उवरिम सुत्तपबधमाढवेइ—

* से काले माणस्स पढमकिट्टिमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि ।

§ ७१३ एत्थ कारगतदियसगहकिट्टी चेव वेदगपढमसगहकिट्टीभावेण[1] णिद्दिट्ठा दट्ठव्वा । सेसं सुगम । सपहि एदिस्से पढमट्ठिदीए पमाणावहारणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

* जा एत्थ सव्वमाणवेदगद्धा तिस्से वेदगद्धाए तिभागमेत्ता पढमट्ठिदी ।

§ ७१४ कोहकिट्टीवेदगद्धादो विसेसहीणा अंतोमुहुत्तमेत्ती । एत्थतणसव्वमाणवेदगद्धा होदि । पुणो एदिस्से तिभागमेत्ती पढमसगहकिट्टीवेदगद्धा होइ । तत्तो आवलियब्भहिया होढूण कीरमाणी एसा पढमट्ठिदी सव्वमाणवेदगद्धाए तिभागमेत्ती होदि त्ति णिद्दिट्ठा । अह वि

---

* उसी समय संज्वलनोंका स्थित सत्कम पूरा चार वर्षप्रमाण होता है ।

§ ७१२ यहाँपर तृतीय भाग अधिक वषप्रमाण स्थितिसत्कर्मकी हानि होनेपर पहिलेके समान त्रैराशिक क्रमसे लाकर प्रकृतस्थितिसत्कमके प्रमाणको सिद्ध प्ररूपित कर लेनी चाहिए । यहाँपर शेष कर्मोंके स्थितिबन्ध और स्थितिसत्कर्मके प्रमाणकी परीक्षा सुगम है, इसलिए उनका आरम्भ नही किया है । इस प्रकार इतने प्ररूपणासम्बन्धी प्रबन्ध द्वारा क्रोधके वेदक कालको समाप्त करके अब इसके बाद तदनन्तर समयमे यथावसर प्राप्त मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिका अपकषण करके और प्रथम स्थितिकी रचना इस विधिसे करके वेदन करता है इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धका आरम्भ करते हैं—

* तदनन्तर समयमे मानकी प्रथम कृष्टिका अपकषण करके प्रथम स्थितिको करता है ।

§ ७१३ यहाँपर कारककी तीसरी सग्रहकृष्टि ही वेदककी प्रथम सग्रहकृष्टिरूपसे निर्दिष्ट की गयी है । शेष कथन सुगम है । अब इस प्रथम स्थितिके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* यहांपर मानवेदकका जो सम्पूर्ण काल है उस वेदककालके तृतीय भागप्रमाण प्रथम स्थिति होती है ।

§ ७१४ क्रोधके वेदक कालसे वह प्रथम स्थितिविशेष हीन होती है । यहाँपर मानका सम्पूर्ण वेदककाल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । पुन इसका तृतीय भागप्रमाण प्रथम सग्रहकृष्टिका वेदककाल होता है । इसलिए एक आवलिसे अधिक होकर की जानेवाली यह प्रथम स्थिति सम्पूर्ण मान

---

१ ता प्रतौ किट्टीवेदगभावेण इति पाठ ।

भागं मोत्तूण सेसमज्झिमकिट्टीसरूवेण असंखेज्जे भागे बंधदि त्ति एसो एदस्स सुत्तद्दयस्स समुदायत्थो।[1] णवरि संकमणावलियमेत्तकालं पुव्वकिट्टीण चेव पदेसग्गमोकड्डियूण सोलसगुणकिट्टीणमसंखेज्जा-भागसरूवेणं वेदेदि तदणुसारेणेव च बंधदि त्ति घेत्तव्वं। संपहि सेसकसायेसु अणुभागबंधपवुत्ती केरिसी होदि त्ति आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* सेसाणं कसायाणं पढमसंगहकिट्टीओ बंधदि।

§ ७१८ सुगमं।

* जेणेव विहिणा कोधस्स पढमकिट्टी वेदिदा तेणेव विधिणा माणस्स पढम-किट्टिं वेदयदि।

§ ७१९. समये समये अग्गकिट्टिप्पहुडि उवरिमासंखेज्जभागविसयाओ किट्टीओ अणुसमय-ओवट्टणाघादेण घादेमाणो णवकबंधपदेसग्गेण संकामिज्जमाणपदेसग्गेण च किट्टीअंतरेसु संगह-किट्टीअंतरेसु च जहासंभवमपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेमाणो अणुसमयमणंतगुणहाणीए बंधोदय-जहण्णुक्कस्सणिव्वग्गणाओ च कुणमाणो जहाकोहपढमसंगहकिट्टीए वेदगो जादो तहा चेव माण-पढमसंगहकिट्टिमेण्हिं वेदेदि, ण एत्थ किंचि णाणत्तमत्थि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो। संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

छोडकर शेष मध्यम कृष्टिरूपसे असंख्यात बहुभागको बांधता है। इस प्रकार इन दो सूत्रोंका यह समुच्चयरूप अर्थ है। इतनी विशेषता है कि संक्रमणावलिप्रमाण काल तक पूर्व कृष्टियोंके ही प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके सोलहगुणी प्रमाण कृष्टियोंके असंख्यात बहुभागरूपसे वेदन करता है और उसके अनुसार ही बन्ध करता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। अब शेष कषायोंमें अनुभागबन्धकी प्रवृत्ति कैसी होती है ऐसी आशंका होनेपर निर्णय करनेके लिए आगेके सूत्रका आरम्भ करते हैं—

* शेष कषायोंकी प्रथम संग्रहकृष्टियोंको बाँधता है।

§ ७१८ यह सूत्र सुगम है।

* जिस ही विधिसे क्रोधकी प्रथम कृष्टिका वेदन किया है उसी विधिसे मानकी प्रथम कृष्टिका वेदन करता है।

§ ७१९. प्रत्येक समयमें अग्र कृष्टिसे लेकर उपरिम असंख्यात भागविषयक कृष्टियोंका अनुसमय अपवर्तनाघातके द्वारा घात करता हुआ तथा नवकबन्ध प्रदेशपुंजरूपसे और संक्रम्यमाण प्रदेशपुंजरूपसे कृष्टियोंके अन्तरालोंमें और संग्रहकृष्टियोंके अन्तरालोंमें यथासम्भव अपूर्व कृष्टियोंकी रचना करता हुआ अनुसमय अनन्तगुणहानिरूपसे बन्ध और उदयरूप जघन्य और उत्कृष्ट निर्वर्गणाओंको करता हुआ जिस प्रकार क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिका वेदक हुआ था उसी प्रकार मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिका इस समय वेदन करता है, इसमें कुछ भी नानापन (भेद) नहीं है यह यहाँपर सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

---

१ ता. प्रतौ मसंखेज्जभागसरूवेण इति पाठः

* किट्टीविणासणे बज्झमाणयेण संकामिज्जमाणयेण च पदेसग्गेण अपुव्वाणं किट्टीण करणे किट्टीण बंधोदयणिव्वग्गणकरणे एदेसु करणेसु णत्थि णाणत्त, अण्णेसु च अभणिदेसु।

§ ७२० 'किट्टीविणासणे णत्थि णाणत्त' एवं भणिदे समयं पडि णिरुद्धसंगहकिट्टीए अग्गग्गादो असंखेज्जदिभाग खंडेदि त्ति तेण तत्थ विसेसो णत्थि त्ति भणिदं होदि। एवं सुत्ताणुसारेण णेदव्वं। णवरि 'अण्णेसु च अभणिदेसु' एवं वुत्ते जाणि अण्णाणि अभणिदाणि करणाणि तेसु वि करणेसु णत्थि विसेसो, कोहपढमसंगहकिट्टीए बंधसंतकम्मपदेसेहि णिसेगादिपरूवणाओ जाओ भणिदाओ तासिं पि परूवणे एत्थ कीरमाणे सो चेव भंगो, ण तत्थ को वि विसेस संभवो त्ति भणिदं होदि। एवमेदेण विहाणेण माणपढमसंगहकिट्टि वेदेमाणस्स कमेण पढमट्ठिदीए झीयमाणाए समयाहियावलियमेत्तपढमट्ठिदिं धरेदूणावट्ठिदस्स तक्कालभाविओ जो परूवणा विसेसो तमुवरिमसुत्ताणुसारेण वत्तइस्सामो—

* एदेण कमेण माणपढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए जाधे समयाहियावलियसेसा ताधे तिण्हं संजलणाणं ठिदिबंधो मासो वीसं च दिवसा अंतोमुहुत्तूणा।

§ ७२१ पुव्वुत्तकोहवेदगचरिमसमयविसयट्ठिदिबंधो दोमासमेत्तो जादो। तत्तो जहाकमं परिहाइदूणेण्हि संजलणाणं ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तूणवीसदिवसाहियमासमेत्तो माणपढमसंगहकिट्टी

---

* कृष्टियोंके विनाश करनेमें तथा बध्यमान और संक्रमाण प्रदेशपुंजरूपसे अपूर्व कृष्टियों के करनेमें तथा कृष्टियोंके बन्ध और उदयरूप निर्वर्गणाकरणमें इन करणोंमें कोई भेद नहीं है तथा जो करण यहाँ नहीं कहे गये हैं उन करणोंमें भी कोई भेद नहीं है।

§ ७२० कृष्टियोंके विनाश करनेमें कोई भेद नहीं है' ऐसा कहनेपर प्रत्येक समयमें विवक्षित संग्रहकृष्टिके अग्रभागसे असंख्यातवें भागका खण्डन करता है इस रूपसे उसमें कोई भेद नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार सूत्रके अनुसार कथन कर लेना चाहिए। इतनी विशेषता है कि 'अण्णेसु च अभणिदेसु' ऐसा कहनेपर जो अन्य करण नहीं कहे गये हैं, उन करणोंमें भी कोई विशेष नहीं है, क्योंकि क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिके बन्ध और सत्कर्मप्रदेशोंकी अपेक्षा जो निषेकादि प्ररूपणाएँ कह आये हैं उनकी भी प्ररूपणा यहाँपर करनेपर वह उसी प्रकार होती है उसमें कोई विशेष सम्भव नहीं है यह सूत्रका तात्पर्य है। इस विधिसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिका वेदन करनेवाले जीवकी क्रमसे प्रथम स्थितिके क्षीण होनेपर तथा एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण प्रथम स्थितिको रखकर अवस्थित हुए उसके उस कालमें जो प्ररूपणाभेद होता है उसे उपरिम सूत्रके अनुसार बतलावेंगे—

* इस क्रमसे मानकी प्रथम कृष्टिका वेदन करते हुए जो प्रथम स्थिति होती है उस प्रथम स्थितिका जब एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल शेष रहता है तब इन संज्वलनोंका स्थितिबन्ध एक माह और अन्तर्मुहूर्त कम बीस दिनप्रमाण होता है।

§ ७२१ पूर्वोक्त क्रोधकषायका वेदन करते हुए अन्तिम समयमें जो स्थितिबन्ध दो माह प्रमाण था वह उससे क्रमसे घटकर इस समय संज्वलनोंका स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त कम बीस दिन

वेदगचरिमसमये जादो त्ति वुत्तं होदि । एत्थ ट्ठिदिबंधपरिहाणिपमाणमंतोमुहुत्ताहियदसदिवसमेत्तं तेरासियकमेण साहेयव्वं । जइ एवं, दसदिवसमेत्तो चेव ट्ठिदिबंधपरिहाणी होदु, अंतोमुहुत्ताहियत्तमेत्थ कत्तो समुवलद्धमिदि णासंकणिज्जं, अद्धाविसेसमस्सियूण तदुवलद्धीए विरोहाभावादो ।

* संतकम्मं तिण्णि वस्साणि चत्तारि मासा च अंतोमुहुत्तूणा ।

§ ७२२ कोहवेदगचरिमसमए चत्तारि वस्समेत्तं संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं जाद, तत्तो जहाकममंतोमुहुत्ताहियअट्ठमासमेत्तट्ठिदिसंतपरिहाणीए जादाओ अंतोमुहुत्तूणचत्तारिमासब्भहियाणि तिण्णि वस्साणि तिण्हं संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्ममेण्हिं संजादमिदि एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो । एवमेदीए परूवणाए माणपढमसंगहकिट्टीवेदगद्धमणुपालिय पुणो जहावसरपत्ताए माणविदियसंगहकिट्टीए पढमट्ठिदिसमुप्पायणपुरस्सरं वेदगभावेण परिणमदि त्ति परूवणट्ठमुवरिमो सुत्तपबंधो—

* से काले माणस्स विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि ।

§ ७२३ सुगमं । णवरि उदयादिगुणसेढिसरूवेण पढमट्ठिदिमेसो णिक्खिवमाणो सगवेदगकालादो आवलियब्भहियं कादूण पढमट्ठिदिविण्णासं कुणदि त्ति घेत्तव्वं ।

* तेणेव विहिणा संपत्तो माणस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से समयाहियावलियसेसा त्ति ।

अधिक एक माहप्रमाण मानसज्वलनकी प्रथम सग्रहकृष्टिका वेदन करनेके अन्तिम समयमे हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँपर स्थितिबन्धकी हानिका प्रमाण अन्तमहूत अधिक दस दिन मात्र त्रैराशिक क्रमसे साध लेना चाहिए।

शका—यदि ऐसा है तो अन्तमुहूर्त अधिक यहाँपर किस कारणसे उपलब्ध होता है ?

समाधान—ऐसी आशका नही करना चाहिए क्योकि कालविशेषका आश्रय लेकर उसकी उपलब्धि होनेमे विरोध नही पाया जाता।

* उन कर्मोका सत्कम तीन वष और अन्तमुहूत कम चार माहप्रमाण होता है।

§ ७२२ क्रोधवेदकको अन्तिम समयमे सज्वलनोका स्थितिसत्कर्म चार वषप्रमाण था, उससे यथाक्रम अन्तमहूत अधिक आठ माह स्थितिसत्कर्मकी हानि होनेपर अन्तमहूर्त कम चार माह अधिक तीन वष तीन सज्वलनोका स्थितिसत्कम इस समय हो गया है यह इस सूत्रका भावार्थ है। इस प्रकार इस प्ररूपणा द्वारा मानकी प्रथम सग्रहकृष्टिके वेदक कालका पालन करके पुन यथावसर प्राप्त मानकी द्वितीय संग्रहकृष्टिकी प्रथम स्थितिके उत्पादनपूर्वक वेदकरूपसे क्षपक जीव परिणमता है इस बातका कथन करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* तदनन्तर समयमे मानकी द्वितीय कृष्टिमेसे प्रदेशपुजका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है।

§ ७२३ यह सूत्र सुगम है। इतनी विशेषता है कि उदयादि गुणश्रेणीरूपसे प्रथम स्थिति की यह क्षपक जीव रचना करता हुआ अपने वेदककालसे एक आवलि अधिक करके प्रथम स्थितिकी रचना करता है।

* उसी विधिसे मानकी दूसरी कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपककी जो मानकी प्रथम स्थिति है उसमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल शेष प्राप्त होता है।

§ ७२४ माणपढमसंगहकिट्टिमहिकिच्च पुव्वं परूविदो जो विही तेणेव विहिणा अणूणाहियेण संजुत्तो एसो सगकिट्टीवेदगद्धाए चरिमसमयसंपत्तो। ताधे अप्पणो पढमट्ठिदी समयाहियावलिय-मेत्ती, सेसासेसपढमट्ठिदीए सगवेदगकालब्भंतरे णिज्जिण्णत्तादो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थविणिण्णओ। संपहि एदम्मि उद्देसे वट्टमाणस्सेदस्स तिण्हं संजलणाणं ठिदिबंध ट्ठिदिसंतकम्मपमाणावहारणट्ठ मुत्तरो सुत्तपबंधो—

* ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो दस च दिवसा देसूणा।

§ ७२५ पुव्वुत्तसण्णिविसयट्ठिदिबंधादो जहाकममंतोमुहुत्ताहियदसदिवसपरिहाणिवसेण पयदट्ठिदिबंधसिद्धीए णिव्विसंवादमुवलंभादो।

* संतकम्मं दो वस्साणि अट्ठ च मासा देसूणा।

§ ७२६ एत्थ वि ट्ठिदिसंतपरिहाणी सादिरेयअट्ठमासमेत्ता तेरासियकमेण साहेयव्वा। सेसं सुगमं।

* से काले माणतदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि।

* तेणेव विहिणा संपत्तो माणस्स तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से आवलिया समयाहियमेत्ती सेसा त्ति।

* ताधे माणस्स चरिमसमयवेदगो।

§ ७२४ मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिको अधिकृत करके पहले जो विधि कह आये हैं न्यूना-धिकतासे रहित उसी विधिसे संयुक्त होकर यह क्षपक जीव अपनी कृष्टिवेदक कालके अन्तिम समयको प्राप्त होता है। उस समय अपनी प्रथम स्थिति एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण शेष रहती है, क्योंकि शेष सम्पूर्ण प्रथम स्थिति अपने वेदककालके भीतर ही निर्जीर्ण हो जाती है यहाँपर यह सूत्रार्थका निर्णय है। अब इस स्थानपर विद्यमान इस क्षपक जीवके तीन सज्वलनोंके स्थितिबन्ध और स्थितिसत्कर्मके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* इस समय संज्वलनोंका स्थितिबन्ध एक माह और कुछ कम दस दिवसप्रमाण होता है।

§ ७२५ पूर्वोक्त सन्धिविषयक स्थितिबन्धके यथाक्रम अन्तर्मुहूर्त अधिक दस दिवसकी हानिवश प्रकृत स्थितिबन्धकी सिद्धि विसवादरहित होकर पायी जाती है।

* उन कर्मोंका सत्कर्म दो वर्ष कुछ कम आठ माहप्रमाण होता है।

§ ७२६ यहाँपर भी स्थितिसत्कर्मकी हानि साधिक आठ माहप्रमाण त्रैराशिक क्रमसे साध लेनी चाहिए। शेष कथन सुगम है।

* तदनन्तर समयमें मानकी तृतीय कृष्टिमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थिति को करता है।

* तथा उसी विधिसे मानकी तृतीय कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवके जो प्रथम स्थिति प्राप्त होती है उसके एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल अब शेष रहता है।

* तब मानका अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है।

* ताधे तिण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो पडिवुण्णो ।

* संतकम्मं बे वस्साणि पडिवुण्णाणि ।

§ ७२७ एत्थ माणवेदगद्धाए परिहीणासेसट्ठिदिसंतकम्मपमाणं वेवस्समेत्तमिदि बट्ठव्वं । अवसेसं सुगमं ।

* तदो से काले मायाए पढमकिट्टीए पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि ।

* तेणेव विहिणा सपत्तो मायापढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से समयाहियावलिया सेसा त्ति ।

* ताधे ठिदिबंधो दोण्हं संजलणाणं पणुवीस दिवसा देसूणा ।

* ट्ठिदिसंतकम्मं वस्समट्ठ च मासा देसूणा ।

* से काले मायाए विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि ।

* सो वि मायाए विदियकिट्टीवेदगो तेणेव विहिणा सपत्तो मायाए विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलिया समयाहिया सेसा त्ति ।

* ताधे ट्ठिदिबंधो वीस दिवसा देसूणा ।

---

* उस समय तीन सज्वलनोंका स्थितिबन्ध पूरा एक माहप्रमाण होता है ।

* तथा उनका स्थितिसत्कर्म पूरा दो वर्षप्रमाण होता है ।

§ ७२७ यहाँपर मानवेदककालसे हीन समस्त स्थितिसत्कर्मका प्रमाण दो वर्षप्रमाण होता है ऐसा जानना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* तदनन्तर समयमें मायासंज्वलनकी प्रथम कृष्टिके प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है ।

* तथा उसी विधिसे मायाकी प्रथम कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवके जो प्रथम स्थिति है उसका जब एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहता है ।

* तब दो संज्वलनोंका स्थितिबन्ध कुछ कम पच्चीस दिवस प्रमाण होता है ।

* तथा स्थितिसत्कर्म एक वर्ष और कुछ कम आठ माहप्रमाण होता है ।

* तदनन्तर समयमें मायासंज्वलनकी द्वितीय कृष्टिमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है ।

* मायाकी दूसरी कृष्टिका वेदक वह जीव भी उसी विधिसे मायाकी दूसरी कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपकको जो प्रथम स्थिति है उस प्रथम स्थितिका जब एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहता है ।

* तब उसका स्थितिबन्ध कुछ कम बीस दिवसप्रमाण होता है ।

* ट्ठिदिसंतकम्मं सोलस मासा देसूणा।

* से काले मायाए तदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि।

* तेणेव विहिणा संपत्तो मायाए तदियकिट्टिं वेदगस्स पढमट्ठिदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति।

* ताधे मायाए चरिमसमयवेदगो।

* ताधे दोण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो अद्धमासो पडिवुण्णो।

* ठिदिसंतकम्ममेक्कं वस्सं पडिवुण्णं।

* तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिबंधो मासपुधत्तं।

* तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि।

* इदरेसिं कम्माणं ठिदिसंतकम्मं असंखेज्जाणि वस्साणि।

§ ७२८ सुगमो च एसो सव्वो सुत्तत्थो त्ति ण एत्थ वक्खाणायरो, सुगमत्थपरूवणाए गंथगउरवं मोत्तूण फलविसेसाणुवलंभादो। णवरि मायावेदगस्स तिण्हं संगहकिट्टीणं तिसु चरिम-संधीसु संजलणाणं ठिदिबंधपरिहाणी ट्ठिदिसंतपरिहाणी च तेरासियकमेणाणुगंतव्वा। सव्वासु च

* तथा स्थितिसत्कर्म कुछ कम सोलह माहप्रमाण होता है।

* तदनन्तर समयमें मायाकी तीसरी कृष्टिमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है।

* तथा उसी विधिसे मायाकी तीसरी कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवके प्रथम स्थितिमें जब एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहता है।

* तब वह मायाका अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है।

* उसमें दोनों सज्वलनोंका स्थितिबन्ध पूरा आधा माहप्रमाण होता है।

* तथा स्थितिसत्कर्म पूरा एक माहप्रमाण होता है।

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध एक माह पृथक्त्वप्रमाण होता है।

* तथा उन्हीं तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता है।

* तथा इतर कर्मोंका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्षप्रमाण होता है।[1]

§ ७२८ यह समस्त सूत्र सुगम है, इसलिए यहाँपर हमने व्याख्यान नहीं किया है। क्योंकि सुगम अर्थकी प्ररूपणा करनेमें ग्रन्थकी गुरुताको छोडकर कोई फलविशेष नहीं पाया जाता है। इतनी विशेषता है कि मायावेदकको तीनो संग्रहकृष्टियोंकी तीनों अन्तिम सन्धियोंमें सज्वलनोंकी स्थितिबन्धकी हानि और स्थितिसत्कर्मकी हानि त्रैराशिक क्रमसे ले आनी चाहिए

1 यहाँ इतर कर्मोंका स्थितिबन्ध संख्यात वर्ष प्रमाण होता है इस आशयका सूत्र मूलमें नहीं आया है। मात्र कसायपाहुडसूत्रमें ब्रेकेटमें इसका निर्देश किया गया है। देखो पृ ८६१।

सधीसु णाणावरणादिकम्माण ट्ठिदिबंध ट्ठिदिसतकम्मपमाणाणुगमो सुगमो त्ति ण परूविदो। एदम्मि पुण मायावेदगचरिमसंधीए तिण्हं घादिकम्माण ट्ठिदिबंधो वासपुधत्तमेत्तो, थोपुव्वुत्त संधिविसयट्ठिदिबंधादो जहाकममोवट्टिदूण मासपुधत्तमेत्तो संवुत्तो। अघादिकम्माण पि तप्पाओग्गसंखेज्जवस्सपमाणो जइ वि सुत्ते मुत्तकंठमणुवइट्ठो तो वि देसामासयभावेण सूचिदो दट्ठव्वो। उभयेसि पि कम्माण ट्ठिदिसतपमाणपरिक्खा सुत्तणिद्दिट्ठा सुगमा। एवमेत्तिएण परूवणा पबधेण मायावेदगद्धमणुपालिय से काले लोभवेदगभावेण परिणममाणस्स जो परूवणापबधो तण्णिणयकरणट्ठमुवरिमपबधमाह—

※ तदो से काले लोभस्स पढमकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि।

§ ७२९. मायासजलणस्स तिण्हं सगहकिट्टीण वेदगद्धासु जहाकम परिसमत्तासु तदणंतर समये लोभसजलणकिट्टीओ वेदेदुमाढवेमाणो पुव्वमेव ताव पढमसगहकिट्टीए पदेसग्गमोकड्डियूण सगवेदगकालादो आवलियब्भहिय कादूण उदयादिगुणसेढिकमेण पढमट्ठिदिमेसो करेदि त्ति वुत्त होदि। एसो पढमट्ठिदी सयलवेदगद्धाए सादिरेयतिभागमेत्तो बादरलोभवेदगद्धाए च सादिरेयदु भागमेत्ता त्ति घेत्तव्वा। एवमेदीए पढमट्ठिदीए लोभसंजलणपढमसगहकिट्टि वेदेमाणस्स सव्वावासयेसु पुव्वुत्तो चेव विधी णिरवसेसमणुगतव्वो त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तर भणइ—

तथा सब सन्धियोमे ज्ञानावरणादि कर्मोंके स्थितिसत्कर्मोंके प्रमाणका अनुगम सुगम है, इसलिए उनका यहां प्ररूपण नही किया है। परन्तु इस मायावेदकके अन्तिम सन्धिमे तीन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध वर्षपृथक्त्वप्रमाण है जो दो पूर्वोक्त सन्धि विषयक स्थितिबन्धसे क्रमसे घटकर मास पथक्त्वप्रमाण हो गया है तथा अघाति कर्मोका भी तत्प्रायोग्य संख्यात वर्षप्रमाण यद्यपि सूत्रमें मुक्तकण्ठ नही कहा गया है तो भी देशामर्षकरूपसे सूचित किया गया जान लेना चाहिए। दोनो ही कर्मोंके स्थितिसत्कर्मके प्रमाणकी परीक्षा सूत्रनिर्दिष्ट और सुगम है इस प्रकार इतने प्ररूपणा प्रबन्धके द्वारा मायावेदक कालका पालन करके तदनन्तर समयमे लोभवेदक कालरूपसे परिणमन करनेवाले क्षपक जीवका जो प्ररूपणाप्रबन्ध है उसका निर्णय करनेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

※ उसके बाद अनन्तर समयमें लोभकी प्रथम कृष्टिमेंसे प्रदेशपुजका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है।

§ ७२९. मायासज्वलनकी तीनों सग्रहकृष्टियोके वेदककालोके क्रमसे समाप्त होनेपर तदनन्तर समयमे लोभसज्वलनकी कृष्टियोका वेदन करनेके लिए आरम्भ करता हुआ पहले ही सर्व प्रथम प्रथम सग्रहकृष्टिके प्रदेशपुजका अपकर्षण करके तथा अपने वेदक कालसे एक आवलि अधिक करके उदयादि गुणश्रेणीरूपसे यह क्षपक जीव प्रथम स्थितिको करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यह प्रथम स्थिति सम्पूर्ण वेदक कालके साधिक तीसरे भागप्रमाण होती है और बादर लोभवेदक कालके साधिक द्वितीय भागप्रमाण होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार इस प्रथम स्थितिकी लोभसज्वलनसम्बन्धी प्रथम सग्रहकृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवके सभी आवासकोमें पूरी पूर्वोक्त विधि ही जाननी चाहिए इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते है—

* तेणेव विहिणा खवगो लोभस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणस्स पढमट्ठिदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति ।

§ ७३० तेणेव पुव्वुत्तेण विहिणा एदिस्से संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणमसंखेज्जे भागे वेदेमाणो उदिण्णाहिंतो विसेसहीणाओ बधमाणो समये समये बंधोदयजहण्णुक्कस्सणिव्वग्गणाओ च तहा चेव कुणमाणो सताणुभागस्स अणुसमयोवट्टणाघादं च तहा चेवाणुपालेमाणो अपुव्वाओ च किट्टीओ बज्झमाणसंकामिज्जमाणपदेसग्गसबंधिणीओ किट्टीअंतरेसु संगहकिट्टीण च हेट्ठा जहासंभवं पुव्व भंगेणेव णिव्वत्तेमाणो एसो अप्पणो वेदिज्जमाणपढमट्ठिदीए तमुद्देसं संपत्तो जम्मि उद्देसे वट्टमाणस्स णिरुद्धपढमट्ठिदीए वेदिदसेसा समयाहियावलिया सेसा त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स समुदायत्थो। संपहि एदम्मि संधिविसेसे वट्टमाणस्स सव्वेसिं कम्माणं ठिदिबंधादिपमाणावहारणट्ठमुवरिमं सुत्त पबंधमाह—

* ताधे लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं ।

§ ७३१ पुव्विल्लमायावेदगचरिमसंधिविसये ट्ठिदिबंधादो जहाकमं परिहाइदूण अंतोमुहुत्त पमाणो लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो एदम्मि विसये संवुत्तो त्ति भणिदं होदि ।

* ट्ठिदिसंतकम्मं पि अंतोमुहुत्तं ।

§ ७३२ पुव्विल्लसंधिविसये संपुण्णवस्समेत्त लोभसंजलणट्ठिदिसंतकम्मं तत्तो कमेण परिहाइ

* उसी विधिसे लोभसंज्वलनकी प्रथम कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जोवके जब प्रथम स्थितिमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष रहता है ।

§ ७३० उसी पूर्वोक्त विधिसे इस संग्रहकृष्टिकी अंतरकृष्टियोंके असंख्यात बहुभागका वेदन करनेवाला और उदीर्ण अंतरकृष्टियोंसे विशेष हीन अंतरकृष्टियोंको बांधनेवाला तथा समय समयमें बंध और उदयरूप जघन्य और उत्कृष्ट निवर्गणाओंको उसी प्रकार करनेवाला और सत्कर्मोंके अनुभागका अनुसमय अपवर्तना घातको उसी प्रकार पालन करनेवाला तथा बध्यमान और संक्रम्यमान प्रदेशपुंजसम्बन्धी अपूर्व कृष्टियोंको कृष्टि-अन्तरालोंमें तथा संग्रहकृष्टियोंके नीचे यथासम्भव पूर्व विधिके अनुसार ही रचता हुआ यह क्षपक जीव अपनी वेदी जानेवाली प्रथम स्थितिके उस स्थानको प्राप्त होता है जिस स्थानपर विद्यमान उसके विवक्षित प्रथम स्थितिके वेदी जानेसे शेष एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थिति शेष रहती है यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। अब इस सन्धिविशेषमें विद्यमान इस क्षपक जीवके सब कर्मोंके स्थितिबन्धादि प्रमाणोंका अवधारण करनेके लिए उपरिम सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* उस समय लोभ संज्वलनका स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है ।

§ ७३१ पूर्वोक्त मायावेदककी अन्तिम सन्धिविषयक स्थितिबन्धसे यथाक्रम घटकर इस स्थानपर लोभ संज्वलनका स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्तप्रमाण हो गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* तथा उसका स्थितिसत्कर्म भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होता है ।

§ ७३२ पूर्वोक्त सन्धिमें लोभ संज्वलनका स्थितिसत्कर्म सम्पूर्ण वर्षप्रमाण रहा था।

वूण अंतोमुहुत्तपमाणेणेदम्मि विसये पयट्टदि त्ति वुत्तं होइ। णवरि एत्थतणट्ठिदिबंधादो ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणमिदि वट्टव्वं।

* तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो दिवसपुधत्तं।

§ ७३३ पुव्विल्लसंधिविसये मासपुधत्तमेत्तो घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो तत्तो कमेण परिहीयमाणो दिवसपुधत्तमेत्तो एत्थ जादो त्ति वुत्तं होइ।

* सेसाणं कम्माणं वासपुधत्तं।

§ ७३४ पुव्विल्लसंधिविसये तप्पाओग्गसंखेज्जवस्सपमाणो होदूण तिण्हमघादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो वासपुधत्तमेत्तो एण्हि संजादो त्ति भणिदं होदि।

* घादिकम्माणं ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि।

§ ७३५ सुगमं।

* सेसाणं कम्माणं असंखेज्जाणि वस्साणि।

§ ७३६ सुगममेदं पि सुत्तं।

* तत्तो से काले लोभस्स बिदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि।

पुनः उससे यथाक्रम घटकर इस स्थानमें वह अन्तर्मुहूर्तप्रमाण प्रवृत्त होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इतनी विशेषता है कि यहाँके स्थितिबन्धसे स्थितिसत्कर्म संख्यातगुणा होता है ऐसा जानना चाहिए।

* इन घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध दिवसपृथक्त्वप्रमाण होता है।

§ ७३३ पूर्वोक्त सन्धिमें घातिकर्मोंका स्थितिबन्ध मासपृथक्त्वप्रमाण था उससे क्रमसे घटकर इस स्थानपर दिवसपृथक्त्वप्रमाण हो गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* तथा शेष कर्मोंका स्थितिबन्ध वर्षपृथक्त्वप्रमाण होता है।

§ ७३४ पूर्वोक्त सन्धिमें तत्प्रायोग्य संख्यात वर्षप्रमाण होकर तीनों अघातिकर्मोंका स्थितिबन्ध इस समय वर्षपृथक्त्वप्रमाण हो गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता है।

§ ७३५ यह सूत्र सुगम है।

* तथा शेष कर्मोंका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्षप्रमाण होता है।

§ ७३६ यह सूत्र भी सुगम है।

* तदनन्तर लोभकी दूसरी कृष्टिमेंसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके प्रथम स्थितिको करता है।

§ ७३७ लोभवेदगद्धाए पढमतिभागे पढमसंगहकिट्टिमणंतरपरूविदेण कमेण वेदिदूण तदो से काले तिस्से चेव बिदियतिभागपढमसमये वट्टमाणो बिदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गमोकड्डियूण सगवेदगकालादो आवलियब्भहियं काढूण उदयादिगुणसेढीए लोभबिदियसंगहकिट्टीए पढमट्ठिदिं समुप्पाएदि त्ति वुत्तं होइ। एवं च पढमट्ठिदिं काढूण बिदियसंगहकिट्टिं वेदेमाणो तप्पढमसमये चेव सुहुमसांपराइयकिट्टीओ काढुमाढवेदि त्ति जाणावेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* ताधे चेव लोभस्स विदियकिट्टीदो च तदियकिट्टीदो च पदेसग्गमोकड्डियूण सुहुमसांपराइयकिट्टीओ णाम करेदि।

§ ७३८ तम्मि चेव लोभवेदगद्धा विदियतिभागपढमसमये लोभबिदियसंगहकिट्टिं वेदेमाणो लोभविदिय च तदियसंगहकिट्टीहितो पदेसग्गस्सासंखेज्जदिभागमोकड्डियूण सुहुमसांपराइयकिट्टीओ णाम करेदि, विदियतिभागम्मि सुहुमसांपराइयकिट्टीओ अकुणमाणस्स तदियतिभागे सुहुमकिट्टीवेदगभावेण परिणममाणाणुववत्तीदो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसमुच्चओ। ण च तदियवारकिट्टीवेदगद्धाए सुहुमसांपराइयकिट्टीण कारगत्तमासंकणिज्जं, सुहुमकिट्टीपरिणामेण विणा सगसरूवेणेव तिस्से उदयपरिणामाणुवलंभादो। सुहुमसांपराइयकिट्टीण किं लक्खणमिदि चे बादरसांपराइयकिट्टीहिंतो अणंतगुणहाणीए परिणमिय लोभसंजलणाणुभागस्सावट्ठाणं सुहुमसांपराइयकिट्टीण लक्खणमवहारे

---

§ ७३७ लोभ सज्वलन वदककालके प्रथम तीसरे भागमे प्रथम संग्रहकृष्टिका अनन्तर कहे गये क्रमके अनुसार वदन करके उसके बाद तदनन्तर समयमे उसीके दूसरे त्रिभागके प्रथम समयमें विद्यमान यह क्षपक जीव दूसरी संग्रह कृष्टिके प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके तथा उसे अपने वदक कालसे एक आवलि अधिक करके उदयादि गुणश्रेणीरूपसे लोभकी द्वितीय संग्रह कृष्टिकी प्रथम स्थितिको उत्पन्न करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और इस प्रकार प्रथम स्थिति करके दूसरी संग्रह कृष्टिको वेदन करनेवाला वह क्षपक जीव उसके प्रथम समयमे ही सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको करनेके लिए आरम्भ करता है इस बातका ज्ञान कराते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* तथा उसी समय लोभ सज्वलनकी दूसरी कृष्टिमेंसे और तीसरी कृष्टिमेसे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके सूक्ष्मसाम्परायिक नामक कृष्टियोंको करता है।

§ ७३८ उसी लोभ वेदक कालके दूसरे त्रिभागके प्रथम समयमे लोभकी दूसरी संग्रह कृष्टिका वेदन करनेवाला जीव लोभकी द्वितीय संग्रहकृष्टिका और तृतीय संग्रहकृष्टिमे से प्रदेशपुंजके असंख्यातवे भागका अपकर्षण करके सूक्ष्मसाम्परायिक नामवाली कृष्टियोंको करता है, क्योंकि द्वितीय त्रिभागमे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको नहीं करनेवाले जीवके तृतीय त्रिभागमे सूक्ष्म कृष्टियोंके वेदकरूपसे परिणमनकी उत्पत्ति होती है यह सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। यहाँपर तीसरी बार कृष्टिके वेदक कालमे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंके कारकपनेकी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि सूक्ष्मकृष्टियोंके परिणामके बिना अपने रूपसे ही उसके उदयका परिणाम नहीं उपलब्ध होता।

शंका—सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंका क्या लक्षण है?

यख सव्वजहण्णबादरकिट्टीदो वि हेट्ठा सुट्ठु अणंतगुणहाणीए ओहट्टिदूण सव्वुक्कस्ससुहुमसांपराइय किट्टीए समवट्ठाणणियमदंसणादो।

§ ७३९ संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिमो सुत्तपबंधो—

*** तासिं सुहुमसांपराइयकिट्टीणं कम्हि ट्ठाणं।**

§ ७४० किं विदिय तदियबादरसांपराइयकमेण हेट्ठा पादेक्कमेदासिमवट्ठाणं होदि आहो तदियसंगहकिट्टीदो हेट्ठा चेव तदवट्ठाणणियमो त्ति पुच्छा कदा होदि।

*** तासिं ट्ठाणं लोभस्स तदियाए संगहकिट्टीए हेट्ठदो।**

§ ७४१ तासिं सुहुमसांपराइयकिट्टीणं ठाणमवट्ठाणं णियमा तदियबादरसांपराइयकिट्टीए हेट्ठा दट्ठव्वं, तत्तो अणंतगुणहाणीए अपरिणदाए सुहुमसांपराइयकिट्टित्तविरोहादो त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो। संपहि एवमवहारिदट्ठाणविसेसाणं सुहुमसांपराइयकिट्टीणं परूवणाणुगमे कीरमाणे तत्थ ताव सुहुमसांपराइयकिट्टीणमायामविसेसस्स पदुप्पायणट्ठं तल्लक्खणविसेसावहारणट्ठं च सुत्तपबंधमुत्तरमाढवेइ—

*** जारिसी कोहस्स पढमसंगहकिट्टी तारिसी एसा सुहुमसांपराइयकिट्टी।**

समाधान—बादरसाम्परायिक कृष्टियोंसे अनन्तगुणहानिरूपसे परिणमनकर लोभ संज्वलनके अनुभागके अवस्थानको सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंका लक्षण जानना चाहिए क्योंकि सबसे जघन्य बादर कृष्टिसे भी नीचे अच्छी तरह अनन्तगुणहानिरूपसे घटकर सर्वोत्कृष्ट सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिके अवस्थानका नियम देखा जाता है।

७३९. अब इसी अर्थके स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

*** सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंका कहाँ स्थान है?**

§ ७४० क्या द्वितीय तृतीय बादर साम्परायिकके क्रमसे प्रत्येक इनके नीचे अवस्थान है या तृतीय संग्रहकृष्टिसे नीचे ही उनके अवस्थानका नियम है, उक्त सूत्र द्वारा यह पृच्छा की गयी है।

*** उन सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंका लोभकी तीसरी संग्रहकृष्टिसे नीचे स्थान है।**

§ ७४१ उन सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंका स्थान अर्थात् अवस्थान नियमसे तीसरी बादरसाम्परायिक कृष्टिसे नीचे जानना चाहिए, क्योंकि उससे अनन्तगुणहानिरूपसे परिणत नहीं होनेपर सूक्ष्मसाम्परायिककृष्टिपनेका विरोध आता है यह इस सूत्रका भावार्थ है। अब इस प्रकार जिनके उत्थानविशेषोंका अवधारण किया है ऐसी सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंकी प्ररूपणाका अनुभव करनेपर वहाँपर सर्वप्रथम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंके आयामविशेषका कथन करनेके लिए और उनके लक्षणविशेषका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

*** जिस प्रकारकी क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टि है उसी प्रकारकी यह सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि होती है।**

§ ७४२ एव भणतस्साहिप्पाओ—जहा कोहस्स पढमसंगहकिट्टी सगायामेण सेससंगहकिट्टीण आयाम पेक्खियूण दव्वमाहप्पेण सखेज्जगुणा जादा एवमेसा वि सुहुमसांपराइयकिट्टी कोहपढम सगहकिट्टि मोत्तूण सेसासेससंगहकिट्टीणं किट्टीकरणद्धाए समुवलद्धायामादो सखेज्जगुणायामा बट्टव्वा, सयलस्सेव मोहणीयदव्वस्साहारभावेणेदिस्से परिणमिस्समाणत्तादो त्ति।

§ ७४३ अथवा, 'जारिसी कोहस्स पढमसगहकिट्टी' एवं भणिदे जारिसलक्खणा कोहपढम-सगहकिट्टी अपुव्वफद्दयाण हेट्ठा अणतगुणहीणा होदूण कदा, तारिसलक्खणा चेव एसा सुहुमसांप राइयकिट्टी लोभस्स तदियबादरसांपराइयकिट्टीदो हेट्ठा अणंतगुणहीणा होदूण कीरदि त्ति भणिद होदि।

अहवा जहा कोहपढमसगहकिट्टी जहण्णकिट्टिप्पहुडि जाव उक्कस्सकिट्टि त्ति ताव अणतगुणा होदूण गदा तहा चेव एसा सुहुमसांपराइयकिट्टी वि अप्पणो जहण्णकिट्टिप्पहुडि जाव सगुक्कस्सकिट्टी त्ति ताव अणतगुणा होदूण गच्छदि त्ति भणिदं होदि। जइ एव किट्टीलक्खणेण बारसण्हं सगह-किट्टीणमण्णदरकिट्टीए एसा सुहुमसांपराइयकिट्टी सरिसा त्ति अभणिदूण जारिसी कोहस्स पढम सगहकिट्टी तारिसी एसा सुहुमसांपराइयकिट्टी त्ति विसेसियूण भणतस्स को अभिप्पाओ त्ति णासकणिज्ज, जस्स वा तस्स वा कसायस्स जाए वा ताए वा किट्टीए एसा सुहुमसांपराइयकिट्टी सरिसा त्ति भण्णमाणे सम्ममत्थपडिबोहो आयामविसेसणिच्छओ च ण होदि त्ति कादूण तत्थ सुहुप्पबोहजणणट्ठ पढमकसायस्स पढमसगहकिट्टि चेव घेत्तूण सुत्ते तहा णिद्दिट्ठत्तादो। सपहि

§ ७४२ इस प्रकार कहनेवालेका अभिप्राय है कि जिस प्रकारकी अपने आयामसे क्रोधकी प्रथम सग्रह कृष्टि शेष सग्रह कृष्टियोंके आयामको देखते हुए द्रव्यके माहात्म्यवश सख्यातगुणी हो जाती है उसी प्रकार यह सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि भी क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टिको छोड़कर शेष समस्त संग्रहकृष्टियोके कृष्टिकरण कालके प्राप्त होनेवाले आयामसे सख्यातगुणे आयामवाली जाननी चाहिए, क्योंकि पूरे ही मोहनीयके द्रव्यके आधाररूपसे इसका परिणमन होता है।

§ ७४३ अथवा 'क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टि जिस प्रकारकी होती है' ऐसा कहनेपर क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टि जिस लक्षणवाली होकर अपूर्व स्पर्धकोके नीचे अनन्तगुणी हीन होकर की गयी है, उसी प्रकारके लक्षणवाली यह सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि लोभकी तीसरी बादर साम्परायिक कृष्टिसे नीचे अनन्तगुणी हीन होकर की गयी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शका—अथवा जिस प्रकार क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टि जघन्य कृष्टिसे लकर उत्कष्ट कृष्टि तक अनन्तगुणी हीन होकर गयी है उसी प्रकार यह सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि भी अपनी जघन्य कृष्टिसे लेकर अपनी उत्कष्ट कृष्टिके प्राप्त होने तक अनन्तगुणी हीन होकर गयी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यद्यपि ऐसा है तो भी यह सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिके लक्षणकी अपेक्षा बारह संग्रह कृष्टियोमे-से अन्यतर कृष्टिके सदृश होती है ऐसा न कहकर जैसी क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टि होती है वैसी यह सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि है ऐसा विशेषरूपसे कहनेवाले आचार्यका क्या अभिप्राय है?

समाधान—ऐसी आशंका नही करनी चाहिए, क्योंकि जिस किसी कषायकी जिस किसी कृष्टिके साथ यह सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि सदृश होती है ऐसा कथन करनेपर सम्यक प्रकारसे अर्थका ज्ञान और आयामविशेषका निश्चय नहीं होता है ऐसा समझकर सुखपूर्वक ज्ञान करनेके लिए प्रथम कषायकी प्रथम सग्रहकृष्टिको ही ग्रहण करके सूत्रमें उस प्रकारसे निर्देश किया है।

पुणो वि एदिस्से चेव सुहुमसांपराइयकिट्टीए आयामविसेसजणिदमाहप्पपदंसणट्ठमुवरिममप्पाबहुअ पबंधमाढवेइ —

*** कोहस्स पढमसगहकिटटीए अतरकिटटीओ थोवाओ ।**

§ ७४४ कोहपढमसगहकिट्टीए जाओ अवयवकिट्टीओ ताओ उवरिमपदावेक्खाए थोवाओ त्ति भणिद होदि । एदासिमायामपमाण केत्तियमिदि भणिदे तेरसखडमेत्तमिदि भणामो । ताणि तेरस खडाणि कधमुप्पण्णाणि त्ति पुच्छिदे मोहणीयसयलपदेसपिडस्स अट्ठमभागमेत्त दव्व कोहसंजलणो लहइ । पुणो एवमट्ठमभागदव्वमप्पणो तिसु वि सगहकिट्टीसु समयाविरोहेण विहजिदूण चिट्ठदि त्ति पढमसगहकिट्टीए मूलदव्व मोहणीयसयलदव्वावेक्खाए चउवीसभागमेत्त होदि । सपहि णोकसायदव्व पि सव्व तीए चेव समुवलद्धमिदि तेण सह तेरस चउवीसभागा जादा । तेसिमेसा ठवणा $\frac{१३}{२४}$ । जदो एव दव्वविसेसो, तदो तदणुसारेणव पढमसगहकिट्टीए अतरकिट्टीअद्धाण पि तेरस-चउवीसभागमेत्त चेव होदि त्ति सिद्ध ।

*** कोहे सछुद्धमाणस्स पढमसगहकिटटीए अतरकिट्टीओ विससाहियाओ ।**

§ ७४५ तेरस चउवीसभागमेत्तायामकोहपढमसगहकिट्टी जाधे कोहविदियसगहकिट्टीए उवरि पक्खित्ता होदि ताधे तिस्से अतरकिट्टीआयामो चोद्दस चउवीसभागमेत्तो होदि । पुणो विदियसगहकिट्टिम्मि तदियसगहकिट्टीए उवरि सपक्खित्ताए तिस्से आयामो पण्णारसचउवीस

अब फिर भी इसी सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिके आयामविशेषरूप उत्पन्न हुए माहात्म्यको दिखलानेके लिए आगेके अल्पबहुत्वप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

*** क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टिकी अन्तरकृष्टियाँ सबसे थोडी हैं ।**

§ ७४४ क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिकी जो अवयव कृष्टियाँ हैं वे उपरिम कृष्टियोकी अपेक्षा थोडी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इनके आयामका प्रमाण कितना है ऐसा कहनेपर वह तेरह खण्ड (भाग) प्रमाण है ऐसा हम कहते हैं ।

शका—वे तेरह खण्ड कैसे उत्पन्न होते हैं ?

समाधान—ऐसी पृच्छा होनेपर उत्तर देते हैं—मोहनीयके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डका आठवा भागप्रमाण द्रव्यको सज्वलन प्राप्त करता है । पुन इस आठवाँ भागप्रमाण द्रव्य अपनी तीनो ही सग्रह कृष्टियोमे समयके अविरोधपूर्वक विभक्त हो करके अवस्थित रहता है इस प्रकार प्रथम सग्रहकृष्टिका मूल द्रव्य मोहनीय कर्मके समस्त द्रव्यकी अपेक्षा चौबीस भागप्रमाण होता है । अब नोकषायका भी समस्त द्रव्य उसीमे उपलब्ध हो गया है इसलिए उसके साथ क्रोधकी प्रथम सग्रहकृष्टिका सम्पूर्ण द्रव्य $\frac{१३}{२४}$ (तेरह बटे चौबीस) भागप्रमाण हो गया है । उसकी यह स्थापना—$\frac{१३}{२४}$ है, चूंकि द्रव्यविशेष इस प्रकार है, इसलिए उसके अनुसार ही प्रथम सग्रह कृष्टिकी अन्तर कृष्टियोका आयाम भी $\frac{१३}{२४}$ भागप्रमाण ही होता है यह सिद्ध हुआ ।

*** क्रोधमे संक्रमित होनेवाली प्रथम संग्रहकृष्टिकी अन्तरकृष्टियाँ विशेष अधिक हैं ।**

§ ७४५ $\frac{१३}{२४}$ भागप्रमाण आयामवाली क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टि जब क्रोधकी दूसरी सग्रहकृष्टिके ऊपर प्रक्षिप्त होती है तब उसकी अन्तरकृष्टियोंका आयाम $\frac{१४}{२४}$ भागप्रमाण होता है । पुन दूसरी संग्रह कृष्टिके तीसरी सग्रहकृष्टिके ऊपर प्रक्षिप्त होनेपर उसका आयाम $\frac{१५}{२४}$ भाग

भागमेत्तो होदि। पुणो कोहतदियसंगहकिट्टीए माणपढमसंगहकिट्टिम्मि पक्खित्ताए सोलसचउवीस-भागा होंति। एवं होदि त्ति काढूण तेरस चउवीसभागमेत्तायामकोहपढमसंगहकिट्टीदो सोलस चउवीसभागमेत्तायामा माणपढमसंगहकिट्टी विसेसाहिया जादा, तिण्हं चउवीसभागाणं पुव्वमसंताण मेत्थपरिप्फुडमेव पदेसदंसणादो—$\frac{१६}{२४}$।

* माणे सछुद्धे मायाए पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ।

§ ७४९ इमाओ एगूणवीसखंडमेत्तायामाओ भवंति, पुव्विल्लायामम्मि माणविदिय-तदिय संगहकिट्टीआयामेहिं सह अप्पणो मूलायामस्स जहाकममेव पवेसदंसणादो। तेण कारणेणेदाओ विसेसाहियाओ जादाओ $\frac{१९}{२४}$।

* मायाए सछुद्धाए लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ।

§ ७४७ एदाओ बावीसखंडमेत्तिओ भवंति, पुव्विल्लायामम्मि पुव्वमसंताणं तिण्हं खंडाण मेत्थ पविट्ठाणमुवलंभादो। तेण कारणेण मायापढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणमायामो विसेसाहिओ जादो $\frac{२२}{२४}$।

* सुहुमसांपराइयकिट्टीओ जाओ पढमसमये कदाओ ताओ विसेसाहियाओ।

§ ७४८ एदाणि चउवीसखंडाणि भवंति। तेण कारणेण लोभपढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीण-

---

प्रमाण होता है। पुन क्रोधकी तीसरी संग्रहकृष्टिके मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें प्रक्षिप्त होनेपर उसका आयाम $\frac{१६}{२४}$ भाग प्रमाण होता है। इस प्रकार होता है ऐसा समझकर $\frac{१३}{२४}$ भागप्रमाण आयामवाली क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे $\frac{१६}{२४}$ भागप्रमाण आयामवाली मानकी प्रथम संग्रहकृष्टि विशेष अधिक हो गयी है। यहाँपर पहिले असत्स्वरूप $\frac{३}{२४}$ भागका स्पष्टरूपसे प्रवेश देखा जाता है—$\frac{१६}{२४}$।

* मानके मायामें संक्रमित होनेपर उसकी प्रथम संग्रहकृष्टिकी अन्तरकृष्टियाँ विशेष अधिक हैं।

§ ७४९ ये $\frac{१९}{२४}$ भागप्रमाण आयामवाली होती हैं, क्योंकि पहिलेके आयाममें मानकी दूसरी व तीसरी संग्रहकृष्टियोंके आयामके साथ यहाँपर अपने मूल आयामका क्रमानुसार ही प्रवेश देखा जाता है। इस कारण ये विशेष अधिक हो गयी हैं—$\frac{१९}{२४}$।

* मायाकी लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें संक्रमित होनेपर उसकी अन्तरकृष्टियाँ विशेष अधिक हैं।

§ ७४७ ये बावीस (२२) भागप्रमाण होती हैं, क्योंकि पहिले असत्स्वरूप प्रविष्ट तीन भाग यहाँ पहिलेके आयाममें उपलब्ध होते हैं इस कारण मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिकी अन्तर कृष्टियोंका आयाम विशेष अधिक हो गया है—$\frac{२२}{२४}$।

* जो सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियाँ प्रथम समयमें की गयी हैं वे विशेष अधिक हैं।

§ ७४८ ये २४ (चौबीस) भागप्रमाण होती हैं। इस कारण लोभ संज्वलनकी प्रथम

मेक्कारसभागमेत्तो विसेसो एत्थ वट्ठव्वो। संपहि एदस्सेव विसेसाहियभावस्स फुडीकरणट्ठमुत्तरं सुत्तावयारो—

* एसो विसेसो अणंतराणंतरेण संखेज्जदिभागो।

§ ७४९. सुगम। एवमेदेणायामविसेसेण परिच्छिण्णपमाणाणं सुहुमसांपराइयकिट्टीणमंतो मुहुत्तकालमेदेणप्पाबहुअविहाणेण सरूवणिव्वत्ती होदि त्ति जाणावणफलो उत्तरसुत्तणिद्देसो—

* सुहुमसांपराइयकिट्टीओ जाओ पढमसमये कदाओ ताओ बहुगाओ।

§ ७५०. सुगम।

* विदियसमये अपुव्वाओ कीरंति असंखेज्जगुणहीणाओ।

§ ७५१. सुगम।

* अणंतरोवणिधाए सव्विस्से सुहुमसांपराइयकिट्टीकरणद्धाए अपुव्वाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ असंखेज्जगुणहीणाए सेढीए कीरंति।

§ ७५२. सुगममेदं पि सुत्तं। एवमंतोमुहुत्तमेत्तकालमसंखेज्जगुणहीणाए सेढीए अपुव्वा पुव्वाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीए णिव्वत्तेमाणो सुहुमसांपराइयकिट्टीकरणद्धाए पढमसमयप्पहुडि पडिसमयमणंतगुणाए विसोहीए वड्ढमाणो असंखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं पदेसग्गमोकड्डियूण तत्थ णिसिंचदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

कृष्टिकी अन्तरकृष्टिया ग्यारह (११) भागप्रमाण अधिक इसमे जानना चाहिए। अब इसी विशेष अधिकपनेका स्पष्टीकरण करनेके लिए आगेके सूत्रका अवतार हुआ है—

* यह विशेष अनन्तर-अनन्तर विधिसे संख्यातवा भाग है।

§ ७४९. यह सूत्र सुगम है। इस प्रकार इस आयामविशेषके द्वारा ज्ञात प्रमाणवाली सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोकी अन्तर्मुहूर्त काल तक इस अल्पबहुत्व विधिसे स्वरूप निष्पत्ति होती है यह ज्ञान करानेके फलस्वरूप आगेके सूत्रका निर्देश करते है—

* जो सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टिया प्रथम समयमे की गयी हैं वे बहुत होती हैं।

§ ७५०. यह सूत्र सुगम है।

* दूसरे समयमे जो अपूर्व कृष्टियाँ की जाती हैं वे असंख्यातगुणी हीन होती हैं।

§ ७५१. यह सूत्र सुगम है।

* इस प्रकार अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा समस्त सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकरण कालमे अपूर्व सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिया असंख्यातगुणहीन श्रेणीरूपसे की जाती हैं।

§ ७५२. यह सूत्र भी सुगम है। इस प्रकार अन्तमुहूर्त काल तक असंख्यातगुणहीन श्रेणी रूपसे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकी अपूर्व अपूर्व कृष्टियोका रचना करता हुआ सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकरण कालके प्रथम समयसे लेकर प्रत्येक समयमे अनन्तगुणी विशुद्धिके द्वारा विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके उसमे सिंचन करता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रको कहते है—

* सुहुमसांपराइयकिट्टीसु पढमसमये पदेसग्गं दिज्जदि तं थोवं ।

§ ७५३ सुगमं ।

* विदियसमये असंखेज्जगुणं ।

§ ७५४ सुगमं ।

* एवं जाव चरिमसमयादो त्ति असंखेज्जगुणं ।

§ ७५५ सुगममेवं वि सुत्तं । एवं च ओकड्डिज्जमाणपदेसग्गस्स सुहुमसांपराइयकिट्टीसु णिसेगविसेसजाणावणट्ठमुवरिमं सुत्तपबंधमाह—

* सुहुमसांपराइयकिट्टीसु पढमसमये दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं वत्तइस्सामो ।

§ ७५६ सुगमं ।

* तं जहा ।

§ ७५७ सुगमं ।

* जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्गं बहुअं । विदियाए विसेसहीणमणंतभागेण । तदियाए विसेसहीणं । एवमणंतरोवणिधाए गंतूण चरिमाए सुहुमसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गं विसेसहीणं ।

---

* प्रथम समयमें सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें जो प्रदेशपुंज दिया जाता है वह थोड़ा है ।

§ ७५३ यह सूत्र सुगम है ।

* दूसरे समयमें असंख्यातगुणा प्रदेशपुंज दिया जाता है ।

§ ७५४ यह सूत्र सुगम है ।

* इस प्रकार अन्तिम समयके प्राप्त होने तक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणा प्रदेशपुंज दिया जाता है ।

§ ७५५ यह सूत्र भी सुगम है । इस प्रकार अपवर्त्यमान प्रदेशपुंजके सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें निषेकविशेषका ज्ञान करानेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें प्रथम समयमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणाको बतलावेंगे ।

§ ७५६ यह सूत्र सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ ७५७ यह सूत्र सुगम है ।

* जघन्य कृष्टिमें प्रदेशपुंज बहुत हैं । दूसरी कृष्टिमें अनन्तवें भाग विशेष हीन हैं । तीसरी कृष्टिमें विशेष हीन हैं । इस प्रकार अनन्तरोपनिधाके क्रमसे जाकर अन्तिम सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टिमें प्रदेशपुंज विशेष हीन हैं ।

§ ७५८ सुगममेदं पि सुत्तं । एवं च सुहुमसांपराइयकिट्टीसु णिसित्तासेसदव्वं तक्कालो कड्ढिदसयलदव्वस्सासंखेज्जभागमेत्तमिदि घेत्तव्वं । संपहि एत्तो उवरि बादरकिट्टीसु सेसमसंखेज्जदिभागमेत्तदव्वमेदेण कमेण णिसिंचदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमोइण्णं—

* चरिमादो सुहुमसांपराइयकिट्टीदो जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए दिज्जमाणगं पदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं ।

§ ७५९. चरिमाए सुहुमसांपराइयकिट्टीए अणंतरपरूविदबहुभागदव्वं सुहुमसांपराइयकिट्टी-अद्धाणेण खंडिदयखंडं खंडिदद्धाणद्धामेत्तविसेसेहि परिहीणं कादूण णिसिंचदि । पुणो सेसमसंखेज्जदिभागमेत्तदव्वं बादरकिट्टीअद्धाणेण खंडिदेयखंडमेत्तं विसेसाहियं कादूण जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए णिसिंचदि । सरिसं च बादरसुहुमसांपराइयकिट्टीणमद्धाणमणंतरपरूविदेण णायेण । एदेण कारणेण चरिमादो सुहुमसांपराइयकिट्टीदो उवरि जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए णिसिंचमाणदव्वं पयारंतरपरिहारेणासंखेज्जगुणहीणमिदि होदि त्ति एसो एदस्स सुत्तस्स भावत्थो ।

* तदो विसेसहीणं ।

§ ७६०. एत्तो उवरि सव्वत्थेव विसेसहीणं णिसिंचदि अणंतभागेण जाव चरिमबादरसांपराइयकिट्टि त्ति । एवं सुहुमसांपराइयकिट्टीकारयस्स पढमसमये दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढि

---

§ ७५८ यह सूत्र भी सुगम है । इस प्रकार सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोमे निक्षिप्त हुआ सम्पूर्ण द्रव्य तत्काल अपकर्षित हुए समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । अब इसके आगे बादर कृष्टियोंमे शेष असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यको इस क्रमसे सींचता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र अवतीर्ण हुआ है—

* अन्तिम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिसे जघन्य बादर साम्परायिक कृष्टिमें दिया जानेवाला प्रदेशपुंज असंख्यातगुणा हीन है ।

§ ७५९. अन्तिम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिके अनन्तर पूर्व कहे गये बहुभाग द्रव्यको सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिके काल द्वारा एक भागप्रमाण द्रव्यको जितने स्थान आगे गये हैं उतने कालप्रमाण विशेषोके द्वारा हीन करके सिंचन करता है । पुन शेष असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यको बादर कृष्टिके आयाम द्वारा भाजित करके एक भागप्रमाण द्रव्यको विशेष अधिक करके जघन्य बादर साम्परायिक कृष्टिमे सींचता है और इस प्रकार अनन्तर कहे गये न्यायके अनुसार बादर सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टियोका आयाम समान होता है इस कारण अन्तिम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिसे ऊपर जघन्य बादर सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिमें सींचा जानेवाला द्रव्य अन्य प्रकारसे सम्भव न होनेके कारण संख्यातगुणा हीन है यह इस सूत्रका भावार्थ है ।

* उससे आगे सर्वत्र उत्तरोत्तर विशेष हीन द्रव्यका सिंचन करता है ।

§ ७६० इससे आगे सर्वत्र ही अन्तिम बादर साम्परायिक कृष्टिके प्राप्त होने तक उत्तरोत्तर अनन्तभागहीनके क्रमसे विशेष हीन द्रव्यका सिंचन करता है । इस प्रकार सूक्ष्म-

परूवणं कादूण संपहि एत्तो विदियसमये जो पवुत्तिविसेसो सुहुमसांपराइयकिट्टीकरणपडिबद्धो तण्णिण्णयकरणट्ठमुवरिमो सुत्तपबंधो—

* सुहुमसांपराइयकिट्टीकारगो विदियसमये अपुव्वाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाओ ।

* ताओ दोसु ठाणेसु करेदि ।

* त जहा—

* पढसमये कदाण हेट्ठा च अंतरे च ।

* हेट्ठा थोवाओ ।

* अंतरेसु असखेज्जगुणाओ ।

§ ७६१ एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । एव विदियसमये सुहुमसांपराइयकिट्टीओ णिव्वत्तेमाणस्स पुव्वापुव्वसुहुमसांपराइयकिट्टीसु बादरसांपराइयकिट्टीसु च तक्कालोकड्डिदपदेसग्गस्स केरिसो सेढिपरूवणा होदि त्ति आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुवरिम सुत्तपबंधमाढवेइ—

* विदियसमये दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवणा ।

§ ७६२ सुगम ।

साम्परायिक कृष्टिकारकके प्रथम समयमे दिये जानेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणीप्ररूपणा करके अब इससे दूसरे समयमें सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकारकसे सम्बन्ध रखनेवाली जो प्रवृत्तिविशेष होती है उसका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकारक क्षपक जीव दूसरे समयमे असंख्यातगुणी हीन अपूर्व सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोको करता है ।

* उन कृष्टियोको दो स्थानोमें करता है ।

* वह जैसे ।

* प्रथम समयमें की गयी कृष्टियोके नीचे करता है, अन्तरालमे करता है ।

* नीचे थोड़ी कृष्टियोको करता है ।

* तथा अन्तरालोमे असंख्यातगुणी कृष्टियोंको करता है ।

§ ७६१ ये सूत्र सुगम हैं । इस प्रकार दूसरे समयमे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको रचना करनेवाले क्षपक जीवके पूर्व और अपूर्व सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोमे तथा बादरसाम्परायिक कृष्टियोंमें तत्काल अपकर्षित होनेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा कैसी होती है ऐसी आशंकाके निर्णयका विधान करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* अब दूसरे समयमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा कहते हैं ।

§ ७६२ यह सूत्र सुगम है ।

* जा विदियसमये जहण्णिया सुहुमसांपराइयकिट्टी तिस्से पदेसग्गं दिज्जदि बहुअं।

§ ७६३ पढमसमयोकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणं पदेसग्गमोकड्डियूण विदियसमये पुव्वापुव्वकिट्टीसु जहापविभागं णिसिंचमाणो तत्थ जा विदियसमये जहण्णिया सुहुमसांपराइयकिट्टी तक्कालमेव णिव्वत्तिज्जमाणा तिस्से बहुअं पदेसग्गं णिसिंचदि त्ति सुत्तत्थो। सेसं सुगमं।

* विदियाए किट्टीए अणंतभागहीणं।

§ ७६४ सुगमं।

* एवं गंतूण पढमसमये जा जहण्णिया सुहुमसांपराइयकिट्टी तत्थ असंखेज्जदिभागहीणं।

§ ७६५ एत्थ कारणं जहा किट्टीकरणद्धाए पुव्वापुव्वकिट्टीणं संधिविसये परूविदं तहा चेव परूवेयव्वं, विसेसाभावादो।

* तत्तो अणंतभागहीणं जाव अपुव्वं णिव्वत्तिज्जमाणगं ण पावदि।

७६६ तत्तो परमणंतराणंतरादो अणंतभागहीणं कादूण णिक्खिवमाणो गच्छदि जाव ओकड्डुणभागहारमेत्तद्धाणमुवरि गंतूण तम्मि उद्देसे किट्टी अंतरे णिव्वत्तिज्जमाणमपुव्वकिट्टी

---

* जो दूसरे समयमें जघन्य सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि है उसमें बहुत प्रदेशपुंज दिया जाता है।

§ ७६३ प्रथम समयमें अपकर्षित हुए द्रव्यसे असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके दूसरे समयमें पूर्व और अपूर्व कृष्टियोंमें यथाविभाग सिंचन करता हुआ क्षपक जीव वहाँ जो दूसरे समयमें जघन्य सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि उसी समय निवर्त्यमान कृष्टि है उसमें बहुत प्रदेशपुंजको सिंचित करता है यह इस सूत्रका अर्थ है। शेष कथन सुगम है।

* दूसरी कृष्टिमें अनन्तभागहीन प्रदेशपुंजका सिंचन करता है।

§ ७६४ यह सूत्र सुगम है।

* इस प्रकार जाकर प्रथम समयमें जो जघन्य सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टि है उसमें असंख्यातवें भागहीन द्रव्यको सींचता है।

§ ७६५ यहाँपर कृष्टिकरण कालसम्बन्धी पूर्व और अपूर्व कृष्टियोंकी सन्धियोंमें जिस प्रकार कारणका कथन किया है उसी प्रकार प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

* उसके आगे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टिके प्राप्त होने तक अनन्तभागहीन द्रव्यका सिंचन करता है।

§ ७६६ उससे आगे अनन्तर अनन्तर क्रमसे अनन्तभागहीन करके सिंचन करता हुआ यह क्षपक जीव तबतक जाता है जब जाकर अपकर्षणभागहारप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर उस स्थानपर कृष्टि अंतरालमें निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टिको प्राप्त करके तदनन्तर अधस्तन पूर्व कृष्टि

पावेदूण तदणंतरहेट्ठिमपुव्वकिट्टिं पत्तो त्ति एदम्मि अद्धाणे अणंतभागहाणिं मोत्तूण पयारंतरा संभवाणुवलंभादो। पुणो एदम्मि सधिविसये जो परूवणाविसेसो तण्णिद्देसकरणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* अपुव्वाए णिव्वत्तिज्जमाणिगाए किट्टीए असंखेज्जदिभागुत्तरं।

§ ७६७ जहा किट्टीकरणद्धाए पुव्वकिट्टीण चरिमादो अपुव्वकिट्टीए णिसिंचमाणपदेसग्गस्स कारण भणिद तहा चेव एत्थ वि वत्तव्वं, विसेसाभावादो। एत्तो उवरि पुव्वकिट्टीए असंखेज्जदि भागहीण पदेसणिसेगं कुणदि, तत्थ पुव्वावट्ठिदपदेसग्गस्स परिहाणीए विणा दोण्हमेयगोवुच्छा-याराणुप्पत्तीदो त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तावयारो -

* पुव्वणिव्वत्तिद पडिवज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स असंखेज्जदिभागहीणं।

§ ७६८ सुगमं। एवमुवरि वि जत्थ जत्थ पुव्वापुव्वकिट्टीणं संधिविसयो होदि तत्थ तत्थ एसो चेव अत्थो परूवेयव्वो। संपहि एत्तो उवरि पुव्वकिट्टीसु अणंतभागहीणो चेव पदेसविण्णासो सव्वत्थ दट्ठव्वो, तत्थ पयारंतरासंभवादो त्ति पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्त भणइ—

* पर पर पडिवज्जमाणगस्स अणंतभागहीणं।

§ ७६९ पुव्वकिट्टीदो अपुव्वकिट्टिमपुव्वकिट्टीदो च पुव्वकिट्टिं पडिवज्जमाणस्स संधि विसये अणंतरपरूविदो असंखेज्जदिभागुत्तरो असंखेज्जदिभागहीणो च पदेसणिसेगो होदि। पुणो

प्राप्त नहीं हो जाती, क्योंकि इस स्थानमें अनन्त भागहानिको छोड़कर प्रकारान्तर सम्भव नहीं है। पुन इस संधिमें जो प्ररूपणा भेद है उसका निर्देश करनेके लिए आगेके सूत्रको आरम्भ करते हैं—

* आगे निवर्त्यमान अपूर्व कृष्टिमें असंख्यातभाग अधिक प्रदेशपुंजका सिंचन करता है।

§ ७६७ जिस प्रकार कृष्टिकरण कालमें पूर्व कृष्टियोंसे लेकर अपूर्व कृष्टिके अन्तिम समय तक सींचे जानेवाले प्रदेशपुंजके कारणका कथन किया है उसी प्रकार यहाँ भी कथन करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। इससे आगे पूर्व कृष्टिमें असंख्यातवें भागहीन प्रदेश पुंजको देता है, क्योंकि उसमें पहलसे अवस्थित प्रदेशपुंजकी हानिके बिना दोनों कृष्टियोंकी एक गोपुच्छाकारकी उत्पत्ति हो नहीं सकती है इस बातका ज्ञान करानेके लिये आगेके सूत्रका अवतार हुआ है—

* पहले निर्वर्तित कृष्टिमें प्रतिपद्यमान प्रदेशपुंजका असंख्यातवाँ भागहीन प्रदेशपुंज दिया जाता है।

§ ७६८ यह सूत्र सुगम है। इस प्रकार आगे भी जहाँ जहाँ पूर्व और अपूर्व कृष्टियोंका सन्धि-विषयक स्थान होता है वहाँ वहाँ इसी अर्थका कथन करना चाहिए। अब इससे आगे पूर्व कृष्टियोंमें अनन्त भागहीन ही प्रदेशपुंजको सर्वत्र जानना चाहिए, क्योंकि वहाँपर अन्य प्रकार सम्भव नहीं है इस बातका कथन करनेके लिये आगेके सूत्रको कहते हैं—

* इससे आगे उत्तरोत्तर प्रतिपद्यमान कृष्टिसम्बन्धी सन्धिमें अनन्तभागहीन द्रव्य प्रदेश पुंज दिया जाता है।

§ ७६९ पूर्व कृष्टिसे अपूर्व कृष्टिको और अपूर्व कृष्टिसे पूर्व कृष्टिको प्राप्त होनेवालेकी सन्धिमें अनन्तर कहा गया असंख्यातवाँ भाग अधिक और असंख्यातवाँ भागहीन प्रदेशनिषेक

इमं विसय मोत्तूण सेसेसु सव्वेसु ट्ठाणेसु पुव्वकिट्टीदो पुव्वकिट्टिं पडिवज्जमाणस्स अणंतभागहीणो चेव पदेसविण्णासो वट्ठव्वो, तत्थ संभवंतराणुवलंभादो त्ति वुत्तं होइ। एवमेदेण बीजपदेण सण्णीओ जाणिदूण णेदव्वं जाव चरिमसमयसुहुमसांपराइयकिट्टि त्ति। चरिमादो सुहुमसांपराइयकिट्टीदो जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए दिज्जमाणपदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं होदि। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवमेसो कमो ताव णेदव्वो जाव चरिमसमयबादरसांपराइयो त्ति। संपहि इममेव अत्थविसेसं फुडीकरेमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* जो विदियसमये दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स विधी सो चेव विधी सेसेसु वि समयेसु जाव चरिमसमयबादरसांपराइयो त्ति।

§ ७७० गयत्थमेदं सुत्तं। एवमेत्तिएण पबंधेण सुहुमसांपराइयकिट्टीसु दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं समाणिय संपहि तत्थेव पढमसमयप्पहुडि दिस्समाणपदेसग्गमेदेण सरूवेण चिट्ठदि त्ति जाणावणट्ठमुवरिमं पबंधमाढवेइ—

* सुहुमसांपराइयकिट्टीकारगस्स किट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणं।

§ ७७१ सुगमं।

* तं जहा।

§ ७७२ सुगमं।

होता है, पुन इस विषयको छोडकर शेष सम्पूर्ण स्थानोमे पूर्व कृष्टिसे पूर्व कृष्टिको प्राप्त होनेवाले अनन्तभागहीन ही प्रदेशपुंजविन्यास जानना चाहिए, क्योकि वहाँपर दूसरा प्रकार सम्भव नही है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार इस बीज पदके द्वारा सन्धियोंका जानकर अन्तिम समयवर्ती कृष्टिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। पुन अन्तिम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिसे जघन्य बादरसाम्परायिक कृष्टिमे दिया जानेवाला प्रदेशपुज असंख्यातगुणा हीन होता है। कारणका कथन पहलेके समान करना चाहिए। इस प्रकार यह क्रम बादरसाम्परायिकके अन्तिम समय तक जानना चाहिए। अब इसी अर्थविशेषको स्पष्ट करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं —

* जो दूसरे समयमे दिये जानेवाले प्रदेशपुजकी विधि है वही विधि बादरसाम्परायिकके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक सब समयोंमे जाननी चाहिए।

§ ७७० यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा सूक्ष्मसाम्परायिकसम्बन्धी कृष्टियोमे दिये जानेवाले प्रदेशपुजकी श्रेणिप्ररूपणा करके अब वहीपर प्रथम समयसे लेकर दिखने वाला प्रदेशपुंज इस रूपसे अवस्थित रहता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* आगे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकारकके कृष्टियोंमे दिखनेवाले प्रदेशपुजकी श्रेणिप्ररूपणा करते हैं।

§ ७७१ यह सूत्र सुगम है।

* वह जैसे।

§ ७७२ यह सूत्र सुगम है।

* जहण्णियाए सुहुमसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गं बहुगं तत्तो अणंतभागहीणं जाव चरिमसुहुमसांपराइयकिट्टि त्ति ।

§ ७७३ सुगमं ।

* तदो जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गमसंखेज्जगुण ।

§ ७७४ किं कारण ? बादरकिट्टीहिंतो पदेसग्गस्स असंखेज्जदिभाग चेव ओकड्डियूण सुहुम किट्टीओ णिव्वत्तमाणस्स तत्थ दिस्समाणपदेसग्गादो बादरकिट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्सासंखेज्ज गुणत्तसिद्धीए बाहाणुवलंभादो । एत्तो उवरि बादरसांपराइयकिट्टीसु अणंतरोवणिधाए विसेसहीण मणंतभागेण दिस्समाणपदेसग्गं दट्ठव्व, तत्थ पयारंतरासंभवादो । एसा च दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणा सुहुमसांपराइयकिट्टीकारगस्स पढमसमयप्पहुडि जाव चरिमसमयबादरसांपराइओ त्ति ताव अप्पडिसिद्धा दट्ठव्वा त्ति पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* एसा सेढिपरूवणा जाव चरिमसमयबादरसांपराइओ त्ति ।

§ ७७५ गयत्थमेद सुत्तं । संपहि सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणं पविट्ठस्स पढमसमये सुहुमकिट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढीपरूवणा केरिसी होदि त्ति आसंकियस्स सिस्सस्स णिरारेकीकरणट्ठ- मुत्तरसुत्तमोइण्ण —

* पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स वि किट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्स सा चेव सेढिपरूवणा ।

---

* जघन्य सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिमे दिखनेवाला प्रदेशपुंज बहुत है उससे आगे सूक्ष्म साम्परायिककी अन्तिम कृष्टिके प्राप्त होने तक दिखनेवाला प्रदेशपुंज अनन्त भागहीन होता है ।

§ ७७३ यह सूत्र सुगम है ।

* तदनन्तर जघन्य बादर साम्परायिककृष्टिमें दिखनेवाला प्रदेशपुंज असंख्यातगुणा हीन है ।

§ ७७४ क्योंकि बादर कृष्टिसे प्रदेशपुंजके असंख्यातवें भागका ही अपकर्षण करके सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टियोंकी रचना करनेवालेके वहाँ दिखनेवाले प्रदेशपुंजसे बादर कृष्टियोंमें दिखनेवाले प्रदेशपुंजके असंख्यातगुणेकी सिद्धिमें बाधा नहीं पायी जाती । इसके आगे बादरसाम्परायिक कृष्टियोंमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अनन्तभागरूपसे विशेष हीन दिखनेवाला प्रदेशपुंज जानना चाहिए, क्योंकि उसमें दूसरा प्रकार सम्भव नहीं है । और वह दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणि प्ररूपणा सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक बिना रुकावटके जाननी चाहिये इस बातका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* यह श्रेणिप्ररूपणा बादरसाम्परायिकके अन्तिम समय तक जाननी चाहिए ।

§ ७७५ यह सूत्र गतार्थ है । अब सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानमें प्रवेश करनेवाले जीवके प्रथम समयमें सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा कैसी होती है ऐसी जिसे आशंका हुई है ऐसे शिष्यको आशंकारहित करनेके लिये आगेका सूत्र आया है—

* प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके भी कृष्टियोंमें दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी वही श्रेणि प्ररूपणा होती है ।

§ ७७६ जा एसा चरिमसमयबादरसांपराइयमवहिं कादूण सुहुमकिट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणा अणंतरमेव परूविदा सा चेव पढमसमये सुहुमसांपराइयस्स वि वत्तव्वा, विसेसाभावादो त्ति वुत्तं होइ। णवरि तत्थ बादरसांपराइयकिट्टीण वि संभवो अत्थि त्ति तासु दिस्समाणपदेसग्गमसंखेज्जगुणं होदूण भिण्णगोवुच्छायारेण णिद्दिट्ठं एत्थ पुण बादरसांपराइयकिट्टीसु समवट्ठिदपदेसग्गं सव्वमेव णवकबंधुच्छिट्ठावलियवज्जं सुहुमसांपराइयकिट्टीसरूवेण परिणमिय एयगोवुच्छायारेण वट्ठव्वमिदि एदस्स विसेसस्स जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

*** णवरि सेचीयादो जदि बादरसांपराइयकिट्टीओ धरेदि तत्थ पदेसग्गं विसेसहीणं होज्ज।**

§ ७७७ सेचीयादो सेचीयसंभवमस्सियूण जइ किह वि एसो पढमसमयसुहुमसांपराइओ बादरसांपराइयकिट्टीओ धरेदि तो तत्थ दिस्समाणपदेसग्गं विसेसहीणमेव होज्ज त्ति सुत्तत्थसंबंधो। एवं च भणंतस्सायमहिप्पाओ—अणियट्टिकरणचरिमसमए बादरकिट्टीसु दीसमाणपदेसपिंडो सुहुमसांपराइयकिट्टीसु दीसमाणपदेसपिंडादो[1] असंखेज्जगुणमेत्तो अत्थि। पुणो से काले पढमसमयसुहुमसांपराइयभावे वट्टमाणस्स बादरकिट्टीगदं सव्वमेव पदेसग्गं सुहुमकिट्टीसरूवेणेव परिणमियूण चिट्ठदि। एवं च सुहुमकिट्टीसरूवेण परिणदपदेससंतकम्मं बादरकिट्टीसरूवेण तदवत्थाए णत्थि

§ ७७६ अन्तिम समयवर्ती बादरसाम्परायिकको मर्यादा करके सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी जो यह श्रेणिप्ररूपणा अनन्तरपूर्व ही कह आये हैं वही श्रेणिप्ररूपणा सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम समयमें भी करनी चाहिए क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इतनी विशेषता है कि वहाँपर बादरसाम्परायिक कृष्टियोंका भी सम्भव है, इसलिए उनमें दिखनेवाला प्रदेशपुंज असंख्यातगुणा होकर भिन्न गोपुच्छाकाररूपसे निर्दिष्ट किया गया है, परन्तु यहाँपर बादरसाम्परायिक कृष्टियोंमें अवस्थित हुआ पूरा ही प्रदेशपुंज नवकबन्ध उच्छिष्टावलिको छोड़कर सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिरूपसे परिणमनकर एक गोपुच्छाकाररूपसे होना है ऐसा जानना चाहिए, इस प्रकार इस विशेषका ज्ञान करानेके लिये आगेके सूत्रको आरम्भ करते हैं—

*** इतनी विशेषता है कि सेचीयरूपसे यदि बादरसाम्परायिक कृष्टियोंको धरता है तो वहाँपर प्रदेशपुंज विशेष हीन होता है।**

§ ७७७ सेचीयरूपसे अर्थात् सेचीय सम्भवका आश्रय करके यदि किसी प्रकार यह प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक जीव बादरसाम्परायिक कृष्टियोंको धरता है तो वहाँपर दिखनेवाला प्रदेशपुंज विशेष हीन ही होता यह इस सूत्रका अर्थके साथ सम्बन्ध है। और इस प्रकार कहनेवाले आचार्यका अभिप्राय है—अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयमें बादर कृष्टियोंमें दिखनेवाला प्रदेशपिण्ड सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें दिखनेवाले प्रदेशपिण्डसे असंख्यातगुणा होता है। पुन तदनन्तर समयमें प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक भावमें विद्यमान क्षपक जीवके बादर कृष्टिगत समस्त प्रदेशपुंज सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिरूपसे ही परिणमकर अवस्थित रहता है। और इस प्रकार सूक्ष्म कृष्टिरूपसे परिणत हुआ प्रदेशसत्कर्म उस अवस्थामें बादरकृष्टिरूपसे नहीं ही है। वहाँपर यद्यपि सूक्ष्म

1 ता प्रतौ दीसमाणपदेसपिंडो इति पाठ।

चेव, तत्थ जइ वि पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स बादरकिट्टीणमच्चंताभावो चेव तो वि सेचीय-संभवमस्सियूण तासिमत्थित्तं बुद्धीए परिकप्पिय तव्विसया सेढिपरूवणा किह वि पयट्टाविज्जदि। तो वि तत्थ दिस्समाणपदेसग्गं सुहुमकिट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गादो विसेसहीणमेव होज्ज, ण तत्तो असंखेज्जगुणं, एयगोवुच्छसरूवेण तक्कालमेव किट्टीगदसयलदव्वस्स परिणामणियमदंसणादो त्ति। तम्हा संभवसच्चमस्सियूण पयट्टत्तादो ण सुत्तमेदमसंभवदोसदूसियमिदि पडिवज्जेयव्वं। एवमेत्तिएण पबंधेण सुहुमसांपराइयकिट्टीकारयस्स तत्थ दिज्जमाणदिस्समाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणं कादूण संपहि सुहुमसांपराइयकिट्टीओ णिव्वत्तेमाणस्स तदवत्थाए लोभविदिय तदियबादरसांपराइयकिट्टी-हितो पदेससंतकम्मस्स पवुत्तिविसेसावहारणट्ठमुवरिमप्पाबहुअपबंधमाढवेइ—

* सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु लोभस्स चरिमादो बादरसांपराइयकिट्टीदो सुहुमसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं थोवं।

§ ७७८ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ करेमाणो लोभस्स विदिय तदियसांपराइयकिट्टीहिंतो पदेसग्गस्सासंखेज्जदिभागमोकड्डणासंकमेण सुहुमसांपराइयकिट्टीसु संकामेदि। एवं च संकामेमाणस्स तत्थ चरिमादो बादरसांपराइयकिट्टीदो सुहुमसांपराइयकिट्टीसु जं पदेसग्गमोकड्डणावसेण संकमदि त थोवमिदि वुत्तं होइ।

* लोभस्स विदियकिट्टीदो चरिमबादरसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं।

सांपरायिकके प्रथम समयमें बादर कृष्टियोंका अत्यन्त अभाव ही है तो भी सेचीय सम्भवका आश्रय करके बुद्धिमें उनके अस्तित्वकी परिकल्पना करके तद्विषयक श्रेणिप्ररूपणा कथमपि प्रवृत्त करायी गयी है तो भी वहाँपर दिखनेवाला प्रदेशपुंज सूक्ष्म कृष्टियोंमें दिखनेवाले प्रदेशपुंजसे विशेष हीन ही होवे, उससे असंख्यातगुणा नहीं होवे, क्योंकि एक गोपुच्छारूपसे उसी समय कृष्टिगत समस्त द्रव्यके परिणामका नियम देखा जाता है। इसलिये सम्भव सत्यका आश्रय लेकर इस सूत्रके प्रवर्त होनेसे यह सूत्र असम्भव दोषसे दूषित नहीं होता यह निश्चय करना चाहिए। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकारकके उस अवस्थामें दिये जानेवाले और दिखनेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा करके अब सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको निवर्तमान क्षपक जीवके उस अवस्थामें लोभकी दूसरी और तीसरी बादर साम्परायिक कृष्टियोंमेंसे प्रदेश सत्कर्मकी प्रवृत्तिविशेषका अवधारण करनेके लिए अल्पबहुत्व प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंके किये जानेपर लोभकी अन्तिम बादर साम्परायिक कृष्टिसे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिमें स्तोक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है।

§ ७७८ सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको करनेवाला क्षपक जीव लोभकी दूसरी व तीसरी साम्परायिक कृष्टियोंमेंसे प्रदेशपुंजके असंख्यातवें भागको अपकर्षण संक्रम द्वारा सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टियोंमें संक्रमित करता है। और इस प्रकार संक्रम करनेवाले क्षपकके वहाँपर अन्तिम बादर साम्परायिक कृष्टिसे सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टियोंमें जो प्रदेशपुंज अपकर्षणवश संक्रमित होता है वह थोड़ा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* लोभकी दूसरी कृष्टिसे अन्तिम बादर साम्परायिक कृष्टिमें संख्यातगुणे प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है।

§ ७७९. किं कारणं ? लोभतदियसंगहकिट्टीपदेसादो विदियसंगहकिट्टीपदेसग्गस्स संखेज्जगुणत्तादो ।

* लोभस्स विदियकिट्टीदो सुहुमसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्ज-गुणं ।

§ ७८० लोभस्स तदियसंगहकिट्टीआयामादो सुहुमसांपराइयकिट्टीआयामो संखेज्जगुणो भवदि, एदेण कारणेण संखेज्जगुणायामाणुसारेण तत्थ संकामिज्जमाणपदेसग्गं पि संखेज्जगुणमेवेत्ति णिच्छेयव्वं, पडिग्गहमाहप्पाणुसारेणेव पडिग्गेज्झसंकममाणदव्वस्स पवुत्तिअब्भुवगमादो । संपहि एदस्सेव सुहुमसांपराइयकिट्टीविसयस्स पदेससंकमप्पाबहुअस्स फुडीकरणट्ठमेत्थ संबधागयं बादरसांपराइयकिट्टीविसयं पदेससंकमप्पाबहुअं बादरकिट्टीवेदगपढमसमयप्पहुडि परूवेमाणो सुत्तपबंधमुत्तरमाढवेइ—

* पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोहस्स विदियकिट्टीदो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं थोवं ।

§ ७८१ किट्टीकरणद्धाए णिट्ठिदाए से काले कोहपढमसंगहकिट्टीमोकड्डियूण वेदमाणो पढमसमयकिट्टीवेदगो णाम । तस्स कोहविदियसंगहकिट्टीदो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए जं पदेसग्गमधापवत्तसंकमेण संकमदि तं सव्वत्थोवं, एत्तो अण्णस्स संकमदव्वस्स थोवयरस्स पयदविसये संभवाणुवलंभादो ।

§ ७७९ क्योंकि लोभकी तृतीय संग्रहकृष्टिके प्रदेशपुंजसे दूसरी संग्रहकृष्टिका प्रदेशपुंज संख्यातगुणा है ।

* लोभकी दूसरी कृष्टिसे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिमें संख्यातगुणे प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है ।

§ ७८० क्योंकि लोभकी तीसरी संग्रहकृष्टिके आयामसे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिका आयाम संख्यातगुणा होता है, इस कारण संख्यातगुणे आयामके अनुसार उसमें संक्रमित होनेवाला प्रदेशपुंज भी संख्यातगुणा ही होता है ऐसा निश्चय करना चाहिए क्योंकि प्रतिग्रहके माहात्म्यके अनुसार ही प्रतिग्राह्य संक्रममाण द्रव्यकी प्रवृत्ति स्वीकार की गयी है । अब इसी सूक्ष्म साम्परायिक कृष्टिविषयक प्रदेशसंक्रम अल्पबहुत्वका स्पष्टीकरण करनेके लिए यहाँपर सम्बन्धवश प्राप्त बादरसाम्परायिक कृष्टिविषयक प्रदेशसंक्रम अल्पबहुत्वका बादर कृष्टिवेदकके प्रथम समयसे लेकर प्ररूपणा करते हुए आगेके सूत्रको आरम्भ करते हैं—

* कृष्टिवेदकके प्रथम समयमें क्रोधकी दूसरी कृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें अल्प प्रदेशपुंजको संक्रमण करता है ।

§ ७८१ कृष्टिकरणकालके समाप्त होनेपर तदनन्तर समयमें क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिका अपकर्षण करके वेदन करनेवाला जीव प्रथम समयवर्ती कृष्टिवेदक कहलाता है । क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें जो प्रदेशपुंज अध:प्रवृत्त संक्रमके द्वारा संक्रमित होता है वह सबसे स्तोक है, क्योंकि प्रकृत विषयमें इससे अन्य संक्रम द्रव्य स्तोकतर नहीं उपलब्ध होता ।

* कोहस्स तदियकिट्टीदो माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं।

§ ७८२ एत्थ कारणं वुच्चदे—जा अणुभागेण थोवा संगहकिट्टी तिस्से पदेसग्गं बहुअं होइ, बहुगादो च पदेसादो संकामिज्जमाणपदेसग्गं पि बहुअं चेव होदि त्ति एदेण कारणेण पुव्विल्ल संकमदव्वादो एदं संकमदव्वं विसेसाहियं जादं। केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागेण खंडिदेयखंडमेत्तो।

* माणस्स पढमादो किट्टीदो मायाए पढमकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं।

§ ७८३ एत्थ चोदओ भणइ—किट्टीकरणद्धाए एक्कारस मूलगाहा पडिबद्धाओ। तत्थ जा तदियमूलगाहा सा तिण्णि अत्थे भणइ। तत्थ जो पढमो अत्थो तम्मि विहासिज्जमाणे बारसण्हं संगहकिट्टीण पदेसग्गेण अप्पाबहुअं भणिदं। तं कधं ? माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं थोवं। विदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं। तदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं, कोहस्स विदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं, तस्सेव तदियसंगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं। पुणो माया लोभाणं तिण्हं संगहकिट्टीणं पदेसग्गं जहाकममेव विसेसाहियं होदूण णिद्दिट्ठं। एत्थ पुण पदेससंकमे भण्णमाणे माणतदियकिट्टीपदेसादो विसेसाहियभावेण ट्ठिदकोहविदियसंगह किट्टीदो माणपढमसंगहकिट्टीए अधापवत्तसंकमेण संकममाणपदेसग्गं थोवं भणिदं। तत्तो माण

* क्रोधकी तीसरी कृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है।

§ ७८२ यहाँपर कारणका कथन करते हैं—जो अनुभागकी अपेक्षा स्तोक संग्रहकृष्टि है उसका प्रदेशपुंज बहुत होता है, और बहुत प्रदेशोंसे संक्रम्यमाण प्रदेशपुंज भी बहुत ही होता है। इस कारण पहलेके संक्रम द्रव्यसे यह संक्रम द्रव्य विशेष अधिक हो गया है।

शंका—कियन्मात्र विशेष अधिक हो गया है ?

समाधान—पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर जो एक भागप्रमाण प्रदेश पुंज प्राप्त होता है तन्मात्र विशेष अधिक हो गया है।

* मानकी प्रथम कृष्टिसे मायाकी प्रथम कृष्टिमें विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है।

§ ७८३ शंका—यहाँपर शंकाकार कहता है—कृष्टिकरणकालमें ग्यारह मूल गाथायें प्रतिबद्ध हैं। उनमें जो तीसरी मूलगाथा है वह तीन अर्थोंका कथन करती है। उनमें जो प्रथम अर्थ है उसका विशेष व्याख्यान करनेपर वहाँपर बारह संग्रह कृष्टियोंका प्रदेशपुंजकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कह आये हैं। वह कैसे ? इसका उत्तर करते हुए कहा है—'मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें स्तोक प्रदेश पुंज होता है। दूसरी संग्रह कृष्टिमें उससे विशेष अधिक प्रदेशपुंज होता है। उसीकी तीसरी संग्रह कृष्टिमें उससे विशेष अधिक प्रदेशपुंज होता है। क्रोधकी दूसरी संग्रहकृष्टिमें उससे विशेष अधिक प्रदेशपुंज होता है। तीसरी संग्रहकृष्टिमें उससे विशेष अधिक प्रदेशपुंज होता है। पुन माया और लोभ-की तीनों संग्रह कृष्टियोंका प्रदेशपुंज यथाक्रम विशेष अधिक ही करके प्राप्त होता है। परन्तु यहाँपर प्रदेशसंक्रमका कथन करनेपर मानकी तीसरी कृष्टिके प्रदेशपुंजसे विशेष अधिकरूपसे स्थित क्रोधकी दूसरी संग्रह कृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें अध प्रवृत्त संक्रमके द्वारा संक्रमित होनेवाला प्रदेश

पढमसंगहकिट्टीए कोहतदियसंगहकिट्टीदो अधापवत्तसंकमेणेव संकममाणपदेसग्गं विसेसाहियमिदि भणिदूण पुणो एदस्सुवरि माणस्स पढमसंगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए अधापवत्तसंकमेण संकममाणय पदेसग्गं विसेसाहियमिदि णिद्दिट्ठं। एदं च ण समंजसं, थोवपदेसपिंडादो बहुवयरं संकामेदि बहुगादो च थोवयरं संकामेदि त्ति एवंविहत्थस्स जुत्तिविरुद्धत्तादो त्ति ?

एत्थ परिहारो वुच्चदे – एसो पदेससंकमो कत्थ वि आधारपहाणो, कत्थ वि आधेयपहाणो, कत्थ वि तदुभयपहाणो होदूण पयट्टदे। एत्थ पुण आहारपहाणत्तविवक्खाए पडिग्गहदव्वाणुसारेण संकमपवुत्ती जेणावलंबिदो तेण कोहतदियसंगहकिट्टीपदेससंकमस्स पडिग्गहभूदमाणपढमसंगहकिट्टिपदेसग्गादो माणपढमसंगहकिट्टिपदेससंकमस्स पडिग्गहभावेण ट्ठिदमायापढमसंगहकिट्टीपदेसग्गस्स विसेसाहियत्तादो तदाधारभूदपदेससंकमो विसेसाहियो जादो। विसेसपमाणमेत्थ पडिग्गहदव्वाणुसारेण आवलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागियमिदि गहेयव्वं।

* माणस्स विदियादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं।

पुंज थोड़ा कहा गया है। पुनः उसके बाद मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें क्रोधकी तीसरी संग्रह कृष्टिसे अधःप्रवृत्त संक्रमके द्वारा संक्रमित होनेवाला प्रदेशपुंज विशेष अधिक है ऐसा कहकर पुनः इसके ऊपर मानकी प्रथम संग्रह कृष्टिसे मायाकी प्रथम संग्रह कृष्टिमें अधःप्रवृत्त संक्रमके द्वारा संक्रमित होनेवाला प्रदेशपुंज विशेष अधिक है' ऐसा निर्देश किया गया है। परन्तु यह ठीक नहीं है क्योंकि 'स्तोक प्रदेशपिण्डमें बहुत अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है और बहुत प्रदेश पुंजसे स्तोकतर प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है' इस प्रकारका अर्थ युक्तिविरुद्ध है।

समाधान—अब इस शंकाका परिहार करते हैं—यह प्रदेशसंक्रम कहीपर आधारप्रधान, कहींपर आधेयप्रधान और कहींपर तदुभयप्रधान होकर प्रवृत्त होता है, परन्तु यहाँपर आधारप्रधानकी विवक्षामें प्रतिग्रह द्रव्यके अनुसार यतः संक्रमकी प्रवृत्तिका अवलम्ब लिया गया है इस कारण क्रोधकी तीसरी संग्रहकृष्टिके प्रदेशसंक्रमका प्रतिग्रहभूत मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिके प्रदेशपुंजसे तथा मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिके प्रदेशसंक्रमका प्रतिग्रहरूपसे स्थित मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिके प्रदेशपुंजके विशेष अधिक होनेसे उसका आधारभूत प्रदेशसंक्रम विशेष अधिक हो जाता है। यहाँपर विशेषका प्रमाण प्रतिग्रह द्रव्यके अनुसार आवलिके असंख्यातवें भागका प्रतिभागी है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

विशेषार्थ—कृष्टिकरणकालके प्रसंगसे जो तीसरी मूलगाथा १६९ है उसके तीन अर्थोंमेंसे प्रथम अर्थके व्याख्यानके प्रसंगसे भाष्यगाथा (११७—१७०) में १२ संग्रहकृष्टियोंके प्रदेशसंक्रमके अल्पबहुत्वका निर्देश करते हुए वहाँ जो क्रम स्वीकार किया गया है उससे यहाँ स्वीकार किये गये प्रदेशक्रममें जो अन्तर है उसको लक्ष्यमें रखकर जो समाधान किया गया है उससे यह स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि यहाँ न तो आधेयप्रधान संक्रम विवक्षित है और न ही तदुभयप्रधान संक्रम विवक्षित है। किन्तु आधारप्रधान प्रदेशसंक्रम यहाँपर विवक्षित है। इसी कारण पूर्व कथनमें इस कथनमें थोड़ा अन्तर हो गया है।

* मानकी दूसरी संग्रहकृष्टिसे मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है।

* माणस्स तदियादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं ।

* मायाए पढमसंगहकिट्टीदो लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं ।

* मायाए विदियादो संगहकिट्टीदो लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं ।

* मायाए तदियादो संगहकिट्टीदो लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ ७८४ एत्थ सव्वत्थ संतकम्माणुसारेणेव विसेसाहियत्तं जादमिदि दट्ठव्वं । सेसं सुगमं ।

* लोभस्स पढमकिट्टीदो लोभस्स चेव विदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ ७८५ एत्थ वि संतकम्माणुसारेणेव विसेसाहियत्तं जादमिदि घेत्तव्वं । एत्थ चोदओ भणइ—कोहविदियसंगहकिट्टिप्पहुडि हेट्ठा णिवदिदासेससंकमदव्वमधापवत्तसंकमेणेव गहिदं, तत्थ पयारंतरासंभवादो । एसो पुण ओकड्डणासंकमो, तदो पुव्विल्लसंकमदव्वादो असंखेज्जगुणेणेदेण

* मानकी तीसरी संग्रहकृष्टिसे मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है ।

* मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है ।

* मायाकी दूसरी संग्रहकृष्टिसे लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है ।

* मायाकी तीसरी संग्रहकृष्टिसे लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमे विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है ।

§ ७८४ यहाँ सवत्र सत्कर्मके अनुसार ही विशेष अधिकपना हो जाता है ऐसा जानना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

* लोभकी प्रथम कृष्टिसे लोभकी ही दूसरी संग्रहकृष्टिमे विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है ।

§ ७८५ यहाँपर भी सत्कर्मके अनुसार ही विशेष अधिकपना हो गया है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शंका—यहाँपर शंकाकार कहता है—क्रोधकी दूसरी संग्रहकृष्टिसे लेकर नीचे पतित होनेवाला सम्पूर्ण संक्रम द्रव्य अधःप्रवृत्त संक्रमके क्रमसे ही ग्रहण किया जाता है, क्योंकि वहाँपर अन्य प्रकार सम्भव नही है । परन्तु यह अपकर्षण संक्रम है, इसलिए पहिलेके संक्रम द्रव्यसे यह असंख्यातगुणा होना चाहिए, क्योंकि अधःप्रवृत्त भागहारसे अपकर्षण उत्कर्षण भागहार सर्वत्र असंख्यातगुणा होता है । ऐसा उपदेश है ?

होदव्व, अधापवत्तभागहारादो ओकड्डुक्कड्डणभागहारस्स सव्वत्थासंखेज्जगुणहीणत्तोवएसादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—सच्चमेदं, भागहारविसेसे जोइज्जमाणे तहा चेव होदि त्ति । किंतु भागहारविसेसो एत्थ णत्थि, परिणाममाहप्पमस्सियूण अधापवत्तभागहारस्स ओकड्डणभागहाराणु सारेणेव एदम्मि विसये पवुत्तिणियमावलंबणादो । ण चेदमसिद्धं, एदम्हादो चेव सुत्तादो पयदत्थ सिद्धिसमवलंबणादो । ण च सव्वत्थेव ओकड्डुक्कड्डणभागहारादो अधापवत्तभागहारस्सासंखेज्ज गुणत्तणियमो अत्थि, अववादविसयमेदं मोत्तूणण्णत्थ तस्स तहाभावाब्भुवगमादो । तम्हा एदम्मि विसये अधापवत्तसंकमादो ओकड्डणसंकमस्स भागहारविसेसो णत्थि त्ति सिद्धमेदस्स दव्वविसेस मस्सियूण विसेसाहियत्तं ।

* लोभस्स चेव पढमसंगहकिट्टीदो तस्स चेव तदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं ।

§ ७८६ एसो वि ओकड्डणसंकमो चेव । किंतु पुव्विल्लपडिग्गहादो संपहियपडिग्गहो विसेसाहिओ, तेण तव्विसयसंकमो वि विसेसाहिओ जादो ।

* कोहस्स पढमसंगहकिट्टीदो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।

§ ७८७ लोभपढमसंगहकिट्टीपदेससंतकम्मादो कोहपढमसंगहकिट्टीए पदेससंतकम्मं तेरसगुणं होइ, तेण तत्तो संकामिज्जमाणपदेसग्गं पि संखेज्जगुणं चेव जादं । सेसं सुगमं ।

समाधान—यहाँपर उक्त शंकाका परिहार करते हैं—यह सच है भागहार विशेषके देखनेपर उसी प्रकार है । किन्तु यहाँपर भागहार विशेष नहीं है, क्योंकि परिणामके माहात्म्यका आश्रय करके अधःप्रवृत्त भागहारको अपकर्षण उत्कर्षण भागहारके अनुसार ही इस विषयमें प्रवृत्तिके नियमका अवलम्बन लिया गया है । और यह असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि इसी सूत्रसे प्रकृत अर्थकी सिद्धिका अवलम्बन हो जाता है परन्तु सर्वत्र ही अपकर्षण उत्कर्षण भागहारसे अधःप्रवृत्त भागहारके असंख्यातगुणेपनेका नियम नहीं है क्योंकि इस अपवादक विषयको छोड़कर अन्यत्र उसे उसी प्रकारसे स्वीकार किया गया है । इसलिए इस विषयमें अधःप्रवृत्त संक्रमसे अपकर्षण संक्रमकी अपेक्षा भागहार विशेष नहीं है । इसलिए इसके द्रव्यविशेषका आश्रय करके विशेषाधिकपना सिद्ध हो जाता है ।

* लोभकी ही प्रथम संग्रहकृष्टिसे उसीकी तीसरी संग्रहकृष्टिमें विशेष अधिक प्रदेशपुंजको संक्रमित करता है ।

§ ७८६ यह भी अपकर्षण संक्रम ही है । किन्तु पहिलेके प्रतिग्रहसे साम्प्रतिक प्रतिग्रह विशेष अधिक है । इसलिए उसको विषय करनेवाला संक्रम भी विशेष अधिक हो जाता है ।

* क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें संख्यातगुणे प्रदेशपुंजको संक्रम करता है ।

§ ७८७ लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिके प्रदेश सत्कर्मसे क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें प्रदेश सत्कर्म तेरहगुणा है, इसलिए उससे संक्रमित होनेवाला प्रदेशपुंज भी संख्यातगुणा ही हो जाता है । शेष कथन सुगम है ।

* कोहस्स चेव पढमसगहकिट्टीदो कोहस्स चेव तदियसगहकिट्टीए सकमदि पदेसग्गं विसेसाहिय ।

§ ७८८ पुव्विल्लपडिग्गहादो एसो पडिग्गहो विसेसाहिओ, तेण कारणेण संकमदव्वमेदं विसेसाहियमिदि णिद्दिट्ठ ।

* कोहस्स पढमकिट्टीदो कोहस्स चेव विदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं सखेज्जगुण ।

§ ७८९ उदीरिज्जमाणकिट्टीदो तदणतरहेट्ठिमकिट्टीए गच्छमाणपदेसग्ग सव्वेहितो बहुग होदि, तदायारेण तस्स सव्वस्सेव पच्चासण्णकालेण परिणमणणियमदसणादो । तेण पुव्विल्ल पडिग्गहादो जइ वि एसो पडिग्गहो विसेसहीणो तो वि एत्थतणसकमदव्व सखेज्जगुणमेवेत्ति घेत्तव्व ।

* एसो पदेससकमो अइक्तो वि उक्खेदिदो सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु आसओ त्ति कादूण ।

§ ७९० एदस्सत्थो वुच्चदे—एसो पदेससकमो बादरकिट्टीविसयो 'अइक्कतो वि उक्खेविदो' अइक्कतावसरो वि सतो पुणरुक्खिविदूण भणिदो । किमट्ठमेवं भणिज्जदि त्ति चे ? 'सुहुम सांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु आसओ त्ति कादूण' सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु जो पदेस सकमो पविदो तस्स कारणभूदो त्ति कादूण अइक्कतावसरो वि होंतो एसो पदेससंकमो पुणरुच्चइदूण भणिदो त्ति वुत्त होइ । कथमेसो बादरकिट्टीविसयो पदेससंकमो सुहुमसांपराइय

* क्रोधकी ही प्रथम सग्रहकृष्टिसे क्रोधकी ही तीसरी सग्रहकृष्टिमे विशेष अधिक प्रदेश पुजको सक्रम करता है ।

§ ७८८ पहलेके प्रतिग्रहसे यह प्रतिग्रह विशेष अधिक है। इस कारण यह सक्रम द्रव्य विशेष अधिक है ऐसा निर्देश किया है ।

* क्रोधकी प्रथम कृष्टिसे क्रोधकी ही दूसरी संग्रह कृष्टिमें सख्यातगुणे प्रदेशपुजको संक्रम करता है ।

§ ७८९ उदीर्यमान कृष्टिसे तदनन्तर अधस्तन कृष्टिमे सक्रमित होनेवाला प्रदेशपुज सबसे अधिक होता है, क्योंकि तदाकार रूपसे उस सबके ही प्रत्यासन्न कालके साथ परिणमनका नियम देखा जाता है । इस कारण पहलेके प्रतिग्रहसे यद्यपि यह प्रतिग्रह विशेष हीन है तो भी यहांका संक्रम द्रव्य सख्यातगुणा ही है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

* यह प्रदेशसक्रम यद्यपि अतिक्रान्त हो गया है तो भी सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंका आश्रयभूत है ऐसा समझकर पुन उठाकर कहा गया है ।

§ ७९० अब इसका अर्थ कहते हैं—बादरकृष्टिका विषयभूत यह प्रदेशसंक्रम यद्यपि 'अइक्कतो वि उक्खेविदो' अतिक्रान्त अवसरको प्राप्त होता हुआ भी पुन उठाकर कहा गया है ।

शंका—ऐसा किस लिए कहा जाता है ?

समाधान—सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोके किये जानेमे आश्रयभूत है ऐसा समझकर अर्थात् सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंके किये जानेमें जो प्रदेशसक्रम प्राप्त होता है उसका कारणभूत है ऐसा

किट्टीविसयस्स पदेससकमस्स आसयभूदो त्ति चे ? वुच्चदे—सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु तव्विसयस्स पदेससकमस्स गुणगारो भणिदो, लोभविदियबादरसापराइयकिट्टीदो तस्सेव चरिम बादरसापराइयकिट्टीए सकममाणपदेसग्गादो सुहुमकिट्टीसु संकममाण पदेसग्ग सखेज्जगुण होदि त्ति। एवंविहो च पदेससकमगुणगारो ण केवलमिदाणि चेव पयट्टदे, किंतु पुव्व पि बादरकिट्टी विसये सखेज्जगुणपदेसग्गादो पच्चासत्तिविसेसमस्सियूण सखेज्जगुणो चेव पदेससकमो जहासभव पयट्टमाणो तदणुसारेणव एत्थ वि तहा पयट्टो त्ति एवंविहत्थविसेसजाणावणदुवारेण सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु एस पदेससकमो आसयभूदो जादो।

§ ७९१ अण्ण च पुव्वमेदीए पणालीए जहाकममागतूण लोभविदियबादरसापराइयकिट्टी सरूवेण परिणमिय पुणो तत्तो सुहुमसापराइयकिट्टीसरूवेण परिणममाणो पदेसपिडो एव परिणमदि त्ति जाणावणमुहेण एसो बादरकिट्टीविसयो पदेससकमो सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु आसयभूदो जादो, अण्णहा पयददव्वमाहप्पविणिण्णयोवायाभावादो।

§ ७९२ अथवा पुव्व बादरकिट्टीविसयस्स पदेससकमस्स आणुपुव्वीविसेसो चेव कोहविदिय किट्टीवेदगावसरे भणिदो, ण पुणो तत्थ तव्विसयप्पाबहुत्तपरिक्खा आढत्ता, तदो तत्थ परूवणा जोग्गो एसो पदेससकमप्पाबहुअविही अइक्कतावसरो वि एण्हिमुवक्खेविदो सुहुमसापराइयकिट्टीसु

समझकर अतिक्रान्त अवसरको प्राप्त होता हुआ भी यह प्रदेशसक्रम पुन उठाकर कहा गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शका—यह बादरकृष्टिविषयक प्रदेशसक्रम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिविषयक प्रदेशसक्रमका आश्रयभूत कैसे है ?

समाधान—कहते हैं—सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोके किये जानेमे तद्विषयक प्रदेशसक्रमका गुणकार कहा। लोभकी दूसरी बादरसाम्परायिक कृष्टिसे उसीकी अंतिम बादरसाम्परायिक कृष्टिमे सक्रम्यमाण प्रदेशपुजसे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोमें सक्रमित होनेवाला प्रदेशपुज सख्यात गुणा होता है। और इस प्रकारका प्रदेशसक्रमका गुणकार केवल इसी समय नही प्रवृत्त हुआ है, किन्तु पहले भी बादर कृष्टिके विषयमे सख्यातगुणे प्रदेशपुजसे प्रत्यासत्तिविशेषका आश्रय करके सख्यातगुणा ही प्रदेससक्रम यथासम्भव प्रवर्तमान होता हुआ उसके अनुसार ही यहाँपर भी उस प्रकारसे प्रवृत्त हुआ है इस प्रकार इस अर्थविशेषका ज्ञान करानेके द्वारा सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोके किये जानेमे यह प्रदेशसक्रम आश्रयभूत हो गया है।

§ ७९१ दूसरी बात यह है कि पहले इस प्रणाली द्वारा क्रमसे आकर लोभकी दूसरी बादर साम्परायिक कृष्टिरूपसे परिणमन करके पुन उससे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिरूपसे परिणमन करने वाला प्रदेशपिण्ड इस प्रकार परिणमन करता है इस प्रकारका ज्ञान करानेके द्वारा यह बादर कृष्टिविषयक प्रदेशसंक्रम सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोके किये जानेमें आश्रयभूत हो गया है, क्योकि अन्यथा प्रकृत द्रव्यके माहात्म्यके निर्णयके उपायका अभाव है।

§ ७९२ अथवा पहले बादरकृष्टिविषयक प्रदेशसक्रमका आनुपूर्वीविशेष ही क्रोधकी दूसरी कृष्टिवेदकके अवसरपर कह आये हैं, परन्तु वहाँपर तद्विषयक अल्पबहुत्वकी परीक्षा आरम्भ नही की गयी है, इसलिये वहाँपर प्ररूपणाके योग्य यह प्रदेशसक्रम अल्पबहुत्वकी विधि अतिक्रान्तरूप अवसरवाली होकर भी इस समय उसकी प्ररूपणा अपेक्षित है। सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोके किये

कीरमाणीसु किं कारणं पुव्वपरूविदत्थविसये विसेसणिण्णयहेउत्तेणासयभूदो त्ति कादूण, तम्हा सुहुमसांपराइयकिट्टीविसयपदेससंकमपरूवणापसंगेण बादरसांपराइयकिट्टीविसओ वि पदससंकम प्पाबहुअविही परूविदो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो। एवमेदं पदेससंकमप्पाबहुअविहिं जाणाविय सपहि सुहुमसांपराइयकिट्टीकरणद्धाविसय परूवणाविसेसं पुणो वि परूवेमाणो सुत्तपबंधमुत्तर माढवेइ—

* सुहुमसांपराइयकिट्टीसु पढमसमये दिज्जदि पदेसग्गं थोवं।

* बिदियसमये असंखेज्जगुणं जाव चरिमसमयादो त्ति ताव असंखेज्जगुणं।

§ ७९३ समये समये अणंतगुणवड्ढीहिं परिणामेहिं वड्ढमाणो एसो पडिसमयमसंखेज्जगुणं पदेसग्गमोकड्डियूण जाव बादरसांपराइयचरिमसमयो त्ति ताव सुहुमसांपराइयकिट्टीसरूवेण परिण मेदि त्ति भणिदं होदि।

* एदेण कमेण लोभस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्टिदी तिस्से पढमट्टिदीए आवलिया समयाहिया सेसा त्ति तम्हि समये चरिमसमयबादरसांपराइओ।

§ ७९४ गयत्थमेदं सुत्तं। एवं चरिमसमयबादरसांपराइयभावे वट्टमाणस्स तक्कालभाविओ जो परूवणाविसेसो तण्णिण्णयकरणट्ठमुवरिमो सुत्तपबंधो—

जानेमे पहले कहे गये अर्थके विषयमे किस कारणसे विशेष निर्णयमें हेतुरूपसे आश्रयभूत है ऐसा समझकर उससे सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिविषयक प्रदेशसंक्रमकी प्ररूपणाके प्रसंगसे बादर साम्प रायिक कृष्टिविषयक प्रदेशसंक्रम अल्पबहुत्वविधि कही गयी है यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चय रूप अर्थ है। इस प्रकार इस प्रदेशसंक्रम अल्पबहुत्व विधिका ज्ञान कराकर अब सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकरण कालविषयक प्ररूपणाविशेषका फिर भी प्ररूपण करते हुए आगेके सूत्रप्रबन्धको आरम्भ करते है—

* प्रथम समयसम्बन्धी सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोमे अल्प प्रदेशपुंजको देता है।

* दूसरे समयसम्बन्धी सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमे अन्तिम समयके प्राप्त होने तक असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको देता है।

§ ७९३ समय समयमें अनन्तगुणवृद्धिरूप परिणामोके द्वारा वृद्धिको प्राप्त होता हुआ वह क्षपक जीव प्रतिसमय असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके बादर साम्परायिकके अन्तिम समय तक सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिरूपसे परिणमाता है यह उक्त सूत्रका तात्पर्य है।

* इस क्रमसे लोभको दूसरी कृष्टिका वेदन करनेवाले क्षपक जीवके उसकी जो प्रथम स्थिति होती है उसकी एक समय अधिक जब एक आवलि शेष रह जाती है उस समय जीव अन्तिम समयवर्ती बादरसाम्परायिक होता है।

§ ७९४ यह सूत्र गतार्थ है। इस प्रकार अन्तिम समयवर्ती बादरसाम्परायिकभावमें विद्यमान इस क्षपक जीवके तत्काल होनेवाला जो प्ररूपणा भेद है उसका निर्णय करनेके लिये आगेका सूत्रप्रबन्ध आया है—

* तम्हि चेव समये लोभस्स चरिमसमयबादरसांपराइयकिट्टी संछुब्भमाणा संछुद्धा ।

§ ७९५ तम्हि चेवाणियट्टिचरिमसमये लोभस्स चरिमबादरसांपराइयकिट्टी पुव्वमेवाढविय जहाकमं संछुब्भमाणा णिरवसेसं सुहुमसांपराइयकिट्टीसु संछुद्धा त्ति वुत्तं होइ । एवं च उप्पादाणुच्छेदमस्सियूण परूविदं, अण्णहा से काले पढमसमयसुहुमसांपराइयभावे वट्टमाणस्स णिरुद्धबादरसांपराइयकिट्टीए सुहुमकिट्टीसु णिरवसेसं संछोहयभावदंसणादो । ण केवलं तदियबादरसांपराइयकिट्टी चेव ताधे सुहुमसांपराइयकिट्टीसु संछुद्धा, किंतु लोभविदियबादरसांपराइयकिट्टीए वि णवकबंधुच्छिट्ठावलियवज्जं सव्वमेव पदेसग्गं तत्थ संछुद्धमिदि जाणावेमाणो इदमाह—

* लोभस्स विदियकिट्टीए वि दोआवलियबंधे समयूणे मोत्तूण उदयावलियपविट्ठं च मोत्तूण सेसाओ विदियकिट्टीए अंतरकिट्टीओ संछुब्भमाणीओ संछुद्धाओ ।

§ ७९६ गयत्थमेदं सुत्तं । संपहि एत्थेव समये सव्वेसिं कम्माणं ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिसंतकम्मपमाणावहारणट्ठमुवरिमं सुत्तपबंधमाह—

* तम्हि चेव लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं ।

§ ७९७ अणियट्टि०चरिमसमयजहण्णट्ठिदिबंधस्स लोभसंजलणविसयस्स तप्पमाणत्ताण

* उसी समय लोभकी अन्तिम समयवर्ती बादरसाम्परायिककृष्टि संक्रमणको प्राप्त होती हुई संक्रमित हो जाती है ।

§ ७९५ अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयमें लोभकी अन्तिम बादरसाम्परायिककृष्टि पहले ही आरम्भ होकर क्रमसे संक्रमण करती हुई पूरी सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें संक्रमित हो जाती है। यह उक्त कथनका तात्पर्य है। किन्तु यह कथन उत्पादानुच्छेदका आश्रय लेकर कहा है, अन्यथा तदनन्तर समयमें प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकभावमें विद्यमान इस क्षपक जीवके विवक्षित बादरसाम्परायिककृष्टिके सूक्ष्मकृष्टियोंमें पूरा संक्रमणभाव देखा जाता है। केवल तीसरी बादरसाम्परायिककृष्टि ही उस समय सूक्ष्मसाम्परायिककृष्टियोंमें संक्रमित नहीं हुई है, किन्तु लोभकी दूसरी बादर साम्परायिककृष्टिका भी नवकबन्ध और उच्छिष्टावलिको छोड़कर पूरा ही प्रदेशपुंज उसमें संक्रमित हुआ है इस बातका ज्ञान कराते हुए इस सूत्रको कहते हैं—

* लोभकी दूसरी कृष्टिके भी एक समय कम दो आवलिप्रमाण नवकबन्धको छोड़कर और उदयावलिमें प्रविष्ट हुए द्रव्यको छोड़कर शेष सब दूसरी कृष्टिकी अन्तरकृष्टियाँ संक्रम्यमाण होती हुई संक्रमित हो जाती हैं ।

§ ७९६ यह सूत्र गतार्थ है। अब इसी समयमें सब कर्मोंके स्थितिबन्ध और स्थितिसत्कर्मके प्रमाणका अवधारण करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* उसी समय लोभ संज्वलनका स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है ।

§ ७९७ अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयमें लोभ संज्वलनविषयक जघन्य स्थितिबन्धके

इक्कभावो एत्थेव मोहणीयस्स बंधवोच्छेदो वट्टव्वो, एत्तो उवरि तब्बंधकारणपरिणामाण मसंभवादो।

* तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो अहोरत्तस्स अंतो।

§ ७९८ पुव्विल्लसंधिविसये दिवसपुधत्तमेत्तो एदेसिं ट्ठिदिबंधो तत्तो जहाकमं परिहाइदूण अहोरत्तस्संतो मुहुत्तपुधत्तिओ होदूण पयट्टदि त्ति वुत्तं होइ।

* णामागोदवेदणीयाणं बादरसांपराइयस्स जो चरिमो ट्ठिदिबंधो सो संखेज्जेहिं वस्ससहस्सेहिं हाइदूण वस्सस्स अंतो जादो।

§ ७९९ सुगममेदं सुत्तं।

* चरिमसमयबादरसांपराइयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्ममंतोमुहुत्तं।

* तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि।

* णामागोदवेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि।

§ ८०० एदाणि सुत्ताणि। सुगमाणि एवमणियट्टिकरणद्धं समाणिय संपहि एत्तो से काले जहावसरपत्तं सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणं पडिवज्जमाणस्स जो परूवणापबंधो तण्णिद्देसकरणट्ठमुत्तरं सुत्तारंभो—

* से काले पढमसमयसुहुमसांपराइयो जादो।

तत्प्रमाणपनेका अतिक्रम न होनेके कारण यहीपर मोहनीयकी बन्धव्युच्छित्ति जाननी चाहिए, क्योंकि इसके आगे उसके बन्धके कारणभूत परिणामोंका होना असम्भव है।

* तीन घातिया कर्मोंका स्थितिबन्ध कुछ कम दिन रात प्रमाण होता है।

§ ७९८ पूर्वोक्त सन्धिस्थानमें 'दवसप्रथक्त्वप्रमाण कर्मोंका स्थितिबन्ध होता था पुन उससे क्रमश घटकर कुछ कम दिनरातके भीतर मुहूर्तप्रथक्त्वप्रमाण होकर प्रवृत्त रहता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

* नाम, गोत्र और वेदनीयकर्मोंका बादरसाम्परायिक क्षपक जीवके जो अन्तिम स्थितिबन्ध होता है वह संख्यात हजार वर्षसे घटकर एक वर्षके भीतर हो जाता है।

§ ७९९ यह सूत्र सुगम है।

* अन्तिम समयवर्ती बादरसाम्परायिक क्षपक जीवके मोहनीयकर्मका स्थितिसत्कर्म अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है।

* तीन घातिकर्मोंका स्थितिसत्कर्म संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता है।

* नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मोंका स्थितिसत्कर्म असंख्यात वर्षप्रमाण होता है।

§ ८०० ये सूत्र सुगम है। इस प्रकार अनिवृत्तिकरणके कालको समाप्त करके अब इसके आगे तदनन्तर समयमें यथावसर प्राप्त सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानको प्राप्त होनेवाले क्षपक जीवका जो प्ररूपणाप्रबन्ध है उसका निर्देश करनेके लिए आगेके सूत्रको आरम्भ करते हैं—

* तदनन्तर समयमें यह क्षपक जीव प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक हो जाता है।

§ ८०१ बादरकिट्टीवेदगद्धासमत्तिसमणंतरमेव सुहुमकिट्टीओ ओकड्डियूण वेदेमाणो ताधे पढमसमयसुहुमसांपराइयभावेणेसो परिणदो त्ति वुत्तं होइ ।

*** ताधे चेव सुहुमसांपराइयकिट्टीणं जाओ ट्ठिदीओ तदो ट्ठिदिखंडयमागाइद ।**

§ ८०२ तम्मि चेव सहुमसांपराइयपढमसमए लोभसंजलणसहुमकिट्टीणं जाओ ट्ठिदीओ अंतोमुहुत्तपमाणाओ तत्तो संखेज्जदिभागमेत्तं ट्ठिदिखंडयं गहेदुमाढत्तमिदि वुत्तं होइ । मोहणीयाणु भागस्स किट्टीगदस्स जा अणुसमयोवट्टणा पुव्वपरूविदा सा तहा चेव पयट्टदि त्ति दट्ठव्वा, तत्थ णाणत्ताभावादो । णाणावरणादिकम्माण पि ट्ठिदि अणुभागघादा पुव्वं व पयट्टंति त्ति ण तत्थ वि परूवणाभेदो आढत्तो । संपहि तत्थतणपदेसग्गमोकड्डियूण कधं णिसिंचदि त्ति आसंकाए णिण्णयविहाणट्ठमुवरिमसुत्तारंभो—

*** तदो पदेसग्गमोकड्डियूण उदये थोवं दिण्णं ।**

§ ८०३ सहुमसांपराइयकिट्टीणमुक्कीरिज्जमाणाणुक्कीरिज्जमाणट्ठिदीहिंतो पदेसग्गस्स असंखेज्जदिभागमोकड्डियूण पुणो ओकड्डिदसयलदव्वस्स असंखेज्जे भागे पुध ट्ठविय तदसंखेज्जदिभाग मेत्तपदेसग्गं गुणसेढीए णिसिंचमाणो उदयट्ठिदीए थोवयरमेव पदेसग्गमसंखेज्जसमयपबद्धपमाणं णिसिंचदि त्ति वुत्तं होदि ।

§ ८०१ बादरकृष्टियोंके वेदककालके समाप्त होनेके समनन्तर ही सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंको अपकर्षित करके वेदन करता हुआ यह क्षपक जीव उस समय प्रथम समयवर्ती सूक्ष्म साम्परायिकभावसे परिणत हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

*** उसी समय सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंकी जो स्थितियाँ हैं उनमेंसे स्थितिकाण्डकको ग्रहण करता है ।**

§ ८०२ उसी सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम समयमें लोभ सज्वलनसम्बन्धी सूक्ष्मकृष्टियोंकी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण जो स्थितियाँ हैं उनमेंसे संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिकाण्डकको ग्रहण करनेके लिए आरम्भ करता है। कृष्टिगत मोहनीयके अनुभागकी जो अनुसमय अपवर्तना पहले कह आये हैं वह उसी प्रकार प्रवृत्त रहता है ऐसा जानना चाहिए, क्योंकि उसमें नानापनेका अभाव है । इसी प्रकार ज्ञानावरणादि कर्मोंका भी स्थितिघात और अनुभागघात पहलेके समान प्रवृत्त रहता है, उसमें भी प्ररूपणाभेद नहीं आरम्भ होता है। अब वहाँसम्बन्धी प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके किस प्रकार सिंचन करता है ऐसी आशंका होनेपर निर्णयका कथन करनेके लिए आगेके सूत्रको आरम्भ करते हैं—

*** उसके बाद प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके उदयमें अल्प द्रव्य दिया गया है ।**

§ ८०३ सूक्ष्मसाम्परायिककृष्टियोंकी उत्कीर्यमाण और अनुत्कीर्यमाण स्थितियोंमेंसे प्रदेशपुंजके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके पुनः अपकर्षित समस्त द्रव्यके असंख्यात बहुभाग प्रमाण प्रदेशपुंजको पृथक् स्थापित करके उसके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रदेशपुंजको गुणश्रेणि रूपसे सिंचन करता हुआ उदय स्थितिमें स्तोकतर ही असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण प्रदेशपुंजका सिंचन करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

* अंतोमुहुत्तद्धमेत्तमसंखेज्जगुणाए सेढीए देदि ।

§ ८०४ उदयट्ठिदीए णिसित्तपदेसपिंडादो असंखेज्जगुणं पदेसग्गं तत्तो अणंतरोवरिमट्ठिदीए णिसिंचदि । तत्तो वि असंखेज्जगुणं पदेसग्गं तदुवरि ट्ठिदीए णिसिंचदि । एवमणंतराणंतरादो असंखेज्जगुणं पदेसग्गं णिसिंचमाणो गच्छदि जाव अंतोमुहुत्तमेत्तद्धाणमुवरि गंतूणेत्थतणगुणसेढि सीसयं जाव त्ति । एदं च गुणसेढिअद्धाणमेत्थतणसयलंतरायामस्स संखेज्जदिभागमेत्तमिदि घेत्तव्वं । संपहि एदस्सेव गुणसेढिणिक्खेवायामस्स फुडीकरणट्ठमुत्तरसुत्तणिद्देसो—

* गुणसेढिणिक्खेवो सुहुमसांपराइयद्धादो विसेसुत्तरो ।

§ ८०५ सहुमसांपराइयद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ती होदि । तत्तो विसेसुत्तरो एसो गुणसेढिणिक्खेवायामो दट्ठव्वो, तत्तो संखेज्जभागब्भहियत्तेणेदस्स गुणसेढिणिक्खेवायामस्स पवुत्तिदंसणादो । णाणावरणादिकम्माणं पि तक्कालभाविओ गलिदगुणसेढिणिक्खेवायामो सहुमसांपराइयद्धादो विसेसुत्तरो होदूण पयट्टमाणो एत्तो अंतोमुहुत्तद्धाणमुवरि चडिदूण वट्ठदि त्ति दट्ठव्वो, खीणकसायद्धाणं पि बोलेयूण तस्सावट्ठाणणियमदंसणादो । एवमेदम्मि अद्धाणे ओकड्डिदसयलदव्वस्सासंखेज्जदिभागं गुणसेढीए णिक्खिविय पुणो सेसबहुभागदव्वमेत्तो उवरिमासु ट्ठिदीसु णिसिंचमाणो कथं णिसिंचदि त्ति आसंकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरसुत्तारंभो—

* गुणसेढीसीसगादो जा अणंतरट्ठिदी तत्थ असंखेज्जगुणं ।

---

* उसे अन्तमुहूर्तकाल तक असंख्यातगुणे श्रेणीरूपसे देता है ।

§ ८०४ उदयस्थितिमें निक्षिप्त किये गये प्रदेशपुंजसे असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको उससे अनन्तर उपरिम स्थितिमें सींचता है । फिर उससे भी असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको उससे ऊपरकी स्थितिमें सिंचन करता है । इस प्रकार अनन्तर अनन्तररूपसे असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका सिंचन करता हुआ तबतक जाता है जब अन्तर्मुहूर्तप्रमाण आयाम ऊपर जाकर यहाँसम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्ष प्राप्त हो जाता है, परन्तु यह गुणश्रेणि आयाम यहाँसम्बन्धी समस्त अन्तर आयामके संख्यातवें भागप्रमाण होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । अब इसी गुणश्रेणिनिक्षेपके आयामको स्पष्ट करनेके लिए आगेके सूत्रका निर्देश करते हैं—

* वह गुणश्रेणिनिक्षेप सूक्ष्मसाम्परायिकके कालसे विशेष अधिक होता है ।

§ ८०५ सूक्ष्मसाम्परायिककाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होता है, अतः उससे विशेष अधिक यह गुणश्रेणिनिक्षेपका आयाम जानना चाहिए, क्योंकि उससे इस गुणश्रेणि निक्षेपके आयामकी संख्यातवें भाग अधिक प्रवृत्ति देखी जाती है । ज्ञानावरणादि कर्मोंका भी तत्कालभावी गलित गुणश्रेणि निक्षेपसम्बन्धी आयाम सूक्ष्मसाम्परायिकके कालसे विशेष अधिक प्रवृत्त होता हुआ इससे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण आयाम ऊपर जाकर अवस्थित रहता है ऐसा जानना चाहिए, क्योंकि क्षीणकषायके कालको बिताकर उसके अवस्थानका नियम देखा जाता है । इस प्रकार इस आयाममें अपकर्षित किये गये समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागको गुणश्रेणिमें निक्षिप्त करके पुनः शेष बहुभाग प्रमाण द्रव्यको इससे ऊपरकी स्थितियोंमें सिंचन करता हुआ किस प्रकार सिंचन करता है ऐसी आशंकाके होनेपर निःशंक करनेके लिए आगेके सूत्रको आरम्भ करते हैं—

* गुणश्रेणि-शीर्षसे जो तदनन्तर स्थिति है उसमें असंख्यातगुणे द्रव्यको देता है ।

§ ८०६ अंतरद्धाणस्स संखेज्जदिभागे चेव पयदगुणसेढीसीसगे (समादे तत्तो अणंतरोवरिमा जा अणंतरट्ठिदी तत्थ गुणसेढिसीसये णिसित्तपदेसग्गादो असंखेज्जगुण पदेसग्गं णिसिंचदि त्ति भणिदं होदि। ण चेदस्स दव्वस्स गुणसेढिसीसयदव्वादो असंखेज्जगुणत्तमसिद्धं, ओकड्डिदसयल दव्वस्सासंखेज्जेसु भागेसु तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहिं खंडिदेसु तत्थेयखंड विदियट्ठिदीए णिवददि त्ति पुध ट्ठविय तत्थतणसंखेज्जे भागे घेत्तूण अंतरट्ठिदीसु समयाविरोहेण णिसिंचमाणस्स परिप्फुडमेव पयदवव्वस्स गुणसेढिसीसयदव्वादो असंखेज्जगुणत्तसिद्धिदंसणादो। एत्तो परमंतरट्ठिदीसु अणंतराणंतरादो एगेगगोवुच्छविसेसहाणीए पदेसविण्णासं कुणदि जाव अंतरचरिमट्ठिदि त्ति इममत्थविसेसं पदुप्पाएमाणो सुत्तमुत्तरं भणइ—

* तत्तो विसेसहीणं ताव जाव पुव्वसमये अंतरमासी तस्स अंतरस्स चरिमादो अंतरट्ठिदिदो त्ति।

§ ८०७ कुदो? अंतरट्ठिदीसु ओकड्डिदसयलदव्वस्स संखेज्जे भागे घेत्तूण सत्थाणे एयगोवुच्छायारेण णिसिंचमाणस्स पयारंतरासंभवादो। तम्हा एवंविहेण पदेसविण्णासेण अंतरमावूरेदि त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो। एवमंतरट्ठिदीसु पदेसविण्णासं काऊण पुणो एत्तो परं विदियट्ठिदीए जा आदिट्ठिदी तत्थ केरिसं पदेसविण्णासं कुणदि त्ति आसंकाए णिरारेगीकरणट्ठमुत्तरं सुत्तमाह—

---

§ ८०६ अन्तरके आयामके संख्यातवें भागमें ही प्रकृत गुणश्रेणिशीर्षके हो जानेपर उससे अनन्तर जो उपरिम अनन्तर स्थिति है वहाँ गुणश्रेणिशीर्षमें निक्षिप्त किये गये प्रदेशपुंजसे असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका सिंचन करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और यह द्रव्य गुणश्रेणिशीर्षके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है यह बात असिद्ध नहीं है, क्योंकि अपकर्षित किये गये समस्त द्रव्यके असंख्यात भागोंमें तत्प्रायोग्य असंख्यातरूपोंके द्वारा भाजित करनेपर उनमें-से एक भागप्रमाण द्रव्य दूसरी स्थितिमें पतित होता है इस प्रकार इस द्रव्यको पृथक् स्थापित करके वहाँसम्बन्धी संख्यात बहुभाग द्रव्यको ग्रहण करके अन्तरस्थितियोंमें समयके अविरोधपूर्वक सिंचन करनेवाले क्षपक जीवके स्पष्ट ही प्रकृत द्रव्यकी गुणश्रेणिशीर्षके द्रव्यसे असंख्यातगुणपनेकी सिद्धि देखी जाती है। इससे आगे अन्तरसम्बन्धी स्थितियोंमें अनन्तर-अनन्तर क्रमसे एक-एक गोपुच्छा विशेषकी हानि द्वारा अन्तरकी अन्तिम स्थितिके प्राप्त होनेतक प्रदेशोंकी रचना करता है, इस प्रकार इस अर्थ विशेषका कथन करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* उसके आगे, पूर्व समयमें जो अन्तर था उस अन्तरकी अन्तिम अन्तरस्थितिके प्राप्त होनेतक एक एक विशेषहीन द्रव्यको देता है।

§ ८०७ क्योंकि अन्तरसम्बन्धी स्थितियोंमें अपकर्षित हुए समस्त द्रव्यके संख्यात बहुभागको ग्रहण करके स्वस्थानमें एक गोपुच्छाकाररूपसे सिंचन करनेवाले क्षपक जीवके अन्य प्रकार सम्भव नहीं है, इसलिए इस प्रकारके प्रदेशविन्यासके द्वारा अन्तरको भरता है यह यहाँपर इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है। इस प्रकार अन्तरसम्बन्धी स्थितियोंमें प्रदेशविन्यास करके पुनः इससे आगे द्वितीय स्थितिमें जो आदि स्थिति है उसमें किस प्रकारके प्रदेशविन्यासको करता है ऐसी आशंका होनेपर निःशंक करनेके लिए आगेके सूत्रको कहते हैं—

* चरिमादो अंतरट्ठिदीदो पुव्वसमये जा विदियट्ठिदी तिस्से आदिट्ठिदीए दिज्जमाणगं पदेसग्गं संखेज्जगुणहीणं।

§ ८०८ कुदो ? अंतरट्ठिदीसु पुव्वुत्तदव्वस्स संखेज्जे भागे णिसिंचियूण पुणो सेसासंखेज्जदि भागमेत्तदव्वमंतरायामादो संखेज्जगुणविदियट्ठिदीए जहापविभागं णिसिंचमाणस्स परिप्फुडमेदे वम्मि संधिविसये दिज्जमाणपदेसग्गस्स संखेज्जगुणहीणत्तदंसणादो। एत्थ जइ वि सुहुमसांपराइय-किट्टीणं ट्ठिदी अंतरापूरणवसेण एक्का चेवजादा तो वि अणियट्टिचरिमसमयावेक्खाए पढम वि दिय-ट्ठिदिभेदं कादूण अंतरचरिमट्ठिदी विदियट्ठिदी आदिट्ठिदी च घेत्तव्वा त्ति जाणावणट्ठं दोसु वि एदेसु सुत्तेसु पुव्वसमयणिद्देसो कओ दट्ठव्वो। जइ वि एत्थ अंतरट्ठिदीसु ओकड्डिदसयलदव्वस्स संखेज्ज दिभागमेत्तमेव दव्वं णिसिंचदि, विदियट्ठिदीए च संखेज्जे भागे णिसिंचदि त्ति घेप्पइ तो वि पय-दत्थसिद्धीए णत्थि पडिबंधो, अंतरायामादो विदियट्ठिदिआयामस्सासंखेज्जगुणत्तमस्सियूण तस्स सिद्धीए बाहाणुवलंभादो। एवमेदम्मि संधिविसये संखेज्जगुणहीणं पदेसणिसेगं कादूण सपहि एत्तो उवरिमेसु ट्ठिदिविसेसेसु पदेसणिसेगमेव कुणदि त्ति पदुप्पायणट्ठ मुत्तरसुत्तमोइण्णं—

* तत्तो विसेसहीणं।

§ ८०९. एत्तो परमेगेगगोवुच्छविसेसहाणीए विसेसहीणं पदेसणिक्खेवं कुणमाणो गच्छदि जाव सुहुमसांपराइयकिट्टीणमुक्कस्सट्ठिदीदो समयाहियावलियमेत्तं हेट्ठा ओसरिदूण ट्ठिदवदिरित्तट्ठिदि

* अन्तिम अन्तरसम्बन्धी स्थितिसे पूर्व समयमे जो द्वितीय स्थिति है उसकी आदि स्थितिमे जो प्रदेशपुंज दिया जाता है वह संख्यातगुणा हीन होता है।

§ ८०८ क्योंकि अन्तरसम्बन्धी स्थितियोंमें पूर्वोक्त द्रव्यके संख्यात बहुभागप्रमाण द्रव्यको सिंचन करके पुनः शेष असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यको अन्तर आयामसे संख्यातगुणी द्वितीय स्थितिमे विभागके अनुसार सिंचन करनेवाले क्षपक जीवके स्पष्ट ही इस सन्धिस्थानमे दिया जानेवाला प्रदेशपुंज संख्यातगुणा हीन देखा जाता है। यहाँपर यद्यपि सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोकी स्थिति अन्तरके भर देनेके कारण एक ही हो गयी है तो भी अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयकी अपेक्षा प्रथम और द्वितीय स्थितिका भेद करके अन्तरकी अन्तिम स्थिति और द्वितीय स्थितिकी आदि स्थिति ग्रहण करनी चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए इन दोनो ही सूत्रोमें पूर्व समयका निर्देश किया गया जानना चाहिए। यद्यपि यहाँपर अन्तरस्थितियोमे अपकर्षित समस्त द्रव्यके संख्यातवें भागप्रमाण ही द्रव्यका सिंचन करता है और द्वितीय स्थितिमें संख्यात बहुभागप्रमाण द्रव्यका सिंचन करता है ऐसा ग्रहण करते है तो भी प्रकृत अर्थकी सिद्धिमे कोई प्रतिबन्ध नहीं है, क्योंकि अन्तरके आयामसे द्वितीय स्थितिके आयामके असंख्यातगुणपनेका आश्रय करके उसकी सिद्धिमे कोई बाधा नहीं पायी जाती। इस प्रकार इस सन्धिस्थानमे संख्यातगुणहीन प्रदेशनिषेकको करके अब इससे उपरिम स्थितिविशेषोमे प्रदेश-निषेकको इस प्रकार करता है इस बातका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

* उससे आगे विशेषहीन द्रव्यको देता है।

§ ८०९. इसके आगे एक एक गोपुच्छाविशेषकी हानिद्वारा विशेषहीन प्रदेशनिक्षेप करता हुआ सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोकी उत्कृष्ट स्थितिसे एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थिति

१ आ प्रतौ एक्को चेव इति पाठः।

त्ति, तत्तो परमइच्छावणाविसये णिक्खेवासंभवादो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसब्भावो। एवमेत्तिएण पबंधेण सुहुमसांपराइय पढमसमए दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणं समाणिय संपहि इममेवत्थमुवसंहरेमाणसुत्तमुत्तरं भणइ—

*** पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स जमोकड्डिज्जदि पदेसग्गं तमेदीए सेढीए णिक्खिवदि।**

§ ८१० गयत्थमेव सुत्तं। संपहि विदियादिसमयेसु वि एसो चेव ओकड्डिज्जमाणपदेसग्गस्स णिसेगविण्णासक्कमो अणुगंतव्वो त्ति जाणावणट्ठमुवरिमं पबंधमाह—

*** विदियसमए वि एवं चेव। तदियसमये वि एवं चेव। एस कमो ओकड्डिदूण णिसिंचमाणगस्स पदेसग्गस्स ताव जाव सुहुमसांपराइयस्स पढमट्ठिदिखंडयं णिल्लेविदं ति।**

§ ८११ तं जहा—विदियसमये ताव पढमसमयोकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणं पदेसग्गमोकड्डियूण णिसिंचमाणो उदये थोवं देदि, तत्तो विदियाए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणं, एवं ताव असंखेज्जगुणं जाव पढमसमयगुणसेढिसीसयादो उवरिमाणंतरट्ठिदि त्ति। कुदो? एदम्मि विसये मोहणीयस्सावट्ठिदगुणसेढिणिक्खेवदंसणादो। तदो गुणसेढिसीसयादो उवरिमाणंतरट्ठिदीए वि एयवियप्पेण ट्ठिदीए गुणसेढिपयत्तेण विणा वि दव्वमाहप्पेणासंखेज्जगुणं पदेसग्गं णिक्खिवदि। तत्तो विसेसहीणं जाव भूदपुव्वणयविसईकदा अंतरचरिमट्ठिदि त्ति। तत्तो विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदिम्मि

नीचे सरककर स्थित हुई वहाँ की स्थितिके प्राप्त होनेतक जाता है, क्योंकि उसमें आगे अतिस्थापनारूप स्थितियोंमें निक्षेप होना असम्भव है यह इस सूत्रका यहाँपर समीचीन अर्थ है। इस प्रकार इस प्रबन्ध द्वारा सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम समयमें दिये जानेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणि प्ररूपणा सम्पन्न करके अब इसी अर्थका उपसंहार करते हुए आगेके सूत्रको कहते हैं—

*** सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम समयमें जिस प्रदेशपुंजका अपकर्षण करता है उसका इस श्रेणिके क्रमसे निक्षेप करता है।**

§ ८१० यह सूत्र गतार्थ है। अब द्वितीय आदि समयोंमें भी अपकर्षित किये जानेवाले प्रदेशपुंजके निषेक विन्यासका यही क्रम जानना चाहिए इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेके प्रबन्धको कहते हैं—

*** दूसरे समयमें भी इसी क्रमसे निक्षेप करता है। तीसरे समयमें भी इसी क्रमसे निक्षेप करता है। इसी प्रकार अपकर्षण करके सींचे जानेवाले प्रदेशपुंजका सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम स्थितिकाण्डकके निर्लेपित होनेतक यही क्रम चलता रहता है।**

§ ८११ वह जैसे—सर्वप्रथम दूसरे समयमें प्रथम समयके अपकर्षित द्रव्यसे असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका अपकर्षण करके सिंचन करता हुआ उदयमें स्तोक प्रदेशपुंजको देता है, उससे आगे दूसरी स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको देता है इस प्रकार प्रथम समयसम्बन्धी गुणश्रेणि शीर्षसे उपरिम अनन्तर स्थितिके प्राप्त होनेतक असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको देता है, क्योंकि इस स्थानपर मोहनीयका अवस्थित गुणश्रेणिनिक्षेप देखा जाता है। उसके आगे गुणश्रेणिशीर्षसे उपरिम अन्तर स्थितिसम्बन्धी भी एक स्थितिमें गुणश्रेणिके प्रवृत्त होनेके बिना भी द्रव्यके माहात्म्यवश असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका निक्षेप करता है। उससे आगे भूतपूर्वनयके विषयभूत अन्तरकी अन्तिम स्थितिके

पुव्व व सखेज्जगुणहीण पदेसपिडं णिसिचदि। तत्तो परं विसेसहीणं जाव अप्पणो उक्कोरिदपदेस मावलियमेत्तकालेण अपत्तो त्ति। एव तदियादिसमएसु वि एसा सेढिपरूवणा णिव्वामोहमणुगतव्वा जाव पढमट्ठिदिखडयदुचरिमसमओ त्ति।

§ ८१२ संपहि पढमट्ठिदिखडयचरिमफालीए णिवदमाणाए जो पदेसविण्णासक्कमो तस्स किचि फुडोकरण वत्तइस्सामो। त जहा—विदियट्ठिदिसयलदव्वस्स संखज्जदिभागमेत्त चरिमफालिदव्वं घेत्तूण उदये पदेसग्ग थोव देदि। विदियाए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणं देदि। एवमंतोमुहुत्तकालमसखेज्जगुणाए सेढीए णिक्खिवमाणो गच्छदि जाव गुणसेढिसीसये त्ति। एद च गुणसढीए णिवदिदासेसदव्व चरिमफालीदव्वस्सासखेज्जदिभागमेत्त चेव होदि। तदो गुणसेढिसीसयादो उवरिमाणतरा जा एगा ट्ठिदी तत्थासंखेज्जगुण देदि। तदो उवरि विसेसहीण णिक्खिवमाणो गच्छदि जाव अतरचरिमट्ठिदि भूदपुव्वणयविसयोकय सपत्तो त्ति। गुणसेढिसीसयादो उवरि एदम्मि अतरद्धाणे णिवदिदसयलदव्व चरिमफालीदव्वस्स सखेज्जदिभागमेत्तमिदि घेत्तव्व। पुणो अतरचरिमट्ठिदीदो जा विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदी तिस्से पदेसग्गं सखेज्जगुणहीण देदि। तदो उवरिमासु सव्वासु ट्ठिदीसु विसेसहीण देदि असखेज्जदिभागमेत्तेण।

§ ८१३ सपहि एत्थ विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदिम्मि सखेज्जगुणहीण पदेसणिसेगं कुणदि त्ति एदस्स कारणमित्थमणुगतव्व। त जहा—पढमट्ठिदिखंडयस्स दुचरिमफाली जाव णिवददि ताव

प्राप्त होनेतक विशेषहीन द्रव्य देता है। उससे आगे दूसरी स्थितिसम्बन्धी आदिकी स्थितिमें पहलेके समान सख्यातगुणहीन प्रदेशपिण्डका सिचन करता है। उससे आगे अपने उत्कोरित किये गये स्थान तक एक आवलि प्रमाणकालके द्वारा नही प्राप्त होता हुआ विशेष हीन प्रदेश पिण्डका सिचन करता है। इसी प्रकार तीसरे आदि समयोमे भी यह श्रेणिप्ररूपणा व्यामोह रहित होकर प्रथम स्थितिकाण्डकके द्विचरम समयके प्राप्त होने तक जान लेनी चाहिए।

§ ८१२ अब प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतन होते समय जो प्रदेश विन्यास का क्रम है उसे किचिद् स्पष्ट करनेके लिए बतलायेंगे। वह जैसे—द्वितीय स्थितिके समस्त द्रव्यके सख्यातवें भागप्रमाण अन्तिम फालिसम्बन्धी द्रव्यको ग्रहण करके उदयमे स्तोक प्रदेशपुजको देता है। दूसरी स्थितिमे असंख्यातगुणे प्रदेशपुजको देता है। इस प्रकार अन्तर्मुहूर्तकालतक असख्यातगुणित श्रेणिद्वारा निक्षेप करता हुआ गुणश्रेणिशीषके अन्तिम समयतक जाता है। और यह गुणश्रेणिमे पतित हुआ समस्त द्रव्य अन्तिम फालिसम्बन्धी द्रव्यके असख्यातवे भागप्रमाण होता है ऐसा जानना चाहिए। उसके बाद गुणश्रेणिशीर्षसे उपरिम अनन्तर जो एक स्थिति है उसमे असख्यातगुणे प्रदेशपुजको देता है। उससे ऊपर विशेष हीन प्रदेशपुजका निक्षेप करता हुआ भूतपूर्व नयकी विषय की गयी अन्तरकी अन्तिम स्थितिको प्राप्त होनेतक जाता है। गुणश्रेणिशीर्षसे ऊपर अन्तरसम्बन्धी इस आयाममे पतित हुआ समस्त द्रव्य अन्तिम फालिसम्बन्धी द्रव्यके संख्यातवें भागप्रमाण होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। पुन अन्तरसम्बन्धी अन्तिम स्थितिसे द्वितीय स्थितिकी जो आदि स्थिति है उसमें संख्यातगुणहीन प्रदेशपजको देता है उससे उपरिम समस्त स्थितियोंमें असख्यातवें भागप्रमाण विशेषहीन प्रदेशपज देता है।

§ ८१३ अब यहाँ पर दूसरी स्थितिकी आदि स्थितिमें सख्यातगुणहीन प्रदेशोका निक्षेप करता है इसका कारण इस प्रकार जानना चाहिए। वह जैसे—प्रथम स्थितिकाण्डककी द्विचरम

समय पडि ओकड्डियूण सछंभमाणदव्व विदियट्ठिदिसयलपदेसग्गस्सासखेज्जदिभागमेत्त चेव होदि, ओकड्डणभागहारेण खडिदेयखडपमाणत्तादो। तेण गुणसेढिं मोत्तूण उवरिमअतरट्ठिदीसु णिसित्त पदेसपिडमेयगोवुच्छासरूव होदूण तत्थावट्ठिद वट्टव्व। विदियट्ठिदीए वि पढमणिसेगप्पहुडि उवरिमसव्वट्ठिदीसु पदेसग्गमेयगोवुच्छायारेण अतरचरिमट्ठिदीए णिसित्तदव्वादो असंखेज्जगुण होदूण चिट्ठदि। कारण—जाव दुचरिमफाली णिवददि ताव समय पडि ओकड्डियूण अंतरट्ठिदीसु णिसिंचमाणपदेसपिड विदियट्ठिदिसयलपदेसग्गस्सासखेज्जदिभागमेत्त चेव होदि। होंत पि तक्कालोकड्डिदसयलदव्वस्सासखेज्जदिभागमेत्त सखेज्जदिभागमेत्त वा होदि। तेण कारणेण अतरट्ठिदीसु विदियट्ठिदीए च भिण्णगोवुच्छाओ तत्थ जादाओ।

§ ८१४ सपहि पढमट्ठिदिखडयचरिमफालीए णिवदिदाए दोण्हमेयगोवुच्छासेढी जायदि त्ति पढमट्ठिदिखडयचरिमफालीदव्वस्स सखेज्जदिभागमेत्तो पदेसपिडो अतरट्ठिदीसु तक्काले णिवददि त्ति घेत्तव्व। पुणो तिस्से चरिमफालीए पदेसपिडस्सासखेज्जा भागा पढमट्ठिदिखड यायामेणूणविदियट्ठिदीए अवयवट्ठिदीसु पढमट्ठिदिखडयादो सखेज्जगुणासु णिवदति। तक्काले चरिमफालीए एगेगट्ठिदिपदेसग्गस्स सखेज्जदिभागमेत्तो पदेसपिडो एक्केक्कट्ठिदिविसेसम्मि णिवददि। अतरट्ठिदीसु पुण पादेक्कमेत्तो सखेज्जगुणमेत्तो पदेसपिडो णिवददि, अण्णहा दोण्हमेय

फालिके प्राप्त होनेतक प्रत्येक समयमे अपकर्षित होकर सक्रमित हुआ जो द्रव्य पतित होता है वह द्वितीय स्थितिसम्बन्धी समस्त प्रदेशपुजके असख्यातवें भागप्रमाण ही होता है, क्योकि वह अपकर्षण भागहारके द्वारा भाजित करनेपर एक भाग प्रमाण है। इस कारण गुणश्रेणिको छोडकर उपरिम अन्तर स्थितियोमे निक्षिप्त हुआ प्रदेशपिण्ड एक गोपुच्छास्वरूप होकर वहाँ अवस्थित जानना चाहिए। द्वितीय स्थितिमे भी प्रथम निषेकसे लेकर उपरिम सब स्थितियोमें प्रदेशपुज एक गोपुच्छाकाररूपसे अन्तरसम्बन्धी अन्तिम स्थितिमे निक्षिप्त हुए द्रव्यसे असख्यात गुणा होकर अवस्थित होता है। इसका कारण—जबतक द्विचरम फालिका पतन होता है तबतक प्रत्येक समयमे अपकर्षित होकर अन्तरस्थितियोमे सिंचित होनेवाला प्रदेशपिण्ड द्वितीय स्थिति सम्बन्धी समस्त प्रदेशपुजके असख्यातवें भागप्रमाण ही होता है। ऐसा होता हुआ भी तत्काल अपकर्षित समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण अथवा सख्यातवें भागप्रमाण होता है। इस कारण अन्तर स्थितियोमे और द्वितीय स्थितिमे वहाँ अलग अलग गोपुच्छायें हो जाती हैं।

§ ८१४ अब प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिका पतन होनेपर दोनोकी एक गोपुच्छा श्रेणि हो जाती है, इसलिए प्रथम स्थितिकाण्डकसम्बन्धी अन्तिम फालिके द्रव्यका सख्यातवें भागप्रमाण प्रदेशपिण्ड अन्तरस्थितियोमे तत्काल पतित होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। पुन उस अन्तिम फालिके प्रदेशपिण्डका असख्यात बहुभागप्रमाण द्रव्य प्रथम स्थितिकाण्डकके आयामसे कम द्वितीय स्थितिकी प्रथम स्थितिकाण्डकसे संख्यातगुणी अवयव स्थितियोमें पतित होता है। उस समय अन्तिम फालिकी एक एक स्थितिसम्बन्धी प्रदेशपुंजका सख्यातवाँ भागप्रमाण प्रदेशपिण्ड एक एक स्थितिविशेषमे पतित होता है। परन्तु अन्तर स्थितियोंमे से प्रत्येक स्थितिमें इससे सख्यातगुणा प्रदेशपिण्ड पतित होता है, अन्यथा दोनोकी एक गोपुच्छारूपसे उत्पत्ति नहीं

---

१ आ० प्रतौ तत्थावट्ठिददव्व इति पाठ ।

गोवुच्छभावाणुप्पत्तीदो। तेण कारणेण अतरचरिमट्ठिदिम्मि णिसित्तपदेसग्गादो विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदिम्मि णिसिंचमाणपदेसपिंडो सखेज्जगुणहीणो जादो।

§ ८१५ अथवा अतरचरिमट्ठिदिम्मि णिसित्तपदेसपिडादो विदियट्ठिदिपढमणिसेगम्मि णिसिंचमाणदव्व सखेज्जगुणहीणं होदि त्ति एदस्स कारणमेव वा वत्तव्व। त कथ ? अंतरट्ठिदीहि पढमट्ठिदिखडयायामे भागे हिदे भागलद्धं सखेज्जरूवाणि विरलिय पढमट्ठिदिखडयायाम समखड कादूण दिण्णे तत्थेक्केक्कस्स रूवस्स अतरायामपमाण पावदि। पुणो एत्थ एगरूवधरिद घेत्तूण तक्कालियगुणसेढिसीसयादो उवरिमअतरट्ठिदीसु ठविदे अतरट्ठिदिपदेसग्गं विदियट्ठिदिपदेसग्गं च दो वि थोरुच्चयेण एयगोवुच्छाणि जादाणि। पुणो तत्थ विदियरूवधरिदमेगखड घेत्तूण सखेज्ज फालीओ कादव्वाओ। ताओ केत्तियाओ त्ति भणिदे अतरट्ठिदिआयामेण गुणसेढि मोत्तूण सेससव्व ट्ठिदीसु भाजिदासु भागलद्धमेत्तीओ फालीओ कादव्वाओ। एव च कादूण तत्थेगफालि घेत्तूण अतरट्ठिदीसु पुव्व ट्ठविदखडस्स पासे ट्ठविय पुणो सेसफालीओ जहाकम विदियट्ठिदीए ठवेदव्वाओ। एव सेसरूवधरिदखडाणि वि कादूण समयाविरोहेण ढोएदव्वाणि। एव कादूण जोइदे अतरचरिम ट्ठिदीए पदिददव्वादो विदियट्ठिदीए आदिट्ठिदिम्मि णिवदिदपदेसग्ग संखज्जगुणहीण होदि त्ति णिच्छओ कायव्वो। एवमेत्तिएण पबधेण पढमट्ठिदिखडयचरिमफालिमवहि कादूण सहुमसापराइये णोकड्डियूण णिसिंचमाणपदेसग्गस्स सढिपरूवण कादूण सपहि विदियादो ट्ठिदिखडयादो ओकड्डियूण

हो सकती। इस कारण अन्तरसम्बन्धी अन्तिम स्थितिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपिण्डसे द्वितीय स्थिति सम्बन्धी आदि स्थितिमे निसिंचमान प्रदेशपिण्ड सख्यातगुणा हीन हो जाता है।

§ ८१५ अथवा अन्तरसम्बन्धी अन्तिम स्थितिमे निक्षिप्त हुए प्रदेशपिण्डसे द्वितीय स्थिति-के प्रथम निषेकमे निर्सिच्यमान द्रव्य सख्यातगुणा हीन होता है इस प्रकार इसका कारण इस प्रकार कहना चाहिए।

शंका—वह कैसे ?

समाधान—अन्तरस्थितियोंके द्वारा प्रथमस्थितिकाण्डकके आयाममे भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उससम्बन्धी सख्यात अंकोको विरलित करके विरलित प्रत्येक अकके प्रति प्रथम स्थितिकाण्डकके आयामको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहाँ एक एक अकके प्रति अन्तरा यामका प्रमाण प्राप्त होता है। पुन यहाँ पर एक अकके प्रति प्राप्त आयामको ग्रहण करके उस समयके गुणश्रेणिशीर्षसे उपरिम अन्तर स्थितियोमें स्थापित कर देनेपर अन्तरस्थितिसम्बन्धी प्रदेशपुज और द्वितीय स्थितिसम्बन्धी प्रदेशपुज दोनो ही एकरूप होकर एक गोपुच्छारूप हो जाते हैं। पुन वहाँ पर द्वितीय अकके प्रति प्राप्त एक खण्डको ग्रहण करके उसकी संख्यात फालियाँ करनी चाहिए। वे कितनी होती हैं ऐसा पूछनेपर गुणश्रेणिको छोड़कर अन्तर स्थितिके आयाम द्वारा शेष सब स्थितियोको भाजित करनेपर जो भाग लब्ध आवे तत्प्रमाण फालियाँ करनी चाहिए। और ऐसा करके तथा वहाँ एक फालिको ग्रहण करके अन्तरस्थितियोंमें पहलेके स्थापित खण्डके पास स्थापित करके पुन शेष फालियोको यथाक्रम द्वितीय स्थितिमे स्थापित करना चाहिए। इस प्रकार शेष अकोंके प्रति प्राप्त खण्डोको भी करके समयके अविरोध पूर्वक स्थापित करना चाहिए। इस प्रकार करके देखनेपर अन्तरसम्बन्धी अन्तिम स्थितिमे पतित द्रव्यसे द्वितीय स्थितिसम्बन्धी आदि स्थितिमें पतित प्रदेशपुज संख्यातगुणा हीन होता है ऐसा निश्चय करना चाहिए। इस प्रकार इतने प्रबन्ध द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिकी मर्यादा करके सूक्ष्मसाम्परायिकके द्वारा अपकर्षित करके सींचे जानेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा

णिसिंचमाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणा केरिसो होदि त्ति आसंकाए तण्णिण्णयविहाणट्ठमुवरिमं पबंधमाढवेइ—

* बिदियादो ठिदिखंडयादो ओकड्डियूण पदेसग्गमुदये दिज्जदि तं थोवं ।

§ ८१६ पढमट्ठिदिखंडयचरिमफालीए णिवदिदाए पुणो से काले बिदियट्ठिदिखंडयमागाएमाणो पढमट्ठिदिखंडयादो विसेसहीणायामेण खंडयमागाएदि । एवमागाइदपढमसमये तत्तो पदेसग्गस्सासंखेज्जदिभागमोकड्डियूण उदयादिगुणसेढीए णिक्खिवमाणो उदयट्ठिदीए ताव थोवयरं पदेसग्गं णिसिंचदि, तस्स थोवभावेण विणा उवरिमट्ठिदीसु णिसिंचमाणपदेसग्गस्स गुणसेढिआयारेण समवट्ठाणाणुववत्तीदो त्ति एसो एत्थ सुत्तत्थसंगहो ।

* तदो दिज्जदि असंखेज्जगुणाए सेढीए ताव जाव गुणसेढिसीसयादो उवरिमाणंतरा एक्का ट्ठिदि त्ति ।

§ ८१७ तदो उदये णिसित्तपदेसग्गादो असंखेज्जगुणं पदेसग्गं तत्तो अणंतरोवरिमाए बिदियाए ट्ठिदीए णिसिंचदि । एवमसंखेज्जगुणाए सेढीए णिसिंचमाणो ताव गच्छदि जाव अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण अवट्ठिदगुणसेढिसीसयं पत्तो त्ति, ओकड्डिदसयलदव्वस्सासंखेज्जदिभागमेत्तदव्वस्सेदम्मि अद्धाणे गुणसेढिआयारेण णिसिंचमाणस्स परिप्फुडमेव तहाभावदंसणादो । पुणो गुणसेढिसीसयादो

करके अब द्वितीय स्थितिकाण्डकसे अपकर्षित करके नीचे जानेवाले प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा कैसी होती है ऐसी आशंका होनेपर उसके निर्णयका कथन करनेके लिए आगेके प्रबन्धको आरम्भ करते हैं—

* द्वितीय स्थितिकाण्डकसे अपकर्षित करके उदयमें जितना प्रदेशपुंज देता है वह सबसे थोड़ा है ।

§ ८१६ प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर पुनः तदनन्तर समयमें द्वितीय स्थितिकाण्डकको ग्रहण करता हुआ प्रथम स्थितिकाण्डकसे विशेष हीन आयामके द्वारा उस काण्डकको ग्रहण करता है । इस प्रकार ग्रहण किये जानेके प्रथम समयमें उसमेंसे प्रदेशपुंजके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके उदयादि गुणश्रेणिरूपसे निक्षेप करता हुआ सर्वप्रथम उदय स्थितिमें स्तोकतर प्रदेशपुंजको निक्षिप्त करता है, क्योंकि उसके स्तोकपनेके बिना उपरिम स्थितियोंमें सींचे जानेवाले प्रदेशपुंजका गुणश्रेणिके आकारसे सम्यक् अवस्थान नहीं बन सकता, यहाँ यह इस सूत्रका समुच्चयरूप अर्थ है ।

* उसके बाद गुणश्रेणिशीर्षसे उपरिम अनन्तर एक स्थितिके प्राप्त होनेतक असंख्यात गुणश्रेणिरूपसे प्रदेशपुंजको देता है ।

§ ८१७ उसके बाद उदयमें निक्षिप्त हुए प्रदेशपुंजसे उपरिम अनन्तर द्वितीय स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजको निक्षिप्त करता है । इस प्रकार असंख्यातगुणित श्रेणिरूपसे अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर अवस्थित गुणश्रेणिशीर्षके प्राप्त होने तक सिंचन करता हुआ जाता है, क्योंकि अपकर्षित किये गये समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यको इस आयाममें गुणश्रेणि आकारके द्वारा सिंचन करनेवाले क्षपक जीवके स्पष्ट ही उस प्रकारका काम होता हुआ देखा जाता है । पुनः गुणश्रेणिशीर्षसे उपरिम अनन्तर एक स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशपुंजका सिंचन करता है, क्योंकि

उवरिमाणंतराए एक्किस्से ट्ठिदीए असंखेज्जगुणं पदेसग्गं णिसिंचदि। गुणसेढिणियमेण विणा वि दव्वमाहप्पमस्सियूण तत्थ णिसिंचमाणपदेसग्गस्स तहाभावोवलंभादो।

* तदो विसेसहीणं।

§ ८१८ किं कारणं ? तत्तोप्पहुडि ओकड्डिदसयलदव्वस्सासंखेज्जे भागे एयगोवुच्छायारेण णिसिंचमाणस्स पयारंतरासंभवादो। एत्तो बिदियादिसमयेसु वि एसा चेव सेढिपरूवणा जाव णिरुद्धट्ठिदिखंडयं समत्तं त्ति। एवमुवरिमट्ठिदिखंडएसु वि एसो चेव दिज्जमाणपदेसग्गस्स णिसेगविण्णासक्कमो अणुगंतव्वो जाव दु चरिमट्ठिदिखंडयचरिमफालि त्ति। णवरि सव्वट्ठिदिखंडएसु जाव चरिमफाली ण णिवददि ताव ओकड्डिज्जमाणदव्वं सयलदव्वस्सासंखेज्जदिभागमेत्तं चेव होदि। चरिमफालीए णिवदमाणाए पुण ट्ठिदिखंडयादो आगच्छमाणदव्वं सयलदव्वस्स संखेज्जदिभागमेत्तं चेव होदि त्ति घेत्तव्वं। संपहि एदस्सेवत्थस्स फुडीकरणट्ठमुवरिममप्पणासुत्तमाह—

* एत्तो पाए सुहुमसांपराइयस्स जाव मोहणीयस्स ट्ठिदिघादो ताव एस कमो।

§ ८१९ गयत्थमेदं सुत्तं। णवरि चरिमट्ठिदिखंडयविसये को वि विसेससंभवो अत्थि तस्स फुडीकरणट्ठमुवरि कस्सामो। एदमेत्तिएण सुत्तपबंधेण सुहुमसांपराइयपढमसमयप्पहुडि दिज्जमाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणं कादूण संपहि तत्थेव दिस्समाणपदेसग्गस्स केरिसमवट्ठाणं होदि त्ति आसंकाए णिण्णयकरणट्ठमुवरिमं सुत्तपबंधमाह—

प्रवृत्त हुए बिना भी द्रव्यके माहात्म्यका आश्रय करके उसमे सींचे जानेवाले प्रदेशपुंजका उस प्रकारका कार्य होता हुआ उपलब्ध होता है।

* उसके बाद विशेषहीन द्रव्य होता है।

§ ८१८ शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि उसमे लेकर अपकर्षित हुए समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भागमें एक गोपुच्छाके आकारसे सिंचन करनेवाले क्षपक जीवके प्रकारान्तर सम्भव नहीं है।

इससे द्वितीयादि समयोमें भी विवक्षित स्थितिकाण्डकके समाप्त होनेपर यही श्रेणिप्ररूपणा होती है, इस प्रकार उपरिम स्थितिकाण्डकोंमें भी यही दीप्यमान प्रदेशपुंजके निषेक विन्यासका क्रम अन्तिमस्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके प्राप्त होने तक जानलेना चाहिए। इतनी विशेषता है सब स्थितिकाण्डकोंमे जबतक अन्तिमफालि पतित नहीं होती है तबतक अपकर्षित होनेवाला द्रव्य समस्त द्रव्यके असंख्यातवें भाग प्रमाण ही होता है। किन्तु अन्तिमफालिके पतित होनेपर पुन स्थितिकाण्डकसे आनेवाला द्रव्य समस्त द्रव्यके संख्यातवें भागप्रमाण ही होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। अब इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए अगले अर्पणासूत्रको कहते हैं—

* **यहाँसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके जबतक मोहनीय कर्मका स्थितिघात होता है तबतक यही क्रम प्रवृत्त रहता है।**

§ ८१९ यह सूत्र गतार्थ है। इतनी विशेषता है कि अन्तिम स्थितिकाण्डकके विषयमें जो कुछ भी विशेष सम्भव है उसको स्पष्ट करने के लिए आगे कहेंगे। इसप्रकार इतने सूत्र प्रबन्ध द्वारा सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके प्रथम समयसे लेकर दिप्यमान प्रदेशपुंजकी श्रेणिप्ररूपणा करके अब वहींपर दीप्यमान प्रदेशपुंजका किस प्रकारका अवस्थान होता है ऐसा आशंकाका निर्णय करनेके लिए आगेके सूत्रप्रबन्धको कहते हैं—

* पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स ज दिस्सदि पदेसग्ग तस्स सेढिपरूवणं वत्तइस्सामो ।

§ ८२० सुगम ।

* त जहा ।

§ ८२१ सुगम ।

* पढमसमयसुहुमसापराइयस्स उदये दिस्सदि पदेसग्ग थोव । बिदियाए ट्ठिदीए असखेज्जगुण दीसदि । एव ताव जाव गुणसेढिसीसय ति गुणसेढिसीसयादो अण्णा च एक्का ट्ठिदी त्ति ।

§ ८२२ कि कारण, एदम्मि अद्धाण दिज्जमाणस्सेव दिस्समाणस्स वि पदेसग्गस्स असखेज्जगुणाए सेढीए समवट्ठाणदसणादो ।

* तत्तो विसेसहीण ताव जाव चरिमअतरट्ठिदि त्ति।

§ ८२३ दिज्जमाणपदेसग्गस्साणुसारेणवत्थ दिस्समाणपदेसग्गस्स वि विसेसहाणीए समवट्ठाणस्स परिप्फुडमुवलभादो ।

* तत्तो असखेज्जगुण ।

§ ८२४ सुगम ।

* तत्तो विसेसहीण ।

---

* प्रथम समयमे सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके जो प्रदेशपुज दिखाई देता है उसकी श्रेणि प्ररूपणाको बतलायेंगे ।

§ ८२० यह सूत्र सुगम है ।

* वह जैसे ।

§ ८२१ यह सूत्र सुगम है ।

* प्रथम समयमे सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके उदयमे स्तोक प्रदेशपुज दिखाई देता है । दूसरी स्थितिमे असख्यातगुणा प्रदेशपुज दिखाई देता है । इसी प्रकार गुणश्रेणिशीर्ष और गुणश्रेणिशीर्षसे अन्य एक स्थितिके प्राप्त होनेतक यही क्रम चालू रहता है ।

§ ८२२ शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—इस स्थानपर दीयमान प्रदेशपुजके समान ही दीखनेवाले प्रदेशपुजका भी असख्यात गुणश्रेणिरूपसे अवस्थान देखा जाता है ।

* उसके आगे अन्तिम अन्तरस्थितिके प्राप्त होने तक विशेष हीन द्रव्य दिखाई देता है ।

§ ८२३ दीयमान प्रदेशपुजके अनुसार ही दीखनेवाले प्रदेशपुजका भी विशेष हानिरूपसे अवस्थान स्पष्ट उपलब्ध होता है ।

* उससे आगे असख्यातगुणा प्रदेशपुज दिखाई देता है ।

§ ८२४ यह सूत्र सुगम है ।

* उससे आगे विशेष हीन प्रदेशपुज दिखाई देता है ।

परिसिट्ठाणि

१५ चारित्तमोहक्खवणा-अत्थाहियारो

सुत्तगाहा-चुण्णिसुत्ताणि

[1]एत्तो से काले प्पहुडि किट्टीकरणद्धा । छसु कम्मेसु सतेसु सच्छुद्धेसु जा कोधवेदगद्धा तिस्से कोधवेदगद्धाए तिण्णि भागा । जो तत्थ पढमतिभागो अस्सकण्णकरणद्धा विदियो तिभागो किट्टीकरणद्धा तदियतिभागो किट्टीवेदगद्धा । [2]अस्सकण्णकरणे णिट्ठिदे तदो से काले अण्णो ट्ठिदिबंधो । [3]अण्णमणुभाग खंडयमस्सकण्णकरणेणेव आगाइदं । अण्ण ट्ठिदिखंडय चदुण्ह घादिकम्माण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । णामा गोदवेदणीयाणमसंखेज्जा भागा । [4]पढमसमयकिट्टीकारगो कोधादो पुव्वफद्दएहिंतो च अपुव्वफद्दएहिंतो च पदेसग्गमोकड्डियूण कोहकिट्टीओ करेदि । माणादो ओकड्डियूण माणकिट्टीओ करेदि । मायादो ओकड्डियूण मायकिट्टीओ करेदि । लोभादो ओकड्डियूण लोभकिट्टीओ करेदि । एदाओ सव्वाओ वि चउव्विहाओ किट्टीओ एयफद्दयवग्गणाणमणंतभागो पगणणादो ।

[5]पढमसमीए णिव्वत्तिदाण किट्टीण तिव्वमंददाए अप्पाबहुअं वत्तइस्सामो ।[6] तं जहा । लोहस्स जहण्णिया किट्टी थोवा । विदया किट्टी अणंतगुणा । एवमणंतगुणाए सेढीए जाव पढमाए संगहकिट्टीए चरिमकिट्टि त्ति । [7]तदो विदियाए संगहकिट्टीए जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा । एस गुणगारो बारसण्ह पि संगहकिट्टीण सत्थाणगुणगारेहिं अणंतगुणो । विदियाए संगहकिट्टीए सो चेव कमो जो पढमाए संगहकिट्टीए । [8]तदो पुण विदियाए च तदियाए च संगहकिट्टीणमंतरं तारिसं चेव । एवमेदाओ लोभस्स तिण्णि संगहकिट्टीओ । लोभस्स तदियाए संगहकिट्टीए जा चरिमा किट्टी तदो मायाए जहण्णकिट्टी अणंतगुणा । मायाए वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ ।

[9]मायाए जा तदिया संगहकिट्टी तिस्से चरिमादो किट्टीदो माणस्स जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा । माणस्स वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ । माणस्स जा तदिया संगहकिट्टी तिस्से चरिमादो किट्टीदो कोहस्स जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा । कोहस्स वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ । कोधस्स तदियाए संगहकिट्टीए जा चरिमकिट्टी तदो लोभस्स अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणा अणंतगुणा ।

[10]किट्टीअंतराणमप्पाबहुअं वत्तइस्सामो । [11]अप्पाबहुअस्स लहुआलावसंखेवपदत्थसण्णाणिक्खेवो ताव कायव्वो । तं जहा । एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए अणंताओ किट्टीओ । तासिं अंतराणि वि अणंताणि । तेसिमंतराणं सण्णा किट्टी-अंतराइं णाम । संगहकिट्टीए च संगहकिट्टीए च अंतराणि एक्कारस । तासिं सण्णा संगहकिट्टीअंतराइं णाम । [12]एदीए णामसण्णाए किट्टीअंतराणं संगहकिट्टीअंतराण च अप्पाबहुअं वत्तइस्सामो । तं जहा । लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए जहण्णयं किट्टीअंतरं थोवं । [13]विदियं किट्टीअंतरमणंतगुणं । एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमकिट्टीअंतरमणंतगुणं । लोभस्स चेव विदियाए संगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं ।

---

१ पु० १ । २ पु० २ । ३ पु० ३ । ४ पु० ४ । ५ पु० ५ । ६ पु० ६ । ७ पु० ७ । ८ पु० ८ । ९ पु० ९ । १० पु० १० । ११ पु० ११ । १२ पु० १२ । १३ पु० १३ ।

[1]एवमणंतराणंतरेण जाव चरिमादो त्ति अणंतगुणं । लोभस्स चेव तदियाए संगहकिट्टीए पढमकिटटी अंतरमणंतगुणं । एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमकिट्टीअंतरमणंतगुणं । एत्तो मायाए पढमसंगहकिट्टीए पढमकिटटीअंतरमणंतगुणं । [2]एवमणंतराणंतरेण मायाए वि तिण्हं संगहकिटटीणं किटटीअंतराणि जहाकमेण अणंतगुणाए सेढीए णेदव्वाणि । एत्तो माणस्स पढमाए संगहकिटटीए पढमकिटटीअंतरमणंतगुणं । माणस्स वि तिण्हं संगहकिटटीणमंतराणि जहाकमेण अणंतगुणाए सेढीए णेदव्वाणि । एत्तो कोधस्स पढमसंगहकिटटीए पढमकिटटीअंतरमणंतगुणं । कोहस्स वि तिण्हं संगहकिटटीणमंतराणि जहाकमेण जाव चरिमादो अंतरादो त्ति अणंतगुणाए सेढीए णेदव्वाणि । [3]तदो लोभस्स पढमसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । [4]विदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । तदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । [5]लोभस्स मायाए च अंतरमणंतगुणं । मायाए पढमसंगह-किटटीअंतरमणंतगुणं । विदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । तदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । मायाए माणस्स च अंतरमणंतगुणं ।

[6]माणस्स पढमसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । विदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । तदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । माणस्स च कोहस्स च अंतरमणंतगुणं । कोहस्स पढमसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । विदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । तदियसंगहकिटटीअंतरमणंतगुणं । [7]कोधस्स चरिमादो किटटीदो लोभस्स अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अंतरमणंतगुणं । पढमसमए किटटीसु पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा ।

लोभस्स जहण्णियाए किटटीए पदेसग्गं बहुअं । [8]विदियाए किटटीए विसेसहीणं । एवमणंतरोवणिधाए विसेसहीणमणंतभागेण जाव कोहस्स चरिमकिटटि त्ति । [9]परंपरोवणिधाए जहण्णियादो लोभकिटटीदो उक्कस्सियाए कोधकिटटीए पदेसग्गं विसेसहीणमणंतभागेण । [10]विदियसमए अण्णाओ अपुव्वाओ किटटीओ करेदि पढमसमये णिव्वत्तिदकिटटीणमसंखेज्जदिभागमेत्ताओ । [11]एक्केक्किस्से संगहकिटटीए हेट्ठा अपुव्वाओ किटटीओ करेदि । [12]विदियसमए दिज्जमाणस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा । लोभस्स जहण्णियाए किटटीए पदेसग्गं बहुअं दिज्जदि ।

[13]विदियाए किटटीए विसेसहीणमणंतभागेण । ताव अणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति । तदो पढमसमए णिव्वत्तिदाणं जहण्णियाए किटटीए विसेसहीणमसंखेज्जदिभागेण । [14]तदो विदियाए अणंतभागहीणं । तेण परं पढमसमयणिव्वत्तिदासु लोभस्स पढमसंगहकिटटीए किटटीसु अणंतराणंतरेण अणंतभागहीणं दिज्जमाणगं जाव पढमसंगहकिटटीए चरिमकिटटि त्ति । [15]लोभस्स चेव विदियसमए विदियसंगहकिटटीए तिस्से जहण्णियाए किटटीए दिज्जमाणगं विसेसाहियमसंखेज्जदिभागेण । [16]तेण परमणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति । तदो पढमसमयणिव्वत्तिदाणं जहण्णियाए किटटीए विसेसहीणमसंखेज्जदिभागेण । तेण परं विसेसहीणमणंतभागेण जाव विदियसंगहकिटटीए चरिमकिटटि त्ति । तदो जहा विदियसंगहकिटटीए विधी तहा चेव तदियसंगहकिटटीए विधी च । [17]तदो लोभस्स चरिमादो किटटीदो मायाए जा विदियसमए जहण्णिया किटटी तिस्से दिज्जदि पदेसग्गं विसेसाहियमसंखेज्जदिभागेण । तदो पुण अणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति । एवं जम्हि जम्हि अपुव्वाणं जहण्णिया किटटी तम्हि तम्हि विसेसाहियमसंखेज्जदिभागेण अपुव्वाणं चरिमादो असंखेज्जदिभागहीणं । [18]एदेण कमेण विदियसमए णिक्खिवमाणगस्स पदेसग्गस्स बारससु किटटिट्ठाणेसु असंखेज्जदिभागहीणं । एक्कारससु किटटिट्ठाणेसु असंखेज्जदिभागुत्तरं दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स । [19]सेसेसु किटटिट्ठाणेसु अणंतभागहीणं दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स । विदियसमए दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स एसा उट्टकूडसेढी । [20]जं पुण विदियसमए दीसदि किटटीसु पदेसग्ग

---

१ पृ० १४ । २ पृ० १५ । ३ पृ० १६ । ४ पृ० १७ । ५ पृ० २० । ६ पृ० २१ । ७ पृ० २२ । ८ पृ० २२ । ९ पृ० २४ । १० पृ० २५ । ११ पृ० २६ । १२ पृ० २७ । १३ पृ० २८ । १४ पृ० २९ । १५ पृ० ३ । १६ पृ० ३१ । १७ पृ० ३२ । १८ पृ० ३३ । १९ पृ० ३४ । २० पृ० ३५ ।

त जहण्णियाए बहुअ, ससासु सव्वासु अणतरोवणिधाए अणतभागहीण । जहा विदियसमए किट्टीसु पदेसग्ग तहा सव्विस्से किटटीकरणद्धाए दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स तवीसमुट्टकूडाणि ।

[1]दिस्समाणय सव्वम्हि अणतभागहीण । ज पदेसग्ग सव्वसमासेण पढमसमए किटटीसु दिज्जदि त थोव । विदियसए असखेज्जगुण । तदियसमये असखज्जगुणं । एवं जाव चरिमादो त्ति असखेज्जगुणं। किटटी-करणद्धाए चरिमसमए सजलणाण ट्ठिदिबधो चत्तारि मासा अतोमुहुत्तब्भहिया । सेसाण कम्माण ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तम्हि चेव किटटीकरणद्धाए चरिमसमए मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्म सखेज्जाणि वस्ससहस्साणि हाइदूण अट्ठवस्सिगमतोमुहुत्तब्भहिय जादं । तिण्ह घादिकम्माण ठिदिसंतकम्म संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामा—गोद वदणीयाणं टिठदिसतकम्ममसखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । किटठीओ करेंतो पुव्व फद्दयाणि अपु वफद्दयाणि च वदेदि किट्टीओ ण वेदयदि । [3]किट्टीकरणद्धा णिट्ठायदि पढमट्ठिदीए आवलियाए सेसाए । से काले किट्टीओ पवेसेदि । [4]ताधे सजलणाण ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा । ट्ठिदिसंतकम्ममट्ठवस्साणि । तिण्ह घादिकम्माण टिठदिबधो ट्ठिदिसतकम्म च सखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । [5]णामागोदवेदणीयाण ट्ठिदिबधो संखज्जाणि वस्ससहस्साणि । ट्ठिदिसतकम्ममसखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । अनुभागसतकम्म कोहसजलणस्स ज सतकम्मं समयूणाए उदयावलियाए च्छट्ठिदल्लिगाए त सव्वघादी । सजलणाण जे दोआवलियबंधा दुसमयूणा ते देसघादी । त पुण फद्दयगद । सेस किट्टीगद । [6]तम्हि चेव पढमसमए कोहस्स पढमसंगहकिट्टीदो पदेसग्ग मोकड्डियूण पढमट्ठिदि करेदि ।[7] ताहे कोहस्स पढमाए सगहकिट्टीए असखेज्जा भागा उदिण्णा । एदिस्से चेव कोहस्स पढमाए सगहकिट्टीए असखेज्जा भागा वज्झति । [8]सेसाओ दोसगहकिट्टीओ ण वज्झति ण वेदिज्जति । [9]पढमाए सगहकिटटीए हेट्ठदो जाओ किट्टीओ ण वज्झंति ण वदिज्जंति ताओ थोवाओ । जाओ किट्टीओ वेदिज्जति ण बज्झति ताओ विसेसाहियाओ । तिस्से चेव पढमाए सगहकिटटीए उवरि जाओ किटटीओ ण वज्झति ण वेदिज्जति ताओ विसेसाहियाओ ।

[10]उवरि जाओ वेदिज्जति ण बज्झति ताओ विसेसाहियाओ । मज्झे जाओ किटटीओ वज्झंति च वेदिज्जति च ताओ असखज्जगुणाओ । किटटीवदगद्धा ताव थवणिज्जा । किटटीकरणद्धाए ताव सुत्तफासो । [11]तत्थ एक्कारस मूलगाहाओ । पढमाए मूलगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१०९) केवडिया किटटीओ कम्हि कसायम्हि कदि च किटटीओ ।
किटटीए किं करणं लक्खणमध किं च किटटीए ॥१६२॥

[12]एदिस्से गाहाए चत्तारि अत्था । [13]तिण्णि भासगाहाओ । पढमभासगाहा वेसु अत्थेसु णिबद्धा । तिस्से समुक्कित्तणा ।

(११०) बारस णव छ तिण्णि य किटटीओ होंति अध व अणताओ ।
एक्केक्कम्हि कसाये तिग तिग अधवा अणताओ ॥१६३॥

[14]विहासा । जइ कोहेण उवट्ठायदि तदो बारस सगहकिट्टओ होंति ।[15] माणेण उवट्ठिदस्स णव सगह किट्टीओ । मायाए उवट्ठिदस्स छ संगहकिट्टीओ । लोभेण उवटिठदस्स तिण्णि संगहकिट्टीओ । एव बारस णव छ तिण्णि च । [16]एक्केक्किस्से सगहकिट्टीए अणताओ किट्टीओ त्ति एदेण कारणेण अधवा अणताओ' त्ति । केवडियाओ किट्टीओ त्ति अत्थो समत्तो । कम्हि कसायम्हि कदि च किट्टीओ त्ति एद सुत्त । एक्केक्कम्हि कसाये तिग तिग अधवा अणताओ त्ति विहासा । [17]एक्केक्कम्हि कसाये तिण्णि तिण्णि सगहकिट्टीओ त्ति एव

१ पृ० ३६ । २ पृ० ३७ । ३ पृ० ३८ । ४ पृ० ३९ । ५ पृ० ४० । ६ पृ० ४१ । ७ पृ० ४३ । ८ पृ० ४४ । ९ पृ० ४५ । १० पृ० ४६ । ११ पृ ४७ । १२ पृ० ४८ । १३ पृ० ४९ । १४ पृ० ५० । १५ पृ० ५१ । १६ पृ० ५३ । १७ पृ० ५३ ।

[1]तिग तिग। एक्केक्किस्से संगहकिटीए अणताओ किट्टीओ। त्ति एदेण 'अथवा अणताओ' जादा। [2]किट्टीए किं करण त्ति एत्थ एक्का भासगाहा। तिस्से समुक्कित्तणा।

(१११) किट्टी करेदि णियमा ओवट्टतो ठिदी य अणुभागे।
वड्ढेंतो किटटीए अकारगो होदि बोद्धव्वो ॥१६४॥

[3]विहासा। जहा। जो किट्टीकारगो सो पदेसग्ग ठिदीहिं वा अणुभागेहिं वा ओकड्डुवि ण उक्कड्डुदि। खवगो किटटीकरणप्पहुडि जाव सकमो ताव ओकड्डुगो पदेसगस्स ण उक्कड्डुगो। [4]उवसामगो पुण पढमसमय कारगप्पहुडि कादूण जाव चरिमसमयसकसायो ताव ओकड्डुगो ण पुण उक्कड्डुगा। [5]पडिवदमाणगो पुण पढमसमयसकसायप्पहुडि ओकड्डुगो वि उक्कड्डुगो वि। [6] लक्खणमध किं च किटटीए त्ति एत्थ एक्का भासगाहा। तिस्से समुक्कित्तणा।

(११२) गुणसेढि अणतगुणा लोभादी कोधपच्छिमपदादो।
कम्मस्स य अणुभागे किटटीए लक्खण एद ॥१६५॥

[7]विहासा। लोभस्स जहण्णिया किटटी अणुभागेहिं थोवा। बिदियकिटटी अणुभामहिं अणतगुणा। तदिया किटटी अणुभागेहिं अणतगुणा। एवमणतराणतरेण सव्वत्थ अणतगुणा जाव कोधस्स चरिमकिट्टि त्ति। उक्कस्सिया वि किट्टी आदिफद्दयआदिवग्गणाए अणंतभागो।

[8]एव किटटीसु थोवो अणुभागो। किसं कम्म कदं जम्हा तम्हा किटटी। एद लक्खण। एत्तो बिदिय मूलगाहा। तं जहा।

(११३) कदिसु च अणुभागेसु च टिठदीसु वा केत्तियासु का किटटी।
सव्वासु वा टिठदीसु च आहो सव्वासु पत्तेय ॥१६६॥

[9]एदिस्से वे भासगाहाओ। [10]मूलगाहापुरिमद्धे एक्का भासगाहा। तिस्से समुक्कित्तणा।

(११४) किटटी च टिठदिविसेसेसु असखज्जेसु णियमसा होदि।
णियमा अणुभागेसु च हादि हु किट्टी अणतेसु ॥१६७॥

[11]विहासा। कोधस्स पढमसगहकिटिट वेदतस्स तिस्से सगहकिटटीए एक्केक्का किटटी बिदियट्ठिदीसु। सव्वासु पढमट्ठिदीसु च उदयवज्जासु एक्केक्का किटटी सव्वासु टिठदीसु। [12]उदयटिठदीए पुण वेदिज्जमाणियाए सगहकिटटीए जाओ किटटीओ तासिमसखेज्जा भागा। सेसाणमवेदिज्जमाणियाण सगहकिटटीणमेक्केक्का किट्टी सव्वासु बिदियट्ठिदीसु पढमटिठदीसु णत्थि। [13]एक्केक्का किट्टी अणुभागसु अण तसु। जसु पुण एक्का ण तसु बिदिया। [14]बिदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा।

(११५) सव्वाओ किटटीओ बिदियटिठदीए दु होति सव्विस्से।
ज किटिट वेदयदे तिस्से असो च पढमाए ॥१६७॥

[15]एदिस्से विहासा वुत्ता चेव पढमभासगाहाए। [16]एत्तो तदियाए मूलगाहाए समुक्कित्तणा।

(११६) किटटी च पदेसग्गेणणुभागग्गेण का च कालेण।
अधिगा समा व हीणा गुणेण किं वा विसेसेण ॥१६८॥

[17]एदिस्से तिण्णि अत्था। किटटी च पदेसग्गेणत्ति पढमो अत्थो। एदम्मि पच भासगाहाओ। [18]अणुभागग्गेणेत्ति बिदियो अत्थो। एत्थ एक्का भासगाहा। का च कालेणेत्ति तदिओ अत्थो। एत्थ छब्भासगाहाओ। पढमे अत्थे भासगाहाणं समुक्कित्तणा।

---

१ पृ० ५३। २ पृ० ५४। ३ पृ० ५५। ४ पृ० ५६। ५ पृ० ५७। ६ पृ० ५८। ७ पृ० ६१। ८ पृ० ६२। ९ पृ० ६३। १० पृ० ६४। ११ पृ० ६५। १२ पृ० ६६। १३ पृ० ६७। १४ पृ० ६८ १५ पृ० ६९। १६ पृ० ७०। १७ पृ० ७१। १८ पृ० ७२।

(११७)—[1]विदियादो पुण पढमा संखेज्जगुणा भवे पदेसग्गे।
विदियादो पुण तदिया कमेण सेसा विसेसहिया ॥१७०॥

[2]विहासा। तं जहा। कोहस्स विदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्ग थोव। पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं संखेज्जगुण तेरसगुणमेत्त। [3]माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं थोव। [4]विदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहियं। तदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्ग विसेसाहिय। विसेसो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागो। [5]कोहस्स विदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्ग विसेसाहिय। तदियाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं विसेसाहिय। मायाए पढमसंगहकिटटीए पदेसग्ग विसेसाहिय। विदियाए संगहकिटटीए पदेसग्ग विसेसाहिय। तदियाए संगहकिटटीए पदेसग्ग विसेसाहिय। लोभस्स पढमाए संगहकिटटीए पदेसग्ग विसेसाहिय। [6]विदियाए संगहकिटटीए पदेसग्ग विसेसाहिय। तदियाए संगहकिटटीए पदेसग्ग विसेसाहिय। [7]कोहस्स पढमाए संगहकिट्टीए पदेसग्गं संखेज्जगुण। विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा। तं जहा।

(११८) विदियादो पुण पढमा संखेज्जगुणा दु वग्गणग्गेण।
विदियादो पुण तदिया कमेण सेसा विसेसहिया ॥१७१॥

[8]विहासा। जहा पदेसग्गेण विहासिद तहा वग्गणग्गेण विहासिदव्व। [9]एत्तो तदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा। त जहा।

(११९) जा हीणा अणुभागेणहिया सा वग्गणा पदेसग्गे।
भागेणणंतिमेण दु अधिगा हीणा च बोद्धव्वा ॥१७२॥

[10]विहासा। त जहा। जहण्णियाए वग्गणाए पदेसग्ग बहुअ। [11]विदियाए वग्गणाए पदेसग्गं विसेसहीणमणतभागेण। एवमणतराणतरेण विसेसहीण सव्वत्थ। एत्तो चउत्थी भासगाहा।

(१२०) [12]कोधादिवग्गणादो सुद्ध कोधस्स उत्तरपद तु।
सेसो अणतभागो णियमा तिस्से पदेसग्ग ॥१७३॥

[13]विहासा। एदीए गाहाए परपरोवणिधाए सेढीए भणिद होदि। कोहस्स जहण्णियादो वग्गणादो उक्कस्सियाए वग्गणाए पदेसग्ग विसेसहीणमणंतभागेण। एत्तो पंचमीए भासगाहाए समुक्कित्तणा। [14]त जहा।

(१२१) एसो कमो च कोधे माणे णियमा च होदि मायाए।
लोभम्हि च किटटीए पत्तेगं होदि बोद्धव्वो ॥१७४॥

विहासा। जहा कोहे चउत्थीए गाहाए विहासा तहा माण माया लोभाणं पि णदव्वा।

माणादिवग्गणादो सुद्ध माणस्स उत्तरपद तु।
सेसो अणतभागो णियमा तिस्से पदेसग्गे ॥

[15]एवं चेव मायादिवग्गणादो०। लोभादिवग्गणादो०। मूलगाहाए विदियपदमणुभागग्गेणेत्ति। एत्थ एक्का भासगाहा। त जहा।

(१२२) पढमा च अणतगुणा विदियादो णियमसा दु अणुभागो।
तदियादो पुण विदिया कमेण सेसा गुणेणहिया ॥१७५॥

[16]विहासा। संगहकिट्टि पडुच्च कोहस्स तदियाए संगहकिट्टीए अणुभागो थोवो। [17]विदियाए संगहकिट्टीए अणुभागो अणंतगुणो। पढमाए संगहकिट्टीए अणुभागो अणतगुणो। एव माण माया लोभाण पि। [18]मूलगाहाए तदियपद का च कालणेत्ति। एत्थ छब्भासगाहाओ। [19]तासि समुक्कित्तणा च विहासा च।

---

१ पृ० ७३। २ प० ७४। ३ प० ७७। ४ पृ० ७८। ५ पृ० ७९। ६ पृ० ८०। ७ प० ८१। ८ पृ० ८२। ९ पृ० ८३। १० पृ० ८४। ११ पृ० ८५। १२ पृ० ८६। १३ प० ८७। १४ पृ० ८८। १५ पृ० ८९। १६ पृ० ९०। १७ पृ० ९१। १८ पृ० ९२। १९ पृ० ९३।

(१२३) पढमसमयकिट्टीण कालो वस्स व वो व चत्तारि ।
अट्ठ च वस्साणि ट्ठिदी बिदियट्ठिदीए समा होदि ।।१७६।।

[1]विहासा । [2]जदि कोधण उवट्ठिदो किट्टीओ वदेदि तदो तस्स पढमसमए वेदगस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्ममट्ठवस्साणि । [3]माणेण उवट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टीवेदगस्स ट्ठिदिसतकम्म चत्तारि वस्साणि । मायाए उवट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टीवेदगस्स ववस्साणि मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्म । [4]लोभेण उवट्ठिदस्स पढमसमयकिट्टीवेदगस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्ममेक्क वस्स । [5]एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१२४) ज किट्टि वेदयदे जवमज्झ सांतर दुसु ट्ठिदीसु ।
पढमा ज गुणसेढी उत्तरसेढी य विदिया दु ।।१७७।।

[6]विहासा । जहा । ज किट्टि वदयदे तिस्से उदयट्ठिदीए पदेसग्ग थोव । विदियाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्ज गुण । एवमसखेज्जगुण जाव पढमट्ठिदीए चरिमट्ठिदि त्ति । तदो विदियट्ठिदीए जा आदिट्ठिदी तिस्से असखेज्ज गुण । [7]तदो सव्वत्थ विसेसहीण । जवमज्झ पढमट्ठिदीए चरिमट्ठिदीए च विदियट्ठिदीए आदिटिठदीए च । [8]एद त जवमज्झ सातर दुसु ट्ठिदीसु । एत्तो तदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१२५) विदियटठिदिआदिपदा सुद्ध पुण होदि उत्तरपद तु ।
सेसा असखज्जदिमो भागो तिस्से पदेसग्गे ।।१७८।।

[9]विहासा । विदियाए टिठदीए उक्कसियाए पदेसग्गं तिस्से चेव जहण्णियादो ट्ठिदीदो सुद्ध सुद्ध सेस पलिदोवमस्स असखज्जदिभागपडिभागिय । [10]एत्तो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा । त जहा ।

(१२६) उदयादि या ट्ठिदीओ णिरतरं तासु होइ गुणसेढी ।
उदयादिपदेसग्ग गुणेण गणणादियतेण ।।१७९।।

[11]विहासा । उदयटिठदिपदेसग्गं थोव । विदियाए टठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुण । [12]एव सव्विस्से पढमटिठदीए । एत्तो पंचमीए भासगाहाए समुक्कित्तणा । तं जहा ।

(१२७) उदयादिसु टिठदीसु य ज कम्म णियमसा दु तं हरस्स ।
पविसदि टिठदिक्खएण दु गुणेण गणणादियतेण ।।१८०।।

[13]विहासा । तं जहा । ज अस्सि समए उदिण्ण पदेसग्ग त थोव । से काले ट्ठिदिक्खएण उदयं पविसदि पदेसग्ग तमसखेज्जगुण । [14]एव सव्वत्थ किट्टीवदगद्धाए । एत्तो छट्ठीए भासगाहाए समुक्कित्तणा । तं जहा ।

(१२८) [15]वेदगकालो किट्टीय पच्छिमाए दु णियमसा हरस्सो ।
सखेज्जदिभागेण दु सेसग्गाण कमणधिगो ।।१८१।।

[16]विहासा । पच्छिमकिट्टीमतोमुहुत्त वदयदि तिस्से वेदगकालो थोवो । एक्कारसमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ । दसमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ । [17]णवमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ । अट्ठमीए किटटीए वदगकालो विसेसाहिओ । सत्तमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ । छटठीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ । पंचमीए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ । चउत्थीए किट्टीए वदगकालो विसेसाहिओ । तदियाए किट्टीए वदगकालो विसेसाहिओ । विदियाए किट्टीए वेदगकालो सिसेसाहिओ । पढमाए किट्टीए वेदगकालो विसेसाहिओ । विसेसो सखज्जदिभागो । [18]एत्तो चउत्थीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा । त जहा ।

(१२९) कदिसु गदिसु भवेसु य टिठदि अणुभागेसु वा कसाएसु ।
कम्माणि पुव्वबद्धाणि कदिसु किट्टीसु च ट्ठिदीसु ।।१८२।।

---

१ पृ० ९४ । २ पृ० ९५ । ३ पृ० ९६ । ४ पृ० ९७ । ५ पृ० ९८ । ६ पृ० १०० । ७ पृ० १०१ । ८ पृ० १०२ । ९ पृ० १०३ । १० पृ० १०४ । ११ पृ० १०५ । १२ पृ० १०६ । १३ पृ० १०७ । १४ पृ० १०८ । १५ पृ० १०९ १६ पृ० १११ । १७ पृ० ११२ । १८ पृ० ११३ ।

[1]एदीस्से तिण्णि भासगाहो । त जहा ।

(१३०) दासु गदीसु अभज्जाणि दोसु भज्जाणि पुव्वबद्धाणि ।
एइंदियकाएसु च पचसु भज्जा ण च तसेसु ।।१८३।।

[2]विहासा । एदस्स खवगस्स दुगदिसमज्जिद कम्म णियमा अत्थि । त जहा—तिरिक्खगदिसमज्जिदं च मणुसगदिसमज्जिदं च । [3]देवगदिसमज्जिद च णिरयगदिसमज्जिद च भजियव्व । [4]पुढविकाइय आउकाइय-तेउकाइय वाउकाइय-वणप्फदिकाइएसु तत्तो एक्केक्केण काएण समज्जिद भजियव्व । [5]तसकाइय समज्जिद णियमा अत्थि । [6]एत्तो एक्केक्काए गदीए कायेहिं च समज्जिदल्लग्गस्स जहण्णुक्कस्सपदेसग्गस्स पमाणाणुगमो च अप्पाबहुअ च कायव्व । [7]एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१३१) [8]एइंदियभवग्गहणेहिं असंखज्जेहिं णियमसा बद्ध ।
एगादेगुत्तरियं सखज्जेहिं य तसभवेहिं ।।१८४।।

[9]एदिस्से गाहाए विहासा च कायव्वा । [10]एत्तो तदियाए भासागाहाए समुक्कित्तणा ।।

(१३२) उक्कस्सयअणुभागे ट्ठिदिउक्कस्साणि पुव्वबद्धाणि ।
भजियव्वाणि अभज्जाणि होति णियमा कसाएसु ।।१८५।।

[11]विहासा । उक्कस्सट्ठिदिबद्धाणि उक्कस्सअणुभागबद्धाणि च भजिदव्वाणि । कोह माण माया-लोभोवजुत्तहिं बद्धाणि अभजियव्वाणि । [12]एत्तो पचमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा । त जहा ।

(१३३) पज्जत्तापज्जेत्तेण तधा त्थी-पुण्णवु सयमिस्सेण ।
सम्मत्त मिच्छत्ते केण व जोगोवजोगेण ।।१८६।।

[13]एत्थ चत्तारि भासगाहाओ । त जहा ।

(१३४) पज्जत्तापज्जत्त मिच्छत्त णवु सए च सम्मत्ते ।
कम्माणि अभज्जाणि दु थी पुरिसे मिस्सगे भज्जा ।।१८७।।

[14]विहासा । पज्जत्तेण अपज्जत्तेण मिच्छाइट्ठिणा सम्माइट्ठिणा णवु सयवदेण च एवंभावभूदेण बद्धाणि णियमा अत्थि । इत्थीए पुरिसेण सम्मामिच्छाइट्ठिणा च एवभावभूदेण बद्धाणि भज्जाणि । [15]एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा । त जहा ।

(१३५) ओरालिये सरीरे ओरालियमिस्सए च जोगे दु ।
चदुविधमण-वचिजोगे च अभज्जगा सेसगे भज्जा ।।१८८।।

विहासा । [16]ओरालिएण ओरालियमिस्सएण चउव्विहेण मणजोगण चउव्विहेण वचिजोगेण बद्धाणि अभज्जाणि । सेसजोगसु बद्धाणि भज्जाणि । एत्तो तदियभासगाहा । त जहा ।

(१३६) अध सुद मदिउवजोगे होंति अभज्जाणि पुव्वबद्धाणि ।
भज्जाणि च पच्चक्खेसु दोसु छदुमत्थणाणेसु ।।१८९।।

[17]विहासा । सुदणाणे अण्णाणे मदिणाण अण्णाण एदेसु चदुसु उवजोगेसु पुव्वबद्धाणि णियमा अत्थि । ओहिणाणे अण्णाणे मणपज्जवणाणे एदेसु तिसु उवजोगेसु पुव्वबद्धाणि भजियव्वाणि । एत्थो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१३७) [18]कम्माणि अभज्जाणि दु अणगार-अचक्खुदंसणुवजोगे ।
अध ओहिदंसणे पुण उवजोगे होंति भज्जाणि ।।१९०।।

---

१ पृ० ११५ । २ पृ० ११८ । ३ पृ० ११९ । ४ पृ० १२० । ५ पृ० १२१ । ६ पृ० १२२ । ७ पृ० १२३ । ८ पृ० १२४ । ९ पृ० १२५ । १० पृ० १२६ । ११ पृ० १२७ । १२ पृ० १२८ । १३ पृ० १२९ । १४ पृ० १३१ । १५ पृ० १३२ । १६ पृ० १३३ । १७ पृ० १३४ । १८ पृ० १३५ ।

विहासा एसा। [1]एत्तो छट्ठी मूलगाहा।

(१३८) किं लेस्साए बद्धाणि केसु कम्मेसु वट्टमाणेण।
सादेण असादेण च लिंगेण च कम्हि खेत्तम्हि ॥१९१॥

[2]एदिस्से दो भासगाहाओ। तासिं समुक्कित्तणा।

(१३९) लेस्सा साद असादे च अभज्जा कम्म सिप्प लिंगे च।
खेत्तम्हि च भज्जाणि दु समाविभागे अभज्जाणि ॥१९२॥

[3]विहासा। त जहा। छसु लेस्सासु सादेण असादण च बद्धाणि अभज्जाणि। कम्म सिप्पेसु भज्जाणि। कम्माणि जहा—अगारकम्म वण्णकम्मं पव्वदकम्ममेदेसु कम्मेसु भज्जाणि। [4]सव्वलिंगेसु च भज्जाणि। [5]खेतम्हि सिया अधोलोगिग सिया उड्ढलोगिग णियमा तिरियलोगिगं। अधोलोगमुड्ढलोगिगं च सुद्ध णत्थि। [6]ओसप्पिणीए च उस्सप्पिणीए च सुद्ध णत्थि। एत्तो विदियाए भासगाए समुक्कित्तणा।

(१४०) एदाणि पुव्वबद्धाणि होंति सव्वसु ट्ठिदिविसेसेसु।
सव्वसु चाणुभागेसु णियमसा सव्वकिट्टीसु ॥१९३॥

[7]विहासा। जाणि अभज्जाणि पुव्वबद्धाणि ताणि णियमा सव्वेसु ट्ठिदिविसेसेसु णियमा सव्वासु किट्टीसु। [8]एत्तो सत्तमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा।

(१४१) एगसमयपबद्धा पुण अच्छुत्ता केत्तिगा कहिं ट्ठिदीसु।
भवबद्धा अच्छुत्ता ट्ठिदीसु कहिं केत्तिया होंति ॥१९४॥

[9]एदिस्से चत्तारि भासगाहाओ। तासिं समुक्कित्तणा।

(१४२) छण्हमावलियाण अच्छुत्ता णियमसा समयपबद्धा।
सव्वसु ट्ठिदिविसेसाणुभागेसु च चउण्हं पि ॥१९५॥

[10]विहासा। जत्तो पाए अंतरं कद तत्तो पाए समयपबद्धो छसु आवलियासु गदासु उदीरिज्जदि। [11]अंतरादो कदादो तत्तो छसु आवलियासु गदासु तेण परं छण्हमावलियाण समयपबद्धा उदये अच्छुद्धा भवति। [12]भवबद्धा पुण णियमा सव्वे उदये सच्छुद्धा भवति। एत्तो विदियभासगाहा।

(१४३) [13]जा चावि बज्झमाणी आवलिया होदि पढमकिट्टीए।
पुव्वावलिया णियमा अणंतरा चदुसु किट्टीसु ॥

[14]विहासा। ज पदेसग्ग बज्झमाणय कोधस्स तं पदेसग्गं सव्वं बधावलिय कोहस्स पढमसगहकिट्टीए दिस्सइ। तदो आवलियादिक्कत तिसु वि कोहकिट्टीसु दीसइ माणस्स च पढमकिट्टीए। [15]एवं विदियावलिया चदुसु किट्टीसु दीसइ। तदो ज पदेसग्ग कोहादो माणस्स पढमकिट्टीए गद त पदेसग्गं तदो आवलियाए पुण्णाए माणस्स विदिय-तदियासु मायाए च पढमसगहकिट्टीए संकमदि। एव तदिया आवलिया सत्तसु किट्टीसु त्ति भण्णइ। [16]जं कोहपदेसग्ग संछुब्भमाणय मायाए पढमकिट्टीए संपत्त तं पदेसग्गं तत्तो आवलियादिक्कतं मायाए विदिय तदियासु च किट्टीसु लोभस्स च पढमकिट्टीए संकमदि। एवं चउत्थी आवलिया दससु किट्टीसु त्ति भण्णइ। ज कोहपदेसग्ग संछुब्भमाण लोभस्स पढमकिट्टीए सपत्तं तदो आवलियादिक्कत लोभस्स विदिय तदियासु किट्टीसु दीसइ। [17]एव पचमी आवलिया सव्वासु किट्टीसु त्ति भण्णइ। तदियाए वि भासगाहाए अत्थो एत्थेव परूविदो। णवरि समुक्कित्तणा कायव्वा। त जहा।

(१४४) तदिया सत्तसु किट्टीसु चउत्थी दससु होइ किट्टीसु।
तेण परं सेसाओ भवंति सव्वासु किट्टीसु ॥१९७॥

---

१ पृ० १३६। २ पृ० १३७। ३ पृ० १४०। ४ पृ० १४१। ५ पृ० १४२। ६ पृ० १४३। ७ पृ० १४५। ८ पृ० १४६। ९ पृ० १४८। १० पृ० १५०। ११ पृ० १५१। १२ पृ० १५२। १३ पृ० १५३। १४ पृ० १५४। १५ पृ० १५५। १६ पृ० १५६। १७ पृ० १५७।

[1]एत्तो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१४५) एदे समयपबद्धा अच्छुत्ता णियमसा इह भवम्मि ।
सेसा भवबद्धा खलु सछुद्धा होति बोद्धव्वा ।।१९८।।

[2]एदिस्से गाहाए अत्था पढमभासगाहाए चेव परूविदो । एत्तो अट्ठमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१४६) एगसमयपबद्धाण सेसाणि च कदिसु ट्ठिदिविसेसेसु ।
भवसेसगाणि कदिसु च कदि कदि वा एगसमएण ।।१९९।।

[3]एत्थ चत्तारि भासगाहाओ । तासिं समुक्कित्तणा ।

(१४७) एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे भवसेसगसमयपबद्धसेसाणि ।
णियमा अणुभागेसु य भवंति सेसा अणंतेसु ।।२००।।

[4]विहासा । [5]समयपबद्धसेसय णाम किं । जं समयपबद्धस्स वेदिदसेसग पदेसग्गं दिस्सइ तम्मि अपरि-सेसिदम्मि एगसमयेण उदयमागदम्मि तस्स समयपबद्धस्स अण्णो कम्मपदेसो वा णत्थि तं समयपबद्धसेसगं णाम । [6]एवं चेव भवबद्धसेसयं । एदीए मग्गणापरूवणाए पढमाए भासगाहाए विहासा । [7]तं जहा । एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे केत्तिएहं समयपबद्धाण सेसाणि होज्जासु ? एक्कस्स वा समयपबद्धस्स दोण्हं वा तिण्हं वा एवं गंतूण उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाणं । [8]भवबद्धसेसयाणि वि एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे एक्कस्स वा भवबद्धस्स दोण्हं वा तिण्हं वा, एवं गंतूण उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताण भवबद्धा । ।

णियमा अणंतेसु अणुभागेसु भवबद्धसेसगं वा समयपबद्धसेसगं वा । एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा । तं जहा ।

(१४८) ट्ठिदिउत्तरसेढीए भवसेससमयपबद्धसेसाणि ।
एगुत्तरमेगादी उत्तरसेढी असंखेज्जा ।।२०१।।

[10]विहासा । तं जहा । समयपबद्धसेसयमेक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे दोसु वा तीसु वा एगादिएगुत्तरमुक्कस्सेण विरहिदट्ठिदीए सव्वासु ट्ठिदीसु पढमट्ठिदीए च समयाहियउदयावलियं मोत्तूण सेसासु सव्वासु ठिदीसु णाणासमयपबद्धसेसाणं णाणाभवबद्धसेसयाणं च । [11]एत्तो तदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१४९) एक्कम्मि ट्ठिदिविसेसे सेसाणि ण जत्थ होंति सामण्णा ।
आवलिगासंखेज्जदिभागो तहिं तारिसो समया ।।२०२।।

विहासा । [12]सामण्णसण्णा ताव । एक्कम्मि ठिदिविसेसे जम्हि समयपबद्धसेसयमत्थि सा ट्ठिदी सामण्णा त्ति णादव्वा । जम्मि णत्थि सा ट्ठिदी असामण्णा त्ति णादव्वा । [13]एवमसामण्णाओ ट्ठिदीओ एक्का वा दो वा उक्कस्सेण अणुबद्धाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ । [14]एक्केक्केण असामण्णाओ थोवाओ । दुगेण विसेसाहियाओ । तिगेण विसेसाहियाओ । आवलियाए असंखेज्जदिभागे दुगुणाओ । [15]आवलियाए असंखेज्जदि भागे जवमज्झं । [16]समयपबद्धस्स एक्केक्कस्स सेसमेक्किस्से ट्ठिदीए तं समयपबद्धा थोवा । जं दोसु ट्ठिदीसु ते समयपबद्धा विसेसाहिया । [17]आवलियाए असंखेज्जदिभागे दुगुणा । [18]आवलियाए असंखेज्जदिभागे जवमज्झं । तदो हीयमाणट्ठाणाणि वासपुधत्तं । [19]एत्तो चउत्थीए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१५०) एदेण अंतरेण दु अपच्छिमाए दु पच्छिमे समए ।
भवसमयसेसगाणि दु णियमा तम्हि उत्तरपदाणि ।।२०३।।

१ पृ० १५८ । २ पृ० १५९ । ३ पृ० १६२ । ४ पृ० १६३ । ५ १६४ । ६ पृ० १६६ । ७ पृ० १६७ । ८ पृ० १६८ । ९ पृ० १६९ । १० पृ० १७१ । ११ पृ० १७३ । १२ पृ० १७५ । १३ पृ० १७६ । १४ पृ० १७७ । १५ पृ० १७८ । १६ पृ० १८१ । १७ पृ० १८२ । १८ पृ० १८३ । १९ पृ० १८४ ।

[1]विहासा। [2]समयपबद्धसेसयं जिस्से ट्ठिदीए णत्थि तदो विदियाए ट्ठिदीए ण होज्ज तदियाए ठिदीए ण होज्ज तदो चउत्थीए ण होज्ज। एवमुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तीसु ट्ठिदीसु ण होज्ज समयपबद्धसेसयं। आवलियाए असंखेज्जदिभागं गंतूण णियमा समयपबद्धसेसएण अविरहिदाओ ट्ठिदीओ। [3]जाओ ताओ अविरहिदट्ठिदीओ ताओ एगसमयपबद्धसेसएण अविरहिदाओ थोवाओ। अणेगाण समयपबद्धाण सेसएण अविरहिदाओ असंखेज्जगुणाओ। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाणं सेसएण अविरहिदाओ असंखेज्जा भागा। [4]एसा सव्वा चदुहिं गाहाहिं खवगस्स परूवणा कदा। एदाओ चेव चत्तारि विगाहाओ अभवसिद्धियपाओग्गे णेदव्वाओ। [5]तत्थ पुव्वं गमणिज्जा णिल्लेवणट्ठाणाणमुवदेसपरूवणा। एत्थ दुविहो उवएसो। [6]एक्केण उवदेसेण कम्मट्ठिदीए असंखेज्जा भागा णिल्लेवणट्ठाणाणि। [7]एक्केण उवएसेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। जो पवाइज्जइ उवएसो तेण उवदेसेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि वग्गमूलाणि णिल्लेवणट्ठाणाणि। [8]अदीदे काले एगजीवस्स जहण्णए णिल्लेवणट्ठाणे णिल्लेविदपव्वाणं समयपबद्धाणमसो कालो थोवो। [9]समयुत्तरे विसेसाहिओ। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमत्ते दुगुणो। [10]ठाणाणमसंखेज्जदिभागे जवमज्झं। [11]णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि। एयगुणहाणि एांतरमसंखेज्जगुणं। [12]एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे एक्कस्स वा समयपबद्धस्स सेसयं दोण्हं वा तिण्हं वा उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं समयपबद्धाणं। एवं चेव भवबद्धसेसाणि। पढमाए गाहाए अत्थो समत्तो भवदि। [13]जवमज्झं कायव्वं विस्सरिदं लिहिदुं।

[14]विदियाए भासगाहाए अत्थो जहावसरपत्तो। तं जहा। समयपबद्धसमयमविसेसे ट्ठिदीए होज्ज दोसु तीसु वा। उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेसु। [15]णिल्लेवणट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागे समयपबद्धसेसयाणि। समयपबद्धसेसयाणि एक्कम्हि ट्ठिदिविसेसे जाणि ताणि थोवाणि। दोसु ट्ठिदिविसेसेसु विसेसाहियाणि। [16]तिसु ट्ठिदिविसेसेसु विसेसाहियाणि। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं जवमज्झं। णाणंतराणि थोवाणि। [17]एयमंतरमसंखेज्जगुणं। एवं भवबद्धसेसयाणि। [18]विदियाए गाहाए अत्थो समत्तो भवदि।

तदियाए गाहाए अत्थो। असामण्णाओ ट्ठिदीओ एक्को वा दो वा तिण्णि वा एवमणबद्धाओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। [19]एवं तदियाए गाहाए अत्थो समत्तो। एत्तो चउत्थीए गाहाए अत्थो। सामण्णट्ठिदीओ एक्कंतरिदाओ थोवाओ। [20]दुअंतरिदा विसेसाहिया। एवं गंतूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे जवमज्झं। [21]णाणागुणहाणिसलागाणि थोवाणि। एक्कंतरमसंखेज्जगुणं। एदमक्खवगस्स णादव्वं। [22]खवगस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागो अंतरं। इमस्स पुण सामण्णाणं ट्ठिदीणमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। जहा समयपबद्धसेसयाणि तहा भवबद्धसेसाणि कादव्वाणि। [23]एवं चउत्थीए गाहाए अत्थो समत्ता भवदि। अट्ठमाए मूलगाहाए विहासा समत्ता भवदि।

इमा अण्णा अभवसिद्धियपाओग्गे परूवणा। [24]तं जहा। भवबद्धाणं णिल्लेवणट्ठाणं जहण्णगं समयपबद्धस्स णिल्लेवणट्ठाणाणं जहण्णयादो असंखेज्जाओ ट्ठिदीओ अब्भुस्सरिदूण। [25]तदो जवमज्झं कायव्वं। जम्हि चेव समयपबद्धणिल्लेवणट्ठाणाणं जवमज्झं तम्हि चेव भवबद्धणिल्लेवणट्ठाणाणं जवमज्झं। [26]अदीदे काले जं समयपबद्धा एक्केण पदेसग्गेण णिल्लेविदा ते थोवा। बेहिं पदेसेहिं विसेसाहिया। एवमणंतरोवणिधाए अणंताणि ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। [27]ठाणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं पडिभाग जवमज्झं।

---

१ पृ० १८५। २ पृ० १८६। ३ पृ० १८७। ४ पृ० १८९। ५ पृ० १९०। ६ पृ० १९१। ७ पृ० १९२। ८ पृ० १९३। ९ पृ० १९४। १० पृ० १९५। ११ पृ० १९६। १२ पृ० १९७। १३ पृ० १९८। १४ पृ० २००। १५ पृ० २०१। १६ पृ० २०२। १७ पृ० २०३। १८ पृ० २०४। १९ पृ० २०५। २० पृ० २०६। २१ पृ० २०७। २२ २०८। २३ पृ० २१०। २४ पृ० २११। २५ पृ० २१३। २६ पृ० २१५। २७ पृ० २१६।

[1]णाणतर थोव । एगतरमणतगुण । अतराणि अतरट्ठिदाए पलिदोवमच्छेदणाण पि असखेज्जदिभागो ।
[2]णाणतराणि थोवाणि । एकातरमणतगुण । खवगस्स वा अक्खवगस्स वा समयपबद्धाण वा भवबद्धाण वा अणुसमयणिल्लेवणकाला एगसमइओ बहुगो ।

[3]दुसमइओ विसेसहीणो । [4]एव गतूण आवलियाए असखेज्जदिभागे दुगुणहीणो । उक्कस्सओ वि अणुसमयणिल्लेवणकालो आवलियाए असखेज्जदिभागो । [5]अक्खवगस्स एगसमइयेण अतरेण णिल्लेविदा समयपबद्धा वा भवबद्धा वा थोवा । दुसमएण अतरेण णिल्लेविदा विसेसाहिया । [6]एव गतूण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागे दुगुणा । दुगुणाणमसखेज्जदिभाग जवमज्झ । [7]उक्कस्सय पि णिल्लेवणतर पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । [8]एक्केण समयेण णिल्लेविज्जति समयपबद्धा वा भवबद्धा वा एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । एदेण वि जवमज्झ । एक्केक्केण णिल्लेविज्जति त थोवा । [9]दोण्णि णिल्लेविज्जति विसेसाहिया । तिण्णि णिल्लेविज्जति विसेसाहिया । एव गतूण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभाग दुगुणा । [10]णाणतराणि थोवाणि । एक्कतरच्छेदणाणि वि असखेज्जगुणाणि । अप्पाबहुअ । [11]सव्वथोवमणुसमयणिल्लेवणकालयमुक्कस्सय । जे एगसमएण णिल्लेविज्जति भवबद्धा त असखेज्जगुणा । समयपबद्धा एगसमयेण णिल्लेविज्जति असखेज्जगुणा । समयपबद्धसेसएण विरहिदाओ णिरतराओ ट्ठिदीओ असखेज्जगुणाओ । [12]पलिदोवमवग्गमूलमसखेज्जगुण । णिसेगगुणहाणिट्ठाणतरमसखेज्जगुण । भवबद्धाण णिल्लेवणट्ठाणाणि असखेज्जगुणाणि । समयपबद्धाण णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । [13]समयपबद्धस्स कम्मट्ठिदीए अतो अणुसमयअवेदगकालो असखेज्जगुणो । समयपबद्धस्स कम्मट्ठिदीए अंतो अणुसमयवेदगकालो असखेज्जगुणो ।

[14]सव्वो अवेदगकालो असखेज्जगुणो । सव्वो वेदगकालो असखेज्जगुणो । कम्मट्ठिदी विसेसाहिया ।
[15]णवमीए मूलगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१५१) किट्टीकदम्मि कम्मे ट्ठिदि अणुभागेसु केसु सेसाणि ।
कम्माणि पुव्वबद्धाणि बज्झमाणाणुदिण्णाणि ॥२०४॥

[16]एदिस्से दो भासगाहाओ । [17]तासिं समुक्कित्तणा ।

(१५२) किट्टीकदम्मि कम्मे णामागोदाणि वेदणीय च ।
वस्सेसु असखेज्जेसु सेसगा होंति सखेज्जा ॥२०५॥

विहासा । [18]किट्टीकरणे णिट्ठिदे किट्टीण पढमसमयवेदगस्स णामागोदवेदणीयाण ट्ठिदिसतकम्ममसखेज्जाणि वस्साणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्ममट्ठवस्साणि । तिण्ह घादिकम्माण ट्ठिदिसतकम्म सखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । एत्तो विदियाए भासगाहाए समुक्कित्तणा ।

(१५३) किट्टीकदम्मि कम्मे साद सुहणाममुच्चगोद च ।
बधदि च सदसहस्से ट्ठिदिमणुभागे सुदुक्कस्स ॥२०६॥

[19]विहासा । किट्टीण पढमसमयवेदगस्स सजलणाण ठिदिबधो चत्तारि मासा । णामागोदवेदणीयाण तिण्ण चेव घादिकम्माण ट्ठिदिबधो सखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । णामागोदवेदणीयाणमणुभागबधो तस्समयउक्कस्सगो । [20]एत्तो ताव दो मूलगाहाओ ववणिज्जाओ । [21]किट्टीवेदगस्स ताव परूवणा कायव्वा । त जहा । किट्टीण पढमसमयवेदगस्स सजलणाण ट्ठिदिसतकम्ममट्ठ वस्साणि । तिण्ह घादिकम्माण ठिदिसतकम्म सखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । णामागोदवेदणीयाण ट्ठिदिसतकम्ममसखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । सजलणाण ठिदिबधो चत्तारि मासा । सेसाण कम्माण ट्ठिदिबधो सखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ।
[22]किट्टीणं पढमसमयवेदगप्पहुडि मोहणीयस्स अणुभागाणमणुसमयोवट्टणा । [23]पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोहकिट्टी

१ पृ० २१७ । २ पृ० २१८ । ३ पृ० २१९ । ४ पृ० २२० । ५ पृ० २२१ । ६ पृ० २२२ । ७ पृ० २२३ । ८ पृ० २२४ । ९ पृ० २२५ । १० पृ० २२६ । ११ पृ० २२७ । १२ पृ० २२८ । १३ पृ० २२९ । १४ पृ० २३० । १५ पृ० २३१ । १६ पृ० २३२ । १७ पृ० २३३ । १८ पृ० २३४ । १९ पृ० २३६ । २० पृ० २३७ । २१ पृ० २३८ । २२ पृ० २३९ । २३ पृ० २४० ।

उदये उक्कस्सिया बहुगी । बंध उक्कस्सिया अणतगुणहीणा । बिदियसमये उदये उक्कस्सिया अणतगुणहीणा । बंधे उक्कस्सिया अणतगुणहीणा । [१]एव सव्विस्से किट्टीवेदगद्धाए ।

पढमसमय बंध जहण्णिया किट्टी ति वाणभागा । उदये जहण्णिया किट्टी अणतगुणहीणा । [२]विदिय समय बंधा (बद्धा) जहण्णिया किट्टी अणतगुणहीणा उदय जहण्णिया अणतगुणहीणा । एव सव्विस्से किट्टीवेदगद्धाए । समय समये णिव्वग्गणाओ जहण्णियाओ विय । [३]एसा वादरकिट्टीए परूवणा । [४]किट्टीण पढमसमय वेदगस्स माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए किट्टीणमसंखेज्जा भागा बज्झति । सेसाओ संगहकिट्टीओ ण बज्झति । एव मायाए । एव लोभस्स वि । किट्टीण पढमसमय वेदगो बारसण्ह पि संगहकिट्टीणमग्ग किट्टिमादि कादूण एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए असंखेज्जदिभाग विणासेदि । कोहस्स पढमसंगहकिट्टि मोत्तूण सेसाणमेक्कारसण्ह संगहकिट्टीण अण्णाओ अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि । [५]ताओ अपुव्वाओ किट्टीओ कदमादो पदेसग्गादो णिव्वत्तेदि । बज्झमाणयादो च संकामिज्जमाणयादो च पदेसग्गादो णिव्वत्तेदि । [६]बज्झमाणियादो थोवाओ णिव्वत्तेदि । संकामिज्जमाणयादो असंखेज्जगुणाओ । जाओ ताओ बज्झमाणयादो पदेसग्गादो णिव्वत्तिज्जति ताओ चदुसु पढमसंगहकिट्टीसु । [७]ताओ कम्हि आगास ? एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए किट्टीअंतरेसु । [८]किं सव्वेसु किट्टीअंतरेसु आहो ण सव्वेसु ? ण सव्वेसु । जइ ण सव्वेसु कदमेसु अंतरेसु अपुव्वाओ णिव्वत्तयदि । उवसंदरिसणा । [९]बज्झमाणियाण पढम किट्टीअंतर तत्थ णत्थि । एव असंखेज्जाणि किट्टीअंतराणि अधिच्छिदूण । किट्टीअंतराणि अंतरट्ठदाए असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । [१०]एत्तियाणि किट्टीअंतराणि गतूण अपुव्वा किट्टी णिव्वत्तिज्जदि । पुणो वि एत्तियाणि किट्टीअंतराणि गतूण अपुव्वा किट्टी णिव्वत्तिज्जदि । [११]बज्झमाणयस्स पदेसग्गस्स णिसेगसेढिपरूवण वत्तइस्सामो । तत्थ जहण्णियाए किट्टीए बज्झमाणियाए बहुअ । विदियाए किट्टीए विसेसहीणमणंतभागेण ।

[१३]तदियाए विसेसहीणमणंतभागेण । चउत्थीए विसेसहीण । एवमणंतरोवणिधाए ताव विसेसहीण जाव अपुव्वकिट्टिमपत्ता त्ति । [१४]अपुव्वाए किट्टीए अणंतगुण । अपुव्वादो किट्टीदो जा अणंतरकिट्टी तत्थ अणतगुणहीण । [१५]तदो पुणो अणंतभागहीण । एव सेसासु सव्वासु । जाओ संकामिज्जमाणियाओ पदेसग्गादो अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तिज्जति ताओ दुसु आगासेसु । [१६]त जहा । किट्टीअंतरेसु च संगहकिट्टीअंतरेसु च । जाओ संगहकिट्टीअंतरेसु ताओ थोवाओ । [१७]जाओ किट्टीअंतरेसु ताओ असंखेज्जगुणाओ । जाओ संगहकिट्टीअंतरेसु तासिं जहा किट्टीकरणे अपुव्वाण णिव्वत्तिज्जमाणियाण किट्टीण विधी तहा कायव्वो । [१८]जाओ किट्टीअंतरेसु तासिं जहा बज्झमाणयेण पदेसग्गेण अपुव्वाण णिव्वत्तिज्जमाणियाण किट्टीण विधी तहा कायव्वो । णवरि थोवंतरगाणि किट्टीअंतराणि गतूण संछुब्भमाणपदेसग्गेण अपुव्वा किट्टी णिव्वत्तिज्जमाणिगा दिस्सदि । [१९]ताणि किट्टीअंतराणि पगणणादो पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । पढमसमयकिट्टीवेदगस्स जा कोहपढमसंगहकिट्टी तिस्से असंखेज्जदिभागो विणासिज्जदि । [२०]किट्टीओ जाओ पढमसमये विणासिज्जति ताओ बहुगीओ । जाओ विदियसमये विणासिज्जति ताओ असंखेज्जगुणहीणाओ । एव ताव दुचरिमसमयअविणट्ठकोहपढमसंगहकिट्टि त्ति । [२२]एदेण सव्वेण तिचरिमसमयमत्तीओ सव्वकिट्टीसु पढमविदियसमयवेदगस्स कोधस्स पढमकिट्टीए अवज्झमाणियाणं किट्टीणमसंखेज्जदिभागो । [२३]कोहस्स पढमकिट्टिं वेददयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए समयाहियाए आवलियाए सेसाए एदम्हि समय जा विही त विहिं वत्तइस्सामो ।

---

१ पृ० २४१ । २ पृ० २४२ । ३ पृ० २४३ । ४ पृ० २४४ । ५ पृ० २४५ । ६ पृ० २४६ । ७ पृ० २४७ । ८ पृ० २४८ । ९ पृ० २४९ । १० पृ० २५० । ११ पृ० २५१ । १२ पृ० २५२ । १३ पृ० २५३ । १४ पृ० २५४ । १५ पृ० २५५ । १६ पृ० २५६ । १७ पृ० २५७ । १८ पृ०२६० । १९ पृ० २६२ । २० पृ० २६३ । २१ पृ० २६४ । २२ पृ० २६५ । २३ पृ० २६६ ।

तं जहा। ताधे चेव कोहस्स जहण्णगो ट्ठिदिउदीरगो। कोहपढमकिट्टीए चरिमसमयवेदगो जादो। [1]जा पुव्वपवत्ता संजलणाणमणुभागसंतकम्मस्स अणुसमयमोवट्टणा सा तहा चेव [३]। चदुसंजलणाणं ट्ठिदिबंधो बे मासा चत्तालीसं च दिवसा अंतोमुहुत्तूणा [४]। संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं छ वस्साणि अट्ठ च मासा अंतोमुहुत्तूणा [५]। [2]तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिबंधो दसवस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि [६]। घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्साणि [७]। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि [८]। [3]से काले कोहस्स विदियकिट्टीए पदेसग्गमोकड्डियूण कोहस्स पढमट्ठिदिं करेदि। ताधे कोधस्स पढमसंगहकिट्टीए संतकम्मं दो आवलियबंधा दुसमयूणा सेसा जं च उदयावलियं पविट्ठं तं च सेसं। [4]ताधे कोहस्स विदियकिट्टीवेदगो। [5]जो कोहस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी सो चेव कोहस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी कायव्वो। तं जहा। उदिण्णाणं किट्टीणं बज्झमाणीणं किट्टीणं विणासिज्जमाणीणं अपुव्वाणं णिव्वत्तिज्जमाणियाणं बज्झमाणेण च पदेसग्गेण संछुब्भमाणेण च पदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणियाणं। [6]एत्थ संकममाणयस्स पदेसग्गस्स विधिं वत्तइस्सामो। तं जहा। कोहविदियकिट्टीदो पदेसग्गं कोहतदियं च माणपढमं च गच्छदि। कोहस्स तदियादो किट्टीदो माणस्स पढमं चेव गच्छदि। माणस्स पढमादो किट्टीदो माणस्स विदियं तदियं मायाए पढमं च गच्छदि। माणस्स विदियकिट्टीदो माणस्स तदियं च मायाए पढमं च गच्छदि। माणस्स तदियकिट्टीदो मायाए पढमं गच्छदि। मायाए पढमादो पदेसग्गं मायाए विदियं तदियं च लोभस्स पढमकिट्टिं च गच्छदि। मायाए विदियादो किट्टीदो पदेसग्गं मायाए तदियं लोभस्स पढमं च गच्छदि। मायाए तदियादो किट्टीदो पदेसग्गं लोभस्स पढमं गच्छदि। [8]लोभस्स पढमादो किट्टीदो पदेसग्गं लोभस्स विदियं च तदियं च गच्छदि। लोभस्स विदियादो पदेसग्गं लोभस्स तदियं गच्छदि।

जहा कोहस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणो चदुण्हं कसायाणं पढमकिट्टीओ बंधदि। किमेवं चेव कोहस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणो चदुण्हं कसायाणं विदियकिट्टीओ बंधदि आहो ण वत्तव्वं। [9]किध खु। समासलक्खणं भणिस्सामो। जस्स जं किट्टिं वेददि तस्स कसायस्स तं किट्टिं बंधदि सेसाणं कसायाणं पढमकिट्टीओ बंधदि।

[10]कोहविदियकिट्टीए पढमसमए वेदगस्स एक्कारससु संगहकिट्टीसु अंतरकिट्टीणमप्पाबहुअं वत्तइस्सामो। तं जहा। सव्वत्थोवाओ माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ। विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। [11]तदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। कोहस्स तदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। मायाए पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। तदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। तदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। कोहस्स विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ संखेज्जगुणाओ। [12]पदेसग्गस्स वि एवं चेव अप्पाबहुअं।

[13]कोहस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलिय पडिआवलियाए सेसाए आगालपडिआगालो वोच्छिण्णो। तिस्से चेव पढमट्ठिदीए समयाहियाए आवलियाए सेसाए ताहे कोहस्स विदियकिट्टीए चरिमसमयवेदगो। ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो बे मासा बीसं च दिवसा देसूणा। [14]तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो वासपुधत्तं। सेसाणं कम्माणं ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं पंच वस्साणि चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तूणा। तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामागोदवेदणीयाणं ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि।

---

१ पृ० २६७। २ पृ० २६८। ३ पृ० २६९। ४ पृ० २७०। ५ पृ० २७१। ६ पृ० २७२। ७ पृ० २७३। ८ पृ० २७४। ९ पृ० २७५। १० पृ० २७६। ११ पृ० २७७। १२ पृ० २७८। १३ पृ० २७९। १४ पृ० २८०।

तदा स काले कोहस्स तदियकिट्टीदो पदसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करदि । [1]ताधे कोहस्स तदियसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणमसंखेज्जा भागा उदिण्णा । तासिं चेव असंखेज्जा भागा बज्झंति । जो विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी सो चेव विधी तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स वि कायव्वो ।

[2]तदियकिट्टिं वेदमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलियाए समयाहियाए सेसाए चरिमसमयकोधवेदगो । जहण्णगो ट्ठिदिउदीरगो । ताधे ट्ठिदिबंधो संजलणाण दो मासा पडिवुण्णा । [3]संतकम्मं चत्तारि वस्साणि पुण्णाणि ।

से काले माणस्स पढमकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । जा एत्थ सव्वमाणवेदगद्धा तिस्से वेदगद्धाए तिभागमेत्ता पढमट्ठिदी । [4]ताधे माणस्स पढमकिट्टिं वेदमाणो तिस्से पढमकिट्टीए अंतरकिट्टीणमसंखेज्जे भागे वेदयदि । ते उदिण्णाहिंतो विसेसहीणाओ बंधदि । [5]सेसाणं कसायाणं पढमसंगहकिट्टीओ बंधदि । जेणेव विहिणा कोहस्स पढमकिट्टी वेदिदा तेणेव विधिणा माणस्स पढमकिट्टिं वेदयदि । [6]किट्टीविणासणे बज्झमाणाणं संकामिज्जमाणाणं च पदेसग्गाणं अपुव्वाणं किट्टीणं करणं किट्टीणं बंधोदयाणि बंधगकरणे उदएसु करणमुणदिय णाणत्तं अण्णेसु च अभणिदेसु । एदेण कमेण माणपढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए जाधे समयाहियावलिया सेसा ताधे तिण्हं संजलणाणं ठिदिबंधो मासो वीसं च दिवसा अंतोमुहुत्तूणा । [7]संतकम्मं तिण्णि वस्साणि चत्तारि मासा च अंतोमुहुत्तूणा ।

से काले माणस्स विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । तेणेव विहिणा संपत्तो माणस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से समयाहियावलियसेसा त्ति । [8]ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो[9] दस च दिवसा देसूणा । संतकम्मं दो वस्साणि अट्ठ च मासा देसूणा ।

से काले माणतदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । तेणेव विहिणा संपत्तो माणस्स तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से आवलिया समयाहियमेत्ती सेसा त्ति । ताधे माणस्स चरिमसमयवेदगो । ताधे तिण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो पडिपुण्णो । संतकम्मं वे वस्साणि पडिपुण्णाणि ।

तदो से काले मायाए पढमकिट्टीए पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । तेणेव विहिणा संपत्तो मायापढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से समयाहियावलिया सेसा त्ति । ताधे ठिदिबंधो दोण्हं संजलणाणं पणवीसं दिवसा देसूणा । ट्ठिदिसंतकम्मं वस्समट्ठ च मासा देसूणा ।

से काले मायाए विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । सो वि मायाए विदियकिट्टीवेदगो तेणेव विहिणा संपत्तो मायाए विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलिया समयाहिया सेसा त्ति । ताधे ट्ठिदिबंधो वीसं दिवसा देसूणा । [10]ट्ठिदिसंतकम्मं सोलस मासा देसूणा ।

से काले मायाए तदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । तेणेव विहिणा संपत्तो मायाए तदियकिट्टिं वेदगस्स पढमट्ठिदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति । ताधे मायाए चरिमसमयवेदगो । ताधे दोण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो अद्धमासो पडिवुण्णो । ट्ठिदिसंतकम्ममेक्कं वस्सं पडिवुण्णं । तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिबंधो मासपुधत्तं । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । इदरेसिं कम्माणं [ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्साणि ।] ट्ठिदिसंतकम्मं असंखेज्जाणि वस्साणि ।

[11]तदो से काले लोभस्स पढमकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । [12]तेणेव विहिणा संपत्तो लोभस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणस्स पढमट्ठिदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति । ताधे लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं । ट्ठिदिसंतकम्मं पि अंतोमुहुत्तं । [13]तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिबंधो दिवसपुधत्तं । सेसाणं कम्माणं

---

१ पृ० २८१ । २ पृ० २८२ । ३ पृ० २८३ । ४ पृ० २८४ । ५ पृ० २८६ । ६ पृ० २८७ । ७ पृ० २८८ । ८ पृ० २८९ । ९ पृ० २९० । १० पृ० २९१ । ११ पृ० २९२ । १२ पृ० २९३ । १३ पृ० २९४ ।

वासपुधत्त । घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । सेसाणं कम्माणं असंखेज्जाणि वस्साणि ।

तत्तो से काले लोभस्स विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डियूण पढमट्ठिदिं करेदि । ताधे चेव लोभस्स विदियकिट्टीदो च तदियकिट्टीदो च पदेसग्गमोकड्डियूण सुहुमसांपराइयकिट्टीओ णाम करेदि । [1]तासिं सुहुमसांपराइयकिट्टीणं कम्हि ट्ठाणं ? तासिं ट्ठाणं लोभस्स तदियाए संगहकिट्टीए हेट्ठदो ।

जारिसी कोहस्स पढमसंगहकिट्टी तारिसी एसा सुहुमसांपराइयकिट्टी । [2]कोहस्स पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ थोवाओ । कोहे संछुद्धे माणस्स पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ । [3]माणे संछुद्धे मायाए पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ । मायाए संछुद्धाए लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ । सुहुमसांपराइयकिट्टीओ जाओ पढमसमये कदाओ ताओ विसेसाहियाओ । [4]एसो विसेसो अणंतराणंतरेण संखेज्जदिभागो ।

सुहुमसांपराइयकिट्टीओ जाओ पढमसमये कदाओ ताओ बहुगाओ । विदियसमए अपुव्वाओ कीरंति असंखेज्जगुणहीणाओ । अणंतरोवणिधाए सव्विस्से सुहुमसांपराइयकिट्टीकरणद्धाए अपुव्वाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ असंखेज्जगुणहीणाए सेढीए कीरंति । सुहुमसांपराइयकिट्टीसु जं पढमसमये पदेसग्गं दिज्जदि तं थोवं । विदियसमये असंखेज्जगुणं । एवं जाव चरिमसमयादो त्ति असंखेज्जगुणं ।

सुहुमसांपराइयकिट्टीसु पढमसमये दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा । जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्गं बहुअं । विदियाए विसेसहीणमणंतभागेण । तदियाए विसेसहीणं । [5]एवमणंतरोवणिधाए गंतूण चरिमाए सुहुमसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गं विसेसहीणं । चरिमादो सुहुमसांपराइयकिट्टीदो जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए दिज्जमाणगं पदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं । तदो विसेसहीणं । [6]सुहुमसांपराइयकिट्टीकारगो विदियसमये अपुव्वाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाओ । ताओ दोसु ट्ठाणेसु करेदि । तं जहा । पढमसमये कदाणं हेट्ठा च अंतरे च । हेट्ठा थोवाओ । अंतरेसु असंखेज्जगुणाओ ।

[7]विदियसमये दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स सेढिपरूवणा । जा विदियसमए जहण्णिया सुहुमसांपराइयकिट्टी तिस्से पदेसग्गं दिज्जदि बहुअं । विदियाए किट्टीए अणंतभागहीणं । एवं गंतूण पढमसमये जा जहण्णिया सुहुमसांपराइयकिट्टी तत्थ असंखेज्जदिभागहीणं । तत्तो अणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणि णिव्वत्तिज्जमाणगं ण पावदि । [8]अपुव्वाए णिव्वत्तिज्जमाणिगाए किट्टीए असंखेज्जदिभागुत्तरं । पुव्वणिव्वत्तिदं पडिवज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स असंखेज्जदिभागहीणं । परं परं पडिवज्जमाणगस्स अणंतभागहीणं । [9]जो विदियसमये दिज्जमाणगस्स पदेसग्गस्स विधी सो चेव विधी सेसेसु वि समएसु जाव चरिमसमयबादरसांपराइयो त्ति ।

सुहुमसांपराइयकिट्टीकारगस्स किट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्स सेढिपरूवणं । तं जहा । [10]जहण्णियाए सुहुमसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गं बहुगं । तत्तो अणंतभागहीणं जाव चरिमसुहुमसांपराइयकिट्टि त्ति । तदो जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । एसा सेढिपरूवणा जाव चरिमसमयबादरसांपराइओ त्ति । पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स वि किट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्स सा चेव सेढिपरूवणा । [11]णवरि संचोयादो जदि बादरसांपराइयकिट्टीओ धरेदि तत्थ पदेसग्गं विसेसहीणं होज्ज । [12]सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु लोभस्स चरिमादो बादरसांपराइयकिट्टीदो सुहुमसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं थोवं । लोभस्स विदियकिट्टीदो चरिमबादरसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं । [13]लोभस्स विदियकिट्टीदो सुहुमसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।

---

१ पृ० २९६ । २ पृ० २९८ । ३ पृ० २९९ । ४ पृ० ३०० । ५ पृ० ३०१ । ६ पृ० ३०२ । ७ पृ० ३०३ । ८ पृ० ३०४ । ९ पृ० ३०५ । १० पृ० ३०६ । ११ पृ० ३०७ । १२ पृ० ३०८ । १३ पृ० ३०९ । १४ पृ० ३१० ।

पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोहस्स विदियकिट्टीदो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं थोवं। [1]कोहस्स तदियकिट्टीदो माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदिपदेसग्गं विसेसाहियं। माणस्स पढमादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। [2]माणस्स विदियादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। [3]माणस्स तदियादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। मायाए पढमसंगहकिट्टीदो लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। मायाए विदियादो संगहकिट्टीदो लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। मायाए तदियादो संगहकिट्टीदो लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। लोभस्स पढमकिट्टीदो लोभस्स चेव विदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। लोभस्स चेव पढमसंगहकिट्टीदो तस्स चेव [4]तदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। कोहस्स पढमसंगहकिट्टीदो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं। कोहस्स चेव पढमसंगहकिट्टीदो[5] कोहस्स चेव तदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं। कोहस्स पढमसंगहकिट्टीदो कोहस्स चेव विदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं। एसो पदेससंकमो अइक्कंतो वि उक्खणिदो सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणीसु आसओ त्ति कादूण।

[6]सुहुमसांपराइयकिट्टीसु पढमसमये दिज्जदि पदेसग्गं थोवं। विदियसमए असंखेज्जगुणं जाव चरिमसमयादो त्ति ताव असंखेज्जगुणं। एदेण कमेण लोहस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी [7]तिस्से पढमट्ठिदीए आवलिया समयाहिया सेसा त्ति तम्हि समये चरिमसमयबादरसांपराइओ। तम्हि चेव समये लोभस्स चरिमसमयबादरसांपराइयकिट्टी संकुहमाणा संछुद्धा। लोभस्स विदियकिट्टीए वि दोआवलियबंधे समयूणे मोत्तूण उदयावलियपविट्ठं च मोत्तूण सेसाओ विदियकिट्टीए अंतरकिट्टीओ संछुब्भमाणीओ संछुद्धाओ।

तम्हि चेव लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं। [8]तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो अहोरत्तस्स अंतो। णामा गोद वेदणीयाणं बादरसांपराइयस्स जो चरिमो ट्ठिदिबंधो सो संखेज्जेहिं वस्ससहस्सेहिं हाइदूण वस्सस्स अंतो जादो। चरिमसमयबादरसांपराइयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्ममंतोमुहुत्तं। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामा गोद वेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि।

से काले पढमसमयसुहुमसांपराइयो जादो। [9]ताधे चेव सुहुमसांपराइयकिट्टीणं जाओ ट्ठिदीओ तदो ट्ठिदिखंडयमागाइदं। तदो पदेसग्गमोकड्डियूण उदये थोवं दिण्णं। [10]अंतोमुहुत्तद्धमेत्तमसंखेज्जगुणाए सेढीए। गुणसेढिणिक्खेवो सुहुमसांपराइयद्धादो विसेसुत्तरो। गुणसेढिसीसगादो जा अणंतरट्ठिदी तत्थ असंखेज्जगुणं। [11]तत्तो विसेसहीणं ताव जाव पढमसमये अंतरमासी तस्स अंतरस्स चरिमादो अंतरट्ठिदीदो त्ति। [12]चरिमादो अंतरट्ठिदीदो पढमसमये जा विदियट्ठिदी तिस्से आदिट्ठिदीए दिज्जमाणगे पदेसग्गं संखेज्जगुणहीणं। तत्तो विसेसहीणं।

[13]पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स जमोकड्डिज्जदि पदेसग्गं तमेदीए सेढीए णिक्खिवदि। विदियसमए वि एवं चेव। तदियसमए वि एवं चेव। एस कमो आकड्डिदूण णिक्खिवमाणगस्स पदेसग्गस्स ताव जाव सुहुमसांपराइयस्स पढमट्ठिदिखंडयं णिल्लेविदं ति। [14]विदियादो ठिदिखंडयादो आगाइयूण जं पदेसग्गमुदये दिज्जदि तं थोवं। तदो दिज्जदि असंखेज्जगुणाए सेढीए ताव जाव गुणसेढिसीसयादो उवरिमाणंतरा एक्का ट्ठिदि त्ति। तदो विसेसहीणं। एत्तो पाए सुहुमसांपराइयस्स जाव मोहणीयस्स ट्ठिदिघादो ताव एस कमो।

---

१ पृ० ३११। २ पृ० ३१२। ३ पृ० ३१३। ४ पृ० ३१४। ५ पृ० ३१५। ६ पृ० ३१७। ७ पृ० ३१८। ८ पृ० ३१९। ९ पृ० ३२०। १० पृ० ३२१। ११ पृ० ३२२। १२ पृ० ३२३। १३ पृ० ३२४। १४ पृ० ३२५।

पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स ज दिस्सदि पदेसग्ग तस्स सेढिपरूपणं वत्तइस्सामो । तं जहा । पढम समयसुहुमसांपराइयस्स उदये दिस्सदि पदेसग्ग थोव । विदियाए ट्ठिदीए असखेज्जगुण दीसदि । एव ताव जाव गुणसेढिसीसय त्ति । गुणसेढिसीसयादो अण्णा च एक्का ट्ठिदि त्ति । तत्तो विसेसहीण ताव जाव चरिमअतर ट्ठिदि त्ति । तत्तो असखज्जगुण । तत्तो विसेसहीण । एस कमो ताव जाव सुहुमसापराइयस्स पढमट्ठिदि खडय चरिमसमयअणिल्लेविद त्ति । पढमे ट्ठिदिखडए णिल्लेविद ज उदये पदसग्ग दिस्सदि त थोव । विदियाए ट्ठिदीए असखेज्जगुण । एव ताव जाव गुणसेढिसीसय । गुणसेढिसीसयादो अण्णा च एक्का ट्ठिदि त्ति असखेज्जगुण दिस्सदि । तत्तो विसेसहीण जाव उक्कस्सिया मोहणीयस्स ट्ठिदि त्ति ।

सुहुमसापराइयस्स पढमटिठदिखडए पढमसमयणिल्लेविदे गुणसेढि मोत्तूण केण कारणेण ससिगासु टिठदीसु एयगोवुच्छा सेढी जादा त्ति ? एदस्स साहणटठमिमाणि अप्पाबहुअपदाणि । त जहा । सव्वत्थोवा सुहुमसापराइयद्धा । पढमसमयसुहुमसापराइयस्स मोहणीयस्स गुणसेढिणिक्खेवो विसेसाहिओ । अतरट्ठिदीओ सखज्जगुणाओ । सुहुमसापराइयस्स पढमटिठदिखडय मोहणीये सखज्जगुण । पढमसमयसुहुम सापराइयस्स मोहणीयस्स टिठसतकम्म सखज्जगुण । लोभस्स विदियकिट्टि वदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए जाव तिण्णि आवलियाओ सेसाओ ताव लोभस्स विदियकिट्टीदो लोभस्स तदियकिट्टीए सछुब्भदि पदेसग्ग तेण पर ण संछुब्भदि सव्व सुहुमसापराइयकिट्टीसु सछुब्भदि । लोभस्स विदियकिट्टि वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलियाए समयाहियाए सेसाए ताधे जा लोभस्स तदियकिट्टी सा सव्वा णिरवयवा सुहुमसापराइयकिटटीसु सकता । जा विदियकिटटी तिस्से दो आवलिया मोत्तूण समयूण उदया वलियपविट्ठ च सेस सव्व सुहुमसापराइयकिटटीसु सकत । ताधे चरिमसमयबादरसांपराइओ मोहणीयस्स चरिमसमयबधगो ।

से काले पढमसमयसुहुमसापराइओ । ताधे सुहुमसांपराइयकिट्टीणमसखेज्जा भागा उदिण्णा । हेट्ठा अणुदिण्णाओ थोवाओ । उवरि अणुदिण्णाओ विसेसाहिओ । मज्झे उदिण्णाओ सुहुमसापराइयकिटटीओ असखज्जगुणाओ । सुहुमसापराइयस्स खेज्जेसु ट्ठिदिखडयसहस्सेसु गदेसु जमपच्छिम ट्ठिदिखंडय मोहणीयस्स तम्हि ट्ठिदिखडये उक्कीरमाण जो मोहणीयस्स गुणसेढिणिक्खेवो तस्स गुणसेढिणिक्खेवस्स अग्गग्गादो सखज्जदिभागो आगाइदा । तम्हि ट्ठिदिखडाए उक्किण्ण तदो प्पहुडि मोहणीयस्स णत्थि ट्ठिदिघादो । जत्तिय सुहुमसापराइयद्धाए सस तत्तिय मोहणीयस्स ट्ठिदिसतकम्म सेस । एत्तिग ।

२ ऐतिहासिक नामसूची

३ ग्रन्थनामोल्लेख

४ न्यायोक्ति

५ उपदेशभेद

१ अण्ण पुण आइरिया किट्टीसु फद्दएसु च एसा चव गोपुच्छा होदि त्ति भणति २५

२ तत्थ पुव्व भमणिज्जा णिल्लेवटठाणाणमुव देस परूवणा १९०
एक्केण उवदेसेण कम्मट्ठिदीए असखेज्जा भागा १९०
णिल्लेवणट्ठाणाणि १९१
एक्केण उवदेसेण पलिदोवमस्स असंखेज्ज दि भागो १९१

३ जो पवाइज्जइ उवएसो तण उवदेसेण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि णिल्लेवणटठाणाणि १९२

४ अथवा एवमेत्थ जवमज्झं कायव्वमिदि अण्णे वक्खाणारिया भणति १९९
ण समीचीनामेद वक्खाण एगट्ठिदि विसयाण सम्मपबद्धसेसयाण जवमज्झपरू णावसरे णाणाट्ठिदिविसयाण तेसिं जवमज्झ परूवणाए असबद्धत्तादो। १९९

६ मूलगाथा चूर्णिसूत्रगत शब्दसूची

इस सूचीमे जो पारिभाषिक शब्द अनेक बार आये है उन्हे अधिकसे अधिक चार बार तक संगृहीत किया है तथा इसमे संख्यावाची, कालविशेषको सूचित करनेवाले और कमपर्यायवाची शब्दोको सगृहीत किया गया है।

७ जयधवलाटीकागत विशेष शब्दसूची

●

शुद्धिपत्र

पृ०	प०	अशुद्धि	शुद्धि
१५	२	सेडीए	सेढीए
१८	३	पविसमाणगुणगारो	पविसमाणगुणगारो
,	८	तन्स	तस्स
,	,,	अणंतणस्त	अणन्तगुणस्त
१९	१३	णदेण	णन्देण
३९	१०	सतकम्ममट्ठ बस्साणि	सतकम्ममट्ठ बस्साणि
४०	७	उच्छिट्ठा	उच्छिट्ठा
७०	९	भागग्गण	भागग्गेण
७९	३	पदसग्ग	पदेसग्ग
८९	१३	(१३२)	(१२२)
९८	६	(१३४)	(१२४)
१०२	१०	(१३५)	(१२५)
१०४	११	(१३६)	(१२६)
१०६	१०	कम्म	कम्मं
१०६	१०	(१९०)	(१८०)
१०८	९	मासगाहाए	मासगाहाए
१३३	१४	॥२३१॥	॥२०१
१७३	<६	भागप्रमाण काल तक निर तर	भागप्रमाण
१८९	८	गाहाआ	गाहाओ
२०५	६	गाहा	गाहाए
	९	थोवाआ	थोवाओ
२३५	१२	महाप्रमाण	माहप्रमाण
२४७	१४	संगह किट्टीसु	सगहकिट्टीसु
२७१	१३	णिवत्तिज्जयाणियाण	णिव्वत्तिज्जमाणियाण
२७५	३	किय	किथ
२८७	१७	सक्रमाण	सक्रम्यमाण
३०१	१	किट्टीसु पढम	किट्टीसु ज पढम
३२१	१२	पि	×
३२२	१०	अतट्ठिदिसु	अतरट्ठिदीसु
२२३	६	चेवज ादा	चेव जादा
३२५	७	कालम खे	कालमसखे

सूचना—यहाँ जितना भी शुद्ध पाठ यहाँ दिया गया है उसे देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें संशोधन सम्बन्धी दोष नही के बराबर हुआ है। किन्तु प्रेस की असावधानी अधिक है। प्रूफ जिस प्रकारका दिया गया है उतनी मुद्रणमें सावधानी नही बरती गई है। मात्राओकी अशुद्धि बहुत है। हिन्दी अनुवादोमें तो इन मात्राओंका मुद्रित न होना पद-पदपर दृष्टिगोचर होता है।